अरुण संहिता-
लाल किताब

(चतुर्थ भाग)

हरे कृष्ण ट्रस्ट , चण्डीगढ़

पी ओ बॉक्स 123 चण्डीगढ़ 160017

अरुण संहिता - लाल किताब
चतुर्थ भाग

International Standard Book Number
ISBN 81-86828-01-X (HB)

© हरे कृष्ण ट्रस्ट चण्डीगढ़

कीमत रुपये 270 /-
रुपये दो सौ सत्तर केवल

हरे कृष्ण ट्रस्ट
पी०ओ० बॉक्स 123 चण्डीगढ़
160017

☎ (0172) 567009

समर्पण

ऋषिगण
जिन्होंने इस परम्परा
को
सुदृढ़
बनाने का प्रयास किया ।

हरे कृष्ण ट्रस्ट चण्डीगढ़

सम्पादकीय

अरुण संहिता - लाल किताब (चतुर्थ भाग) इस श्रृंखला में यह ग्रन्थ पंचम पुष्प है। इस में सबसे अधिक रोचक विषय यह है कि यह ग्रन्थ केवल ज्योतिष पर ही आधारित है। इसमें ऐसी विधियों एवं उपायों का वर्णन दिया गया है जो अन्य भागों

(अरुण संहिता- लाल किताब **ज्योतिष**,
अरुण संहिता-लाल किताब **हस्त रेखा विज्ञान**,
अरुण संहिता - लाल किताब **सामुद्रिक**)

में नहीं है।

यह सर्वथा सत्य है कि हमारे भाग्य का विधाता कोई और नहीं हम स्वयं ही हैं। **भाग्य किसे कहते हैं ?** हमें प्राप्त हुये व हो रहे या होने वाले वे फल जिनके कर्मों का आधार हम ही हैं। जैसा हम बोयेंगे वैसा ही हमें काटने को मिलेगा। हमें जिन्दगी में जो दुःख या सुख मिलना होता है वह तो मिलेगा ही परन्तु, देवताओं या देवताओं के भी कारण भगवान् श्रीहरि से क्षमा प्रार्थना करके अथवा उनकी सेवा करके हम अपने कष्टों को व दुःखों को घटा- बढ़ा सकते हैं। देवताओं की सेवा या उनसे क्षमा प्रार्थना ही ग्रहों के उपाय हैं। चूँकि अलग-अलग देवताओं की स्थिति-सामर्थ्य व रुचि अलग-अलग है। इसलिये अलग-अलग ग्रहों की अवस्था के अनुसार उनके उपाय भी अलग-अलग हैं।

यदि कोई व्यक्ति इन विषयों का गहराईयों से अध्ययन करना चाहता है तो अन्य भागों का अध्ययन अति आवश्यक है।

हरे कृष्ण ट्रस्ट के सम्पादक मण्डल की यही चेष्टा है कि इन गहनतम विषयों को जन साधारण तक सरल भाषा में पहुँचाया जाये।

इस सम्बंध में यदि कोई अधिक जानकारी चाहता है, वह पहले समय लेकर मिल सकता है।

डॉ० अरुण

हरे कृष्ण ट्रस्ट, सम्पादक मण्डल की ओर से।

1378 ए, सैक्टर 20 बी चण्डीगढ़ 160020

फोन (0172) 702378

चण्डीगढ़ 2 अक्तूबर 1996

विषय सूची

1	अरुणसंहिता – लालकिताब के फरमान	1
2	फरमान नं0 1	1
3	फरमान नं0 2-3	2
4	फरमान नं0 4 सामुद्रिक ज्ञान	6
5	राशि	6
6	कुण्डली में खाने	7
7	पक्का घर नं0 1	9
8	पक्का घर नं0 2	10
9	वृहस्पति का वास्तविक स्थान	11
10.	हाथ की अंगुलियां	14
11.	पक्का घर नं0 3	17
12.	पक्का घर नं0 4	18
13.	पक्का घर नं0 5	19
14.	पक्का घर नं0 6	20
15.	पक्का घर नं0 7	22
16.	पक्का घर नं0 8	23
17.	पक्का घर नं0 9	24
18.	खाना नं0 9 के ग्रह किस्मत के नींव ग्रह होते हैं	25
19.	पक्का घर नं0 10	27
20.	पक्का घर नं0 11	28
21.	पक्का घर नं0 12	30
22.	सांझे खाने	31
23.	दिमाग के खाने	32
24.	कुण्डली का दिमाग के खानों से संबंध	33
25.	हथेली पर पक्के घर	37
26.	बनावटी ग्रह	38
27.	अन्धे ग्रह, धर्म ग्रह	40
28.	साथी ग्रह	40

29.	नकली ग्रह	43
30.	नपुसक ग्रह	43
31.	अच्छे बुरे ग्रह विशेष टिप्पणी सहित	45
32.	राशि ग्रह	47
33.	कुण्डली के 12 खानों में ग्रहों की मुख्य हालतें	49
34.	खाने के संबंध ग्रह व राशि से	50
35.	शरीर व ग्रह का संबंध, ग्रहों की दृष्टि	55
36.	ग्रहों की आपसी दृष्टि व राशियाँ	57
37.	सेहत, बीमारी, शादी, संतान, मकान आदि विशेष चीजों के लिए दृष्टि	62
38.	जन्मदिन का ग्रह	65
39.	हथेली के चारों तरफें	67
40.	किस्मत के ग्रह	69
41.	किस्मत का फैसला	70
42.	ग्रह की महादशा	77
43.	2 ग्रहों की महादशा	83
44.	महादशा में कौन कौन से ग्रह मन्दे होंगे	84
45.	मंगल बद का इलाज	86
46.	राहू का बूरा प्रभाव	87
47.	नीच फल देने वाले ग्रह के उपायें	89
48.	ऋण की किस्म	92
49.	फरमान नं० 5 वृहस्पति रेखा	97
50.	वृहस्पति का प्रभाव	98
51.	वृहस्पति खाना नं० 1	101
52.	वृहस्पति खाना नं० 2	102
53.	वृहस्पति खाना नं० 3 एवं 4	104
54.	वृहस्पति खाना नं० 5	105
55.	वृहस्पति खाना नं० 6	106
56.	वृहस्पति खाना नं० 7	107
57.	वृहस्पति खाना नं० 8	108

58. वृहस्पति खाना नं० 9 109
59. वृहस्पति खाना नं० 10 110
60. वृहस्पति खाना नं० 11 एवं 12 112
61 सूर्य तपस्वी राजा 113
62 नकली सूर्य 116
63 सूर्य खाना नं० 1 118
64 सूर्य खाना नं० 2 और 3 120
65 सूर्य खाना नं० 4 121
66 सूर्य खाना नं० 5 122
67 सूर्य खाना नं० 6 123
68 सूर्य खाना नं० 7 124
69 सूर्य खाना नं० 8 125
70 सूर्य खाना नं० 9 126
71 सूर्य खाना नं०10 127
72 सूर्य खाना नं०11 एवं 12 128
73 चन्द्र (धरती माता) 129
74 चन्द्र का शत्रु ग्रहों से सम्बंध 133
75 चन्द्र खाना नं० 1 136
76 चन्द्र खाना नं० 2 138
77 चन्द्र खाना नं० 3 139
78 चन्द्र खाना नं० 4 140
79 चन्द्र खाना नं० 5 142
80 चन्द्र खाना नं० 6 143
81 चन्द्र खाना नं० 7 144
82 चन्द्र खाना नं० 8 145
83 चन्द्र खाना नं० 9 एवं 10 147
84 चन्द्र खाना नं० 11 148
85 चन्द्र खाना नं० 12 149
86 शुक्र – जगत् लक्ष्मी 150
87 शुक्र खानावार वस्तुयें 153

88	शुक्र खाना नं० 1	154
89	शुक्र खाना नं० 2	155
90	शुक्र खाना नं० 3	156
90	शुक्र खाना नं० 4	157
91	शुक्र खाना नं० 5	159
93	शुक्र खाना नं० 6	160
94	शुक्र खाना नं० 7	161
95	शुक्र खाना नं० 8	163
96	शुक्र खाना नं० 9	164
97	शुक्र खाना नं० 10	165
98	शुक्र खाना नं० 11	166
99	शुक्र खाना नं० 12	167
100	मंगल – नेक शस्त्रधारी	168
101	मंगल की खानावार चीजें	171
102	मंगल खाना नं० 1	172
103	मंगल खाना नं० 2 एवं 3	173
104	मंगल खाना नं० 4	175
105	मंगल खाना नं० 5 एवं 6	176
106	मंगल बद खाना नं० 1, 2, 3	178
107	मंगल बद खाना नं० 4, 5	179
108	मंगल बद खाना नं० 6, 7, 8	180
109	मंगल बद खाना नं० 9,10,11,12	181
110	बुध- शक्तिमान	182
111	बुध की खानावार वस्तुयें	186
112	बुध खाना नं० 1, 2	193
113	बुध खाना नं० 3	195
114	बुध खाना नं० 4	197
115	बुध खाना नं० 5 एवं 6	198
116	बुध खाना नं० 7	200
117	बुध खाना नं० 8	202

118 बुध खाना नं० 9 203
119 बुध खाना नं० 10 205
120 बुध खाना नं० 11 एवं 12 206
121 शनि - देवता जाहिर 208
121 शनि की खानावार चीजें 213
121 शनि खाना नं० 1 215
124 शनि खाना नं० 2 216
125 शनि खाना नं० 3 217
126 शनि खाना नं० 4 218
127 शनि खाना नं० 5 219
128 शनि खाना नं० 6 220
129 शनि खाना नं० 7 221
130 शनि खाना नं० 8 एवं 9 223
131 शनि खाना नं० 10 225
132 शनि खाना नं० 11 226
133 शनि खाना नं० 12 227
134 राहू 228
135 राहू की खानावार चीजें 233
136 राहू खाना नं० 1 223
137 राहू खाना नं० 2 234
138 राहू खाना नं० 3 एवं 4 235
139 राहू खाना नं० 5 236
140 राहू खाना नं० 6 एवं 7 237
141 राहू खाना नं० 8 238
142 राहू खाना नं० 9 एवं 10 239
143 राहू खाना नं० 11 एवं 12 240
144 केतू-दरवेश का कुत्ता 241
145 केतू की खानावार चीजें 249
146 केतू खाना नं० 1 250
147 केतू खाना नं० 2 एवं 3 251

148	केतू खाना नं० 4 एवं 5	252
149	केतू खाना नं० 6	253
150	केतू खाना नं० 7 एवं 8	254
151	केतू खाना नं० 9	255
152	केतू खाना नं० 10 एवं 11	256
153	केतू खाना नं० 12	257
154	फरमान नं0 15 (दो ग्रह)	258
155	विशेष-विशेष संबंधित ग्रहों की अवधि	261
156	वृहस्पति – सूर्य	262
157	वृहस्पति – चन्द्र	266
158	वृहस्पति – शुक्र	270
159	वृहस्पति – मंगल	273
160	वृहस्पति – बुध	274
161	वृहस्पति – शनि	280
162	सूर्य – चन्द्र	293
163	सूर्य – शुक्र	295
164	सूर्य – मंगल	296
165	सूर्य – बुध	298
166	सूर्य – शनि	302
167	चन्द्र – मंगल	306
168	चन्द्र – बुध	308
169	चन्द्र – शुक्र	315
170	शुक्र – मंगल	317
171	शुक्र – बुध	318
172	शुक्र – शनि	322
173	मंगल – बुध	325
174	मंगल – शनि	328
175	बुध – शनि	335
176	दो से अधिक ग्रह इक्ट्ठे	336
177	राहू – केतू	338

178 राहू – वृहस्पति 349
179 सूर्य – राहू 352
180 राहू – चन्द्र 353
181 राहू – शुक्र 354
182 राहू – मंगल 354
183 राहू – बुध 355
184 राहू – शनि 356
185 राहू – बुध – केतू 356
186 राहू – मंगल – शुक्र – बुध 358
187 राहू – वृहस्पति – बुध – चन्द्र 358
188 राहू – मंगल – शनि – बुध 358
189 चार ग्रह 369
190 पाँच ग्रह या पंचायत 369
191 ज्योतिष विद्या के अनुसार बनाई हुई लग्न कुण्डली 371
192 हस्त रेखा में चन्द्र कुण्डली 373
193 **हस्त रेखा से जन्म कुण्डली बनाने का ढंग** 376
194 बन्द मुट्ठी व कुण्डली 384
195 कुण्डली के खाने के हिसाब से मकान 386
196 मकान कुण्डली के पहले खाने 387
197 पाँव पर विशेष निशान 393
198 शादी की रेखा 394
199 शादी रेखा से दूसरी शाखायें 399
200 ग्रहों का सन्तान से सम्बंध 406
201 स्वास्थ्य व बिमारी 412
202 बीमारी का समय 413
203 ग्रह एवं बिमारी का सम्बंध 414
204 खाना नम्बरों की आयु 419
205 मौत का बहाना 422
206 विषय के सम्बंध में कुछ उदाहरण 425
207 हर एक ग्रह का प्रभाव 428

208 किस्मत के हालात 430
209 ग्रहों की अवधि 434
210 परिशिष्ट
मंगल 7 से 12 440

****

ॐ

अरुण संहिता (लाल किताब)

भाग चतुर्थ

खुद इन्सान की पेश न जाए, हुक्म विधाता होता है
सुख दौलत और सांस आखिरी, उम्र का फैसला होता है

बीमारी का इलाज है मगर मौत का कोई इलाज नहीं, संसारिक हिसाब-किताब है कोई दावा खुदाई नहीं।

लाल किताब के फरमानः कुदरत से किस्मत किस तरह आई ?

फरमान नं०-1

हुक्म विधाता जन्म मिले तो, लेख ज्योतिष बतलाता है ।
लाल किताब बच्चा ग्रह चाली, किस्मत साथ ले आता है ।
इस बच्चे की नन्ही मुट्ठी में, पकड़ा देव आकाश का है ।
भरा ख़जाना जिस के अन्दर, निधि सिद्धि की माला है ।
नौ निद्धि को ग्रह नौ माना, सिद्धि बारह राशि हैं ।
नौ गुणा जब बारह गिनते, होती माला पूरी है ।
राहू केतू जो पाप गिने है, ग्रह सब ही को घुमाते हैं ।
गुंरु अकेला दो को चलाते, घूमते पर वहो बुद्ध में हैं ।
सात हो नौ या माला चौरासी, पाप फ़र्क ही का है ।
ऊपर नीचे जगत् के अन्दर, झगड़ा इन दो ही का है।
पाप अगर सब दुनिया छोडे, सात ग्रह बच जाता है ।
राशि बारह और सात ग्रह से, नरक चौरासी कटता है ।
नन्ही मुट्ठी जब खुली बच्चे की, आकाश-हवा भरपूर हुआ ।
हरकत-गर्मी-पानी से मिट्टी, ब्राह्मण्ड सारा ज़ाग पड़ा ।
हाथ दायाँ और कुण्डली जन्म को, तदबीर मर्द का नाम हुआ ।
बाँया हाथ और चन्द्र कुण्डली, तकदीर का काम हुआ ।
उलट हाथों से औरत माना, ग्रह फल राशि आम हुआ ।
इल्म क्याफा ज्योतिष मिलते, लाल किताब का नाम हुआ ।
9 ग्रह राशि 12 घूमे, किस्मत का आग़ाज हुआ ।
नेक हवा जब चलने लगी तो, जहाँ दोनों आकार हुआ ।
तरफ 12 त्रिलोकी होते, गुरु जगत् में जन्म हुआ ।

माया हवा जब मिलने लगी तो, पिछला जन्म जब समाप्त हुआ।
राजा रवि बच्चा ग्रह चाली, घर अपने प्रवेश हुआ।
अक़्ल लेख का झगड़ा चला तो, गृहस्थी गुरु उपदेश हुआ।

फरमान नं०-2

लाल किताब है ज्योतिष निराली, जो किस्मत सोई को जगा देती है।
फरमान पक्का देके बार आखिरी, दो अक्षरों से कष्ट हटा देती है।
शर्त राहू केतू की 7वीं भी तोड़ी, जन्म राशि भी वह मिटा देती है।
लग्न एक को अक्षर लेकर जो चलती, खत्म 12 पर ही वह कर देती है।
है बुनियाद रेखा क्याफा से चलती, फलादेश ज्योतिष बता देती है।
हवाई ख्यालों को यह एक तर्फ करती, खड़ा घोड़ा चन्द्र को कर देती है।
न 28 नक्षत्र न पंचाग गिनती, भूला राशि 12 को वह देती है।
जन्म समय दिन साल उमर साल सब कुछ, इसमें असल नाम को भी उड़ा देती है।
वक़्त रेखा फोटो या छत से कुण्डली, जन्म-मृत्यु, चन्द्र बना देती है।
जब विधाता किसी को हो शक्की, उपायें मामूली बता देती है।
ग्रह फल व राशि के टुकड़े दो करती, यह रेख में मेख लगा देती है।

फरमान नं० 3

जब बच्चा पैदा (नोट: ऊँचा आसमान की आखिरी सीमा और पाताल की गहरी तह से घिरे हुए मध्यम आकाश में दैवी और जाहिरा हटा के दोनों जहानों में आने जाने के खुले रास्तों को जन्म मरण की गांठ लगा देने वाली वस्तु ग्रह चाली बच्चा कहलाई) होता है बन्द मुट्ठी लाता है और जब वह इस दुनिया को छोड़ कर जाता है तो वह दोनों हाथों की मुट्ठियां खोल जाता है। छोटा सा बच्चा सम्भावत: मुट्ठी बन्द ही रखता है और आसानी से किसी दूसरे को अपने हाथ की हथेली देखने नहीं देता। जैसे-जैसे बढ़ता है मुट्ठियां खुली रखने का आदि हो जाता है और आखिर एक दिन ऐसा आता है कि वो भरी दुनिया से मुंह मोड़ लेता है शरीर अकड़ जाता है और वहीं मुट्ठी जोर से बन्द करने पर भी बन्द नहीं होती अर्थात् वो बचपन में अपना प्राकृतिक भेट और छोटी सी मुट्ठी का खजाना किसी को दिखाना नहीं चाहता और अपने साथ लाया हुआ दाना पानी और दुनिया का सारा हिसाब किताब समास कर चुका होता है। शेष बची हुई वस्तु की मुट्ठी भर कर अपने साथ नहीं ले जा सकता मुट्ठी बंन्द करके साथ क्या लाया और कौन सी वस्तु को मुट्ठी भर कर अपने साथ न ले जा सका यह एक भेद है जिसका अर्थ इसी मुट्ठी में ही भरा हुआ है। बन्द मुट्ठी में क्या है केवल खाली जगह, जिसका दूसरा नाम आकाश है जिसमें कि केवल हवा भरपुर है। हवा से जब आग मिली तो पानी बना, उसमें

मिट्टी मिली तो दुनिया का सब भण्डारा पैदा हुआ दूसरे शब्दों में बन्द मुट्ठी के आकाश में जमाने की हवा का मालिक वृहस्पति था जिसमें गर्मी के भण्डारी सूर्य की चमक से चन्द्र के पानी 'और शुक्र की मिट्टी के बाद मंगल का खाना पीना और बुध की अक्ल व बोलना बुलाना, शनि का जादू मन्त्र और देखना दिखाना राहू की दयालुता व कल्पना कल्पाना और केतू से चलना-फिरना या दूसरों गैरों से मिलना-मिलाना और हुक्म कुदरती को अपना ही स्वयं बनाना, सब के सब बन्द पड़े हैं।'

ज्यों ही बच्चे ने दूसरी तरफ अपना मुँह किया बन्द मुट्ठी के आकाश में नौं निद्धि की निश्चय शक्ति व 12 सिद्धि की स्वयं अपनी हिम्मत की हवा (बनाए हस्त रेखा) कुण्डली के आकार में ग्रह राशि (हिसाब ज्योतिष विद्या) नर या बैल के सिरों पर कुल दुनिया की धरती माता का बोझ या जमीन शेर के मुंह को मैदान जग में खून की लाली का रंग नहीं चढ़ता, की बजाए और भी चमकता चला जा रहा है। मंगल भी नर ग्रह है मैदाने जंग के नियमों को चलाने वाला है मुकाबले पर शुक्र की जमीन सब को एक ही आंख से देखने वाली औरत है। हमला नहीं करता किरणों को वापिस ले जाता है और सूर्य और वृहस्पति के शेरों को काफी अबला बिलकुल गरीब के समान ब्यान करता है। मंगल न्यायशील है या न्याय का मालिक है वृहस्पति हवाई शेर रहीम या रहम का देवता है किसी से दुश्मनी नहीं करता सूर्य न्यायप्रिय है जिस में दया और कुरूरता दोनों शामिल हैं क्योंकि इसके द्वारा गुण के आन्तरिक अस्तित्व में चन्द्र का शान्ति वाला दिल बैठा हुआ है जो दृश्य देख रहा है। फैसला होता है कि पांव पड़ी नीचे बेटी एक ही आंख की मालकिन औरत पर मर्दो का हाथ उठाना मंगल का काम और हमला करना शेरों और बहादुरों का नाम नहीं। चुपचाप बैठा हुआ बुध अपनी अक्ल का दायरा नापा करता है। मिथुन राशि नं0 3 पैदा हो जाती है या मेष नं0 1 के मंगल व सूर्य मिल कर 3 पैदा हो जाती है या मेष नं0 1 के मंगल व सूर्य मिलाकर 3 होने पर मिथुन, मिथुन मिलावट या मर्द औरत का जोड़ा या मर्द औरत की मिलावट की आपसी अकल या कामदेव दशा की शक्ति साथ मिल बैठती हैं। बुध शुक्र की अपने घर में ही पालना करने लग जाता हैं दूसरी तरफ शनि जिसने जमीन या औरत को देखने के लिए अपनी आँख उधारी दी थी औरत को समझता है कि मेरे होते हुए यह अब तेरी आँख की नजर का केवल एक मामूली करिश्मा है शनि ने बाप सूर्य के उल्ट भी औरत को सलाह दी, औरत भोली भाली होती है इसके धोखे में आ गई। आँख शनि की मगर मिट्टी शुक्र का चिन्ह भोली- भाली होती है इस के धोखे में आ गई और शनि की मगर मिट्टी शुक्र की चिन्ह बैल, गऊ नजर आ रही है मगर इसकी शैतान आँख के एक ही इशारे के करिश्मे ने सूर्य और वृहस्पति के शेरों को नीचा कर दिया सब बीच फल पैदा हो गये। दुनिया में जानकारी हुई मंगल के पेट में छुरियां फिरने लगी जैसे वो भगवान् बन गया। दिमाग में नकल व हरकत हो रही है मंगल

की पेश नहीं जाती वह सूर्य और वृहस्पति दोनों की खातिर जो सब के पिता हैं आँख से मार देने वाली औरत से तंग होने लगा और स्वयं हाथ से उसे मार देने पर तैयार हुआ, मगर अकेला हो तो ऐसी कायराना कार्यवाही कर जाए, चुप है और मंगल के होते हुए राहू भी चुप है जिसके कारण से मर्द औरत का जोडा कामदेव को अन्दर छुपाये फिर रहा है मगर मंगल दुश्मनी नही छोडता। जब काबू आया औरत को मार ही देने का नियम अपनाने लगा। चाहे शुक्र को केतू की सहायता मिलने पर या कामदेव की कृपा और मंगल की सलाह से किरणे फिर धरती पर शुक्र को मार देने या नीचा करने की बजाए उसे चमकाने को वापिस हुईं। अब जमीन क्या चमके सब ग्रहों को शनि की शैतानी मालूम हो गयी। वृहस्पति की हवा हुक्म बजा रही है। मंगल का मैदाने जंग अन्दाजी तौर पर गर्मी नहीं छोड़ता तो सूर्य के आदेश या मंगल की किरणों को कभी इधर कभी उधर करता है। कशमकश पैदा हो गयी। मिट्टी की किरणे किसी का कुछ बिगाड़ नहीं सकती वृहस्पति की हवा भी जोर पकड़ रही है। साथ-साथ उड़ने लगे और शुक्र के झगड़े सब की आंखों में पड़ने लगे। मगर इसको अपनी आँख पहले की तरह देख रही है क्योंकि ये शनि की बनी हुई है यही दुनिया के झगड़े हैं वही बचा रहा जिसने शनि की आँख से आँख न मिलायी जर्रे से गर्मी बढ़ी मैदान गर्म हुए ऊँचे पहाड़ ठण्डे रहे और कायनात की मदद और गर्म दो पहलू हुए। औरत की मुस्कुराहट एवं आँख के इशारों से सैंकड़ों बखेड़े और जंग व दंगल होने लगे। दुनिया लड़ाई का मैदान बन गई और सुख-दुख की नदियां या (रेखायें) हाथ में बहनें लगीं। मंगल ने नजारा दिखाया चन्द्र ने तमाशा देखा मगर रेखाओं के समुद्र (चन्द्र का दूसरा नाम) ने शान्ति न छोड़ी। पानी धीरे-धीरे गर्म हुआ खुशी के सारे ब्रह्माण्ड या (शुक्र की कुल जमीन या हाथ का बरहजम) सूर्य और शुक्र की आपसी दुश्मनी के कारण से इतना तंग हुआ कि सूर्य को दबाने के लिए सारे का सारा ही उठकर दौड़ता हुआ मालूम होने लगा वृहस्पति की हवा में शुक्र की मिट्टी के कण तूफानी जोर से फैल गये। सभी तंग हुए। सूर्य की तपश को मध्यम किया मगर इसके रथ को न रोक सके सबने अपने आप को खराब किया सूर्य का कुछ न बिगाड़ सके।

धीरे-धीरे सूर्य का रथ छिपने लगा और काली रात शनि का पहरा होने लगा किरणे खत्म हुई मंगल चला गया अब मंगल की गैर हाजिरी में राहू भी आ निकला। रात हो गई सूर्य की पहली चमक वृहस्पति की ठण्डी हवा के साथ चन्द्र की गर्मी फिर से प्रकट होने लगी। गर्मी घटी सर्दी बढ़ी, जमीन को कुछ शान्ति हुई और समुद्र ने भी गर्मी को अपने घर के अन्दर से दर बदर करना शुरु किया राहू ने रात्रि समाप्त की तो

फिर ठण्डी हवा चलने लगी। रात के बाद दिन के अन्दर की सीमा या केतू निकल आया क्योंकि दिन समाप्त और रात शुरु होने के बाद राहू था और फिर नए सूर्य की आशा हुई या राशि मण्ड़ल में ग्रह चाली बच्चे को जैसे-जैसे हवा लगने लगी, बुद्धि या अक्ल आने लगी और जोर से सज रंग होने लगा (नोटः 5 कनक जौ के पौधे और पेड़ों के पत्ते भी निकलते ही पीले रंग के होते हैं बन्द बर्तन में पैदा शुदा पौधा इस बात को साफ करते हैं) जो बुध का रंग और जमाना है यानि जमाने की हवा अक्ल तो देगी मगर जर्दे से हरा करेगी। वृहस्पति की सहायता कम होती जाएगी मानो कि उस बुध के हरे रंग से मिली हुई अकल से ही इन्सान धन दौलत के कमाने की धुन और लगन में रात दिन मरते फिरना मिलेगा। क्योंकि बुध वृहस्पति से दुश्मनी पर है। मां कहती है कि बच्चा बड़ा हुआ मगर वृहस्पति की उम्र घटती जाएगी। पैदाइश के समय वृहस्पति की पूरी उम्र का था हर तरह से साफ था, जमाने की हवा के कई रंग बदलने लगे। पीला से हरा हुआ तो राहू साथ मिला। यद्यपि दिमाग में नकल व हरकत पैदा हो गई और नेकी के साथ बदी करने का बीज आ मिला। आखिर वहां तक कि सब जमाना उलझन हो गया, चिन्ता में गम खड़े हुए मगर शुक्र का मुकाम है कि राहू व वृहस्पति बराबर हैं और आपस में कभी दुश्मन नहीं होते। दोनों के मिलाप से हरा रंग पैदा हुआ तो बुध आ निकला और पीला बिल्कुल ही जाता रहा। अक्ल पूरी हुई तो जमाने से ही हवा को विश्वास ही उठ गया। हीले रोजी बहाने मौत का सवाल खड़ा हो गया और देवता का नौराता या प्रकृति का सिला भूल ही गया, इतना ही नहीं बल्कि जब इस बुध या बुद्धि की समझ का विश्वास वृहस्पति के पूर्ण पर आया तो वृहस्पति की हवा का वो चक्र बन्धा कि उससे निकलने का केवल वहीं आकाश (खाली जगह) बाकी रह गई। किस्मत की हवा के बाग-बगौले बनने लगे और आसमान की तरफ उठने लगे। अब किस्मत का भरौसा न रहा।

इतने में सूर्य आसमान पर नजर से गायब हुआ, रात आई, आग बुझने और सर्दी होने लगी। घबराहट समाप्त और शान्ति आने लगी। चन्द्र चमक रहा है। दिन के थके हारे सोने लगे कई तरह की खूबियां होने लगीं। जिसके पर्दे में हवा से आग हुई आग से पानी, पानी से मिट्टी बनी या बच्चा जमाने की हवा से गर्मी सर्दी महसूस करने और माता-पिता के साये में आराम करने लगा। वही बन्द मुट्ठी के आकाश की हवा उसे सांस का काम देने लगी इसी नियम पर माना है कि हर सांस के आने और जाने में इन्सान की किस्मत का संबन्ध होता है। जिसकी वजह से कोई बुद्धिमान या बुध का मालिक या अक्लमन्द या हीन बांध सकता कि एक के बाद दूसरा सांस आएगा या नहीं। मगर हमेशा यही इच्छा करता है कि अगर एक सांस बाहर हो गया है तो

दूसरा मेरे अन्दर ही आ जाए। यानि अगर दांए ने किस्मत को हार दी है तो बाएं ही सहायता करे। यही दायां बायां करता रात-दिन 24 घंटे में 12 राशि गुणा 7 ग्रह या चौरासी लाख सांस पूरी कर लेता है और इस दुनिया की नर्क चौरासी या बारह राशियों में सातों ग्रहों की गुणा या चोट को सहारता चला जा रहा है। अगर यह सांस हवा या वृहस्पति न हो सब चौरासी खत्म हो क्योंकि वृहस्पति बुध साँझे ग्रह चाली बच्चे से वृहस्पति अड़ने पर बुध का गोल अण्डा खाली ही रह जाएगा जो संसारिक विचार में अण्डे ने वृहस्पति की जर्दी निकाला हुआ अण्डे का खाली खोल या ढांचे पर या बच्चे के ऊपर की फिलली या जेर होगी तो वृहस्पति व राहू के बीच सीमा बांधने वाली चीज आकाश की नींव अफक या निगाह की हद कहलाएगी। जिसकी जांच पड़ताल सामुद्रिक ज्ञान से होगी।

सामुद्रिक ज्ञान

फरमान नं0 4

हस्त रेखा व ज्योतिष के अनुसार दोनों में से किसी एक के सहारे से दूसरे को पैदा कर लेने वाली विद्या को सामुद्रिक ज्ञान कहा है। जिससे हस्ती से नीति या नीति से हस्ती का भेद खुलता है, यह खैरियत से इससे सम्बन्धित ठोस हाथ में आ जाने वाली चीज व ठोस चीज से उसका हवाई और ख्याली का पता चल जाता है और इस रुह बुत के हवाई व बटनी मैदान का अन्दर बाहर या इन्सानी व खुदाई राज का उमर सम्बन्ध चलना है। जन्म मरण के सवाल का शुरु व आखिरी या पतन, जन्म का हाल यानि मां पहले की बेटी मालूम करने का ढंग हाथ की हथेली पर ही लिखा हुआ है। जिसके पढ़ने में सामुद्रिक ज्ञान सहायक होगा। पर्वत, राशि और रेखा के अतिरिक्त मकान, रिहाइश, स्वपन दूसरे शगुन माल मवेशी परिन्दे या दूसरे दुनिया के साथी और ज्ञान क्याफा इस ज्ञान के जरूरी पहलू गिने गए हैं।

राशिः-

हाथ की हथेली के टुकड़ों के अतिरिक्त हाथ की अंगुलियों की हर एक गांव को राशि कह कर पुकारा गया है। जो बारह दिशाऐं की खबर देने के लिए गिनती में बारह **(1) मेष (2) वृष (3) मिथुन (4) कर्क (5) सिंह (6) कन्या (7) तुला (8) वृश्चिक (9) धनु (10) मकर (11) कुम्भ (12) मीन।**

हर राशि के सातवें पर वहीं ग्रह ऊँचा होगा जो पहले नीचा था यानि सात ग्रह और 12 राशि का 12 गुणा 7 =84 चौरासी की योनि का जंजाल या रात दिन में चौरासी लाख सांस का प्रश्न अजीब पैदा हो चुका है हर सातवें के बाद फिर वही ग्रह प्रभाव करते हैं हां आठवें वहीं हालत हो जाती है इसी नियम पर ग्रह व राशि का प्रभाव साँझा लेते

हैं। लाल किताब का साधारण नियम विद्या ज्योतिष की जन्म राशि (लग्न) लाल किताब में मेष राशि होगी। जिसका पक्का घर हमेशा अंक नं0 1 वाला होगा जिसके बाद बाकी घर क्रमबध होंगे यानि विद्या ज्योतिष वाले चाहे कोई भी जन्म राशि रखकर शुरु करें उनकी जन्म राशि वाले को लाल किताब के अनुसार खाना नं0 1 (बाकी क्रमानुसार) ही मिलेगा।

उदाहरणतयः जन्म कुण्डली में वृश्चिक राशि है एवं साथ वाली कुण्डली लाल किताब के अनुसार लग्न है।

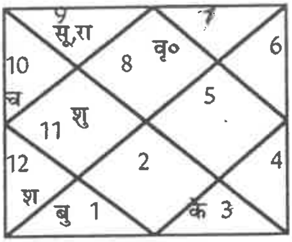

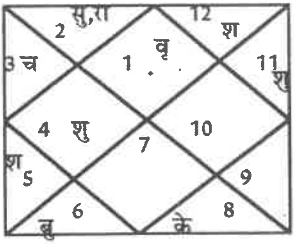

हालात देखने के लिए वृहस्पति खाना नं01 सूर्य नं0 2 आदि इसी तरह की वर्ष फल पढ़ लें।

2. हर ग्रह के खानावार प्रभाव के शुरु में जो चीजें लिखी है जब वह पैदा होगी इस खाना में दिया हुआ प्रभाव शुरु होगा। उदाहरण के तौर पर **शुक्र नं0 1-9 में सफेद गाय से या शादी 25वें साल बुरा फल शुरु होगा।** क्या टेवा ठीक भी है पहले देख ले।

कुण्डली में खानेः-

जगह अच्छी बुरी होने से खाना नं0 से मुराद हर रेखा की कुण्डली का पक्का खाना नं0 मुराद होगी राशि नम्बर न होगी।

पक्का घरः- (1) जमाना हाल (2) जन्म मरण का दरवाजा (3) दुनिया के माया के चले जाने का रास्ता, (4) माता का पेट-शारीरिक (5) मुस्तकल आने वाला माना जन्म (6) पाताल चाहे हस्ती (7) फूल, फल मैदान दुनिया (8) दुनिया का बाहर मौत निमानी (9) जमाना बाजी पिछला जन्म, पेट माता धार्मिक दसवां द्वार, ख्याली दुनिया में आने रास्ता या जन्म के समय या आंय (10) आखिरी, घर आबाद हो व वीराना का सुख, कूच का रास्ता

कुण्डली में बन्द मुट्ठी के खाना

साथ लाया माल	-	1:74:10
माता-पिता हाल बचपन	-	9:11:12
सन्तान, बुढ़ापा	-	2:3:5:6
बीमारियाँ	-	8

10 प्रतिशत - 1:74:4: 10 साथ लाए खजाने मुट्ठी का अन्दर

50 प्रतिशत - 3:11:15:9 दुसरो से पाए मुट्ठी का बाहर
25 प्रतिशत - 2:6:12 रिश्तेदारो से पाए-मुट्ठी का बाहर

कुण्डली के खानों की गिनती क्रम चाल और मुकाम हमेशा के लिए मुस्तकल तौर पर निश्चित कर दिए गए हैं। बारह राशियों के लिए बारह ही खाने निश्चित हैं इन बारह खानों में 9 ग्रह आएंगें बाकी चार (खाना नं0 7 मे दो- इकटठे) मे वृहस्पति की हवा का प्रभाव गिना गया है क्योंकि हर खाली जगह में हवा जरूर होगी

खाना नं0 5 भविष्य, खाना नं0 9: अनुपम(अद्वितीय), खाना नं0 11:- दुनिया का अन्दर, खाना नं0 8 दुनिया से बाहर।

राशियां : गिनती से 12 राशियां है जिसका अलग-अलग मुकाम-हर एक अँगुली की अलग पोरी पर हमेशा के लिए पक्के तौर पर निश्चित हैं। गिनती चाल और जगह निश्चित करने के समय मध्यमा अंगुली को सब अंगुलियों के आखिर से लेते हैं क्योंकि मध्यमा अंगुली सन्यास या दुनिया से अलग अंगुली गिनी गई हैं जिसका सम्बन्ध गृहस्थ के बाद होगा ।

2. पहली अंगुली तर्जनी की तीनो राशियों का इकट्ठा लिया हुआ प्रभाव जिन्दगी का पहला हिस्सा या जमाने की हवा की जान-पहचान या वृहस्पति का अहद है जो 35 वर्ष उम्र तक गिना हैं। दूसरी अंगुली अनामिका की राशियों से सूर्य का जमाना गृहस्थ का सम्बन्ध 25 वर्ष स्वयं कमाई बगैरह होगा। तीसरी अंगुली कनिष्का की तीन राशियों का प्रभाव मध्यमा की तीनों का प्रभाव 75 वर्षे तक वानप्रस्ती होगा । यह जरूरी नही कि हर एक राशि का निशान अंगुली की उसी पर्वत पर वाक्या हो जहाँ कि उस राशि का निश्चित हैं लेकिन अगर निशान अपनी निश्चत जगह पर ही हो तो वो आदमी इसी राशि का होगा और अगर कोई भी निशान राशि न पाया जाए तो हैरानी की बात नहीं ग्रहो या पर्वतों से पता चल जाएगा।

पर्वत व राशियों का भ्रम :-

पर्वतों का पक्के तौर पर व जगह निश्चत कर दिया गया हैं इसी तरह से ही राशियों के लिए हमेशा के लिये जगह निश्चत कर दी गई है बुजुर्गो के लिए रहने की जगह को पर्वत या ग्रह का घर कहेंगें और राशि के लिए निश्चत की हुई अंगुली की पोरी को राशि का घर कहेगें । हर पर्वत या ग्रह का निशान से ग्रह का जिसमे शक्ति को लेंगे। मगर इसके लिए जो जगह हथेली पर हमेशा के लिए निश्चत है वो मुकाम इस ग्रह का घर होगा । चाहे ग्रह स्वयं किसी दुसरे ग्रह के घर जा बैठा हो। इसी तरह से ही राशियो का हाल हैं यानि राशि जो जगह अंगुली की पोरी पर निश्चत हैं वो राशि का घर है और जो निशान राशि का है वो राशि का दिया हुआ प्रभाव या शरीर होगा। इस तरह पर जब किसी पर्वत का निशान

किसी दूसरे ग्रह के घर में पाया जाये तो हम कहेगे कि वो ग्रह दूसरे ग्रह के घर मे चला गया है। उदाहरण के तौर पर जब सूर्य का सितारा चंद्र के पर्वत पर आ गया हो तो चन्द्र के घर सूर्य आया हुआ गिना जाएगा या अगर यही सूर्य का सितारा शुक्र के पर्वत पर हो तो सूर्य को शुक्र के घर मेहमान कहेंगे अब सूर्य और शुक्र का या सूर्य या चन्द्र का जो आपस में सम्बन्ध है वही प्रभाव होगा। इसी तरह से हर राशि के निशान का प्रभाव लेंगे।

पक्का घर नम्बर एक

घर पहला है तख़्त हज़ारी, ग्रह फल राजा कुण्डली का।
ज्योतिष में इसे लग्न भी कहते, झगड़ा मनुष्य है माया का।
पूर्व तरफ-पक्का घर सूर्य, पर उपकार चवन्नी का ....।
चार दीवारी तह के कोने, सींग मवेशी खड़े हों जो कि।
राज संबंध रंग हों गुड़ के, रसम पुरानी साज़ सफर के।
झिल्ली धन जो पैदा होंगे, नाम हैसियत दुनिया लेंगे।
पहला घर सारा तख़्त गिना तो, ७वाँ टिकने की धरती हो।
७वाँ ही गर ख़ाली होवे, उलटा तख़्त वह २४ हो।
साल २४ से जितने आगे, दुश्मन ग्रह उस आता हो।
टक्कर ऐसी उस ग्रह होगी, आगे न वह चलता हो।
लग्न अगर खुद खाली होवे, किस्मत साथ न आई हो।
किस्मत उसकी सातवें बैठी, या घर चौथे १०वें हो।
मुट्ठी के घर चारों खाली, 9-3-11-5वें हो।
ये घर भी यदि ख़ाली होवें, 2-6-12-8वें हो।
घर 12 ही घूम के देखे, ऊंच कायम या घर का जो।
किस्मत का वह मालिक होगा, बैठा तख़्त पर उसके हो।
घर पहला जब राज हकूमत, सात वज़ीरी होता है।
हर दो से कोई दुश्मन होवे, साथ फ़कीरी होता है।
ऊंच, नीच, घर के जो गिने है, वह नहीं इन घरो लड़ते है।
बाकी ग्रह सब झगड़ा करते, उमर से भी वह मरते है।
तख़्त पर बैठा नर ग्रह राजा, दूसरों से वह स्त्री है।
7वें इसकी औरत बेटी, बुध शुक्र दो बैठती है।
ज़्यादा एक से घर पहले में, नर ग्रह स्त्री होती है।
दो से ज़्यादा घर 7वें में, स्त्री ग्रह-नर होती है।
गिनती मगर हो राजा अलग राये कमेटी होती है।
ज़ाहिरा बेशक तीन हों बैठे, गिनती चार की होती है।
अकेला पहले बहुत हो 7 वें, ग्रह फल राशि होती है।
उलट अगर हों टेवे बैठे, जड़ 7 वें की कटती है।
रवि शनि बुध मंगल टेवे कहीं भी इसके बैठे हों,
फल वैसे ही घर पहले के रस टेवे में होते हैं।

स्वयं अपना जाती शरीर एवं हाथ पर विशेष दिशाएं जाती कमाई स्वाभाव

गर्मी खुशी होगा। जेर में पैदा होने वाले मवेशी सिंग जिनके खड़े हों स्वयं साखता मकान। अपना तख्त चार दिवार के नीचे के खाने के सामान सवारी रथ गाड़ी मोटर आध्यात्मिक शक्ति बृहस्पति दिमागी शक्ति रूह गुस्सा परोपकार। राज दरबार, आध्यात्मिक शक्ति पुरानी रश्मों रिवाज, व सम्पति का सम्बंध समय जवानी जमाना हाल मौजूदा जन्म, साथ लाया हुआ खजाना वास्ते स्वयं अपना शरीर, दुनिया में नाम किस हैसियत का होगा, मुर्दो का संबंध रोजी व अपना जाती अस्तित्व पूर्व, बुध, सूर्य-शनि, मंगल जैसा हो वही हाल होगा सूर्य इस घर में साथ बैठे(चाहे मित्र हो चाहे शत्रु) ग्रहों को सहायता दिया करता है। राहू राशि फल का होगा। ग्रह का प्रभाव भी मैढे की रफ्तार से होगा। यह सेहन है खाना नं0-7 का और सेहन या इस घर का न्यायक होगा शुक्र, सुख गुड़ आदि सूर्य का शरीर सारे बजूद व सारे संसारिकों का अलग-अलग होते हुए और फिर इकटठे एक होकर काम करने की हिम्मत व शक्ति वाला राजा होगा।

पक्का घर खाना नम्बर दो

घर पक्का दूजा गुरु, ब्रह्मा गाय स्थान है ।
मिलता जहां पर है इकट्ठा, मान व धन ससुराल है ।
ज्ञान समुद्र घर 9वें का, या फल उमर हो पहली का ।
सफेद झण्डा किस्मत पे झूले, उमर बुढापा घर 2 का ।
दिशा उत्तर, पश्चिम है तो, असर-हवा-मिट्टी का है ।
घर 8 वां और 6वां मिलते, दरवाज़ा यह दो का है ।
ग्रह शत्रु पापी सभी, हृदय सफा सब कलेश ।
मौत-पातान के देखन कारण गुरु सुनें उपदेश ।
घर चल कर जो आवे दूजे ग्रह किस्मत बन जाता है ।
घर 10वां गर खाली होवे, सोया हुआ कहलाता है ।
कमाई किस्मत-बचत, ज़ाति, स्त्री धन भी गिनते है ।
माता, बूआ, फूफी मासी, जगह तिलक की लेते है ।
क़द-सीधापन उंगली उसकी, भूख सुभाओ नेकी है ।
ज़ायका में वह खट मीठा तो, मोह माया भी होती है ।
गैस रतूबत शाख़ दबा कर, दरख्त भी पैदा होता है ।
सिफात इकट्ठी-राज रइयत, बैल पे साधु चढ़ता है ।
घर दूजा मैदान है 8 का, बैठक राहु केतु है ।
सर-पांवे के दोनों मालिक, माथा कुरआ-हवाई है ।
पीपल, पित्तल, मिट्टी पीली, केसर पीला रंग भी है ।
असर सभी का इस घर आकर, मंदे का भी उमदा है ।
ग्रह मुशतरका बुरा नहीं करते, बंद मुट्ठी के ख़ानों में ।

फल 2-11 अपना अपना, धर्म मन्दिर गुरुद्वारा में ।
स्त्री ग्रह जब शनि से मिल कर, बैठे 2 या कहीं भी हों।
ग्रह दृष्टि से जो कोई देखे, वह औलाद से मरते हों ।
पाप की बैठक घर है गुरु के, गृहस्थ शुक्र बन जाता है ।
किस्मत सबकी जोमाथे पर चलती, केतु गुरु बुध मिलता है ।
चन्द्र-मंगल बद-शनि बैठे, मौत जन्म 2 मिलता है ।
आठ ग्रह इस घर में आते, जुदा रवि पर रहता है ।
केतु गुरु करें मस्तक लम्बा, करम धरम बढ़ता है ।
बुध कलम जब लिखे विधाता, माथा खुला हो जाता है ।
दुनियाकी किस्मतहै आकाश बुधमें, फर्क लम्बा चौड़ा गुरु केतु है।
गुरु लम्बा गिनते तो केतु है चौड़ा, मिले दोनों बैठे गुरु दाता है।
गुरु शुक्र उस टेवे में जैसे, कहीं भी इस के बैठे हों ।
फल वैसे ही घर दूजे के, उस टेवे में आते है ।

यह वृहस्पति का वास्तविक स्थान है चन्द्र ऊँच करता है जो वृहस्पति का मित्र है इस राशि को नीच करने वाला कोई ग्रह नहीं। (वृहस्पति को इसलिए गुरू माना है और सामुद्रिक में सब ग्रहों से दर्जा उच्च या प्रभाव करने की चाली में नं01 पर माना है। देखने से मालूम होगा कि राशि नं0 2 वृष के घर का मालिक शुक्र) (मिट्टी या औरत) है जिसे लक्ष्मी का अवतार माना है । यही घर वृहस्पति को कुण्डली में दौलत आदि का मिला है बैल पर साधू की सवारी, शिवजी बैल पर सवारी लेंगे। इस घर को सब ग्रहों ने इज्जत से देखा है न इस राशि का बीच ग्रह है न ही शुक्र या लक्ष्मी ने किसी राशि का नीच किया है यानि नीच की करने वाले ग्रहों के नामों में शुक्र का नाम कहीं नहीं मिलता, लक्ष्मी की इस सिफत से इसे नीच माना गया है और इस घर में केवल गुरू को ही बिठाया है। सब ग्रह खाना नं0 9 के लिये लिखा हुआ सारे फल उम्र के आखिरी हिस्सा में देंगे। यानि खाना नं0 9 में अगर शनि का फल 60 वर्ष लिखा है तो वो उम्र के शुरु की तरफ से 60 वर्ष बुढ़ापे की तरफ को होगा और यही शनि खाना नं0 2 में 60 वर्ष होगा मगर मौत के दिन की तरफ से पीछे जन्म दिन की तरफ को गिन कर। इसी तरह सब ग्रह प्रभाव देंगे। वृष राशि बैल, घर का मालिक शुक्र है, सफेद झण्डा लिए जो वृहस्पति का दुश्मन है मगर जमाने की हवा या वृहस्पति दुश्मनी इससे नहीं करता।

अंगुलियां (लम्बाई चौड़ाई, सीधी टेढी) आदि माथे पर तिलक की जगह, गुद्दा या टट्टी की जगह, स्वाभाव सर्द-खुष्क, स्वयं जाती किस्मत गुरू-स्थान, घर की किस्म यानि गुरूद्वारा बैठक घर है या चाहे खाना आदि सुसराल का मकान, सुसराल

खानदान व सुसराल के आपने घर का हाल, शाख दबा कर पैदा होने ताले पड़े, रिस्तेदारों से पाई हुई चीजें द्वारा स्त्री, धन, या दहेज नफसानी शक्ति सम्बन्ध वृहस्पति स्वाभाव (नेकी), भूख, मोह माया, दौलत, इज्जत, शराफत, स्वाद गैस के काम, बुढापे में जवानी व हवाई इश्क, बचत अज जाती कमाई खट्टा मीठा अर्क, जन्म मरण का दरवाजा, स्त्री सम्बन्ध , माता बुआ, मासी फूफी बेवा या प्यार मे डूबी औरत आदि रिस्तेदारों से दौलत, उत्तम-पश्चिम, वृहस्पति या शुक्र जैसे हों वैसा ही फल होगा। सभी ग्रह वृहस्पति का कमजोर प्रभाव होगा यह आंगन है खाना नं0 8 का और सेहन या इस घर नं0 2 का न्यायक होगा मंगल बद। वहीं रंग सफेद खाकी। वृहस्पति खाना नं0 2 व 6 का फैसला खाना नं0 8 को साथ लेकर होगा। इस घर में मंगल बद के ग्रह और पापी ग्रह स्वयं कुण्डली वाले पर बुरे असर न देंगे बल्कि इस घर में बैठा हुआ राहू भी वृहस्पति के अधीन होगा। इस घर के ग्रह आखिरी उम्र में नेक फल देंगे।

कुण्डली का खाना नं0 2 हवाई ख्याल में ताकतों में राहू केतू की बैठक का मैदान, नकली शुक्र की जगह, चेहरा खाना नं0 6 ओर सिर खाना नं0 2 दोनों का बीच माथा खाना नं0 2 होगा। भवों से ऊपर ओर दिमाग की हद से नीचे (कान के सुराख से 9 डिग्री पर और भवों को खींचा हुआ खत या रेखा दिमाग के भाग को माथे से अलग कर देता है। मस्तक पर निशानात का प्रभाव केवल उम्र पर होगा जिसकी व्याख्या उम्र रेखा की हुई है। माथे पर सारी छिपी किस्मत लिखी है। दिमाग का खाना नं0 35 हमेश जमाने की हवा से टकराता और इन्सानी किस्मत पर वृहस्पति का प्रभाव डालता है। इसके पीछे खाना नं0 20 सूर्य और खाना नं0 21 चन्द्र चमक रहे हैं। जिन दोनों के ऊपर खाना नं0 10 शनि का घर है दिमाग के सारे खाने सात साल में पूरे तौर पर पूरे हो जाते हैं यद्यपि 7 पर्वतों का प्रभाव 12 राशियों में हो चुकता है और 35 साल में सभी ग्रह अपना दौरा पूरा कर लेते हैं। 12 साल तक बच्चे की रेखा का विश्वास नहीं और 12 साल के बाद किस्मत के बदलने की आशा और 35 वर्ष के बाद दूसरा चक्र माना गया है यह खाने दिमाग की दांए बाएं हैं- वह एक ही हैं। दायां-बायां हाथ नेकी-बदी, तख्त-बख्त (शाही सदाई) तदबीर-तकदीर, राहू-केतू, नर-मादा, गर जिसका हर दो पहलू निश्चत करते हैं। इन्सान का जाती हाल या इन्सान का कुल दुनिया से सम्बन्ध और सब की साँझा किस्मत का मैदान या माथा हर व्यक्ति अपने साथ लिए फिरता है खाना नं0 2 को पैशानी माता है माथें पर तिलक लगाने की जगह (दोनों भवों का बीच व नाक का आखिरी हिस्सा का बीच)असल पैशानी या खाना नं0 2 की असली जगह है। इस तिलक के निशान की जगह छोड़ कर बाकी सभी पैशानी की जगह खाना नं0 2 का बाकी मैदान है इस बाकी में राहू केतू की बैठक या

खाना नं0 8 का प्रभाव भी माना गया है। खाना जगह (वृहस्पति का खाना नं0 2) राहू केतू साँझा, बैठक की जगह (नकली शुक्र की राशि भी है। का दरवाजा है। दूसरे शब्दों में खाना नं0 8 को राहू केतू की शनि के साथ होने की बैठक गिनें तो इस बैठक या ऐसा कि दीवान खाना की दरवाजा खाना नं0 2 राहू केतू दोनों की आपसी(मगर शनि स्वयं कायम) बैठक होगी जिसमें शनि की मौत का संबंध न होगा। केवल राहू केतू की अपनी नेकी-बुरी का मैदान गुरूद्वारा, मस्जिद, मन्दिर होगा, इस धर्म स्थान का दरवाजा दोनों भवों की बिल्कुल बीच जगह होगी जिसका मालिक वृहस्पति है जो दोनों जहान का स्वामी है जिसके रास्ते की लम्बाई के दोनों सिरों पर सूर्य और शनि (दिन-रात) मिलते हैं। यानि दुनिया से बाहर खाना नं0 8 और दुनिया का अन्दर खाना नं0 9 का बीच जमानी हाल खाना नं0 1 या **बन्द मुट्ठी के खाने (1,7,4,10)**सिंगा, घोड़े बेदो में जिस तरह खाना नं0 4 ने अपनी नेकी न छोड़ी थी इसी तरह ही खाना नं0 2 ने कुल दुनिया के सम्बन्ध न छोड़ा अगर नाभि सारे शरीर का बीच था और बन्द मुट्ठी के खानों में खाना नं0 4 बच्चों के साथ लाए हुए खजाने का भेद था तो चेहरा पर तिलक की जगह या दुनियाँ में बच्चों कि लिए बाकी सब तरफ से मिलने वाले खजाने का भेदी खाना नं0 2 हुआ इन दो खानों यानि खाना नं0 4 और खाना नं0 2 का साँझा अगर किस्मत का करिश्मा हुआ। जो ग्रह फल व राशि फल दोनों का लव लवाब भी कहा जा सकता है खाना नं0 4 बढ़ाता है चन्द्र को, खाना नं0 2 बढ़ाता है वृहस्पति को, दोनों मिले मिलाए (माता-पिता) व देन या अकेला वृहस्पति जो दोनों जहानों का मालिक है, होगा। जो बच्चे को सहायता देने के लिए खाना नं0 5 में सूर्य के साथ और खाना नं0 11 में शनि के साथ जा मिलता है वृहस्पति की इस लम्बाई को सबकी लम्बाई गिनते हैं चाहे चेहरा की चाहे माथे की। माथे की चौड़ाई कुल चेहरा की लम्बाई का 114 नेक होती है। माथे की इस परिणाम से जिस तरह चौड़ाई बढ़े इसी वृहस्पति से खाना नं0 2 से जिस तरह केतू का साथ होवे इसी तरह माथा चौड़ी होगी। जिस तरह कम प्रभाव या संबंध केतू का खाना नं0 2 से हो इसी तरह माथा लम्बी होगी। जिस तरह माथा की चौड़ाई बढ़े इसी तरह नेक प्रभाव ज्यादा हो। सारी सम्बन्धित दुनिया का संक्षेप केतू जब वृहस्पति के साथ या वृहस्पति के घरों में हो तो माथा कशादा होगी। माथा का ऊपर का हिस्सा जिस तरह बाहर को उभरा हुआ होवे इसी तरह ज्यादा कफैत-दरयाफत और चाल चलन अच्छा होगा। खाना नं0 का प्रभाव खाना नं0 6 के रास्ता खाना नं0 12 में जाने से माथा का ऊपर का हिस्सा मुराद होगी। माथे का निचला हिस्सा जिस तरह बाहर को उभरा हुआ होगा इसी तरह कौत-ख्याल ज्यादा नेक तरफ काम करने वाली होगी। खाना नं0 8 का प्रभाव खाना नं0 2

के द्वारा खाना नं0 6 में जाये। माथा पर त्रिकोन, तराजू, मच्छली, त्रिशूल, अंकुश, पदम,पंखा, तलवार या परिन्द का निशान हो तो कम उम्र मद भाग होगा, खाना नं0 2 में खाना नं0 8 के मन्दे ग्रहों का असर मंगल बुरा आदि के मिलने से शुभ होगी कि माथे पर टूटी-फूटी लकीरें बहुत हों या उनका झुकाव नीचे की तरफ चाहें हो तो अल्प आयु होगी। यानि कम उम्र होगी और जिन्दगी उम्र के आठवें साल में 64 साल तक खतरा में हो। खाना नं0 2 में वृहस्पति केतू के दुश्मन ग्रह, सात या ज्यादा लकीरें हों तो कजाक होगा। 7 मन्दे ग्रह उम्र 5 साल, माथे पर सुर्ख रंग नाड़ियां कम उम्र होने की दलील है। खाना नं0 2 में मंगल बुध या सूर्य बुध हों, हरे रंग की नाड़े शुभ होगी चाहे मर्द की चाहे औरत की हो। खाना नं0 2 में अकेला बुध या राहू वृहस्पति साँझा हो, तिलक की जगह छोड़ कर माथे पर निशान जब खाना नं0 2 हर तरह से और हर तरफ से (खाना नं0 8 की दृष्टि आदि) ख़ाली हो तो खाना नं0 2 को तिलक की जगह है। खाना नं0 2 में ग्रहों का प्रभाव मय खाना नं0 8 के माथे पर त्रिकोन हो तो हुकमरान प्रभाव वाला होगा। माथे पर तिलक की जगह केतू का निशान खाना नं0 2 में हर तरह से अकेला केतू।

खाना नं0 2 के ग्रहः-

खाना नं0 2 के ग्रह बुढ़ापे में अपना प्रभाव नेक करते हैं हाथ की हथेली पर दाएं हिस्सा हाथ पर जिस पर जिस ग्रह का निशान हो वो ग्रह हमेशा ही नेक फल देगा या खाना नं0 2 के ग्रह हमेशा नेक फल देंगे जब तक कि खाना नं0 8 खाली हो।

हाथ की अंगुलियां खाली खानेः-

साधारतयः हाथ की पांच अंगुलियां होती है और अगर गिनती में छः हो तो इस उम्र और मन्दा भाग होगा नही तो लम्बी उम्र और खुशहाल व अच्छा हाल होगा। अंगूठा नर अंगुली कहलाता है। जिसका जिक्र अलग से हुआ है। बाकी चारों अंगुलियां बारह राशियों की मालिक है जिन से सारी संसारिक कारोबार संबंधित है हर एक अंगुली की अलग-अलग शक्ति है और अंगुली हर एक पोरी या राशि का अलग-अलग प्रभाव है।

अंगूठाः- अंगूठे की लम्बाई अंगुलियों से विशेष संबंध है और इनके असर में कमी पेशी कर देती है।

1. अंगुलियों की नाखून वाली पोरीः आध्यत्मिक शक्ति। बीच वाला हिस्सा शारीरिक शक्ति-निचला हिस्सा-नफानी शक्ति।

अनामिका मध्यमा से बड़ी दौलत-मन्द मगर आसुदा कंजूस।

मध्यमा अनामिका से बड़ीः- दौलतमन्द अधिक इज्जत(साधारण संसारिक हाल)

तर्जनी मध्यमा से बड़ी:- पण्डित देश भक्ति के विचार कर्म धर्म वाला सोच कर कम खर्च करने वाला।

अनामिका तर्जनी से बड़ी:- मशहूर जिन्दगी वाला हो।

तर्जनी और मध्यमा बराबर:-नेपोलियन जैसा जमाना में एक बहादुर होगा।

तर्जनी और अनामिका बराबर:- महत्वपूर्ण जिन्दगी का मालिक हो।

मध्यमा और अनामिका बराबर:- महत्वपूर्ण जौहरिया हो, सूर्य शनि बराबर जमा-घटा बराबर।

कनिष्ठा और अनामिका बराबर:- तहरीर व तकरीर में एक सा माहिर। अंगुलियों का प्रभाव लम्बाई हर एक की अपनी अपनी राशि का मालिक ग्रह अपने अपने घर:-

नाम	अंगुली लम्बी	बहुत लम्बी	बहुत ही लम्बी	बहुत छोटी
तर्जनी	हकुमत	सोच विचार	हकुमत	आसद
मध्यमा	शीघ्र समझने वाला	अलग	मुर्दा विचार	बेबुनियाद विचार
अनामिका	दस्तीकाम	महत्वपूर्ण बहुरूपिया	शौकीन विचार वाला	मशहूरी पसन्द
कनिष्का	बोलने की ताकत	तकरीर	जबान के नुक्स तक छुपा ले	बेवफा
1. तर्जनी	निक तेज महम	ईमानदार बहादुर	साहब तदबीर	सच्चाई पसन्द
2.मध्यमा	बच्चों के ख्याल	बहम वाला	अकलमन्द	दान देने वाला
3. अनामिका	सच्चाई	हुनरमन्द	बहादुर	लालची
4. कनिष्टका	नसीहत करने वाला	हाजिर जवाब	ज्ञानी	पुख्ता राए

नोट:- नं0 1 से 4 के आगे अंगुलियों के सिरे खाना नं0 8 की दृष्टि है और फल क्रमशः सिरा नोकदार, चौक, मौल, चपटे आदि का है।

सीधी अंगुली का असर, कायम घर खाना:-

तर्जनी: हकूमत की अंगुली, इरादा की पुख्तगी, बुलन्द ख्याली।

मध्यमा: सन्यास, उदासी, अलग, गोशा, पसन्दी।

अनामिका: ख़ुद दस्ती मेहनत की आदत, हुनरमन्दी पेशावरी।

कनिष्टका: बोलने की शक्ति, दिमाग की शक्ति।

ग्रहों की दृष्टि यंत्र दूसरे को देखना:-

जो अंगुली टेडी हो जाये तो अपनी शक्ति छोड़ देती है और जिस अंगुली की तरफ झुक जाये इसी अंगुली का प्रभाव पैदा होगा। अंगुली के झुकाव से मुराद यह है कि

अंगुली की बनावट में टेडापन हो।

अंगुलियों के नाखून वाले सिरे से नीचे की तरफ जड़ को अगर गाजर की तरह बिना वनावट के मोटी होती जाये और इनको आपस में मिलाने से जड़ों में कोई खुराक न हो तो सारी उम्र आराम खुश, खुराक खुश पौशाक, उम्दा हाल, मजबूत जिस्त होता है। तंग दस्ती कभी न होगी यानि बावक्त जरूरत रूपया का बन्दोबस्त मौजूदा होगा, साधारणतय: ऐसा होगा।

अंगुली	झुक जाये जिस तरफ	असर होगा
तमाम तर्जनी		पक्का इरादा, आजाद तबीयत बढ़ने का ख्याल हौंसला भरी उम्मीद का आदमी होगा।
तर्जनी मध्यमा		मुन्दर्जा वाला का उल्टा होगा।
तमाम मध्यमा		हद से घ्यादा उदासी अलग
मध्यमा	तर्जनी	दुनियां को छोड़ जाने वाला मुर्दाख्याल उदासी ।
मध्यमा	अनामिका	एक समय खुश दूसरा लम्हा उदास विभिन्न तरह की हालत
अनामिका	मध्यमा	बुरी शान पसन्द, मध्यम सी हालत।
अनामिका	कनिष्ठा	दस्ती काम व्यापारी, पैसे का पुत्र।
कनिष्का अनामिका	अनामिका	असली लियाकत दस्ती काम को तजारत से ज्यादा अच्छा समझने वाला।

हाथ की अंगुलियों के नाखून:-

नाखून नौ महीने में पूरा हो जाता है इसलिए फटे हुए नाखूनों से पता चल जाएगा कि बीमारी किंस समय हुई थी। दुश्मन ग्रहों का नौवें खाने पर बीच में 7 छोड़ कर (प्रभाव होता है जबकि 9वां खाली हो नहीं तो कोई प्रभाव नहीं गिनते।

नाखून	असर होगा
गोल	इल्म व हुनर वाला, शुमशार हो।
चौड़े	पुट्ठों की बीमारी हो।
छोटे	तंगदिली, लालची, जल्दबाज, रंजिदा
बहुत छोटे	कम अक्ल, जल्दबाजु
दरम्याना	अच्छे और शुभ प्रभाव वाले
लम्बे	फफड़े और छाती की बीमारी, शरीरिक हालत कमजोर
पतले और झुके हुए टेढ़े	नाजुक हालत, खराब मायनों में।
नाखून का रंग -	असर होगा
हरा रंग	शरीर पुसादी

नीला	खून की कमी, बीमार
सफेद रंग	खून की कमी, बीमार
पीले रंग	दिल की बीमारी
काला रंग	उम्र भर कम दौलत

सोने या सिक्का की -परेशानी

पक्का घर नम्बर 3

घर तीसरा है पक्का मंगल, धन दौलत के जाने का ।
खेश ओ अक़ारब भाई अपने या चोरी चलाकी का ।
असर नज़र और जंगो जदल सब, महल भी उनके लेते है ।
बढ़ना बढ़ाना फर्ज़ इत्यादि, न्याय मीटर भी गिनते है ।
उठती जवानी या खून जिगर का, तना दरख्त आकाश भी है ।
खुशी गमी और साले भनोइये, सामान उनका मकान भी है ।
शेर दरिंदे इस घर रहते, त्रिलोकी भी होता है ।
ताक़त बच्चा पैदा करने, सुसराल इतना अकेला है ।
इस घर का जो रंग है खूनी, असर होता भी खूनी है ।
ग्रह जो इस घर बदी पे होवे, कहलाता वह कष्टी है ।
स्त्री ग्रह जब तीजे आवें, औरत भी वाँ मर्द कहलावें ।
शुक्र बैल और चन्द्रमा साधु, मरद बढ़ेगे बढ़ेगी आयु ।
मंगल बद-मंगलीक न होगा, शिवजी हो के दया करेगा ।
स्त्रियों की भी पूजा होगी, तीन काल वहां उन्नति होगी ।
होगी तो कुल उमदा होगी, गर न होगी-चोरी न होगी ।
बुध शनि और मंगल टेवे कहीं भी इसके बैठे हों
फल वैसे ही घर तीजे के उस टेवे में होते हों

खाना नं0 2

त्रिलोकी का भेद खाना नं0 3 से खाना नं0 9 में ही ग्रहों से ज्ञात हुआ जहां कि दैवी और देखने में दोनों जहान का मालिक वृहस्पति था जिसने दुनियां को यह सूचना देने के लिए गृहस्थियों का घर शुक्र का खाना नं0 2 को पक्का घर बनाया जिसमें आने के बाद चले जाने का पैगाम या मौत का हुक्म भी (खाना नं0 8) आने लगा। इस गुरू फकीर या वृहस्पति ने यह भेद कुत्ते के द्वारा खाना नं0 6 में भेजा। कुत्ता बोला तो इसकी आवाज फिर वापिस असमानी खाना नं0 12 में जा पहुँची इस भेद को जो चीज खाना नं0 3 से हमें और खाना नं0 8 से खाना नं0 2 में ले गई वो दृष्टि या मंगल शनि की नजर का होना कहलाया इस नजर को वृहस्पति ने पहचाना और अपने साथी संसारिक साधु कुत्ते की आवाज बुध से

प्रकट कर दिया वृहस्पति ने बात पहचानी केतू ने बुध के रास्ते धन दौलत के सुख के खाने में खबर दे दी। दोनों फकीरों की इस शक्ति को बुध ने प्रकट किया इसलिए बुध का आकाश या ससांरिक एवं दैविक शक्ति बुध सब का भेद खोल देगा। अगर बुध अच्छा तो शुक्र का बुरा फल न होगा इसलिए बुध अपना फल शुक्र में पहुंचा देता है यानि बुध के बगैर शुक्र पागल होगा और शुक्र के बगैर बुध दीवाना पागल कुत्ता होगा। जो अपने मालिक को छोड़ कर और अगर वो अपने ही घर जहां वो पागल हुआ बन्धा हो (यदि खाना नं0 12 में) तो मालिक को भी काट देगा। यद्यपि बुध ही सब ग्रहों का भेदी है और वृहस्पति सब को जानने वाला है। यह दोनों ही ग्रह राहू केतू के सिर और पांव को पहचान सकते है क्योंकि दोनों ने साँझा ग्रह वाले बच्चे माने हैं संक्षेप में खाना नं0 3 के ग्रह खाना नं0 8 (आठ) की रद्दी हालत से बचाने वाले होंगे चाहे वो नं0 3 से ग्रह स्वयं खाना नं0 11 की गन्दी हालत (दुश्मन ग्रह के साथी) में ही क्यों न हो या यू कहों कि खाना नं0 3 कुण्डली वाले पर बुरा न होगा अगर स्वयं इस ग्रह की संबंधित चीजों का संबंध गन्दा हो तो बेशक।

नजदीकी रिस्तेदार बहन,भाई, बन्धु साले बहनोई, नजर का प्रभाव(पत्थर फोड़े या तारे) जिगर खून आम खुशी गमी की औसत हालत या खुशी गमी की रेखा, स्वभाव गर्म-तर व बादर होगा दरिन्दे शेर जंगली जानवर, भाई का घर, ताए, चाचे का मकान, कमान के साजो सामान के लिए आम रिहाईश अन्तरिक, वृक्ष की शाख व तनामुराद होगी। शारीरिक शक्ति संबंधित वृहस्पति ठगी, चोरी, मुहब्बत, नुकशान, जंग व जदल, नेकी इन्साफ न्याक या फराहज मन्सूबी, बुढ़ापा संबंध, बच्चा पैदा करने की ताकत, परिवार कबीला का बढ़ना व बढ़ाना, चढ़ती जवानी का हाल, आकाश दुनिया से माया के चले जाने का रास्ता, दूसरों से की सहायता से पैदा करवा, दोस्त यार, सहायक आदमी जूनब, बुध शनि और मंगल जैसे हो वैसा ही फल होगा। इस घर में चन्द्र शुक्र, शनि राशि फल का होंगे। मंगल के पर्बतों की चर्बी का भर जाने से वृहस्पति व शुक्र का जाती फैसला क्या होगा। यह सहज है खाना नं0 11 का और सेहत या नं0 3 का न्याक होगा बुध हरा, मंगल मर्द औरत की जोड़ी या आपसी संबंध व उम्र का साथ प्रकट होगा, सम्बंधित चीजों की ताकतों का एक ही प्रभाव या एक ही क्रिया में इकट्ठे होकर काम करने समान मर्द औरत के जोड़े से बच्चा बनाना।

पक्का घर नम्बर 4

घर चौथे पेट माता चन्द्रमा, ठण्डी रोशनी माना है ।
चार तरफ का पानी दुनिया, दूध समुन्द्र दरिया हैं ।
दिल-सफर-माता-धरती घोड़ा, दिशा उत्तर, पूर्व है ।
चरिन्दे चावल दूध पिलाते, बज़ाज़ी मुर्गे - आबी है ।

धन दौलत या वक्ते जवानी, *रंग गिना है चाँदी का ।*
अनविध मोती-घर माता का, *रस होता है शांति का ।*
झुकाव तबीयत फर्श मकाना, *संबंध गिनते है मरदों का ।*
चक्र, शंख पर्वत हो पूरी, *निशान भी लेते है जो का ।*
राहु केतु घर चौथे में, *पाप से हरदम डरते है ।*
तारें चाहे न तारें मर्ज़ी, *कसम पाप की करते है ।*
ग्रह चौथे के रात क्के जागे, *या जागे वह मुसीबत में ।*
मदद कोई न हो जब करता, *आ तारे वह बुढ़ापे में ।*
एक अकेला ग्रह ख़्वाह कोई, *घर चौथे जब बैठा हो ।*
फल बुरा न वह कभी देवे, *चाहे चन्द्रमा का दुश्मन हो ।*
घर चौथा जब खुद हो ख़ाली, *आख़िर उमर तक उत्तम हो ।*
चन्द्रमा का फल घर ही देवे, *चाहे चन्द्रमा खुद नष्टी हो ।*
घर चौथे में ग्रह जो आवे, *आख़ीर चन्द्रमा वह होता है ।*
असर मगर उस घर में जावे, *शनि जहां के बैठा हो ।*
गुरु रवि और चन्द्रमा टेवे, *कहीं भी इसके बैटे हो ।*
फल वैसे ही घर चौथे के, *उस टेवे में होते है ।*

माता का संबंध , दिल, दूध, धन दौलत प्राकृतिक स्वाभाव से तबीयत का झुकाव क्या होगा। चक्रः शंख सदफ या अंगुलियों पर जो निशान शान्ति स्वभाव मर्द पर बुरा पानी होगा। लेख जाती, माता का पेट शारीरिक हालत का निशान शान्ति स्वभाव मर्द पर बुरा पानी होगा। लेख जाती, माता का पेट शारीरिक हालत का प्रभाव थोडा, दूध वाले चारपाए, पानी के जानवर, माता खानदान मासी, फूफी का मकान खाली तह जमीन धरती माता, समुद्र पार या समुन्द्र का सफर खुशी, वृहस्पति का धन हौसला, रस या फूल के रसे, **चन्द्र की चीजे, धन, मर्दो का सम्बन्ध रूहानी कारोबार,** उत्तर-पूर्व, वृहस्पति सूर्य चन्द्र जैसे हो वैसा फल होगा, शुक्र मंगल बद या मंगलीक केतु राशि फल का होगा। ग्रह असर मन्दी रफतार का कैकडा होगा। यह सेहन हैं खाना नं0 10 का और सेहन या नं0 4 का मन्दा शनि होगा । बुध का सफेद, चन्द्र राहू केतू इस घर में पाप होते हैं इसी का हल्फ किए होते हैं जिस तरह रात को जागने वाले आँख के होशियार होते हें इसी तरह ही इस घर के ग्रह रात को जगाने या अपना असर रात को दिया करते हैं या तो वो **ग्रह आखिरी समय जब कोई सहायक न हो सहायता दिलाते हैं। बुढापे में तो विशेष कर सहायता किया करते हैं।**

पक्का घर खाना नम्बर 5

घर 5वां है ज्ञान गुरु का, *तेज तपस्या होता है ।*
हवा रोशनी लड़के पोते, *वक्त आइन्दा होता है।*

औलाद जन्म ता उम्र बुढ़ापा, महल बच्चत औलाद के है ।
पाँचों ही इन्दरी हाज़मा उसका, गरमी शोहरत नेकी है ।
लिखत गुफ़त रफतार हो सायाइलम सबर ईमान भी है ।
पैवन्दी पौदे जो गिने तो, खाली जगह दर उंगली है ।
रोशनी पक्की घर पहले की, हवा अच्छी घर 5 वें है ।
दोनों पक्की इस जा इकट्ठी, दीवार मशरिकी कुण्डली है ।
उम्र औलाद तो सेहत अपनी, घर 5 वें से लेते है ।
घर 3-9- या 4 हों मंदे, असर बुरा 5 गिनते है ।
रवि गुरु दोनों से कोई, घर 10 वें जा बैठा हो ।
5वें घर चाहे दोस्त इसका, पक्की दुश्मन होता हो ।
गुरु रवि और राहु केतु, कहीं भी इसके बैठे हो ।
फल वैसे ही घर 5 वें के, उस टेवे में होते है ।

सन्तान का संबंध, सन्तान प्राकृतिक इज्जत सन्तान व अपने का धन, दौलत व किस्मत, सन्तान को सुख, बचत अज सन्तान, व अपने खून का संबंध, अंगुलियों के बीच खाली जगह का हाल, अक्ल व इस, अंगुठे पर जौं का निशान, तंगदस्ती वगैरह, स्वभाव गर्म खुष्क, आतशी, सन्तान के बनाए हुए मकान, पैबन्दी पौधे, नफानी शक्ति, सूर्य ,रूह, साया इन्सान, पांचो इन्द्रियो हाजमा, नेकी की प्रसिद्धि, मामों का सूख अगर वृहस्पति का सूर्य के दोस्त ग्रह बैठे हो, जंगल पहाड़ का संबंध , आग का भय जब दुश्मन ग्रह हो किस्मत की चमक ईमानदार सन्तान के जन्म दिन से अपने बुढ़ापे तक का जमाना शुभ होने वाला जन्म दूसरों की मदद से पैदा करवा चीजें, सम्बंधित सन्तान के, पूर्व, वृहस्पति-सूर्य, राहू-केतू जैसे हो वैसा ही फल होगा, वृहस्पति सूर्य राशि फल का होगा यह सेहत हें खाना नं0 9 का और इस सेहन नं0 5 का बुरा होगा सूर्य। सूर्य का सुर्ख पक्का, पीला वृहस्पति सूर्य साँझा होगा।

पक्का घर नम्बर -6

घर 9 वां है गुरु बजुर्गी, जड़ बुनियाद ग्रह नौ की ।
मकान जद्दी जो होवे अपना, पर उपकार बजुर्गों की ।
उम्र दादा या बाप हो अपनी, ज़माना है खेल खिलाड़ी का ।
घर कच्चा वा पक्का होवे, हाल है दुनिया गैबी का ।
माता पिता की हालत अपनी, आराम-हराम की रोज़ी है ।
करम धरम या पिछला जन्म हो, मेंढक खुश्क पानी है ।
दरियाओं से गंगा हो तो, पेट माता का होता है ।
ख़त उंगली पर लेटे खड़े हों, मणि बीरज भी होता है ।
इन्सान का धड़ चौपाया, हवा परों से उड़ता है ।
एक जहां से दूजे चलता, करम धरम से फलता है ।
जड़ नथनों की सांस दुरंगी, किस्मत का आगाज़ भी है ।

घर दूजे पे बारिश करता, समुन्द्र घिरा ब्रह्मांड भी है ।
तीजे घर का असर हो पहले, बाद गिना घर 5 का है ।
पानी मिट्टी के ऊपर उड़ता, असर पक्का घर 9 का है ।
9 वें घर के ग्रह कुल ही का, असर ख्वाहिश सब मन्दा है ।
रुह बुत के झगड़े में लेते, असल पैमाइश अन्दर है ।
मंगल बद या शुक्र बुध हो, मन्दे इस घर होते है ।
शनि केतु या तर ग्रह उमदा, चन्द्र 9 गिना लेते है ।
घर 9 वां है केन्द्र कुण्डली, धरती का जो महवर है ।
जिस्म में रुह की हरकत गिनते, हाकम सब ही ग्रह का है ।
गुरु अकेला उस टेवे में, कहीं भी उसके बैठा हो ।
फल वैसा ही घर 9 वें का, उस टेवे में होता है ।

रफतार-गफतार माता-पिता या सन्तान के द्वारा बन जाने वाले रिश्तेदार जिसका रिश्तेदारी संबंध स्वयं कुण्डली वाले के सम्बंध के बिना हो। व्यक्ति स्वयं किस ग्रह का है। चेहरा व माथे की हालत बुध की चीजें हमदर्दी खाली, मामा, लड़की दुश्मन, फुल की खुशबु, फोका पानी, हमसाया, हाथ के नाखुन का हाल मकान के आस-पास की चीजें पट्ठे ताड़े आम रिश्तेदार, स्वभाव खरीद खाकी, लड़के का सुख। केतु की चीजें हमदर्दी सच्ची, शुद्ध खटाई को, हथेली व अंगुलियों की, तना सबका हाल नाक व माथा मय वृहस्पति बुध या वृहस्पति केतू साँझे पक्षी नानका घर (नाना परिवार) का व्यवहार व साहुकार साग सब्जी, फूल पत्र, शारीरिक शक्ति साँझा सूर्य, मरने के बाद बाकी रहे हुये का हाल, स्वाद, दैवी बरकत में आन्तरिक अक्ल, खुष्की, भाव अपार नकारा खलका, जाती बीमारी की अवधि हस्ती रिश्तेदारों से पाई चीजें, शुगाल बुध केतू शुक्र जैसे वैसा ही फल होगा। मंगल, शनि राशि फल का होगा, नेकी फलना-फूलना, केतू की चीजें, यह आंगन है। 12 का आंगन या 6 का बुरा सा होगा, हरा चितकबरा बुध केतू, बुध का अच्छा फल, केतू का स्वयं केतू की चीजों पर बुरा प्रभाव मगर दूसरों पर अच्छा अगर बुध भी साथ हो तो केतू स्वयं केतू की चीजों व दूसरों पर बुरा होगा। मगर बुध का बुध की चीजों पर नेक होगा। खाना नं0 2 व 6 का फैंसला खाना नं0 8 को साथ लेकर होगा ।

चेहरा :

आकार बुध के चेहरा की सुन्दरता

केतू खाना नं0 6 चेहरे पर सभी ग्रह वृहस्पति = नाक व माथा
सूर्य = दाई आंख की पुतली, चन्द्र = बाई आंख की पुतली, शुक्र = सुन्दरता,
मंगल नेक = ऊपर होंठ, मंगल बद = नीचे का होंठ, बुध = दांत, नाक का,
शनि =बाल अधिक भवों व पलकों के विशेषकर राहू ; ठोडी

केतू = कान।

चेहरा की चौड़ाई कुल चेहरा की लम्बाई का 2/3 अगर तीन हिस्से हो तो तीन हिस्सों में से दो हिस्से नेक होते है। यह चौड़ाई जिस तरह से घटे उसी तरह से यदि ज्यादा बढ़े और शुभ हो। चौड़ाई केतू की शक्ति, लम्बाई वृहस्पति की शक्ति (सूर्य-शनि दोनों का मालिक गुरु) गोला बाहर का उभार, बुध की शक्ति, गहराई नीचे अन्दर को दबना, **राहू की शक्ति , ऊपर की शक्तियों का घटना बढ़ना ग्रहों की दृष्टि के दर्जे की शक्ति के घटने या बढ़ने से सम्बंधित होगी।** चेहरा की चौड़ाई=खाना नं0 6 के केतू से या खाना नं0 6 से जिस तरह वृहस्पति का साथ हो इसी तरह चेहरा लम्बा होगा। जिस तरह कम प्रभाव या सम्बंध वृहस्पति का खाना नं0 6 से ही इसी तरह चेहरा चौड़ा होगा। जिस तरह चेहरा की लम्बाई ज्यादा उसी तरह प्रभाव ज्यादा हो। **चौड़े चेहरा में वृहस्पति की बजाय राहू के साथ शनि की अपनी शक्तियाँ होगी।** लम्बा चेहरा वृहस्पति के साथ व संबंध से केतू में शनि की अपनी शक्तियाँ होंगी। कम होगी और जिस तरह चेहरा चौड़ाई से लम्बाई वाला होता जाए उसी तरह यह स्वयं अपनी शक्तियाँ कम होती जाएगी और लम्बे चेहरा ताला हमदर्द होता चला जाएगा।

मर्द का चेहरा व मुंह दोनों ही लम्बे हों तो शुभ होगा
मर्द का चेहरा व मुंह दोनों ही चौड़े हों ता स्वार्थी होगा
औरत का चेहरा लम्बा व मुंह लम्बा हो तो बुरे कर्मो वाली होगी
औरत का चेहरा व मुंह चौड़ा हो तो शुभ किस्मत होगी।

पक्का घर नम्बर 7

घर 7 वां है पक्का शुक्र, घूमता बुध ऊपर का है।
दोनों इकट्ठेचक्की चलती, निचला शुक्र माना है।
बुध 7वें का चक्र घुमायें, मिट्टी शुक्र होती है।
दोनों घुमावे कीली लोहे की, घर 8 वें जो होती है।
शुक्र बुध जब दोनों इकट्ठे, शनि भी अच्छा होता है।
अन्न दौलत की कभी न कोई, घी मिट्टी से निकलता है।
तरफ दक्षिण, पश्चिम पाये, औरत शान बैठती है।
हालात हथेली ज़र्रे मिट्टी के, होती शादी उन्नति है।
फल सफेदी तथा पलस्तर, घर लड़कियों के लेते है।
जैसा शुक्र हो वैसे ही सब फल, निचले पत्थर से होते है।
बिना फूल बुध तो हो पिस्तान लड़की,
जुवान नेक होवे तो शुभ की
पैदाइश हो अण्डें से, काम शक्ति हो वाह की ....।
इस तरह अक़्ल अपने, दौलत सभा की।

घर पहले के खाली होते, 7 वां फौरन सोया ।
दिन उसी ही सूर्य निकले, 8 वां जब दूजे होया ।
शुक्र बुध उस टेवे जैसे, कहीं भी उसके बैठे हों ।
फल वैसे ही घर 7 वें के, उस टेवे में होते है ।

फल तैसे ही घर सातवें के उस टेवे में होते हों
जन्म स्थान जहां का वासी, शुक्र की चीजें, शादी,

सफेदी मकान, जायदाद आदि जाहिरदारी, शरीर की शक्ति, शरीर के निशान, हथेली की हर हालत का हाल । स्वभाव कर्म पर वादी, औरत, लड़की, बहिन बुध की चीजें होती, चेहरे की चमक या रंग, गांए, पिस्तान, स्त्री घर, लड़कियों के रिश्तेदारों के घर, मिट्टी के रूप, पलस्तर या मकानो का बनना, अण्डों से पैदा होने वाले परिन्दे आन्तरिक शक्ति सम्बंधित बुध, शुक्र, फैसला की नीव व प्रवेश, दूसरी दौलत का मिलना, बुध की नाली, नस्ल दर नस्ल, व्यापार, आन्तरिक समझ, संसारिक संबंध में, समय जतानी, मैदान दुनिया जायदाद के लिए साथ लाए खजाने, शुक्र बुध जैसे हो वैसा ही फल होगा । वृहस्पति चन्द्र राशि फलका होगा । यह आंगन है नं0 1 का और आंगन या नं-7 का न्यायक होगा मंगल वही रंग सफेद बुध फूल शुक्र बीज ।

पक्का घर नम्बर 8

घर 8 वें है मौत निमानी, मंगल बद ही लेते है ।
ग्रह नर में से कोई हो 8 वें, मौत टली ही गिनते है ।
अगला हिस्सा घर पहला तो, 8 वां पीठ भी होती है ।
बद शुतर की पीठ हो अपनी, नीची ऊंची होती है ।
तरफ दक्षिण कच्चा कोयला, ज़न मुरीदी होती है ।
कच्ची चरबी खून हो मन्दा, पित्त मेदे की होती है ।
शनि मंगल का झगड़ा होता, केतु चीज़े मन्दी हों ।
छत मकान से नीचे उतरे, चारपाई भी गन्दी हों ।
घर 8वां जब बदी पे आवे; 2, 6 भी आ मिलते है ।
12 तो है दूर ही बैठा, फैसला इस का लेते है ।
मंगल बद है सबसे मन्दा, मन्दा जादू मन्तर है ।
एक अकेला हर दम अच्छा, शनि मंगल या चन्द्र है ।
घर 11 है दुनिया का अन्दर, 8 को बाहर गिनते है ।
*रीढ़ की हड्डी है खलिस केतु, बाकी पीठ है मंगल बद ।
घर 11 की चीज जो आवे, छत गिरी ही लेते है ।
महीना का पानी या दूधहो छतपर, बुध चाँदी से बांधते है ।
आतिशी शीशा जब कभी चमके, खतम कहानी गिनते है ।

शनि मंगल और चन्द्र टेवे, कहीं भी इसके बैठे हो ।
फल वैसे ही घर 8वें के, उस टेवे में होते है ।

मंगल शनि ,चन्द्र अगर तीनों मे से हर एक अकेला-अकेला हो तो अच्छा फल नही तो बुरा फल।

उम्र रेखा का शुरू वृहस्पति के पर्वत की जंड और सेहत रेखा के कटने का शनि का हैडक्वाटर नकली हैं। खाना नं0 8-11 में शनि का राहू केतू का संबंध खाना नं0 8 शनि का हैड क्वार्टर हैं जहाँ कि राहू केतू नेकी बदी के कारखाने शनि को पहुँचाते हैं। इस घर में अगर कोई भी नर ग्रह आ जाए (सूर्य, मंगल वृहस्पति अकेला या साँझा या फिर हर ग्रह साँझा) तो यह घर मौत का घर न होगा। यानि शमशान का दरवाजा बन्द होगा लेकिन मौत न होगी। राशि नं0 8 मंगल का घर या लाल झण्डे वाले का स्थान हैं जिसे किसी ने ऊच्च नही किया। इसकी अपनी मां ने या चन्द्र ने ही नीच कर दिया हैं और खाना नं0-8 लड़कों किया। सब के लिए ही मौत का घर हो गई हैं। इसी वजह से शरीर ने दिल को अपना सहारा बनाया है कि मौत से बचाते रहें। मगर चन्द्र भी पानी होता समुन्द्र ही में चला जाता हैं चन्द्र को समुन्द्र भी माना हैं या मौंत के डर से माता का अपना दिल भी बड़े समुन्द्र में छुप जाता हैं और मौत का खाना ऊँचा नही होता । आखिर सब का आँख पत्थराने पर (शनि के आखिरी समय में) रुपये के आठ आने ही मिलते है यानि अपनी कमाई के रुपये का आधा या नेकी व बदी की दो चीज़ों से एक अठन्नी ही साथ ले जाता हैं जिस तरह खाना नं0 8 में राहू केतू साँझा उनके अपने दुश्मन ग्रहों का जोर बढ़ता हैं उसी तरह ही **ऐसा व्यक्ति जिन्न मुरीदी और जादु मंत्रो की विशेषता की और बढ़ने वाले हैं।**

स्वयं शनि की बुराई, ताए-चाचे, मौत अपने बुर्जुर्गो से संबंधित शमशान, श्मशान भूमि कोयले की चीजों का जलना, मंगल बद की बुराई, बेकारी की किस्म, स्वभाव मर्द आतशी, दुश्मन, केवल मकान, बिच्छु जंगली जानवर पीठ ऊँट, पेडों को नष्ट करने वाला, कपड़ा कच्ची चरबी, नफसानी शक्ति संबंधित शुक्र, बुध, बुरे हाल, पित्त जो मैदे में गर्मी आदि से हो जाए, मैदा खराब कड़वाहट, बदी हर एक का फन्दा, दुनिया का बाहर, मौत निमानी बीमारी शनि-मंगल-चन्द्र जैसे ही हों वैसा ही फल होगा । चन्द्र राशि फल का होगा । यह सेहन है नं0 2 का और सेहन या नं0 8 का न्याक होगा। **चन्द्र, खूनी लाल काला रंग, खाता नं0 2,6 का फैसला खाना नं0 8 को साथ लेकर होगा।**

पक्का घर नम्बर 9

घर 9 वां है गुरु बजुर्गी, जड़ बुनियाद ग्रह नौ की ।
मकान जद्दी जो हो अपना, पर उपकार बजुर्गों की ।
उमर दादा या बाप हो अपनी, . जमाना है खेल खिलाड़ी का ।

घर कच्चा या पक्का होवे,	*हाल है दुनिया गैबी का ।*
मात पिता की हालत अपनी,	*आराम-हराम की रोज़ी है ।*
कर्म-धर्म या पिछला जन्म हो,	*मेंढक खुश्क पानी है ।*
दरियाओं से गंगा हो तो,	*पेट माता का होता है ।*
ख़त उंगली पर लेटे खड़े हों,	*मणि बीरज भी होता है ।*
इन्सान का धड़ चौपाया,	*हवा परों से उड़ता है ।*
एक जहां से दूजे चलता,	*करम धरम से फलता है ।*
जड़ नथनों की सांस दुरंगी,	*किस्मत का आग़ाज़ भी है ।*
घर दूजे पे बारिश्श करता,	*समुन्द्र घिरा ब्रह्माण्ड भी है ।*
तीजे घर का असर हो पहले,	*बाद गिना घर 5 का है ।*
पानी मिट्टी के ऊपर उड़ता,	*असर पक्का घर 9 का है ।*
9 वें घर के ग्रह कुल ही का,	*असर ख्वाहिश सब मन्दा है ।*
रुह बुत के झगड़े में लेते,	*असल पैमाइश अन्दर है ।*
मंगल बद या शुक्र बुध हो,	*मन्दे इस घर होते है ।*
शनि केतु या तर ग्रह उम्दा,	*चन्द्र 9 गिना लेते है ।*
घर 9 वां है केन्द्र कुण्डली,	*धरती का जो महवर है ।*
जिसम में रुह की हरकत गिनते,	*हाकम सब ही ग्रह का है ।*
गुरु अकेला उस टेवे में,	*कहीं भी उसके बैठा हो ।*
फल वैसा ही घर 9 वें का,	*उस टेवे में होता है ।*

खाना नं0 9 के ग्रह किस्मत के नींव ग्रह होते हैं

इस खाने में खाना नं0 3 और खाना नं0 5 के ग्रहों का असर भी आ मिलता है औलाद की पैदाइश के दिन से खाना नं0 5 का असर न सिर्फ खाना नं0 9 में जाने लग जाता है बल्कि बाप-बेटे की साँझा किस्मत 70-72 वर्ष सवाल पैदा करने लग जाता है। खाना नं0 3 का प्रभाव कुण्डली वाले के अपने जन्म से ही खाना नं0 9 में ही मिलता हैं। सन्तान की जन्म के दिन से पहले खाना नं0 5 का प्रभाव खाना नं0 9 में गया वो बाप बेटे की किस्मत पर प्रभाव नहीं करता बल्कि खाना नं0 9 की दूसरी चीजें यानि कर्म धर्म और कुण्डली वाले के अपने बुर्जुर्गों के संबंध में प्रभाव रखता है सन्तान के जन्म के दिन से खाना नं0 5 का प्रभाव कुंभ कुण्डली वाले की अपनी किस्मत (जो अब बाप बनता है) पर प्रभाव करता है इसी तरह की खाना नं0 -3 का प्रभाव भाई की पैदाइश के दिन से खाना नं0 9 में जब जाएगा तो कुण्डली वाले के अपने बुजुर्गों के संबंध में हस्तक्षेप देगा। लेकिन अगर इसका भाई पहले ही मौजूद हो तो बड़े भाई की किस्मत का प्रभाव कुण्डली वाले में आयेगा। खाना नं0 3 की इस शक्ति की वजह से मंगल की राशि नं0 8 मंगल बद मौत ने भी उल्टा देखा क्योंकि मंगल नेक व बद दोनों भाई ही है उम्र के पहले 35 साला ग्रह में आकर छोटा भाई भी हो और सन्तान भी शुरू हो जाये

तो खाना नं0 5 का प्रभाव खाना नं0 3 के प्रभाव पर प्रबल होगा । अगर खाना नं0 3 व 5 दोनों ही भारी हों तो किस्मत की नीव पर केवल खाना नं0 9 के ग्रह माने जायेंगे अगर खाना नं0 9 भी खाली हो तो यह शर्त ही उड़ गई । खाना नं0 5 का प्रभाव कुण्डली वाले पर उसके बुढ़ापे में होता है और खाना नं0 3 का बचपन में या यूं कहो कि खाना नं0 3 का प्रभाव उम्र के पहले 35 साला चक्र में होता है और खाना नं0 5 का प्रभाव पर होगा और दूसरे 35 साला चक्र में खाना नं0 5 का प्रभाव किस्मत की नींव पर होगा । उम्र के दूसरे 35 साला चक्र में खाना नं0 5 का प्रभाव खाना नं0 3 के प्रभाव पर प्रबल होता। किस्मत की नीव पर होगा । हर हालत में खाना नं0 5 प्रबल होता है और नं0 3 नीचे दब जाने वाला खाना नं0 9 का अपना प्रभाव समय साथ होगा । पहले घरों के ग्रह बाद के घरों के ग्रहों को अपनी दृष्टि के समय जगा दिया करते हैं । अगर बाद के घरों में कोई ग्रह न हो तो वो खाना नं0 11 में तो ग्रह कोई न कोई मौजूद है अगर खाना नं0 3 खाली है तो इस हालत में खाना नं0 11 के ग्रह सोए हुए माने जाएंगे जिनको जगाने के लिए किस्मत को जगाने वाले ग्रह की जरूरत होगी। बाद के घरों के ग्रहों को जागने के दिन से किस्मत का जागना शुभ होगा। इस तरह का (यानि खाना नं0 3 या 5 के ग्रह का दौना आया तो नं0 9 के ग्रह जारी हो गए) अगर खाना नं0 9 के ग्रह विशेष-विशेष सालों में जागें तो खाना नं0 9 में दिया प्रभाव पैदा होगा । जिस साल से (वर्ष फल अनुसार) पहले घरों के ग्रहों का पहला दौरा शुरू, उस साल से बाद के घरों के ग्रह जाग पड़े होंगे और उस साल से पहले वो सोए होए माने जाएंगे । सालों में वर्ष फल के हिसाब से शुरू हों या न हों तो भी ऊपर का फल देंगे । शुरू उम्र की तरफ से अपनी-अपनी उम्र में शुरू हो कर (यानी वृहस्पति नं0 16 साल उम्र से, सूर्य 22 साल उम्र से, चन्द्र 24 साल से, शुक्र 26 साल से मंगल नेक 13 साल मंगल बद 15 साल से दोनों साँझा 28 बालउम्र से, बुध 34 साल उम्र से, शनि 6 साल, राहू 42 साल से, केतू 48 साल उम्र से (अपनी-अपनी उम्र तक ही यानि वृहस्पति नं0 16 साल से शुरू होकर 16 साल ही यानि 32 साल उम्र तक, सूर्य-22 से शुरू होकर 22 साल उम्र तक आदि-आदि ऊपर का फल देंगे । वर्ष फल के हिसाब खाना नं0 9 वाले का प्रभाव इसकी अपनी आम तौर पर शुरू होने की अवधि की बजाए जन्म दिन से ही शुरू होता है तो वे ग्रह जन्म दिन से अपनी उम्र तक ही ऊपर का फल देगा शनि बुध 34 साल, मंगल 28 साल आदि या थोड़े शब्दों में खाना नं0 9 के सभी ग्रह जब कभी भी शुरू होवे तो अपनी-अपनी आम उम्र की अवधि तक फल देंगे । सिवाए शनि के जो 60 साल फल देगा और अच्छा दंगा। इस तरह खाना नं0 9 में शुक्र या बुध और मंगल बद सबसे बुरे और शनि खाना नं0 9 सबसे अच्छा और सबसे लम्बा समय का होगा ।

वृहस्पति के खाना नं0 9 में ऊपर दिए गए विशेष-विशेष समय मे जागे गए ग्रहों का प्रभाव :-

वृहस्पति=निहायत शुभ , **सूर्य** = निहायत शुभ , **चन्द्र** = निहायत शुभ
शुक्र=मंगलबद का प्रभाव, मंगल= निहायत उत्तम, बुध = मंगलबद का प्रभाव
शनि = शुभ, **राहू**= शुभ यद्यपि खर्चा मगर शुभ खर्चा,
केतू = शुभ सफर

वर्ष फल का साल या उम्र का साल जब ग्रह मुतलफा की स्थित उम्र का हो और वह ग्रह आ जाए खाना नं0 9 में तो इस जगह का दिया हुआ प्रभाव जरूर होगा या अगर जन्म कुण्डली में ग्रह संबंधित नं0 9 में हो तो भी यही नतीजा होगा।

इस घर के ग्रह शुक्र उम्र में और हर एक ग्रह अपने शुरू होने के दिन से अपनी पूरी उम्र तक फल देंगे । बुध का इस घर से संबंध अलग जगह भी दर्ज है ।

खाना नं0 9 किस्मत रेखा का आरम्भ दृष्टि खाली :-

किस्मत रेखा की नींब पर हर पर्वत के निशान का अलग-अलग प्रभाव होता है । नींव के गायने वह जगह जो वास्तव में शुक्र और चन्द्र की बिलकुल मध्य सीमा है। इस पर हर ग्रह के संबंधित निशानात अपना-अपना प्रभाव देंगे। जद्दी बुजुर्गाना बचत अज बुजुर्गा कर्म-धर्म, मजहब, सांस, परोपकार, बुजुगों की उम्र (बाप दादा) नेक संबंध, अपनी किस्मत की नींब माता-पिता की हालत आराम या हराम खोरी अंगुलियों पर सीधे या लेट खत, हवा, माता का पेट, रूहानी हालत का प्रभाव, स्वभाव गर्म खुष्क, वीर्य-मणि, शरबत, नथुने खुष्की व पानी के साँझे जानवर मेंढक आदि, दरयाई नील गाय, जद्दी मकान, बुजुर्गो के बनाये गए कच्चे पक्का-मकान, हर हिस्सा की आन्तरिक पैदाइश, माया हंस जानवर, किस्मत का आरम्भ, दैवी दुनिया मूल जड़ शारीरिक शक्ति संबंधित शुक्र, बुध, बचपन का स्वयं जाती जमाना, जमाना मासबी, पिछला जन्म, दूसरों की मदद से पैदा करने की हालतें, मगर, वृहस्पति अकेला जैसा हो वैसा ही फल होगा। यह सेहन है नं0 5 का और सेहन या नं0 9 का न्यायक होगा वृहस्पति जरूर बुध या शुक्र या मंगल सबसे बुरे ग्रह होंगे । शनि उम्दा 6 साल नेक होगा । इस घर के ग्रह शुरू उम्र में और हर एक ग्रह अपने शुरू होने के दिन ये अपनी पूरी उम्र तक फल देंगे । **खाना नं0 9 के ग्रहों का उपाय रंग के द्वारा फर्श मकान से होगा।**

पक्का घर नम्बर 10

घर 10 वां है शनि का अपना, खुद विरासत लाता है ।
सुख पिता को या उसे होवे, वृष मकान 3 रहता है ।
चार तरफ की चीजे दुनिया, चाला की मक्कारी हो ।
सामान खुराक या वक्त हो शादी, तरफ गुरब की होती है ।
ईंट पत्थर और काठी इसकी, कांटे बाड़ भी होती है ।

काली खांसी उमर पिता की, ज़हर दरिंदे होती है ।
त्रिकोण बड़ी चौकोर हो लम्बी, नमक स्याह और तेल भी है ।
आम सलाह बरताओ दुनिया, नज़र ग्रह की होती है ।
लोहा लक्कड़ या कीड़े मगरमच्छ, ताकत बिजली होती है ।
नज़र उमर या झपट कौए की, दहशत साँप की होती है ।
बाल जिस्म के काले भूरे, ख़ुशी ग़मी भी होती है ।
साँप का घर और आँखकी पुतली, रंग स्याह भी होते है ।
गाय भैंस हो लोहे रंगी, दुम ज़हरीले होते है ।
अंधेरा या ख़तम रोशनी, आर द्वार इकट्ठा हो ।
सिफ़र जमा कुल एक की दुनिया, किस्मत सब की 10वें हो ।
घर 10वें में तीन ग्रह तो, चलते शनि से है ।
राहु केतु और बुध तीसरा, तीनों ही शक्की है ।
ग्रह पापी उस टेवे में जैसे, कहीं भी इसके बैठे हों ।
फल वैसे ही घर 10 वें के, इस टेवे में होते है ।

अगर खाना नं0 10 बुरे ग्रहों से बुरा रहा हो तो कुण्डली अन्धे ग्रहों की होगी। चाहे सभी ही ग्रह या शनि स्वयं भी उच्च घरों के हों । अन्धे की तरह अपना फल देंगे । उदाहरण के तौर पर देखें शनि खाना नं0 10 विरासत पिता को उसकी सुखद मकान जायदाद द्वारा बुजुर्गो, गर्मी, कष्ट, दुःख गैर संबंध छीगरां गैर हकीकीं बडी त्रिकोन, बड़ी मत्तेल, अन्धेरा, स्वभाव सर्द खुष्क, खाली बालिद की उम्र 3 साल लगातार रहने का मकान, कीड़े स्याह, बाल स्याह, या भूरे, काली खांसी, मगरमच्छ, सांप दुम या जहरीले जानवर, आन्तरिक शक्ति सम्बंधित शनि मक्कारी, होशियारी, सामान खुराक लोहा लकड़ ईट-पत्थर, बाल कांटे, बाड़-सेहत शरीर की काठी, या ढांचा साधारण व्यावहार द्वारा परामर्श, सभी सम्बंधित गृहस्थियों से वर्ताब शक्ति बिजली समय शादी व जतानी, ख्याली दुनिया, साथ लाई हुई चीजें, मर्दो का संबंध ठगी होशियारी, मगरब, पापी ग्रह जैसे हो वैसा ही फल होगा । बुद्ध या केतू राहू शक्की होंगे। यह सेहन है नं0 4 का और इसका नं0 10 का न्यायक होगा चन्द्र काला लोहा रंग ।

पक्का घर नम्बर 11

घर 11 का शनि है मालिक, पर दरबार गुरु का है ।
घड़ा भरा पानी है बेशक, बरताबा तो गुरु ही है ।
फ़कीरकी झोलीकी किस्मत गिनते, जन्म-वक्त खुद आमद है ।
शनि गुरु का हलफ उठावे, फैंसला करता बाद में है ।
ऊरध श्रेष्ठ धन रेखा तो, किसमत का मैदान भी है ।
लालच दुनिया मकान ख़रीदे, उमर तादाद औलाद भी है ।
छिलका पोस्त शान और शौकत, हाथ की किस्मत खुलना है ।

दो मुंह के यह साँप का घर तो, खुद-रौ बूटा बेल भी है ।
दीवार मग़रबी पहला हाकम, मिसलें राहु केतु है ।
दूध माता का याद है कर के, फैसला करता शनि भी है।
अहवाल है नाखुन रंग भी उनके, एक अकेला दो भी है ।
खुद बेड़ी को पापी चला दें, डूब डोबाते वह नहीं है ।
धन दौलत है 11 आता, घर तीजे से जाता है ।
मंगल कुण्डली कहीं हो बैठा, फैसला इस का होता है ।
बुध गुरु नहीं इस घर अच्छे, या कि चन्द्र बैठा हो ।
उमर पहली है शक्की गिनते, जब घर तीजा मंदा हो ।
किस्मत का ग्रह उस घर तीजे, मदद न 5 से होती है ।
घर 3 खाली 11 सोवे, किस्मत शनि पे होती है ।
ग्रह मुशतरका बुरा नहीं करते, बंद मुट्ठी के ख़ानों में ।
फल 2-11 अपनो अपना, धर्म मंदिर गुरुद्वारा में ।
घर 11 में ग्रह जो आवे, तासीर शनि में वह होता है ।
असर मगर उस घर में जावे, गुरु जहां टेवे बैठा हों ।
शनि गुरु उस टेवे में जैसे, कहीं भी उसके बैठे हों ।
फल वैसे ही घर 11 के, उस टेवे में होते है ।

खाना नं0 11 अगर वृहस्पति आया का है । हर तरह की कमाई जिसमें सभी ग्रहों का प्रभाव शामिल है, श्रेष्ठ, रेखा, ऊर्ध्व रेखा, धन रेखा, किस्मत रेखा, हाथ की हथेली आदि सबके सब इसमें शामिल हैं । इन खानों के लिए सभी ज्ञान की जानकारी सबसे ज्यादा होगी । यह आमदनी का घर है बचत का नहीं, शनि बचत, क्या होगी इसका जवाब इस खाने से नहीं मिलता.... ।

राशि नं0 11 सब ग्रहों ने कोशिश की मगर इसे बीच में कोई न कर सका, आखिर पर शनि स्वयं बदनामी उतारने के लिए कुम्भ पानी का भरा हुआ घड़ा शगुन के तौर पर ले आया, कि अगर चन्द्र (पानी)से ही मौत का घर ऊँचा हो सकता है तो मेरे भी काम आएगा । मगर खाना नं0 11 सबकी अपनी-अपनी आमदन है । इसे कौन नीचा करे। सबकी किस्मत की मंजिल है इसलिए कहा जाता है कि मेरी किस्मत कौन धो देगा । या मेरी किस्मत को तो कोई नहीं धो सकता। सबको अपना-अपना हिस्सा मिल ही जाता है और फिर जब यह खाना एक से ग्यारह हो गया किस्सा संक्षेप में इसी पानी के घड़े के कतरे-कतरे पर सबने लड़ना और मरना है । जिसे किस्मत देगी वो लेगा । शनि वह अपने घर में ही इस घड़े को रखे और सबसे होशियार आंखों से ही निगरानी क्यों न करें मगर बरताने वाला वृहस्पति ही सबका गुरु है। राहू केतू के पैदा किए हुए कारनामों को साथ लेता हुआ खाना नं0 4 में पाप छोड़ने का चन्द्र के सामने अक्षर उठाते हैं पापी ग्रह खाना नं0 11 राहू केतू का एक अकेला दो

ग्यारह का होगा यानि जब एक ही का प्रभाव खाना नं0 11 में आये तो अकेले की शक्ति यानि जब 9-3 या 11-5 दोनों बैठे हों तो केवल एक का नं0 11 में प्रभाव होगा। जब शनि भी साथ होकर खाना नं0 11 में प्रभाव हो तो ग्यारह गुणा प्रभाव होगा (अच्छा या बुरा)। खाना नं0 11 दुनिया का अन्दर इस घर में सिवाए पानी ग्रहों के सब ग्रह शहद की मक्खी की तरह जब तक अन्धेरा रहे अच्छा होगा। जब रोशनी का समय हो हर स्थान पर किया हुआ शहद खर्च-खर्चा कर या खा-पीकर उड़ जाएगा। बेरी के पेड़ गला घोटने वाले बैर (शनि, सांप की राशि) जाहिरा उम्दा, झाग के पताशे गन्दी हालत में ग्रह से सम्बंधित चीज का उपाय नेक असर कायम करेगा या उस ग्रह शनि खाना नं0 11 वाले ग्रह के सहायक दोस्तों का उपाय भी सहायक होगा । बशर्ते कि पापी ग्रह के वर्षफल के हिसाब से खाना नं0 11 में न हों अगर खाना नं0 1 में पापी ग्रह ही हो तो खाना नं0 9 में जाए हुए ग्रह की सम्बंधित चीज के उपाय से नेक प्रभाव होगा। अगर खाना नं0 9 खाली ही हो तो **वृहस्पति का उपाय सहायक होगा।**

मैदान किस्मत

समय जन्म, सुना का रास्ता दहाना माता-पिता की समय जन्म पर माली हालत, बालिहाज, आमदन, लालच, उग्र तक जाती आमदन, तायदाद। सन्तान, सन्तान की उम्र, शान व शौकत, हाथ की किस्मत, हर अजूमों, नाखूनों का हाल व रंग, आदि माथे के सिवाए तिलक की विशेष जगह, परवरिश, शनि का जाती स्वभाव ने फैसला, स्वभाव गर्म, तप, बादी, खरीद कर्दा मकान जो स्वयं बनाए हो, पोस्त खाल या छिलका मान की शान व शौकत (जाहिरदारी) दो मुंहा सांप, अर्क, पहला हाकिम, खुदरों बेल बूटे या जौनयाल, नफसानी शक्ति, सम्बन्धित शनि, दुनिया का अन्दर माया का दुनिया में आने का रास्ता, दूसरों की सहायक से पैदा करते हुये आमदन के द्वारा शनि, वृहस्पति जैसे हो वैसा ही फल होगा । मगर धन दौलत का फैसला मंगल से होगा । यह आंगन है नं0 3 का और नं0 11 का न्यायक होगा सूर्य वृहस्पति काला लोहे रंगा । इस घर में (राहू केतू शनि) पापी ग्रह एक अकेला या दो ग्यारह होगा। शनि जब खाना नं0 3,5,9,11 में राहू या केतू बैठे हों तो केवल एक का नं0 11 में प्रभाव दें तो अगर ग्यारह गुणा होगा, अच्छा या बुरा ।

पक्का घर नम्बर 12

घर 12 है सुख गृहस्थी, गुरु राहु दो बैठे हैं।
मछली ढूंढे पानी बादल का, बचन सराफ इकट्ठे हैं।
धन की थैली 7 वें होवे, मर्द बोलते 6 वें हैं।
घर 8 वें से उमर मिले तो, बने महल घर दूसरे में।
गज साधु हों मवेशी पाले, आबाद वीराना मिलते हैं।

शोहरत दुनिया हड्डी उसकी, खून नसल का गिनते है ।
निशान पेशानी उंगलियां, महल पड़ौसी होता है ।
खर्चा जाती दिमाग की हरकत, सुसराल का कर्ज़ा होता है ।
मर्द औरत का उमर संबंध, हाथ झुकाओ दोस्त है ।
पाँव के उसके नाखुन लेते, हाथों की हथेली वृहस्पति है ।
तरफ जनूबी पूर्व हो तो, पालना बेवा होता है ।
एक खत्म से दूजा शुरु हो, 12 जहां 2 होता है ।
ग्रह 12 न गर कोई बोले, घर 2 में वह बोलता है ।
फल घर 12-2 का इकट्ठा, साधु समाधि होता है ।
खुद इन्सान की पेश न जावे, हुकम विधाता होता है ।
सुख दौलत और साँस आखिरी, उमर का फैसला होता है ।
शनि गुरु और राहु टेवे, कहीं भी उसके बैठे हों ।
फल वैसे ही घर 12 के, इस टेवें में होते है ।

इसी असूल के हौंसला इन्सान 12 राशियों के बारह साल को गुजारता है कि आखिर कभी न कभी 12 साल के बाद ही मालिक (वृहस्पति) सुन ही लेगा और यह सच्च है कि 12 साल के बाद सब की अमुमन सुनी जाती है और फिर वही वृहस्पति को जगाना और उसके बदलने का खाना नं0 एक सूर्य निकल आता है। अर्क मिट्टी व हवा, अचानक ख्यालात का भासरना श्राप आशीर्वाद, वायदा व वासता अर्जी के अनुसार, आगमन चालाकी की चमक, बदनामी की प्रसिद्धि, हथेली पर वृहस्पति के खत, अंगुलियों पर वृहस्पति के निशान आबाद-बिराना, हडडी, हटाई तुख्ती, हवाई, खानदानी खुन हथेली व अंगुलियों अंगूठे सहित अन्दर या बाहर को झुकाव, पांव के नाखून, लक्ष्मी अज़ स्त्री से संबन्ध , स्त्री व लक्ष्मी सुख, पैदाइश के समय माता-पिता का सुख, पडौसियों का मकानात संसारिक धन दौलत का सुख, शारीरिक शक्ति से सम्बन्धित शनि, आखिरी वक्त, वक्त रहात आकबत कूच का रास्ता, स्त्री से सम्बन्धित, मर्द औरत का बाहरी साथ के लिए गृहस्थी सुख, दूसरे द्वारा पाई हुई चीजें, जनूब-मशरक, शनि वृहस्पति राहू जैसे हो टेवे वैसे ही फल देगा। बुध राशि फल का होगा । यह आंगन है खाना नं0 6 का और खाना नं0 2 का न्यायक पीला-नीला मगर अलग-अलग वृहस्पति की दो जहान की शक्ति का फैसला राहू से होगा।

साँझे खाने

खाना नं0 6 मे जब कुत्ते को माना था तो इसका दूसरा साथी राहू खाना नं0 2 में और वृहस्पति दोनों (राहू केतू) को चलाने वाला खाना नं0 2 में बैठा है । खाना नं0 2 में वृहस्पति है और गुरु द्वारा इसमें खाना नं0 8 का प्रभाव

आया। खाना नं0 8 पापी ग्रहों की (तीनों ही राहू केतू शनि) बैठक है और खाना नं0 2 केवल राहू केतू की बैठक है यानि जब खाना नं0 8 का प्रभाव 2 में जाए तो शनि का बुरा प्रभाव साथ लेंगे। लेकिन जब खाना नं0 2 का असर खाना नं0 6 में जाए तो केवल राहू केतू का प्रभाव (इस वजह से खाना नं0 2 को शुक्र) की राशि माना है क्योंकि राहू केतू साँझा केवल हवाई शुक्र के घर को ही हवा का मालिक वृहस्पति सम्भाल सकता है। खाना नं0 6 से जब खाना नं0 12 में प्रभाव गया तो खाना नं0 6 में से बुध का प्रभाव भी आ मिला जो अकाश व गोल दायरे का मालिक है। इस तरह खाना नं0 8, 2, 6, 12 में हर तरह का झगड़ा हुआ पाताल और आकाश में हर तरफ बुध व वृहस्पति की चारों तरफ घूम लेने वाली गांठ में शनि के चारों तरफ सार का लेने की शक्ति खड़ी हो गई बुध और वृहस्पति ने भी सूर्य और शनि दोनों का ही साथ दिया गोरवों दोनों बुध और वृहस्पति बाहर दुश्मन है। इन चारों तरफों की शक्ति वाला खाना नं0 4 से चन्द्र से जो खाना नं0 4 का मालिक है अपनी दुश्मनी के स्वभाव का सबूत दिया इस चक्र के बुरे और भले हो जाने के कारण से चन्द्र ने सबकी उम्र की शक्ति अपनी काबू की और सबकी आयु का मालिक हुआ और सभी के सफर में अपना प्रभाव डालना की ताकत पकड़ी।

ग्रह से खाना नं0-5

सूर्य-मंगल = खाना नं0 1, शुक्र=खाना नं0 2, बुध-मंगल = खाना नं0 3, मंगल-शुक्र = खाना नं0 4, सूर्य-वृहस्पति = खाना नं0-5, बुध-केतू = खाना नं0-6, शुक्र-बुध = खाना नं0-7, मंगल-शनि-चन्द्र= खाना नं0-8

दिमाग के खाने

सिर (दिमागी शक्तियाँ राहू की, ढांचा बुध का) कुण्डली का खाना नं0-12 कान के सुराख 9 डिग्री पर सिर पर और भागों की तरफ खिचा हुआ रेखा दिमाग के हिस्से को माथा से अलग कर देगा। सात साल तक दिमाग के खाने पूरे नहीं होते। 42 खाने राहू की 42 साल की राजधानी जो सिर की लहर का मालिक है।

कुण्डली खाना	राशि	दिमागी	सम्बन्धित	ग्रह	असर ग्रह	ताकत	हरकत
7	तुला	2	इश्क	शुक्र	औरत	मिट्टी	इश्क
11	कुम्भ	7	जिन्दगी बढ़ना	वृहस्पति	औलाद	उम्र और लाभ	लालच
5	वृश्चिक	8	हमला रोकने की ताकत	मंगल बद	मौत	खाना	बदी
10	मकर	13	होशियारी	शनि	जायदाद	देखना	मक्कारी
5	सिंह	15	खुद्दारी	वृहस्पति	सुख	औलाद	शोहरत
6	कन्या	16	इस्तकलाल	केतू	सुनना	चलना	पांव की हरकत
3	मिथुन	17	न्याय-पसन्द	मयनेक	भाई	पीना	नेकी
7	तुला	18	भरोसा	बुध	सिर	बोलना	
9	धन	19	मजहब		एक विद्या	हवा	अक्ल
1	मेष	20	बुजुर्गी	वृहस्पति	पिता जिस्म	आग	सांस
4	कर्क	21	हमदर्दी	सूर्य चन्द्र	माता दिल	पानी	गुस्सा शान्ति

आग के प्रयोग में दिमाग का बायां हिस्सा आता है और तभी ही अचानक प्राकृतिक तौर पर एक हिस्से के प्रभाव में दूसरे हिस्से का कोई खाना रेखा में पहली राशि मेष जिसमें सूर्य ऊँच है, मुंह ठोकना या सबसे उत्तम हालत की शक्ति वाले सूर्य को पहले ही घर में बन्द कर देना या दुनिया की सभी शक्तियों के विरुद्ध काम कर दिखाना डाला करता है इन सभी खानों के दायें और बायें हाथ से सम्बन्धित है प्राकृतिक के सितारों का प्रभाव दिमाग के खानों पर होगा। दिमाग का अक्षस हाथ की रेखा के दरिसाओं के पानी से प्रकट होगा। दिमाग का बायां हिस्सा दाएं हाथ पर दिमाग का बांया हिस्सा बायां हाथ पर दिमाग का दाया हिस्सा बांए हाथ पर रेखा के दरियाओं में अपना प्रभाव डालता है जिस तरह से दिमाग में यह टुकड़े स्थित जगह और स्थित शब्दों से गाने गए हैं। इसी तरह ही इनका असर देखने के लिए सामुद्रिक में पर्वत और ग्रह हमेशा के लिए विशेष-विशेष जगहों पर स्थित कर लिए गए है।

कुण्डली का दिमाग के खानों से संबंध :-

ग्रह अकेले-अकेले या साँझे होकर जो हाल इन्सानी दिमागी हालत का कर सकते है वैसे ही वही हालत इन्सानी किस्मत की दो ग्रह कुण्डली में करेंगे। यह जो हालत ग्रहों के हिसाब से इसकी किस्मत की होगी वही हालत दिमाग की होगी।

ां के पक्के घर दिमाग के 12 खाने :-

इन्सानी दिमाग के वही 12 खाने कुण्डली में ग्रहों के पक्के तौर पर स्थित घर हैं जो ह राशियों से बाद किए गए है । दिमाग के दांए और बांए हिस्से में इसी गिनती के हैं ।

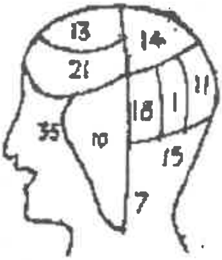

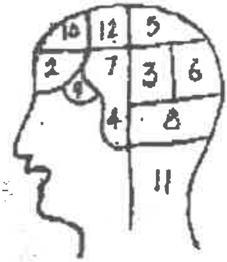

ा कुण्डली ग्रहों के पक्के घर **चन्द्र कुण्डली दिमागी खाना नं0**

टेवे के अनुसार जब खाना नं0 एक देकर बमुजब लाल किताब दुरूस्त हो चुका हो फोटो की शक्ल पर दिए हुये खानों में सभी ग्रह टेवे के खानों में लिखकर दिमागी ों के प्रभाव के अनुसार टेवा ठीक करें ।

ना नं	दिमागी	हालत वृहस्पति (शरीफाना)
	2	(शुक्र से साँझा) शादी की इच्छा, इस्क के बाद का गत्वा गुरु-घंटाल, 100 चूहे खाकर बिल्ली हज को चली 37 से 70-72 साल उम्र तक ।
	17	मंगल से साँझा अदल या मुन्सिफ न्याय प्रिय ।
	21	चन्द्र से साँझा-हमदर्दी या रहम मिजाजी
	20	सूर्य से साँझा इज्जत का बुजुर्गी लीद में खांग, पत्थर में खेती की शक्ति।
	18	बुध से साँझा फोकी आशा बायश तबाही, गणेश जी, गरूड़ की सवारी
	19	जाती गजहब या रूहानी
	35	चन्द्र से साँझा बावयात गुजरते हुए की याद
	(दिमागी)	केतू से साँझा भरोसा केवल फोकी आशा नहीं कुछ हौसला की उम्मीद या आस होगी । गणेश जी चूहे की सवारी ।
	2/22	वृहस्पति से साँझा इज्जत बुजुर्गी जाती अक्ल ।
	23	केतू से साँझा –पसन्दगी
	24	बुध से साँझा-हौसला
	25	पापी ग्रहों में साँझा, नकल करें करने की ताकत, बहरूपियापन का सूर्य, झगड़ा फसाद।
	26	चन्द्र (मैनी या महसूस की)
	27	मंगल से साँझा-गौर व खोज की ताकत ।

4	28	(जाती) पुरानी यादास्त
5	29	सूर्य से साँझा का-कद व कामत व औसततना सब की ताकत, चिड़ियों से बाज लड़ाने की ताकत।
6	30	केतू से साँझा, दबाव-बोझ मसादीपन की ताकत यानि जैसा मुंह वैसीचपेट, अच्छे से अच्छा, बुरे से बुरा।
7	31	शुक्र से साँझा-रंग रूप में फर्क दूध से दही और दोनों की शक्ल और रंग में फंक का मालिक यानि अगर बुध माता खानदान का उजाड़े तो चन्द्र पिता के खानदान को मारे।
8	32	शनि से साँझा, सफाई, शाहतगी, घुलापन, जाहिरा मान सरूर तो अन्दर से कपट की कान।
9	33	बुध से साँझा-इल्म रियाजी के असूल।
1	34	मंगल बद से साँझा-जगह मुकाम की याद, पूरा धोखेबाज और तैरते को डुबा देने वाली
11	35	वृहस्पति से साँझा-रे परेशानी वाक्यात गुजरते' हुए की याद
12	36	(गृहस्थी)
1	1	शनि से साँझा-शुक्र का पतंग, इश्क (जवानी) 6 से 36 साल उम्र तक।
2	2	वृहस्पति से साँझा-शादी की इच्छा, इश्क के बाद का गत्बा बूढ़ी औरत, सौ चहे खाकर बिल्ली हज को चली, 37 से 70-72 साल उम्र तक।
	3	मंगल से साँझा-इश्क से पहली उत्पत माता-पिता मुहब्बत एक से 15 साल उम्र तक।
	4	चन्द्र से साँझा दोस्ती मुलाकात, उत्फते इश्क और गत्बा इश्क का मलमूआ।
5	5	वृहस्पति से साँझा वतन की मुहब्बत।
6	6	केतू से साँझा-दिलचस्पी पक्की मुहब्बत सन्तान नर का फल नदारद होगा।
7	7	बुध से साँझी-जिन्दगी बढ़ने की शक्ति(अरोज उम्र नहीं) मंगल (बुजुर्गान)
1	8	सूर्य से साँझा-हमला रोकने की हिम्मत।
3	17	वृहस्पति से साँझी-अदन न्याय प्रिय
8	14	शनि से साँझा-मतकबर या खुद पसन्दी
4	4	मंगलबंद-मंगलीक-मुहब्बत के तीनों हिस्सों को तबाह करने वाला गृहस्थ खराब हर तरह की तबाही।
1	37	शनि से साँझा-राग
2	38	वृहस्पति से साँझी-जबाबदानी
3	39	मंगल से साँझी-वजह , दपयाफ्त करने की ताकत
4	40	चन्द्र से साँझा-मुकाबना एक चीज का दूसरी से।
5	41	
6	42	
1	1	शुक्र से साँझा-चारों तरफ की खुदगर्जी मजदूरी
2	7	शुक्र से साँझी-जिन्दगी बढ़ने की इच्छा
3	10	बुध से साँझा-वायका
4	4	चन्द्र से साँझी-दोस्ती मुलाकात, उलफत, इश्क और गत्बा इश्क के साँझा का मगमुआ असर

15	वृहस्पति से साँझी-खुददारी
16	केतू से साँझा-इस्तकलात
7	शुक्र से साँझी जिन्दगी बढ़ाने की इच्छा अरूज उम्र लम्बी नहीं
14	मंगलबद से साँझा तकव्वर या खुद पसन्दी
9	जाति बदला लेने की ताकत
13	जाति होशियारी की ताकत
11	जाति जखीरा जमा करने की ताकत
12	राहू से साँझी-राजदारी

ू - केतू

ू - केतू को कोई पक्की जगह नहीं दी गई लहरों के मालिक हैं एक ने इन्सान र से पकड़ा और दूसरे ने पांव से तो स्वयं ही इनको जगह मिल गई। का असल नाम गांठ है और इस विद्या में भी हर पर्वत की नीव अंगुलियों की जड़ थेली की गांठ पर मानी गई है । दुनिया के शुरु में बुध के आकार में सबसे अन्धेरा का) मान कर इस में सूर्य की रोशनी मानी गई है । वृहस्पति जो दोनों के साथ होता ाना है यानि हवा अन्धेरे में भी होती है और रोशनी में भी होती है। उदाहरणतः शीशे क बाँक्स हो तो इसके अन्दर खाली जगह में भी हवा होगी और बाहर उस बाँक्स के ा होगी । बुध का शीशा अन्धेरे को और रोशनी को भी दोनों तरफ अन्दर बाहर होने । मगर वो शीशा या बधु की हवा को अन्दर से बाहर या बाहर से अन्दर न जाने देगा ़श्मनी बुध की होगी। वृहस्पति या बुध के आकाश की खाली जगह में किस्मत को करने वाला बच्चा सूर्य या शनि को अलग-अलग और इकट्ठे ही होने की अनुमति ो शक्ति से दे देगा या बुध का शीशा ही वृहस्पति के दोनों जाहर जहानों में गाठें लगा ौर यह गांठ ही ग्रह या यह आकाश ही सबके लिए इकट्ठा गांठा हुआ मैदान है या ाकल और बुध सब तरफ गांठे लगा रही हैं ।

चीजों के 1 दो इकट्ठा करने की हालत का नाम गांठ या ग्रह कहलाता है । या दूसरे में वृहस्पति (हवा, बुध, आकाश) का इकट्ठे बांध देने वाली चीज की शक्ति या की किस्मत की उलझन पैदा करने वाली चीज ग्रह है जिसका प्रभाव वैसे ही रस्सी ई मगर बल नहीं गया की उदाहरण से प्रकट है रस्सी को मोड़ तोड़ कर इधर-उधर तौर पर किए रखने वाली चीज का नाम ग्रह है । जो रस्सी का बल है उम्र खत्म हो ार किस्मत का संबंध चलता रहा। हर एक पर्वत या पहाड़ का दरिया या रेखा उसी या पर्वत के

अपने नाम से स्थित किया गया है। ज्ञान सामुद्रिक में ग्रहों को रोशनी के घरों में जलते हुए लैम्प माना गया है और रास्तों को उनके लिए जगने या चमकने की हदबन्दी की जगह या ग्रहों का घर माना है। समय प्रभाव से मुराद यह है कि वो कितने-कितने समय तक जग सकते है यह जगने का समय हर ग्रह की बिजली के लैम्प की तरह इसकी समय केण्डिल शक्ति है। उदाहरणतय: सूर्य का लैम्प जग रहा है इसका रंग गन्दमी है इसके साथ ही अगर वृहस्पति का लैम्प जग पड़े जिसका रंग पीला है तो दोनों की रोशनी जो रंग देगी वही रंग जिन्दगी में इन ग्रहों के प्रभाव का होगा। यानि पीला रंग कच्चे पीले की बजाए रोशनी अब पक्के पीले रंग की होगी इसी तरह से ही सब ग्रहों के लैम्पों के रंगों का आपस में इकट्ठे या अलग-अलग चमकने पर होगा। अब एक राशि में जब कोई ग्रह या लैम्प प्राकृतिक की तरफ से जगाया हुआ हो तो इस घर से रोशनी दूसरे घर में कितने स्तर पर जाएगी यह भी इस ज्ञान में स्थित है यानि बिल्कुल सही या 5फी सदी या 25फी सदी या कुल की कुल आधी या चौथाई शारीरिक से दूसरे घर में रोशनी को जाने का असूल स्थित है हर एक घर की तासीर यानि शरीर खाना नं0 2 इसी तरह पर ही बारह खानों का प्रभाव स्थित है इसी तरह पर एक ग्रह का शुरू होना लैम्प का जग जाना समझा गया है और अपने समय पर समाप्त होने से इच्छा इस लैम्प के बुझ जाने से होगी। लैम्प बुझ गया या जलने लगा। मगर ग्रह का घर वही रहा चाहे इस घर में कोई भी और ग्रह आए मगर मकान की मालकियत असली मालिक की ही रहेगी। इस में विरोध करने वाला हक प्रभाव न करेगा। जिस तरह नदिया और दरिया या समुन्द्र के दरिया जिस तरह गहरे और तह जमने साफ वाले होंगे उसी तरह ही इनमें पानी की ज्यादा चाल या पक्का प्रभाव होगा। जिस तरह नदिया और दरिया कम गहरे और चौड़े होंगे उसी तरह ही न केवल पानी कम या प्रभाव हल्का होगा बल्कि प्रभाव के समय की रफ्तार भी मध्यम होगी रेखा में एक तरफ निशान दरिया में बरीती, जंजीरें या रास्ता की रूकावटें होगी। दरिया या रेखा जिस जिस पहाड़ या पर्वत के इलाका से गुजर कर आएगा उसी-उसी किस्म की मिट्टी साथ ले जाएगें और जिस-जिस तरह की मिट्टी दरिया में मिली हुई होगी उसी-उसी तरह का असर रेखा के दरिया में मौजूद होगा और पर्वत का पहाड़ की जड़ी बूटियों से होकर आई हुई मध्यम तेज मीठी कड़वी हवा को असर का साथ होगा।

हथेली पर पक्के घर

हर ग्रह की रेखा भी कुण्डली का खाना नं0-हुआ करती हैं। उदाहरण के तौर पर चन्द्र की दिल रेखा, जब वृहस्पति के पर्वत को जा निकले मगर वृहस्पति के पर्वत के अन्दर तक पूरी न हो तो शनि और वृहस्पति की अंगुलियों के बीच की जगह को खाना नं0 11 लेंगे शनि का हैडक्वार्टर खाना नं0 8 होगा अंगुठा खाना

2 रहेगा दिल रेखा खाना नं0 4 होगी । सिर रेखा खाना नं0 7 होगा रेखा का शुरू व
व्रर व हर खाना नम्बर की हद बन्दी की विशेष जगह और ऊपर को नीचे को उठाव,
व या किसी सीमा के बिलकुल ऊपर ही किसी ग्रह को निशान भी धोखे का कारण हो
। है जिसके लिए हालात गुजशता पर नजरशानी करना सहायक हुआ करता है । चन्द्र
रेखायें जब सिरे पर छड़ी की मानिन्द हो जाए या तो साथी का साथ हो चन्द्र नीच या
न बंद का निशान होगा यानि चन्द्र खाना नं0 8 का और मंगल खाना नं0 4 का होगा ।

यह जरूरी नहीं कि हर एक ग्रह अपने सीमा की लकीरों से बने हाथ पर रेशों से वही इच्छा होगी उदाहरण के तौर पर चारों तरफ की लकीरों से मिलकर मंगल बनी वही शक्ल अमर बारीक-बारीक रेशों से हाथ की बाकी रेशों से अलग हो जाए तो भी मंगल नेक होगा।

पक्का ग्रह :-

पक्का ग्रह या बड़ी रेखा हर ग्रह की स्थित रेखा पक्का ग्रह होगा।

बनावटी ग्रह :-

नकली ग्रह या शाखें रेखा की हर ग्रह की स्थित रेखा की शाख ग्रह नकली हालत का ग्रह होगा ।

पक्के ग्रह का असर अपनी सम्बन्धित चीजों का जरूर होगा नकली ग्रह अपने नकली
अपने पक्के ग्रह की सम्बन्धित चीजों का असर देगा लेकिन नकली ग्रह के हर दो जज
ने नकली हालत के दोनों ग्रहों की सम्बन्धित चीजों का प्रभाव भी दे जाता है ।
हरणतय : सूर्य पक्का ग्रह है और शुक्र बुध नकली सूर्य। अब सूर्य हमेशा अपना प्रभाव
रेखा या सूर्य की सेहत या उन्नति रेखा खाना नं0 1-5 का प्रभाव देगा । लकिन शुक्र
सम्बन्धित साँझा हालत में सूर्य का प्रभाव या शुक्र की आम या शुक्र की शादी रेखा
र बुध सिर की रेखा का भी हर दो ग्रह खाना नं0 7 का प्रभाव दे जाएगा लकिन वो भी
के हर सातवें या हर आठवें साल (अल्प आयु) नष्ट ग्रह के समय उस ग्रह का नकली
लत का ग्रह काम देता है दो पक्के ग्रहों से नकली ग्रह कौन-कौन सा बन जाता है ।

पक्का ग्रह	नकली ग्रह
वृहस्पति	सूर्य-शुक्र (खाली हवाई)
सूर्य	बुध-शुक्र
चन्द्र	सूर्य-वृहस्पति
शुक्र	राहू-केतू
मंगल नेक	सूर्य-बुध
मगल बद	सूर्य-शनि
बुध	वृहस्पति-राहू
शनि	शुक्र-वृहस्पति(केतू, स्वाभाव) मंगल-बुध (राहू स्वभाव)
राहू	मंगल-शनि(ऊँच) सूर्य-शनि(नीच)
केतू	शुक्र-शनिं (ऊँच) चन्द्र-शनि(नीच)

मौत वास्तव में पापी ग्रहों के काम का नतीजा है और पापी ग्रह तीन हैं ।

पाप :- राहू परसा चलाने वाला परशुराम मगर परशे कुल्हाड़े का साथ न होना। केतू केवल खाली परसा या कुल्हाड़ा-कुल्हाड़े वाले का साथ न होगा ।

पापी :- शनि परशुराम परशु-परसा दोनों की जमा शनि कुल्हाड़ा व कुल्हाड़े वाला दोनों साथ ।

मंगल दो हिस्से नेक = सूर्य-बुध-केतू

बद = सूर्य-शनि-राहू शुक्र होता है ।

सूर्य शनि (रात-दिन) खाली बुध होते हैं अगर बुरी विशेषता या ऐसे घरों में हो जहां कि सूर्य या शनि दोनों में से कोई भी बुरा हो तो राहू सूर्य-22 साल उम्र शनि 35 साल उम्र तक बीच या मंगल भी बुरा होगा चाहे वो किसी भी घर में बैठा हो ।

प्रभाव :-नकली बनावट के ग्रहों का प्रभाव विशेष विशेष बातों का होगा ।

1. नकली वृहस्पति औलाद की पैदाइश का मालिक है।
2. सूर्य - सेहत का मालिक है ।
3. चन्द्र -माता-पिता के खून का संबंध
4. शुक्र- दुनियावी सुख (बजरिया औलाद)
5. मंगल - औलाद जिन्दा रखने का मालिक (बेल-सब्जी का मालिक है)
6. बुध - इज्जत ख्याति
7. शनि - सख्त बीमारी
8. राहू-झगड़े फसाद
9. केतू - ऐश का मालिक है ।

कली हालत की बनावट के ग्रह की हालत में उसके हर दो ग्रहों का असर अलग-
। कर लेना या दो का साँझा कर लेना हो सकता है यानि राशि फल का होगा किस्मत
राफेरी पक्का ग्रह बड़ी रेखा शायद ही कभी बदला करती है । नकली ग्रह शाखा का
ना सम्भव है । वो भी उम्र के हर सातवें साल मगर 21 वर्ष की उम्र से रेखा में कोई
व होती नहीं मानते। यह बालिग होने का जमाना है उम्र के ही सातवें साल बदलाव
(चाहे बुरी और चाहे अच्छी और) मानते हैं अल्प आयु वालों की उम्र के आठवें
(8, 16, 32, 4, 48, 56, 64 तक) जिन्दगी खतरा में गिनते हैं ।

ग्रह :- अगर खाना नं0 -10 दो बाहम शत्रु या नीच हैसियत के रद्दी ग्रहों से
हो रहा हो तो टेवा अन्धे ग्रहों का होगा । चाहे सभी ही ग्रह मय शनि खुद भी ऊँच
क हों । अन्धे की तरह अपना फल देंगे । निर्धन देखें शनि खाना नं0 -20 में ।

राता ग्रह :-

चौथे सूर्य और सातवें शनि हो तो ऐसा टेवा अन्धराते वाला या आधा अन्धा होता है ।

ग्रह :- पापी ग्रह शनि राहू केतू तीनों ही है । राहू-केतू खाना नं0 -4 में पाप छोड़ने
न्द्र के सामने कसम उठाते हैं और शनि खाना नं0-11 में वृहस्पति गुरु को हाजिर
समझ कर राहू केतू के पैदा किए गए पापों का फैसला करता है । अगर राहू-केतू
नं0-4 या चन्द्र के साथ किसी भी घर में हो तो इस टेवे में पाप व पापी दोनों का ही
भाव न होगा और सब ग्रह धर्मी होंगे ।

ग्रह :- जब कोई ग्रह आपस में अपनी अपनी स्थित ऊँच नीच घर की राशि या
अपने पक्के घरों में अदल बदल कर बैठ जायें तो साथी ग्रह कहलाते हैं ।
णतय: सूर्य का पक्का घर खाना नं0 5 है और शनि का पक्का घर खाना नं0-10 है
मगर सूर्य के खाना नं0 10 में और शनि हो खाना नं0 5 में तो दोनों आपस में साथी
गे ।

11) कुण्डली के हर खाने की साँझा लकीर या दीवार हमसाया ग्रहों (केवल दोस्तों)
लाया करती है मगर दुश्मनों को अलग-अलग रखती हैं।
क रेखा के मुकाबिले दूसरी रेखा या न एक ही तरह की रेखा होगी । बशर्ते कि दोनों
ो पर्वत पर स्थित हों ऐसी शाखा से मुराद होगी कि अपना ही भाई-बहिन साथ चल
गा या वो दूसरी शाख अपने ही खून का सम्बन्धित बताएगी ।

काबिल :- जो ग्रह आपस में दोस्त हो और ऐसी हालत में बैठे हों कि खुद तो वो
ग्रह ही रहे मगर इनमें से हर एक या किसी एक की जड़ पर आगे दुश्मन ग्रह हो जावे
ो स्वयं दोस्त ही है, अक्षर पूर्ण काबिल से ही याद

होंगे क्योंकि अब उनमें किसी न किसी तरह से दुश्मनी भाव हो गया है ।

दोस्ती दुश्मनी करता है या देखता है:-

दृष्टि के समय कुण्डली के खानों में एक दो तीन आदि की तरकीब से पहले घरों का ग्रह अपने बाद के घरों का ग्रह अपने बाद के घरों से दोस्ती-दुश्मनी करता। देखता हुआ कहलाता है सिवाए खाना नं0 8 के जो खाना नं0 2 को पीछे की तरफ देखता है ।

कुण्डली में पहले या बाद के घरों के ग्रह :-

दृष्टि और एक दो तीन ज्यादा बारह की क्रम से जो घर या खाने पहले आ जाएं इसमें बैठे हुए ग्रह पहले घरों के होंगे यानि जो ग्रह दूसरे ग्रहों को देखते हों और हो भी गिनती की तरकीब में पहले नम्बरों के मंगल ग्रह वाक्या हों ।

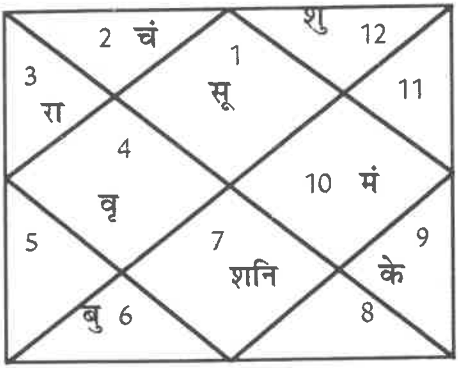

अब सूर्य को कहेंगे कि वो शनि से पहले घरों का है । वृहस्पति को मंगल से पहले घरों का कहेंगे । अब मंगल से सूर्य वृहस्पति शनि हर एक या तीनों ही गिनती में हो तो जरूर पहले नम्बरों पर हैं मगर मंगल से पहले घरों के ग्रह से मुराद केवल वृहस्पति से होगी या मंगल अब वृहस्पति के बाद के घरों का है एक ही घर का ग्रह जब दो और घरों देखे उदाहरणतय: खाना नं0 3 देखता है खाना नं0 9 और खाना नं0 11 को अब खाना नं0-9, 11 दोनों ही घरों के ग्रह खाना नं0 3 में बैठे हुए ग्रह से बाद के घरों के ही ग्रह होंगे ।

(ब) पहले घरों वाले ग्रह अपने बाद के घरों में अपना फल मिलाया करते हैं जब बोले कि चन्द्र दुश्मनी करता है शुक्र से तो मुराद रोगी कि चन्द्र है पहले घरों में शुक्र हैं ।

ऊपर को उठने वाली शाखी या ऊपर की मुंह रखने वाली दो साखी का प्रभाव नेक होगा । नीचे को निकल भागने वाली शाखें या नीचे को मुंह रखने वाली शाखी का कोई नेक प्रभाव न होगा।

पहले घरों का प्रभाव बाद के घरों में मिलने का नतीजा यह होगा कि जब कि पीछे से बाद के घरों में किसी ग्रह का बुरा प्रभाव आना बन्द न हो जाए या पहले घरों के बुरे ग्रह के समय तक बाद के घरों मे ग्रहों का नेक प्रभाव न होगा । यही नियम खाना नं0 8 के ग्रहों का खाना नं0 2 के ग्रहों के लिए होगा । लेकिन अगर खाना नं0 8 में सूर्य, वृहस्पति या चन्द्र में से कोई भी अकेला-अकेला या कोई दो या तीनों ही साँझे बैठ जाएं तो खाना नं0 8 ने आगे को खाना नं0 12 को और नहीं पीछे को खाना नं0 2 को देख सकेगा । बल्कि खाना नं0 8 का ऐसा प्रभाव केवल खाना नं0 8 में बन्द हुआ गिना जाएगा । यदि मौत के घर को (सूर्य, वृहस्पति) चन्द्र साँझा योगी जंगी जीत लेगा ।

ाम ग्रह :-

जो ग्रह हर तरह से अच्छे और अपने प्रभाव बिना किसी दुश्मन ग्रह के प्रभाव की ावट के साफ-साफ और कायम रख रहे हो यानि राशि नम्बर पक्के घर या दृष्टि आदि ो तरह से भी इनमें दुश्मन का प्रभाव न हो और न ही वो किसी दुश्मन ग्रह का साथी बन रहा हो ।

का घर :-

ग्रह की अपनी स्थित राशि में दोस्ती, दुश्मन बराबर। ऊँच नीच घर का मालिक होने ऊॅंच या नीच फल की राशि इस ग्रह के लिए इस ग्रह का घर कहलाता है उदाहरणतयः ा नं0 3, 6 बुध के लिए।

का ग्रह :-

ग्रह का पक्का घर आपसी दोस्ती दुश्मनी, बराबर ऊॅंच नीच घर का इस ग्रह का घर लाएगा उदाहरणतः खाना नं0 7 बुध के लिए ।

ा ग्रह, दुश्मन ग्रह :-

केसी ग्रह के सामने खाना दोस्त । दुश्मन में रखे हुए ग्रह इस ग्रह के दोस्त। दुश्मन ग्रह लायेंगे । किसी दूसरे के सम्बन्धित दोस्त । दुश्मन न लेंगे ।

-नीच ग्रह :-

कोई ग्रह ऐसी राशि में हो जो इसके लिए ऊच्च फल । नीच फल की स्थित हैं।

बर का ग्रह :-

बराबर के ग्रह के खाना नं0 1 वास्ते बराबर की शक्ति के खाते में लिखे हुए ग्रह हरणतय : नं 1 वृहस्पति के ग्रह के बराबर की शक्ति के।

ग्रह :-

शनि, राहू , केतू तीनों साँझे पापी ग्रह लिखे जाते हैं तो वृहस्पति के बराबर के ग्रह लायेंगे । केवल राहू केतु साँझा पाप के लिखे जाते हैं वो शुक्र के बराबर के ग्रह लायेंगे।

वृहस्पति, सूर्य, मंगल के पर्वतों की शाख से मर्द और मर्दो का संबंध शुक्र और चन्द्र से औरत और औरतों का संबंध प्रकट करती है या सीधे खत मर्द और दो शाखों से ा होगी ।

ग्रह मर्द पर :-

वृहस्पति रूह के सम्बन्धियों पर प्रभाव देगा । सूर्य-शरीर के सम्बन्धियों पर प्रभाव होगा। ा-खून के सम्बन्धियों पर प्रभाव देगा ।

ग्रह स्त्रियों पर :-

-माता की औकात वाली पर प्रभाव देगा ।

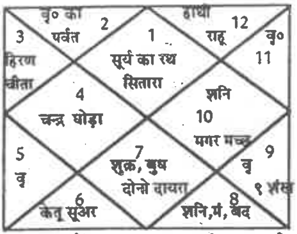

कुण्डली में हर ग्रह या पर्वत पर पक्के घर

शुक्र–औरत के समान वालियों पर प्रभाव देगा ।

बुध–शुक्र का शादी के हाल में अलग भी लिखा है ।

नंपुसक ग्रह :-

शनि छाती का जमावात पर, बुध वनावट पर, राहू दिमाग पर, केतू अब पांव पर प्रभाव करेगा ।

नकली ग्रहः-

हवानात, बे-जुबानों पर प्रभाव करेगा ।

हस्त-रेखा में 21 साल उम्र से रेखा बालिग और 12 साल उम्र तक नाबालिग गिनते है । मगर कुण्डली में वर्ष फल के हिसाब से उम्र में जिस दिन से सब से पहली बार सूर्य का राजसी दौर शुरू हो जाए उस दिन से सभी ग्रह बालिग गिने जाते हैं । चाहे उम्र 21 वर्ष से कितने ही कम या ज्यादा हो दौर से इच्छित ग्रह का वर्ष फल के हिसाब से खाना नं0 1 एक में आने से हैं ।

(11) सूर्य अगर कुण्डली के ख़ाना नं01, 5, 11 जन्म लग्न हो खाना नं0 1 रखते हुए में चाहे अकेला चाहे और ग्रहों के साथ हो तो जन्म दिन से ही सभी ग्रह बालिग गिन जाएंगे।

(111) सूर्य का दौरा शुरू होने से पहले इन्सान पर इसके लिए पिछले कर्मो का फैसला लगभग 7 या 8 साल उम्र या हर सातवें या आठवें साल प्रभाव किया करता है जो बदलते का जमाना हुआ करता है ।

बिना रेखा वाला हाथ कजाक डाकू संगदिल होगा। सब ही ग्रह नीच फल की राशि के होंगे ।

बेत ज्यादा रेखा वाला मन्द भाग्य और बहमी होगा । एक ही घर में बेत ज्यादा मगर वाक्य या नीच ग्रह हो।

ज्यादा चौड़ी रेखाएं – बेत क़म नेक प्रभाव देगी ।
चौड़ी रेखा – कई तरफ की दृष्टि से टकराए हुए दुश्मन ग्रह ।
धुंधली सी रेखाए – निरर्थक होगी देर बाद प्रभाव देगी ।
साफ रेखा – अच्छा नतीजा और पुरमायनी होगी ।
गहरी रेखाएं – जल्द प्रभाव देगी ।
साफ रेखा – पक्के घरों के ग्रह या घर के ग्रह मगर कायम ।
गहरी रेखा –ऊँच घरों के ग्रह ऊँच फल की राशि के ग्रह ।

ग्रह की उम्र का असर :-

जब कोई ग्रह हर तरह से कायम अपने वजूद में स्वयं अपनी ही पुरी शक्ति का चाहे नीच या घर का मालिक मगर किसी दूसरे का इस पर या इसमें कोई प्रभाव न हो रहा हो तो वो अपनी कुल उम्र तक प्रभाव देता रहेगा या इसकी उम्र होगी

वृहस्पति 16 साल आदि। ग्रह के प्रभाव का आम समय अपनी हालत से बाहर जब कोई ग्रह ऊपर की शर्त (ग्रह की उम्र का अर्सा) से बाहर दोस्तों या दुश्मनों के बर्ताव में हो जाए तो इसके लिए वृहस्पति 6 साल, सूर्य 2 साल और चन्द्र एक साल आदि लेंगे । अपनी मियाद के शुरू, बीच या आखिर पर हर ग्रह प्रभाव करता है । इसलिए खाली हिस्से की आम अवधि में हर ग्रह के साथ बीच के ग्रह का प्रभाव शामिल होगा ।

नं0	ग्रह	ग्रह समय 35 साल	महादशा साल 120	कुल साल	प्रभाव समय	प्रभाव रफतार "क" मानिन्द	
1	वृह0	6 साल	16	16	बीच में	शेर	32
2	सूर्य	2 साल	6	22	शुरु	रथ	22
3	चन्द्र	1 साल	10	24	अन्त	घोड़ा	24
4	शुक्र	3 साल	20	25	बीच	बैल	50
5	बुध	2 साल	17	34	हमेशा एकसा	मैढ़ा	68
6	शनि	6 साल	19	36	अन्त	मच्छी	72
7	मं० बद	3 साल	4	15	सूर्य के बिना है	मं0 बद होगा	56
8	मं० नेक	3 साल	3	13			
	कुल	6 साल	7	28	शुरु में	हिरण, चीता	३६४
8	राहू	6 साल	18	42	अन्त में	हाथी	३६
9	केतू	3 साल	7	48	अन्त में	*दोनों ग्रह रियायती*	
						सुअर	*४०-४२ दिन*

नोट :- "क" एक वर्ष में दिन या एक दिन या एक रात में घण्टे, महीना 3 दिनका और दिन या रात अलग-अलग 12 घण्टे का हर एक ।

हर एक ग्रह आने आधा और चौथाई हिस्सा समय में भी अपना प्रभाव प्रकट कर देता है। हर एक ग्रह अपने समय के आधा या एक चौथाई में भी अपना प्रभाव पूरा-पूरा करता है ऊपर का प्रभाव सारी उम्र पर ही इसी तरह होगा । हर ग्रह के समय के बीच के ग्रहों के समय

दौरा हो शुरु मध्य अन्त	वृ06 केतू2 वृ02 सूर्य2	सूर्य2 सूर्य8 चं०8 मं08	चन्द्र1 वृ4 मा सूर्य4 चन्द्र	सूर्य3 मं01 शुक्र 1 बुध1	मं06 मं02 शुक्र 2 शुक्र 2	बुध2 चं०8 मं08 वृ08	शुक्र 6 राहू2 बुध2 शनि 2	राहू6 मं02 केतू2 राहू2	केतू3 शनि 1 राहू1 केतू1

अच्छे बुरे ग्रह व रेखा विशेष टिप्पणी सहित :-

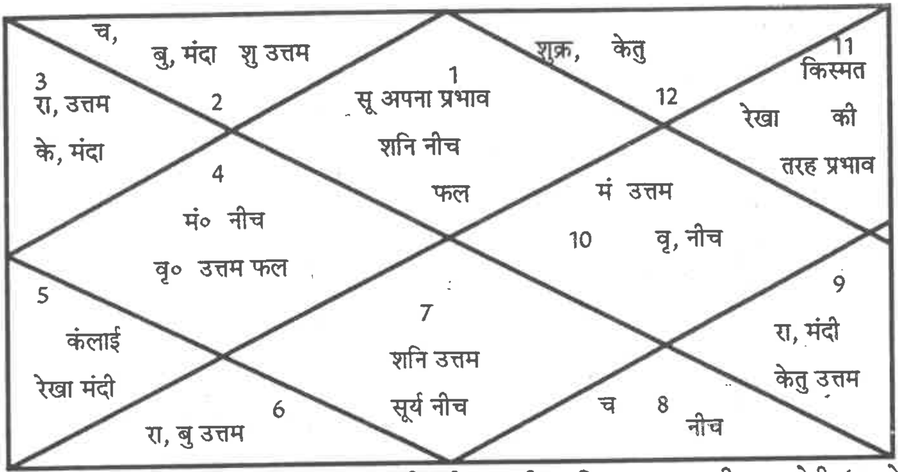

रेखा में जंजीर, लाल निशान (मंगल बीमारी) (पीला निहात) कुदरती कमजोरी (धब्बे) प्रभाव में रूकावट) (मशलश) (बूरा असर) (दायरा) (प्रभाव चक्र में) (सितार) सूर्य चन्द्र का संबंध (त्रिशुल) (शनि का संबंध) (सीधे खत) (वृहस्पति का संबंध) लेटी हुई लकीर(शुक्र) टेढी लकीर (चन्द्र) (जाल) (राहू) (चारपाई) (केतु) अपना-अपना प्रभाव जिनका जिक्र पर्वत में है किया करता हैं चौकार हमेशा नेक प्रभाव देता हैं शानदार रेखा शाखदार शाख संगली सी रेखा महावन सहायक या सीधी रेखा नेक होती हैं। ग्रहो का अपने दुश्मन ग्रहों के स्थिर रास्तों में होना या इनको दुश्मन ग्रहों का देखना इनके प्रभाव में खराबी का सब्र होगा। इसके वरअक्श ग्रहों का अपने दोस्त ग्रहों की राशियो में जाना या इनको दोस्त ग्रहों को देखना या इसके अपने दोस्त ग्रहो का साथी ग्रह हो जाना इनके प्रभाव को शुभ करेगा। चन्द्र दुश्मनी करता हैं और मुराद है कि स्वयं अपने ही फल जो कुण्डली के १२ घरों में क्रमानुसार में दिए हैं। स्वयं ही दुश्मनी करने वाला ग्रह खराब कर देगा।

ग्रह	बराबर की शक्ति के	दोस्त	दुश्मन
वृहस्पति	शनि,राहू ,केतू	सूर्य, चंद्रमंगल	शुक्र, बुध
सुर्य	बुध नदारद केतु मध्यकारो	वृहस्पति० चन्द्र, मंगल	शुक्र, शनि राहूसे ग्रहण
चन्द्र	शनि,मं०शु०वृह0	सू0 बु, राहू से मध्यम	केतू से ग्रहण
शुक्र	मंगल,वृह0	शनि,बु. केतू	सूर्य चन्द्र राहू
मंगल	शनि,शुक्र,राहू नदारद	सूर्यचन्द्र वृह0	बुध केतू
बुध	शनि,केतू मंगल वृह0	सूर्य,शुक्र,राहू	केतू
शनि	केतू, वृह0	बुध,शुक्र,राहू	चन्द्र सूर्य मंगल
राहू	वृह0, चन्द्र- मध्यम हो जाए	बुध, शनि केतु में	शुक्र , सूर्य, मंगल
केतू	वृह0शनि,बुध सूर्य मध्यम	शुक्र,राहू	चन्द्र मंगल

चन्द्र और शुक्र बराबर मगर चन्द्र शत्रुता करता है शुक्र से

वृहस्पति और शुक्र बराबर मगर शुक्र शुत्रता करता हैं वृहस्पति से
मंगल, शनि बराबर मगर मंगल दुश्मनी करता हैं शनि से
चन्द्र बुध दोस्त मगर चन्द्र दुश्मनी करता हैं बुध से

बाजघरों में राशि व ग्रह कुण्डली के हिसाब से फर्क म.लूम होगा। यह बात ऊपर लिखित टैबल से प्रकट होगी । वास्तव में कुण्डली में राशि नम्बर से मकान की जमीन ओर कुण्डली के हिसाब से मकान की इमारत मुराद होगी। विशाल खाना नं011 वास्तव में राशि के हिसाब से शनि की मालकियत, ग्रह कुण्डली के हिसाब से यह खाना नं0 11वृहस्पति का घर हैं। खाना नं0 11 से मुराद यह होगी कि घर की जमीन पर तो शनि का प्रभाव हैं और मकान की इमारत पर वृहस्पति का । ग्रहों और राशियों की कुण्डलियों के खाने भी जहाँ तक हो सके आपस में मिलते-जुलते निश्चित किए ग.ए हैं। केवल मामूली फर्क हैं जो गौर से देखने से मालूम हो जाएगा।

ग्रह की अपनी राशि :-

हर ग्रह अपनी निश्चित राशि में नेक फल देगा । चाहे इसकी वो राशि किसी दूसरे ग्रह का पक्के घर में निश्चित हो चुकी है।

राशि नं0	किस ग्रह की राशि	किस ग्रह का पक्का घर	इस राशि नं0-में किस ग्रह का नेक असर होगा
2	शुक्र	वृह0	शुक्र का नेक प्रभाव
3	बुध	मंगल	बुध का नेक प्रभाव होगा बशर्ते कि मंगल नेक
5	सूर्य	वृ0सू0	इकट्ठा से सूर्य का नेक प्रभाव
6	बुध-केतू	केतू	बुध का उत्तम, केतू का शुद्ध केतू की चीजों पर मन्दा मगर दूसरों पर अच्छा। अगर दोनों साथ हों तो बुध का और बुध की चीजों पर अच्छा मगर केतू दूसरों का मन्दा होगा।
7	शुक्र	शुक्र-बुध	शुक्र का नेक, बुध वादियों की भी मदद दें और
8	मंगल	मंगल-शनि इन्द्र(उम्र)	तीनों में से एक हर अकेला-अकेला तो अच्छा फल, नहीं तों बुरा फल होगा। शनि का नेक
11	शनि	वृह0	बाकी ग्रह बेरी (शनि का पेड़) के गला घोट वाले बेर, जाहिरा उम्दा मगर शान के पताशे

राशि ग्रह :

मेष वृष मिले मिथुन से तर्जनी अंगुली गिनते हैं।
कर्क, सिंह और कन्या राशि अनामिका अंगुली लेते है।
तुला वृश्चिक धन तीनों की छोटी कनिष्टका होती है।
मगर कुम्भ और मीन इक्टठी मध्यमा अंगुली बनती है।
मेष वृश्चिक मालिक मंगल, तुला वृष शुक्र की है।
कन्या मिथुन का बुध है मालिक कुम्भ मकर को शनि की है।
गुरु मालिक है धन मीन का कर्क चन्द्र की होती है।
सिंह अकेला दुनिया गर्जे राशि जो सूर्य की है।
केतू बैठता कन्या में तो राहू निवासी मीन का है।
पाप चढ़ा आसमान के ऊपर जड़ जिसकी पाताल में है।
गुरु रवि और मंगल तीनों पर ग्रह भी कहलाते हैं।
शनि राहू और केतू तीनों पापी ग्रह बन जाते हैं ।
शुक्र लक्ष्मी चन्द्र माता दोनों स्त्री होते हैं।
बुध अकेला चक्र सभी का जिसमें सब यह घूमते हैं।
बद लालच भर मारे दुनियाँ नेक दान को मिलते हैं ।

– 30दिन का एक माह 24 घन्टे का दिन रात

ग्रह जिस क्रम से नीचे लिखे हैं इसी क्रम से एक के बाद दूसरे इन्सान की आयु पर अपना अपना प्रभाव करते हैं।

नं०	ग्रह	आपसी संबंध	राशि नं०	प्रभाव जैसा	एक साल में अवधि दिन
16	बृ०	शेर, जर्द हवा	9,2 धन	नील गाए	16
16			12 मीन	मछली	16
22	सू०	रथ,सूर्ख,तांबा,गेहुआ	5 सिंह	नर शेर	22
24	च०	घोडा,सफेद	4 कर्क	कैकड़ा	24
25	शु०	बैल, दही रंग सफेद	2 वृष	बैल	25
			7 तुला	तराजू	25
28	मं० नेक	हिरण	1 मेष	मैंढा	28
28	मं० बद	मुगमा पहाड़ी चीता	8 वृश्चिक	बिच्छू	28 मरण
34	बुध	मैढा सब्ज	3 मिथुन	मर्द-औरत जोड़ा	34
34			6 कन्या	लड़की	34
36	शनि	मच्छली काली	10 मकर	मगरमच्छ	36
			11 कुम्भ	मछली	36
-----					
324 दोस्तों 36 से 40 या 42 दिन	राहू माथी केतू रियायती	काला नीला सुअर चितकबरा मगर सुर्ख न होगा	12 मीन 6 कन्या	मछली लड़की	40 दिन 42 दिन दोनों एक में रियायती दिन 364 या 366

नींव संबंध ग्रह व राशि

अंगुली	नं०	राशि	शक्ल	रफ्तार रंग	तासीर	स्वभाव	घर का मालिक	ऊंच फल	नीच फल
तर्जनी	1	मेष	मैढा	लाल रंग	गर्म खुशक	आतसी	मंगल	सूर्य	शनि
	2	वृष	बैल	दहीं रंग	सर्द खुशक	खाकी	शुक्र	चन्द्र	नहीं
	3	मिथुन	स्त्री-पु0	हरा रंग	गर्म-तर	बादी	बुध	राहू	केतू
	10	मकर	मगरमच्छ	काला रंग	सर्द खुशक	खाकी	शनि	मंगल	वृ0
मध्यमा	11	कुम्भ	भरा हुआ घडा	काला रंग	गर्म -तर	बादी	शनि	नही	नहीं
	12	मीन	मच्छली	नीलापील	सर्द-तर	आबी	वृह0-राहू	शुक्र केतू	बुरा
अनामिक	4	कर्क	कैकड़ा	दुधिया	सर्द-तर	आबी	चन्द्र	वृ0	मंगल
	5	सिंह	शेरनर	सुर्ख-तांबा	गर्म खुशक	आलसी	सूर्य	नहीं	नहीं
	6	कन्या	लड़की	हरा चितकबर	सर्द खुशक	खीली	बुध केतू	बुध केतू	केतू
कनिष्का	7	तुला	तराजु	दही रंग	गर्म -तर	बादी	शुक्र	शनि	सूर्य
	8	वृश्चिक	बिच्छु	लाल रंग	सर्द-तर	आतसी	मंगल	नहीं	चन्द्र
	9	धनु	ब्याही गाए	पीला रंग	गर्म -तर	आतसी	वृह0	केतू	राहू

नोट=: ग्रह व राशि का फल प्रभाव इकट्ठा लेते हैं।

कुण्डली के 12 खानों में ग्रहो की मुख्य हालतें

नं०	राशि	मालिक	ऊंच ग्रह	नीच ग्रह	पक्का घर	किस्मत को जगाने वाला	ग्रह फल का	फल रीशि का
1	मेष	मंगल नेक	सूर्य	शनि	सूर्य	मंगल	मं० नेक	राहू
2	वृष	शुक्र	चन्द्र	-	वृह०	चन्द्र	रा०,के	-
3	मिथुन	बुध	राहू	केतू	मंगल	बुध	शनि	शनि
4	कर्क	चन्द्र	वृह ०	मंगल	चन्द्र	चन्द्र	चन्द्र	शु,मं
5	सिंह	सूर्य	-	-	वृह०	सूर्य	सू,बु	-
6	कन्या	बु,केतु	बु,राहू	केतू	केतू	राहू	बु,या के,वृ०	सू,मं, वृ, श
7	तुला	बु, राहु	शनि	सूर्य	शु,बुध	शुक्र	शुक्र	सू०वृ
8	वृश्चिक	मं, बद	-	चन्द्र	श, बद	चन्द्र	मं बद	-
9	धनु	वृ०	केतू	राहू	वृ०	वृ०	वृ०	शनि
10	मकर	शनि	मंगल	वृ०	शनि	शनि	शनि	बु, के
11	कुम्भ	--	-	-	वृ ,	वृ०	शनि	वृ०
12	मीन	वृ,राहू	शु,के	बु, राहू	राहू	केतू	राहू	बुध

खाना नं02 का नीच नहीं होता है और यह खाना राहू व केतू (केवल दोनों) की साँझी बैठक है जिसके राशि फल व ग्रह नही हैं यानि कि इस खाना के ग्रह अपना-अपना या अपने कर्मो के करने कराने का स्वयं मालिक है खाना नं05 का ऊच्च नीच दोनों ही हिस्से नहीं होते वह अपनी स्वयं जाती कमाई और कमाई की किस्मत का ग्रह है। खाना नं0 11 का उच्च नीच दोनों ही हिस्से नहीं होते यह साधारण दुनिया से सम्बन्धित किस्मत का लेन देन हैं । खाना नं0 8 का ऊच्च नही होता, कोई मौत को नही मार सकता सिवाए चन्द्र के जो दिन की शान्ति व गंदी सहायता आदि के (दुनिया को माता तो इन्सान का बच्चा ,माता के पेट में बच्चे की तरह रहने वाला) खाना नं0- 3 का शनि ग्रह फल में गया, धन दौलत नकद से दर होगा। मगर जायदाद के लिए बुरा न होगा । अगर जायदाद के लिए बुरा हो भी तो उचित उपाय है।

खाना का संबंध ग्रह व राशि

नोट :- सुर्य कि केतू से व चन्द्र राहू से प्रथम व राहू से सूर्य ग्रहण आदि

ग्रह	घर की राशि	ऊँच फल की राशि	नीच फल की राशि	अवधि - प्रभाव
वृ०	धनु	कर्क - ४	मकर नं० १०	३२ दिन
सूर्य	सिंह	मेष - १	तुला - ७	२२ दिन
चन्द्र	कर्क	वृष - २	वृश्चिक - ८	२४ दिन
शुक्र	वृष, तुला	मीन - १२	कन्या - ६	५० दिन
मं० नेक	मेष, वृश्चिक	मकर - १०	कर्क - ४	५६ दिन
बुध	मिथुन, कन्या	कन्या - ६	मीन - १२	६८ दिन
शनि	मकर, कुम्भ	तुला - ७	मेष - १	७२ दिन
राहू	मीन	कन्या - ६, मिथुन - ३	मीन-१२,धनु ९	औसत ४० दिन
केतू	कन्या	धनु-८, मीन१२	मिथुन-३ कन्या-६	३६० से ३६६ दिन

पीछे तो मालूम होगा कि राहू खाना नं0-2 में घर का मालिक ग्रह भी लिखा हैं और इसी से नीचे भी लिया हैं इसी तरह केतू खाना नं0-6 में घर का मालिक और इसी राशि में नीच भी। राहू जब वृहस्पति के घर खाना नं0-2 में केवल हो तो नीच होगा हालांकि वृहस्पति व राहू आपसी दुश्मन नही, बराबर के हैं। राहू के समय (या जब राहू-वृहस्पति इकटठे हो वृहस्पति चुप ही हो जाता है राहू को आकाश) (खाना नं0 2) नीला रंग माना हैं । वृहस्पति की हवा को जब आकाश का साथ मिले या ज्यों-ज्यों हवा आकाश की ओर ऊँची उठती जाएगी हल्की होती जाएगी ओर दुनियादारों के सांस लेने के काम घटती जाएगी। लेकिन जब

वही वृहस्पति की हवा नीचे की तरफ होती जाएगी तो केतू का साथ होता जाएगा। खाना नं0-6 तो हर एक की सहायक होगी इसी असूल पर राहू के साथ जब वृहस्पति हो तो न केवल वृहस्पति का प्रभाव चुपचाप बन्द (वृहस्पति की शक्ति) घुटने पर नतीजा बुरा होगा । इसके विरुद्ध अब अगर राहू को बुध के खाली आकाश में खुला ही मैदान मिलता जाए मगर वो खाना नं0-12 के माने हुए आकाश के इलावा बुध के खाली आकाश में ही हो तो राहू का फल उसका अच्छा बल्कि उसका प्रभाव देगा। राहू को बुध का घर खाना नं0-6 या बुध का साथ मिले तो नेक प्रभाव देगा।

राहू भी बुध का दोस्त इसलिए दोनों के वाक्य साथ से दोनों का फल अच्छा होगा। या दोनों ही खाना नं0 6 मे उच्च फल के ओर दोनों में से हर एक या दोनों ही खाना नं0-12 में बुरे फल के होगे। राहू को फर्जी तौर पर अगर आकाश माने तो यह फर्जी दीवार वृहस्पति को साथ देगी कि है वृहस्पति तू मेरे ऊपर दैवी जगह या मेरे नीचें इधर इन्सानी दुनिया में एक ही तरफ रहो यद्यपि राहू ने वृहस्पति को दो जहान में से केवल एक ही तरफ कर दिया या राहू के साथ पर वृहस्पति को जहानों में से के एक ही तरफ के जहान का मालिक रह जाता है या दो में से एक तरफ़ के लिए वो चुप ही गिना जाता है ।

केतू

जब बुध के साथ हो तो वो बुध के घर खाना नं0-6 में हो तो नीच होगा लेकिन जब केतू वृहस्पति के साथ मिल जाए तो केतू ऊच्च फल का होगा केतू वृहस्पति के बराबर का फल देंगे । राहू केतू चूंकि अपने-अपने से सातवें के देखने के असल पक्के ग्रह के हैं इसलिए राहू अगर खाना नं0-3,6 में उच्च हुआ तो केतू वहां नीच होगा । यही हाल है केतू का। अगर केतू खाना नं0-9, 2 में ऊच्च होगा तो राहू इन घरों में नीच होगा।

बुध

जब बुध हो राहू के घर खाना नं0-12 में तो नीच होगा क्योकि खाना नं0-12 इसके दुश्मन का घर है और दोनों ही शुक्र के दोस्त हुए हैं बुध पर कोई प्रभाव न होगा । मगर केतू (शुक्र) हो तो खाना नं0-6 में नीच ही होंगे । वृहस्पति के साथ वृहस्पति के घरों में राहू होगा तो नतीजा बुरा न होगा । या वृंहस्पति के साथ या वृहस्पति के घरों में राहू बुरा फल देगा और नीच होगा । बुध के साथ या घरों में केतू कुत्ते का सिर पागल या दीवाना नीच फल का होगा क्योंकि राहू केतू साँझा घर खाना नं0-6 और 12 भी बुध वृहस्पति के ही है जहां कि इन्हे जगह मिली है।

ग्रहों की कुर्बानी के बकरे

शनि :- दुश्मन ग्रहों से बचाव के लिए शनि ने अपने पास राहू केतू दो ऐसे ग्रह ऐजेन्ट बनाए हुए हैं कि वो शनि की जगह दूसरे की कुर्बानी दिला देते हैं ।

राहू साँझा को नकली शुक्र माना है । इसलिए जब शनि को सूर्य का टकराव तंग करे तो वो अपनी जगह शुक्र औरत को मरवा देता है या सूर्य शनि के झगड़े में औरत मारी जाएगी । या ऐसे कुण्डली वाले की औरत पर इन दोनों ग्रहों की दुश्मनी का प्रभाव जा पहूंचेगा। सूर्य स्वयं बर्बाद होगा व शनि क्योंकि वह आपस में बाप बेटा है **सूर्य खाना नं0-6 शनि खाना नं0-12 तो औरत पर औरत मरती जाए । चन्द्र शनि राहू औरत को सुख हल्का या औरत बर्बाद होगी।**

बुध :-

बुध ने भी अपने बचाव के लिए शुक्र से दोस्ती रखी है वो भी अपने दोस्त शुक्र को ही अपनी बला मे डाला करता है या डाल देगा । चन्द्र बुध साँझी बकरी दूध देगी ऐसी स्थिति में जैसे यदि करे दरिया में रेत, दूध में मिट्टी यदि चन्द्र बुध इकट्ठे हो तो मरेंगे मामा।

मंगल :-

मंगल बद (भाई) अपनी मुसीबत केतू (लड़के) पर डालता है । शेर कुत्ते को मरवा देगा । सूर्य खाना नं0-6 मंगल खाना नं0-10 तो लड़का पर लड़का (केतू) मरता जाए । (भाई-भतीजे को मरवाए)

शुक्र :-

शुक्र (औरत) शेखान स्वभाव खुद अपनी मुसीबत कुण्डली वाले की औरत पर जा ढकेले । चन्द्र-शुक्र मुकाबिल हो तो माता अन्धी ।

वृहस्पति :-

इसने अपनी साथी केतू ही कुर्बानी के लिए रखा हैं । वृहस्पति हो खाना नं0-5 में और केतू किसी और घर में अब अगर वृहस्पति की महादशा आ जाए तो केतू के खाना नं0-6 का फल रद्दी होगा । सन्तान से हीन जो खाना नं0-5 की चीज है। मामा को केतू की महादशा 7 साल तकलीफ होगी । राहू-केतू स्वयं ही अपना आप निभाएंगे । सूर्य-चन्द्र के लिए उनका अपने अपने हाल में दर्ज हैं ।

नोट :-

मंगल और वृहस्पति इन्साफ के मालिक होते हुए दूसरे की तो सहायता करेंगे और नाजायज तौर पर एक दूसरे पर ज्यादती करते नहीं देख सकते मगर जब स्वयं मुसीबत में हो तो गरीब केतू को मरवाते हैं, उदाहरण के तौर पर तरबूज में वृहस्पति डण्डी, सूर्य-वजन, चन्द्र तरबूज के अन्दर का पानी, शुक्र-बीज, का गूदा (मगज) बुध गौलाई, आकार, शनि चीज या तरबूज की छाल-छिलका, राहू-जायका, केतू-धारियां रंग-बिरंगे इसी तरह नारियल, खरबूजा, अनार, बेर आदि में मिलावट का संबंध हर ग्रह का अपने प्रभाव प्रकट करने की निशानी के

लिए ग्रह सम्बन्धित में उसकी साथ की चीज में होगी। नर (वृहस्पति सूर्य मंगल) का राज या प्रभाव करने का समय दिन, स्त्री ग्रहों (चन्द्र शुक्र) का राज रात और नपुंसक ग्रहों (बुध मय पापी ग्रह) का राज दिन रात दोनों के मिलने का समय सुबह-शाम होगा ।

दौरा ग्रह :-

खूब जोर से मिलने पर रेखा जिस तरफ से ज्यादा सूर्ख या लाल हो जाए वही तरफ इस रेखा या शाख के शुरू होने की तरफ होगी ।

दौरा वाला ग्रह खाना नं0 6 का अपने दौरा के समय सब से पहले इस घर पर अपना प्रभाव प्रकट करेगा जहां कि वो जन्म कुण्डली में बैठा हो इसके बाद अपने दुश्मन ग्रहों, पर चाहे वो दुश्मन ग्रह उस घर में हो जहां कि तो खुद बैठा था बाद अपने दोस्तों पर और फिर अपने बराबर के ग्रहों पर अगर किसी घर में एक से ज्यादा ग्रह बैठे हों तो दौरे वाला ग्रह हर एक ग्रह से ऊपर की तरतीब से बारी बारी टकराएगा (दुश्मनों से) और मित्रता का व्यवहार करेगा मित्रों से अगर एक ही घर में दौरा वाले ग्रह के कई मित्र या कई दुश्मन ग्रह ही बैठे हों तो ग्रह चाल की क्रमनुसार से बुध एवं सूर्य प्रभावित करेगा । अगर कुण्डली के खानों में दोस्त ग्रह अलग और दुश्मन ग्रह जुदे घरों में ही हों तो खानों की क्रम से नं0 1 के बाद दो बतार्व करेगा ।

35 साला चक्र :-

पांचों अंगुलियों और सातों ग्रह की चाल या 7 गुणा 5=35 साल के बाद सब ग्रह अपना चक्र पूरा कर जाते हैं जो ग्रह पहले चक्र में बुरा प्रभाव करते हैं वो अपने दूसरे चक्र में यानि 35 साल के बाद दूसरी चाल में अच्छा फल देंगे ऐसे चक्र सारी उम्र 20 साल में तीन बार ज्यादा से ज्यादा आते हैं । हर ग्रह का समय अवधि भी इतने ही साल हैं जितने साल की उम्र पर प्रभाव गिना है यानि वृहस्पति 16 की उम्र में लगभग होगा और 16 साल प्रभाव देता रहेगा। इसी तरह बाकी सब ग्रह अपना-अपना प्रभाव देते हैं । इसलिए ग्रहों में माना है कि जो ग्रह पहले 35 साला चक्र में बुरा प्रभाव देगा दूसरे चक्र में पहला प्रभाव न देगा । यानि अगर दो तरफ का प्रभाव हो गया तो बायां हिस्सा बाद में असर देगा । बाप-बेटे की उम्र और किस्मत का आपसी संबंध 35 साल के चक्र के कारण 70 में समाप्त गिना है । ग्रहों की साधारण अवधि के सालों का लगभग 35 साला होता है । यह 35 साला अवधि 35 साला चक्र कहलाता है । ग्रहों का 35 साला चक्र और उम्र का 35 साला चक्र या इन्सान का 35 साला चक्र को अलग-अलग बातें हैं माना कि एक व्यक्ति के जन्म दिन से ही वृहस्पति का दौरा शुरू हुआ और बाकी ग्रह एक के बाद दूसरा यानि वृहस्पति 6 साल, सूर्य 2 साल आदि कुल 35 साल का

ौरा सारे ग्रहों ने इस की 35 साल उम्र तक ही पूरा कर दिया लेकिन हो सकता है कि सका पहला ग्रह वृहस्पति की बजाए शनि शुरू हुआ हो और जन्म दिन की बजाए 7 ाल से शुरू हो अब सभी ग्रह तो 35 साल में ही दौरा पूरा कर लेगे। जब आखिरी ग्रह का ाखिरी दिन होगा इस समय इन्सान की उम्र 35 साल ग्रहों का दौरा जमा 6 साल, जब भी शनि का या उम्र का पहला ग्रह शुरू भी न हुआ था यानि कुल उम्र 41 साल हो चुकी ोगी जो 35 साल के हिसाब से इन्सान का दूसरा 35 साला दौरा होगा अब जिस दिन से हों का दूसरा शुरू हुआ यानि जिस दिन जन्म दिन से शुरू होने वाला ग्रह दूसरी बार शुरू आ उस दिन से जिस दिन ग्रहों ने पहले पूरा असर दिया था वो अब अपनी दूसरी चाल में ुरा असर न दे। यह जरूरी नहीं कि वो बुरा फल देने वाला अच्छा फल ही देंगे मगर अब ुरा फल न देगा।

बारह घन्टे का दिन, 12 घन्टे की रात, 12 महीने का साल, 12 राशि का प्रभाव और 12 र्ष मासूम बच्चा और 12 साल के बाद अच्छे दिनों की आशा सबके सब 35 में शामिल हैं ौर जमाने की हवा या वृहस्पति की तलाश की चिन्ता मे पीला रंग का प्रभाव दुनिया की ब चीजों पर असर करता है। रंगदार हाथ के नकशे के पूरे मतलब यह होंगे कि जिस ग्रह ा जो रंग भी दिया गया है जब कभी उस ग्रह के प्रभाव का समय होगा वो ग्रह उस रंग ी चीजों पर या उस रंग की चीजों से अपना प्रभाव प्रकट करेगा। यानि रंग के हिसाब से कट करने वाली चीज को पहले तो देखना है कि वो किस ग्रह से मिलती हैं फिर देखना ै कि वो चीज वास्तव में किस ग्रह की चीज हैं। उदाहरण के लिए एक सूर्य रंग ूर्य(गन्दगी) सूर्य का है मगर चीज स्वयं गाय शुक्र की हैं। इसलिए असल गाय के समय ूर्य व शुक्र का साँझा प्रभाव लेंगे। काला भैंस का रंग व शरीर दोनों ही शनि हैं मगर भैंस र लाल रंग (भूरा) होने पर सूर्य का अच्छा फल होगा और शनि का बिल्कुल न होगा। योकि यह दोनों ग्रह इकटठे काम नही करते और अगर किसी समय करें तो जमा (सूर्य, नि) दोनों का नतीजा शुन्य ही करते जाएंगे। मगर रंग भैस का काला हो मगर माथा सका सफेद हो तो शनि चन्द्र भी शामिल होगें। अब केतू (दोरगा रंग) ओर शनि दोनों का ी प्रभाव होगा। केतू और शनि के सहायता पर हो तो सहायक रहेगा और शनि व केतु के ुश्मन ग्रहों की चीजों पर बुरा प्रभाव देंगे। लेकिन अगर भैस का रंग भुरा हो और माथा फेद हो तो चन्द्र का नेक प्रभाव होगा। इसी तरह से दो रंगी कुत्ता (काला रंग के धब्बे ाला) केतु होगा। लेकिन जब लाल धब्बे हो तो केतू का प्रभाव न देगा, सूर्य का ही प्रभाव गा। लेकिन अगर ऐसा कुत्ता लाल- सफेद रंग का हो तो सूर्य चन्द्र का नेक प्रभाव होगा। ब कोई चीज सूर्य चन्द्र या शनि किसी ही ग्रह के असर की साबित होगी तो फिर देखना ोगा कि अब यह चीज

जो फर्जा की सूर्य के असर की है वो उस हाथ वाले के किस बात में लाभदायक होगी यानि उस सूर्य के दोस्त ग्रह कौन- कौन से हैं इन पर वो नेक असर देगी । जो ग्रह सूर्य के दुश्मन हैं उन ग्रहों की चीजों पर बुरा प्रभाव देगी । यही हाल हर समय के ग्रह के प्रभाव का होगा। शरीर इन्सान पर प्रभाव करने के लिए सभी ग्रह राशियों के प्रभाव के अतिरिक्त बाकी चीजें भी हैं जो ग्रहों की तरह प्रभाव करने वाली होंगी । मगर आखिरी फैसले की बात सभी ही को इकट्ठा गिन कर सब पर जबरदस्त प्रभाव करने वाली बात का नतीजा होगा। दिमाग पर बड़ा भारी असर होने से थकाएगा मगर मेहनत से लाल किताब के द्वारा निकाला हुआ नतीजा या फरमान एक विशेष चीज होगी ।

शरीर व ग्रह का संबंध

दुश्मन पार्टी :-

शनि का सूर्य, सूर्य का शुक्र, शुक्र का वृहस्पति, वृहस्पति का बुध, बुध का चन्द्र, चन्द्र का केतू, केतू का मंगलबद, मंगलबद का राहू

दोस्त पार्टी :-

सूर्य का चन्द्र, चन्द्र का वृहस्पति, वृहस्पति का मंगल नेक, मंगल नेक का राहू, राहू का बुध, बुध का शनि, शनि का शुक्र, शुक्र का केतू ।

ग्रहों में ऊपरलिखित दुश्मन पार्टी के ग्रह क्रमश: एक दूसरे के दुश्मन हैं जिनका मालिक या सरदार राहू है । दोस्त पार्टी में ग्रह क्रमश : एक दूसरे के दोस्त हैं जिनका मालिक या सरदार केतू है । यानि राहू तो सिर की मालिक और केतू पांव के चक्र का मालिक है।

इन्सानी शरीर में :-

जिगर-मंगल, दिल-चन्द्र, धड़-केतू के सलाहकार दिमाग का जवान-बुध देखना मिलना शनि सिर-राहू के सलाहकार है । सिर राहू के सलाहकार हैं। सिर (राहू), धड़ (केतू) दोनों को मिलाने वाली गर्दन के सांस का मालिक वृहस्पति हैं लिहाजा वृहस्पति बहालत एक अकेला इन्सानी शरीर, बहातल टुल इन्सान सारी दुनिया (यानि लोक और दैवी दुनिया सारी ग्रहों की साँझी शक्ति परलोक का मालिक है केवल इसी सिफत पर यह ग्रह किसी से दुश्मनी नहीं करता ।

ग्रहों की दृष्टि

हस्त रेखा में रेखा की शाखों या रेखा के उतार व झुकाव को ज्योतिष विद्या में ग्रह दृष्टि गिनते हैं । रेखा का ऊपर को झुकाव और उठाव तरक्की या नेक प्रभाव और नीचे को झुकाव बुरा प्रभाव बताता है । यही हाल शाखों के ऊपर को या नीचे को निकल जाने से गिना है । रेखा का ऊपर को झुकाव वा उठाव से मुराद

ोगी कि इसमें इस ग्रह का प्रभाव आकर मिल रहा है । जिस ग्रह के पर्वत तरफ को वो ेसा उठ रही है । कुण्डली में पहले घरों के ग्रह अपने से बाद के घरों में अपना प्रभाव मेलाया करते हैं । सिवाए खाना नं0 8 जिसके ग्रह पीछे को देखते या अपने से पहले घरों में अपना प्रभाव मिला देते हैं । इस तरह जब तक पहले घरों का बुरा प्रभाव समाप्त न हो बाद के घरों के ग्रहों का शुभ प्रभाव न होगा । सिवाए खाना नं0-8 का प्रभाव उल्ट गिनेंगे।

एक अकेले का दुश्मन न कोई न ही दोस्ती होती है
रियाया बना न राजा कोई न ही वजीरी होती है
एक से 6 तक तरफ जो पहली, हिस्सा दायां कहलाती है
बाद के घर 7 से 2, तरफ बाईं हो जाती है
तरफ पहली व ग्रह हो कोई, बाद के ग्रह सोए होते हैं ।
घर जब बाद का खाली होए तरफ सोई पहली गिनते है
जिस घर में ग्रह हो कोई बैठा, जगाता घर तो लेते हैं
जागे घर ना ही प्रभाव ग्रह का, जब तक खाली होते है
ऊँच दृष्टि कितना ही होवे, निर्बल प्रबल किसी भी घर
घर दृष्टि कितना ही होवे, निर्बल प्रबल किसी भी घर
घर दृष्टि का जब तक खाली, असर जाए न दूसरे घर
घर 8 गुणा 9=11, गुरू से जागे चन्द्र से 8,4,2 घर
रवि जगाता घर पाचवां तो, शुक्र जगाए सातवां घर
शनि से 1 वां राहू 6 को, बुध जगाता है तीसरा घर
मंगल से घर पहला जागे, केतू जगावे बारहवां घर
ग्रह दोस्त नहीं आपस में लड़ते, झगड़ा कराते दूसरे हैं
शनि रवि दो इकटठे बैठें, जीते ग्रह स्त्री से हैं
ग्रह साँझा बुरा नहीं करते, बन्द मुटठी के खानों में
फल 2,11 अपना अपना धर्म मन्दिर गुरुद्वारा में
स्त्री ग्रह जब शनि से मिलकर, बैठे दो या कहीं भी हों,
ग्रह दृष्टि से जाइबहे देखे, मरते आल सन्तान से हों
इस जहर को घर नीते से, राहू केते हटाते हैं
अगर मदद न उनकी लेवे, मंगल केतू मरते हैं
एक दीवार के घर दो साथी ग्रह साँझा होते हैं
शत्रु ग्रह तो कभी न मिलते, दोस्त मिले ही गिनते हैं
वजह किसी दीवार फटे अगर, दुगुनी जहर हो जाती है
अक्ल बड़ी किस्मत हो मन्दी, मौत खड़ी हो जाती है
घर 10 में लड़ते दुश्मन ग्रह, वो टेवा अन्धा हो
सूर्य4, शनि हो 7, अन्धराता, आधा अन्धा हो

राहू केतू घर चौथें दसवें, या चन्द्र भी साथी हो
शनि या गुरू साथी, टेवा वो कु ल धर्मी हो
घर अपने से पांचवें दोस्त, सातवें उल्ट होते हैं (में रास्ता मिला दे)
आठवें घर पर टक्कर खाते, नींव नौवें पर होते हैं
तीसरे घर के अलग-अलग तो, बुध से तो आ मिलते हैं ।
घर 10 पर बाहर दुश्मन, धोखा वो देते या चक्र हैं
नर ग्रह बोलते जुस्त के घर में, स्त्री बोलते ताक में हैं
बुध है बोलता 3,6 में, तो पापी नहीं बोलते 2 में हैं
ग्रह शत्रु में गुरू जो आवे, बैर खत्म हो जाते हैं
माता चन्द्र जब साथी होवे, दोस्ती पैदा करता हैं
घर पांचवां औलाद का गिनते, 11 होता घर धर्मी है
घर आठवें जो मौत निमानी, साथ लगी 9 बुजुर्गी हैं
घर पहले की उम्र सौसाला, तीन, नौ से दस बारह है
85 उम्र सात चौथे की लेते, 80 होती घर 2 की है
घर और ग्रह की उम्र जुदा पर, गुजरती दो की इकटठी है
गुरू जगत की उम्र 75, बुध केतू 80 होती है
शुक्र चन्द्र की उम्र 85, शनि मंगल राहू 90 है
स्त्री ग्रह जब मिले नरों से उम्र 96 होती है
साथ मिले जब बुध पापी का, वही 85 होती है
रवि मालिक है पूरी सदी का उम्र लम्बी उस होती है
ग्रहण लगे जब चन्द्र रवि को, साल तीन कम होती है

कुण्डली में हर ग्रह व खाना नम्बर की सम्बन्धित चीजों का प्रभाव देखने के लिए उसकी आपसी दृष्टि का संबंध हर ग्रह अपने से सातवें 100 प्रतिशत नजर से देखते है खाना नं0-1 और 7 व खाना नं0-4 -10 पूरी नजर रखते हैं । लगभग दुश्मन होते हैं । खाना नं0-5,9 व खाना नं0-3,10 आधी नजर और लगभग दोस्त होते हैं । खाना नं0-2,6 व खाना नं0-8,12 मिलकर खराब फल मगर राशि का ऊच्च ग्रह अपनी राशि में अच्छा फल देंगा । 25 प्रतिशत नजर, 25 प्रतिशत त्रिकोन 100 प्रतिशत दृष्टि की हालत मे दो ग्रह एक दूसरे के ज्यादा पास या एक ही हो जाते हैं या मिल जाते है। 50 प्रतिशत पर इनका मध्य का फासला नसफ रह जाता है या दोनों की ताकतें आधी-आधी आपस में मिल जाती हैं। 25 प्रतिशत पर केवल एक चौथाई मिलते हैं यानि तीन चौथाई वो एक दूसरे से दूर रह जाते हैं बुध की राहू केतू से दृष्टि खास नाली खाना नं0-2,9 से मिलती हैं ।

ग्रहों की आपसी दृष्टि व राशियों (कुण्डली की खानों)से संबंध :-

बात को समझने के लिए राशि को इत्री और ग्रह को मर्द करें, दोनों का मिलाप

ह व राशि या मर्द-औरत का जोड़ा, मिथुन राशि बुध के खाली आकाश में शुक्र की हस्थी मुहब्बत हकीकी व गैर हकीकी में कुल सृष्टि से चल रहा है । इस जोड़े की नियत ोन हिस्सा मे बटी हुई समझें । क घर की मालिकियत या साधारण जैसी कि हर मर्द औरत ो गिनी जा सकती है । 12 ऊँच हालत यानि जो हर एक या आपस में एक के लिए दूसरे ो; नेक हो सकती है । 3 नीच या बुरी और दुश्मनी भरी या बुरी एक के हाथों दूसरे का ्रा करने वाली होगी ।

हर एक राशि के प्रभाव के लिए इसके घर का मालिक ग्रह साधारण या आम हालत ा(भला या बुरा) ऊच्च फल की राशि से नेक फल देने का संबंध चाहे राशि को ग्रह के ाए या ग्रह को राशि के लिए मानों और नीच फल की राशि का ग्रह बुरे प्रभाव से म्बन्धित होगा । या जिसकी चाहे राशि की उस सम्बन्धित ग्रह के लिए कहीं चाहे ग्रह के ाए उस राशि के संबंध से समझे (नीयत बाद गिनी जाएगी) । हर एक राशि किसी विशेष ह के लिए विशेष-विशेष संबंध (बुरा या भला) की और हर एक ग्रह किसी खास राशि ो लिए विशेष-विशेष संबंध का निश्चित किया गया है । इस तरह पर निश्चित किए हुए ोड़े में से जब कोई ग्रह अपनी निश्चित राशि की बजाए किसी और ग्रह की सम्बंधित ाशि में बैठे तो वो ग्रह जा चल का दूसरी जगह जा बैठा है, कुण्डली वाले की किस्मत पर सा ही प्रभाव करेगा जैसा कि वो दूसरी जगह जाकर हो गया है ।

(2) कुण्डली के बारह खानों को एक बड़े मकान की बारह कोठरियों फर्ज कर ले, हर क खाना की लकीर को उस कोठी की दीवार समझे तो ख्याल आएगा कि कुण्डली के ार खाने चार-चार दीवारों वाले, चार खाने हैं जिसमें साथ लाया हुआ खजाना गिना गया । बाकी 8 खाने केवल 3-3 दीवारों से बने हुए हैं, आधे-आधे मकानों की तरह के 8 शलशें है : जिस में कुण्डली वाले का आधा-आधा हिस्सा मिल कर कु ल आठों से आया ा चार पूरे घर और हैं । यद्यपि वच्चे के कुल आठ घर हो गए पहला घर अपना जन्म का रीर व आठवां खाना नं0 8 मौत है ग्रहों के लैम्प मानें, सब कोठरियों के दरवाजे किसी किसी तरफ खुलते हुए माने गए हैं या एक घर में चमकते या चलते हुए लैम्प की रोशनी सके दरवाजे से दूसरे के अन्दर जाती हुई मानी गई है । रोशनी के इस तरह दूसरे घर में च जाने के ढंग को ग्रह की दृष्टि कहलाती है। लाल किताब में हर ग्रह अपने से सातवें खता हैं, ये मुराद है कि वो अपने उस घर से अपने से बाद के घर को दखता है, या सका अपना बैठे हुए घर का अगर वो अपने बाद बोले में भी पंचा रहा है । मगर यह तलब नहीं है कि वो अपने से बाद वाले सातवें घर के ग्रह के प्रभाव का अपनी तरफ पने बैठें हुए खाना नं0-8 में खींच रहा है । खाना नं0-8 मौत का घर उल्टा देखता है ानि कि वो अपना असर खाना नं0 2

की तरफ भेजता है या खाना नं0-2 को सबके लिए राहू-केतू की साँझी बैठक के असर का निश्चित हैं । मगर इस खाना नं0-2 में खाना नं0-8 से आने वाले प्रभाव में सभी पापी ग्रहों का अज भी शमिल है दूसरे शब्दों में खत्म होने वे पहले ही दूसरी रेखा का शुरू हो जाना ----- रेखा का टूटा हुआ नहीं होता । बल्कि बदली हालात जाहिर करता है । चाहे वो बदली अच्छी तरफ हो चाहे बुरी तरफ हो, अगर ऐसी बदली बुरी तरफ को जाती मालूम हो तो दान से रिहाई और नेक प्रभाव होगा ।

अपने से सातवें घर को देखने वाले खानों के ग्रह यानि खाना नं0 3,6,9 के ग्रह तीसरा नौवा को देखता है मगर नौवा तीसरे को नहीं देखता । इसी तरह छटा बारहवें को देखता है मगर बारहवां छटे को या में अपना प्रभाव नहीं डाल सकता। सिवाए खाना नं0 2 के बुध के क्योंकि बुध को आकाश माना है और खाना नं0 6 पाताल और खाना नं0 2 आकाश में भी खाली आकाश होता है हर सातवें साल तबदीली हालत कर सकते है । खाना नं0 8 मौत पीछे को देखने वाले घर के ग्रह हर आठवें साल तबदीली हालात दे सकते हैं । दृष्टि अपने से बाद के सातवें को देखने वाले घर ग्रह हैं :-

खाना नं0 3 देखता हैं खाना नं0 9 को खाना नं0 6 देखता है खाना नं0 2 को,

खाना नं0 8 देखता है खाना नं0 2 को

बुध के ग्रह को अलग ही कहानी है जो जुदी जगह लिखी है । विस्तृत रुप से नं0 3 से नं0 9 को देखता हुआ बुध या नं0 9 में बैठा हुआ बुध, नं0 2 नं0 6 को देखता हुआ बुध सबके ही ग्रह का फल खेमायनी कर देता है । चाहे वो सारे एक तरफ और बुध अकेला ही मुकाबला करे, चाहे यो इसके दोस्त हों या दुश्मन, चाहे वो इसके साथ ही हों या उससे अलग मुकाबला पर । खाना नं0 8 पीछे को देखता है इसी असूल पर खाना नं0 8 ने नं0 2 को देखा और नं0 2 ने नं0 6 को तो नं0 8 का प्रभाव नं0 6 में 25 प्रतिशत होगा और नं0 6 ने नं0 12 को देखा तो नं0 8 का प्रभाव नं0 12 में चला गया या नं0 8 का प्रभाव 12 में 25 प्रतिशत डाला है अब नं0 2 में 10 प्रतिशत नं0 8 का प्रभाव मिला है और नं0 12 में 2,6 की मारफत 25 प्रतिशत नं0 8 का प्रभाव मिला होता है, खाना नं0 2 देखता है 25 प्रतिशत नं0 12 को ।

10 प्रतिशत और अपने से बाद के सातवें को देखने का फर्क

10 प्रतिशत वाला खाना अपने से बाद के खाना में मुसीबत मे सांड की तरह अपना प्रभाव ऐसे का वैसा ही मिला देता है मगर अपने से सातवें वाला अपने से बाद के घर के प्रभाव को उल्टा देता है माना कि दूध का बर्तन ही जहरीला कर देता है दोनों हालतों से दृष्टि का प्रभाव तो 10 प्रतिशत ही होता है फर्क थोड़ा सा यह है कि 10 प्रतिशत के प्रभाव के खाने केवल बन्दमुटठी के अन्दर के

निश्चित है मगर अपने से बाद के खाने बाहर ही त्रिकानों के घरों से निश्चित है मुट्ठी के अन्दर अपने से सातवें का असूल न होगा और न ही बाहर वालों पर 10 प्रतिशत का असूल चल सकेगा । 2 जब कोई ग्रह अपने से बाद के घर को 10 प्रतिशत नजर से देखता है तो तो देखने वाला ग्रह अपने बाद के घर ग्रह में बाद के घर में नहीं अपना प्रभाव ऐसा मिला ता है कि पहले का प्रभाव दूसरे में मिल हुआ मालूम ही न होगा जैसे दूध मे चीनी जैसी मिलावट को बुध की मिलावट कहते हैं और इस पहले घर वाले ग्रह का यही असर रहेगा जैसा कि वो पहले घर में था । मगर जब कोई ग्रह अपने से बाद के सातवें को देखें तो व केवल देखने वाले ग्रह का प्रभाव उस घर में ग्रह में नहीं दें तो ऐसा मिला हुआ होगा जैसे एक टांग कटे आदमी को दूसरी टांग लगा दी गई। दो चीजों का इकटठे होकर काम करना मगर अपने-अपने बजूद को न छोड़ना, यह मिलावट मंगल की कहलाती है। बल्कि इस पहले घर वाले ग्रह का प्रभाव बाद वाले के लिए बिल्कुल उल्ट होगा । यानि अगर पहले घर वाले का पहले घर में नेक प्रभाव थी बाद के घर में मिलने के समय वेग पहला प्रभाव अगर नेक था तो बाद वाले के लिए बुरा ही होगा मगर पहले का स्वयं अपने लिए जैसा कि वो हो वैसा ही रहेगा।

ग्रह का प्रभाव ग्रह में और ग्रह का प्रभाव दूसरे ग्रह के घर में और उन का फर्क :-

(1) पहले घर के ग्रह का प्रभाव बाद के घर के ग्रह में मिल जाने से मतलब यह होगा कि पहले घर के बाद के घर के ग्रहों का प्रभाव ही हो गया । बाद के घर के ग्रह में पहले घर के ग्रहों का प्रभाव ऐसा मिला कि जुदा न गिना गया लेकिन इस मिलावट ने बाद के घर में यानि बाद के खाना नम्बर में अपना कोई प्रभाव न डाला, हो सकता है कि उस बाद के घर में कई ही ग्रह हों पहले घर के ग्रह का प्रभाव बाद के घर के सब ग्रहों जितने भी हो में सब मिला तो हो सकता है कि अगर वो पहले सबके सब जो बाद के घर में थे, दोस्त हो या जब (अ) इनमें पहले घर के ग्रह की जहरीली तो वो सबके सब या इनमें से चन्द्र आपस में या चन्द्र दूसरों के दुश्मन हो जाएं ।

(ब) उनमें दोस्ती पैदा कर देने की शक्ति का अगर मिल जाए तो जो पहले दुश्मनी भाव अब आपस में या चन्द्र दूसरों से दोस्ती का संबंध कर ले।

(2) पहले घर के ग्रह का प्रभाव बाद के घर में मिल जाने ग्रह में नहीं से मुराद होगी कि बाद के घर के ग्रह अलग-अलग ही लेंगे मगर वो मंगल की बनाई हुई मिलावट की तरह अलग अलग होती हुए भी इस आ मिलने वाले ग्रह के प्रभाव का सबूत देंगे क्योंकि उस घर का ही प्रभाव आ मिलने वाले ग्रह के प्रभाव ने सबके लिए बदल दिया या बाद के घर के ग्रहों के लिए वो खाना नम्बर ही किसी और प्रभाव का हो गया । यानि इन ग्रहों ने अपना-अपना पहला प्रभाव

इस घर की सारी चीजों पर बदल कर दिया । जब ग्रह से ग्रह मिला था तो असली तौर पर यह फर्क हुआ था कि पहले घर के ग्रह ने भी बाद के घर के ग्रह के प्रभाव को बदला था यानि बाद के घर का प्रभाव जिसमें कि वो ग्रह जिसका न चीजों पर किया जो चीजें उस का प्रभाव बदला जाने वाले ग्रह की और उस घर की जिसमें बैठा हुआ कि वो प्रभाव में बदला जाने वाला ग्रह था, अगर बुत ग्रह हो तो उन ग्रहों ने जिनका प्रभाव बदला गया अपने बदले हुए प्रभाव का सबूत केवल उनकी चीजों पर दिया जो चीजें कि उस आने की उन ग्रहों से सम्बन्धित हो । मशता-बुध व शुक्र दोनों का ही पक्का घर खाना नं0 7 है जिसमें ऊपर से खाना नं0 8 का प्रभाव मिल सकता है फर्ज करें कि खाना नं0 1 में है सूर्य और नं0 7 में हो शुक्र, बुध, अब सूर्य का प्रभाव दोनों में मिल गया यानि शुक्र व बुध दोनों ही सूर्य की तरफ चमकने लगे और सूर्य का असर नं0 7 वालों के लिए अपना पहले घर में ऊच्च हालत का होने की बजाए उल्ट बुरा न होगा ओर वो प्रभाव दोनों ग्रहों में दूध की खाण्ड की तरह मिल जाएगा । यह है हालत 10 प्रतिशत की ।

दूसरी उदाहरण :- मान लो कि शुक्र को खाना नं0 6 में और मंगल हो खाना नं0 12 में दृष्टि मे 6-12 अपने से सातवें है यानि शुक्र नं0 6 को जो प्रभाव है खाना नं0 6 में इसका उल्ट होगा खाना नं0 12 में, उस ग्रह के लिए जो खाना नं0 12 में है । वो हैं, मंगल, मानो कि अब मंगल के लिए वो खाना नं0 12 सब ही चीजों के प्रभाव के लिए जो खाना नं0 12 की है शुभ होगा । क्योंकि नं0 6 का शुक्र नीच है जब इसका असर नं0 12 में गया हो तो नं0 12 की सारी चीजों के लिए ऊच्च फल की होगी । मगर यह ऊच्च फल किसके लिए होगा, मंगल के लिए जो खाना नं0 12 का है यानि कुण्डली वाले के भाई (मंगल) का गृहस्थ का सुख इस भाई के लिए उम्दा होगा । मगर कुण्डली वाले के शुक्र (औरत) का फल वैसे का वैसा ही बुरा और नीच होगा । विस्तार रुप से 10 प्रतिशत की मिलावट की हालत में कुण्डली वाले को जाती अच्छा बुरा प्रभाव मिलेगा मगर अपने से या सातवें की दृष्टि प्रभाव करेगी बाद घर पर जिसकी वजह से उस घर का जो ग्रह इस कुण्डली वाले का जैसे भी रिश्तेदार होते उस पर प्रभाव देगी । मगर कुण्डली वाले पर सीधा प्रभाव न होगा । उदाहरणतय: बाद के घर में सातवें मिलावट की हालत में शुक्र है तो प्रभाव होगा बाद के घर का शुक्र पर उल्ट कर या औरत जात के सम्बंधित या कुण्डली वाले के ससुराल आदि पर अपने प्रभाव का उल्ट प्रभाव होता होगा । अगर पहले घर का कुण्डली वाले को बुरा फल मिल रहा है तो उस बुरे फल का उल्ट अच्छा फल मिलता जाएगा । कुण्डली वाले के उस ग्रह के सम्बन्धित रिस्तेदार को जो बाद के घर के ग्रह से कुण्डली वाले के साथ सम्बन्ध हो यानि नं0 1 हो तो भाई आदि ।

सेहत, बीमारी, शादी, सन्तान, मकान आदि
विशेष-विशेष चीजों के लिए दृष्टि:-

दो घरों के बीच जब घर हो 3(पांचवा) दोनों खानों के ग्रह आपस में सहायक होगें । ाहे दोस्त हो चाहे दुश्मन। पांच (सातवां) देखने वाले घर के ग्रह देखे जाने वाले घर पर ापना बैठे होने वाले घर के प्रभाव का उल्ट प्रभाव देंगे। बन्द मुट्ठी की शर्तें अलग होंगी। (आँठवां) दोनों घरों के ग्रह आपस में टकराव, बारिश बरसा लेने का फायदा, टकराव ागा। बाकी सब टकराव के घरों में बुरा प्रभाव होगा। 7 (नौवां) दोनो घरों के ग्रह आपस दुश्मनी पर होगें। उदाहरणतः खाना नं0 9 से 6 तक बीच खाली होगें । 10 से 12= 3, 3 5 = 5 कुल 8 और मान लो करो कि नं0-9 में शनि है जो नं0 9 में बहुत शुभ और 60 ाल के प्रभाव का है और नं0 6 में बुध है जो बजात स्वयं नं0 6 में ऊच्च या राजयोग है ाकिन अब अगर खाना नं0-6 वाले यानि टेवे वाले के मामू आदि केवल बुध से संबन्धित ारोबार ही करें तो वो काम करने के लिए राजयोग होंगे लेकिन अगर वही मामू आदि शनि सम्बन्धित कारोबार करें तो वे बरबाद होंगे। स्वयं नं0 9 वालों के लिए यानि इसके ज़ुर्गों के लिए शनि का फल अच्छा ही होगा । और नं0-6 वाले के मामू आदि के लिए ाध के काम शुभ होंगे । इस दुश्मनी का टेवे वाले पर कोई बुरा प्रभाव न होगा । अगर कोई ागा तो शनि का नं0 6 के घर से सम्बन्ध रखने वालों पर बुरा होगा । उदाहरणतः खाना नं0 2 से नं0 5 तक के बीच घर होंगे कुल 6 घर मगर खाना नं0 5 से 10 तक के बीच कुल घर यानि खाना नं0 5 के चन्द्र के जो नं0 10 देख सकेगा नं0-5 को मगर नं0-5 नहीं ख सकता नं0 10 के सिवाय नं0 -5 के चन्द्र के जो 10 के लिए जहर होगा। आमतौर पर हले घरों के ग्रह दूसरे घर वालों को देखा करते हैं। सिवाए खाना नं0-8 (लेकिन खाली ानो की हालत में सोए घर या सोए ग्रह देखने के लिए ऊपर की शर्त आगे पीछे दोनों ही रफ चला कर देखी जाएगी। खाना नं0 2, 8, 2, 9, 2,10 व 11, 8 व 3, 8, 3, 5 सांझे ाने जाते हैं।

नर ग्रह बोलते जुस्त के घर में, स्त्री तोलते ताक मे हैं
ाध हैं तोलता 3-6 में, तो पापी नही बोलते 2 में हैं।
नोट :- आवश्यक सूचि अगले पृष्ठ पर दी गई हैं)

ह का असल प्रभाव हर घर में :- जन्म कुण्डली में काई भी ग्रह जिस हैसियत से बैठा ा वो ग्रह अपनी इस हैसियत का प्रभाव (अच्छा,बुरा, ऊच्च-नीच आदि) केवल इस ाल देगा जिस साल वो वर्षफल के हिसाब से उस बैठा होने वाली हैसियत के लिए ाश्वत की हुई राशि पद के घर में आ जाए

उदाहरण के तौर पर वृहस्पति ऊच्च है खाना नं0-4 में वृहस्पति का दर्जा केवल उस ाल होगा जिस साल कि वो वर्षफल के हिसाब से अपने नेक होने के खाना

नं0-4 या 2 आदि में आ जाए। जन्म से ऊच्च तो है मगर असल ऊच्च न केवल साल निश्चित और राशि या खाना नं0 पक्का घर निश्चित में आने पर ही प्रकट होगा। इसी तरह ही सब ग्रहों का और सब तरह का होगा। न हमेशा अच्छा और न हमेशा ही बुरा गिना जाएगा। यही हाल धोखे के ग्रह का हैं यानि धोखे का

	दृष्टि	आपसी मदद	आम हालत	टकराव	नींव	धोखा	साँझीदीवार	अचानक चोट
1	क ख	5 9	7 7	8 6	9 5	10 4	2 10 12	3
2	क ख	6 10	8 8	9 7	10 6	11 5	3 1	4
3	क ख	7 11	9 8	10 8	11 7	12 6	4 2	1
4	क ख	8 12	10 10	11 7	12 8	1 6	5)1 3)	1
5	क ख	9 1	11 11	12 9	1 6	2 7	6 4	7
6	क ख	10 2	12 12	1 11	2 10	3 9	7 5	4
7	क ख	11 3	1 1	2 12	3 11	4 10	8]10 4]6	1
8	क ख	12 4	2 2	3 1	4 12	5 11	9)2 7)	10
9	क ख	1 5	3 3	4 2	5 1	6 12	10 8	7
10	क ख	2 5	4 4	5 3	6 2	7 1	1)11 7)9	4
11	क ख	3 7	5 5	6 4	7 3	8 2	12 10	1
12	क ख	4 8	6 6	7 5	3 4	9 3	1 11	10

- क देख सकता हैं खाना को, (खा देखा जा सकता हैं खाना नं0- से 1 ग्रह (बमुजब धोखा-सूचि)जिस साल खाना नं0 1 धोखे के घर, में आ जाए धोखा

पुरा देगा और बुरा धोखा या धोखे का ग्रह जब खाना नं0-2 किस्मत के ग्रह का घर खाना नं0-1 किस्मत को जगाने वाले ग्रह के घर में आ जाए तो धोखा देगा नेक मामलो में। बुरा ग्रह असल बुरा उस समय होगा जिस समय वो खाना नं08 में आ जाए। इसी तरह ही वर्षफल के हिसाब से हर घर में आने पर प्रभाव हालत होगी। यानि खाना नं0 6 में राहू का संबंध का प्रभाव हो जाएगा आदि-आदि। नेक ग्रह का बुरा प्रभाव हर ग्रह अपने खानावार हाल में दिया हुआ प्रभाव किया करता हैं लेकिन अगर स्वयं जाती कोशिश से कोई नया कारण खडा करें जो कि इस ग्रह की सम्बन्धित चीज या प्रभाव के विरूध हो तो प्रभाव में बदलाव हो जाएगा। उदाहरणत. राहू नं0 4 के में पाप न करने की कसम उठाए होता है अगर इस समय जबकि या जिस साल वर्षफल आदि के हिसाब से राहू नं0-4 में आया हुआ हो और व्यक्ति सम्बन्धित राहू की चीजें। उदाहरण के तौर पर नमी बनाना, कोयले की बोरियों में हर बोरी को जमा करना, ला-औलादो या काने आदमियों को हिस्सेदार बना लेना, या टट्टी या पखाना की नई जगह बनवाना या मकानों की केवल छत्त ही उतरा कर नई बदलना या टट्टी की ही छत्त बदलवाना आदि करें तो राहू शरारत, झगड़े फसाद पैदा कर देगा। इसी तरह ही वृहस्पति ऊच्च चाहे जन्म कुण्डली चाहे वर्षफल में वाला प्रभाव वृहस्पति की सम्बन्धित चीजें पीपल के पेड़ को कटवाना साधु-सन्तो को बताना, बर्बाद करना आदि करें तो वृहस्पति का सोना मिट्टी हो जाएगा।

2. अगर केतू नं0-12 में हो और व्यक्ति न ही कुत्ते की सेवा करें और न ही स्वयं अपने घर में रखें बल्कि कुत्ते को मारना शुरू कर देते तो केतु का फल बुरा होगा आदि-आदि।

बालिग-नाबालिग ग्रह:- बच्चे की रेखा का 12 साल उम्र तक कोई विश्वास नही, 12 साल से रेखा में भी कोई परिर्वतन नहीं मानते। नाबालिग बच्चे की रेखा का कोई विश्वास नही होता सम्भव है कि ऐसी उम्र तक दो पक्के

प्रभाव की रेखा हो या परिर्वतन की हो जाने वाली हो। विद्या ज्यातिष से बच्चा की बन्दमुटठी या कुण्डली के खाना नं0 17, 4,10 खाली हों या अब खानों में केवल पापी ग्रह या बुध अकेला (पापी ग्रह या बुध दोनो में से केवल एक) हो तो इसकी किस्मत का हाल 12 साल उम्र तक शक्की होगा। ऐसी हालत में बच्चा (नाबालिग) की किस्मत का मालिक ग्रह ऊपर लिखा होगा।

उम्र के हिसाब से प्रभाव का खाना नं0 देखते जाए अगर कोई खाना नं0 खाली ही हुआ जाए तो इस खाली खाना नं0 की राशि के मालिक ग्रह (घर का मालिक) जिस खाने में हो वो खाना ले। बालिग ग्रहों का बाकी आम नियम होगा।

उम्र का साल	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
किसी खाने के ग्रहों का असर लेंगें	7	4	9	11	10	3	2	5	6	12	1	8
12 साल धोखे का ग्रह	सूर्य	च०	केतू	मं०	बु०	श०	रा०	मौत	पितृ ग्रह	वृ०	शु०	राशि खातें।

इस बात का शक न करें कि एक ही खाना नं0 के ग्रह कई बार क्यों बोले, नाबालिग हालत में 12 साल धोखे का चक्र का ध्यान जरूरी रखें।

जन्म दिन का ग्रह:-

जन्म दिन और समय जन्म का जब एक ही ग्रह हो जाए (उदाहरणतय: मंगलवार का दिन और मंगलवार की पक्की दोपहर के समय की पैदाइश (तो ऐसा ग्रह कुण्डली वाले का कभी बुरा न करेगा और न ही कभी धोखा देगा । बल्कि मौत भी उसी दिन और उसी दिन के उसी समय न होगी। चाहे कि चन्द्र के हिसाब से मौत का वो हदन आदे वशर्ते कि कुण्डली में भी वो ग्रह कायम हो (काम की व्याख्या अलग जगह लिखी हैं) बाकी हालतों में जबकि जन्म दिन तो किसी ग्रह का हो और जन्म समय किसी और ही ग्रह का हो तो ऐसी हालत में जन्म दिन और जन्म के समय ग्रहों की सब हालतों ग्रह फल, राशि फल, बराबर का ग्रह या आपसी दोस्ती-दुश्मनी के नतीजा का प्रभाव होगा। जन्म समय को गिनते हैं- किस्मत का ग्रह और ग्रह फल का (2) जन्म दिन को गिनते हैं किस्मत के ग्रह को जमाने वाले ग्रह का पक्का-घर यानि पैदाइश हो सोमवार के समय पक्की शाम

अब राहू जन्म समय का ग्रह होगा, चन्द्र (जन्म दिन) के पक्ष के घर नं0-4 में यानि कुण्डली वाले के लिए जब कभी और जो भी खाना नं0 4 का प्रभाव होगा, राशि फल का होगा। जिसका चन्द्र के उपाय से नेक प्रभाव होगा या राहू इस व्यक्ति के खाना नं0-4 की चीजो पर बुरा प्रभाव राशिफल का होगा। चाहे वो ग्रह (जन्म वक्त का) राशि फल का न भी हो लेकिन अगर जन्म के समय का ग्रह (पैदाइश) के हिसाब से जो भी हो ऊपर की उदाहरण के अनुसार हर ग्रह के विशेष-विशेष घर राशि फल वालों में आ जाए तो दिया हुआ उपाय सहायक होगा। जिसके लिए बदला जाने वाला या उपाय के काबिल जन्म दिन का ग्रह लेंगे। जन्म समय का नहीं। उदाहरणतय: किसी की मंगलवार सुबह के बाद दिन का पहला हिस्सा

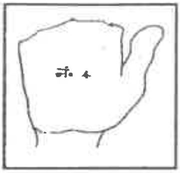

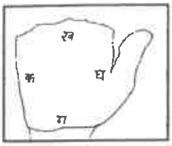

(समय वृहस्पति) पैदाइश हैं अब जन्म समय वृहस्पति का ग्रह मंगल के पक्के। घर खाना नं0 3 में होगा। मान लो अब वृहस्पति का ग्रह खाना नं0-3 का होता हुआ बीमारी ही बीमारी खड़ा करता जाए तो मंगल का राशि फल का होगा। जो जन्म दिन का ग्रह गिना था कि अब देखा तो मालूम हुआ कि मंगल केवल खाना नं0 4 ओर 6 में राशि फल का लिखा हैं, मगर ऊपर की उदाहरण में मंगल ही उपाय के काबिल हें। वृहस्पति का उपाय तो कर नही सकते यानि जायज नही

ऐसी हालत में मंगल का आम उपाय करना सहायक होगा। सप्ताह में ग्रहः-

सप्ताह में दिनों की तरह रविवार (सूर्य), सोमवार) चन्द्र) मंगल बुध वृहस्पति शुक्र और शनि सात ही है। शाम के समय को आठवां राहू और सुबह के पहले समय को नौंवा केतू होगा। अंग्रेजी हिसाब में रात के बारह बजे के बाद दूसरा दिन शुरू होता हैं। मगर ज्ञान सामुद्रिक में सूर्य निकलने से नया दिन शुरू होता हें यानि रात को गुजरे हुए दिन का हिस्सा लेकर नए सूर्य से दूसरा दिन शुरू गिनेंगे

सप्ताह में ग्रह के दिन	**एक दिन में ग्रह का वक्त**
वृहस्पति- बीरवार	सूर्य निकलने से दिन का पहला हिस्सा
सूर्य-रविवार	दिन के पहले हिस्से के बाद मगर पक्की दोपहर से पूर्व
चन्द्र-सोमवार	चान्दनी रात
शुक्र- शुक्रवार	कृष्णपक्ष ओर शुक्ल पक्ष की बीच या अमावस की रात्रि
मंगल दोनों मंगलवार	पुरी दोपहर का हिस्सा
बुध०-बुधवार	दोपहर के बाद मगर पुरी शाम से पहले
शनि-शनिवार	काली रात या घनघोर काले बादल का दिन
राहू-वीरवार की पक्की शाम	पूरी शाम मगर रात से पहले सुबह सादिक पगर सुर्य
केतू-रविवार की सुबह सादिक	निकलने से पहले (उषाकाल)

एक दिन में हर ग्रह का पक्के तौर पर निश्चित समय की अकाई के लिए फी युनिट का समय 4 मिनट आदि।

(हमसाया ग्रह) हथेली की बैरोखी सीमा का प्रभाव : -

(1) अंगुठे और तर्जनी की जड़ का बीच का फासला (जिसमें मंगल नेक और वृहस्पति हैं) हौसला और आन्तरिक दिली शक्ति की मजबूती से सम्बन्धित हैं (2) तर्जनी और मध्यमा की जडों का बीच का फसला (वृहस्पति और शनि का बीच) बुरे विचार सोच विचार की शक्ति से सम्बन्धित हैं।(3) मध्यमा और अनामिका की जडों के बीच का फासला विचारों की आजादी प्रकट करता हैं। मौके के अनुसार लटटू की तरह फौरा पहलू बदल लेने वाला होगा। (4) अनामिका और

अनामिका की जड़ों के बीच का फैसला स्वयं काम करने की शक्ति व आदत ज्यादा - दूसरों की कमाई की तरफ आस रचाने की बजाए स्वयं अपनी कमाई में बरकत कर शुक्र व सब्र करने वाला हो।

(5) कनिष्टका की जड़ और बुध का हिस्सा हथेली से बाहर को निकला हुआ केवल बुध के पर्वत की सीमा बदलने की शक्ति से लोगो में संबंध पैदा करने की शक्ति ज्यादा।

(6) शुक्र की जड़ से चन्द्र की जड़ का हिस्सा जो बाजू की चौड़ाई या कलाई की चौड़ाई होगी, दिली मुहब्बत और लग्न शुक्र या औरत की दमा मौत, इश्क, मुहब्बत माता की मोहब्बत, पितरों या बुजर्गो की सेवा की शक्ति से सम्बन्धित होगी।

हथेली की चारो तरफें :-

''क'' बुध से चन्द्र की तरफ की लम्बाई वाला हिस्सा जिस तरह ज्यादा लम्बा उसी तरह जवान की शक्ति ज्यादा और जिस तरह कनिष्का की जड़ से बाहर को उभरी हुई या निकली हुई उसी तरह संबंध पैदा करने की शक्ति और संबंध पैदा किया हुआ ज्यादा हो।

''ख'' वृहस्पति से बुध की परफ अंगुलियो की जड़ वाला हिस्सा जिस तरह लम्बा ज्यादा उसी तरह जहीनी ओर बदमागी शक्ति ज्यादा होगी और उसी तरह बुध के पर्वत की पारदारी होगी।

''ग'' शुक्र से चन्द्र वाला हिस्सा जिस तरह लम्बाई इसी तरह इच्छाओं सहित या शुक्र की शक्ति ज्यादा या शुक्र का प्रभाव ज्यादा होगा।

''घ'' शुक्र की जड़ से वृहस्पति के आखिरी तर्जनी की जड़ तक का हिस्सा जिस तरह यह लम्बाई ज्यादा उसी तरह जाती हिस्सा हौसला में ज्यादा या अंगूठे की शक्ति ज्यादा या मंगल नेक का प्रभाव ज्यादा होगा।

नम्बर एक:-

थेली भारी या मोटी लालची होगा मामूली दर्जा की जिन्दगी वाला क्योंकि इस हालत में तर्जनी हासद मध्यमा नींव विचार, अनामिका मशहूरी पसन्द, कनिष्टका बेवफा प्रकट करती हैं।

नम्बर दो:-

हथेली सागर या पतनली और कमजोर सी गरीबी हालत व कम रोजगार वाला होगा।

नम्बर तीन:- हथेली लम्बी जबान में जाहिरदारी की शक्ति ज्यादा हो जिस तरह लम्बाई ज्यादा उसी तरह यह शक्ति ज्यादा।

नम्बर चार:- लम्बी व गोल हथेली वाला हुक्मरान खुश गुजरान व्यक्ति होते होवे। किस्मत का प्रभाव सबकी किस्मत लक्ष्मी के नाग से प्रसिद्ध हैं जो वृहस्पति

का दूसरा नाम हैं। बारह साल तक बच्चा की रेखा और 70 साल के बाद स्वयं अपनी किस्मत का भरोसा नहीं। किस्मत एक ऐसी चीज है जो नींव करोबार में न हाथ की सहायता ढूंढे और न ही उसमें आँख का काम करना पड़े । हर काम का नतीजा खुद व खुद नेक हो धन्ने भक्त (वृहस्पति नं0 2) की गऊँए राम चराए उम्र रेखा और किस्मत रेखा एक ऐसे पर्वत पर निकलती है जो शनि का मुख्यालय गिना गया है। इस पर्वत पर उम्र रेखा तो बन्द हुई मगर किस्मत रेखा चलती रही यह बडी़ चान्दक शनि की गन्दक यह ऊर्ध्व रेखा कहलाती हैं। अब किस्मत रेखा को इससे होकर गुजरना हें। मुख्यालय का मालिक शनि इस चिन्ता में रहता हैं कि इस बडी़ नहर में ही सब दरिया आ मिले ओर वो किसी दरिया के पानी को आगे न ज़ाने दे और अगर किस्मत की हवा इस भवंर में न पड़े तो इसमें शक नही कि वो शनि से तो बच निकलेगी मगर सुदामे भगत (वृहस्पति नं0 9) की किस्मत अपनें गुरू के लिए साथ क्या तोहफा) अपने लिए खुराक तोशी ;शनि वृहस्पति नं0 9 और दूसरों को देने के लिए अच्छी चीज तोहफा आदि (शनि वृहस्पति नं0 2 होती हैं) ले जाएगी। जब अकेली ही चलेगी तो अपना तोशा इकटठा करने के लिए अकेली को ही सारे दरियाओं से पानी चुराने के लिए सख्त कोशिश करनी पड़ेगी माथे व चेहरा की किस्मत का सही जवाब इस बात से सम्बन्धित हें । मर्द के लिए माथा व चेहरा जिन-जिन हालतो में अच्छे गिने हैं वही हालतें औरत के हाल के लिए उल्ट शब्दो में होंगी । (1) खाना नं0-2 आरम्भ में खाना नं0 9 होगा (2) कुण्डली के बाद के घरों के ग्रहों के जागने के दिन से भला हो चाहे बुरे कुण्डली वाले की तबीयत और किस्मत के नींव पत्थर होंगे। जबरदस्त किस्मत रेखा वो हें जो कलाई से चलकर वृहस्पति की मिट्टी का प्रभाव इसमें न पड़े इस सारे का सारा सोना ही सोना (वृहस्पति की तरह) नजर आता हो ओर हर तरफ लोक और परलोक के मालिक राजा इन्द्र या वृहस्पति की हवा मौजदान हो हाथ की हथेली के मैदान की जिस तरह ज्यादा गहराई होगी दरिया की रवानी तेज होगी किस्मत रेखा या वृहस्पति की लहर क्या हैं केवल आन्तरिक व नूरानी हवा का एक वसककरा हैं जिसमें बसन्ती रंग रमा हुआ हैं किस्मत रेखा जब कलाई से शुरू हो और दिल रेखा को पार करके ऊपर जा निकले तो जिस पर्वत की तरफ झुके इसी पर्वत का प्रभाव पाया जाएगा। हस्त रेखा व ज्योतिष की नींव चीजों के निश्चित मैदानों से हर व्यक्ति की किस्मत का मैदान निश्चित करके एक सीमा से वास्तविक चीज की हालत या नकल से प्रभाव और असल से नकल करके असल निश्चित या बात का पूरा पता चल जाता हैं।

किस्मत :- हर एक किस्मत के ग्रह को किस्मत रेखा कहते हैं जिसके जागने का समय किस्मत के असर का समय होगा। किस्मत के ग्रह कई एक हों तो सब आपस में पूरे सहायक होंगे। सबसे अच्छी किस्मत वृहस्पति ग्रह की होता हैं।

किस्मत का ग्रह:- सबसे उत्तम दर्जा पर वो ग्रह होगा जो राशि का ऊच्च फल देने का निश्चित हो, जो हर तरह से कायम साफ और दुरूस्त हो और इसमें किसी तरह से भी साथी ग्रह होने बामुकाबिल के ग्रह या दुश्मन ग्रह का बुरा असर न मिला हुआ हो, उसके बाद पक्के घर का ग्रह, घर का मालिक ग्रह, दोस्त ग्रहों का बना हुआ दोस्त ग्रह किस्मत का मालिक ग्रह होगा।

किस्मत के ग्रह की तलाश क्रमानुसार :- सबसे पहले 12 राशियों के ऊँचे फल देने वाले ग्रहों का तलाश करें, फिर 9 ग्रहो से जो अच्छा हो उसे ही लेवें और बाद में बन्द मुटठी के खानों से जो अच्छा उसे हो लेवें। ऊच्च फल देने वालों में से जो सबसे तसल्ली वख्श और ऊच्च हो लेवें। घर के मालिक ग्रहों में सबसे ज्यादा शक्ति वाले को लेवें। और मुटठी के चारो खाने खाली (लफज खाली से मुराद हैं की वही भी पुरी तरह का किस्मत का ग्रह न होवे) हों तो खाना नं0-9 के ग्रहों को लेवें वो भी खाली तो दूसरा दरवाजा या खाना नं0-2 को लेगें। अगर वो भी खाली तो खाना नं0-6 देखेगें। वो भी खाली तो नं0-12 तलाश करेंगे और अगर वो भी खाली हो तो नं0-8 में बैठकर देखेगें कि आया किस्मत का ग्रह जिसमें ऊपर की सभी शर्ते न हो तो मर तो नहीं गया। यह तलाश जन्म लग्न की कुण्डली और चन्द्र कुण्डली दोनों से होगी। हस्त रेखा में दांया और बायां दोनों और हस्त रेखा के सभी हिस्से शामिल होंगे।

किस्मत की हदबन्दी सालों में -किस्मत रेंखा कलाई से ऊपर को चलती हैं :

- इसी तरह ही इस विद्या में किस्मत को जगाने वाले पर्वत या ग्रह इसी चक्र में माने गाए हैं और नीचें लिखी क्रम से अपना-अपना प्रभाव्र इन्सानी किस्मत में दिखलाते हैं।

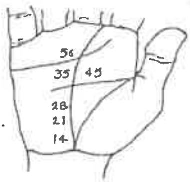

(1) **वृहस्पति**- हवा रूह व सांस पिता, गुरू सुख

(2) **सूर्य**- आग, गुस्सा, सभी, अक्ल, सभी अंग, विद्या

(3) **चन्द्र**- पद्मनी, शान्ति, दिल, माता, जायदाद, जददी।

(4) **शुक्र**- मिट्टी, कामदेव, स्त्री, गृहस्थ।

(5) **मंगल**- खाना-पीना, लडाई, भाई

(6) **बुध**- बोलना, दिमाग, हुनर, जवाब, तहजीब, पेशा, दोस्ती ।

(7) **शनि** - देखना, चालाकी, मौत, बीमारी, लोटना।

(8) **राहू** - सोचना, बिचार या दिल की नक्ल, सुसराल ।

(9) **केतू** - सुनना, पांव की नकल व हरकत, राहू-केतू दोनों नेकी व बदी का हिसाब

किस्मत के ग्रह को जगाने वाला ग्रह:- जब पहले घरों में कोई ग्रह न हो तो

बाद के ग्रह सोए हुए माने जाते हैं ऐसी हालत में किस्मत के ग्रह को जगाने वाले ग्रह की तलाश की जरूरत होगी और अगर बाद के घर खाली हों तो खाना नं0 को जगाने वाले ग्रह के उपाय की जरूरत होगी। जो कि खाली हैं (ग्रह का जगाना और खाना नम्बर का जागना दो अलग-अलग बातें हैं ।)

(2) बिना जगाए सोया हुआ ग्रह अगर खुद बखुद जाग उठे यानि अपना फल देना शुरू कर दे तो ऐसा आगे हुए ग्रह का आम उम्र (शुक्र-3 मंगल -6 आदि) के आखिरी साल यानि शुक्र-2 शादी के संबध में शादी के तीसरे साल हर एक ग्रह का बुरा फल जरूर होगा । चाहे वो ग्रह जागे हुए ग्रह के दोस्त हों या दुश्मन हर अपने बैठा होने वाले घर का फल (अच्छा या बुरा) न देगा, जब तक कि इस घर की सम्बन्धित हर तरफ की जगह में इस ग्रह से सम्बन्धित चीजें न हों। अगर किसी पितृ ऋण, महादशा या दूसरे कारण से किस्मत का ग्रह सो जाए, नष्ट, बर्बाद या गर्की हो जाए तो सबसे पहले ऊपर किस्मत के ग्रह की तलाश की तरकीब से खाली खानों के घर के मालिक ग्रह को जगावें यानि इसका उपाय करें। बशर्ते कि वो किस्मत के ग्रह के बराबर का ग्रह हो या दोस्त हो: इसके बाद महादशा के समय में काम देने वाले ग्रह लें। बाद में दुश्मन ग्रहो की दुश्मनी हटा दें । या राशि फल की हालत का फायदा उठाऐं । अगर यह भी काम न दे सकेतो सूर्य को कायम करें, अगर यह भी सहायता न दें तो पापी ग्रहों और **सबसे आखिर पर बुध का उपाय करें ।**

सोया हुआ घर :- जिस घर में कोई ग्रह न हो या जिस पर किसी ग्रह की दृष्टि न पड़ती हो वो घर सोया हुआ होगा।

सोया हुआ ग्रह : - जिस ग्रह की दृष्टि के मुकाबले में कोई ग्रह हो तो वो ग्रह सोया हुआ होगा (पहले घरों में)

खाना नम्बर को जगाने वाले ग्रह :-

खाना नं० को जगाने वाला ग्रह	मंगल	चन्द्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	राहू	शुक्र	चन्द्र	वृह0	शनि	वृह0	केतू
खाना नम्बर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

किस्मत का फैसला :- उम्र के अनुसार से धोखे के ग्रह वर्षफल और राशि नम्बर के बोलने वाले ग्रहों का साँझा नतीजा किस्मत का फैसला करेगा। रूह बुत के झगडे के मालिक इन्सानी जन्म के हिस्से ओर उनकी हर एक शक्ति हस्त रेंखा के सभी खबर कुण्डली की 12 राशियों और 9 ग्रहो की चाल व आपस में लगाव, झुकाव का पैदा कर देना प्रभाव किस्मत का करिश्मा या खुदाई हुक्म कहलाता हैं। जबकि शिक्षा से जन्म मरण या शुरू व आखिर के मैदान की जीत का नतीजा, **खुशी-गमी की खुशबु व बदबू हुआ करती हैं ।**

शक्की ग्रह : -वास्तव में मालिक ने इन्सान के करमों का लेखा-जोखा इस ढ़ग

से लिख कर भेजा है, जो कभी गुम न होने पाए और इस हुक्मनामे में कोई बदलाव या धोखाबाजी नही की जा सकती। केवल शक्की बात को दुरूस्त हालत में बदला जा सकता हैं । इस हुक्मनामे को पढ़ने के लिए ही यह विद्या दुनियादारों ने जारी किया हैं जो जाहिरा तो आपस का खुष्क झगड़ मालूम होता हैं मगर वास्तव में मध्यम और समुन्द्र की जाहिरी रंगत की तरह अपनी तह में कीमती जवाहरात रखता हैं जिनकी असल कीमत एक जानने वाले से छुपी हुई नहीं हथेली के टुकड़े (साल जाहिरा और दो जुदी लहरें) और अंगुलियों की 12 गांठे 9 निद्धि ओर 12 सिद्धि को याद कराएगी या यूं कहो कि 9 पहाड़ों या ग्रहों का असर कुदरत के नौ भरे हुए खजाने या भण्डार हैं जिसे खर्चने के लिए हाथ की चारों अंगुलियों या दुनिया की चारों दिशा लगी हुई हैं । मतलब यह कि राशियों के फल या असर में इन्सानी शक्तियों से अदली-बदली करने की गुंजाइश हैं। मगर पर्वतों या ग्रहों का फल हमेशा के लिए निश्चित हो चुका हैं जिसमें इन्सानी अक्ल से कोई परिर्वतन नही कर सकते। हर एक अँगुली की तीन गाँठो से तीन लोक या तीनों जमाने (दिमागी हाल, या जमीन आकाश पताल) के कारोबार से शुभ होगी। अँगुलियो की नाखून वाली पहली पोरियों पर चक्र , शंख सदप जाहिरा जिन्दगी का जमाना, दिन के काम काज, बताते हैं और हाथ की सबसे आखिरी जगह दैवी हालात दिल की आन्तरिक चाल या रात का जमाना (चन्द्र का पर्वत) बताती हैं। हथेली से इन्सान के अपने काम आने वाली चीजों से मुराद लेते हैं और हाथ की पीठ को दुसरे के काम आने के लिए माना गया हैं। हाथ व पावं की अंगुली के नाखुन के सिरे से कलाई व टकराव तक और नौ ग्रह व बारह राशि की कुण्डली से 12 दिशाओं के बीच मैदान में नई चीज, इन्सानात, तरह-तरह के लोग, हैवानात, मकान आम व विशेष, व हवाई विचार, शगुन माल मवेशी, चरिन्द, परिन्दे, दरिन्दे, दोस्त-दुश्मन, जहर-अमृत, संसारिक अपने साथियों और इल्मी क्याफा आदि से जो सामुद्रिक के जरूरी हिस्से में, समय से पहले ही लिखे हुए नौ निद्धि, बारह सिद्धि के खजाने की कमी पेशी से सम्बन्धित प्रकृतिक और लेख या हुक्मनामा को साफ पढ़ा ही जा सकता हैं। मगर इसमें अपनी इच्छा के अनुसार अदली-बदली नहीं की जा सकती। भेद केवल शक्की बात को दुरूस्त करके शक का फायदा उठा लेने की गुंजाइश हैं जो ग्रह फल और राशि फल की मिलावट के समय हुआ करती है। यही एक बात दस विद्यायों का विशेष अर्थ हैं।

ग्रह फल व राशि फल : - (1) जब कोई ग्रह अपनी निश्चित राशि (यानि वो राशि जिसके कि वो घर का मालिक ग्रह गिना जाता हैं) या ऊँच-नीच फल की ठहराई हुई राशि या अपने पक्के घर की बजाय किसी, गैर राशि में जा बैठे या किसी दूसरे ग्रह का साथी ग्रह **(जड़ अदली-बदली कर लेने वाला आदि) बन जाए तो वो ग्रह ऐसी हालत में राशि फल या शक्की हालत का ग्रह होगा।**

जिसके बुरे प्रभाव से बचने के लिए इसके शक का लाभ उठाया जा सकता हैं। इसके विरुद्ध यानि ऊपर कही हुई हालत के उल्ट हाल पर वो ग्रह फल (या पक्की हालत का ग्रह होगा। जिसके बुरे प्रभाव को परिवर्तन करने की कोशिश करना बेईमानी बल्कि इन्सानी शक्ति से बाहर होगा। केवल विशेष-विशेष खुदा-रासिदा और विशेष हस्तियाँ ही रेखा में मेखा लगा सकती हैं वो भी आखिर तबादला होगा। यानि जायदाद या संसारिक चीज या शक्ति को इसकी हस्ती से मिटा कर इसके बराबर में दुसरी जानदार संसारिक चीज या शक्ति पैदा कर देगी मगर नया ही दूसरा अक्षर फिर भी मैदान होगा । सिवाए इस समय के जबकि ऐसी हस्तियों स्वयं अपनी शक्ति यह अपना ही आप बरवाद कर लेते हैं और किसी दूसरे उसके बदले में नौबत नहीं आने देते। यह हालत भी उनकी स्वयं होने की होगी। कोई न कोई तबादला दिया ही गया, ग्रह फल फिर भी न टला।

(2) ग्रह फल को अगर राजा समझा तो राशि फल इसका साथी बजीर होगा।

कौन ग्रह फल का राजा शुकमरान होगा	**कौन इसका साथी वजीर राशि फल का हो**
1) बालिग शुदा ग्रह	नाबालिग ग्रह
2) नौ ग्रह	बारह राशियां
3) किस्मत का ग्रह	किस्मत को जगाने बाला ग्रह

4) एक दो तीन के क्रम से पहले बाद के घरों के ग्रह जबकि वो वर्षफल के ग्रह जबकि वो अपनी-अपनी निश्चित के हिसाब से अपनी-अपनी निश्चित जगह से मिले हुए हों जगहों से चल कर किसी दूसरी जगह हों (वर्षफल) के अनुसार ज्योतिष में आम तौर पर वर्षफल के हिसाब से तख्त पर आ जाने वाला राजा बनता हैं और राशिं नम्बर के हिसाब से बोलने वाला (खाना नं0-7 में आने वाला) वजीर बनता हैं लेकिन अगर ऐसे राजा और वजीर में कुण्डली के पहले घरों और बाद के घरो में होने का प्रश्न भी साथ, झगडा करे तो पहले घरों वाला बेशक आम असूल पर वजीर बनता हो मगर अब वो राजा हो जाएगा और बाद के घर वाला इसका वजीर बनेगा। बेशक वो राजा बनने का हकदार है।

5) खाना नं01 के ग्रह (या मकान खुद साखता)	खाना नं0 9 के ग्रह या मकान जद्दी
6) ग्रह का इसके अपने काम महोने की हालत का प्रभाव	ग्रहों का आपसी दृष्दि का प्रभाव।
7) तख्त का मालिक ग्रह अपने तख्त के	राशि नम्बर के हिसाब से उम्र पर बोलने वाले ग्रह

(अपनी राशि न0 में बोलने की अवधि तक यानि 3 साल)

8) महादशा में धोखा का 12 साला चक्र	सभी उम्र पर धोखे का 12 खाना चक्र
9) महादश में हो जाने	महादशा वाले ग्रह को दोस्त बराबर के ग्रह।
10) जन्म समय का ग्रह	जन्म दिन का ग्रह।

हस्त रेखाओं में

ग्रह फल का होगा	राशि फल का होगा
11) 12 साला उम्र का होगा	12 साल उम्र का होगा
12) वो ग्रह जिस का कि वो इन्सान हो	वो ग्रह जिसका कि इसका मकान हो
13) मर्द का दायां हाथ मर्द के स्वयं अपने लिए	मर्द का बायां हाथ मर्द के स्वयं अपने लिये
14) औरत का बायां हाथ अपने लिए	औरत का दायां हाथ औरत के अपने लिए
15) मर्द का बायां हाथ इसकी औरत के लिये	मर्द का दायां हाथ इसकी औरत के लिए ग्रह फल का नेक नजारा देने वाला होगा।
16) और (नम्बर 16 खाली है)	
17) औरत का बायां हाथ इसके पति के लिये	औरत का दायां हाथ इसके पति के लिए ग्रह फल का नेक नजारा देने वाला औरत का दायां हाथ इसके पति के लिए
18) बच्चा दोनों के लिए	राशि फल के देने वाला हुआ करता हैं।

19) दांए हाथ पर से लिए नर ग्रह प्रवल, बांए हाथ पर से लिए हुए स्त्री ग्रह प्रबल और खुसरा ग्रह दोनो में से किसी भी हाथ पर से लिए हुए हर तरफ अपने घरों का जिसमें कि वो पाए जावें असर करने वाले होंगे। औरत का यही हाल उल्ट हाथों से होगा। (2) ग्रहो का निशान हथेली पर और अंगलियों की पोरियों पर राशि का निशान पक्के प्रभाव का होता हैं लेकिन विरुद्ध।

20) अंगुली की पोरियों पर जिस ग्रह का निशान हो उस ग्रह की वो राशि (चाहे एक निश्चित राशि हो चाहे इसके लिए दो निश्चित हों) जिसका कि वो घर का मालिक ग्रह कहलाता हैं और	हथेली पर जिस राशि का निशान हो इस राशि का मालिक ग्रह और हथेली के उन राशि नं0 में जिस नं0 पर वो निशान पाए जाने वाले सभी ग्रह राशि फल के होंगे (2) अंगुली की पोरी पर अगर किसी नम्बरी पर इस

इस राशि नं0 के सभी ग्रह जिस राशि नं0 की पोरी पर कि वो ग्रह का निशान पाया जाए ग्रह फल का होगा।

नम्बर की राशि के अलावा किसी गैर राशि का निशान पाया जाए तो वो राशि नं0 जिसका वो निशान हैं और वो राशि नम्बर जिसमें कि वो निशान हमे सभी ही ग्रहो के लिए राशि फल का होगा चाहे वो दोस्त जो या दुश्मन।

हथेली पर खास निशान : - मर्द के केवल दाएं हाथ की हथेली पर नेक प्रभाव देंगे और दांए हिस्सा पर शुभ प्रभाव होगा।

1) कुम्भ या घडा पानी से भरा हुआ दूध, कन्या, फुल ब्याह, शादी आदि अगर दाई तरफ से मिलें तो शुभ प्रभाव होगा।

2) लकडी, ओजार या हथियार आगा जिसे उल्ट कींक आदि हों तो बुरा प्रभाव की निशानी होगी।

3) कुत्ता या बिल्ला बुलन्द आवाज से रोए और न जानवर मण्डराने लगें तो मौत की निशानी होगी।

4) नेक जानवर काला कुत्ता, गाए, हिरण आदि मिले तो नेक फल की निशानी हैं।

ग्रह फल का होगा	राशि फल का होगा
मच्छ रेखा, काम रेखा धन रेखा या श्रेष्ठ रेखा आदि निश्चित रेखाओं से कोई भी या हथैली पर विशेष निशान अपनी-अपनी निश्चित जगह और जगह मगर बांए हाथ पर तो राशि फल के दांए हाथ पर हो तो जिसमें महादशा जिसमें केतू का सम्बंध होगा प्रभाव देंगें ।	मच्छ रेखा आदि विशेष निशान स्थित जगह पर मगर बांए हाथ पर तो राशि फल के होंगे और अगर बांए ही हाथ पर अपनी स्थित जगह की बजाए किसी और पर पाए जाए तो महादशा पर प्रभाव देंगे ।

22) अपनी स्थित जगह की बजाए जब मच्छ रेख, काम रेखा आदि किसी और जगह वाक्या हों तो जिस ग्रह की राशि पर या पक्के घर में वालिहाज पर्वत व रेखा वो वाक्या हपें तो जिस ग्रह की पुजना से नेक फल होगा। मसला-मच्छ रेखा बुध की सिर रेखा पर वाक्या हो तो शनि व बुध की चीजों की पालना यानि काला पक्षियों व कोए कर पालना करना शुभ। अगर शुक्र पर हो तो काला गाए आदि की पूजना-पालना करना शुभ फल पैदा करेगा।

23 मर्द की जन्म कुण्डली स्वयं मर्द के लिए मर्द पर असर ग्रह फल का	मर्द की चन्द्र कुण्डली स्वयं मर्द के लिए मर्द पर राशि फल का करिश्मा यानि महादश की हालत में उल्ट नेक और अचानक चमत्कारा।

24) मर्द की चन्द्र कुण्डली इसकी औरत पर ग्रह फल का नेक नजारा यानि महादशा के खाली साल रखे हुआ में किस्मत का नेक और अचानक असर देगी।

राशि फल का होगा :- मर्द की जन्म कुण्डली इसकी औरत पर राशि फल (आम साधारण) का प्रभाव

25) औरत की जन्म कुण्डली औरत के लिए औरत पर ग्रह फल का प्रभाव देगी।

राशि फल का होगा :- औरत की जन्म कुण्डली इस पति के लिए आम हालत की राशि फल का प्रभाव देगी औरत की चन्द्र कुण्डली औरत के लिए औरत पर राशि फल।

26) औरत की चन्द्र कुण्डली इसके पति के लिए ग्रह फल का नेक नजारा महादशा के खाली सालों में किस्मत की अचानक व नेक चमक होगी।

राशि फल का होगा :- औरत की जन्म कुण्डली इस पति के लिए आम हालत की राशि फल का प्रभाव देगी औरत की चन्द्र कुण्डली औरत के लिए औरत पर राशि फल।

केवल एक ही रेखा को देखकर किया हुआ फैसला कोई अच्छा फैसला नहीं होता। बल्कि शक्क पैदा करने का कारण होता हैं कारण राशि फल या महादशा में ग्रह के नेक नजारा। जो चन्द्र कुण्डली आदि का नतीजा हो सकता हैं। पर विश्वास कर लेना शक्क और धोखे में रखने वाला प्रभाव हुआ करता हैं।

इन्सान की उम्र और खाना नम्बरों की उम्र का 100 साला चक्र का फर्क:-

इन्सान की उम्र समाप्त हो या न हो मगर विशेष समय तक निश्चित हैं जो निश्चित समय पर खतम गिनी जाएगी। इन्सानी उम्र के लिए शनि के हाल में विस्तार पूर्वक लिखा हैं और खाना नं0 की उम्र भी हाथ के खाका के हाशिया में दी हुई हैं यानि

खाने की उम्र	100	75	90	85	औलाद	80	85	मौत	बुर्जर्ग	90	धर्म	स्थान
खाना नम्बर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

फर्क यह हैं कि किसी व्यक्ति की 12 साला उम्र ही हो जाए या हो जाने वाली मालूम होती हो तो इसके लिए हर एक खाना की चीजों का ज्यादा से ज्यादा समय केवल इस नक्शा में दिए हुए सालों तक प्रभाव माना जा सकता हैं। जब खाना की उम्र समाप्त होगी मगर इस व्यक्ति की उम्र अभी चलती ही हो तो इस समाप्त समय वाले खाने की चीजों पर इसकी किस्मत का संबंध न होगा हर खाने की उम्र का शुरू इन्सान के अपने जन्म दिन से शुरू गिनेंगे। सौ साल के बाद फिर वही दौरा

शुरू होगा जो जन्म दिन में था। दांत वगैरह नए आएंगे। अब जिन घरों ने पहले सौ साल चक्र में बुरा फल दिया, पहले दिया हुआ फल न देंगे।

धोखे का 12 साल चक्र:-

महादशा के अलावा सभी उम्र पर भी अपना प्रभाव किया करता हैं इस चक्र के 12 साला में हर साल के सामने लिखे हुए ग्रह अगर दुरूस्त और कायम या अपनी नींव पर कुण्डली में खड़े न हों। (यानि बुध आदि से नींव को खोखली या दुश्मन ग्रहों से खराब और नष्ट आदि) तो नाबालिग)चाहे बच्चा चाहे मर्द जैसा कि बालिग नाबालिग होने की शर्त भी लिखी गई है की किस्मत बल्कि उम्र तक बेमायनी होगी और बालिग के लिए धोखा इस ग्रह का जो उस के हिसाब से मालूम होता हो। राशि फल का होगा यानि शक का लाभ उठाया जा सकता हैं।

धोखे से ग्रह की तरकीब :-

सूर्य चन्द्र केतू मंगल बुध शनि राहू खाना नं०-8 नं०-9 वृ. शुक्र खाना 12

धोखे का 12 साला चक्र :-

सूर्य	चन्द्र	केतू	मंगल	बुध	शनि	मौत	पितृग्रह	वृ०	शुक्र	राशि	खत्म
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120

26 एक से लेकर 12 साल तक जो औसत उम्र मानी गई हैं ऊपर दी हुई क्रम अनुसार से सभी अक्षर से लिख देवें कुण्डली वाले के वर्षफल के हिसाब से जिस साल सूर्य का दौरा पहली बार शुरू होता हो, का सूर्य नं0-1 में आए उस साल के अक्षर वाले खाने की माथे पर अक्षर सूर्य लिख देवे और दी हुई क्रम से माथे के बाकी खानों में बाकी सारे ग्रह आदि लिखा देवें और साल के सब खाने आगे-पीछे, के पूरे कर लेवें ऊपर के ढंग पर धोखे का साल देख लेवें, धोखे का

खाना नं0-10 होता हैं और धोखे का ग्रह ऊपर के ढंग पर प्रकट होगा। यानि खाना नं0-10 वाला ग्रह भी धोखा दिया करता हैं और ऊपर के ढंग पर उम्र पर के अक्षर पर आने वाला भी धोखा देगा। अगर धोखे का ग्रह ओर वो खाना नं0-10 में ही आ जाए तो पुरा धोखा होगा।

धोखे के ग्रह या धोखाः -

जिस तरह उम्र का पहला 35 साल का चक्र जब दोबारा आता हैं तो अपने पहले दौरे के बुरे ग्रहों के प्रभाव में बदलाव कर दिया करता हैं उसी(हर ग्रह की महादशा के सालों के समय का उम्र से टक्कर) जब दूसरी बार (एक ही ग्रह का दूसरी बार बचेगें का साल) आये तो सोए हुए ग्रहों को जगाया करता हैं और विशिष्ट हालात किया करता हैं चाहे भली तरफ हो चाहे बुरी तरफ ।

धोखे के ग्रह के मायानीः-

शब्द धोखा वास्तव में गुमराही का ही नाम हैं धोखे का ग्रह अगर तारने वाला हुआ तो तारेगा दोगुना अगर मारेगा तो भी दोगुना कर्ज यह हक धोखे के चक्र से प्रकट होने वाले ग्रहों का होता हैं दो गुणा शक्ति का चाहे भला करें चाहे बुरा करे।

आम उम्र में धोखे का 12 साला चक्र

मंगल	चन्द्र	केतू	मंगल	बुध	शनि	मौत	पितृग्रह	वृ०	शुक्र	राशि	खत्म
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120.

ग्रह की महादशाः-

किसी ग्रह के बुरे और लगातार बुरे प्रभाव देंने की अवधि इसके महादशा में हो जाना कहलाता हैं। महादशा के लिए ऊपर दिए हुए साल लेंगे। यानि वृहस्पति-सूर्य 6 साल 6 साल, चन्द्र 10 साल आदि उम्र के एक 35 सालों में महादशा का केवल एक ही ग्रह हो सकता है और सारी उम्र में चाहे एक ही ग्रह की लगातार चाहे किसी दो की एक के बाद दूसरे की साथ लगती हुई चाहे एक के बाद दूसरी

या दूसरे की कुछ फर्क देकर हो, ज्यादा से ज्यादा केवल दोनों ही महादशा आ सकती है । अगर किसी पितृ ऋण या बुजुगों के पापों के कारण से एक महादशा का ग्रह अपनी अवधि उम्र के 35 साला चक्र के आखिरी 35 वें साल खत्म हो और किसी कारण दूसरा महादशा का ग्रह उम्र के दूसरे 35 साला चक्र के शुरू साल से ही जारी हो जाए तो पहली महादशा का आखिरी साल और दूसरी का पहला साल या दोनों का बीच का साल दो बाद गिना जाएगा यानि महादशा का कुल समय दोनों महादशा के फर्क से न केवल एक साल कम होगा बल्कि पहली का आखिरी साल और दूसरी का शुरू वाला साल या बीच साल चाहे वो दोनों महादशाएं लगातार हों चाहे बीच में कुछ फर्क देकर होवें । साफ साल होगा या बीच का साल महादशा का तो न होगा । मगर अवधि में केवल गिना जाएगा या वर्ष फल के हिसाब और राशि नम्बर के ग्रह बोलने के हिसाब से कोई ऐसा ग्रह आ जाए जो महादशा वाले ग्रह का दुश्मन हो तो पहली महादशा का आखिरी साल भी साफ होगा अर्थात् शुक्र की महादशा होती है। 20 साल जब ऐसी हालत वाली दोनों ही शुक्र की महादशा आ जाएं । तो दो बार की कुण्डली के राशि नम्बर के ग्रह बोलने के टकराव पर स्वयं रद्दी हुआ उस दिन से वो महादशा में हो गया माना जाएगा बेशक वो तख्त पर पहले ही आ चुका हो।

2 जब कोई ग्रह कुण्डली में स्वयं रद्दी हो और उसके बराबर के ग्रह भी रद्दी हों तो जिस दिन वो ग्रह तख्त का मालिक हुआ महादशा में ही गिना जाएगा। चाहे वो राशि नम्बर के हिसाब से बोलने वाले ग्रहों के टकराव का साल कभी जारी हुआ हो । लेकिन अगर ऐसी महादशा के समय कुण्डली के खाना नम्बर के हिसाब से उम्र की गिनती पर बोलने वाले ग्रह अपने महादशा वाले ग्रह के दोस्त ग्रह ही बोल पड़ें तो वो बोलो वाले दोस्त ग्रह अपने महादशा वाले दोस्त ग्रह के महादशा में हो जाने के मातम में उस ग्रह को (महादशा वाले) कोई नेक फल पैदा करने में मदद न देंगे और न ही इसमें दो ग्रह कोई और बुरा फल पैदा करेंगे । सिर्फ दुनियादारों की तरह आम साधारण मातम-फुर्ती करके चले जाएंगे जिस ग्रह की महादशा हो वो अपनी महादशा के जमाने में उस महादशा के नीचे दिए हुए सालों में (इन्सानों की उम्र या ग्रह की उम्र के हिसाब से नहीं बल्कि केवल महादशा के समय की अवधि के सालों में कोई विशेष - विशेष साल अपना आम प्रभाव जैसा भी इस कुण्डली में मौका के अनुसार इस विशेष-विशेष साल में हो कायम रखा करते हैं । यानि यह जरूरी नहीं कि वो उसे खास खास साल में मन्दा ही हो क्योंकि महादशा में है या किसी और तरह से रद्दी है। महादशा वाले ग्रह के जाती प्रभाव का साल :-

ग्रह	महादशा के कुल साल	प्रभाव कायम रखने का वर्ष	कैफियत
वृ ०	१६	१० वां	यह दसवां वर्ष वृहस्पति की गुरु पदवी और रियायती साल के अतिरिक्त होगा।
सूर्य	६	शक्ति	जो वर्ष कि दो पर पूरा भाग न हो १,३,५ वां
चन्द्र	१०	जुस्त	जो वर्ष दो पर बन्द हो जाए जैसे २,४,६
शुक्र	२०	११ वां	इस ग्रह के आम दौर के ३ वर्ष अवधि का पहला साल।
मं०	७	चौथा	शुक्र में मंगल के ग्रह का प्रभाव प्रबल होने का होता है।
बुध	१७	५ वां	महादशा का धोखा लम्बी अवधि वाली अकेली और दो ।
शनि	१९	छटा	छोटी- छोटी अवधि वाली साँझी महादश में १२ वर्ष
राहू	१८	७वां	धोखा महसूस लगा करता है कि शायद मौत ही हो।
केतू	७	तीसरा	यह केवल धोखा ही होता है और बैइमानी जैसा हाता है।

महादशा का जो वर्ष (आयु का नहीं) १२ साल में हर साल के सम्बंधित ग्रह कुण्डली के अनुसार अपनी अवधि में धोखा दिया करते हैं चाहे इन १२ सालों में धोखा देने वाले ग्रह महादशा में हो या न हो।

इन्सानी उम्र महादशा का औसत का साल 12 वर्ष ग्रह	सूर्य	चन्द्र	केतू	मं0	बुध	शनि	राहू	मौत	पितृ ग्रह	वृ0	शुक्र	राशि खत्म
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

महादशा के समय न केवल महादशा वाले ग्रह का बुरा होगा बल्कि उस महादशा वाले ग्रह के बराबर के ग्रह भी चाहे वो कुण्डली में अपनी अपनी जगह ऊच्च फल के ही, या उस महादशा वाले के साथी ग्रह या इनके साथ ही एक ही खाना में क्यों न ही सो जाया करते हैं यही हाल दोस्त ग्रहों का होगा । जो केवल मातम- फुर्ती करके चले जाया करते है लेकिन स्वयं बुरा नहीं करते और न ही महादशा का बुरा फल अच्छा करते हैं महादशा वाले के लिए इसके महादशा के जमाने में जख्म पर नमक डालने का सा प्रभाव करते है महादशा के प्रभाव के समय महादशा वाले ग्रह का कुण्डली के केवल उस खाना नम्बर का जिसमें कि वो बैठा हो और इन्ही चीजों पर जो चीजें की उस जगह महादशा वाला की उस बैठे हुए खाने अनुसार हों पर बरा प्रभाव होता है । बराबर के ग्रहों का जो महादशा वाले के महादशा शुरू होने के समय उस महादशा वाले के लिए सो जाते है सोया हुआ प्रभाव भी केवल उन्हीं चीजों से सम्बन्धित होगा जो कि वो बराबर के ग्रह उसे दे सकते थे । उस खाने 1 खानों के हिसाब से जिसमें कि वो महादशा

होती तो जो प्रभाव इनका हो सकता था वो अब महादशा में सोया हुआ होगा। यही नियम मित्र ग्रहों की मातम और दुश्मन ग्रहों का जख्म पर नमक मिलने की तरह का होगा परन्तु इसके महादशा वाले ग्रह का स्वयं अपना प्रभाव दूसरों के लिऐ चाहे वो बराबर के दोस्त या दुश्मन हो महादशा को कोई प्रभाव न होगा वो प्रभाव वैसा ही होगा जैसा कि महादशा के बगैर होता था याद रहे कि धोखे के 12 साला चक्र में हर सातवां (राहू का)या आठवां स्वयं मौत निमानी का साल बदली हुई हालत में हुआ करता है चाहे महादशा ही क्यों न हो इस बदली हालात के बिना ही हुई वस्तु सहायक होगी। महादशा के समय चाहे किसी ग्रह की हो ज्यादा-ज्यादा एक 40 तक अंक उसी क्रम से लिख लेंगे जिस तरह ऊपर की टैबल में दिखलाए हैं यद्यपि 12 खानों में अंक लिखे मौजूद हैं मगर ऊपर इन खानों की माथे पर ग्रहों के नाम न लिखें। अब जिस ग्रह की महादशा शुरू हो पहली बार या पहली ही महादशा वाले ग्रह का नाम एक के अंक वाले खाने के ऊपर लिख दें और बाकी ग्रहों को नक्शो में दिये हुये क्रम से शनि सूर्य के बाद के खाने में चन्द्र के बाद के खाने में केतू आदि। अब जिस अंक की परेशानी पर कोई ग्रह लिखा हुआ होगा वो साल इस धोखे वाले ग्रह के प्रभाव का महादशा के सालों में बदली हालात का होगा महादशा में पड़ा हुआ चाहे कोई भी ग्रह हो लेकिन अगर दो महादशा में लगातार एक के बाद दूसरी शुरू हो जाए तो दोनों के बीच के साल वाले अक्षरे के ग्रह का प्रभाव बिलकुल न होगा। लेकिन बाकियों का बुरा होगा। यानि महादशा गिनी तो पूरे साल ही जाएगी मगर बीच के साल का महादशा पर बुरा प्रभाव जरूरी न होगा। यानि शुक्र की दोनों ही 35 साला चक्रों में दो लगातार महादशाएं आती मान लें तो महादशा के सालों के ग्रह नीचे लिखे की तरह होंगे :-

शुक्र	राशि खत्म	सूर्य	चन्द्र	केतू	मं0	बुध	शनि	राहू	मंगल	पितृग्रह	वृ0
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40								

इन्हीं चालीस (40) बुरे सालों के धोखे को खोलने के लिए **चालीस दिन तक हर उपाय की अवधि निश्चित की है,** दिये हुए अक्षर वास्तव में महादशा के समय या महादशा की अवधि का हर साल नम्बर है उम्र का साल नहीं। अगर उम्र का कौन-कौन सा साल महादशा में किस-किस ग्रह के धोखे का साल है मालूम करना है। तो जिस जगह अब अक्षर नम्बर एक लिखा है वहां उम्र का वो

साल नम्बर लिख दे जिस साल की महादशा देख लें इस दिए हुए नकशों में तो महादशा की अवधि के साल नम्बर मे यानि अक्षर नम्बर एक से शुभ है कि महादशा का फला साल, अक्षर नं0 2 से शुभ है । महादशा का दूसरा साल फर्ज किया किसी की 23 साल उम्र में शुक्र की महादशा शुरू हुई तो जहाँ अब नं01 का अक्षर लिखा है वहां 23 का अक्षर लिखा हो तो नं0 2 की जगह 24वां अक्षर उसके साल का हो जाएगा या इस तरह अक्षर लिख लेने पर उम्र के सालों में महादशा की अवधि का हर एक साल नम्बर मालूक हो जाएगा । पहली महादशा शुक्र की 20वें साल समाप्त हुई और दूसरी भी 20वें साल शुरू हुई यद्यपि 20वां साल दोनों महादशाओं के बीच का साल हुआ। यह बीच का 20वां साल प्रभाव देखने के लिए मिटा ही दिया यानि इस 20वें साल व शुक्र ही महादशा का गिनेंगे न कि शनि को जो 20वें साल के माथे पर लिखा है । अब कुण्डली के हिसाब से जहाँ-जहाँ कि शुक्र और शनि हों और अवसर के अनुसार जैसा-जैसा इनका प्रभाव हो गिना जाएगा शेष सालों में हर ग्रह जो कि ऊपर के नक्शों के माथे पर लिखा है महादशा के सालों में धोखा देगा और बदली हुई हालात पैदा करेगा। एक तरफ तो इस टैबल के अनुसार से जो ग्रह आए वो ले दूसरी तरफ वर्षफल के हिसाब से जिस ग्रह का दौरा हो, उम्र के लिए साल को देखना हो, वो ले, तीसरी तरफ राशि नम्बर के ग्रह बोलने के हिसाब का ग्रह उम्र के जिस साल का देखना हो वो ले। अब इन तीनों ग्रहों में से अगर एक ही ग्रह दोनों तरफ या दो बार निकल पड़े वो ग्रह धोखे का ग्रह होगा महादशा के जमाने में अच्छी या निहायत बुरी, क्योंकि शुक्र महादशा में हैं दुश्मन ग्रह भी तंग करेगें। मगर वो भी अपने अपने सालों में यानि एक तरफ तो ऊपर के नकशो के सालों में सूर्य-चन्द्र राहू बुरा फल देंगे। केवल पक्के दुश्मन ही दुश्मन ग्रह गिने जाऐंगे यानि केवल वही दुश्मन ग्रह जो शुक्र के सामने के दुश्मन के खाना में लिखे हैं बाकी जो ग्रह रह गए हैं वो वृहस्पति व मंगल शुक्र के बराबर के वो चुप या सो गए गिने जाएंगे और शनि बुध केतू तीनों शुक्र के दोस्त हैं वो केवल मातम करके चले जाएंगे। दूसरी तरफ तख्त का मालिक ग्रह व राशि नम्बर बोलने वाले ग्रहों का साँझा प्रभाव भी साथ होगा । महादशा का 10वां साल शुक्र के लिए महादशा के जमाना में रियायती साल होगा । ऊपर के नक्शो के माथे के खाने राशि समाप्त मौत पितृ ग्रह का मतलब यह होगा कि (1) मौतः- उस व्यक्ति के खाना नं0 -8 में जो ग्रह है वो गिने जाएं उन सातवें के अक्षर की पैशादी पर जहां कि लफज मौत लिखा है अगर खाना नं0 8 इस व्यक्ति की कुण्डली का खाली हो तो शब्द मौत के खाना के नीचे लिखे हुए अक्षरों वाले साल धोखे के साल न होंगे और अगर खाना नं0 -8 जन्म कुण्डली कोई ग्रह हो । कोई ग्रह हो तो वो खाना नं0-8 वाले ग्रह को दफा (और एक ही हो तो अकेला । कई हो तो हर एक अपने-अपने साल जहां

कि हर एक या दो अकेला ऊपर दिए हुए धोखे वाले नक्शा में हो) धोखा देंगे। इसी तरह हीं - **पितृ ग्रहः**- पितृ ग्रह से शुभ खाना नं0-9 जन्म कुण्डली के, चन्द्र कुण्डली के नहीं के ग्रहों से होगी और राशि समाप्त होगी।

राशि समाप्त से स्वयं खाना नं0 -12 के ग्रहों से होगी महादशा के बिना वह शेष उम्र के सालों में ऊपर का असूल बेकार होगा। केवल माथा भरने का तरीका थोड़ा अलग होगा। माना कि उम्र जारी के साल धोखे के नियम में बुध है उधर वर्षफल के सिवाय से उम्र के जारी साल का ग्रह या राशि नो नम्बर के हिसाब से जारी उम्र का ग्रह ही बुध ही आ जाए तो बुध धोखे का ग्रह होगा यानि अगर एक ही साल में वर्षफल का ग्रह या राशि नम्बर तोलने का ग्रह और धोखे की फैरिस्त का ग्रह एक ही हो जाए तो वो ग्रह आम उम्र के लिहाज से धोखे का ग्रह होगा। (1) और अगर आम उन में धोखे का ग्रह और महादशा की सूचि का धोखे का एक ही आ जाये तो वो ग्रह मौत तक की नौबत के लिए धोखा दे देगा (2) धोखे का ग्रह जरूरी नहीं कि नीच ग्रह ही हो। सबसे ऊच्च होता हुआ भी हर एक ग्रह धोखे का ग्रह गिना जाता है चाहे वो लाख ऊच्च हालत का ही क्यों न हो, नाबालिग की हालत में या नाबालिग रहने के दिन तक यह धोखा का ग्रह फल का या पक्का धोखा होगा और उम्र ही खत्म कर देने तक हो सकता है मगर बालिग की हालत या बालिग के दिन से यह धोखा राशि फल का यानि काबिल उपाय होगा। मगर हर दो हालत में धोखा हो जरूर। वो किस बात में। हर एक ग्रह धोखा का साल आम उम्र और महादशा के जमाने के सालों में तो मालूम हो गया और ग्रह का नाम भी पता लग गया। अब धोखा देने वाला ग्रह जन्म कुण्डली में जिस खाना नम्बर का हो उस ग्रह का उस बैठे हुए होने के खाने के अनुसार जिन-जिन चीजों का संबंध हो उनमें वो ग्रह उस साल धोखा देगा। जिस तरह महादशा के जमाने में हर ग्रह को अपना जाती फल जन्म कुण्डली देने का रियायती साल मिल गया गिना जाता है इसी तरह ही इन्सान की उम्र के हर सातवें आम हालत हर आठवें कम आयु वाले तबदीली हालत होगी। उस सातवें खत्म या आठवें शुरू के बीच समय में बदली हालत जरूर होगी चाहे कोई ग्रह 12 साल धोखे के नक्शे के हिसाब से या वर्षफल हिसाब से प्रबल हो रहा हो ऊपर का सारा हिसाब अगर सालों में लिखकर देखा तो साल के 12 महीनों में भी वही प्रभाव प्रकट होगा यानि नक्शा में सालों की जगह शब्द महीना समझें। और महीनों के समय खाना नं01 से शुभ वैशाख का महीना लेगें जिसके बाद देसी महीनों के नाम होंगे फिर देसी महीनों के अनुसार अंग्रेजी तारीखें भी देखी जा सकती है साल और महीने के बाद विशेष-विशेष दिन के लिए इसी नक्शो में केवल। से 32 तक अक्षर लिखकर नम्बर एक से अक्षर वाले खाने पर जन्म दिन ग्रह लिखकर सारे ग्रह पूरे कर लें धोखे के चक्र की अवधि एक साल होती है

मगर इस एक साल में से भी आगे पूरा समय देखने के लिए हर एक ग्रह के तख्त की मालकियम के जगाने के दौरा में इसके शुरू मध्य व अन्त पर दूसरे साथियों का संबंध भी देख लें महादशा का प्रभाव किसी ग्रह के किसी एक विशेष हिस्सा की शक्ति के सो जाने से शुभ होती है जिस तरह कि सारे शरीर से कोई अंग बेकार हो जाए किसी ग्रह का कुण्डली के बारह ही खानों के प्रभाव का सो जाना ग्रह के नष्ट हो जाने से मुराद होती है महादशा के में महादशा वाले ग्रह पर इसके दुश्मन ग्रहों का प्रभाव इस ग्रह की अपनी सम्बन्धित रेखा का एक साथ टूट जाना मौत की निशानी होती है । महादशा के जगाने के जमाने में महादशा वाले ग्रह से इसके दोस्त ग्रहों का मातम के लिए ही आ मिलना इस ग्रह का अपनी सम्बन्धित रेखा समाप्त होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरू हो जाना होगा । यानि वो मौत की निशानी होते हुए भी उम्र व जिन्दगी का मालिक होगा बल्कि बदली हालात की निशानी होगी ।

दो ग्रहों की महादशा :-

किसी समय दो ग्रह महादशा के मालूम होते हों तो जो उन दो में से रद्दी हो जाए तो महादशा का होगा। नकली ग्रहों और प्रभाव ग्रहों के टोले में से नकली हालत वालों से जो रद्दी होगा वो महादशा में होगा । अर्थात् **सूर्य और नकली सूर्य शु-बु दोनों ही टोली शक्की हो जाएं** तो मशनोई हिस्सा का जो ज्यादा रद्दी हो वो महादशा का होगा ।

कायम ग्रह या दुरूस्त और नेक नींव का ग्रह :-

कभी महादशा में न होगा और हर ग्रह जहां कि दो राशि फल का है मगर महादशा का होगा क्योंकि काबिल उपाय ही हो चुका हैं ।

महादशा में कौन-कौन से ग्रह कितने-कितने साल सोए हुए होंगे

महादशा का ग्रह	वृ०	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मं०	बुध	शनि	राहू	केतू
	श ६	मं० बद	वृ०२	वृ०६	शुक्र १	वृ०६	वृ० १६	वृ०८	वृ०६
	रा ६	६	मं०६	मं०६	शनि ६	मं०६	केतू ३	सू	सू० बु०
	केतू३		श २	बुध २, शनि ६	राहू	के ५		शु ३	मं ५
कुल साल	१५	६	१०	२०	७	१७	१९	१८	७

ऊपर की टैबल में जिस क्रम से बराबर के ग्रह लिखे हैं वो उसी क्रम से एक के बाद दूसरा सोते हुए गिने जाएंगे जिन ग्रहों के सामने कोई अक्षर नहीं लिखा गया वो ग्रह निरपक्ष गिने जाएंगे ।

वृहस्पतिः-

वृहस्पति की कुल महादशा 16 साल होती है मगर इसकी महादशा के जमाने में सो जाने वाले ग्रह सालों की मिजान कुल 15 साल है यह एक साल का फर्क है वृहस्पति अपनी महादशा के समय बहैसियत गुरू अपने जाती प्रभाव के लिए रखा करता है जो इसकी महादशा का शुरू होने का ही साल होता है या कहो कि वृहस्पति की महादशा के कुल 15 साल बुरे और 16 साल कुल में से महादशा का पहला ही साल वृहस्पति की अपनी मर्जी का होता है इसी तरह ही वृहस्पति हर एक सोने वाले ग्रह का पहला साल भी दूसरे ग्रहों की तरफ से स्वयं वृहस्पति की गुरू आई के लिए रख लेता है जिसमें भी वृहस्पति का अपनी मर्जी का फल होगा । इस तरह पर 16 साल महादशा के समय के सालों में वृहस्पति का स्वयं अथवा वश किस-किस साल हुआ, वृहस्पति की महादशा के समय सो जाने वाले ग्रह शनि 6 साल राहू 6 साल और केतू 3 साल यानि वृहस्पति की महादशा के समय सारे पापी ग्रह का 15 साल मियाद के होते हैं । वृहस्पति की महादशा शुरू हो तो इस महादशा का साल नम्बर एक पहला वृहस्पति स्वयं अपनी गुरूआई का ले गया । शनि के 6 सालों में से (2-3-4-5-6-7) शनि का पला मगर वृहस्पति का दूसरा साल वृहस्पति शनि से गुरू दान का ले गया । राहू के सालों में से (8-9-10 बतौर अपना ग्रह 11,12,13) यह आठवां साल है वृहस्पति की महादशा की मगर राहू का होगा पहला साल वृहस्पति राहू से गुरूदान का ले गया । केतू के 3 सालों में से (4,5,6) यह केतू का पहला मगर वृहस्पति का 14वां साल है वृहस्पति केतू से गुरूदान का ले गया । खुलास्ता वृहस्पति अपनी महादशा के समय का पहला, दूसरा, आठवां, दसवां, चौदहवा कुल 5 साल तो इस तरह ले गया और अपने दूसरे नियम के अनुसार कि अपनी उम्र का पहला हिस्सा यानि 8 साल कभी बुरा फल न देगा । चाहे भला प्रभाव दे चाहे न दे । यानि वृहस्पति की महादशा वास्तव में नौवें साल से शुरू होगी और 8 साल बाकी में से भी 14वां और 10वां दो साल और अपनी मर्जी के रख लेगा महादशा के समय में किन-किन ग्रहों पर महादशा का प्रभाव न मानेंगे ।

महादशा में हो तो कौन कौन से ग्रह बदस्तूर होंगे ।

वृहस्पति	**सिवाए पापी ग्रहों के सब और ग्रह बदस्तूर होंगे ।**
सूर्य	**सिवाए मंगलबद के बाकी और सब गम बदस्तूर होंगे ।**
चन्द्र	**बुध-शुक्र, सूर्य, राहू, केतू ।**
शुक्र	**सूर्य, चन्द्र, राहू केतू ।**
मंगल	**सूर्य, चन्द्र शुक्र, राहू, केतू, नदारद ।**
शनि	**शनि, बुध, केतू, सूर्य नदारद ।**
केतू	**चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहू सूर्य नदारद बुध नदारद ।**

महादशा का प्रभाव ग्रह सम्बन्धित की चीजों के प्रभाव के द्वारा भी प्रकट प्रमाण दे देता है ।

नोट :- इस सारे हाल में जहां कहीं भी बुरे ग्रहों का जिक्र है इनके बुरे फल केवल उसी दिन से या दिन तक गिने जाएंगे जिस दिन से कि वो बुरे ग्रह वर्षफल के हिसाब से शुरू या समाप्त होवें सारी उम्र के लिए ही बुरे नहीं ज्यादा से ज्यादा हर ग्रह अपने दौरा आम प्रभाव की अवधि या ग्रह की अपनी उम्र या उम्र के पहले 35 साला चक्र तक प्रभाव कर सकता है महादशा वाला ग्रह भी जो जन्म दिन से ही शुरू हो जाए और चाहे दो बार ही एक के बाद दीगरे दौर में बुरा हो जाए 39 साल ज्यादा से ज्यादा बुरा रह सकता है ।

तख्त के मालिक वे राशि नम्बर के ग्रहों जिनका कि उपाय हो सकता माना है, का आपसी संबंध है:-

वर्षफल में उम्र के साल का, ग्रह जो भी कोई निश्चित हो वो किस्मत के मैदान में ग्रह फल का मण्डली के खाने में खाना नं0-1 का संसार में तख्त का मालिक और प्रसिद्ध राजा होगा राशि नम्बर के ग्रह खाना नं0-7 के उसी साल के जिस साल का वर्षफल वाला ग्रह हो राशि फल के या उस राजा के साथी वजीर होंगे । वर्षफल के सारे ग्रहों की आम अवधि के एक चक्र में 35 साल होते हैं और राशि नम्बर के सारे खानों की अवधि के एक चक्र में 36 साल गिने हैं किस्मत का हाल देखने के लिए वर्षफल वाले ग्रह को राजा और राशि नम्बर वजीर की जोड़ी 35 और 36 साला अलग अवधि होने के कारण इकट्ठी न चल सकती इस एक साल के अन्तर में चलने वाला धोखे का ग्रह का अलग चक्र होता है वर्षफल के दो चक्र =70 साल और राशि नम्बर के दो चक्र =72 साल या इन्सान 70-72 का जब हो जाए तो बाप बेटे की किस्मत का एक जगह इकट्ठी मानी है यानि बाप काबिल ऐतबार वालिहाल किस्मत स्वयं बाप की अपनी किस्मत न रहा 70 और 72 के अन्तर का केवल एक 71वां साल धोखे के ग्रह का समय माना है जिनके महादशा के जमाने के समय 40 साल के धोखे वाले प्रभाव के लिए 40 दिन का आम उपाय या चालीस रियायती दिन का प्रभाव माना है ।

ग्रह का उपाय :- रूह मुर्दो के झगड़े की तरह ग्रह को रूह और राशि को मुर्दा मानें तो ग्रह फल के उपाय की इस विद्या में गुंजाइश नहीं मानी गई । राशि या ग्रह या राशि ग्रह फल के शुक्र का इलाज और ग्रहों से धोखे के ग्रह के पक्के से बच कर चला इन्सानी शक्ति में माना गया है । बुध के ग्रह का हीरा (सब्ज रंग पत्थरी कीमती) सबको काटता और मारता है । मगर वो स्वयं इस बुध की दूसरी निहायत नर्म चीज कली टांके लगाने वाली धातु उस हीरे में सुराख डाल देती है । इसी तरह ही पापी ग्रह सब ग्रहों पर अपना धक्का लगाते हैं मगर उनके पापी ग्रहों को मारने के लिए स्वयं अपना ही पाप शब्द पाप से शुभ राहू-केतु, पापी से मुराद

शनि, राहू-केतू तीन ही हैं यानि राहू के बुरे प्रभाव को केतू का उपाय ठीक करेगा और केतू के बुरे असर को राहू का उपाय नेक करेगा। महाबली होगा और पाप की बेड़ी भर कर डूबेगी आम तौर पर पापी ग्रहों का उपाय या उन ग्रहों की सम्बन्धित चीजों की पालना करनी होगी या उनकी चीजों से इनकी आर्शीवाद का माफी ले लेना का आमद होगा। उदाहरणतय: शुक्र की सम्बन्धित चीज गाए और आम इन्सानी खुराक या सब अनाज मिले मिलाए निश्चित है शुक्र की सहायता के लिए गाए करे अपनी खुराक का हिस्सा दें। काम रेखा धन दौलत की हानि शनि की बुरी निशानी कौए की रोटी का या सन्तान के लिए संसार के साधू कुत्ते को अपनी खुराक का टुकड़ा बख्शें।

(ब) हर ग्रह नकली हालत मे दो ग्रह होते हैं जब कोई ग्रह बुरा हो जाए तो इसकी नकली हालत में दिए हुए दो ग्रहो में से उसी एक ग्रह को हटाने के लिए, जिसके हट जाने से नतीजा नेक हो जाए, कोई और ग्रह कायम करें जो बुरे फल के हिस्सा के देने वाले ग्रह को गुम ही या नेक कर दें। मसला-शनि बुरा हो तो इसके नकली हालत की जब शुक्र-वृहस्पति में से वृहस्पति के हटाने के लिए अगर बुध का कायम करें तो शुक्र बाकी रह जाएगा। अब शुक्र के साथ बुध मिलने पर शनि नेक होगा।

(क) उपाय के अलावा हर एक पक्के ग्रह का उपाय तो लाल किताब के अनुसार ही ले लेंगे।

(ख) हर एक ग्रह की नकली हालत में दो ग्रह इकटठे माने गए हैं पक्के ग्रह का जिस चीज का प्रभाव या जो प्रभाव बुरा हो उस प्रभाव के देने वाले ग्रह को उसकी नकली जज से हटाने की कोशिश करें। उदाहरणतय: शुक्र जब खराब करे या खराब हो तो शुक्र के नकली जज राहू-केतू में से राहू को हटा दे तो बाकी केतू होगा। यानि शुक्र के नेक करने को राहू को नेक कर लेना सहायक होगा। बुध वृहस्पति दोनों का ही कायम रख कर चलाने के लिए **बुध का हरा रंग सोने का जेवर** रहे कागज में रखने की तरह सहायक होगी और बुध शुक्र शनि की साँझी चीज **गऊ ग्रास अपनी खुराक से तीन टुकड़े रोटी के गाए, कौआ और कुत्ते को देना शुभ फल देगा**। मान धन दौलत और औलाद के नेक और अच्छे होने के आदि-आदि। मतलब यह कि बुरा फल वाले ग्रह के लिए **बुरा करने वाली चीज को दूर करे मंगल बद के बुरे प्रभाव से मृगशाला बचाएगी।**

मंगल बद का इलाज :-

मंगल बद- मंगल बद व शनि के सांप की जहर या मंगल बुरा शनि साँझा को मृगशाला पहाड़ी जुबान में मृग को चीता कहते हैं चीते की खाल नहीं माना है। जिस पर जहरीला सांप न आएगा। मंगल बुरे का दोस्त शनि मुर्दा हिरण की खाल पर जहरीला सांप कभी न चढ़ेगा। इसी लिए साधु ने मृगशाला को पसन्द

किया है। इस प्रकार के नुक्स इसके दिल की बात इसके नाखून से प्रकट कर देंगे क्योंकि इसका दिल या चन्द्र नहीं होता या ऊट को इसके पांव के नाखून केतू की सजा दिलाते हैं या वो केतू के बुरे प्रभाव को खराब करने के इलाज से काबू होगा। चन्द्र की उपासना सहायक देगी यानि चन्द्र जिस घर का कुण्डली के अनुसार हो वही इलाज होगा।

(2) चन्द्र को शिवजी माना है मंगल बुरे को भी शिवजी माना है यानि चन्द्र व मंगलबद दोनों ही शिवजी माने गए हैं चन्द्र उम्र का मालिक है और हर एक पर मेहरबान होगा। मंगलबद सबके लिए मौत का फन्दा लिए फिरता है या जहां मंगलबद होगा चन्द्र न होगा। इसी असूल पर मंगलबद का इलाज चन्द्र की पूजना या मदद ढूढंना शुभ होगा।

तन्दूर में मीठी रोटी लगा कर खैरात में देने से भी मंगलबद का मंगल दूर होगा।

राहू का बुरा प्रभावः-

जौं को किसी बन्द जगह में बोझ तले दबाया जाए या दूध से धोकर चलते पानी में डाला जाए अगर तपेदिक आदि या लम्बा बुखार तंग करे तो "जौ" के गऊमूत्र से धोकर लाल सूर्ख कपड़े में बन्द करें और गऊमूत्र से ही दांत साफ करें जो ग्रह उच्च हो इसकी सम्बन्धित चीज की सहायता से बुरे ग्रह का प्रभाव दूर हो जाता है।

बलिहाज शक्तिः- सूर्य, चन्द्र, शुक्र,वृहस्पति, मंगल, बुध, शनि, बातरतीब। आपसी मुकाबले की शक्ति में कम है।

टकराव का बर्ताव पर पैमाना शक्तिः-दौरा या तख्त का मालिक ग्रह और राशि नम्बर के ग्रह आपस में टकराव पर हो जाए (टकराव और दुश्मनी की हालत में होता है, मिलाव या बर्ताव दोस्ती की हालत में) सूर्य 9-9, चन्द्र 8-9, शुक्र 7-9, वृहस्पति 6-9, मंगल 5-9, बुध 4-9, शनि 3-9, राहू 2-9 केतू 1-2 दौरा के समय ग्रहों के आपसी टकराव से इसके आपसी प्रभाव में कमी पेशी होने के अतिरिक्त किसी ग्रह के उपाय के लिए दूसरे ग्रह का उपाय करते समय भी यह शक्ति का पैमाना सहायक होगा।

उम्र के कौन से साल में किस राशि नम्बर खाना नम्बर के ग्रह काबिल उपाय होंगे। हर खाना में उम्र के 3 साल होंगे।

खान	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृ०	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
उम्र के वर्ष	१-३	४-६	७-८	१९ १५	२२- २४	२५ २७	२८ ३०	३१- ३३	३४ ३६	१० १२	१३ १५	१६- १८
	३७- ३९	४०- ४२	४३ ४५	५५ ५७	५८ ६०	६१ ६३	६४ ६६	६७ ६८	७२ १०६	४६ ४८	४९ ५१	५२ ५४
	७३- ७५	७६- ७८	७९ ८१	९१ -९३	९४ ९६	९७ ९९	१०३	१०६	१०८	११८	१२०	
		७८- ८१										
	१०९ - १११	११२ ११४	११५ ११७									

उम्र के हिसाब से प्रभाव का खाना नम्बर देखते जाए, अगर कोई खाना नम्बर खाली ही आ जाए तो इस खाली खाना नम्बर की राशि के मालिक ग्रह घर का मालिक जिस खाने में हो वो खाना ले। मगर यह शक्र न करें कि एक ही खाना के ग्रह कई बार क्यों बोले।

राशि नम्बर के ग्रह बोलने के समय खाली खानों के लिए :--

आमतौर पर खाली खाने की हालत में खाली नम्बर वाली राशि का मालिक ग्रह लेते हैं। खाना नम्बर 6,12 में बुध व वृहस्पति के साथ केतू व राहू का निवास भी माना है इसलिए हर दो में से कौन सा एक होगा :--

(1) वृहस्पति जब अपनी दूसरी राशि नं0 9 में हो तो खाली खाना नं0 12 का मालिक राहू होगा।

(2) बुध जब अपनी दूसरी राशि नं0 3 में हो तो खाली खाना नं0 6 का मालिक केतू होगा।

लेकिन अगर वृहस्पति 9,12 में से किसी जगह भी न हो तो खाली खाना नं0 12 में वृहस्पति राहू दोनों ही साँझा नकली होगा।

अगर बुध 3,6 में से किसी जगह भी न हो तो खाली खाना नं0 6 में बुध केतू दोनों ही साँझा हो सकते हैं लेकिन यहां बुध जबरदस्त होगा केतू वहाँ कमजोर होगा इसलिए ऐसी हालत में खाली खाना नं0 6 का मालिक बुध या केतू में से कोई एक लेंगे जो कि दोनों में से प्रबल हो उस कुण्डली में (जन्म कुण्डली के हिसाब से) अच्छा हो, क्योंकि खाली खाना नं0 6 हमेशा नेक अर्थों में होता है। इसलिए दोनों में से कमजोर या बुरे को अब खाना नं0 6 का मालिक नहीं लेंगे।

खाली खाना नं0-9 का मालिक वृहस्पति और खाना नं0 6 खाली का मालिक नहीं लेंगे। खाली खाना नं0 9 का मालिक वृहस्पति और खाना नं0 6 खाली का मालिक बुध होगा। बाकी खाली खानों के लिए राशि नम्बर को मालिक ग्रह (घर का) लेंगे।

जो ग्रह नीच फल दें इस ग्रह के उपाय के लिए नीचे दिया हुआ दान करें :--

प्राकृतिक शक्ति	प्रकार	नाम ग्रह	रंग ग्रह	उपाय	वस्तु	उपाये आम वस्तु
ब्रह्माजी	नर	वृहस्पति	जर्द	हरी पूजन		दाल,चना सोना
विष्णु जी	नर	सूर्य	गेहूँआ	कथा हरि भजन	गेहूँ	लाल तांबा
शिव भोले जी	स्त्री	चन्द्र	दूधिया	अराध्य देव	पूजन	चावल, दूध, चाँदी
लक्ष्मी जी	स्त्री	शुक्र	दही	रंग लोगों की पालना	घी, सफेद	दही, काफूर मोती
हनुमान जी	नर	मंगल	सूर्ख	दही	रंग लोगों की पालना	घी सफेद, दही काफूर, मोती
दुर्गा जी	नंपुश्क	बुध	हरा	दुर्गा पाठ		मूंग साबत
भैरव जी	नंपुशक	शनि	काला	राजा की उपासना		उड़द साबुत
सरस्वती जी	नंपुशक	राहू	नीला	कन्या दान		सरसों, नीलम
गऊ माता	नंपुशक	केतू	चितकबरा	दान कपिला गाए		तिल

धोखे के ग्रह का जो छुपा छुपाया होता है इलाज भी देख लेना जरुरी होगा। अगर लड़का लड़की बाप के लिए दोनों ही बुरे फल वाले पैदा हो जाएं तो सूर्य लड़का, बुध लड़की या लड़की के गले में तांबे का टुकड़ा शुभ होगा। जो बुध को दबा लेगा। पापी ग्रहों के साथ जब वो अकेले अकेले ही बजाए कोई **दो इकट्ठे हों तो मंगल को कायम करना शुभ होगा।** बशर्ते कि उस कुण्डली वाले का अपनी कुण्डली के हिसाब से मंगल राशि फल का न हो यानि अगर मंगल खाना नं0 1 या 8 में हो तो मंगल का उपाय न होगा। बुध काम देगा, इसी तरह ही स्त्री ग्रहों (चन्द्र-शुक्र) में बुध की शक्ति सहायता देगी। बशर्ते कि बुध खाना नं0 3,6,7 या 9 का न हो ऐसी हालत में वृहस्पति काम देगा। सूर्य शनि के झगड़े मे वृहस्पति सहायक होगा। बशर्ते कि वो खाना नं0 2 का न हो तो ऐसी हालत में मंगल सहायक होगा। **विशेष रुप से उपाय के समय खाना नं0 9 के ग्रहों का उपाय रंग के जरिया फ़र्श मकान से होगा,** यानि शुक्र बुध मंगल बद आदि तो उनके मित्र ग्रहों की पालना करे या **कम से कम उस नेक ग्रह के रंग की चीजें**

पांव तले फर्श पर न लगाए जो रंग का खाना नं0 9 के ग्रह सम्बन्धित है जब आम उपाय काम न दे तो घण्टों के अन्दर-अन्दर ही फैसला करने के लिए नीचे लिखे उपाय होंगे।

मंगलबद :--	रेवड़िया पानी में बहा दे।
वृहस्पति :-	केसर नाभि या जबान पर लगादे या खाने को दे।
सूर्य :-	पानी में गुड़ बहा दें।
चन्द्र :-	दूध या पानी का बर्तन सिहराने रखकर कीकर के पेड़ पर डालें ।
शनि :-	तेल का छाया पात्र दान करें ।
शुक्र :-	गऊ दान या चरी दान (अनाज) करें ।
मंगल नेक :-	मिठाई, मीठा भोजन दान करें या पतीसा दरिया में डालें ।
बुध :-	तांबे के पैसे में सुराख करके दरिया में बहा दें ।
राहू :-	मूली दान करें या कोयले दरिया में डालें ।
केतू :-	कुत्ते को रोटियां डालें आदि ।

उपाय की अवधि :- हर एक उपाय की अवधि कम से कम 40 दिन और ज्यादा से ज्यादा 43 दिन होगी । पितृ ऋण या मातृ ऋण या कुल समय की सहायता के लिए **उपाये की अवधि होगी तो वहीं 40 हद 43** मगर हर रोज लगातार की बजाए सप्ताहिक लगातार होगी यानि हर आठवें दिन जो 40-43 हफते होंगे। उपाय के समय चाहे आखिरी दिन 39वें या 40वें दिन ही भूल जाए या बन्द कर बैठें ते सब किया कराया निष्फल होगा और नए सिरे से फिर दोबारा शुरु करके पूरी अवधि तक करने के बाद फल देगा। अगर किसी वजह से उपाय बन्द ही करना पड़ता हो मगर पहला प्रभाव भी कायम रखना मन्जूर हो तो चावल दूध से धोकर पास रखे जाए।

रियायती चालीस दिन :-- एक ग्रह का प्रभाव समाप्त और दूसरे के शुरु के बीच 40 दिन फालतू होंगे यानि बुरे ग्रह की अवधि के 40 दिन बाद तक इसका फल हो सकता है और शुरु होने वाले का अपनी अवधि से 40 दिन पहले ही प्रभावित हो जाना माना है। इकट्ठे प्रभाव के केवल 49 दिन ही होंगे मगर दोनों ग्रहों के अलग-अलग 40-40 दिन न होंगे। यह रियायती दिन कहलाते हैं इसी असल पर बच्चे के जन्म से लेकर 40 दिन और मर जाने के बाद 40 दिन का शौक या चालीसा मानाया जाता है और इन्सानों में भी चालीस चन्द पूरा मन्दा होगा चूँकि गिनती के लम्बे-लम्बे हिसाब़ को इस ज्ञान में उड़ाने के लिए 28 नक्षत्रों और 12 राशि को बाद में छोड़ ही दिया जाता है। इसलिए दोनों की जमा (28 + 12) कुल 40 दिन रियायती तक कम से कम या ज्यादा से ज्यादा 43

दिन तक उपाय का प्रभाव पूरा होगा जिसकी निशानी समय से पहले ही नेक ग्रह का प्रभाव हो जाने के समय दोस्त ग्रह की चीजों की कुदरती निशानियां और बुरे ग्रह की अवधि 40 दिन बाद तक रहने वाली हालत में पापी ग्रहों की निशानियां हुआ करती हैं । दौरान उपाय 40 दिन की आधी या चौथाई अवधि में पापी या चौथाई प्रभाव मालूम होने लग जाया करता है।

पितृ ऋण :-- पितृ ऋण से मुराद सुफिया प्रभाव होता है और धोखे के ग्रह या उसके धक्के से प्रकट हो जाएगा,

गुनाह तो कोई करे मगर सजा इसकी कोई और भुगते। मगर सजा भुगतेगा इस गुनाह करने वाले का असल करीबी सम्बन्धी खाना नं0 9 के ग्रहों से शुभ होती है जब इस घर में या इस घर के मालिक ग्रह यानि वृहस्पति किसी दूसरे घर पर कोई और ग्रह (एक या एक से अधिक) जो था तो आपसी दुश्मनी पर हों या वो दोनों या हर एक वृहस्पति की शक्ति को खराब करते या वृहस्पति के प्रभाव में जहर मिलाते हों तो पितृ ऋण होगा। राहू को वृहस्पति के चुप करवाने वाला गिना है वो अगर वृहस्पति को मुंह बन्द करके स्वयं हालत का प्रभाव वृहस्पति के चुप करवाने संबंध से (यानि या तो वो वृहस्पति के घरों में हो या वृहस्पति के पक्के घर में) दें तो पितृ ऋण को बोझ होगा। इसी तरह ही और ग्रह भी चन्द्र की खराबी में माता की तरफ से मातृ ऋण हो सकते हैं। विस्तृत रुप से जिस ग्रह की जड़ (इसकी अपनी राशि) में इस का दुश्मन ग्रह जब उसका फल रद्दी कर रहा हो और स्वयं भी रद्दी बुरा हो रहा हो तो पितृऋण होगा।

पितृ ऋण या कुण्डली वाले के बुजुर्गों का पाप-बाप के बिला वजह कुत्ते को गोली बगैरह से मार देने के पाप में इसका लड़का दुख भोगने का कारण होगा यानि **कुण्डली वाले पर इसके बाप के पाप का बोझ भी हो सकता है।**

जिस समय तक केतू व वृहस्पति का उपाय न करे पितृ ऋण का बोझ लड़के की 16 से 24 साल उम्र तक दूर न होगा इसी तरह ही सब ग्रहों का हाल हो सकता है चाहे ऐसे व्यक्ति की (कुण्डली वाले के) अपने ग्रह लाख राज भोगे ही क्यों न हो पर बुरा प्रभाव दो ग्रहों का होगा और उपाय भी दो ग्रहों का करना होगा।

मान लों किया कि कुण्डली वाले के बाप के कुत्ते मारे तो कुण्डली वाले पर वो वृहस्पति व केतू पितृ ऋण हुआ जो कुण्डली वाले पर बालिग होने की (कुण्डली) उम्र से 16 से 24 साल रह सकता है। कुण्डली वाले के रिस्ता के संबंध और पाप की किस्म ऋण का नाम निश्चित होगा।

ऋण की किस्म -- जैसी करनी वैसी भरनी

किस का पाप हो	पिता का	माता का	अपना ही	परिवार का	रिस्तेदार का	बेटी बहिन का	जानवरों का	ससुराल का	फकीर का
ऋण होगा	पितृ	मातृ	जाती	स्त्री	भाईका	बहिन का	जालिम माला	अजन्मे का	दरगाही
ग्रह संबंधित	वृ०	चन्द्र	सूर्य	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहू	केतू
कैफीयत	श्राम	मान्नतबद	खराब	पेट	मित्र	जबानी	जहर	दगा	चलनी

बालगी दिन से

१६ साल २४ २२ २५ २८ ३४ ३६ ४२ ४८

वर्षफल

किस्मत का हाल हर वर्ष देखने के लिए यह जरूरी जज है। जब जन्म समय दिन, माह, पक्की उम्र गुजरता मालूम न हो तो सामुद्रिक में वाक्या की नींव पर बनाया हुआ वर्षफल ज्यादा विश्वास होगा। शब्दों से स्वयं खुशी या गमी के पक्के वाक्या से होती है। उदाहरणतय: शादी का महीना दिन और साल, किसी दैविक प्रभाव में से किसी चीज़ का पक्का वाक्या, जन्म दिन (तारीख पैदाइश नहीं, रवि, सोम, आदि, इन्सान किस ग्रह का है, वाला ग्रह या इसका जद्दी या बनाया मकान किस ग्रह का है, वाला ग्रह जन्म कुण्डली में लग्न का खाना खाली हो तो जन्म राशि के घर का मालिक ग्रह गर जिसका जो भी सही-सही और अच्छा व पक्का वाक्या मिल सके ले लें। फर्ज किया कि किसी व्यक्ति की शादी का वाक्या पक्का मिल गया है पहली शादी का (अगर कई दफा शादी हो तो पहली शादी का दिन ही गिनने में समर्थ होगा) जो इसकी-7 साला उम्र में हुई यानि 17 साला उम्र से शुक्र शुरु हो गया अगर शादी का साल महीना दिन मालूम न हो और पहली शादी की औरत की मौत का दिन महीना साल ही मालूम हो तो औरत के गुजर जाने का शुक्र के समाप्त होने का साल होगा। हर एक ग्रह की दी हुई आम अवधि में शुक्र का समय 3 वर्ष मान कर 3 साल 19 साल उम्र के आखिर तक रहा अगर 17 साल उम्र में औरत मर गई तो 17वें साल या औरत के मरने के दिन समाप्त हुआ या औरत की मौत के दिन से 3 साल पहले से चलकर मरने के दिन तक शुक्र का दौरा वर्षफल के बनाने के लिए ग्रहों का दौरा यानि कौन ग्रह किस ग्रह के पहले या बाद अपना प्रभाव देगा। क्रमवार दिया है यानि सबसे पहले वृहस्पति के बाद सूर्य के बाद चन्द्र और कम्र भी दर्ज है सारे ही ग्रहों की आम

अवधि के सालों में गिनती और क्रम भी दर्ज है सारे ही ग्रहों की कुल अवधि का जोड़ 35 साल उम्र का एक चक्र होगा। उदाहरणतः किसी व्यक्ति का शुक्र शुरु हुआ 17 साला उम्र में तो वर्षफल होगा।

६ साल वृ०	२ साल सूर्य	१ साल चन्द्र	३ साल शुक्र	६ साल मंगल	२ साल बुध	६ साल शनि	६ साल राहू	३ साल केतू
8 - 13	14-15	16	17-19	20-25	26-27	28-33	34-39	40-42
43 -48	40-50	51	52-54	55-60	61-62	63-68	69-74	75-77
78 -83	84-85	86	87-89	90-95	96-97	98-103		

जितने साल तक उम्र चलती रहे या हो जाने वाले लिख देवें दोनों अंक शामिल करेंगे हर ग्रह की अवधि होगी।

पहचान :-- पहचान कि वर्षफल ठीक है या गलत उम्र के शुरू होने का पहला साल या अंक संख्या एक जिस खाना में हो, वहां देखें कि माथे पर कौन सा ग्रह का नाम लिखा है ठीक हालत में अक्षर नं0 1 के खाना वाला ग्रह इसकी कुण्डली के खाना नं0 9 या खाना नं0 1 में होगा या उस व्यक्ति का जद्दी मकान हिन्दसा नम्बर 1 के खाना के ग्रहों से मिलता या वो व्यक्ति स्वयं उस ग्रह का होगा जन्म दिन का ग्रह (रविवार के लिए सूर्य सोमवार के लिए चन्द्र आदि) भी हिन्दसा नं0 1 के ग्रह का हो सकता है। इस जांच के लिए मंगल और शनि या सूर्य और बुध या सूर्य और चन्द्र एक ही गिने जाएंगे नहीं तो दूसरा वर्षफल प्रयोग करें । अगर ऊपर जिक्र कर दो बातों से कोई भी ठीक मालूम न हो यानि अक्षर नं0 1 से न गिने तो कोई और वाक्या लेकर वर्षफल बनायें ।

तमाम उम्र पर असर (आम वर्षफल)

अज वर्ष से तक	असर ग्रह	वर्ष से तक	असर ग्रह	वर्ष सस तक	असर ग्रह
1 से 6	शनि	7 से 12	राहू	13 से 15	केतू
16 से 21	वृ0	22 से 23	सूर्य	24	चन्द्र
25 से 27	शुक्र	28 से 33	मंगल	34 से 35	बुध
36 से 41	शनि	42 से 47	राहू	48 से 50	केतू
51 से 55	वृ0	57 से 58	सूर्य	59	चन्द्र
60 से 62	शुक्र	63 से 68	मंगल	69 से 70	बुध
71 से 76	शनि	77 से 82	राहू	83 से 85	केतू
86 से 91	वृ0	92 से 93	सूर्य	94	चन्द्र
95 से 97	शुक्र	98 से 103	मंमल	104 से 105	केतू
106 से 111	शनि	112 से 117	राहू	118 से 120	केतू

बारह साल तक बच्चे की किस्मत का कोई भरोसा नहीं। 70 साल के बाद व्यक्ति की अपनी किस्मत का कोई भरौसा नहीं बच्चों की किस्मत होगी वो स्वयं 70 या 72 हो गया, 35 साल में सारे ग्रह चक्र पूरा करते हैं। हर एक ग्रह प्रभाव के साल आदि केवल उस व्यक्ति की उम्र के हिसाब दिए हैं जो व्यक्ति के लाल किताब मे हर ग्रह के बिलकुल निश्चित अवधि के अन्दर-अन्दर ही पैदा हुआ हो या दिया हुआ चित्र दिलाता है कि ज्ञान सामुद्रिक के हिसाब से जो उम्र में कि हर ग्रह का कब प्रकट होगी हर एक आम संसारिक इन्सान पर हर ग्रह का दौरा इसके जन्म के साल से और होगा। हर ग्रह की सम्बन्धित जानदार चीजों के लिए उम्र के साल को उस अक्षर से भाग करें जिस खाना नम्बर में कि ग्रह सम्बन्धित बैठा हो बाकी बचने वाले अक्षर के खाना नम्बर में दो ग्रह उस साल प्रभाव करेगा। खाना नं0 के लिए। 12 खाना नं0 2 के लिए 11 खाना नं0 3 के लिए-10, बाकी घरों के लिए अपने अपने नम्बरों पर भाग करे। शून्य या सिफर बचने के लिए की हालत में दो ग्रह जन्म कुण्डली वाले ही असली घर में प्रभाव कर रहा गिना जाएगा। हर एक ग्रह की चीजों हर खाना में विशेष-विशेष निश्चित हैं। जो चीज देखती हो इसका सम्बन्धित खाना नम्बर और जिन ग्रह के जरिया देखती हो देखें कि वो कब और किस घर में इकट्ठे होंगे जो इन्सान बुद्धि निकाल कर एक जगह गिर कर आगे चल दे जहां दुश्मन ग्रह आ मिले वो जवाब होगा खाना नं0 3 का चन्द्र मौत के घर खाना नं0 8 में 24 साल में आ मिला अब खाना नं0 3 के बाद 4,5,6 जहां चन्द्र का दुश्मन मिले मौत होगी।

(ब) हर एक ग्रह भी (केवल अकेला ही अकेला) उसी तरह ही घुमाया जा सकता है यानि जितने नम्बर के खाना में कोई ग्रह जन्म कुण्डली में बैठा हो देखें कि जिस साल का हाल देखना है वो उम्र का कौन सा साल है उस उम्र के साल के अक्षर को इस नम्बर पर भाग करें जिसमें कि वो ग्रह बैठा है। (जन्म कुण्डली में) बाकी जो अक्षर बचे उस खाना नम्बर में उस साल (जितने साल की उम्र का हाल देखा जा रहा है) वो ग्रह प्रभाव करता है और बोल रहा होगा। सिफर या शून्या बाकी बचने की हालत में उस घर (जन्म कुण्डली के जिस नम्बर पर है) प्रभाव दे रहा होगा। उदाहरण का तौर पर किसी जन्म कुण्डली में सूर्य है खाना नं0 11 में और उम्र का 52वां साल जारी है इस 52 के अक्षर को 11 पर भाग किया तो बाकी बचे 8 अब 52 साल उम्र में सूर्य खाना नं0 8 में गिना जाएगा और बाकी ग्रह जैसा कि वो जन्म कुण्डली में हो रख कर सूर्य की सम्बन्धित चीजों का प्रभाव देखा जाएगा इसी तरह हर ग्रह का हाल वर्ष देखते जाऐंगे। ख्याल रहे जिस ग्रह ब जन्म कुण्डली के खानों के होंगे। अकेला-अकेला करके घुमा कर जो कुण्डली बनाएंगे वो उस साल की औसत हालात जवाब देगी।

जज दोषः-- जन्म कुण्डली जो चाहे ज्ञान ज्योतिष के अनुसार बना कर और लग्न को खाना नं0 1 देकर बाकी खाने पूरे किए हों और चाहे ज्ञान सामुद्रिक से बनाई हुई हो पूर्ण करने के बाद आगे दी हुई सूचि के अनुसार अनुसरण करें ।

सालाना हालात के लिए दिया हुआ वर्षफल में

माहवारी हालात के लिए	**सूर्य की चलाएं**
रोजाना हालात के लिए	**मंगल को चलाएं**
घण्टा हालात के लिए	**वृहस्पति को चलाएं**
मिण्टों हालात के लिए	**शनि को चलाएं**
सैकेण्डों हालात के लिए	**बुध को चलाएं**
डिग्री हालात के लिए	**चन्द्र को चलाएं**
सप्ताह हालात के लिए	**शुक्र को चलाएं**
रातों हाला के लिए	**राहू को चलाएं**
दिनों हालात के लिए	**केतू को चलाएं**

यानि वर्षफल कुण्डली को घुमा दें। वर्षफल का असली प्रभाव उसी महीना में होगा जिस खाना नम्बर में कि उस साल सूर्य बैठा हो। उदाहरणतः अगर वर्षफल में सूर्य खाना नम्बर 7 में हो तो सूर्य का गन्दा प्रभाव यानि राज दरबार में खराबियां आदि उस साल के (जन्म दिन से) सातवें महीने पैदा होंगी। मगर बाकी सब महीनों में सूर्य का प्रभाव बुरा नहीं गिन सकते। इसी तरह ही बाकी सब कुण्डलियों (सालाना, मासिक, रोजाना आदि) में प्रभाव होगा।

एक साल के अन्दर के हालात के लिए ऊपर के हिसाब से लिए हुए वर्षफल की कुण्डली जिस खाने में सूर्य बैठा हो उस खाना को उम्र के हिन्दसा का हिन्दसा नम्बर देकर सारे कुण्डली मुकम्मल कर लें । महीना का शुरू जन्म समय से लेंगे। उदाहरणतः 31 की पैमाइश हो तो दूसरे महीने की 30 तक पूरा महीना होगा।

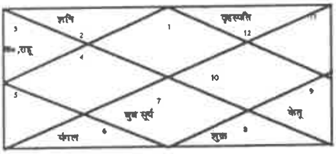

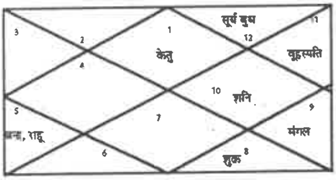

एक साला उम्र के बच्चे के लिए भी यही असूल होगा। उदाहरणः जन्म समय 10-5-98 मंगलवार 5-43 बजे शाम।

11-5-41 शाम 5-43 बजे के बाद 44वां साल जारी जन्म कुण्डली (लग्न से हर ग्रह)

वर्ष फलः- लग्न से हर ग्रह सालाना कुण्डली में वर्षफल बदला गया

11-5-41 को शाम 5-43 बजे के बाद 5 महीना शुरू सूर्य बैठा होने वाले घर को खाना नम्बर 5 दिया गया वर्षफल की कुण्डली को

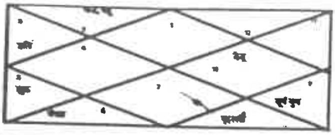

दिन कुण्डली :--

5वें महीने का 17वां दिन, पहले दिन से 16 वें दिन तक। से 16 माहवारी कुण्डली में जिस जगह मंगल बैठा है इस घर की एक से गिन कर 17वें नम्बर यानि नं0 दिया गया मंगल को।

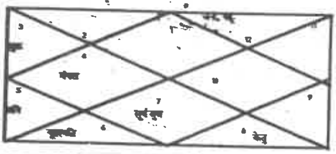

घण्टा कुण्डली

घण्टा कुण्डली के लिए 5वें महीने का 23वां घण्टा रोजाना कुंण्डली में वृहस्पति वाले घर को एक गिन कर 23वां नम्बर वृहस्पति को

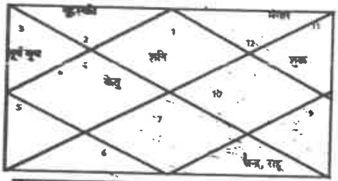

मिनट कुण्डली :-- घण्टों वाली कुण्डली से 20वां मिन्ट शनि को चलाया गया

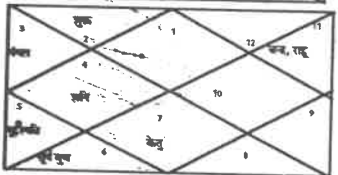

सैकिण्ट कुण्डली :--

28वां सैकेण्ड, मिन्टों वाली कुण्डली से अब बुंध को चलाया।

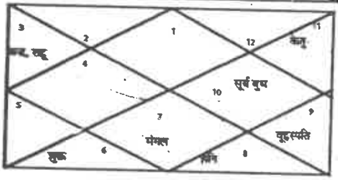

डिग्री कुण्डली :-

डिग्री कुण्डली के लिए सैकिन्डों कुण्डली से 53 डिग्री पर चन्द्र को चलाया गया।

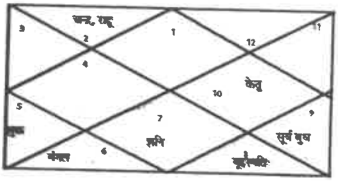

रातों की कुण्डली :--

44वें साल की कुण्डली को राँतों के हाल के लिए राहू को चलाया गया यानि उसे खाना नं0 2 या अपने मुख्यालय में कर दिया।

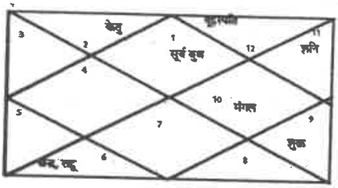

दिन की कुण्डली :--राहू की तरह अब केतू को खाना नं0 2 में दिनों के लिए कर दिया।

वर्षफल की सूचि की माथे पर जो अक्षर लिखे हैं वो जन्म कुण्डली के खाना नम्बर है और उम्र के नीचे वो हिन्द से हैं जहां कि उम्र के साल में जन्म कुण्डली के ग्रह चल कर आया हुआ होगा। उदाहरणतः जन्म कुंण्डली के खाना नं0 5 में मंगल है तो उम्र के 16वें साल वहीं मंगल वर्षफल में खाना नं0 12 में होगा आदि। इसी तरह बाकी ग्रहों को चलाकर देखें।

फरमान नम्बर- 5

वृहस्पति जगत् गुरू श्रीब्रह्मा जी महाराज, अगर बृहस्पति के पीला रंग जमाने के शेर ने इन्सानी गुरू के चरणों में सोने (नींद) से दुनिया को सोना (धातू) प्रदान किया, तो केसर ने दुनिया की मौत सिखलाई (केसर की खुराक से खुशी की हद में मदहोशी होती है।

पापी ग्रह या बुध ताल्लुक पिछले दोनों गुरू होते हैं
उपाय ग्रह साथी का हो, गुरू राशि फल होता है
पापी मन्दे या केतू मन्दा गुरू भी मन्दा होता है
ग्रहण के वक्त हुआ बर्फानी असर मन्दा हो जाता है
नष्ट मंगल आकाश में हो, बुरा शुक्रफल देता है
शत्रु ग्रह के जब वो अन्दर बैर नष्ट कर लेता है
साथ रूहानी कद पैशानी सांस चोटी गुरू गिनते हैं
बाकी बाहर सिरा अगला इसका फैसला कुछ हुआ करता है
एक से 5 या 12 बैठा मदद रवि-शनि करता है
घर 6 या 11 में बैठा केवल शनि को करता है
गुरू अकेला सबको तारे मदद पर जब कोई करता है
पर केतू को वो मरवाए खुद ही जब वो मरता है

वृहस्पति रेखा :-

वृहस्पति का असल निशान ---इन्द्रियाँ हैं जो सबसे अच्छी हैं और अकेले वृहस्पति के प्रभाव का है। बहुत बड़ा वृहस्पति शुक्र होगा । सब ग्रहों को चलाने वाला वृहस्पति है । (2) अगर एक दो, तीन की तरकीब से कुण्डली के खानों में वृहस्पति राहू से पहले घरों में हो तो वृहस्पति आकाश की तरफ या नीचे या संसारिक गुरु होगा । अगर बाद के घरों में हो तो दैवी मालिक होगा। अगर वृहस्पति, राहू आपसी में दुश्मन ग्रहों से रद्दी हो गया हो तो बुध होगा । जिसका फैसला यह कि वह बुध से सीधा टक्कर लेगा और वृहस्पति दोनों जहान, अन्दर-बाहर दोनों तरफ का मालिक गिना गया है, इसकी प्राकृतिक शक्ति शरीर आदमी अपने आस्तित्त्व या स्वयं अपने लिए या अपने आप से सम्बन्ध या बन्द मुट्ठी में साथ लाई हुई मुहब्बत (हर दो नजदीकी व गैर नजदीकी) मदद मस अपना आप कहलाती हैं और बाहरी चाल (दूसरे दिल से सम्बन्धित दूसरे जहान में साथ ले जाने के लिए माना है) का प्रभाव संसारिक रिश्तेदारों से अच्छा संबंध, धन दौलत की आमद व खज़ाने, सन्तान खुबसूरत और सन्तान का माता-पिता को सुख, विशेषकर माता की उम्र में लाभ या आमदन, संसार में इज्जत, धर्म में साफ रूहानी व साबूत कदमी, आम वातावरण में खुशी गमी, और खन्द माथा, औरत को सुख और औरत के सुख का माता को आराम, जिसको जमाने की हवा का अच्छा प्रभाव और राजा इन्द्र की तरह लोक परलोक का मालिक और सुख लेने वाला

होगा व आंख की होशियारी से धन कमाना पड़े न स्वयं को हाथ से कमाई करनी पड़े, अपने आप लक्ष्मी पांव पकड़ती फिरे । शासन की शक्ति और दिमागी शक्ति वाला, दुखिया लॉटरी, व गौरा भी होगा । प्रभाव के लिए यह पर्वत और ग्रह हवा के नाते से याद किया गया है । जिसका रंग बसन्ती है। इन्सान हवा का पुतला है और इसी हवा से ही इसको आचारी गिना जाता है। जब यह हवा आना थोड़ा बन्द कर देती है तो इन्सान जमाने की हवा से अच्छा गिना जाता है । सही हवा ग्रहों में गुरू और फकीर जमाना एक गैंस गिने गए हैं जो चाहे जहरीली ही क्यों न हो, लाभदायक है। यह ग्रह अपने समय के बीच में प्रभाव करता है यानि जवानी में या उठनी में या जवानी में पापी के पैदा होने के बाद और जमाने की हवा लगने से पहले-पहले वृहस्पति का प्रभाव समय के बीच शुरू मध्य अक्ल वृहस्पति किसी ग्रह का दुश्मन नहीं अपना पहला अरसा यानि 8 साल हमेशा नेक फल देगा, चाहे इस समय अपने घर बैठा हो चाहे दूसरे दुश्मन के घर गया हो लेकिन इस बार इसके घर आए हुए पापी या दुश्मन ग्रह बुरा फल देगें सिवाए खाना नं0 2 के ।

वृहस्पति का प्रभावः-

यदि वृहस्पति की किसी से दुश्मनी नहीं मगर बुध व शुक्र (शादी रेखा बुध पर और भाई रेखा शुक्र पर) स्वयं दुश्मनी करतें है अपनी ही जाति का प्रभाव खराब करते हैं यानि वृहस्पति जब किसी भी दूसरे पर्वत पर चला जाए यानि वृहस्पति के अपने पर्वत के अतिरिक्त किसी दूसरे पर्वत पर वृहस्पति के निशान पाए जाए तो वृहस्पति अपना नेके प्रभाव उस पर्वत को जिसमें कि चला गया है, दे देगा । जब दुश्मन ग्रह वृहस्पति के पर्वत पर हो तो दुश्मनी का फल पैदा करेगा। मगर वृहस्पति अपने कुल समय का 8 साल पहला अवश्य नेक फल देगा। वृहस्पति पापी ग्रहों (शनि, राहू, केतू) एवं बुध के साथ पिघले हुए सोने की तरह राशि फल का होता है जिसमें हर तरह के शक का फायदा उठाया जा सकता है। पापी ग्रहों में बुध के साथ राशि फल सम्बन्धित ग्रह हर एक के अलग -अलग उपाय से नेक होगा।

(2) जब पापी ग्रहों या केतू का फल बुरा हो तो वृहस्पति का फल भी बुरा होगा।

(3) जब सूर्य या चन्द्र अच्छा न हो तो वृहस्पति की हवा अति ठण्डी तथा वर्फानी तुफान की तरह भाग्य के प्रभाव को भुला देगी या भाग्य का साधारण संसारिक प्रभाव बुरा ही होगा या हल्की किस्मत होगी ।

(4) जब मंगल नष्ट हो या मंगल बद हो तो वृहस्पति भी नष्ट होगा अर्थात् आकाश में बेल होगी जो जिस पेड़ पर चढ़े उसे नष्ट कर देगी। नजर वृहस्पति बुध साँझे वगैरह देखे बुध का विशेष संबंध वृहस्पति जब दो या दो से ज्यादा ग्रहों के साथ हो जाए या उनको देखता हो जो ग्रह कि आपस में दुश्मन हो (बुध या मंगल की वो शक्ति जो मंगल या बुध नर ग्रहों व स्त्री या नपुंसक ग्रहों के बीच होने पर रखते हैं) और न ही उन ग्रहों की वृहस्पति से दुश्मनी की शर्त होगी। तो वो इनकी आपस वाली दुश्मनी हटा देगा। यह अर्थ नहीं कि मित्रता ही पैदा करवा

देगा मित्रता पैदा करवाने वाला चन्द्र । वृहस्पति के ग्रह के प्रबल होने वाले व्यक्ति का माथा चुहे के माथे की तरह तंग सा न होगा। न ही वो दमे की बीमारी वाला या नाक कटा हुआ होगा। हाथ की पहली या तर्जनी अंगुली लम्बी होगी । मगर कटी हुई या रद्दी हो चुकी होगी तबीयत में सुधार। लापरवाह (जिसने किसी से भी मुहब्बत न की हो) की तरह का रूखापन न होगा और न ही जानवरों को कत्ल करने वाले कसाई की तबीयत का होगा । रंग शरीर व चेहरा का सोने की तरह चमकने वाला हो मगर धोखे की मर्ज वाले की तरह पीला रंग का हो चुका न होगा । आंखे मस्त शेर की तरह रोशन मगर डरावनी न होगी। लिखा हुआ जो भी हो उस में से वृहस्पति की अच्छी निशानियां साथ होंगी ।

रूहानी हाथ :-
अंगुलियों के जड़ मालूम हो न हो और नाखून वाली पोरी नौकीली सी हो तो धर्म पर मर जाने वाला हो जो किस्मत करेगी, देखा जाएगा के कथन का आदि होगा । ऐसे व्यक्ति से किसी को भी लाभ न होगा । आदत का लापरवाह माली हालत दरम्याना न हो ।

कद वृहस्पति :- (1) लम्बा हो (मर्द) नर्म दिल धर्मात्मा औरत यदि लम्बी हो तो सादा लौह, भोली तबीयत ।

अपनी अंगुली के पैमाने से (तीन अंकूल की एक गिरह, 4 गिरह, की एक बालिस्त, दो बालिस्त का हाथ, दो हाथ का एक गज़ यानि 36 इंच या 48 अंगुल का एक अंगुली 3/4 इंच मगर अपने हाथ के पैमाने से हो) कुल ऊँचाई की 1, 1/3 से गुणा करे तो जायदाद अंगुली होगी, 68 अंगुल बुरा नसीब, 52 अंगुल नेक नसीब होगा सांस (वृहस्पति) वृहस्पति सांस या हवा से निस्बत रखता है दोनों सांस केवल दांया सांस चलता हो नेक काम या देर तक कायम रहने वाली चीज का शुरू करना शुभ होगा । बांए सांस के समय किया हुआ काम मामूली सा नतीजा देने वाला होगा । कोई विशेष नेक न होगा ।

वृहस्पति हवा के रास्तों से सम्बन्धित होगा। सेहन मकान का, मकान के किसी एक सिरे पर होगा । चाहें मकान के शुरू में ही हो चाहे बिल्कुल आखिर पर चाहे दाई-बाई तरफ मकान एक तरफ मगर बीच में न होगा। मकान का दरवाजा शुमाला-जनूबा(उत्तम-दक्षिण) न होगा और हो सकता है कि पीपल का वृक्ष या काई धर्म-स्थान मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारा आदि मकान में या मकान के बिल्कुल साथ ही हो। सिर पर चोटी या बोदी की जगह के बाल अपने आप ही, बिना किसी बीमारी के खत्म हो जाए यानि उड़ जाएं और खाल सिर नंगी होकर रह जाए या वो अपने गले में हरदम माला या (पूजा पाठ के लिए गांठे दे देकर या मनके आदि इकट्ठे करके कण्ठी से बना लेते हैं) डाले रखने का आदि हो जाए तो समझ लो कि इसका वृहस्पति (स्वयं इसकी जाती किस्मत इस दुनिया के सम्बंध के लिए) समाप्त हुआ सोने का नुकसान, झुठी अफवाह बन्द करना वगैरा वृहस्पति खत्म हुआ। पगडी पर वृहस्पति के पीले रंग का तिलक, नाक का पानी खुश्क करने के बाद यानि नाक साफ करने के बाद काम शुरू करना सहायता

देगा। अगर उम्र छोटी में ही वृहस्पति के समाप्त होने का पता लग जाये तो उस दिन से नाक का पानी अपने आप बन्द हो जाएगा, वृहस्पति कायम होगा या नाक का पानी खुष्क रहने की उम्र तक ऊपर का जिक्र सहायक होगा।

खानावार :-

खाना नं0-1= सुनार कामगार, माथा पीले रंग, शेर पर चलता साधु।
खाना नं0-2 - गाए- स्थान, मेहमान निवाजी, पूजा, धन-माया चने की दाल।
खाना नं0-3 दुर्गा पूजन तहसीम दुनियावी
खाना नं0-4 वर्षा, सोना
खाना नं0-5 नाक केसर
खाना नं0-4 मृग, गीदड़, कस्तूरी, सेब
खाना नं0-7 किताबें, दमा, मेंढक, आवारा साधू, खाली हवा बुरी
खाना नं0-8 अफवाह, बेकार आदमी, फकीर का यज्ञ या दान
खाना नं0-9 पैतृक मकान, मस्जिद मन्दिर, गुरूद्वारा, चलता व उड़ता आस्तित्व गैस आदि।
खाना नं0-10 सूखा पीपल, नुकसान जर,तहसीलम समाप्त गंधक
खाना नं0-11 गिल्ट मिला गन्धक
खाना नं0-12 पीपल का हरा वृक्ष आम हवा, आम दुनियां, सांस

पीपल स्वयं वृहस्पति जब किस्मत का ग्रह हो लेकिन अपनी जड़ निश्चित राशि पक्के घर की अदली-बदली बैठा होने की राशि या दृष्टि के संबंध में कुण्डली के किसी भी खाने में (सिवाए होने की राशि या दृष्टि के सम्बंध में कुण्डली के किसी भी खाने में) सिवाए खाना नं0-10 के जहाँ कि वो शनि की सहायता का उम्मीदवार होता है। हर तरह सब कुछ अकेले का हो, कुण्डली वाले पर कभी बुरा प्रभाव न देगा। ऐसा व्यक्ति चाहे किसी दूसरे की सहायता न पाएगा। और न ही वह स्वयं किसी दूसरे की सहायता करने के ऐसा काबिल होगा बल्कि वो अकेले डण्डे की तरह के पेड़ की तरह (बांस, पहाडी़ क्षेत्र शनि की आज्ञा, खजूर चन्द्र के वीरान, खुले मैदान या सरोंबाग या बगीचे चन्द्र की राजधानी) होता हुआ भी सारी दुनिया से अलग अपनी किस्मत को स्वयं जाती मेहनत और कोशीश से कामयाब बना लेगा अगर किसी पितृ ऋण या इच्छा आवश्य ही बुजुर्गो के अहसान यानि बुजुर्गों ने जन्म दिया तो स्वयं सन्तान बनाई। इन्होनें पालन पोषन से तो बच्चों को हर प्रकार से काबिल बनाना, भीख ली तो दान देना आदि बच्चे पर बाप के अहसान हैं (या अपने बुजुर्गों के पापों के कारण ऐसा वृहस्पति अपने पहले चक्र या कुण्डली वाले की उम्र के पहले 35 साल चक्र में बेकार साबित हो तो किसी विशेष उपाय की जरूरत नही। वृहस्पति अपने दूसरे चक्र या उम्र के दूसरे 35 साल के चक्र में अपनी पहली कमी भी पूरी कर देगा।

निशानी: - स्वयं को व्यक्ति वृहस्पति के ग्रह का आदमी और इसका मकान पैतृक स्वयं साख्ता वृहस्पति के ग्रह का होगा। वृहस्पति जब हो खाना नं0 1 से 5 में तो सहायता देगा शनि को भी और सूर्य को भी। खाना नं0 6 से 11 में हो तो

केवल शनि को, खाना नं0 12 में हो तो शनि और सूर्य दोनों को ही सहायता देगा।

नकली वृहस्पति-सूर्य-शुक्र खाली हवा वृहस्पति सन्तान की उत्पत्ति, दोनों संसार का राज्य जब तक चन्द्र, सूर्य और मंगल कायम हो या राहू ऊच्च घरों में हो। वृहस्पति दोनों संसार का होगा।

वृहस्पति खाना नम्बर -1

(सुनार , कामगार पैशानी , पीले रंग, रंग, शेर नर गद्दी नशीन साधु)

घर पहला है तख्त हजारी , ग्रह फल राजा कुण्डली का
गुरू मगर न इसको चाहे, झगड़ा मनुष्य माया का
गुरू अगर घर पहले ही आवे, इल्म दोनों ले आता है
लिखना पढना अगर न जाने, भेस फकीरी पाता है
सोना भी जो सबसे उम्दा , दया व धर्म भी उत्तम हो
सेहत, दौलत, रिश्तेदार, नाम दिली का साया हो
उम्र 16 से घर को तारे, कुल सुनार बुढ़ापे है
गुरू हवा दोनों है, चलते फिरते कुल जमाने में
उम्र 27 पिता से बखेड़े, खुद कमाई करता हो
शनि चक्र से 7वें आये, पिता न उसका बैठा हो
माता इसकी शिवजी होवे, पर औरत से दूरी हो
बेटे को तो तारती जाए खुद, आकार मरती हो
(अकान्वे टेवे वाले की 51 साल उम्र पर)

केतू लड़का आसन, उम्दा बुध निकम्मा लेते हैं
घर 5वें गर शनि हो बैठा, कोठे भी उसे मन्दे हो
चक्र दूजा हो जब उसका, उम्र 49 गिनते हों
गुरू जगत् में प्रकट होगा, सुख दुनिया का लेते हैं।

शादी के दिन से ऊँचा भाग्य होगा मगर माता-पिता का साया सिर पर न होगा। अगर होगा तो इसके साथ सहायक और नेक न होगा । फिर भी होगा तो अलग घर पर पड़ता होगा, जब तक उम्र का हर आठवां साल तरक्की का न होगा । अगर होगा तो वचन या आशीर्वाद पूरा होगा । मगर श्राप बद या बददुआ से स्वयं को ही नष्ट करेगा । हर तरह से सूर्य व वृहस्पति की तासीर से भरा दोनों ग्रहों का दोस्ताना और उत्तम फल होगा । जब वृहस्पति की किस्मत रेखा होगी (मुफसिल पहले) चारों ग्रहों का (मंगल-हिरण, सूर्य-रथ, शनि-मगरमच्छ और वृहस्पति शेर) और मैढ़े का प्रभाव दोस्ताना उत्तम और उच्च होगा । दुश्मन तो ज्यादा होंगे, मगर कमजोर होंगे राज दरबार धन दौलत, लड़ाई-झगड़ा, मुकद्दमा जायदाद मकान आदि में सब तरफ अच्छा होगा। औलाद 8 साल होती रहे यानि सन्तान की उम्रों में 8 साल से ज्यादा फर्क न होगा। जब 8 साल का फर्क होगा तो आगे सन्तान न होगी। उम्र 75 साल से कम न होगी सूर्य का रथ हिरण शेर, चीता चलाएगा और हिरण की आंख निगरानी करेगी । दोस्ताने ढंग पर या काला सांप

भी सिर पर साया करने वाला शेष नाग होगा। ज्ञान वाला, तबीयत में गुस्सा होगा, मगर साफ दिल चालाकी को ज्यादा समझने वाला और रोकने वाला होगा । नजर्र हमेशा अच्छा शरीर तन्दरूस्त होगा । सन्तान का सुख होगा, रिस्तेदारों से मुहब्बत करने वाला और सुख पाने वाला होगा । हर हालत में वृहस्पति का नेक प्रभाव ऐसा पक्का होगा जो उतरेगा नहीं बल्कि बुढ़ापे में रफाया आम व दुनिया से बतौर सन्यासी नेक संबंध जरूर होगा । छोटे स्कूलों का साधारण ज्ञान पूरा दर्जा होगा, किस्सा-कोताह अगर साधरण हो तो दोनों हालतें शानदार वरना केवल दबने वाला गरीब, निर्धन साधू हो । यानि ज्ञान पढ़े तो दौलत बढ़े वरना कुछ भी न मिले।

वृहस्पति या दोस्त ग्रहों की सहायता 1 या 4 या 2 में हो तो इसका मामूली तांबा भी (सूर्य-राज दरबार का धन) सोने की कीमत (वृहस्पति) देगा।

वृहस्पति खाना नं0 2 (पक्का घर)

गऊ स्थान, मेहमान, निवाजी, पूजा माया, चने की दाल

गुरु दूजे स्थान भक्त का ग्रह मुण्ड माला माना है,
जन्म कसाई चाहे हो आसन ब्रह्मा माना है,
दुश्मन ग्रह (शुक्र या बुध) घर 6 से 11 राजा दिली चाहे कोई हो
वृहस्पति फिर भी गुरु ही होगा चाहे वो औरत ही का है
अगर गुरु न हो कोई ऐसा वही गोबर का पुतला हो
जहर बिच्छु से मर्द औरत कुल अपने को मारता हो

हथेली पर खाना नं0 2 गुरु के सामने --वृहस्पति नं0 2 और दूसरा कोई ग्रह भी 2 या 6 में शनि का पर्वत है खाना नं0 1 सांप कान बन्द किए मगर टकटकी लगाए चुपचाप होगा ।

सूर्य का पर्वत है जो खाना नं0 1 में बन्दर बना बैठा जो फूंक नहीं मारता, वृहस्पति की शक्ति हवा को ढूंढती है ।

राहू का पर्वत है खाना नं0 12 खाना नं0 2 के वृहस्पति के सामने राहू का हाथी खाना नं0 12 में बंधा हुआ होगा । राहू अपने कान लम्बे करके केतू के खाना नं0 2 के साथ नं0 12 को मिलाकर गुरु के खाना नं0 2 की जड़ में उपदेश के लिए चुप होगा । मगर वृहस्पति अब चुप न होगा यानि खाना नं0 2 के वृहस्पति पर राहू का कोई प्रभाव न होगा केतू का पर्वत है खाना नं0 6 कुत्ता, साधु, गाय लड़का, बुध शुक्र का पर्वत है खाना नं0 7 शादी रेखा । बुध स्वयं सिर रेखा। बुध की गाए व परिन्दे (तोता मैना आदि) औरत लड़की ।

मंगल 3 का खाना नं0 3 और राशि नं0 3 मिथुन तर्जनी की जड़-बुध की राशि। चन्द्र का पर्वत है खाना नं0 4 दिल रेखा माली, गुरु माता । राहू, केतू तो शुक्र में शामिल है यानि सभी ग्रह गुरु का उपदेश सुन रहे हैं या खाना नं0 9 में उपदेश था केवल ज्ञान तो खाना नं0 2 में ज्ञान का दाता वृहस्पति स्वयं उपस्थित हुआ । खाना नं0 2 में वृहस्पति होने पर दुश्मन ग्रहों का कोई बुरा फल शामिल न हो सकेगा जो खाना नं0-8-2 में हो बल्कि खाना नं0 8 के मंगल शनि की बुरी

नजर को खाना नं0 2 का मालिक वृहस्पति देख कर ही पहचान लेगा । मगर बोलेगा नहीं । इसे बुरे नजर के बसर को वृहस्पति जब खाना नं0 2 से खाना नं0 6 के मालिक केतू के यहां भेजेगा तो वहां बुध के होने से केतू बोल कर (बुध की ताकत) बता देगा । (केतू को मौत के यम नजर आ जाने पर कुत्ता बोल कर बताएगा) हाथ पर वृहस्पति के सारे निशानों का पूरा-पूरा अच्छा उत्तम फल होगा हर काम में होशियार और नेक संबंध होगा। 27 साल राज दरबार से नेक सम्बंध होगा और हर तरफ बसन्त का (शेर, पीला रंग या सफेद दही रंग मटियाला) शेराना (शेराना, मीठा व दुध का शेराना, शेर जैसा बहादुर) फल होगा । जमाने की कुल हवा सहायता देगी ऐसे आदमी की किस्मत रेखा भी अगर किसी दूंसरे पर्वत में से न गुजरे और सीधी वृहस्पति के पर्वत पर चली जाए तो सबसे अच्छी होगी । क्योंकि अकेला वृहस्पति हमेशा सहायता देगा जिसका कोई साथी न हो वृहस्पति की सहायता होगी उम्र 75 साल । इज्जत दौलत से ससुराल दूसरी दुनिया के साथी बजरिया।

उर्ध्व रेखा सहायक होंगे । सिर की श्रेष्ठ, धनश्रेष्ठ रेखा, गृहस्थ रेखा या धन रेखा आदि का अच्छा फल होगा । किस्मत का असली उद्देश्य यानि न आंख लगे न हाथ या दौलत अपने-आप हवा की तरह आए और आराम हो । अब यह ग्रह अपने समय का वास्तविकता या हमेशा 8 साल अच्छा फल अवश्य देगा । इस घर में इसके प्रभाव के समय चन्द्रमा अपने वास्तविकता के 12 साल, केतू 8 साल, मंगल बद 8 साल इसके समय की वास्तविकता, वास्तविक समय प्रभाव देंगे बाकी ग्रह अपना-अपना पूरा समय देंगे । मगर शुक्र दुश्मन है और शनि के प्रभाव में जब वर्षफल के हिसाब से शनि खाना नं0 2 में आ जाए सेहत हल्की रहे और ससुराल घर में धन दौलत की खराबियां खड़ी हो **जिसका इलाज शनि का उपाय सांप को दूध देना शुभ होगा।** इस ग्रह के प्रभाव का समय इन्सानी अस्तित्व को धन दौलत मान इज्जत सन्तान जायदाद और उम्र की तरक्की के लिए न तो हाथ से कमाई करनी पड़ती है न ही आंख की होशियारी और दुनिया की चालाकी और मक्कारी का सहारा लेना पड़ता है । अपने-आप ही सब काम बनते चले जाते हैं । अक्सर दबाया हुआ माल या किसी लाऔलाद की जायदाद ही हाथ लग जाएगी हर हालत में सब काम बड़ी आसानी और अच्छा नतीजा पैदा करने वाले हो जाएंगे और समान पालकी बहुत आराम पाएगा । स्वयं दिल का मन्दिर पूजा पाठी परहेज गार होगा । मिट्टी के कामों से सोना मगर सोने के कामों से खाक नसीब होगी । दिमागी खाना नं0 2 शुक्र से साँझे इश्क के बाद का गत्बा गुरू घण्टाल हो। सौ-सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली । ब्रह्मा और लक्ष्मी जी अपने सिंहासन के साथ होगें । इसका एक **मामूली तांबे का पैसा उसे सोने का काम देगा** । सलह कुल और बख्शीश करे तो नेकों से वो नेकी में बढ़े नहीं तो हर समय ऐसी घटनाएं हों वह कभी भी पूर्ण न हों। कर भला होगा भला, सोने की तार की तरह वो बढ़ता होगा । वरना हाथ पुराने सो सड़े (जूते) मिट्टी मल जी

आए साधु अपनी-अपनी धुनी पर (यानि दुनिया में समान राजा जनक) होगा। मगर गृहस्थ व कटवा (यानि बड़ा भारी कबीला बड़े-बड़े मकान) की शर्तें न होगीं।

वृहस्पति नं0 2, शनि या सूर्य या चन्द्र 6 दृष्टि नं0 8 खाली यानि वृहस्पति से अगर कोई रेखा निकल कर दिल रेखा और सिर रेखा के बीच शनि या सूर्य के पर्वत की तह की हद तक चली जाए तो वह इज्जत रेखा होगी।

वृहस्पति नं0 2, बुध नं0 8 तो पिता की उम्र को समाप्त करने के अतिरिक्त स्वयं ऐनी (16 से 19 में) उसका तोशा भी खराब करे, बहिन बेवा मामू नष्ट होंगे।

वृहस्पति नं0 2 केतू नं0 6 ऐसे व्यक्ति को अपनी मौत मरने से पहले ही पता चल जाएगा और मामूली एक कुत्ते की आवाज ही उसे वृहस्पति का दैवी शासन बताएगी।

वृहस्पति खाना नं0 -3 दुर्गा पूजा, तहलीम

त्रिलोक का मालिक होगा - गुरू जो तीजे बैठा हो,

यज्ञ हो तो 18 से 18 वरना तीन ही काना हो
दुर्गा पूजन भेद गिना है 3-18 होने का
नेक होवे तो सबसे अच्छा चाहे बुध हो 3,9 का

जिसे तारे-शेर की तरह मारी हुई (शिकार)जाए। मगर जिसे बिगाड़ने पर आए इसका बिस्तरा तक भी जला दें। प्रशंसा और खुशामद से इसकी सत्ता (ताकत) नष्ट और बर्बाद होगी। दिमागी खाना नं0 -17 मंगल से सम्बंधित न्याय मिजाजी, दुर्गाजी, शेर की सवारी का साथ होगा। कुण्डली में जबकि मंगल नेक हो। वृहस्पति और मंगल दोनों ग्रहों का मित्रता सम्बंध हैं और अच्छा होगा जो भाईबन्धु सगा, ससुराल नजर और सन्तान का सुख और सन्तान की उम्र से सम्बन्धित होगा और बुध की दुश्मनी केवल सन्तान व मामों से सम्बन्धित होगी मगर स्वयं वो आदमी साहब ज्ञान व अक्ल वाला होगा। 40 साल मित्रों से मुहब्बत होगी और आराम पाएगा। राज दरबार से गुजारा करेगा और नेक प्रभाव होगा जब मंगलबद हो तो ऐसा नेक प्रभाव न देगा यद्यपि युद्ध व जदल में बहादुर होगा। दूसरों का माल छीनने वाला होगा। शरीर बुझदिल होगा। 31 साल तक बीमारी का संबंध रहेगा।

वृहस्पति नं0 -3 शनि नं0 4 उर्ध्व रेखा जिसका दोस्त उसी को लूट कर अमीर हो जाए।

वृहस्पति नं0 3 शनि नं0 9 उर्ध्व रेखा उम्र और धन दौलत के सम्बंध में वृहस्पति शनि आपसी नं0 2 में तफसील देखें।

वृहस्पति खाना नम्बर 4

वृहस्पति चौथे घर हुआ समुन्द्र दूध भरा
ग्रह चारों ही नेक हों -
पानी (चन्द्र), मिट्टी (शुक्र), आग (मंगल) हवा (वृहस्पति)

ऊच्च वृहस्पति जब हुआ बढ़ता चन्द्र हो
बुध अकेला छोड़ के फल सबका अच्छा हो
दसवें बुध घर आ हुआ खोटी हवा चलने लगी ।

दुनिया को तारे जब बेड़ी अपनी डूबने लगी ।

वृहस्पति का बहुत अच्छा फल होगा, सिंहासन बतीसी । (बतीसी परियों) और राजा विक्रमाजीत के साये का मालिक होगा । उसके साये में लॉटरी व फैना सोने की कानों की चमक और धन दौलत का दरिया बहता होगा। संसारिक गृहस्थ में समय मुसीबत पाने में सीधा तैरने वाला शेर होगा । धोखा संबंध और शासन की शक्ति का मालिक होगा। चन्द्र व वृहस्पति की आपसी दोस्ती साँझी व अच्छी होगी।। राज दरबार से लाभ, तेल की उन्नति। हर तरह की शान्ति होगी। इसका मामूली तांबे का पैसा उसे सोने का काम देगा व उसका मकान आलीशान होगा । 24 साल तहसीम व ज्ञान की बरकत, बल्कि हर तरह से शान्ति होगी । लॉटरी व फनिया पायेगा । लावारिस जायदाद मिले या जुड़ा जुड़ाया धन पाएगा । संसारिक वृहस्पति के फल की निस्बत चन्द्र दैवी फल का और भी अच्छा हो । दिमागी खाना नं0 21 चन्द्र से आपसी रहम हमदर्दी।

वृहस्पति नं0 4 बुध नं0 10, 34 वर्ष उम्र के बाद अपना ही बेड़ी डूबा देने वाला मल्लाह होगा ।

वृहस्पति नं0 4 शनि नं0 2 मुंह की हवा से ही बात को पहचान लेने वाला अपनी स्वयं नम्बरदारी के समय अपनी उम्र के आखिर तक स्वयं अपने लिए अच्छी किस्मत वाला हो।

वृहस्पति नं0 4 शनि नं0 1 दोनों ग्रहों का अलग-अलग और दोनों का अच्छा फल हो ।

वृहस्पति नं0 4 शनि नं0 9 तो उर्ध्व रेखा सबसे अच्छी और सबको तारने वाली हालत का प्रभाव देगी ।

वृहस्पति नं0 4 शनि नं0 10, चन्द्र नं0 1 हर किस्मत की सवारी का सुख हो।

वृहस्पति नं0 4 चन्द्र नं0 2 सांसारिक ऊँचाई में अगर माता-पिता से बढ़कर न हो तो कम से कम उनके बराबर का तो जरूर होगा, जैसे मां पर घी, पिता पर घोड़ा होगा ।

वृहस्पति नं0 4 सूर्य नं0 10 चन्द्र कायम तो राज दरबार से सम्बन्धित जरूरी सफरों के नेक नतीजे, सीप में मोती होंगे ।

वृहस्पति खाना नं0-5

(पक्का घर) नाक, केसर का प्रभाव है ग्रह फल का

गुरु है 5 वें ले दे मानिक पत्थर में वो मोती है
छोटी नैया इच्छुक चाहे होए न रुक्कण्टी धोती है
दुश्मन 2,11,9 बैठे डूबती बेड़ी होती है
दिन गुरु कोई लड़का जन्मे शेरां की जोड़ी होती है

जब तलक न हो कोई ऐसा नींद भरी शेर होती है
लड़के पोते चाहे बैठे किस्मत सोई होती है

अब वृहस्पति का शेर अपने शेर के घर में है । वृहस्पति सन्तान से सम्बन्धित निशान पर अपना पूरा प्रभाव नेक देंगे। सन्तान की तरफ से धन व जायदाद होगा वृहस्पति नं0 5, 9 हो तो अच्छा होगा । शर्त यह कि खाना नं0 2,9,11 में पापी ग्रहों में से कोई भी न हो । सूर्य से सम्बंधित (दिमागी खाना नं0 20) इज्जत बुजुर्गी (दिमागी खाना नं0 22 अक्ल, महादशा के समय जब केतू की ओर जगह हो मामों को केतू की महादशा के समय 7 साल तकलीफ हो । सूर्य के सम्बंध से खाना नं0 5 का प्रभाव केतू पर होगा। कष्ट में मानिक पत्थर में होने की शक्ति होगी।

वृहस्पति 5 चन्द्र 9 तो किस्मत का बिलकुल प्रभाव नेक, इसके पानी की मामूली सी नाव बड़े भारी जहाजों का काम देगी ।

वृहस्पति नं0 -5 शनि नं0 9 तो वृहस्पति के समय से किस्मत का प्रभाव हो। निर्धन शनि वृहस्पति साँझा में लिखा है । अब सन्तान का बुरा फल न होगा ।

यानि वर्षफल के हिसाब से या किसी तरह भी अब अगर शनि खाना नं0 9 में आ जाए तो वृहस्पति की मीठी हवा में शनि का सांप सो जाएगा । मगर वो मुर्दा नहीं हो जाएगा और शनि के दिन की सन्तान के जन्म पर जाग कर नींव 60 साल और अच्छा फल देगा । मगर अब वृहस्पति की सम्बंधित चीजों से लाभ न होगा।

वृहस्पति खाना नं0 6

(राशि फल) मृग, गरुड़ बुरे समय केतू मका उपाय मदद करेगा

छेवें घर पाताल का गुरु छुपावे मुंह
सहायता करे न बाप की बेटा बेटी न मुंह
हवा भली उस व्यक्ति की मान सहर हो
कुल माता बुध भी बढ़े अच्छा हो
चूहे से केतू बने बुध गरुड ही हो
रोटी खाई वो मुफ्त का ऐशी पदवा हो ।

साधू अपनी कुटिया गृहस्थी हालत जैसे आम साधारण फकीर की जिन्दगी में होगा । समाधि और घूनी परलोक के विचार की लहर और दुनिया में महल गाड़ियों व दूसरा नौकर चाकर अधीनों की शान व साथ की शर्त न होगी पिता छोटी उम्र में बसने वाला होगा । पिता अगर सुखी होगा तो मान जरूर हो होगा । मगर टर्राने वाला मेंढ़क न होगा । फिर भी होगा धन की बारिश का मालिक या सोने की खानों में रहने वाला होगा । आखिरी होगा तो खुशहाल होगा पर कभी कंगाल न होगा । मगर स्वयं ऐसा आदमी सिफतों का मालिक चाहे न होगा । वृहस्पति की किस्मत रेखा की शाखें (वृहस्पति द्वारा दृष्टि वृहस्पति से 12 को या

वृहस्पति को नं0 2 से बिल्कुल शुभ होगा । इस शाख की नाम इज्जत रेखा में लिखा गया है । इज्जत रेखा नीच की गई हर दो हालत में दिमागी खाना नं0 8 केतू से साँझा-- भरोसा, मामा, मौसे, गणेश जी, चूहे की सवारी; 2 बुध से संबंधित -- फोकी आशा, गणेश जी, गरूड़ की सवारी के फैसला के लिए नाखून वाले हिस्सा पर चक्र, शख, सदफ का हाल इसकी जायदाद कुल हाथ के सारे के सारे ही गिन कर प्रभाव देखा जाएगा । जो संसारिक इज्जत और मान का नेक सरूर होगी और वृहस्पति का पूरा प्रभाव देगी वो आदमी सुखी जरूर होगा लेकिन अपने पास दौलत जमा न रखेगा । मामों की तरफ से सब खुशहाल ही होंगे । मगर स्वयं टेवे वाले के अपने लिए 40 साल दुश्मन होंगे । राशिफल का वृहस्पति या अंगुली की पौरियों पर वृहस्पति के निशानों को लिया हुआ ग्रह हो तो चन्द्र का काम देना (राशि फल का वृहस्पति) अंगुलियों पर वृहस्पति के सीधे खत 1111 आराम या हराम की रोजी के मिलने की प्रमाण हैं । यानि प्रधान तो ऐसे व्यक्ति को किसी कड़ी परेशानी के काम से वास्ता ही ने पड़ेगा और अगर किसी वजह से कहीं फंस भी गया तो न हाथ की मेहनत को करेगा न आंख से काम लेगा मुफ्त में अपने पेट की रोजी खा जाएगा या उसे पेट भरने के लिए काफी अनाज ही मिल जाएगा ।

वृहस्पति नं0 6

वृहस्पति नं0 2 तो 14 से 19 साल उम्र के बीच न केवल पिता की उम्र खराब बल्कि इसका भोजन भी बर्बाद करेंगा।

वृहस्पति नं0 6 बुध नं0 12 तो पिता की उम्र के अतिरिक्त इसका छोड़ा हुआ भोजन तक भी खराब कर देगा ।

वृहस्पति खाना नं0 7

(राशि फल का) किताबें, दमा, मेंढक, अवारा साधु, नकली वृहस्पति (शुक्र-सूर्य) खाली हवाई, बुरे प्रभाव समय बुध का उपाय करें ।

सातवें वृहस्पति सब को तारे-खुदतकड़ी की बोदी हो,
धर्म ध्यान में अपने पक्का-पर भाइयों से दुखिया हो,
सब का ही वो देवन हारा-चने का छिलका स्वयं हो गुजारा
स्वयं किस्मत का अपनी माया चन्द्र पूजन हो सितारा
बुध शनि घर 5, 6,11 या कि 12 बैठा हो
उर्ध्व रेखा का डाकू राहजन-लड़के को वो तरसता हो
40-5 (45) जब उम्र हुई तो लड़का भी आ बैठा हो
पिछले धोने सब कुछ धोकर सुख सागर का मालिक हो
लोग गए जो मेला बैशाखी- लालाजी जकड़े है घर की राखि,

भाइयों से तंग होकर कई बार कहता होगा कि भाई जी आप पैदा होते क्यों न मर गए थान फाड़ने पड़े-स्त्री धन से बरकत होगी अगर अपनी कमाई होगी तो सब मिट्टी के बराबर होगी । रमते साधू (अवारा) का साथ शुभ न होगा तो कष्ट

व खर्चा खड़ा होगा। ब्राह्मण की बोदी बारिश न मंगदी चन्द्र पूजन शुभ होगा। वृहस्पति नं0 7 की बुरी हालत का सबूत घर रती सोना तोलने वाली होगा। **जिनको पीले कपड़े में रखने वास्ते धन दोस्त शुभ होगा।** शुक्र के पर्वत पर वृहस्पति की लम्बी और टेढी लकीरें शुक्र और वृहस्पति की दुश्मनी का सबूत हो ऐसी हालत में भाईयों सें कोई लाभ न होगा। इनके दु:ख से तंग होकर इन्सान देश-परदेश की जिन्दगी बसर करेगा।

हाथ पर वृहस्पति के निशानात :-वृहस्पति का डण्डा या झण्डा हो तो धार्मिक विद्या में कुशल होगा। शुक्र का फल अपना तो अच्छा होगा मगर वृहस्पति का शुक्र जहर से हल्का और दुश्मन होगा। सांसारिक व दैवी सहायता तो जरूर होगी सफर से ज़िन्दगी अच्छी होगी मगर माता-पिता और सन्तान का सुख हल्का होगा। भाईयों से बेआरामी होगी। सन्तान सुन्दर और सुख लेने वाली होगी मगर सुख देने वाली न होगी। जो सन्तान, भाई-बन्धु, माता-पिता आदि और औरत के सुख से वंचित होगा वो सब तो सुख देंगे नहीं।

बुध की चीजें :-अगर वृहस्पति रेखा 11111 शादी रेखा को काटे तो सन्तान खराब और अगर बुध पर सूर्य के पर्वत की तरफ वृहस्पति का निशान 111 हो तो ज्ञान ज्योतिष और संसारिक अभ्यासी होगा। शुक्र ऐश की तरफ तो ले जाएगा 40 साल खूब ऐश करेगा मगर परहेजगार होगा। बुध का फल दुश्मन होगा सीधे खत बुध पर हों तो सन्तान का नाश करें सफर से जरूर जिन्दा घर वापिस आए। भाईयों से तंग व दुखिया अपने पेट के अनाज की मेहनत की जरूरी शर्त। स्त्री धन से बरकत स्वयं अपनी कमाई मिट्टी में जाए। तराजू की डण्डी की बोदी की तरह सब का बोझ सहारें, मिट्टी का माधो, चने की रोटी तोले पर माल दोलत के लिए तराजू की बोदी पर सब घर का बोझ होगा। स्वयं अपने या वृहस्पति के लिए सोने की जगह मिट्टी होगी। भूखा गरीब रोटी की पानी की तलाश में फिरे। मगर रोटी की जगह कुत्ते का मांस ढूंढे जिस तरह (ब्राह्मण की बोदी सीधा डण्डा मींह में) **यानि चन्द्र के उपाय करें या बारिश में बहाए**

वृहस्पति नं0 7 शनि नं 9 उर्ध्व रेखा, डाकू चोर।

वृहस्पति नं0 7 शनि नं0 9 तो गृहस्थ और शादी में गड़बढ़

वृहस्पति नं0 9 शनि नं0 7 गृहस्थ शादी में गड़बड़।

वृहस्पति खाना नं0 8

अफवाह, नक्कारा खल्क, फकीर का यज़दान

घर आठवां जो खोपड़ी सबकी - साधु का वो प्याला है
शनि मंगी सब को ही जलावें - गुरु का फल या निराला है
गुरू के घर जब अच्छा हो - सोने का भण्डारा हो
शनि मंगल घर चौथे बैठे - दुखिया भस्म गुजारा हो

अगर बुध नं0 9 में न हो तो लम्बी उम्र का बुजुर्गों ने ही पटा लिखवाया हुआ होगा। हर दम बढ़े परिवार और जागती हुई किस्मत का हाल होगा सिर की

खोपड़ी उड़ जाने तक वो जिन्दा रहेगा या खोपड़ी को सिर से उतार कर हाथ में लेकर चलने की हिम्मत का वो मालिक होगा। सब कुछ जला कर जंगल में मिलें एक पत्थर पर भी बिठा देवें तो भी उस दीवाना में सोने की खाने वो ढूँढ लेगा और जले जंगल में मीठा मंगल और हरियाली करेगा। मगर फकीरी का साथ न होगा मौत से बचेगा, दौलत होगी, मगर कम दौलत बीमारी का साथ जरूर होगा जब मंगल बुरा का सम्बंध हो वरना अच्छी सेहत स्वयं अपनी किस्मत में हार न होगी। बाबा चाहे उससे पहले मर चुका हो मगर बाप और स्वयं अपनी उम्र लम्बी होगी, बर्शेते कि बुध नं0 9 में न हो। अब यह घर खाना नं0 8 मारक स्थान का न होगा बल्कि ग्रह की दौलत सोना और हरदम बढ़े, परिवार उन्नति पर होगा और हर तरह से जागृति का जमाना होगा। अगर बाबा जिन्दा हो या बुध नं0 9 में हो तो उम्र लम्बी का कोई भरोसा न होगा बल्कि बाबे की गैर हाजिरी में इसकी मौत होगी या उसकी उम्र की सुरक्षा के लिए बाबे का हमेशा साथ रहना सहायक होगा। अगर बाबा जिन्दा हो मगर हरदम पास न रहे तो उसके शरीर पर हर समय सोना कायम रखाना शुभ होगा।

वृहस्पति नं0 8 मंगल नं0 4 तो ढाल डरपोक दरिद्री

उपाय- बुरे समय में वृहस्पति या शुक्र की चीजें धर्मस्थान में देने से लाभ होगा।

वृहस्पति खाना नं0 9 (पक्का घर)

घर का और ग्रह फल का, किस्मत को जगाने वाला, पैतृक मकान, मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चलता फिरता अस्तित्व

वृहस्पति हो जब 9, 12 में - घर उसके गंगा आती है
किस्मत अच्छा सबका पतन - भाव हवा में चलती है
ज्यों ज्यों पानी इसका बढ़ते-होता ब्रह्मा ज्ञानी है
नौ सिद्धि का मालिक गिनते-होती 12 सिद्धि है

प्राण जाए पर वचन न जाए बचपन से अपना धर्मी भी पाए और धर्म से इनके धन की हार न आए वरना बुरे से वह पहले ही चल जाए। अगर वृहस्पति रद्दी या बुरा हो तो नास्तिकपन होगा। वृहस्पति के सीधे खत 1111 बिल्कुल शुभ बशर्ते कि बिलकुल बीच हद पर हों अगर शुक्र की तरफ यादि शुक्र देखता हो तो स्त्री की तकलीफ और अगर चन्द्र की तरफ हों या चन्द्र देखता हो तो केवल हिस्से की सहायता से अवश्यक हैं और अगर ऐसे खत दोनों तरफ ही फैले हैं यानि शुक्र और चन्द्र दोनों की देखते हो तो किस्मत अजीब रंग दिखाएगी कभी अमीरी या दरिया दहाड़े मारेगा, कभी गरीबी की रेत की चमक भी न होगी। उम्र 75 साल होगी।

खाना नं0 9 प्रभाव वृहस्पति धर्म परोपकार तीर्थ यात्रा माता-पिता का सुख घर के अपने आदमियों की नम्बरदारी, सगे परहेजगारी, चालचलन, मंगलबद शुक्र और बुध खराब करते हैं सिर रेखा सही होने पर मंगल बद का प्रभाव न होगा।

उत्तम सूर्य में वृहस्पति का धर्म कभी भी नीच न होगा । प्राण जाए मगर वचन न जाए या धर्म न जाए और न ही धर्म से किस्मत में हार आए नहीं तो बुरे समय से पहले ही चला जाए । वृहस्पति जब उम्र की 16 साल में शुरू हो जाए तो अत्यन्त शुभ फल देगा। बुजुर्गे कि द्वारा बढ़ेगा। दरियाए गंगा का हवा में चलने की शक्ति की तरह की किस्मत होगी और सबकी किस्मत इसके दरिया का कारण होगी । दिमागी खाना नं0 9 वृहस्पति का जाती प्रभाव धर्म रूहानी ।

वृहस्पति खाना नं0 9 शनि नं0 5 तो किस्मत का नेक और अच्छा प्रभाव शनि के समय से शुरू धन दौलत अच्छा मगर सन्तान के लिए बुरा ही लेंगे (निर्धन हालात वृहस्पति शनि आपस में देखें)

सूर्य कायम तो कामयाबी और बरकत होवे, सेहत और उन्नति मिले

वृहस्पति कायम और खाना नं0 9 बुध नं0 4 तो राजयोग ।

वृहस्पति नं0 9 चन्द्र नं0 5 बुध नं0 3 तो बुरा फल होगा ।

वृहस्पति नं0 9 चन्द्र नं0 3 बुध नं0 5 तो अच्छा फल होगा ।

वृहस्पति नं0 9 शुक्र नं0 3,5 और चन्द्र नं0 5,3 तो बुरा भी शाहाना भी

वृहस्पति 9 मंगल नं0 3 तो ससुराल दौलत-मन्द और दौलत देवे

वृहस्पति नं0 9 चन्द्र नं0 3 सूर्य नं0 5 तो तीनों घरों और तीनों ग्रहों से वृहस्पति का ही प्रभाव होगा और अच्छा और उत्तम ।

वृहस्पति खाना नं0 10

नीच सूखा पीपल नुकसान धन, विद्या समाज बुरे प्रभाव के समय दरिया नदी में तांबे के पैसा का उपाय सहायक।

गुरुवार 10 वें हुआ स्वर्ग लोग का काम,
लालच में दोनों गए माया मिली न राम
घर शनि के आन करें गुरु चढाए श्वास
ग्रह न कोई चल सके केवल शनि की आस
कीड़ा गन्दा अब हुआ भरे भस्म भण्डारा
लाज गुरु की है शनि, राहू बुरा कुल संसार
नौ चौथे घर पांचवें शनि रवि या बुध,
शुक्र राहू हो मरे -केतू पाए न शुद्ध
दसवें घर का नीच वृहस्पति 4 रवि से चलता हैं
खास से हैं तो सोना बनता 4 शनि से चलता हैं
गुरु रवि दोनों से कोई घर 10वें जब बैठा हो
पांचवें घर चाहे दोस्त उनका जहरी दुश्मन होता हो

उसकी जिन्दगी में बच्चे ने सपने में महल देखें मगर जागने पर उसी टूटी हुई चारपाई और तबेला खरां में लेटे पाया । न शुरू देखा न आखिर देखा जो खूब देखा तो अफसोस देखा और लिपटी हुई इच्छा को कफन में ही ले जाते देखा 27 साल उम्र में 36 साल तक बुत गन्दा मगर 28 के बाद (जबकि भाई की सहायता

बदला मिला । किसी का तो पेशाब से कम कीमत हो। खाना नं0 10 शनि का उम्मीदवार हुआ और जाहिल हो । जब शनि की सहायता न हो जिनको बख्शीश करता था शनि के समय उनसे छीनना पडेगा । जिन को दान देता था और सूर्य के कलंक को भी धोता था,(सूर्य ग्रहण के दिन दान) उनसे अब धान (दाद) रोटी का गुजारा, चावल की दाल लेना पड़ेगा और जो अपने बाप को खुशी से बाप न कहता था अब हर एक को तू ही मेरा माई बाप हैं कहता फिरेगा मानो कि वृहस्पति की हवा बदली तो जमाने की हवा सहायक न रही । वृहस्पति के टुकडें हुये तो बस (अपना आप) आग काबू रहा न पत्त (इज्जत) पाई गई । केतू को कुत्ता भी माना हैं ओर गऊ माता भी इसलिए गाए को (वृहस्पति नीच हो) कुत्ते की गन्दगी की खुराक का आदि बना देगा । आजकल अन्देश मगर माया की कल्पना बीच वृहस्पति पिता धन दौलत, न ही जिन्दा होते दे, न ही मरने पर बाकी छोड़ कर मरें । पिता इसके लिए (शनि की सहायता जो वृहस्पति का साथ 36 साल का यानि 27 साल के बाद 36 साल तक बहुत बुरा और 28 के बाद गणेश जी होगा ।

वृहस्पति नं0 10 चन्द्र नं0 4 तो साधु को रोटी देकर आशीर्वाद की जगह जहर देने का दोष मिलेगा । नेकी करे तो राजा पाए । इसी नींव पर माना गया हैं ऐसे आदमी को अपनी किस्मत बनाने के लिए सारे दुनिया के विरुद्ध कठोर समाना करना पडेगा और वो स्वयं जाती मेहनत से कामयाब होगा । उम्र का कोई साथी सहायक न होगा यानि भिक्षु मांगी हम ने की हमदर्दी । ऐसे आदमी से साधु या किसी सवाली ने सवाल किया तो उसने खुदाई तरस उसे रोटी खाने को दी साधु ने रोटी खाकर एवज में हाए-हाए करनी शुरू कर दी कि जहर दे दिया। उल्टा उसे और रूपया पैसा देकर मिन्नत समाजत करके नाहक पुलिस के डण्डे से बचाव करवाया ।

वृहस्पति नं0 10 सूर्य नं0-5 तो शादी एक से ज्यादा।

वृहस्पति नं0 10 बुध नं0 4 तो बुरा हाल मर-मर कर बुढ़िया राग जाए लोग कहे ब्याह।

वृहस्पति नं0 10 शनि नं0 9 सूर्य देखता हो तो आग क वाक्यात नहीं वृहस्पति चन्द्र (वृहस्पति की चीजें सोना, हवाई, पीला रंग, चन्द्र की चीजें चांदी, बजाजी) के कामों से नफा मगर शनि के सम्बंधित व सामान व काम बुरा फल देगा।

वृहस्पति नं0 10 चन्द्र कायम या वृहस्पति नं0 10 सूर्य नं0 4 चन्द्र कायम तो राजदरबार से सम्बंध जरूरी सफरों के नेक नतीजे ।

खाना नं0-10 शनि नं0 9 तो चियूंटी के मुंह से आटे का जर्रा तक भी छीन लेने वाला (उर्ध्व रेखा) होगा ।

अगर कलाई से शुरू होकर हाथ को दो हिस्सों में बांटती हुई शनि पर जा

निकले, मगर मध्यमा पर न चढ़े तो उर्ध्व रेखा के नाम से स्पष्ट होगी । ऐसा व्यक्ति दुष्ट भाग्यवान होगा। कुत्ते को रोटी का टुकडा और चीटी को आटे का जर्रा नसीब न होने देगा । जवकि कोई इसकी मर्जी के विरुद्ध चलें जिसका जिक्र पर्वत शनि में होगा ।

वृहस्पति खाना नं0 11

(पक्का घर) गिल्ट, मुल्लामा, ग्रह फल का, किस्मत को जगाने वाला।

गुरु शनि वृहस्पति की 11 राशि-बुध से दोनों चलते हैं
बुध दबाया हो या बुरा-दोनों निष्फल जाते हैं

मक्खी थी (उम्दा शनि) तो शहद (मंगल) भी था - मक्खी उडी तो शहद भी न पाया, न ही मुर्ग (वृहस्पति) के बाद मुर्गी के सोने के अण्डे का पता चला और आखिर पर अपनें हाथों से ही अपने मुंह के लिए रोटी बनानी पडी । पिता की हाजिरी में सांप ने भी सजदा किया और सब का ही साया बढा मगर ज्यों ही वृहस्पति की सांस या हवा पीछे हटी मर्द की माया, साधु, गुरु राजा या दरख्त खत का साया इसके साथ ही उठ गया । मालूम हुआ और फिर वही मच्छर सताने लगा (हथेली के बीच खाना नं0 11 के करीब किस्मत रेखा के साथ ही दूसरा खत जो किस्मत रेखा के साथ ही चल रहा हो अपना भाई प्रकट करता हैं जो कारोबार में साथ मिलेगा और किस्मत जगाएगा। वृहस्पति नं0 11 दोस्त ग्रह नं0 3 यानि 12 साल तो दौलत की आगह और बाद में बीमारी हमेशा निकम्मा या खराब फल ही होगा । प्रसिद्धि परस्ती से पूरा निष्पक्ष, शहद की मक्खी शहद खाकर उड़ जाऐ का हाल । पूरा निरपक्ष दिमागी खाना नं0 15 शनि से साँझा खुददारी मगर दिमागी खाना नं0 35 चन्द्र से सम्बंधित माथा वाक्यात गुजरते हुए की याद।

वृहस्पति नं0 11 बुध नं0 3 तो न केवल पिता के सुख से खाली या मतन्जर होगा बल्कि गृहस्थ रेखा सीधी खडी माकूल आमदन फिर भी करजाई ही होगा लाभ ज्यादा मगर लालच से बर्बाद होगा।

वृहस्पति नं0 11 मंगल नं0 3 तो स्वयं और अपने ससुराल को शुभ (वास्ते धन दौलत) मगर अपने इच्छाओं (अपनें ही खानदान को) की मौतों से दुखी ।

वृहस्पति नं0 11 दोस्त ग्रह नं0 3 तो निशान वास्ते स्वयं अपनी व उम्र शुक्र की जब नर ग्रह का साथ न हो वरना लम्बी उम्र होगी ।

वृहस्पति खाना नं0 12

(घर का) पीपल का हरा वृक्ष, हवा, आम दुनिया सांस पीतल (धातू)

वृहस्पति घर हो 12 बैठ-फल का भी लेते हैं
पापी उसके घर हों बैठे-बुध शुक्र भी मरते हैं
माया को वो मौतर समझों-होता बड़ा ज्ञानी हैं
राज छोड़ बैरागी होवे-होता साधू त्यागी हैं ।

नाक का पानी शुष्क होने के दिन से वृहस्पति कायम हुआ होगा या नाक का पानी शुष्क रखने से बुरा होगी पीला तिलक शुभ होगा । माला गले में डाले रखना

हर समय शुभ होगा । चोटी या वोटी का कायम रहना या रखना हरदम शुभ होगा। खर्चा ज्यादा रखेगा, मगर धन दौलत खूब आएगा । विचार धर्म के विरुद्ध होंगे। स्वयं को 10 साल 6 माह या इसकी 10 साल 6 माह उम्र तक तकलीफ होगी मगर वो स्वयं अपने लिए समान वृहस्पति बजीर होगा शुक्र का समय 25 साल तक दोलत का आराम देगा । राहू हमेशा खर्चा खडा रखेगा जो कबीलदारी के नेक कामों में केवल होगा । मगर बचत न होगी । अक्सर पूरा त्यागी ब्रह्म गुरु होगा । दिमागी खाना नं0 12 राहू से आपसी राजदारी, पुरा त्यागी, माया पर पैशाब की धार मारने वाला, राज छोड़ फकीर होगा अपनी समाधि (परलोक के विचारों की लहर या गृहस्थियों के भले की सस्ती और धुन) में होगा । जिसके सताने से आम और सेवा से आशीर्वाद होगी । राहू की हर दो हालत (ऊच्च-राहू -वृहस्पति दो ज़हान का मालिक । नीच राहू -वृहस्पति केवल संसारिक) गुरु की हालत का फैसला करेगी ।

वृहस्पति नं0 12 शनि नं0 9 तो माया की मुहब्बत से दूर चाहे माया ज्यादा उर्ध्व रेखा की या माया पर पेशाब की धार मारने होगा । अगर कलाई से शुरू होकर ऊपर मध्यमा पर जा चढ़े तो राज छोड़ फकीर हो जाए । माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा । त्यागी मगर गरीबी का मारा हुआ फकीर न होगा ।

सूर्य

रंग गंदमी, बुध के गोल पहिए, चन्द्र की गोलाई के समुन्द्री घोडो वाला सूर्य का रथ, न खडा और न ही पीछे हटा, किरणों से अन्धेरे का नाश और कुल ब्राह्मण्ड़ की आंख का मालिक हवा, सूर्य की हर रोज आने जाने की तपस्या की हद मालूम न होगी । विष्णु भगवान जी

सूर्य तपस्वी राजा

रवि गुरु दो का इकट्ठा, अंसर मिला दो जुदा[४] ही है।
गुरु पिता गर रवि के होवे, रवि पिता स्वयं शनि का है ।
रुह संसार का गुरु जो मालिक, दुनिया सब रवि का है ।
साँस प्राणी गुरु का हो, ढांचा पर स्वयं रवि का है ।
गुरु अगर आसमान गिना तो, रास्ता रवि आसमान का है ।
हवा रोशनी मिले जो रहते, आकाश बिना बुध दो का है ।

पहलू है इसके लिए सूर्य के बिना किस्मत एक अंधेरी चीज है और इसके दूसरे साथियों का दम घोंटने वाली होगी या यूं कहो कि सूर्य के बिना अन्धेरे की जिन्दगी हैं । अगर पर्वत कायम न हो या सूर्य

[४]जब वृहस्पति -सूर्य दौनो इक्ट्ठे हो तो दो का प्रभाव अलग अलग अच्छा होता हैं।

प्रगट दुनिया बुध जो होवे, ब्राह्माण्ड़ बढ़ा आकाश का है ।
फटे रोशनी हवा से दुनिया, अलग-अलग घर दो का है ।
बच्चा हुआ जब राजा दुनिया, गुरु शरण उस होता है ।
रवि बैठा जब 1-5-11, ग्रह बालिग सब होता है ।
घर 1-5 जब रवि हो बैठा, तलवार धारी दो होती है ।
खुद कभी न राशि फल का, ग्रह सब ही को दबाता है ।
1-5 बैठे हों राशि फल के, शत्रु भी दोस्त बनता है ।
रवि नीच न खुद कभी होवे, असर साथी[2] मंदा होता है ।
ग्रह दोस्त अपना मदद पावे, खुद ही जब वह मरता है ।
शत्रु ग्रह गर साथी होंवे, घर बैठकर[3] उड़ जाता है ।
कुण्डली मगर घर पहले होवें, असर रवि खुद मंदा है ।
अंग शरीर या आँख हो दाई, हाथ सपाट भी होता है ।
बुध मंगल या पाप की हालत, फैसला कुल रवि होता है ।
सूर्य रोशनी मंगल किरणें, ग्रहण राहु केतू है ।
बुध आकार तो तेज गुरु का, चमक चन्द्र रवि देता है ।
रवि शनि दो इकट्ठे बैठे, झगड़ा नहीं कभी करते है ।
बजह किसी गर दोनों झगड़ें, हत्या शुक्र की करते है ।

सूर्य का सितारा चमकता हुआ सूर्य या उच्च सूर्य होता हैं ओर सूर्य रेखा बादल तले छुपा सूर्य (सूर्य का घर का हुआ करता हैं, सूर्य के चक्र से मुराद सूर्य बुध साँझा होगे या सूर्य खाना नं0 5 होगा और अर्ध का अलग प्रभाव सारी उम्र ही न होगा । ऐसे व्यक्ति का बुढ़ापा बहुत अच्छा होगा मगर मौत अचानक होगी। सूर्य के चक्र और सितारा के प्रभाव में फर्क यह है कि चक्र का प्रभाव दर्जा दस सितारा से कम होगा । सितारा हमेशा अपने लिए शुभ होगा।

सूर्य रेखा जिस तरह शाखदार होगी सूर्य की किरणों की शक्ति और प्रभाव की मजबूती ज्यादा होगी । सूर्य ने गर्मी गुस्सा और तेज बख्सा है जो नेक सूर्य वाले ने स्वयं हाथ से कमाया है और बाप का साथ दिया होगा सूर्य अपने शरीर से दूसरा की सहायता करने की शक्ति का मालिक है और रोशनी माना है सर्दी (चन्द्र) गर्मी अपनी सूर्य की शक्ति (लाल मंगल) और खाली जगह में हर समय उपस्थित होगा। बुध का आकाश इसके जरूरी या उसका साथ हो) गणेश जी या) सबके पूजने की जगह बनते देखा । अक्सर मर मर कर बुढ़िया राय गाए लोग कहें उसे ब्याह । उसने गरीब की तरह खाकर रोटी दी तो पुलिस के डण्डे की मार उसका

---

[2] ऐसा धर्मात्मा जिसके बराबर दूसरा न हो ।

[3] बैठा होने वाला घर की चीजों पर शुभ प्रभाव समाप्त ।

वृहस्पति से न मिला यानि सूर्य रेखा व किस्मत रेखा आपस में न मिले तो खुदकशी होगी बाजारी कीमत पूरी वसूल न होगी सूर्य की सारी कमाई स्वयं पैदा कर दौलत व जायदाद होगी व वृहस्पति की आस रखेगा, न कि शनि की सहायता ढूँढेगा । यानि न वृहस्पति माता-पिता और न शनि बेटे का भरोसा रखेगा। जबकि स्वयं अपना आप घिसाएगा और धन-दौलत पाएगा । लाल तांवे की तरह (यह सूर्य का रंग है) जितनी चोटें खाएगा उतना ही बढ़ता चला जाएगा । सूर्य कायम वाले को जितना कोई दबाएगा वो इतना ही उच्चा हो जाएगा । यानि उसको नष्ट करने की गर्ज से मारने वाला स्वयं ही नष्ट हो जाएगा ।

अवधि प्रभावः- सूर्य उत्तम प्रभाव के समय चन्द्र, शुक्र और बुध का कभी बूरा प्रभाव न होगा । चन्द्र व शुक्र अपना प्रभाव देंगें मगर बुध सूर्य के साथ चलने के समय का नसफ(आधा) अरसा 17 साल तक बिल्कुल चुप रहेगा, बाद में अपना प्रभाव शुरू करेगा । बाकी ग्रह पूरा-पूरा समय शनि अपने अरसा का 2/3 या 24 साल स्वयं उसकी अपनी दौलत और आमदन पर और 1/2 या 18 साल माता-पिता की आमदन पर प्रभाव करेगा । यानि अगर 22 से शुरू हो तो अपना अच्छा या बुरा जो भी प्रभाव करेगा सूर्य के प्रबल ग्रह वाला अंगहीन (शरीर का कोई अजू या हिस्सा कटे हुए वाला) न होगा । इसका रंग गंदमी आंखे शेर नर की तरह रोशन मगर डरावनी न होंगी । कद इसका लम्बा, शरीर पतला (इकहरे शरीर वाला मगर दुबला सा नहीं) हर तरह की मुसीबत सहन करने वाला और मजबूत होगा । लम्बा चेहरा कसादा माथे वाला होगा । रफतार गुफतार में दायां हिस्सा शरीर का पहले चलने वाला होगा । शक्ल व स्वभाव से प्रकट होगा भोला भाला सा होगा मगर अन्दर से दबी हुई आग की तरह गर्म होगा । चाल चलन (कामदेव) का पूरा नेक होगा । शराब से दूर रहने वाला और शरारत का जवाब देने वाला होगा । हर बात में पहले हिस्सा लेने वाला होगा । निम्नलिखित बातों का भी साथ होगा :-

सपाट हाथ अंगुलियो के बीच जोड़ मोटे और सिरे उनके गोल हों तो ऐसा आदमी मेहनती इरादों का पक्का होगा जिस बात पर अड़े पीछे न रहेगा । सूर्य रोशनी के रास्ते बतलाएगा । मकान का दरवाजा निकलते सूर्य की तरफ होगा और सेहन मकान के बीच मे होगा । आग का संबंध आंगन में होगा और हो सकता हैं कि पानी का संबंध निकलते समय(मकान के बाहर निकलते हुए) दांए हाथ पर सेहन में ही हो इधर उधर किसी और जगह न होगा । सन्तान का फल अच्छा और किस्मत स्वयं अपनी का प्रभाव चढ़ते सूर्य की तरह अच्छा होगा । सूर्य की लाल गाए या भैंस का मर जाना या घर से चली जाना सूर्य समाप्त हुआ । चन्द्र की-घर से दूध चला जाए । घोडे की मौत, तालाब, सूर्य की इशयाः- शारीरिक (शरीर के अंग या हिस्से) का हरकत करने या कराने की शक्ति जाती रहे या इसके मुंह से हर समय थूक जारी होता रहे। सूर्य की सहायता के लिए मुंह मीठा डाल कर पानी के चन्द्र घूंट पी कर काम शुरू करना शुभ होगा। अगर बचपन से ही पिता चल बुल जाए तो शुरु की उम्र से ही यह बात सहायता देगी। सूर्य की खानावार

इशया:- (खाना नं0 1) समय, दांया हिस्सा या नमक सफेद (2)गन्दम (3) दिन की सन्तान, भतीजे (4) दाई आंख की पुतली भुआ का लड़का, भाई (5) इकलौता लड़का, लाल मुँह का बन्दर, (6) गन्दगी रंग पांव की खराबियां, घेवता, (7) रूहानी नक्स, गाए लाल गाए सफेद बुरा प्रभाव, गाए स्याह सहायक गाए भोडी शुभ (9)भैस, सिलाजीत (10) सुर्ख तांबा (11) भूरी च्यूंटी, दिमागी खराबियां

नीच के ग्रह ग्रह अरसा प्रभाव का समय शुरू मध्य अन्त सूर्य 2 साल
शुरू सूर्य चन्द्र मंगल का प्रभाव होगा

नकली सूर्य -----शुक्र-बुध

सेहत का मालिक सूर्य निकलने का समय बच्चे के माता के पेट मे आने के समय या दिन से ही शुरू गिन सकते हैं, लेकिन आम दुनिया में सूर्य का इस दुनिया में प्रकट होने का समय और बच्चे का पैदा होने या इस दुनिया की हवा में प्रकट होने से कहते हैं। इस तरह बाज औकात नौ महीने का ही अन्तर पड़ जाया करता हैं जिसकी वजह से सारे ही ग्रह अपने निश्चित अवधि पर प्रभाव करने में धोखा दे जाया करते हैं प्रभाव तो जरूर करते हैं। लेकिन निश्चित समय या दिन का अन्तर हो जाता है इस बात की दुरूस्ती इसलिए भी जरूरी हैं कि सारे ग्रह कब बालिग हो देखना जरूरी होता हैं। इसलिए कुण्डली में जहां सूर्य वाक्या हो वहां से खाना नं0 9 तक जितने घर आये देखें कि इनमें कौन-कौन से ग्रह वाक्या हें। उन घरों के ग्रहों की आम अवधि का समय सूर्य निकलने की अवधि में अन्तर का गणित होगा। आगे पीछे होने के वाक्य के शक दूर करने के लिए एक दो तीन हद बारह तक के कम्र से कुण्डली के खाने गिने जायेगे (खाना नं0 9 से पहले घरों में यानि खाना नं0 1 से 8 सूर्य हो तो कहेंगे कि सूर्य खाना नं0 9 से पहले है अगर 10 साल 12 में हो तो कहेंगे कि सूर्य खाना नं0 9 के बाद हैं ग्रहों की अवधि वृहस्पति साल, सूर्य 2 साल आदि कुल 35 साल तक होगी। अगर सूर्य खाना नं0 9 से पहले ही हो तो बीच घरों के ग्रहों की अवधि जमा करेंगे यानि सूर्य का अन्तर इतना (जमा किया जाने वाला सूर्य खाना नं0 9 के बाद के घरों में हो तो खाना नं0 9 और 12 के बीच के घरों में जहां भी सूर्य हो उस घर और खाना नं0 9 के बीच के घरों के ग्रहों की अवधि घटायेगा यानि सुर्य का प्रभाव इसके आम प्रभाव (जन्म दिन) के समय से इतना समय पहले ही शुरू हो जाएगा।

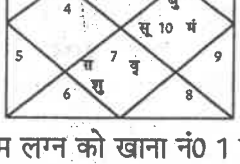

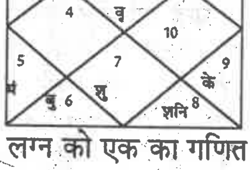

जन्म लग्न को खाना नं0 1 मानकर जन्म लग्न को एक का गणित मानकर

उदाहरण नं0 1 में खाना नं0 9 के बाद सूर्य हैं खाना नं0 10 में जिस में मंगल बुध और सूर्य वाक्या है । बुध के 2 साल, मंगल के 6 साल कुल 8 साल का अन्तर हैं यानि सूर्य आठ दिन या महीने ज्यादा-ज्यादा प्रभाव देने लग जाएगा, जन्म दिन से पहले ही । उदाहरण नं0 2 में सूर्य हैं खाना नं0 2 में यानि नं0 9 और खाना नं0 2 के बीच राहू 6, शुक्र-3, मंगल के 6 साल कुल 8 साल का अन्तर हैं यानि सूर्य आठ दिन या महीने ज्यादा ज्यादा से प्रभाव देने लग जाएगा, जन्म दिन से पहले ही। उदाहरण नं0 2 में सुर्य हैं खाना नं0 2 में यानि नं0 2 में यानि नं0 9 और खाना नं0 2 के बीच राहू6, शुक्र-3, मंगल-6, बुध-2, शनि-6, चन्द्र-1 और केतू-3 कुल 27 दिन या महीने ज्यादा से ज्यादा जन्म दिन के बाद सूर्य का प्रभाव प्रकिट होगा । अवधि गिनते समय सूर्य की स्वयं अपनी अवधि 2 का गणित नहीं गिनते । मगर खाना नं0 9 में जो ग्रह है इसकी अवधि शामिल कर लेते हैं जितना समय सूर्य अन्तर देगा इतना ही समय बाकी सब ग्रह अन्तर देकर जन्म दिन से पहले या बाद में प्रभाव देना शुरू करेंगे । अगर सूर्य को बाप (कुण्डली वाला व्यक्ति) माने तो (कुण्डली वाले) का हाल जबकि सूर्य के साथ स्वयं सूर्य के दोस्त ग्रह हों, अपने बाप से अच्छा होगा । लेकिन अगर सूर्य के साथ दुश्मन ग्रह हों तो ऐसे व्यक्ति (कुण्डली वाले) की सन्तान का बुरा हाल और बाप (कुण्डली वाले) के लिए सन्तान की किस्मत कोई अच्छे प्रभाव की न होगी । अपने दुश्मन ग्रहों का साथ और संबंध स्वयं दुश्मनों के बुरे प्रभाव का फल कुण्डली वाले की सन्तान पर किस्मत में शामिल होगा । स्वयं सूर्य जब दुश्मन ग्रहों की राशि या उनके पक्के घर हुआ तो जिस खाना नं0 में हुआ उस खाना से सम्बन्धित चीजों पर वही प्रभाव बुरा कर दिया जिस खाने में सूर्य और वो दुश्मन ग्रह बैठे थे । लेकिन अगर सूर्य के साथ सूर्य का सहायक और दुश्मन ग्रह भी बैठा हो तो दुश्मन ग्रह का बुरे प्रभाव की बजाए इसकी कुण्डली वाले पर बुरा हो और इस ग्रह की सम्बन्धित चीजों पर बुरा कर दिया हो। जो चीजें उस ग्रह से सम्बन्धित है और जो ग्रह सूर्य का सहायक हैं यानि अपनी बला सूर्य पर न डाल कर इस सहायक पर डाल दी । सूर्य छुपता और गरूब होता है मगर आज तक किसी से न कहा कि किस घर में छुप कर रात गुजारता है सूर्य के न होने के समय का नाम रात (शनि, राहू, केतू पापी ग्रहों के दौरा का समय) या यूं कहो कि सूर्य जिस जगह नहीं वहां अंधेरा ही अंधेरा है । जहां आग नहीं है वहां ठण्डक है । केतू, शनि, राहू व शुक्र-सूर्य के प्रभाव में खराबी करते हैं यानि स्वयं अपने विचार की गुलामी राहू से बदनियती आदि शनि से इश्क व मुहब्बत या मिट्टी की पूजना आदि शुक्र से, कानों का कच्चा होना या पांव की नक्ल व हरकत करना केतू से खराबी के वास्ते हुआ करते हैं जो सबके सब सूर्य के प्रभाव वाले को बर्बाद करते हैं जिस तरफ सूर्य होगा जमाना की सब हवा उसी तरफ का रूख कर लेगी या जिसका सूय ऊच्च होगा जमाना की सहायता उसके पांव ही पकड़ेगी और मंगल की लाली उसे ही लाल कर देगी सूर्य के सामने चन्द्र (दिल) भी भिखारी हो जाएगा या सूर्य से रोशनी लेगा। जब दुश्मन ग्रह सूर्य से पहले घरों

में हो तो सूर्य दुश्मन ग्रह के बुरे प्रभाव से पहले बच सकता यानि दुश्मन ग्रह का प्रभाव कुण्डली वाले पर बुरा होगा। जब दुश्मन ग्रह बाद के घरों में हो और सूर्य पहले घरों में तो दुश्मन ग्रह का प्रभाव बाद के घर की चीजों पर जिसमें कि दुश्मन ग्रह है, बुरा होगा : मगर कुण्डली वाले पर न होगा। खाना नम्बर 1,5,11 में जन्म कुण्डली के सूर्य होने से सारे ग्रह बालिग गिने जाएंगे और सूर्य की निगाह के बाद सूर्य के सारे दुश्मन ग्रह अपने-अपने समय में टकराव (शत्रुता का प्रभाव) पैदा करेंगे और न केवल सूर्य के अपने प्रभाव में खराबी देंगे लेकिन वो सारे दुश्मन ग्रह अपनी-अपनी और अपने-अपने खाना नम्बर की चीजों का जिस-जिस खाने में कि वो कुण्डली में बैठ हो बुरा प्रभाव देंगे। इसलिए समय से पहले ही बुरे ग्रह का उपाय कर लेना जरूरी होगा। सूर्य का ऐसा टकराव कुल 45 साल उम्र तक हो सकता है इस जगह सूर्य के दुश्मन शुक्र, शनि, राहू, केतू से ही शुभ होगी। सूर्य किसी सवाली को मिट्टी की भिक्षा देगा और अगर देगा तो चान्दी और मोती देगा। सूर्य रेखा कभी अंगुलियों पर नहीं होती, केवल हथेली पर ही होती है सूर्य कभी राशि फल का नहीं होता जबकि हमेशा ग्रह फल का होगा। सूर्य जिस राशि में बैठा हो उस राशि का मालिक ग्रह या उस राशि नम्बर के मालिक ग्रह का साथी ग्रह राशि फल का हो जाएगा। ऐसी हालत में उस राशि फल में हो जाने वाले ग्रह के लिए उसके दुश्मन ग्रह से बचाने के लिए उपाय करें। क्योंकि सूर्य स्वयं तो कभी बीच नहीं होता जबकि अपने दुश्मन ग्रह को नीचे दब जाने वाले ग्रह का फल खराब कर दिया करता है खाना नम्बर 1 व 5 में बैठा हुआ सूर्य हर दोस्त व दुश्मन ग्रह (केवल सूर्य के स्वयं अपने ही दोस्त या शत्रु) की सहायता करे या करता है ऐसी हालत में राशि फल का सवाल या किसी उपाय की जरूरत न होगी। मगर कुण्डली वाले की सन्तान को दुश्मन ग्रह के बुरे प्रभाव सें नहीं बता सकता। महादशा के समय खराब हो चुके, नष्ट या बर्बाद या जहरीले होए हुए ग्रहों के प्रभाव के लिए जो सूर्य के सम्बंध से राशिफल के हो गए हों स्वयं सूर्य का ही उपाय नेक प्रभाव पैदा करेगा जिस पर वो बर्बाद शुदा ग्रह सहायक हो जाएंगे। लेकिन अगर सूर्य का स्वयं अपना ही प्रभाव दूसरों पर बुरा हो रहा हो तो सूर्य के दुश्मन ग्रहों को नेक करने का उपाय करें यह हालत खाना नं0 6, 7 में सूर्य होने की होगी जहां कि सूर्य राशि फल की बजाए दान देने को पूरा भण्डारी होता है। इन घरों में सूर्य होने पर "बुध" का किसी उपाय से नेक कर लेना सहायक होगा। अगर खाना नं0 7 में सूर्य हो और शनि का टकराव आए तो चन्द्रमा के नष्ट करने से सूर्य की सहायता होगी।

सूर्य खाना नं0 1

(पक्का घर, उच्च) दिन का समय, दांया हिस्सा या आंख

बैसाख का सूर्य घर पहले में, राज जिस्म रुह उमदा हो।
तेज देवे हर निर्धन को वह, पर उपकार चवन्नी हो।
मात पिता खुद उमर हो लम्बी, पर औलाद हो गिनती की।

आँखों पर वह निश्चय करेगा, परवाह न हो सुनने की ।
सतयुग का वह आदमी होगा, किस्मत खुद बनाई हो ।
चोंटों से वो हरदम डरता – बेशक बहिन (बुध) न भाई (मं) हो

शनि का 1/4 हिस्सा बुरा प्रभाव शामिल होगा । बाकी एक बचने वाले मकान की हैसियत का वो राजा होगा । लक्ष्मी को वो स्वयं पैदा करेगा । मगर स्वयं लक्ष्मी का दिलदाह न होगा । ऐसा चमका तो क्या चमका अगर वो स्वयं अपनी रूह पर भी न चमका यानि परोपकार और सेवा साधन के बिना अब सूर्य निष्फल होगा और कुछ न होगा । अगर देगा तो आग देगा । मगर खाक तो फिर भी न देगा। अक्सर गन्दे इश्क और बुरे कामदेव से ज़रूर दूर होगा । अगर सूर्य खाना नं0 1 में हो और खाना नं0 7 खाली हो तो सूर्य का अच्छा फल पैदा करने के लिए शादी जल्दी करनी शुभ होगी रूहानी शक्ति-दिल की सच्चाई, धर्म-इन्सान, संसारिक ईमानदारी (पैसा थैला में) स्वयं जाती कमाई से दौलत जमा व जायदाद पैदा करेगा। रूपये का 1/4 परोपकारी हो मन्दिर कोई धर्म अर्थ काम पुरानी रस्मात को चलाने वाला होगा । ज्ञान व अक्ल का साथ रहे सन्तान नेक हो, औरत का सुख हो, माता-पिता की उम्र का लम्बा साथ हो, चौपाया का सुख रहे, स्वयं अपनी उम्र लम्बी (१० साल), राज दरबार से संबंध ज्यादा समय ओर नेक हो। अगर सूर्य रेखा और किस्मत रेखा न हो या आपस में न मिलें तो सब कुछ नाश हो खुदकशी तक नौबत आए दुनिया का लाभ (दौलत की आमदन) राज दरबार से नेक संबंध व गुजरात अच्छा संसारिक शान, हर जगह, शरीर और सेहत अच्छा, आखिरी समय तक सारे इजाए-शारीरिक कायम, साहब इमताक (जायदाद वाला) सफर का संबंध और सफर से दौलत, रूहांनी शक्ति का नेक प्रभाव दुनिया का ईमानदार (पैसा थैला का संबंध) स्वयं सच्चा और सच्चाई पसन्द (पहचान रंग-नस्याह होगा या आधी रात के बाद सुबह की तरफ की होगी। नेकी के काम में सबसे आगे होगा । गरीबी के सहायक इश्क व मुहब्बत से नुकसान होगा । माता-पिता का साया ज्यादा और ज्यादा देर तक होगा सन्तान की जायदाद थोड़ी या गिनती की ही होगी । तबीयत में सांप का गुस्सा होगा यानि सुनने की बजाए देखने पर भरोसा करेगा । दिल रेखा के सही हालत में होने से शुक्र का बुरा प्रभाव न होगा । संसारिक कामयाबी व वरकत और स्वयं पैदा कर दौलत सूर्य की सहायत होगी । सूर्य से अगर रेखा निकल कर सिर रेखा से जा मिले तो अच्छा दिमाग जिसमें सूर्य का सारा नेक प्रभाव मौजूद हो ।

सूर्य नं0 1 या सूर्य मय दोस्त ग्रह मंगल, या चन्द्र या वृहस्पति तो लक्ष्मी स्वयं पैदा करे, पैदा की कराई मिलने की परवाह न होगी संसारिक कामयाबी व बरकत तो सम्भव मगर वो स्वयं अपनी आखिरी उम्र और आखिरी समय में निर्धन न होगा और अगर होता तो स्वयं अपनी बदचलनी या बुरे कामों से बर्बाद होगा । मगर जमाना या अकल के धोखे और फरेब से वो कभी अच्छा हाल न होगा जब होगा रोशन सूर्य की तरह अच्छा हाल होगा कुण्डली में मंगल नेक हो तो मंगल व सूर्य का नेक प्रभाव अच्छा हो । अगर मंगलबद हो तो मंगलबद के बुरे प्रभाव का

साथ होगा । मगर सूर्य का अच्छा प्रभाव प्रबल होगा और राहू केतू का बुरा प्रभाव जब वो दोनों बुरे या नीच हों मामों पर होगा स्वयं रियाजी दान व ज्ञान ज्योतिष (राहू दिमागी हरकत से बुध को साथ) जानने वाला होगा।

सूर्य खाना नम्बर 2

गन्दम बाजरा

जेठ महीने सूर्य दूजे, माया शेर सवारी हो ।
त्रैलोकी का सुख सागर तो, उम्र का इच्छा धारी हो ।
स्वयं चमके सब को दमका दे, घर 6वाँ भी बढ़ता हो ।
सख़ी हो तो बढ़ता जावे, भिक्षा से वह गलता हो ।
झगड़े औरत धन ज़मीन, बादल का अंधेरा हो ।
मंगल पहले चन्द्र 12, आलसी निर्धन दुखिया हो।

जिस तरह इस की तह में पानी बढ़े, सूर्य का रथ और भी ऊँचा हो कर चले लेकिन जिस तरह इस की तरफ पानी बढ़े, वह कागज़ की तरह गलता जाये या अगर वह शुक्र के झगड़ों से दूर रहे तो हरदम बढ़े । नहीं तो आंधी के बादलों से स्वयं अपने लिये ही अंधेरा कर ले । मगर सवारी और चौपाया का सुख जरुर साथ रहे। अक्सर महजबी रहनुमाए और संसारिक मुखिया भी होगा और शेर पर लक्ष्मी सवार होगी जिससे लोक परलोक का सुख होगा स्वयं धनवान, मन्दिर कुएँ और धर्मार्थ मकानात बनावएगा। पुरानी रसोमात का पसन्दीदा, सरदार फौज व अच्छा प्रसिद्ध होगा, ससुराल खानदान व अपने गृहस्थी (अपनी औरत के संबंध बाल-बच्चे आदि). साथियों के लिए अगर पानी में सीधा अपनी अस्तित्व देने वाला अपनी तरह के रिस्तेदारों मामों आदि के सूर्य की तरह चमकीली किस्मत का मालिक बना देगा। अगर जिसका स्वयं चमके सबको चमकाए, मगर दोनों तरफ की स्त्रियों (शुक्र) पर मेहरबान न होगा यानि औरतें उसके घर व खानदान में कम ही होंगी ।

सूर्य नं02, मंगल नं01, चन्द्र नं0 3 दरिद्री आलसी निधर्न हो ।

सूर्य खाना नं0 3

(दिल की सन्तान, भतीजे)

असाढ़ महीने सूर्य तीजे, मंगल बुध बलकारी हो ।
चन्द्र से गर धरती घूमे, फिर भी तख़्त हज़ारी हो ।
बुध बुरे तो मामों बुरे , बुरा राहू केतू हो ।
पर बुरा न ज्ञान ज्योतिष, या कि ज्ञान रियाज़ी हो ।
मंगल भी गर बुरा हो, बुरा शुक्र कभी न हो ।
मंगल बुरा, मंगलीक भी हो, फिर भी डरके चलता हो ।
जमीन जकद-बजबद (चन्द्र) पर न जबद मह (सूर्य) व मंगल
गर बजबन्द माह बजबन्द पर न जबन्द बुध की जंगल
(जब चन्द्र बर्बाद या नष्ट हो धन दौलत खराब चोरी आदि हो ।)

आमतौर पर अब चन्द्र का फल रद्दी न होगा। माता की उम्र लम्बी बशर्ते कि स्वयं चन्द्र नष्ट न हो बाप दादा गरीब हों तो चाहे , पड़ौसी मरे तो सम्भव मगर वो स्वयं अपनी आखिरी उम्र और आखिरी समय में निर्धन न होगा और अगर होगा तो स्वयं अपनी बदचलनी या बुरे कामों से बर्बाद होगा। मगर गर्दिश जमाना या अकल के धोखे और फरेब से वो कभी आसूदा हाल न होगा जब होगा रोशन सूर्य की तरह अच्छा हाल होगा कुण्डली में मंगल नेक हो तो मंगल व सूर्य तासीरों का नेक प्रभाव अच्छा हो। अगर मंगलबद हो तो मंगलबद के बुरे प्रभाव का साथ होगा। मगर सूर्य का अच्छा प्रभाव प्रबल होगा और राहू केतू का बुरा प्रभाव जब वो दोनों बुरे या नीच हों मामों पर होगा स्वयं रियाजी दान व ज्ञान ज्योतिष (राहू दिमागी हरकत से बुध को साथ) जानने वाला होगा।

सूर्य खाना नम्बर 4,

दांई आंख की पुतली, भुआ का लड़का भाई

सावन सूर्य चौथे गिनते, मेघ पानी चन्द्र का घर ।
पानी बरसे पर्वत जंगल, बुध शनि दोनों के घर ।
रवि मगर स्वयं जला जलाया, सहायता चन्द्र की पाता है ।
शनि ने जो हों पत्थर फूंके, लाल रवि कर देता है ।
मंगल राजा घर दसवें का, शनि नज़र का मालिक है ।
मंगल स्वयं अब आँख दे अपनी, रवि को शक्तिशाली करता है ।
नहोराता या अन्धा आधा, टेवा ऐसा होता है ।

इजाद कामों जब और लाभ परस्पर का मालिक होगा । समुन्द्र की सीप में मोती पैदा करेगा और अगर सीप में कीड़ा भी पड़ जाए तो भी कीमत देकर जाएगा रेशम का कीड़ा अगर स्वयं नष्ट भी हो जाए तो फिर भी बाकी रेशम ही छोड़ कर जाएगा यानि अगर स्वयं ऊँचा इकबाल न हो तो अपने पैरकदार या पीछे रह जाने वालों को तो जरूर ऊँचा ही करके जाएगा । सूर्य अच्छा प्रबल होगा । चन्द्र का प्रभाव भी अच्छा होगा मगर ज्यादा प्रकट सूर्य का होगा । राज दरबार द्वारा अगर चन्द्र के पर्वत के ऊपर के हिस्से में चन्द्र के सितारे का निशान हो तो बजाए नई बात के निकालने वाला या मौजब हो जिससे उसे फायदा ज्यादा हो मगर वो काम उसके बुजुर्गों ने न किया होगा । चन्द्र के पर्वत पर चन्द्र से सूर्य का रूख रखने वाली सारी रेखाएं सफर जरूरी प्रकट करती है समुन्द्र की सीप में मोती पैदा करेंगी लेकिन अगर कोई मंगलबद में जा निकले तो 15 साल ही तंगदस्त होगा । सूर्य से दिन रेखा में शाख से दिन की शक्ति में सूर्य का नेक प्रभाव होगा । जरूरी सफर जब चन्द्र के पर्वत पर सूर्य रेखा या खत वृहस्पति का वाक्या हो और इसका रूख सूर्य की तरफ हो तो जरूर सफर होंगे । ऐसा सफर समुन्द्र पार या बहुत जरूरी सफर होगा जिसमें राज दरबार के बहुत जरूरी काम से संम्बन्धित होंगे । अगर इस खत का रुख बुध की तरफ हो तो हर रोज के कारोबार में बहुत लाभ होगा । ऐसे खत से सफर का नेक प्रभाव उसी हालत में

गिना है जब यह खत केवल चन्द्र के पर्वत की हद से अन्दर ही अन्दर हो और ऊपर सूर्य या बुध में न मिलें वरना शादी व सन्तान का प्रभाव बुरा या उल्ट होगा। चूँकि यह खत केवल बुध और सूर्य का ही रूख करता नेक गिना है । इसलिए इससे दूसरे कामों के सफर के नतीजे का संबंध नहीं लेते बाकी तरफ के रूख से बाकी पर्वतों के संबंध का प्रभाव होगा जिसमे सूर्य की दोस्ती या दुश्मनी का नतीजा साथ होगा ।

सूर्य नं0 4 मंगल कायम तो हसमुख प्राकृति।

सूर्य नं0 4 मंगल नं0 10 तो आंख से काना हो ।

सूर्य नं0 4 चन्द्र नं0 1 शुक्र शनि नं0 7 तो नामर्द वरना बुजदिल हो।

सूर्य नं0 4 शनि नं0 7 तो अन्धराता वाला टेवा हो ।

सूर्य नं0 4 वृहस्पति नं 10 चन्द्र कायम हो तो राज दरबार से सम्बन्धित जरूरी सफरों के नेक नतीजे सीप में मोती हों।

सूर्य नं0 4 व 1 वृहस्पति नं0 तो आग के वाक्यात हों जब दोनों ग्रहों का साँझा दौरा हो वृहस्पति सोना आदि, चन्द्र चांदी कपड़ा आदि के समान या काम शुभ फल मगर शनि के काम या सामान (लोहा-लकड़ आदि) बुरा फल ।

सूर्य खाना नं0 नम्बर 5

(घर का व ग्रह फल का)

किस्मत को जमाने वाला, इकलौता लड़का, लाल मुंह का बन्दर, पोता

भादों सूर्य 5 वें घर का,	*तेज तपिश का पक्का हो ।*
राजा परोपकारी हो,	*साधु कम न आयु हो ।*
भेड़िया बकरी अग्नि पानी,	*सब को एक जा रखता हो ।*
लड़के इसके शेर हों अपने,	*और बुढ़ापा अच्छा हो ।*
गुरु अगर हो 1वें बैठा,	*औरत इसकी मरती हो ।*
शनि अगर घर तीजे हो,	*सन्तानें भी दुखिया हो ।*
ग्रह पाँचों से अपने घर का,	*या पापी ग्रह 9 वें जो ।*
सूर्य की वह होंगे प्रजा,	*हंस हुआ भी तारता हो ।*

सूर्य का स्वयं जाती फल अब कभी बुरा न होगा । शेर की गाड़ी में शेर बब्बर जुता होगा । सूर्य वृहस्पति दोनों का अच्छा फल होगा । राजदरबार से नेक संबंध होगा । लेकिन अगर राजा व तारे तो साधू ही तार देगा मगर कफन में लिपटी हुई किसी आरजू का साथ न होगा । अगर राजा न हो तो साधू भी छोटी उम्र का न होगा जब होगा, बकरी (पर्वत-बकरी, गर्ग भेड़िया) और भेड़िए को इकटठा रखने की हिम्मत वाला बुजुर्ग होगा या बकरी की हैसियत से बढ़ कर भेड़िया तो जरूर होगा सफादिल हो तो बुढ़ापा अच्छा और सन्तान का सुख पूरा होगा वरना कान से पकड़ कर भेडिए की तरह भगाई हुई बकरी की तरह किस्मत का हाल होगा। अक्सर दिमागी खाना नं0 20 सूर्य की जाती अक्ल खाना नं0 22 (वृहस्पति से साँझा) इज्जत बुजुर्गी का मालिक होगा । सूर्य रूह, शरीर और सेहत

का मालिक है इसलिए इसकी दूसरी रेखा का नाम सेहत रेखा या उन्नति रेखा रखा गया है सेहत या उन्नति रेखा हथेली में शनि के हैड क्वार्टर से ऊपर सूर्य की तरफ बुध के पर्वत को जाती है या सूर्य का प्रभाव बुध (दिमागी) में पहुँचाती जाती है। इस रेखा का हाथ में न होना कोई बुरा प्रभाव नहीं देता जबकि अच्छी सेहत प्रकट करता है और हाथ में इस रेखा का होना अच्छी सेहत के अतिरिक्त उम्र, सब्र और दिल रेखा आदि की टूटफूट के बुरे प्रभावों से बचाता है सेहत रेखा बुध चन्द्र और मंगलबद को हथेली से अलग करती है। शनि के पर्वत का ज्यादा ऊँचा न होना या हाथ में शनि रेखा का न होना भी अच्छी सेहत बताता है। मौटा शरीर और सेहत दो अलग बातें हैं मगर यह सारे केवल सेहत से सम्बन्धित है। हाथ के नाखून जिसका दरिद्र जिक्र खाना नं0 2 में है, सेहत की अच्छी व खराबी व दूसरी तबदीलियां के पेश का नौ महीने पहले ही प्रकट कर देते है जिस-जिस की यह रेखा उम्र रेखा से जाक़र मिलती है वो स्थान सेहत का आखिरी या उम्र रेखा का आखिरी स्थान मौत है।

सूर्य नं0 5 शनि नं0 9,11 तो दूसरों से हमदर्दी, माता-पिता की आपसी नेक अब सूर्य और शनि का कोई झगड़ा न होगा।

सूर्य नं0 5 चन्द्र नं0 4 तो दोनों कायम तो उदाहरण राजा, इकबाल बुरा हो

सूर्य नं0 5 चन्द्र नं0 4 वृहस्पति नं0 9 या कायम तो पूरा इकबाल बुरा हो।

सूर्य नं0 5 चन्द्र नं0 -4 वृहस्पति नं0 9 या कायम तो राज योग होगा।

सूर्य नं0 5 वृहस्पति नं0 10 तो शादियां एक से ज्यादा हों।

सूर्य नं0 5 शनि नं0 3 धुआं व हार, (आलसी खबर) दु:ख पहाड़ सन्तान पर खराबी का कारण हो (माली) है।

सूर्य नं0 5 मंगल नं0 3 वृहस्पति नं0 9, 2 या तीनों कायम तो वृहस्पति का पूरा अच्छा फल होगा।

सूर्य खाना नं0 6

(राशि फल का) गन्दगी रंग, पांव की खराबियां, बुध का उपाय सहायक होगा मामों की सहायता के लिए बन्दर को गुड देने का उपाय सहायक होगा, दोहता।

10 *आसुज सूर्य 6वें घर का,*	*अग्नि बाण ले चलता है।*
घर 12 में शनि पे मारे,	*शुक्र उससे मरता है।*
मंगल घर 10वें पे मारे,	*लड़के भस्म कराता है।*
घर दूजे से कोई न देखे,	*पिता को भी वह खाता है।*
अग्नि बाण से वही बचेगा,	*चन्द्र पूजन जिस की हो।*
घर अपने में जिसने रखी,	*घोड़ी, पानी, चाँदी हो।*

पहले बनी प्राख्ध पीछे बने शरीर। केतु राजा हो बना, राहु बने बजीर ।।

पैदाइश नानके घर होगी यानि जन्म स्थान अच्छा और माता-पिता शुभ हालत, बल्कि राजस्थान होगा, मगर पापी ग्रहों के समय से ग्रहण का बुरा जमाना जरूर होगा या एक दफा तो जरूर सवाल होगा। मगर सन्तान होने के दिन तक फिर

वही रोशन सूर्य का शानदार जमाना बहाल होगा मगर राज संबंध और राजा के दरवाजे कई बार वापिस आकर फिर सवाली जरूर होता रहेगा पहले तो राज संबंध में अपना बुरा हाल होगा वरना बाप का बुरा राज दरबार होगा यानि राज दरबार से रोटी का जरिया दोनों से किसी एक का जरूर हल्का बल्कि बुरा हो होगा। हर दो हालत में मामू का फल खराब होगा। राज दरबार से लाभ न होगा। मगर ऐसा बुरा नहीं हो जाता है हमेशा कोई ऐसा बुरा प्रभाव न होगा। कम सन्तान आदि केतू का प्रभाव हर तरह से बुरा होगा। मगर वो लाऔलाद न होगा बल्कि दिमागी खाना नं0 23 केतू से साँझा या पसन्द वाला होगा।

सूर्य नं0 6 बुध नं0 12 तो राज दरबार की आमदन के अतिरिक्त राज दरबार का बाकी संबंध भी खराबी का कारण होगा।

सूर्य नं0 6 शनि नं0 12 तो औरत पर औरत मरती जाए।

सूर्य नं0 6 मंगल नं0 16 तो लड़के पर लड़का मरता जाए।

सूर्य नम्बर 7

(नीच राशि का फल का)

लाल गाये (सूर्य रंग की) - रुहानी नुक्स - सफेद गाये गैर शुभ होगी मगर काली गाय सहायक होगी। चन्द्र (दूध) नष्ट करने से सहायता होगी। बुध या भोड़ी गाय भी शुभ होगी।

कार्तिक सूर्य 7 वें आया, सोने से घर मिट्टी पाया।
जन्म समय थे लाख हज़ारी, बोलते बोलते बिहारी।
गुरु मंगल उस घर से भागे, शुक्र रहे न चन्द्र जागे।
पापी ग्रह भी गिने अभागे, मिली सहायता बुध सब है जागे।
न धन रहे धनाढ़ हो। न गुल रहे गुलज़ार हो॥
सब मालो जान बर्बाद हो, गर बुध का नवां साथ हो।
घर पहले के ख्याल होते, सूर्य 7 में सोया वरना
दिन उस ही सूर्य निकले, 8 जब दूजे होया।

जमीन में तांबे के चौकोर टुकडे दबाना सहायक होगा।

बुराई ममता जरूर साथ रहे अगर औरत भी रहे तो लाजवन्ती ही रहे नही तो वे न रहे अगर औरत बुरी हो और फिर भी रहे तो शुक्र का घर (ससुराल तरफ) ही न रहे फिर भी रहे तो धन की जगह मिट्टी रहे या वद लक्ष्मी रहे अगर फिर भी रहे तो कोई न सके। अगर बुध खाना नं0 7 में हो या बुध निकम्मा ही हो तो कागज पर फैलने वाली स्याही की तरह किस्मत का हाल होगा या वो केवल बुध की सहायता से ही खुशहाल होगा अगर सूर्य इस घर में हो और शनि का टकराव आ जाए तो चन्द्र नष्ट करने से सूर्य की सहायता होगी यानि अवधि उपाय के दिनों में हुई आग को, पानी की बजाए दूध आदि से बुझाते जाना। नीच हालत सूर्य स्वयं नीच नहीं हो सकता मगर नीच ग्रह से नीचा का हमसाया जरूर गिना गया है किस्मत रेखा या सूर्य रेखा की अदम मौजूदगी में खुदकशी कर लेगा मगर फकीर नं0 3 न बनेगा पहला लेख या किस्मत की फकीरी दाम, भैंस या हाशिया की

फकीरी सोम, पीछा मटर, मटर कर देखती की फकीरी या गृहस्थ से तंग होकर भागा हुआ फकीर, बहुत गुस्सा, बुरे ख्याताल, खुदगर्जी, खुशामद, मशहूरी पसन्द, अन्धेरे की जिन्दगी होगी । नीच सूर्य बाला बगैर किसी के मारने के ही अपने आप को मारेगा । शुक्र के पर्वत पर सिर रेखा के किनारा की रेखा जो वृहस्पति या वृहस्पति की जड़ से निकली हो बहुत नेक है। अगर अगूंठे की जड़ में हो तो औरत का सुख हल्का होए और पराई ममता या मुसीबत गले लगी रहे । लाजवन्ती का पौधा हाथ की अंगुली तर्जनी की पहली पोरी, मेष सूर्य (उत्तम) के लगते ही मुरझा जाएगा । यानि लाजवन्ती की तरह अपनी इज्जत स्वयं बचाने वाली औरत सुख लेगी दूसरे को सुख न होगा । सफर से जिन्दा वापसी मुराद होगी । तराजू की दो पलड़ों में शुक्र व बुध जिनसे बुध हो चुप और शुक्र सूर्य से स्वयं नीच हो जाता है, का मिला हुआ व प्रभाव गृहस्थी दुनिया में होगा । औरत को 25 साल ही या औरत का 25 साल ही सुख हल्का होगा (मगर अपने लिए वो इकबालमन्द होगा बुध के प्रभाव से या) 17/34 साल उम्र से, उम्र लम्बी होगी मगर राहू केतू भी उसके प्रभाव के सामने दीवारे खड़ी कर सकते हैं यानि राज दरबार में खराबियां और सन्तान के विघ्न हों । दीवार हटी तो सूर्य का प्रभाव फौरा वही पहला पूरा हो गया । बुध और चन्द्र दोनों ही अपनी-अपनी शक्ति इसे ही दे देते हैं । अगर बुध उच्च हो तो सूर्य के जोर से बुध या अक्ल बिल्कुल ही चुप हो यानि दौलत तो जरूर होगी । मगर अक्ल कम यानि स्त्री धन ज्यादा होगा औरत अमीर खानदान (सूर्य से बुध को रेखा) से होगी अगर बुध रद्दी या नीच बुरा वगैरह हो तो औरत का सुख रद्दी करे बहरहाल सफर में मौत न हो या सफर से जिन्दा वापिसी जरूर होगी ।

बुध से साँझा हौसला का मालिक होगा

सूर्य नं0 7 शुक्र नं0 1 तो औरत की सेहत खराब, दिमागी कमजोरी दीवानगी ।

सूर्य नं0 7 मय दुश्मन या पापी ग्रह शुक्र नं0 1 तो किस्मत की हार और हर तरह से मार, आग में शरीर या मकान जलते हुए की तरह दुख की जलन तपेदिक आदि । यदि जिसकी मिट्टी खराब या जल जाए वह दुखों का पुतला ।

सूर्य नं0 7 बुध नं0 9 तो अगर सितारा का निशान कनिष्टका की जड़ में होगा तो धन राशि वृहस्पति और बुध दुश्मन होंगे लोगों में बेइतवारी और अगर बुध के पर्वत पर रेखा हो तो सन्तान बर्बाद होगी ।

सूर्य खाना नं0 8

रथ गाड़ी, पक्की और सच्ची आग

मघर महीने रवि है 8वें, बटी है गर्मी सरदी से।
घर अब मौत न होगा, जिन्दे होंगे मुर्दा से ।
बड़ा भाई और गाय सेना, लम्बी उमर निशानी हो ।
कुत्ता अगर सुसराल का हो, हर्जा इस की हानि हो ।

ऐसे टेवे में शुक्र का पंतग शुक्र नं0 1 होता है कामरेखा का फल देगा इसलिए

सफेद गाए बुरी हालत होगी उजड़े मकानों को बसाने वाला और पानी भी बादलों को बरसा लेने वाला होगा पत्थर से आग और आग से पानी से मिट्टी या सारा ब्राह्मण्ड पैदा कर लेने वाला होगा। मारक स्थान के बिच्छु से मुर्दे जिन्दा करवा लेगा और इसकी जरह से जिलाए हुए पत्थरों से संखिया से हिजड़ों और नामर्दो को तपस्वी राजा और मर्दो में गिनवा लेगा। बशर्ते कि सम दुनिया (तीन कुत्ते) या चोरी का वालदा वो न हो वैसे भी यह खाना शनि व मंगल बुरा का ही साँझा है इसलिए मुकदमा ज्यादा, झगड़े से मौत हरे, मगर सूर्य (स्वयं अपना शरीर, मारक स्थान का न होगा।) अब सूर्य से यह खाना मंगलबद न होगा। मंगल नेक प्रभाव देगा। और मौतों से बचाव होगा। उम्र लम्बी किस्मत नेक, अगर बड़ा भाई स्वयं होने वाला कम आय, गाए की सेवा और शरण हमेशा नेक कल दिखाए। दिमागी खाना नं0 25 पापी ग्रहों से साँझा नकल करने की शक्ति बहरूपियापन की तरह के सूर्य का मालिक होगा। अंगूठे की निचली पोरी की जड़ पर रेखा शानदार हो तो भी नेक प्रभाव होगा यानि सूर्य का नेक प्रभाव होगा बशर्ते कि सूर्य के पर्वत पर सूर्य रेखा व सूर्य का पर्वत भी कायम होते।

सूर्य खाना नं0 9

मरा रीछ, सूर्य ग्रहण के बाद का सूर्य

भूरा रीछ - सूर्य ग्रहण के बाद का सूर्य

पोह महीने सूरज 9 वें, उम्र लम्बी का मालिक हो।
परोपकारी कुनवा परिवार, कुल 7 अपनी तारता हो।
खाली बरतन मोटे पीतल, बुध की ज़हर हटाते हैं।
राज से चाहे न संबंध हो हकीमी सफा तो पाते हैं।

किसी का कुछ बने या न बने मगर खानदानी खून के लिए अपना सब कुछ वहां देगा। मगर इसके बदले न मांगेगा। इसका खानदान लम्बी उम्र का ठेकेदार होगा अगर ज्यादा नहीं तो सॅंात पुस्त (तीन इसके ऊपर और तीन इसके नीचे और स्वयं अपना सूर्य शरीर बीच में) का जरूर निगाहवान और सहायक होगा सीमा से ज्यादा गर्म या नर्म होने पर नष्ट होगा। चान्दी का दान देना इसके बढ़ने का कारण और चांदी का दान लेना वापस बर्बादी होगी। किस्मत रेखा की जड़ में चार शाखा खत पहला शुभ है। शानदार रेखा सूर्य का निशान है कि किस्मत रेखा वृहस्पति का लकीर है यद्यपि सूर्य वृहस्पति की जड़ में बैठा है यानि उम्र लम्बी होगी और पूरी होगी जो 100 साल गिनी गई है। चाहे बुध नं0 9 में न हो सूर्य की शाखदार रेखा भी शुभ निशान है जो माता-पिता का सरकारी दरबार प्रकट करता है। शुक्र की तरफ का निशान स्त्री भाग में मध्यम प्रभाव मगर चन्द्र की तरफ का नेक प्रभाव। ऐसा आदमी चार शाख लम्बी उम्र वाला होगा बशर्ते कि बुध नं0 9 में न हो। और बाप की लम्बी उम्र बाबे की उम्र लम्बी होगी। खर्चा परिवार में बहुत होगा और सरकार से संबंध न होगा मगर हकीम होगा और परोपकारी यद्यपि राहू के समय धर्म इमान का कच्चा होगा। सूर्य जब 22 में साल उम्र के शुरु हो जाए शुभ फल होगा। राजदरबार शुभ फल माता-पिता के लिए शुभ अपनी उम्र

लम्बी, बाप की उम्र, लम्बी बाबे की उम्र लम्बी होगी । सूर्य जब खाना नं0 8 में हो तो खाना नं0 5 भी रोशन और नेक प्रभाव देगा। माता-पिता का जरिया सरकारी दरबार प्रकट करता है शुक्र या इत्री भाग्य में मध्यम प्रभाव होगा मगर माता चन्द्र भाग्य में अच्छा प्रभाव होगा तीर्थ यात्रा का अच्छा प्रभाव रहेगा । सूर्य के जाती नेक प्रभाव के अतिरिक्त खानदानी नस्ल लम्बी (लड़का, पोता, पड़पोता) भी लम्बी उम्र दिमागी खाना नं0 26 , भोलापन, वृहस्पति से साँझा मूर्ख (हद से ज्यादा हो तो बेवकूफी) हो।

सूर्य नं0 9-3 बुध नं0 5 तो जवानी से 34 साल उम्र के बाद किस्मत जागेगी ।

सूर्य नं0 9 बुध नं0 3 शनि नं0 11 तो दोनों ग्रहों का फल रद्दी, बुध दोनों को ही बेवकूफ बना दें, बुरी जिन्दगी होगी ।

सूर्य खाना नं0 10

(भूरा नेवला, भूरी भैंस)

माघ महीने सूर्य 10 वें,	*राहु कच्चा धूआँ हो ।*
कम आयु या किस्मत बुरी,	*जब तक इन का साथी हो ।*
शुक्र चौथे पिता को मारे,	*चन्द्र मारता 5वें है ।*
मच्छर से भरपूर हो किस्मत,	*छटे अगर वां शनि है ।*
रवि गुरु दोनों से कोई,	*घर 10 वें जब बैठा हो ।*
5वें घर चाहे दोस्त उस का,	*जहरी दुश्मन होता हों ।* [१]

राज दरबार में स्याही से सिफारिशी कागज स्याह करके कई बार देखा और देखा न कभी उसे पार देखा बल्कि नर ग्रह की सहायता साथ । साथी होने के बगैर न उसे दर जहान देखा । फिर भी देखा तो सूर्य के गुस्सा की गर्मी की आग के जोर से दूर व रंग स्याह देखा सन्तान नष्ट देखा किस्मत अपनी के लेखें में भी उसे न कभी स्याह देखा और शादी में भी न उसे साहू का साह देखा, पर बुध की उम्र से पहले न कभी यह हाल देखा -- फिर भी देखा तो उसे न कभी योगी अंलकार देखकर सूर्य राज दरबार और शनि आपसी का झगड़ा जबरदस्त होगा यानि अगर राज दरबार अच्छा हो तो शनि का फल बुरा होगा जिससे कम दौलत और 19 साल पिता का खून हल्का और रिशतेदारों से जुदा होगी। राहू (ससुराल) के साथ या उनके ही घर रह पड़ना उम्र कम की निशानी होगी।

दरिया या चन्द्र (तह जमीन का) पानी हमेशा सहायता देगा ।

सूर्य नं0 10 चन्द्र कायम राजदरबार के सम्बन्धित जरूरी सफरों के नेक नतीजें।

सूर्य नं0 10 शुक्र नं0 4 तो पिता बचपन में ही मर जाए ।

सूर्य नं0 10 चन्द्र नं0 5 उम्र 12 दिन हो।

---

१ वास्ते उमर खुद जब नर-ग्रह की मदद साथ या साथी न हो । वरना लम्बी उमर हो ।

सूर्य खाना नं0 11

लाल तांबा

फागुन सूर्य 11वें हो, शनि स्याही करता है ।
चन्द्र हो जब 5 में बैठा, साल 12 में मरता है ।
बुध गिना है तीजे बुरा, सूर्य पर न प्रभाव करे ।
चमके स्वयं न चमकने दे, उम्र की पर वह रक्षा करें ।

झूठ मारे या झूठ-शराब गाले या पत्थर शनि की चीजों का संबंध सूर्य की चकम पर स्याही फेर देगा । वृहस्पति के दरबार जहां कि शनि हल्फ उठाए किस्मत का कर रहा है उसी कल्म से सूर्य पर कत्ल का हुक्म लिख देना यानि शनि की खुराक या बुरी चीजों के प्रयोग से सन्तान की तबाही का हुक्म कर देगा जिसे राहू-केतू की अविध तक पूरा करना इन्सानी शक्ति के बाहर होगा । **गलती की दुरूस्ती अपने हम वजन दूध के बराबर दूध देने वाली बकरियों की तायदाद के बराबर तायदाद के बकरे छोड़ने पर ठीक होगी और 40 या 43 दिन तक रेत का बिस्तरा शुभ होगा ।** अगर पूरा नेक धर्मात्मा हो तो सब तरह से अच्छा नहीं तो हर तरह से बुरा और कल्पना से भरा हुआ सूर्य का प्रभाव होगा चाल चलन की गन्दगी तबाही का कारण होगी शनि सूर्य और वृहस्पति तीनों इकट्ठे प्रभाव देंगे । धन दौलत तो खूब आये मगर शनि के प्रभाव से झूठ का पुतला होने का सबूत होगा ।

सूर्य नं0 11 चन्द्र नं0 5 तो उम्र 12 साल हो।

सूर्य खाना नं0 12

भूरी चींटी, दिमागी, खराबी, नकली सूर्य-शुक्र-बुध

चेत्र सूर्य 12वें हो, बह्मा गुरु ही होता है ।
लाल चमकता गर न हो, धर्मी गर वह पूरा हो ।
धन परिवार की कमी न हो, राहु से गर बचता हो।

दस्ती कमाई (हुनरमन्दी, मित्रपन) में सूर्य ग्रहण होगा अगर मकान का आँगन न हो तो सूर्य का नेक फल नष्ट होगा । अक्सर अन्धेरा शुभ न होगा और नहीं किसी हालत में वो लाऔलाद होगा विशेष कर घर से बाहर वीराना में वो कभी साधु न होगा अगर होगा तो जागीरदार, आजाद जिन्दगी, बड़े-बड़े गांव और काम आमदन जायदादों का मालिक होगा । सूर्य ग्रहण होगा शुक्र के पर्वत के हिस्सा से शुरू हुई सूर्य की उन्नति ऐसा अगर सूर्य और बुध के बीच चली जाए । इस द्वारा बुध की नाली--तो धन दौलत खूब आये और हर रोज में लाभ हो मगर दस्ती कमाई में सूर्य ग्रहण होगा। मगर धर्महीन न होगा। धर्म पालना हर पल आबाद करती जाएगी ।

सूर्य नं0 12 मंगल कायम तो हर तरह से शान्ति वाला होगा ।

सूर्य नं0 12 शनि नं0 6 तो दोनों ग्रहों की दुश्मनी का अब शुक्र औरत पर कोई बुरा प्रभाव न होगा ।

चन्द्र

धरती माता

शिवजी महाराज, भोले भण्डारी, चन्द्र का सफेद का रंग (बुध) समुन्द्री व हवाई घोड़ा, अपनी शक्ति से अधिक के समय मैदान जंग (खाना नं0 3) मालिक की मौत (खाना नं0 8) और खुराक में कंकर (खाना नं0 7) आने पर दुनिया में तीन बार जागा इसीलिए नौ ग्रहण बारह राशि की नौ सिद्धि व बारह सिद्धि का मालिक हुआ (इन्सान की पैदाइश तो महीने घोड़ें की पैदाइश बारह महीने)।

चन्द्र पक्का घर चौथे गिनते, ग्रह सब का पेट भरता है
हर घर में यह राशि फल का, घर उसका धरती माता है
खाली पड़ा घर जो चन्द्र का चौथा, प्रभाव अच्छा और नेक दे देता है
चन्द्र घर से बाहर हो बेशक ही रद्दी, घर खाली ही दूध पिला देता है
जहां चन्द्र पानी वहां प्रभाव, सूर्य भी आ जाता है
ग्रह लड़तें आपस में आ बैठे चन्द्र, तो दोस्त तो उसको बना जाता है
चन्द्र बैठा पहले या दुश्मन को देखे, प्रभाव नेक बन्द अपना कर देता है
ग्रह शत्रु व पापी जब बैठे पहले, प्रभाव चन्द्र बुरा नही हो जाता है
बड़ा पाप स्वयं अपने चन्द्र के घर जब, शनि बुध भी नेकी पर हो जाता है
अंग फड़कना या आंख हो, दाई मुतर्का हाथ भी हो जाता है
तहरीर लिखाई हो शान्ति अपनी, फैसला कुल चन्द्र हो जाता है

चन्द्र की भिन्न-भिन्न रेखाएं :-

चन्द्र हमेशा राशि फल का होता हैं और विशेष कर 3 घरों यानि खाना नं0 8 मौत से बचाता हैं, नं0 7 संसारिक खुराका धन दौलत दे नं0 3 मैदाने जंग में हर तरह की सहायता दें या घोड़ा केवल तीन बार जागता है, इस ग्रह की साधारण अवधि एक साल होती है और अपने प्रभाव के अन्तिम हिस्से में स्वयं इसके प्रभाव का समय होता है रात चन्द्र का राज हैं जिसके शुरू में राहू और आखिर पर केतू है राहू के मध्यम और केतू के चन्द्र ग्रहण होता हैं। राहू का प्रभाव दिमाग पर और केतू का पांव पर बुरा प्रभाव होता है इसलिए तरह-तरह की शरारतें होने लगे और चकवा चकवी चन्द्र के भक्त सारी रात ही केतू के बुरे प्रभाव से एक दूसरे को ढूंढते-ढूंढते रात समाप्त कर बैठे और आपस में मिल न सके और शनि का सांप जिससे चन्द्र दुश्मनी करता हैं केतू के प्रभाव और चन्द्र की दुश्मनी से अपने कान ही गुम करवा चुका हैं। बंसरी और वीणा की आवाज पर मस्त होकर अपनी मौत ढुंढता हैं मगर चन्द्र ने इसकी आंखों को ही सुनने की शक्ति अदा करवा दी हैं इसी तरह ही सांप के स्वयं मरने और सांप के मारे होने की उम्र चार

दिन तक शकी है चन्द्र ने चकवे चकवी का बीच नाश न होने दिया और आज तक चकवी अपने नर के मिले बगैर ही चन्द्र के दिनों में अड़े देती चली आती हैं दिल का मालिक चन्द्र हैं जो सूर्य से रोशनी लेता हैं और दुनिया में इसका नाम अब असल तंत है सूर्य चाहे कितना ही गर्म हो कर हुक्म दे मगर चन्द्र माँ उसे ठण्डे दिल और शान्ति से बुजा लाता और हमेशा सूर्य के पांव में रहना चाहता हैं चन्द्र का घर हथेली पर बेशक सूर्य से दूर है मगर दिल का शान्ति या दिल रेखा सूर्य के पांव में ही रहता हैं इत्री (शुक्र) भाई (चन्द्र) सांस-बहनोई (मंगल नेक) और अपने भाई (मंगलबद) गुरु और पिता (वृहस्पति) सबके सब दिल के दरिया या चन्द्र या रेखा की यात्रा को आते हैं जो सूर्य की चमक से दबी हुई आंखो शनि और दिमाग (बुध) का शान्ति और ठण्डक (चन्द्र का प्रभाव) देता है या दुसरे शब्दों में ऐसे कहाँ कि इस दरिया या दिल रेखा के किनारे दुनिया के सब रिश्तेदार और दूसरी तरफ इन्सान का अपना शरीर रूह (सूर्य) और व सर (शनि व बुध) बैठे हैं और दिल रेखा इन दोनों के बीच चलती हुई दोनों तरफें अपनी शान्ति से उम्र बढा रही है या शरीर इन्सान को वृहस्पति की हवा के सांस से इसमें रखने वाली चीज यही दिल रेखा है इसलिए दूसरे शब्दों ने दिल रेखा को उम्र रेखा भी माना हैं और इसके मालिक चन्द्र की चाल से उम्र के सालों की मदद बन्दियों से निश्चित की हैं।

चन्द्र व चन्द्र का पक्का घर :-

अगर चन्द्र स्वयं को अपने घर से बाहर किसी और जगह जाकर खराब नीच या नष्ट हो जाये लेकिन चन्द्र के पक्के घर (खाना नं0 4) में कोई भी ग्रह केवल अकेला ही चाहे वो चन्द्र का दोस्त हो या दुश्मन आ बैठे तो चन्द्र का ही इस खाना नं0 4 में आ बैठने वाले ग्रह का नेक फल कर देगा। चाहे चन्द्र इस ग्रह का साथी ग्रह हो या न हो लेकिन अगर चन्द्र घर से बाहर मगर कायम या अच्छा हो मगर इस ग्रह का साथी ग्रह न हो तो वो दोस्ती या दुश्मनी का अपना प्रभाव जैसा भी इसका अपने घर से बाहर के घर में हों कायम रखेगा खाना नं0 4 खाली और इधर-उधर हर तरह से खाली हो तो सारे ही ग्रह रद्दी होते हुए भी अकेला चन्द्र का घर बैठने वाला ग्रह चन्द्र का साथी ग्रह बन रहा हो तो चन्द्र हमेशा नेक फल देगा। चाहे वो ग्रह चन्द्र का दुश्मन ही हो चन्द्र से कोई दुश्मनी नहीं करता चन्द्र स्वयं ही अपना फल बन्द कर दिया करता हैं लेकिन ऐसी हालत में चन्द्र अपना नेक फल देना हमेशा कायम रखेगा।

चन्द्र:- सूर्य-1 वृहस्पति ---रोशनी व हवा का मालिक या हर एक और हर एक के दिल का मालिक चन्द्र हैं बुध(अक्ल) कायम हो तो चन्द्र का बुरा फल न होगा जब चन्द्र का प्रभाव दुष्टि के हिसाब से शुक्र-बुध मय तीनों पापी ग्रह मिल जाए नेक नतीजा होगा लेकिन अगर वो ग्रह जिनकी कि चन्द्र दुश्मन ठहराया गया

है अपना प्रभाव चन्द्र में मिला दें तो चन्द्र स्वयं अपना नेक फल देना बन्द कर देगा और नतीजा बुरा होगा बजाये स्वयं ऐसी शक्ति का मालिक है कि वो(चन्द्र) जब आपसी दुश्मनी वाले ग्रहों के बीच हो तो उनकी आपस वाली दुश्मनी हटा कर इनकी आपस में दोस्त पैदा करवा देता हैं वृहस्पति ने तो केवल दुश्मनी हटाई थी मगर दोस्ती पैदा नहीं की चाहे चन्द्र अकेला एक तरफ हो और सारी दुनिया (बाकी सब ग्रह दूसरी तरफ) माता एक तरफ बाकी सब इसके साथी बाल बच्चे आदि दूसरी तरफ) चन्द्र सहायता ही देगा। राहू, केतू की बुराई चन्द्र के साथ ही (स्वयं चन्द्र के घर नं0 4 में या ऐसे घर जहां कि चन्द्र बैठा हो) लेकिन अगर कुण्डली में वृहस्पति पहले केतू बाद के घरों में हो तो दोनों की बजाए चन्द्र का फल बुरा होगा न चल सकी चन्द्र के पानी की नदियां प्रकृतिक के व्यक्तिव के दिमाग के रास्ते हाथ की हथेली की रेखाओ से राशियों व ग्रहों के द्वारा सबकी बीच की जगह या शरीर के बीच निशान नाभि से प्रकट कर देते है यही नाभि का रास्ता माता के पेट में बच्चे को खुराक देता रहता हैं या कुण्डली में खाना नं0 4 सबकी सहायता और दोनों जहानों के मालिक वृहस्पति को ऊच्च करता हैं जहां पानी हो वहां अक्स भी हो सकता हैं (साया) या सूर्य का रोशनी भी हो सकती हैं या राज दरबार या सूर्य का प्रभाव (माता) जैसा भी उस कुण्डली में हो, होगा। चन्द्र प्रबल वाला सफेद रंग (दूध की झलक वाला दही के रंग की सफेदी नहीं) शान्ति स्वभाव चौडाई वाला चेहरा चकोर या घोडे की आंखो की तरह आंखो वाला दूसरे की बात में ही मिला कर फिर उस दूसरे को नर्म सा जवाब देकर और उसके दिल को मनाकर अपनी तरफ कर लेने वाला पहरावें में सफेदी पसन्द, शरीर का निचला हिस्सा। नाभि या पांव की तरफ का हिस्सा पले हुए हाथी की तरफ भारी सहायता और बेडोल न होगा। निम्नलिखित बातों का साथ होगा।

साझां हाथः-

अंगुठा छोटा, अंगुलियां तरासी हुई सी हों तो मवेशी पालने का शौकीन हो और मवेशियों से लाभ उठाए।

खुद दस्ती (चन्द्र):-

(1) बड़ा मोटा हरफ --फिराक दिल।

(2) साफ , सादा , पढा जाने वाला शब्द :- मजबूत व कठोर दिल वाला।

(3) लम्बी-लम्बी लकीरे -- वगैर सोच विचार जल्दी करने वाला

(4) सीधा साफ -कुदरती अक्ल वाला।

(5) बारीक व बराए नाम ज्ञानी लियाकत वाला।

(6) गोल व बराबर हरफ-अच्छा फैसला करने वाला।

(7) छोटा-छोटा बुझा हुआ शर्मनाक डरपोक।

(8) खूबसूरत व फूलदार सजावटी ।

अंग फड़कना (चन्द्र)-दांया अंग फड़कना शुभ--बांया अंग गैर शुभ अगर 40-43 दिन से ज्यादा लगातार समय फड़कता रहे तो कोई गिनती की चीज न होगी बर्बादी का कारण होगा ।

आंख (चन्द का घर खाना नं0 4)

1 जिस तरह बडी़ उभरी हुई या बाहर को निकली हुई और हल्का रंग हो उसी तरह ज्यादा नेक स्वभाव और जल्दी समझने वाला होगा और रूहानी शक्ति वाला होगा ।

2 जिस तरह छोटी गोल अन्दर को घुसी हुई या गहरा और हल्का रंग हो उसी तरह्व ज्यादा मतलब परस्त, शरीर मक्कार और बुरी नियत का होगा ।

3 जिस तरह और जिस जानवर से मिलती जुलती हो इन्सान उसी तरह ज्यादा और उसी जानवर के स्वभाव और दिल की खुफिया काम करने वाली शक्ति होगी।

4 छोटी आंख-दिल का होंसला छोटा दिल तंग ।

5 लम्बी आंख-दिल की नकल व हरकत लम्बी ।

6. गोल आंख-सफर कई ओर हर सफर में साज कई या ज्यादा (एक जगह पर) लगेंगे।

7. गहरी आंख- स्वयं गर्ज बेवफा ।

8. गोल गहरी व स्याह -- मगर चश्मा , सांप का स्वभाव ।

9. गोल गहरी व भूरी :- बहुत शादियां मगर फिर भी आंख का सुख न हो।

10. अगर जवाब और तालु स्याह का साथ हो तो स्वयं की शरण में एक सांप दूसरें को उड़ने वाला हर तरह से बुरे खानदान को वदनाम करने वाला हरा कदमा होगा ।

(1) बडी़ और रोशन -अक्लमन्दी
(2) आलसी (सूर्ख रंग) पकड़ने की शक्ति।
(3) धीमी और झलक मारती हुई समझने की शक्ति ।
(4) नजर -नर्मी तबीयत का प्रकट करती है ।
(5) हरा-जल्द समझने वाला (16) अन्धा-स्वार्थी होगा।
(17) काना -बुरा स्वभाव (18) भेंगा -सबसे ऊपर फरेबी ।
(19) तिल्ला छोटे काम करने वाला बदफैल ।

चन्द्र तह जमीन और धन दौलत का मालिक हैं और सूर्य का मिलता है मकान उच्च तो अन्दर ही वरना मकान की बाहर की चार दीवारी के एन साथ लगा या लगता हैं और आखिर अगर दूर भी कहों तो कुण्डली वालें की अपनी 24 कदम तक उस मकान की और मकान के बड़े दरवाजे से बिलकुल सामने कुओं , हैण्डपम्प या तालाब आदि या चलता हुआ पानी जरूर होगा । जमीन के अन्दर से

कुदरती पानी के चन्द्र लेंगें। नकली नल्का चन्द्र न होगा। चश्मा आदि चन्द्र गिने जाते हैं चन्द्र महसूस करने की शक्ति समाप्त तो चन्द्र समाप्त मिलेंगे। चन्द्र की सहायता के लिए दूसरों के लिए दूसरों का आर्शीवाद द्वारा पितृ पूजा आदि कह कर काम करें। खबर पहले ही मिलने पर बुढ़ापे तक यह बात काम देगी चन्द्र की खानावार चीजें निम्नलिखित हैं :-

(1) दिल , बाग ,बाया हिस्सा, बाई आंख की पुतली।

(2) माता, दूध,चावल, रूहानी हिस्सा, सफेद घोड़ा

(3) आग घोड़ा, शिवजी भोले, चोरास्ता

(4) तालाब, कुआ, चश्मा, धरती के नीचे का पानी, शान्ति

(5) चकोर (पक्षी) आक का दूध

(6) खरगोश मादा ,सफर

(7) खेती की जमीन (अपनी या जददी) मगर आबादी की न हो,बर्फ

(8) समुन्द्र बाल्टी, आमदन मिरगी, मुर्दा दिली

(9) जायदाद जद्दी , छुपा समुद्र

(10) रात का समय, तह जमीन का आम पानी मगर खारा या अफीम।

(11) चांदी, मोती, दूध का रंग सफेद, खूनी कुआ उड़तें बादल

(12) खुशामद, सफेद बिल्ली मीना का पानी ओले , मुश्ककफूर

चन्द्रमा:- चन्द्र न केवल माता की शरण ली और जायदाद जददी बख्शी बल्कि पानी चांदी और शान्ति ही वह दुनिया का शहजादा दिल पानी दैवी सहायता, माता सन्तान का सुख, जमीन जेर काश्त ,जायदाद जद्दी आम समुद्र पार जरूरी या बिना जरुरी सफर राज दरबार और आवाम में इज्जत कर्म धर्म व दिल की परहेजगारी घोड़े आदि की सवारी का सुख शान्ति और रात का आराम या दुःख के बाद सुख का भण्डारी है।

चन्द्र का शत्रु ग्रहों से संबंध :-

चन्द्र दुश्मन या पापी ग्रहों के समय अपना नेक फल या दर्द दुनिया स्वयं ही बन्द कर लेता हैं दूसरे का फल खराब न करेगा। अगर संसारिक फल नेक न देगा तो आकवत नेक फल जरुर देगा। प्रकट दुश्मन हों तों दिल से या व आन्तरिक दैवी फल नेक होगा बुध की तरह सूर्य के समय अपनी शक्ति सूर्य को ही दे देता हैं शनि की तरह बीज नाश नही करता बल्कि अगर विरोधि-पन करेगा तो केवल एक से कुल खानदान से दुश्मनी नही करेगी। चन्द्र का केवल केतू दुश्मन हैं अगर दुश्मनी करता हैं तो चन्द्र स्वयं ही करता हैं, सिरे के श्रेष्ठ रेखा चन्द्र के बेरे प्रभाव से बचाती हैं चन्द्र जब राहू से मध्यम हो तो स्वयं ही अपना दिल खराब कराएगा

(1) जब चन्द्र पहले घरों में हो और शत्रु ग्रह वाद के घरों में हो तो चन्द्र स्वयं

अपना नेक फल उस दुश्मन ग्रह को देना बन्द कर देगा।

(2) जब शत्रु ग्रह और चन्द्र इकटठे हों तो चन्द्र और शत्रु दोनों का ही फल रद्दी होगा

(3) जब चन्द्र बाद के घरों में हो तो चन्द्र और शत्रु दोनों का ही फल रद्दी होगा।

(4) जब चन्द्र बाद के घरों में हो और शत्रु ग्रह पहले घरों में हो तो चन्द्र का प्रभाव बुरा होगा। शत्रु ग्रह पर कोई प्रभाव न होगा। चन्द्र के प्रभाव के समय शुक्र और बुध उस का नसफ (आधा) समय और शक्ति भी आधी जाया कर देते हैं मगर वब अपनी शक्ति पुरी रखते हैं बाकी ग्रह पूरा प्रभाव करते हैं चन्द्र का सूर्य के साथ मिलने पर सूर्य को फल हो जाता हैं और दोनों का ही फल अच्छा होगा, सूर्य के समय चन्द्र अपनी अलग रोशनी प्रकट करता और सूर्य से ही रोशनी लेगा।

चन्द्र के साथी या आपसी पापी ग्रह :-

चन्द्र के आपसी या पापी ग्रह हो जाए तो चन्द्र का अपना फल तो कुण्डली वाले के लिए अच्छा ही रहेगा, मगर दस कों की मुसीबत पर मुसीबत देखता हुआ बेचैन रहेगा, अकेले चन्द्र के साथ बराबर बुध वृहस्पति या सूर्य-बुध समुन्द्र पर सफर का बुरा नतीजा हो अगर चन्द्र से बुध की तरफ मंगल बद तक ही रेखा जाए तो हौसले वाला लम्बे समून्द्र पार सफर बताएगी, जिसके नतीजें भी नेक होंगे। यह रेखा अगर बुध की तरफ झुकाव रखती हुई मालूम हो तो तिजारत के सफर से लाभ होगा। जो काफी लाभ होगा और अगर यह चन्द्र के पर्वत से सूर्य से बहुत ज्यादा लाभ होगा। अगर यह चन्द्र के पर्वत की रेखा किस्मत रेखा में न मिले और शेष रास्ता सूर्य या शनि के पर्वत में जा निकले तो बहुत ही बुरी जिन्दगी होगी चाहे वह लखपति ही क्यों न हो मुसीबत पर मुसीबत देखता रहेगा अंगूठे की पोरियों पर जौ के निशान को चन्द्र का निशान भी माना गया हैं। पोरी की जड़ और पौरी पर निशान की पहचान यह निशान चन्द्र के एक जैसे आकार दो निशानों से मिल कर बनता हैं जिस तरफ का हिस्सा बडा हो उस तरफ चन्द्र के समाप्त होने की होगी यानि इस पूरे निशान की सीमा के बाद चन्द्र न होगा या चन्द्र राशि बड़े निशान की सीमा बन्दी से पहली पोरी में (इस पोरी की पहली पोरी जिसमें या जिसके सिरे पर कि वो बड़ा निशान लें) होगा। खत "क"="क" मान लो बडा खत हैं और लकीर "क" "ख" "क" छोटी लकीर अब हिस्सा नं0-1 में (नाखून वाले हिस्सा पर लहीर "क"="क" बडी हैं या दूसरी लकीर "क" "ख" "क" नाखून वाले हिस्सा में ही रह गई हैं इस हालत मे जौ का निशान नाखून वाली पोरी में गिना जाएगा और नाखून वाली पोरी की जड़ पर न होगा। पोरी की जड़ पर निशान से मुराद है कि उस पोरी के लिए जो घर कुण्डली में निश्चित किया है। चन्द्र उस घर को देखता है उदाहरण

नाखून वाली पोरी को केतू का घर खाना नं0 6 माना गया है अब चन्द्र इसे देखता है, से इच्छा होगी कि चन्द्र है ही इस घर में जो घर का इस पोरी पर निशान से यह है कि चन्द्र है ही इस घर में जो घर का इस पोरी के लिए निश्चित हैं।

अंगुठे पर जौ का निशान :-

यह निशान अंगुठे की तीनों पोरियों की जड़ पर माना जाता है। साफ हो तो इस हिस्सा में उम्र के सुख आराम दौलतमन्दी का जमाना होगा और अगर टूटा हुआ हो तो उम्र के इस हिस्सा का हाल खराब होगा जिस हिस्सा की जड़ में यह टूटा हुआ निशान हो ।

खुशी खाना नं0 4 गमी खाना नं0 10 (चन्द्र)

अंगुठा छोड़ कर बाकी 4-4 उंगलियाँ दोनो हाथ की 8 **x** 4 (निशान) कुल32 निशान जौं (अनाज गन्दम) वाक्य हों तो दुःख सुख शून्य बराबर होंगे । इस 32 के अक्षर को पक्की बात माना हैं और 32 दिन का ही ज्यादा से ज्यादा 32 दिन दांत नेक प्रभाव वाले माने हैं अगर 32 खत हो तो 32 गमी के गणित के बराबर में 33 दिन खुशी के होंगे लेकिन अगर यह निशान 32 से कम यानि 31 हो तो 32 गमी के गणित के बराबर में 31 खुशी के दिन होंगे इसी तरह ही जितने गणित या खत अंगुलियो पर कायम हों इतने ही दिन 32 के बराबर में खुशी होगी। चन्द्र (जौं) का केवल एक ही (दाए) हाथ पर निशान 12 राशियों और 9 ग्रह कुल 21 के गणित का हिसाब जायज रखा है यानि 21 से ज्यादा निशान वाला दुनिया के सारे हिसाब-किताब 9 ग्रह और राशियों से बाहर होगा या दुनिया से किनारा कश दुनिया से किनारा कश होगा केवल दाहिना हाथ अलग लेकर इस पर निशान हों

निशान हों प्रभाव देगा	कुण्डली को किस खाना का चन्द्र प्रभाव देगा
12 तो सारी आय्रु दौलतमन्द और अच्छा खाता पीता होगा	1
13 तो हमेशा दुखी हो	7
14 तो औसत जीवन	4
15 तो चोर लुटेरा डाकू हो	10
16 तो जुआरिया हो	8
17 तो जिसका मान न हो	3
18 तो भोला आदमी भले काम नेक तबीयत हो	9
19 तो धर्मात्मा राज दरबार में इज्जत हो	5
20 तो बुद्धिमान हो	6
21 तो कम बख्त और बुरा नसीब हो	12
21 से तो दुनिया से अलग ही रहने वाला दुनिया छोड़ देने वाला हो	

खाना नं0 11 मे चन्द्र सिफर होगा।

खुशी :- बन्द मुटठी में साथ लाए हुए खजाना के ग्रह यानि खाना नं0 1,7,4,10 के ग्रह यानि जो ग्रह इन चारों खानों में हो वो हमेंशा अपने प्रभाव की सम्बन्धित चीजों में खुशी दिखलाते रहेंगे ।

गमी :- ऊपर कहे हुए चारो खानों को छोड़कर कुण्डली के बाकी खानों के ग्रह यानि खाना नं० 2,3,5,6,9,11,12 के ग्रह अपनी सम्बन्धित चीजों के संबंध में गमी का कारण करने बाले हो सकते हैं जब सूर्य दिन का मालिक हो तो शनि रात का अगर दिन में चन्द्र व शनि का झगड़ा हुआ या सूर्य अगर प्रकट तो चन्द्र दैवी शक्ति का मालिक हैं मानाकि सूर्य प्रकट सहायता करता हैं तो शनि नीचे के अन्दर- अन्दर सहायता देता है मगर बुरा करने के समय दोनों का नियम उल्ट है अगर जिसका चन्द्र व शनि दोनों में से दोनों ही आपस में चलते हैं सहायता देते, चन्द्र खाना नं0 4 का मालिक है खुशी का और शनि खाना नं0 10 का मालिक है गमी का, जाती खुशी का खाना नं0 4 और गमी का खाना नं0 10 सम्बन्धित होगा मुट्ठी का अन्दर और बाहर सारे सम्बन्धित दुनिया से इन्सान का संबंध होगा । खाना नं0 8 शनि का है जो चारों तरफ ही चलता है इस खाने मे जाती अगर पिता के संबंध की खुशी है जब यह खाना मुटठी के अन्दर का हुआ और जब गर्मी में लिया तो दूसरी दुनिया वालों से सम्बन्धित होगा । इसलिए अंगुली की पोरियों पर की लकीरों चन्द्र के निशान 32 खुशी के होगें, जिनके बराबर पर शनि भी इसी शक्ति का होगा यानि कुल जितने निशान हों (केवल एक ही हाथ पर) उनको वारह का गणित (चन्द्र की 12 राशियों की खुशी) घटाए तो बाकी के गणित वाले राशि के घर का प्रभाव होगा केवल बाकी बचने की हालत में शनि अपने पक्के घर खाना नं0 10 का ही होगा उदाहरण

आगे कोई साधू हो तो

निशान हो	12	13	14	15	16	17	18
गिनती में	19	20	21	22	23	24	

खाना नं0 जिसका कि	10	1	23	34	5	6	7
शनि फल देगा	8	9	11	12			

चन्द्र खाना नं0 1

(दिल ,बाग, बायां हिस्साबाई आंख की पुतली)

दूध चन्द्र का पहले घर में, ज़हर पानी से होता है ।
शुक्र बुध भी हैं दुश्मन इसके-आधा चन्द्र जिनसे होता है ।
24 साल 27 होते, माता सिर पर मौत चले ।
इन सालों में हो न सफर , तब माता की उमर बढ़े।

दिन 28 का औरत पापी, 28 साल ही रक्षा है।
मंगल चन्द्र हो दोनों मिलते दूध बरेती चलता हैं

लगभग 28 वर्ष उम्र से पहले शादी का संबंध चन्द्र की आयु नष्ट और सन्तान का फल बुरा कर देगा । यही बुरी हालत 24 साल शादी से पहले नए मकान बनाने पर होगी। विशेषकर 24वें साल शादी का संबंध चन्द्र का फल खाक बना कर उड़ा देगा। चांदी के बर्तन में दूध का इस्तेमाल बड़े परिवार और शीषे या बुध का संबंध भी खाक बनाकर उड़ा देगा । **धन की कल्पना लाल रंग मंगल की चीजों के साथ से और परिवार की इच्छा चांदी के थाल से पूरी होगी । चारपाई के चार पाए तांबें से नेक होंगे । अगर यह भी न हो तो पानी के चन्द घूट बड़ के पेड़ को डालने से शुभ होंगे । सन्तान को दरिया पार ले जाते समय पैसा (तांबे का) दरिया में गिरा कर ले जाये वरना मल्लाह अपनी मल्लाही के मुकाबले में सन्तान पर ही हमला कर देगा ।** सूर्य व चन्द्र दोनों ग्रह का मिला हुआ आपसी दोस्ती व अच्छा फल होगा सूर्य का प्रबल प्रकट होगा । पैदाहश मकान में चन्द्र की चीजें घोडा, कुओं तह जमीन का पानी न होंगें। अगर होंगे तो छत के नीचे न होंगे खुली रोशनी में होंगे । राज दरबार से इज्जत व कामयाबी होगी । आम सुख 17 साल और सन्तान का सुख विशेष कर होगा । उम्र 90 साल होगी । माता बेहक मंगल के आखिरी हिस्सा 28 साल उम्र में न होगी मगर माया की 28 साल उम्र से कल्पना न होगी ।

चन्द्र कायम :- जायदाद आदि जरूर पैदा हो या मिलें। पराई अमानत पास रह जाए और लेने वाला वापिस न जाये दिन की पूरी शान्ति हो ।

चन्द्र नं0 1 वृहस्पति नं0 शनि नं0 19 तो हर तरह की सवारी का सुख और लाभ होगा।

चन्द्र नं0 1 शुक्र नं0-7 तो सास बहू का संबंध मां-बेटी की तरह नेक और अच्छा मगर शादी सन्तान में गड़बड हो।

चन्द्र कायम और सूर्य नं०-4-10 वृहस्पति नं0-10-4 (साथ हो या चन्द्र से अलग हो) हो तो जरूरी सम्बन्धित राज दरबार के नेक नतीजे लाभ और हर प्रकार से लाभ होगा।

चन्द्र नं0 1-5 बुध 7-11 हो तो अक्ल कम धन ज्यादा या सम्बन्धित राज दरबार समुन्द्र पार लम्बे-लम्बे सफरों के नेक नतीजे होंगे ।

चन्द्र या बुध कायम सूर्य नं0 6 शनि नं0 6 तो घर की हालत सोने की जगह मिट्टी के तोए हों बुरा हाल अगर इसका कोई लडका सेहत का रद्दी आंखे खराब सी बाला हो तो वो लड़का 19 साल उम्र में गया हुआ सोना वापस दिलायें।

चन्द्र खाना नं0 2

(ऊच, किस्मत को जगाने वाला ,माता,

दुध चावल रूहानी हिस्सा, सफेद घोड़ा)

चन्द्र चढ़ा कुल आलम देखे - ग्रहण न देखे भाई तो देखे ।
माता- पिता तो जरूरी देखे, अपने या औरत देखे

नोटः- क बहिन न हो तो भाई तो जरूर होगें।

ख –माता–पिता स्वयं अपने जरूर होंगे वरना औरत के माता–पिता तो होंगे ही।

सबको ही वो तब तक देखे जब तक चीजें चन्द्र देखे
अगर न देखे तो न देखे चन्द्र होगा 12 में लेखे

ऐसे व्यक्ति की साधरणतयः बहिन नहीं होती मगर भाई जरूर होते हैं जन्म शुक्ल पक्ष का होगा वरना चन्द्र आखिरी उम्र में नेक फल देगा। 24 कदम तक बल्कि मकान के अन्दर ही कुए का सबूत होगा या समय पैदाईश चौबारा पर होगा जिसके नीचे कुआं या पानी भी चन्द्र का जरूर होगा वरना बुढ़ापा बुरा होगा। माता की उम्र का साथ चन्द्र के दो चक्र (48 साल उम्र) तक होगा। कम से कम **लम्बी उम्र के लिए मकान की तह में चांदी की चीजें दबाना सहायक होगा या चन्द्र के पानी का साथ शुभ होगा। माता की उम्र के बाद घर में चावल को पुराने करते जाना माता की आखिरी आशीर्वाद को बढ़ावा होगा।** दुनिया से अलग ही रहने वाला या छोड़ने वाला होगा। चन्द्र नं0 2 समान घोड़ा, माता-पिता से सुखा दौलतमन्द होगा।

नाखून वाली पोरी की जड़ पर जौं का निशान यानि चन्द्र हो तो केतू के घर की जड़ पर यानि खाना नं0 6 को खाना नं0 2 से देखता हो मगर केतू के साथ नहीं अकेला चन्द्र तो बचपन का जमाना चन्द्र की मण्डी और साफ रोशनी की तरह अच्छा प्रभाव का होगा। वरना चन्द्र आखिरी उम्र में नेक फल देगा।

अंगूठे के तीसरे हिस्से पर निचली पोरी पर निशान हो तो खाना नं0 2 में चन्द्र हो। यदि निशान सही हो तो अच्छा व नेक भाग्य हर तरह से अच्छा और यदि टूटा फूटा हो तो बचपन, जवानी आराम में और बुढ़ापा बुरा होगा, चन्द्र की जायदाद का बचपन व जवानी अच्छा होगा।

उम्र होगी 35 साल वरना 96 जब नर ग्रह का साथ हो चन्द्र ऊच्च नं0 2 वालों की खानदानी नस्ल कभी बन्द नहीं होती जिस तरह यह सूर्य से रोशनी लेता है इसी तरह ही यह चन्द्र रेखा वालों को जायदाद जद्दी अवश्य देता है चन्द्र के सितारा से चन्द्र का खाना नं0 2 होगा जो अपना ऊच्च फल देगा। जिसमें वृहस्पति खाना नं0 2 का अच्छा फल साथ होगा जन्म कुण्डली का ऊच्च चन्द्र वृहस्पति का खाना नं0 2 बन जाया करता है। जब वर्ष फल का राजा या खाना नं0 1 में चन्द्र हो जाए ऐसी हालत में दोनों का एक जैसा और अच्छा फल होगा, धन,

माता, माता-पिता का सुख हो, ज़माने की नेक हवा सहायक देगा। जब तक घर में पुराने चावल हों धन का लाभ 27 साल रहे दुनिया का आराम पूरा होगा। उम्र 96 साल हो। **स्वयं अपने मकानों की तह जमीन के साथ तह जमीन के या चलते पानी का साथ कायम रहे या रखे।**

चन्द्र नं0 2 वृहस्पति नं0 4 तो दोनों ग्रहों का अलग-अलग और ऊच्च फल होगा। माता-पिता से कम नेक न होगा। बल्कि बढ़े शुक्र की मुहब्बत हर दो मुहब्बत भी शामिल होगी। छत्तर होगा, दौलतमन्द, ध्वजाधारी हो, चन्द्र की रेखा भी अगर वृहस्पति पर समाप्त हो तो बहुत अच्छा प्रभाव होगा। यानि पिता पर घोड़ा वृहस्पति पर चन्द्र या बाप की ही हालत का बेटा होगा।

चन्द्र नं0 2 शनि नं0 4 हो तो अगर ऐसी उम्र रेखा चन्द्र के पर्वत पर समाप्त हो तो पितृ रेखा कहलाएगी और उससे पिता का सुख जरूर होगा जिसमें पितृ भाव नेक प्रभाव सम्बन्धित जायदाद जल्दी भी होगा।

चन्द्र नं0 2 बुध नं0 6 तो मातृ रेखा या मातृ भाव नेक मगर नजर कमजोर हो।

चन्द्र नं0 2 सूर्य नं0 4 शनि नं0 1 तो आलीशान, साहिब जायदाद हो।

चन्द्र खाना नं0 3
(घोड़ा, शिवजी भोले नाथ)

इतना तो फल जरूरी, कर देगा तीजे चन्द्र।
मौतों से बच रहेगा, सब माल व जान मन्दिर ।
मर मर्द न बचें तो, औरत नष्ट न होंगी ।
चाहे पापी नष्ट करते करते हों चन्द्र ही का पानी ।
चन्द्र घर जब तीजे आवे, माता भी वहां पिता कहावें ।
शुक्र बेल तो चन्द्र(क)साधु, मर्द बढ़ेगें बढ़ेगी आयु ।

(नोटः-क खाना नं0 3 में शुक्र कुल तारक या दुनिया के भव सागर से पार करने वाली लक्ष्मी और चन्द्र साधना या निधि सिद्धि का मालिक होगा।

मंगल बद मंगलीक न होगा, शिवजी हो के दया करेगा ।
स्त्रियों की भी पूजा होगी, अगर न होगी चोरी न होगी।
नहीं है कमी तेरे खजाने में, शिव शम्भु भोले नाथ ।
गरीबों में दया हैं करता, मदद यतीमां लम्बे हाथ ।

बुध के साथ 1 लड़की की पैदाइश पर चन्द्र की चीजों का दान शुभ होगा इस के लिए धन दौलत राहू ससुराल के समय या संबंध पर, कन्या दान शुभ बुरे से बचने के लिए केतू लड़के के जन्म पर सूर्य सम्बंधित वस्तुओं का दान इसके लिए जायदाद एवं परिवारिक सदस्यों को बुरे से बचायेगा एवं शुक्र औरत शादी पर, गाए आने पर नकली सूर्य की चीजों के दान के लिए चोरी, मौत एवं कष्ट से बचेगा। यानि वो चीजें जो गुड़ के रंग की तो हों मगर चमकदार न

हों, राशि फल का स्वयं कुण्डली वाले के लिए चन्द्र से पूरा नेक मंगल होगा जो दुनिया की सारी लड़ाईयों में और मैदाने जंग में पूरी जीत देगा। अब चाहे मंगल खाना नं0 4 में ही क्यों न हो पूरा नेक मंगल होगा। **लड़की की पैदाइश के समय चन्द्र की चीजों का दान कल्याण होगा।** अगर मंगलबद हो तो माता से अदावत हो मगर स्वयं अपने लिए शुभ हो। तारने वालों भोले भण्डारी शिवजी महाराज होगा जो बहरहाल मैदाने जंग के समानों की कभी कमी न होगी। दुनिया के हर एक लड़ाई में सहायक होता है। भाई बन्धु धन-दौलत की सहायता चोरी नुकसान से बचाता है। संक्षेप में उम्र के हर तीसरे दिन माह साल खूब ऐश का जमाना होगा। उम्र 80 साल होगी। **जब दिल रेखा अन्त पर वृहस्पति की जड़ को झुके तो ऐसा व्यक्ति बुरे प्यार से वंछित होगा और संसारिक संबंध में दिल का बहुत छोटा होगा।** चन्द्र नं0 3 दृष्टि खाना नं0 9, 11 खाली 1 कुण्डली में मंगलबद बिल्कुल न होगा, मंगल चाहे किसी घर में हो पर मंगल नेक होगा। दिमागी खाना नं0 27 गौर व खोज की शक्ति, मंगल से साँझा बुरी मुहब्बत से दूर संसारिक संबंध में दिल का बहुत छोटा होगा अगर मंगलबद किसी और तरह से हो रहा हो तो बुरा नतीजा हो, स्वयं मंगल का।

चन्द्र नं0 3 मंगल नं0 4 तो दोनों ग्रह आपस में साथी ग्रह मंगल पूरा नेक, हौसला व इज्जत बहुत ज्यादा, दिल की शक्ति बुरी भली दोनों तरफ की ज्यादा शरारती ढंग से जबाव देने की शक्ति व आदत हो।

चन्द्र नं0 3 मंगल नं0 10 तो मंगल नेक से सम्बन्धित दुनिया से सहायता मिलेगी।

चन्द्र नं0 3 बुध नं0 11 तो चन्द्र के चक्र के समय बाकि 3 बचने वाले मकान की तरह की जिन्दगी। शेरों की बैठक सा हाल रहे।

चन्द्र नं0 3 वृहस्पति नं0 9 बुध नं0 5 तो अच्छा नतीजा होगा।

चन्द्र खाना नं0 4

(पक्का घर व घर का)

ग्रह फल का, किस्मत को जगाने वाला,

तालाब, कुआं, चश्मा, शान्ति, कपड़ा बजाजी

सोना नहीं तो चान्दी, दूध नहीं तो पानी,
पानी भी न सही तो, गुरुदेव ही की वाणी,
घर चौथे चन्द्र होने पर, होगा जावदानी हमेशा
पिता को तारे माता को तारे, तारता वो सब घर को है
माया से तारे दया से तारे, तारता वो कुल अपनी है
गर न मारे घर न मारे, मारता मौत निमानी है
नाभि देखी आंख भी देखी, देखी तो पड़पड़ी भी है

जो न देखा, राहू न देखा, नहीं देखा केतू है
पाप नहीं वो इस घर करते, मदद तो इनकी होती है
तारे चाहे तारे मर्जी, कस्म पाप की होती है

नोट:- *क खाना नं0 4 में मंगल नाभि पेट बद हो सकता है, शनि आंख जहर भरी जहरीला सांप हो सकता है। शनि का हैडक्वार्टर पड़पड़ी मौत पापियों के झमेले का मैदान हो सकता है मगर पाप या राहू केतू के बुरे करने का मैदान न होगा।*

जद्दी कारोबार शुभ फल का होगा। जन्म शुक्ल पक्ष हो तो बुढ़ापा अच्छा नहीं तो बचपन अच्छा और राहू केतू का साथ ही होता गिना जाएगा कपड़ा बजाजी के कामों में माता का साथ निश्चित नहीं। सन्तान 12 साल होती रहे। दिमागी खाना नं0 28 शुक्र के साँझि पुरानी स्मरण शक्ति शुक्र का बुरा फल न होगा । शनि का 1/3 समय (3 साल) सन्तान पैदा होने के समय होगा। चन्द्र अब समान दूध होगा। यानि जब या जिसका चन्द्र नं0 4 हो तो उसे शुभ काम करते समय दूध का भरा बर्तन बतौर कुम्भ रखना बहुत शुभ होगा उम्र 85-86 साल होगी । घोडा, माता, जायदाद जद्दी खेती की जमीन, दैवी सहायता, बाग-बगीचे, आमदान, कुआं, पानी, समुन्द्र, दूध, बदल शान्ति सफर मकान रिहायशी की तह जमीन, रूहानी शक्ति और खुदाई पहुंच, खुशी गमी की रेखा कपडा बजाजी जिसके लिए माता का साथ सहायक होगा और माता से अलग किसी और जगह दूर होकर **बजाजी के काम का फल गन्दा।** चन्द्र के पर्वत से बुध की तरफ को कई खत गए एक साथ जो केवल चन्द्र के पर्वत के अन्दर ही अन्दर रहा तो सफर जरूरी ही कहलाता, दुसरा सेहत रेखा के नाम से मौसम हुआ ।

चन्द्र की सफर रेखा- मामूली सफर :- चन्द्र को सफेद रंग घोडा प्रदान किया है जो वास्तव में दरियाई या समुन्द्री कहलाता है, जो समुन्द्र पर चान्द की चांदी की तरह दम के दम में फिर आता है। (चन्द्र नं0 4)अंगुठे की निचली पोरी की जड़ पर हो, (जौं का निशान) यानि चन्द्र हो, राहू केतू दोनों साँझा काम करने का मैदान यानि खाना नं0 8 की जड़ खाना नं0 4 नाभि में (मगर दोनों ग्रहों का साथ न हो वहां खाना नं0 4 में और केवल चन्द्र अकेला ही खाना नं0 4 मे हो) तो इस व्यक्ति की उम्र लम्बी और बुढ़ापा अच्छे प्रभाव का होगा और इसका जन्म शुक्ल पक्ष का होगा अब उम्र के संबंध में राहू केतू का संबंध न होगा । चाहे खाना नं0 2, 8, 6-12 मे कहीं भी हो । अगर जन्म शुक्ल पक्ष का न हो तो राहू केतू का संबंध साथ न होगा । चन्द्र के अपने घर का जो अच्छा फल हो सकता हैं वो होगा। **अगर असल में माता मर भी जाए तो सौतेली माता ही कायम हो जाएगी ।** जमीन से लाभ हो और शुक्र नीच से भी लाभ हो यानि 12 साल सन्तान होती रहे उम्र 85-96 साल की हो क्योंकि दिल रेखा (चन्द्र) के अच्छे होते हुए शुक्र का बुरा फल होगा और शुक्र के साथ चन्द्र केवल समय व शक्ति का होता हैं।

आंख : – अगर पेट के बीच से पेट के अन्दर का हाल बताने वाली चीज नाभि को चन्द्र का घर खाना नं0 4 माना गया तो चेहरे पर ऐसी शक्ति वाली चीज आंख को भी खाना नं0 4 माना गया है। आंख का खोल, डेला या पुतली का अस्तित्व सूर्य चन्द्र होता हैं, दाई आंख की पुतली सूर्य, बांई आंख की पुतली चन्द्र नहर बिनाई का मालिक शनि और पजर के प्रभाव का मालिक मंगल होगा । आंख की गोलाई, लम्बाई, गहराई आदि बुध व वृहस्पति यानि गहराई अन्दर को धंस जाना वृहस्पति का संबंध शनि और बाहर को निकला होना, अभार वृहस्पति का संबंध सूर्य-चन्द्र से , गोलाई या शक्ल आदि बुध से सम्बन्धित होगी। आंख चन्द्र का खाना नं0 4 चन्द्र व चन्द्र घर खाना नं0 4 (मन की विशेष सिफ्त, चन्द्र (माता) से बढ़कर बच्चे का सारी दुनिया में और कौन सहायक ग्रह होगा जो सांप की मादा सर्पनी से भी उसके बच्चों को छुडा लाता है और सांप की नस्ल बाकी है। अगर सिर रेखा से आगे बढ़ कर दिल रेखा में मिल जाए तो दिल की पूरी शान्ति और आशायें पूरी होगी। पराई अमानंत लेने वाला वापिस ही आएगा और अमानत ऐसे व्यक्ति के पास ही रह जाएगी।

चन्द्र नं0 4 वृहस्पति नं0 10 जो फकीर को रोटी देकर आशीर्वाद की जगह जहर दिये जाने के दोष वाला प्रभाव मिले, नेकी की सजा पाने वाला प्रभाव हो चन्द्र नं0 4 शुक्र नं0 10 तो माँ और औरत दोनों आपसी अच्छा और नेक प्रभाव।

चन्द्र नं0 4 शनि नं0 9, 11 तो मां बाप दोनों की तरफ से हर तरह से शरह किस्मत और भले लोग हों।

चन्द्र नं0 4 बुध नं0 10 समुन्द्र पार लम्बे-लम्बे सफरों के द्वारा सम्बंधित (बुध के काम) नेक नतीज़ा होंगे।

चन्द्र नं0 4 राहू नं0 10 तो राहू का बुरा अगर बुध पर होगा यानि सिर फट जाए।

चन्द्र नं0 4 मंग़ल नं0 10 तो अन्त में गुस्से वाला होगा। सरकार से लाभ उठाने वाला। मंगल नेक के प्रभाव से बढ़े (सम्बन्धित धन दौलत)

चन्द्र नं0 4 और कायम, सूर्य नं05 वृहस्पति नं0 2, 9 और कायम तो अंगीकार बुरा हो।

चन्द्र नं0 4 नं0 5 दोनों कायम हो तो विषय राजा हो

चन्द्र खाना नम्बर 5
चकोर (परिन्दा)

आठों ग्रह चाहे इस के, दुश्मन घरों रहेंगे ।
यदि चन्द्र पाँचवे हो, सब पानी हो बहेंगे ।
दुश्मन चाहे इसके कितने हों, मुल्कुलमलूक हों ।
इक सर्द आह के खिंचते हों, सब खाकों भस्म होंगे ।
दुश्मन ग्रह 9-11 बैठे, नेक नतीजे देते हैं ।

गर वह ग्रह 2-3 में आवें, यम बिजली के होते हैं ।
हाल ऊपर का उल्टा होवे, दोस्त ग्रह जब आते हैं ।
2-3 घर 9-11 होवें, पानी तक भी फूंकते हैं।
चन्द्र बैठा पाँचवें होवे, चलता वह घर 4 ही है।
आगे पीछे दोनों चलता, जलता घर 10: 12 है।

धर्मात्मा होगा राजदरबार में इज्जत होगी जंगल व पहाड़ की सैर का शौकीन होगा मगर हमेशा मुसाफिर न होगा। अगर होगा तो बात मुसीबत चिड़ियों से बाज लड़ाने की हिम्मत का मालिक होगा। माता व नर सन्तान पर बुरा प्रभाव न होगा। चाहे पापी ग्रहों का साथ हो। नर सन्तान पांच से कम न होगी राहू ठण्डा होगा। खाना नं0 5 का सूर्य के घर में चन्द्र का प्रकाश जाहिरपन होता है इसलिए कम जंगल पहाड़ की नमी मगर दौलत की बरकत और नौ साल सफर पर पेश रहे। उम्र 10 साल, दिमागी खाना नं0 20 कद व कामत व औसतन सबकी योग्यता। सूर्य से साँझा हो।

चन्द्र नं० 5 सूर्य नं० 10 हो तो उम्र 12 दिन हो।
चन्द्र नं० 5 सूर्य नं० 11 तो उम्र 12 साल हो
चन्द्र नं० 5 वृहस्पति नं० 9 बुध नं० 3 तो बुरा फल होवे।
चन्द्र नं० 5 बुध नं० 11 तो द्वारा या सम्बंधित राज दरबार समुन्द्र पार लम्बे लम्बे सफरों के नेक नतीजे हों।

चन्द्र खाना नम्बर 6

(खरगोश मादा, सफर) केतू का पूरा चन्द्र ग्रहण होगा।

जैसी करनी वैसी भरनी, नहीं कीती तो कर के देख ।
6 हो चन्द्र, 12 देख, आठवें दूजे, चौथे देख ।
गर हो यह घर रवि सब, चन्द्र होगा मिट्टी तब ।
कुआँ लगे, माता मरे, मरेगी आल औलाद भी ।
घर अपने के काम न आवे, माया उस इन्सान की ।
घर अपने खुद के लिये, कोई न मन्दा जवाब ।
खोह वरते जो खेती दुनिया, मिट्टी मौत खराब ।बब

नोट:- चन्द्र नं0 6 में केतू नीच का फल देता है और खुद चन्द्र भी मन्दा होगा।

साहिब युक्ति प्रयोग करें व अक्लमन्द हो, 60 साल उम्र या चन्द्र के विशेष समय(24 साल उम्र) में कुंए खोदना अपनी माता और चन्द्र की शक्ति के लिए बुरी कब्र खोदना खुदवाना होगा। विशेष कर जब कुओं आम लोगों के काम आये या बाहर खेती की जमीन में लगे। दिमागी खाना नं0 30 दबाव, बोझ मसादीपन की शक्ति, केतू से साँझा जैसा मुंह वैसी चपेट अच्छे से अच्छा, बुरे से बुरा अगर बुध माता खानदान को उजाड़े तो चन्द्र पिता के खानदान को मारे। अक्ल कायम साहब युक्ति मगर लड़कियां ज्यादा हो जन्म से 6 साल तकलीफ हो उम्र 80 चन्द्र

जब केतू से खाना नं0 6 में खराब हो तो माता की कुआं लगने के बाद फौरा मौत सन्तान की मौत व सफर में (दरयाई व समुन्द्री) नुक्सान हो। दूसरा कोई आदमी गुमराह कर दे अंगूठे की बीच की पोरी की जड़ या पर हो "जौं" का निशान यानि चन्द्र हो राहू के घर खाना नं0 12 की जड़ या खाना नं0 6 में (मगर राहू के साथ नहीं केवल अकेला ही चन्द्र वहां होगा) तो जबानी का जाना अच्छा प्रभाव का होगा। जन्म इसका अमावश का होगा।

बचपन, जवानी, बुढ़ापा चन्द्र का निशान (जौं का निशान केवल अंगुठे पर उम्र के तीनों हिस्सों का हाल बताया करता हैं अगर यह निशान हो- हिस्सा एक चन्द्र न०-6 अंगुठे के नाखून वालों हिस्से पर - यदि सही व उस पर हों तो चन्द्र कायम बचपन जवानरी बुढ़ापा तीनों में आराम पाए और दौलतमन्द हो।

यदि टूटा फूटा हो चन्द्र दुश्मनों से खराब बचपन और जवानी बुरी बुढ़ापा में सुख नसीब हो । सुख गृहस्थी ।

अंगुठे की नाखून वाली पोरी और बीच का जौं उम्र के दो हिस्से बचपन और जवानी पर प्रभाव करेगा । साफ हुआ तो बचपन और जवानी अच्छी होगी जन्म शुक्ल पक्ष का और अगर फूटा हुआ तो बचपन और जवानी का झुकाव सन्तोषजनक न होगा बल्कि खराब होगा ।

चन्द्र नं0 6 बुध नं0 12 तो माता भाग्य रद्दी बाकी 6 बचने वाले मकान की तरह हालत या तकिया मुसाफिर का सा हाल होगा। चन्द्र माता व माता खानदान और केतू अपना बुरा प्रभाव देगा । ना औलाद आराम पाये ना यार दोस्त सहायता करें । हर समय गर्दिश अयाम के चक्कर में घूमता फिरे। यह एक बुध का दौरा (बुध नं0 1 आपसी वर्षफल) होगा । मगर खुदकशी या बिना वजह गरीबी न होगी।

चन्द्र नं0 6,मंगल बद नं0 4 या मंगल नं0 8 या बुध नं0 16 तो कुण्डली वाले की माता इससे पहले मर जाए (उसके बचपन में)

या बुध नं0 8 मंगल नं0 6 या 12 तो ऐसा आदमी माता से पहले गुजर जाए यानि बचपन में ही।

चन्द्र न ही साथ हो और न ही देखता हो तो ऊपर की हर दो हालतों में अगर दोनों जिन्दा हों तो दोनों ही एक दूसरे के लिए बुरे बल्कि दोनों ही दुखिया होंगे।

चन्द्र खाना नम्बर 7

(राशि फल का)

न तीजे, वृहस्पति सातवे, कितना ही कंगाल हो ।
खुद अकेला चन्द्र 7 वें, लम्बी अवतार हो ।
औरत आये, माता गई , पर न जावे लक्ष्मी ।
अगर हो घर में चन्द्र चीजे, दूध पानी हर घड़ी ।

जायदाद जद्दी बेशक इतनी बारीक न होगी मगर नगद माया बहुत होगी ।

चन्द्र के वक्त चौबीस । पच्चीस शुक्र 12, 6 साल उम्र में शादी होना दूसरा शुभ होगा । जिस पर चन्द्र व शुक्र दोनों ग्रहों का आपसी झागडा़ खडा़ होगा और केतू के नाग हानि हमले और इसके मासूम बच्चों पर परेशानीयाँ ज्यादा और अचानक धोखे और नतीजे बुरे प्रकट होंगे । शयरी और ज्ञान ज्योतिष का माहिर भी हो सकता हैं नहीं तो चाल चलन के शक्क से मुक्त न होगा अगर होगा तो तिलस्मी भूत ही होगा । अक्ल की बारीकी या खुदाई पहुंच दर्जा उत्तम होगा। अगर फकीरी भी हो तो अव्वल और ऊंच दर्जा की और नेक प्रभाव की होगी । दिमागी खाना नं0 31 शुक्र से साँझा रंग रूप मे अलग-अलग आदि की शक्ति या दूध से दही और दोनों की शक्ल और रंग में फर्क मालूम कर लेने का मालिक होगा । विस्तृत रुप से पूरे नेक प्रभाव का लक्ष्मी अवतार होगा चन्द्र अब बुध का फल खराब कर देगा। मगर चन्द्र स्वयं अपना अच्छा फल रखेगा या राजदरबार में सम्मान, माता, सन्तान, चौपाया (घोडा़ बगैरह सवारी) का सुख होगा 2 चन्द्र अगर पापी ग्रहों से बुरा हुआ हो तो 15 साल करीब अलग रहे विशेष कर जब शनि का प्रभाव उम्र फिर भी 85 साल होगी बहू बेटी और मां बेटी बहिन की मुहब्बत से अलग और इश्क फायदा से दूर सहने वाला और दूध की तरह साफ दिल होगा । इस घर का चन्द्र खुश्की या शुक्र के घर से दुश्मनी करता हैं और ठोकरें मारता है यानि जिस घर में शुक्र की कामदेव की शक्ति ज्यादा होगा, मगर स्वयं टेवे वाले के लिए दुनिया का पूरा सुख व नेक औरत का आराम होगा।

चन्द्र नं0 7 और शुक्र मय राहू या केतू चाहे किसी भी घर में ही तो खराब में कंकर रोडा़ पत्थर या गृहस्थ में नकली शुक्र (राहू-केतू) हमले अचानक और जिनकी कभी आस तक न की जा सकती हो । (राहू- संसारिकों या नामों से सम्बन्धित) हवाए बंद (केतू-बच्चों मासूमों पर दुःख मुसीबत दैविक हमले जिन भूत सारे फर्जी और शक्क की बुरी हवाएं) होंगी ।

चन्द्र वृहस्पति नं0 7 तो बच्चों मे तकलीफ हो ।

चन्द्र शनि नं0 7 तो हथियार से मौत ।

चन्द्र नं0 7 शुक्र नं0 1 सास बहू कर झगडा़ हर समय क्लेश का घर हो जाए

चन्द्र नं0 7 बुध नं0 1 तो नशाबाजो का सरदार हो ।

चन्द्र खाना नम्बर 8 (नीच)

किस्मत को जगाने वाला उम्र के लिए लम्बा समुन्द्र व स्वयं समुन्द्र बालाई आमदल शारीरिक बज़स उम्र संसारिक धन-14 बुरा प्रभाव होगा। मिरगी या मुर्दा दिल भी हो सकता हैं छता हुआ या छत के नीचे का कुआं ला औलादी का सबूत होगा ।

सूर्य मन्दा - पापी बुरे, चाहे मंगल बद भी हो ।
राहु केतु बुध मिले, गुरु शुक्र नीच भी हो ।

खेशें अकारब, मालों दौलत, अपने और बेगाने को ।
चन्द्र 9वें सब सब हारे, पर न हारे उमर को ।
सुसराल तारे -दामाद तारे, तारेगा मामों को भी ।
उल्टी गंगा होके तारे, उमर के आखिर भी ।

धार्मिक तौर पर व चन्द्र का चन्द्र की जाती चीजों पर बुरा फल न होगा । दिमागी खाना नं0 32 सफाई शनि से साँझा या जाहिरा भोलापन व मान अवश्य मगर अन्दर से कपट की कान और गन्दी नाली के पानी की किस्मत का मालिक होगा। यह गन्दा पानी या इसकी जायदाद जद्दी और खेती के काम शुक्र (औरत) के घर उड़ कर जानी हुई मालूम होगी और स्वयं उसके अपने काम की न होगी अगर होगी तो गर्दिश पहाड़ होगी और 6 साल तकलीफ भी होगी । अगर जौहरी या जुएबाज ही हो तो बदबख्ती ही होगी । आम तौर पर चन्द्र या कुएं का नजदीकी साथ न होगा अगर होगा तो अमृत की बजाए लानत के फैर पैशब से भरा तालाब होगा । उदाहरण के तौर पर चन्द्र जो उम्र का मालिक है जब खाना नं0 8 में हो तो कुण्डली में राहू का बुरा प्रभाव कभी न होगा लेकिन अगर वह स्वयं मंगल बद खाना नं0 8 में हो तो माता की मौत, बीमारी लोगों से दुश्मनी की खराबियां और स्वयं अपने दिल की खराबियों का अन्य मिरगी वगैरह की बिमारी होगी जिसके निशानी कुआं खुश्क हो जाए तो माता समाप्त हो या चन्द्र नीच का नीचे दिया हुआ फल पैदा हो जाए ।

नीच हालत : - चन्द्र की जाती चीजों पर कर्म धर्म से लापरवाह, बदबख्त, मुसीबत पर मुसीबत, मुन्दरजा वाला सब खराब । लडकियां ज्यादा, जंगल पहाड़ की गर्दिशव कम रौब होगा मानो कि संसारिक फल बुरा होगा । राजदरबार में दुश्मनी ज्यादा और 6 साल तकलीफ रहे वास्तव में यह घर मंगल बद और शनि का हैं जो बुरा ही फल पैदा करती हैं । फिर भी उम्र विशेष कर माता की जिन्दगी में लम्बी होगी और 80 साल तक होगी और घर में घोड़ा वगैरह चन्द्र की चीजें सामान जरूर होगा। जो मालिक की मौत न होने देगा । माता का बेशक सहायक न होगा । कुण्डली वाले की अपनी उम्र जरुर लम्बी होगी चाहे स्वयं चन्द्र की बाकी सब चीजें चन्द्र के नीच फल की होगी उम्र समय देगा और परिवारिक नस्ल बंद न होने देगा । मंगलबद से चन्द्र के पर्वत को रेखा या शाख हो तो तकलीफ व लडाई झगड़े सदमा से मौत होगी खराब टूटी-फूटी रेखा से मायूसी बुजदिली और सुस्ती होगी । अंगुठे के नीचे हिस्से की जड़ का "जौं " केवल बुढापे से सम्बन्धित है । खराब और टूटा फूटा "जौं" का निशान बुढापे में बुरा भागी और बदनसीबी के कारण ही बस जगह सूर्य रेखा का संबंध जरुर साथ देगा यानि अगर इस निचले हिस्से की जड़ पर यानि शुक्र के पर्वत के खात्मा और अंगुठे के इस निचले हिस्से के बीच में अगर "जौं" का निशान सालम हो तो बुढ़ापा अच्छा सुख वाला अगर टूटा फूटा हो तो बुरा हाल होगा।

चन्द्र खाना नम्बर 9

जायदाद जद्दी, दुनिया का दैविक समुन्द्र,
साधारणातयः राहू के ग्रहण से मारा हुआ नसफ चन्द्र होगा ।

चन्द्र 9 वें कभी ही होगा, घड़े बराबर मोती होगा ।
शुतर-मुरग का अण्डा होगा, मात पिता अमोलक होगा ।
बुध शुक्र और मंगल बद, चन्द्र होते मांगेसब ।
घर वह इसे घर आते हों सर झुकायें तारते हों ।

ऐसा व्यक्ति चन्द्र की नेक शक्ति में मस्त होगा चन्द्र जब 24 साल शुक्र उम्र में जारी हो तो वही प्रभाव जो चन्द्र वृहस्पति चन्द्र-सूर्य, चन्द्र वृहस्पति चन्द्र का आन्तरिक तौर पर नेक प्रभाव देगा , क्योकि यह घर सूर्य का माना है जिसके सामने चन्द्र अलग और जाहिरा प्रभाव न देगा । कर्म धर्म तीर्थ यात्रा का शुभ नाम यात्रा ने अर्थ व काम का आदमी भला लोग, भले काम और नेक तबीयत वाला और दुख्रियों को आराम देने के नसीबा वाला होगा और 20 साल कर्म धर्म तीर्थ यात्रा जरुर हो। उम्र 75 साल होगी दिमागी खाना नं0 23 ज्ञान रियाजी के असूलों की शक्ति का (बुध से साँझा) मालिक होगा ।

चन्द्र नं0 9 वृहस्पति नं0 5 को किस्मत का बहुत नेक प्रभाव पानी की मामूली सी किस्ती बड़े भारी बेड़े का काम देगी ।

चन्द्र खाना नम्बर 10

रात का समय तह जमीन आम पानी मगर कड़वा खाना नं 2 की ग्रहों की चीजों से रक्षा व पालना होगी अगर वो खाली हो तो वृहस्पति बैठा होने वाले घर की सम्बन्धित चीजों से सहायता होगी ।

चन्द्र 10वें सांप की माता, बच्चे क्या व छोड़ेगी ।
उम्रे ख्वाँ की उल्टी किश्ती, कोई न पीछे छोड़ेगी ।
चाहे कि
जिस की खबर को वह गये, बीमार मुर्दा हो गया ।
मीठा शरबत देते देते, ज़हरे कातिल हो गया ।
पहाड़ से दरिया था चलना, चल पड़ा कोहसार ही।
मकान मन्द - सुसराल मन्द, और मन्द हुआ है चाँद भी ।
गर जिसका
चन्द्र 10वें - दुश्मन दूजे या तीजे होती है आजार ही,
ऐसे आदमी का पेशा हिकमत बेमायनी होगा

अगर होगा तो कब्रिस्तान का ठेकेदार होगा

चाहे वह हिकमत का ज्ञान का साहिब कमाल होगा जो होगा तो जरानायाब होगा । स्वयं चारे डाकू का संबंध कभी उसे आम होगा। पूरा धोखेबाज मंगलबद

साँझा, तैरते को डुबा लेने वाला दिमागी खाना नं0 34 जगह मुकाम की याद का मालिक होगा। चन्द्र शनि (शनि नं0 1 आए) दोनों का खराब फल होगा कम दौलत हमेशा बिमारी तकलीफ माता से अदालत आंख की नकल व हरकत से बदनामी आदि हो। आम तौर पर 42 साल दौलत आये मगर उर्ध्व रेखा बगैरह के ढंग की उम्र 90 साल होगी।

चन्द्र खाना नं0 10 शनि नं0 4 तो पितृ रेखा माता-पिता का अच्छा प्रभाव, मगर स्वयं उसे औरते (चाहे बेवागान हों जो उसके सहारे चलने वाली हो चाहे धोखा देने वाली बाजारी औरत या प्रेमिका) बरबाद करें बायश्चर्खा बगैरह धन दौलत की बरबादी करेगी।

चन्द्र नं0 10 शनि नं0 3 तो धन दौलत शनि के ढंग का उर्ध्व रेखा बुरी हालत चोर राह जन फिर भी बुरा हाल पानी से मौत अपने ही कुएं में।

चन्द्र नं0 10 सूर्य या वृहस्पति नं0 4 तो खुश्क कुएं अपने आप पानी देगा।

चन्द्र खाना नं0 11

(चांदी मोती सफेद कुआं उड़ते बादल)

चन्द्र अकेला चन्द्रमा 11वें होवे, होगा माखन माझा।
दुश्मन साथी या कि तीजे, चन्द्र नष्ट ही होगा।
शुक्र बुध या पापी भाई, चोट लगे न दें दरियाई।
घर गॉव सब तेरे भाई, कोठी हाथ न लायें।
इस घर के चन्द्र का कोई भरोसा नहीं
पल में वह तूफान पे होता, पल में होता वां निशान नहीं।
माखन में तो घी भी होता, पर चन्द्र में तो इस घर में जान नहीं।

खाना नं0 11 का चन्द्र सजर निरपक्ष या बुरा ही होगा।
न बुढ़ी मरे न चारपाई छूटे या दादी पोते को तरसती रहे लेकिन अगर घर में गढ़ा हुआ पत्थर हो *या वो दूध से पत्थर को* धोती रहे *तो चन्द्र का माखन और परिवार बढ़ता रहे।* नहीं तो दादी पोता का झगड़ा होगा। *कुण्डली वाले के लड़के की 12 साल उम्र* तक दादी पोता दोनों से एक ही हो या शनि के समय तक दोनों ही न हो वर्षफल में चन्द्र नं0 1 में आने पर दुश्मन मंगल, राजदरबार से नेक मजमोई 12 साल राजदरबार में खूब दौलत आए। उम्र 90 साल दिमागी खाना नं0 35 पैशानी वाक्यात गुजरे हुए की याद वृहस्पति से साँझा शुक्रवार की शादी, बुधवार की बहिन शनि का शुरू मकान सुबह तड़के का दान और शाम का गुरू उपदेश सब बुरा। फल ही देंगे। चन्द्र से चन्द्र का अच्छा व नेक फल होगा।

चन्द्र नं0 11 बुध नं0 3 तो न केवल कुण्डली के खाना नं0 3 भाई-बन्धु का बुरा फल होगा, बल्कि 3 बचने वाले मकान का नेक प्रभाव भी (अगर कोई अपना जद्दी हो भी) हर तरह से निक्कमा और खराब होगा।

चन्द्र नं0 11 बुध नं0 3 तो न केवल कुण्डली के खाना नं0 3 भाई-बन्धु का बुरा फल होगा, बल्कि 3 बाकी बचने वाले मकान का नेक प्रभाव भी (अगर कोई अपना जद्दी हो भी) हर तरह से खराब होगा।

चन्द्र नं0 11 बुध नं0 5 तो दोनों घरों का अपना-अपना प्रभाव होगा और नेक होगा।

चन्द्र नं0 11 दोस्त ग्रह नं0 3 दुश्मन ग्रह नं0 3 चन्द्र को देखे तो दिल रेखा से ऊपर की तरफ को निकलने वाली शाखे तरक्की का कारण और नेक प्रभाव देने वाली और नीच को निकल भागने वाली लकीरे कमजोर और बुरा प्रभाव देने वाली होगी।

चन्द्र खाना नम्बर 12

खुशामद, सफेद बिल्ली,

मीना का पोनी सहायक होगा।

चन्द्र दूजे पेट गिना है, रेत हुआ घर 12वां ।
खेती भी जो पानी से उजड़े, बसदे घर उजाड़ा ।
नीम बूढ़ी (मंगल 12) से पानी टपकता रहा, माता बूढ़ी
माता / चन्द्र / बूढ़ी का पोता भटकता रहा ।
या
पानी पे पानी बरसता रहा,
बीकानेर (वह घर जहाँ बुध हो) बेचारा तरसता रहा ।
यानी
जद्दी का वह गनीमजायदाद होगा,
नौमन लौहा हर घड़ी अफीम होगा ।

दिमागी खाना नं0 36 राहू से साँझा समय गुजरे मर्द पछताए आता है याद मुझको गुजरा हुआ जमाना कभी हम भी बाइकबाल थे, तुम्हें याद हो किन याद हो-पदरम सुल्तान मगर अब तो कहां है कि जो अब जबाव वो केवल आँसुओं से ही देगा। अपनी और अपनें ससुराल की जायदाद पर खराबी होगा। बल्कि कम नसीब स्याह बख्त या ऐसा हाल ही होगा। स्त्री सुख ही अक्लमन्द अगर 45 साल या उम्र पानी से खौफ उम्र 90 साल, मगर जायदाद का व दौलत का फल मध्यम सम्बन्धित राहू ससूराल स्वयं और स्वयं अपनी दौलत।

यदि निशान टूटा फूटा हो चन्द्र दुश्मन ग्रह से खराब हो चन्द्र की जायदाद का केवल बचपन अच्छा, बुढ़ापा व जवानी बुरी होगी। (चन्द्र नं0 12, सूर्य नं0 2, मंगल नं0 1) (दरिद्री आलसी निर्धन हो)

****

शुक्र जगत् लक्ष्मी

श्रीलक्ष्मी जी, शुक्र सफेद, रंग (दही) दुनिया की मिटटी जमाने की लक्ष्मी, माता, मर्द की औरत से किसी को बीच न किया इसलिए हर एक ने पसन्द किया और खूद नीच किया।

शुक्र आंख है शनि की पाई, तरफ चारों जो देखता है
शनि अगर कहीं जावे भरा, बली वो अपनी देवता है।
साथ मंगल के चन्द्र बनता, बुध केतू जिसमें न हो,
शुक्र अकेला बुरा न करता, बैठा चाहे घर किसी ही हो
घर 7 वें जब अपने बैठा, असर नजर रूह अपनी को
दे देता ग्रह उसी को है, यह बैठा जो घर सातवें हो
चन्द्र भला या बुध हो अच्छा, बुरा शुक्र नहीं होता है
घर तीलें में जब आ बैठा, शुक्र मर्द हो जाता है
नौवें मंगलबद है या होता, छठे में खुद ही मन्दा है
काग रेखा है तख्त पर होता, चौथे औरत दो होता है
१२ दूसरे सबसे उत्तम, दासवें शनि खुद बनता है
घर पांचवें में पक्की मिटटी, 11 लटटू बन घूमता है
घर आठवें ग्रह सब ही मन्दे, शुक्र भी मन्दा होता है
भव सागर से पार है करता, शुक्र गऊ जब होता है

शुक्र रेखाः-

शुक्र की रेखा वाले को गुस्सा सूर्य तबाह करता और तराजू (बुध) की तरह निरपक्ष आबाद करती है। चन्द्र और वृहस्पति ने बुरा प्रभाव किया शुक्र जब तक शनि के मन्दे कामों से दूर रहे नेक है।

शुक्र-आंख एक काम दोः-

अगर दो कतारों में कर देवें और पढ़ाने के लिए गुरू वृहस्पति सामने बैठ जाए तो शुक्र और शनि हमेशाा सूर्य को धक्का मारने वाले होंगे। मगर वो बृहस्पति के पास बैठा है इसलिए इसका कुछ बिगाड़ नहीं सकते। शनि के एक तरफ चन्द्र और मंगल दूसरी तरफ सूर्य और पीठ पीछे शुक्र है जो एक आंख से काना है हर समय शनि को छेड़ता है कभी कहता है मुझे नजर नहीं आता मुझे देखकर बता दो मुझे कहता है कि मैं दूर बैठा हूं मुझे पूछ कर बता दो। चाहे औरत शनि को हरदम साथ रखती है और आंख से शरारत करती है शनि की आंख कभी देखती है कि गुरू न देख लेवें कभी देखती है कि कहीं दूसरे साथी न देख लें वो दिखलावें का इतना स्पष्ट है कि शुक्र की बूरी शक्ल व्यक्त भी नहीं करना चाहता मगर शुक्र शनि के हर समय साथ होने के कारण फिर शनि को धक्का मारता है और शनि बीच बचाव करता है और आंख से किसी को पता नहीं लगने देता स्पष्ट तौर पर यह है

कि शनि आंख कभी आगे कभी पीछे कभी स्पष्ट तौर पर उसी समय फिर जादू की आंख औरत से प्यार करती है। कभी गर्म कभी सर्द कभी खूब खिली कभी चुराई नजर से देखने वाली होती है कभी दांए, कभी बांए हर तरह से और हर रंग में रंग बदलने वाली हो जाती है यही आंख इतने तंग आकर शुक्र की ही दे दी है कि स्वयं औरत इससे ही देखती रहे। (यही हाल औरतों का है जिन पर शनि का जोर होता है शुक्र की भोली मिटटी दुनिया में शरारत न करती अगर शनि से यह आंख न लेती और न ही शुक्र और सूर्य की दुश्मनी होती और सूर्य का लड़का शनि भी सूर्य के विरुद्ध न होता। अगर कानी औरत तुला राशि के खाना नं-7 में न जाती क्योंकि इस राशि को अगर शनि से ऊँच करना है तो सूर्य नीच करेगा। बाप बेटों में अपासी दुश्मनी से न डर रहेगा न जोड़ और जमीन और दुनिया मं यह तीनों ही चीजें बायश जंग होगी। शुक्र हर एक और हर एक के सुख का मालिक ग्रह है जो राहू केतू के सम्बंधित प्रभाव का नतीजा है। और जिसमें बुध का असर हमेशा मिला हुआ गिना जाता है और खुद इस ग्रह का नतीजा केतू है न इस ग्रह ने किसी को नीच किया और न ही केतू ने किसी को जान से मारा। इस ग्रह की आम अवधि (3 साला दौरा) समय में पहले साल में मंगल शामिल और मंगल प्रबल होगा। साल के बीच में इस ग्रह का स्वयं अपना फल (राहू केतू का सम्बंधित प्रभाव)और आखिरी साल में खाली बुध का असर होगा। बुध लड़की चाहे शुक्र जिस्म की मिटटी और मंगल खून (मैदान) जंग व बच्चा पैदा करने की ताकत गिने गए है यानि लड़की के शरीर में जिस दिन से (मासिक आयाम का खून) बच्चा पैदा करने की ताकत पैदा होवे उसी दिन से यह ग्रह राहू केतू के आपसी प्रभाव का मैदान जंग शुक्र के नाम से गिना जाएगा और शुक्र के नतीजे केतू (लड़के बच्चे) की छलाव की तरह से रंग ढंग पैदा करेंगे। बुध कुण्डली किसी भी घर में जब शुक्र से अलग हुआ अपना फल वहां से जहां कि बुध बैठा हो उठा कर शुक्र में मिला देगा। (बुध के हाल में ऐसा लिखा है) शनि जब कभी भी शुक्र के दोस्त दुश्मन ग्रहों की दृष्टि में या साथ हो तो ऐसे मिलाप में शनि का प्रभाव अच्छा बुरा औरत पर होगा।

शुक्र कब चन्द्र होगाः-

कलाई रेखा या मंगल शुक्र सम्बंधित और अंगुली के जोड़ों पर शुक्र की रेखा चन्द्र का प्रभाव देगी यानि मंगल। चन्द्र के घर या राशि-पक्का घर साझाँ हालत या साथी ग्रह होने की हालत द्वारा दृष्टि साँझी होने पर शुक्र चन्द्र काम का काम देगा। जिस चन्द्र में चन्द्र के दुश्मनों का नाम व निशान न होगा। या शुक्र अब ऐसे चन्द्र का काम देगा जो कि जरूरी ग्रहों (बुध और केतू) के विरुद्ध चलेगा। मगर माता भाग्य में नेक प्रभाव का काम देगा। या अब शुक्र एक ऐसा बीज होगा जिसकी छाल पानी से न गलेगी या वो पूर्णमासी का चन्द्र होगा जो सूर्य की रोशनी या

सहायता की भर परवाह न करेगा। दुनियावी विचारों से तालाब की (बन्द पानी वाले) चिकड़ी चिकनी मिट्टी होगी जो शुक्र चन्द्र के सम्बंधित मवेशियों के पेट की सब बिमारियों को आराम देगी और बारिश में छत पर भी न खरेगी या खाना नं 8 के मन्दे ग्रहों का असर भी नेक करेगी। (खुद कुण्डली वाले के लिए) मगर बुध केतू या खुद शुक्र की सम्बंधित वस्तुओं की मदद करने की शर्त न होगी शुक्र बीज कहलाता है और शुक्र के पर्वत का दुनिया से कोई सम्बंध नहीं और ज्यादा सम्बंध इश्क व मुहब्बत से है। दुनियावी इश्क के अलावा इश्क हकीकी भर इसका असर होता है इसको दही से उदाहरण दी है जिससे घी भी बन जाता है इसके परिवार कबीला की पैदाइश परवरिश भी शुभ है इसके प्रभाव का समय ऐसे में गृहस्थ का समय है।

यह ग्रह किसी फल को खराब नहीं करता बल्कि दुश्मन के साथ अपनी ही बुराई या कामदेवी शक्ति को बढ़ाकर खराबी करवा कर बदनाम हुआ है सिर्फ एक ही आंख से देखने लग जाता है सिवाए खाना नं-3 के शुक्र खुद अकेला कभी बुरा फल न होगा। इसे दूसरा ग्रह ही खराब करता है और सबको प्यारा है। अगर पेशाब की धार या पानी की लहर आई तो खुद दब गया और खराब हुआ सूर्य की गर्मी से तबाह हुआ बृहस्पति (की हवा के साथ दर-बदर हुआ और दूसरों के दरवाजे पकड़े राहू ने दुविदा में डाला, चन्द्र ने एवं शुक्र औरत चन्द्र माता) बेटी तबाह किए । मंगल नें भाईयों का सम्बंध खराब किया। आखिरी बुध ने मदद की और शादी रेखा को सम्भाला और अपना गोल दायरा देकर जमीन को गोल किया बहुत बड़ा वृहस्पति का नरम हाथ वृहस्पति शुक्र का काम देखा मगर बहुत बड़ा शुक्र (अंगूठे की जड़ जो शुक्र के नाम से पोसता है) अगर मंगल नेक की तरफ से भी बहुत मोटी हो जाए यानि मंगल नेक का मुकाम जुदा मालूम न होता जाए या मंगल नेक का हिस्सा बहुत ही छोटा सा रह गया होवे तो शुक्र बहुत बड़ा गिना जाएगा। औलाद से तंग रखेगा। दिल रेखा के दुरूस्त होते हुए शुक्र का बुरा असर न होगा। साथी ग्रह आपसी मदद दिया करते हैं। मगर जब चन्द्र खाना नं 7 में हो तो शुक्र का उसके (घर के)बैठा होने के घर का फेल शुक्र की सम्बंधित चीजों में मन्दा होगा। चाहे शुक्र ऊँच या किसी भी घर में बैठा हो। आम तौर पर इसके शुक्र की मिट्टी ने चन्द्र के दरिया समुन्द्र को अपने ऊपर नीचे जगह दी। मिट्टी से इन्सान बना और आखिर मिट्टी में ही जल कर या दबाया जाकर खत्म हुआ। जिस्म में किसी भी खुराक के हज्म करने की ताकत न रही तो शुक्र के दही न ही जान बचाई। दही, में घी, औरत से औलाद और मिट्टी से खेती सब इसने ही दी है। यह वृहस्पति का दुश्मन है और चन्द्र और सूर्य इस पर दुश्मनी रखते है शुक्र के लेटे खत अगर हाथ की हथेली पर बिल्कुल न हो या लेटे हुए - अंगुलियों पर वृहस्पति जब शुक्र की राशि 2,7 में हो वाक्या हों तो जब तक ऐसा

आदमी अपने पेट मे जाने वाले अनाज की कीमत के बराबर खुद मेहनत न करे। रोटी नसीब न होगी चाहे घर से वो लखपति हो यानि वो लखपति होता हुआ भी मेहनत का आदि होगा। राहू जब शुक्र के विरुद्ध चले और सूर्य की चीज *(तांबा पैसा आदि या चन्द्र की चीजें दूध से धोए चावल बन्द करवाए शुक्र को मिटटी आम गोबर खास कर गाए का, स्त्री को लक्ष्मी माना है जिसके हजारों रंग और हर रंग के लाखों हालात सम्भव है। शुक्र के प्रबल बाला रंग में सफेद)* दही के सफेद रंग की झलक दूध के सफेद रंग की नहीं (चेहरा गोल मोल या सुन्दर आंखे बैल की आंखें की तरह की मगर मस्ताना और आशिकाना ढंग की बुलन्द व पुरी तबीयत में ऐश पसन्द) कोई रोए कोई हंसे मगर वो खुद अपने आप में खुश और हर समय अपने आपको औरतों की तरह संवारता रहे। निम्नलिखित बातों का साथ होगा।

शलशी हाथः-

अंगुलियों नोकदार और जोड़ उनके मोटे हो तो हुस्न परस्ती पर मर मिट जाने वाला हो मकानों के सम्बंध में यह ग्रह सूर्य के बर खिलाफ होगा डियोढी को शहतीर उत्तर- दक्षिण होगा। मकान में कच्चा हिस्सा जरूर होगा। दरवाजा मकान भर उत्तर दक्षिण होगा। इसका सबूत सफेदी (कली चूना का हिस्सा) व पलस्तर से होगा। अंगूठा खराब समाप्त या नक्कारा और निकम्मा हो जाए (बिमारी से या कट कर नहीं) तो शुक्र बरबाद हुआ गिना जाएगा शुक्र नष्ट वाले को पोशाक का ख्याल रखना, बाल कायम रहने तक सहायक होगा।

खानावार वस्तुयें :-

(1) रूखसारा, पराई औरत की मुहब्बत।
(2) आलू, गाए स्थान घी जर्द अब्रक सफेद काफूर, भोड़ी गाए, रांग।
(3) शादी, सती या सतवन्ती औरत
(4) दही चौपाया, चरिन्द
(5) फल, कुम्हार का आवा या ईट का भटटा
(6) चिड़िया, लड़की, सफेद गाए मन्दी, खुसरा सुथरा
(7) चरी (सफेद ज्वार)सफेद गाए, कांसी का बर्तन हर दो मुहब्बत
(8) जमींकन्द, गाजर, कबी भौंडी सफेद गाए मन्दी
(9) सफेद (दही के) रंग सफेद गाए गैरमुबारक
(10) मिटटी कपास
(11) रोटी, मोती दही रंग, सफेद
(12) कामधेनु गाए, लक्ष्मी चौपाया व गुहस्थी औरत का सुख सागर।

शुक्र खाना नम्बर 1

कामरेखा, शुक्र का पंतग, रूखसारा, पराई औरत की मुहब्बत

शुक्र पहले घर कल्पना गिनते, शनि नजर का मालिक है
फल दोनों को यकसा मन्दा , प्रबल होता शनि का है (शनि नं0 1)
दौलत मिट्टी हो गई , औरत मद अभियान
जैसी किली चक्क दी वैसा , जिस्म इन्सान(खाना नं0 7)
शुक्र ग्रह जब सातवें आवें , खूनी खांसी और तपेदिक लावें,
गिना अच्छा हो साधु होवे , पर्वत जंगल रहता होवे
गऊ मोती जौ सरसों दान , सत्त अनाजा चरी कल्याण
जब तक न वो शादी करें , तुरन्त पीड़ जिस्मानी हरे
मगर शादी के बाद हो दुखिया, कन्या दान, गऊदान से होवे सुखिया
शुक्र का फल बेशक , मन्दा पर मन्दा न सूर्य है
कुटुम्ब कबीला सुख लेवे , खुद फटा खरबूजा है
रथ सवारी आराम चौपाया , इश्क जवानी होता है
धर्म से कद्रे ही न हो सकता , पतंग शुक्र का होता है
हम उम्रों की नम्बरदारी , या मुखिया वो होता है
घर का जब हो खुद ही माहरी , खुशक तालाब डुबोता है
औरत की जब मुहब्बत हो गन्दी, दान चरी का होता है
माता पर कोई असर न होवे , औरत जब वहां अलहदा है
औरत रिजक से पहले आवे , शुक्र बैठा जब पहले घर
शादी गर उम्र 25 होवे , औरत रहे न दौलत घर
शुक्र का फल खराब , और सूर्य का खुद अपना उत्तम

शुक्र आशिकाना और सूर्य सुफियाना फल का मालिक है। इश्क को धर्म का परहेज नहीं है। इसके प्रभाव में व्यक्ति धर्महीन तो जरूर होगा। परन्तु औरत भाई सब इससे फायदा उठायेंगे वो खुद उनसे कोई ऐसा लाभ न उठाएगा। औरत को तो सुख न होगा। मगर औरत का सुख हो 7 साल यकीनी सुख हो सवारी चौपाया गाए बैल का आराम हो शुक्र की पतंग रेखा सूर्य के पर्वत अनामिका की जड़ पर ही हो तो औरत जनता के असर (औलाद व आराम) को हल्का सा खराब करे। मगर खुद अपने लिए इकबाल मन्द हो फटे खरबूजा (फुट) की तरह सिफत का स्वभाव और गृहस्थी सुख का हाल होगा औरत की सेहत कद्रे कल्की मगर खुद उसकी सेहत मन्दी न होगी। दिमागी खाना नं-1 इश्कबाजी शनि से सम्बंधित 16 से 36 साल उम्र यानि वो मुहब्बत जिसमें इश्क का जज भी होवे। मगर सिर्फ जवानी शुक्र कायम बुध नं 3, 6 सिर का श्रेष्ठ रेखा का उत्तम फल होगा। चन्द्र का

बुरा फल (जबकि चन्द्र भर रददी हो) सिर्फ माता की जान पर हो सकेगा।

शुक्र नं 1 राहू नं 7 को औरत का स्वास्थ्य मन्दा दिमागी कमजोरी, दीवानगी आदि होगी।

शुक्र नं 1 चन्द्र नं 7 हो तो बहु सास कर हर दम झगड़ा कलेश

शुक्र नं 1 मंगल नं 7 तो औलाद हर औलाद बढे परिवार दौलत का भण्डारा ओर पूरा सूख हो

शुक्र नं 1 सूर्य नं 7 शुक्र देखे सूर्य को या शुक्र नं 1 सूर्य नं 7 में दुश्मन या पापी ग्रह तो औरत की सेहत खराब दिमागी कमजोरी, दीवानगी आदि सूर्य पर शुक्र का बुरा असर होगा जिससे औरत की कबूतरबाजी, एवं अधिक औरतों से सम्बंध एवं रूहानी नुक्स होंगे। बिल्कुल बुरा प्रभाव सम्बंधित सेहत व शरीर होगा तपेदिक आदि अगर बद शुक्र से निकली हुई सिर रेखा को पार करके जिस तरह शनि के पर्वत के अन्दर ही में निकलने पर दुखी मौत का नतीजा होते हुये भी अब फिर सूर्य के पर्वत के अन्दर ही चला जाए तो चन्द्र और सूर्य के मिले हुए पर्वर्त की हर तरह बिल्कुल बुरी जिन्दगी होगी तपेदिक होगा जिसकी वजह औरत होगी यानि बुखार या दीगर स्त्री तकलीफ से बिगड़ा हुआ तपेदिक होगा।

शुक्र खाना नम्बर 2

(घर का, हवाई)

आलू, गाए स्थान, घी, अबरक सफेद काफूर, भौडी गाए, राग

शुक्र जिसके दूजे आवे ,	*60 साल धन दौलत पाए*
बाल बच्चों की बरकत आवे ,	*मुलक का झण्डा खूब लहरावे*
मेहनतकशा गैर हरगिज न होगा,	*खुदा का ही ममनून अहसान होगा*
जूती चोर साधू वो हरगिज न होगा ,	*गृहस्थी न हो गर गुरू जगत होगा*

छोटे कामों में असल राजा होगा, शुक्र का स्वयं जाती फल मन्दा न होगा। माता के बछड़े (भाई) गाए के बछड़े (लड़के)बहुत होंगे। घर उसका गउघाट होगा या बाकी 5 बचने वाला मकान होगा। वरना वही भटूरकी मिटटी (खुशक जली हुई) की तरह किस्मत का हाल होगा। आम शब्दों जानों व ----- जानदारों का हर तरह से अच्छा हाल होगा। पर बीमारी के झगड़ों का न कोई हिसाब होगा गर न होगा तो रिज़क न कभी खराब होगा। बल्कि दिन दुगुना और रात चौगुना नेक हिसाब होगा । बृहस्पति के पक्के घर पर जब शुक्र होवे तो बहुत ऊँच फल देता है दूर बैठा शुक्र वृहस्पति से दुश्मनी करता था शुक्र (स्त्री) जब गुरू के घर आ बैठी तो गुरू ने तो दुश्मनी करनी ही नहीं शुक्र और स्त्री भी ऊँच फल देता है और गृहस्थ में हकीकी नेक फल देगा या गाए गुरू स्थान और दुनियावी व गैबी गऊ घाट में अपने असली मुकाम पर होगी जिससे बाल बच्चों को बरकत और शादियों व गृहस्थी सुख की बरकत व वृद्धि होगी। लेकिन अगर

अकेला शुक्र या कानी औरत का खत बिल्कुल जुदा ही बृह के घर आ जाए तो वृहस्पति या कुल जमाना की हवा इसे उत्तम गिनेगी और प्रभाव भी नेक ही होगा। सारी उम्र (60 साल) आमदन व दौलत होगी मगर वृहस्पति की बैरोनी हालत सूफियाना अन्दरूनी आशिकाना यानि बाहर की हवा साफ और अन्दरूनी बन्द हवा मन्दी हुआ करती है। इसलिए अन्दरूनी और किसी से बुराई करनी खुद अपने लिए मन्दी होगी। अगर नेक चले तो तमाम आराम औरत का सुख खुशी की जिन्दगी व गृहस्थ उत्तम होगा। चाहे औरत जात माशूका या बेबा तबाह करेगी। मगर फिर भी माल का सुख दुश्मन और साठ साल आमदन रहेगी (जाती कमाई की जिस दिन से शुरू हो)

शुक्र नं 2 दृष्टि खाली हो तो वृहस्पति ने हवा सांस सोना दिया शुक्र नं 2 ने गुरू की तरह सबसे बतौर पूजना लक्ष्मी की सेवा करवाई। कुण्डली वाले की अपने लिए मशनोई शुक्र (राहू "केतू मुशतरका") का नेक मतलब, मुहब्बत रेखा का पूरा प्रभाव दिमागी खाना नं-2 शादी की इच्छा इसके बाद का सम्बंध जिसमें अब इश्क का असर न हो। वृहस्पति से सम्बंधित मगर मुहब्बत हकीकी का हिस्सा बेशक शामिल हो 37 से 70-72 उम्र हिस्सा, औरत का शुक्र खाना नं 2 में बांझ औरत हो, जिसमें मुहब्बत तो हो मगर हवाई वृहस्पति की तरह की या पैटाइश औलाद नदारद। लेकिन जब अकेला शुक्र या उस पर्वत पर हो चाहे मर्द या औरत का तो सारी उम्र आराम 60 साल दौलत की आमदन हो। शुक्र का उत्तम 60 साल आमदन या 60 साल शनि की आमदन होगी जब शनि खाना नं 9 में हो तो शुक्र चाहे कहीं ही बैठा हो, शुक्र नं-2 का दिया हुआ फल शनि नं 9 का दिया हुआ फल देगा।

शुक्र नं 2 वृहस्पति नं 2 मंगल नष्ट तो बहुत बड़ा वृहस्पति होगा और बहुत बड़ा वृहस्पति हो तो शुक्र का ही फल देता है या तर्जनी की जड़ पर वृहस्पति के पर्वत की चर्बी मंगल नेक को भा आ दबाए तो बहुत बड़ा वृहस्पति होगा या नर्म हाथ का वृहस्पति होगा। जो शुक्र खाना नं 2 का ही काम देता है और इश्क व मुहब्बत में दर्जा कमाल कामयाब पाया जाता है।

शुक्र खाना नम्बर 3

शादी, सती या सतवन्त औरत

शुक्र घर जब तीजे आवे ,　　औरत भी वहां मर्द कहावे,
शुक्र बैल तो चन्द्र साधू ,　　मर्द बढ़ेंगे बढ़ेगी आयु
मंगलबद मंगलीक न होगा ,　　शिवजी होकर दया करेगा।
स्त्रियों की भी पूजा होगी ,　　गर न होगी चोरी होगी

अब शुक्र का खाना नं-9 पर कोई बुरा प्रभाव न होगा बल्कि पितृ रेखा का उत्तम और नेक फल साफ साथ होगा, पर लड़कियों के हाथों और सम्बंध में

इसका धन बर्बाद होगा और न ही अपने बनाए हुए मकान का आराम होगा। गर होगा तो खाक मुर्दा से वो घर बीरान होगा और एक दफ उजड़ा हुआ न फिर कभी आबाद होगा। गर जब तक इस घर में चन्द्र का न साथ होगा। किस्मत भली तो वहां रहने का इमकान ही न होगा। पर यह सब कुछ बुध की 34 साल उम्र तक का हाल होगा। आखारी जगत गुरू वृहस्पति के दूसरे दौरा पर प्रंकट होते ही खुशहाल होगा। पर बुध के सम्बंध से न कभी वहां बारौनक गुलजार होगा। दिमागी खाना नं 3 प्यार या माता-पिता मुहब्बत उल्फत मंगल से गुरू साझां का 11 से 15 साल उम्र इस जगह शुक्र का असर नरों और अपने (मर्द खानदान के) आदमियों पर नेक होगा, शुक्र का फल हुनरमन्द और 20 साल तीर्थ यात्रा जब कुण्डली में बुध नेक हो और उम्दा। लेकिन जब केतू उम्दा या नेक हो तो औरत [illegible] पगड़ी बान्ध कर मर्द के बराबर की होगी। बहादुर होगी मर्द को आदमी का काम देगी। कुण्डली में अगर मंगल नेक हो तो नेक फल और बद से बद फल होगा। शुक्र का, चाहै झगड़े और बुरे कामों में फायदा उठावे मगर अपने मकान का फायदा न होगा चाहे बुरे मर्दो और बुरी औरत से मदद रहे मगर तंगदस्त रहे। हर दो हालत में शुक्र नं-3 से जाने वाले मर्द मुराद होंगे। किस्सा चाहे शुक्र की जमीन अब बुध के सहारे गोल (बुध का निशान)हो गई होगी। या वो हर एक का दिलदाह होगा।

शुक्र नं 3 बुध नं 11 तो औरत खानदान या औरत के सम्बंधित विशेष मर्द मुराद होंगे। या इसकी औरत खुद अपने (औरत के)लिहाज वालों को फैन पहचानती जाएगी और अपने मर्द का धन दौलत खिलाती जाएगी या अपने लड़कों की निस्बत अपनी लड़कियों को धन दौतल देती जाएगी।

शुक्र नं -3 शनि नं हो तो पितृ रेखा का उत्तम और नेक फल होगा। अब खाना नं 9 बर्बाद न होगा।

शुक्र खाना नम्बर 4
(राशि फल का),
दही, चौपाया, चरिन्द, बृहस्पति का उपाय मददगार

शुक्र चौथे जब पानी आया, औरत हुआ वीराग,
एक से दो भी होवें , पर बुझी न उनकी आग
दरिया की है वो दलदल , तालाब की वो चिकड़ी,
औलाद मामू दो घर बिखरी हुई तो खिचड़ी,
पत्थर (शनि) भी रेत (बुध), हो गर तो रेत उड़ता होगा
औरत की हो आजादी बुध , (बहिन) केतू (लड़का)मन्दा होगा
कुआ चलता उम्दा होवे, दबता मिट्टी जो रहे
वृहस्पति गर कुआं ही बन्द होवे , लक्ष्मी वहां न रहे

नोट:- ऐसे टेवे में शनि और बुध दोनों ही रददी होंगे यानि शनि (मकान आदि)बुध (बहिन भुआ आदि) का फल रददी होगा।

औरतें दो जिन्दा होती होवे भी परन्तु औलाद की कमी होगी। **चन्द्र के उपाय से (जब मामू घर बर्बाद हो चुका हो)** ऊपर का लिखा हुआ न बुरा हो हाल को जब तक कि घर के पहले दरवाजा की दहलीज पुरानी उम्दा साफ होगी। **अगर खुद शुक्र (औरत) की हो सेहत बर्बाद हो तो छत पर तालाब की मिटटी (चिकड़ी)से उम्दा हाल हो या छत पर शहद का भरा बर्तन दबाने से औलाद का दुख दूर** और सब कुछ बहाल हो। साधारण शब्दो में वह व्यक्ति न कभी ला-औलाद और न ही अन्धा हाल हो और जब कभी भी हो उम्दा और खुशहाल हो पर औरत की जाती किस्मत का न उससे साथ हो, फिर भी हो तो विधाता की कृपा से उसके वृहस्पति के हाथ हो शर्त यह कि शनि न वृहस्पति के साथ हो। चन्द्र के पर्वत पर शुक्र रेखा मामूली सफर बताती है। खुश्की का सफर आम तौर पर हर समय एवं शुभ प्रभाव का और चन्द्र (घोड़े)के पांव को खुश्की का चक्र लगा रहेगा। चन्द्र खुद हमेशा सफर में रहता है और शुक्र तो दुश्मनी नहीं करता मगर चन्द्र ही दुश्मनी करता है इसलिए चप्द्र का सफरखुद अपने लिए कभी नुकसान देय न होगा मगर सफर जरूर लाभदायक रहेगा और अमूमन खुश्की का होगा। शादी के बाद चार साल खूब आराम बाग व बगीचे खूब लगावे। जब वृहस्पति का प्रभाव हो तो सास बहू का झगड़ा होवे और सास (चना) ही दुश्मनी करेगी। खुद वो खानदान की परवरिश करने वाला इसकी लड़कियां मां अपनी या मर्द की, औरत की सहायता दादी की दुश्मन, लड़के दोनों मां बाप के लिए शुभ , इच्छा यह कि शुक्र का असर औरत के लिए शुभ मर्द खानदान के लिए गैर शुभ , बालिहाज आमदन। बहरेहाल औरते दो हो। एक स्त्री दूसरी मां की तरह बूढ़ी जो दोनों जिन्दा होगी बशर्ते कि खाना नं 4 का शुक्र किसी और ग्रह का साथी न बन रहा हो यानि खाना नं 2-7 खाली हो जो ग्रह साथी बन रहा या खाना नं 2,7 में हो शुक्र उस ही ग्रह का काम देगा जिसमें कि बुध केतू का हिस्सा शामिल न होगा। जब शुक्र नं 4 किसी और ग्रहों का साथी बन रहा हो तो आडू की गुठली में (गोल) सुर्मा भर कर बाहर जंगल की मिटटी जिस पर घास हो दबा दें औलाद व स्त्री का सुख कायम करेगा। हर हालत में औलाद का नेक ताल्लुक शनि केतू या मंगल के दूसरे दौरा में ही होगा। जब वो खाना नं 1 में आवें या शुक्र के साथी। साथ या मददगार हो जावें। नर शादी व औलाद का व्यान भी देखें (न सिर्फ राहू या बुध की आखिरी उम्र)बुध 34 राहू 42 शुक्र का फल रददी होगा। बल्कि बहिन भुआ फूफी आम गृहस्थी व औलाद के दुख बल्कि दरअसल पानी में कुण्डली वाले के घर का कुआं इसके मामू खानदान पर भी इनको खाक स्याह कर देने का बुरा असर करे। शादर के बाद यही कुआं कुण्डली वाले को तारे और

नेक फल देवे। यानि अगर बन्द हो तो तबाही होवे। औरत का विशा वायश खराबी होगा। लड़का लड़की बेशक इस घर से डरता होगा मगर वो व्यक्ति ला-औलाद न होगा।

शुक्र नं 4 खाना *नं0 10* खाली तो खाना नं 4 का शुक्र स्त्रियों पर असर देगा। यानि शुक्र के अतिरिक्त चन्द्र माता पर भी या खाना नं 4 का शुक्र औरत भी होगा और माता भी या माता का ताल्लुक मासी, फूफी भुआ वगैरह आदि होगा पर नजर डालना। चन्द्र से मुशतरका, उलफत (पहला हिस्सा मुहब्बत का) इश्क (दरम्याना हिस्सा कामदेव की मुहब्बत का) और गत्बा इश्क (तीसरा हिस्सा मुहब्बत का . जिसमें अब इश्क का असर न हो) तीनों की हालतों के मजमुआ का असर दिमागी खाना नं 4 दोस्ती या मुलाकाल की ताकत, ऐन पर पर्दा डालना और खुबी पर नजर डालना। चन्द्र से मुशतरका उल्फत (पहला हिस्सा मुहब्बत का) इश्क (दरम्याना हिस्सा कामदेव की मुहब्बत का) और गत्बा इश्क (तीसरा हिस्सा मुहब्बत का जिसमें अब इश्क का असर न हो) तीनों की हालतों के लिए असर होगा। जो दरअसल चन्द्र ही की मुहब्बत रेखा है।

शुक्र नं 4 बुध नं 6 तो स्त्री व औलाद दोनों का फल बहुत देर बाद नेक होगा। खास कर बुध की कुल उम्र 34 सालों के बाद अच्छा होगा।

शुक्र खाना नम्बर 5

फसल, कुम्हार का आवा, या ईंटों का भटटा

शुक्र घर पांचवें हुआ , मिटटी आग पड़ी,
कच्ची थी उड़ती फिरी , अब एक जगह टिक गई
आग जली न मिटटी उड़े , उड़ेगी जिस दम वो
जो ग्रह पहले घर नौवें , अन्धा काना हो
पापी ग्रह या बुध वहां आवे , शुक्र इनको सोना दिलावे
गर न देवे दुख न देवे , देवे तो वो उन्नति देवे।

वतन व कबीला की मुहब्बत का दिलदाह और शुभ फल का होगा। अगर आशिक दुनिया हुआ तो दरख्त में फंसे हुए पतंग की तरह किस्मत का हाल हो लेकिन अगर सूफी हुआ तो भवसागर से पार हो वरना एक को क्या रोते यह तो आब की ऊत गया शादी के बाद 5 साल माल व दौलत आवे अगर खाना नं 1 में शुक्र का दुश्मन ग्रह होवे तो जाती हयाश व शुक्र के पतंग का असर होवे मगर औलाद पर कोई बुरा असर न होगा। दिमागी खाना नं 25 बृहे से मुशतरका होगा व आया लोही मालिक की हाजिरी में यानि जब नर ग्रह अपने अपने पक्के घर में हो बफादार होगी। मगर आंख बचाने पर यानि जब शुक्र नर ग्रहों की किसी तरह से भी दृष्टि में न आवे सोना उड़ाएगी। **इसलिए चन्द्र की चीजें बतौर पतंग के लिए दूध सहायक होगी।**

शुक्र खाना नं0-6
(नारी नीच)

चिड़िया, लड़की, खुसरा सुथरा, सफेद गाए, मन्दा फल देगी।

शुक्र छेवें घर खस्सी होवे , अक्ल से मन्दा हो
आशिकी दुनिया न हुआ , पर त्यागी पूरा हो
आए तो ड़बी डूमती नाल , पर खुर भी गाले
गधा गिरा पताल में , कुम्हार छाटें सब नाले
लूल करे कुलेरियां रब सिधियां पावे
लड़के उस घर से डरें कुड़ियां पल्ले पावे
है औलाद का शुक्र रद्दी पर रद्दी यह दौलत हो
गुरू सूर्य से कोई दूजे शुक्र का फल 12 हो
बृहस्पति अगर खाना नं0 - 2 से मिलेगा तो तायदाद

बच्चों की 6 तक करेगा। मगर जब वृहस्पति हो 12 में बैठा शुक्र मिटटी उड़ती चाहे केतू हो बैठा अगर केतू भी घर छठे में मिलेगा तो शुक्र का सुख सबसे गन्दा करेगा। दिमागी खाना नं-6 दिलचस्पी पक्की मुहब्बत काम किए बगैर न छोड़ता औलाद के लिए शुक्र नीच फल का बाकी खाली शुक्र का वही असर जो शुक्र नं-2 में लिखा है। फोकी मुहब्बत केतू से सम्बंधित या खाली मुहब्बत है

शुक्र का पतंगः- कामदेव रेखाः-

यह रेखा घर का रहनुमाई या भाई बन्धु पर आगशत निभाई और हम असरों की नम्बरदारी जाहिर करती है ऐसा आदमी धर्महीन होने के अतिरिक्त औरत जाती के वासना के पुल बनाने और जवानी याद में वक्त सिर्फ करना आम दस्तूर बनाए रखता है और दूर बैठी जवान की तरह इश्क को याद करता है। सेहत उम्दा और जबान और आंखों की ताकत साफ होती है। औरत जात या अपनी औरत के कुटुम्ब कबीला का नेक सम्बंध हुआ करता है। मगर सूर्य की किरणे इस शुक्र के दरिया में मिटटी के रंग का असर और मेला सा रंग व्यक्त किया करती है यानि वो सरकार के घर रूपया पैसा कमाने वाला बाहर रास्ता नहीं हुआ करता। मगर सरकार या राज दरबार वालों की कमाई से अपना कारोबार लगाए बगैर नहीं रह सकता इतना जरूर है कि वो अपने हमराहियों को कई दफा जलील होने यानि शुक्र नीच का फल होगा, की तरफ कर बैठता है और गृहस्थ के काम काज में मन्दा प्रभाव होगा। क्योंकि शुक्र और सूर्य आपसी दोस्त है इस रेखा का खुद इसकी अपनी जात पर कोई बुरा असर नहीं होता टूटफूट से दिमागी, दीवानगी और बुध के पर्वत से शनि तक की पुरी लम्बाई की हालत में इसके विचारों में परेशानी हुआ करती है **शुक्र नं6 के होते समय इसकी औरत को जमीन पर अपना नंगे पाव चलना शुभ न होगा। अच्छा तो यह है कि हर समय**

जुराब आदि डाल कर रहे ताकि जमीन से पांव का चमड़ा न लगे गाए बैल धन दौलत की चोरी या गुम हो जाना निशानी होगी, वृहस्पति सांस दमा आदि, सूर्य शरीर और गुस्सा नीच हालत की निशानी है। दिल रेखा के दुरूस्त यानि चन्द्र कायम होते हुए शुक्र का प्रभाव कभी बुरा न होगा। मगर चन्द्र व दिल बुरा असर देंगे। शुक्र गुम से जो बुद्धि गुम हुई और बुध ने साथ छोड़ा स्त्री जात को कुछ तकलीफ हुई मगर धन दौलत गुम हुआ। अगर शुक्र नीच से अक्ल गुम हुई तो नसीब ने हार नहीं दी। लल्लू करे कुल्लियां रव सिधियां पावे यानि रोजी अक्ल के हिसाब से होती तो नादान या बेबकूफ से तंग रोजी वाला और कोई न होता यानि कि शुक्र का नीच हो जाना अपने लिए मन्दा नहीं होता इसलिए इस ग्रह का दुनिया से सम्बंध होना या न होना कोई विशेष अन्तर नहीं होता। दुनिया का आशिक न होगा। तो दुनिया का त्यागी अवश्य होगा। इसलिए नहीं कि बैराग से मगर इसलिए कि इसमें बुद्धि नहीं जब केतू नीच मन्दा या दबाया हुआ होवे तो औरत बांझ होवे या लड़कियां अधिक हों और अगर एक ही लड़की हो तो 12 साल तक औलाद का सुख मन्दा करें या औलाद और पैदा न हो या 12 साल तक ही लड़के के आने का दरवाजा बन्द होगा जो फिर हर सातवें साल से पहले न खुल सकेगा अगर खुलेगा तो कन्या को ही आने की अनुमति देगा।

नीच हालतः-

शुक्र नं० 6 गरीबी को सहायता देवे और इनको रूपया पैसा खिलावेगा। समझ के विरुद्ध बहुत से काम करेगा। अपने घर मकान का लाभ न पाएगा। पराई स्त्री या स्त्री सुख न होगा। **आखिरी उम्र में आराम होगा जिसके लिए चन्द्र का उपाय सहायक होगा।** शुक्र का पर्वत नीच हो या घर यानि खाना नं० 7 में शुक्र के शत्रु ग्रह या कोई शत्रु ग्रह आपसी लड़ने वाले हों तो अक्ल खराब होगी। वृहस्पति सूर्य चन्द्र तीनों की फल मन्दा या तीनों ही ग्रह सोए हुए होंगे या तीनों ही ग्रह की सम्बंधित चीजों का कोई साथ या सहारा न होगा अक्ल के विरुद्ध काम करने वाला या जो करे मन्दा नतीजा हो। खराब रेखा से मेहरबानी न करने की प्रकृति स्वाभाव का बदल जाने वाला। बुद्धि मन्द वाला होगा। जब नर ग्रह की सहायता व दृष्टि साथ या साथी हो तो अधिक दौलतमन्द हो। शुक्र अब एक कीमती चीज होगी। हालांकि पाताल शुक्र उनका दोस्त भी नहीं मगर वो सारे या कोई एक गुरूद्वारा में बैठे पांव पड़ी शुक्र मिटटी अबला को नीच नहीं देख सकते क्योंकि गुरूद्वारा भी तो स्वयं शुक्र का अपना ही घर है 5, 2, 4 साल दुश्मन हो स्त्री सुख हल्का (असर राहू से)

शुक्र खाना नम्बर 7

(पक्का घर, घर का)

चरी, ज्वार सफदे गाए कांसी के आम बर्तन, हर दो मुहब्बत

ग्रह फल का किस्मत को जगाने वाला

शुक्र सातवें फल हुआ-पर खेती उम्दा हो,
शायर उम्दा जिन्दगी और सुख सवारी हो
खरबूजा देख खरबूजा पक्के-1, 9 या 7 ग्यारहां
चौरां टोली एका बोली बुध शनि और शुक्र ग्यारहां
दुश्मन ग्रहर गर उन घरों आवें जुता पत्थर खुव चलावे
पर शुक्र न हिम्मत हारे-हरे न खुद वो सब को मारे
अपने फल की बजाए साथी या मुशतरका ग्रह का फल देगा।

मगर स्वयं शुक्र (औरत लक्ष्मी)का कभी मन्दा फल न होगा। किल्ले बांधी गऊ न हों की हर तरह औरत का हाल होगा। जब तक कि खुद शुक्र (गाए औरत) सफेद रंग न होगा अगर होगा तो दर जहां न होगा तो शुक्र या 25 साल उम्र तक खराब होगा। फिर भी अगर होगा तो स्याह या रंग काला (शनि ही होगा बहर हाल लक्ष्मी से दूर न होगा। गर होगा तो स्वार्थी-पन से खराब होगा आखिर होगा तो शुक्र एक आंख ही होगा जिसे झुक-झुक कर सब का सलाम होगा। वरना जायदाद जददी से बेबहरा और वे आराम होगा। बिल्ली की जो हर तरह से गैर मुबारिक होगी। अगर फिर भी रखनी **होगी तो कम्बल के टुकड़े में शुभ होगी।** मगर चमड़े के पर्स में रखी हुई बिलकुल ही शुभ न होगी। फिर भी होगी तो लक्ष्मी व औरत बर्बाद होगी। उम्र 85 से 96 साल औरत का सम्बंध तायदाद और सुख गरीबों से मुहब्बत और सारी उम्र आराम हो रूपया पैसा औरतों के काम बहुत लगे। शादी यानि जब ऐसे का शुक्र नं० 7 हो तो उसे शादी के शुभ काम सम्बंधित कारोबार बिलकुल शुभ होंगे। स्त्री भाग्य में उत्तम फल होगा। शादी स्त्री औलाद का सुख नेक तबीयत, दौलतमन्द, खेती के सम्बंधित सामान गाए बैल का सुखा और उत्तम फल, सवारी का सुख चौपाया का लाभ, राग से मुहब्बत शायद हर दो मुहब्बत हकीकी और गैर, हकीकी इसके असर को सूर्य चन्द्र राहू खराब करते है। बहुत बड़ा वृहस्पति (शुक्र वृहस्पति) नं०-2 मंगल नष्ट या बर्बाद मन्दा बहुत बड़ा वृहस्पति या नर्म हाथ का वृहस्पति होगा जो सिर्फ खाली शुक्र) राहू केतू साझां, (मशनोई शुक्र का काम शुक्र नं०-2 होगा) शुक्र होगा। और बहुत बड़ा शुक्र वृहस्पति नं० 7 मंगल नष्ट एवं बहुत बड़ा शुक्र या मन्दा वृहस्पति होगा जो औलाद से ----- दुखी रखेगा। नर्म हाथ का वृहस्पति मामूली शुक्र होगा। स्त्री धन का सुख इस पर्वत या शुक्र नं० 7 का दुनियावी कारोबार से कोई सम्बंध नहीं। ज्यादातर पराई मिट्टी का शोक और पराई मिट्टी कह पूजना आम ढंग हो गया है जिसमें खुद जाती कमाई और जायदाद जद्दी बरबाद होंगी सब सिर्फ अपनी दिमागी नकल व हरकत होगी गुस्सा (सूर्य की गर्मी) बुनियाद होगी।

(एको अंख सुलखनी झुक झुक करन सलाम दो आंखों वाले) शुक्र ने आंख

शनि से ली हुई है जिसका मुफसिल हाल शनि में दर्ज है। शुक्र नं०-7 के साथ या साथी ग्रह जैसा होगा वैसा ही शुक्र फल देगा। मगर प्रभाव की तासीर और रफतार वही होगी जैसी कि शनि आंखों की होगी। टेवे में अगर शनि की एक आंख भी शुक्र नं०-7 को तब ग्रह इज्जत से ही देखेंगे। यानि शुक्र की अगर एक आंख भी दो आंखों वाले झुक झुक कर सलाम करेंगे। गृहस्थ का आराम होगा। चाहे औरत कानी ही होवे इसीलिए कहा कि औरत आंख से बेशक कानी होवे। मगर रंग से काली न हो इस घर में शुक्र होने में काली कानी दोनों शुभ होगी। जात व गृहस्थ का फल नेक होगा। 25 साल उम्र के बाद जब शुक का वृत्त आये, शुक्र के पर्वत पर लम्बी और टेढ़ी रेखा भाईयों से नाम बताएगी (यह भाईयों की रेखा है) ऐसे आदमी का पैसा खा जाने वाले भाई बन्धु और नजदीकी व्यक्तियों से शुभ होगी जो इसके कार्य में बुरा प्रभाव देंगे। इसकी कमाई दूसरे खा जाने वाले होंगे और कारोबार में शनि की तरह मन्दी हालत करें। मगर बुध के पर्वत पर शादी रेखा या बुध की सहायता द्वारा विशेष नाली उत्तम 37 साल औरत का आराम खूब आराम की जिन्दगी वाला हो। एक तरफ औरत चाहे औरत को इतना आराम न हो शुक्र पर रेखा सफर से वापिसी की जिन्दगी बताती है। बुध पर कनिष्टका की जड़ पर ही हों तो औरत जात के लिए नेक प्रभाव और गृहस्थ में अच्छा फल होवे।

शुक्र नं०-7 दृष्टि खाली तो दिमागी खाना नं-7 बुध से आपसी जिन्दगी बढ़ने की शक्ति (लम्बी से नहीं) खरबूजा को देखकर खरबूजा रंग बदले।

शुक्र नं०-7 शनि नं 9, 11 तो अक्सर आम के आराम से सामान पैदा करे और स्वयं भी पूरा आराम पाए।

शुक्र नं०-7 चन्द्र नं० 1 सूर्य नं -4 शनि नं०-7 तो व्यक्तिव निर्बल हो

शुक्र नं०-7 चन्द्र नं०-1 तो सास बहु का मां बेटी की तरह नेक और उम्दा सम्बंध होगा। मगर शादी और औलाद में गड़बड़ होवे।

शुक्र नं० - 8

जमींकन्द, गाजर

भांडी या सफेद गाए सन्दी (बगैर सींग)

शुक्र आठवें ग्रह है मन्द शगुन ही हो,
गऊ सेवा या दान से सब कुछ उम्दा हो
हम भी डूबे तुम भी डूबों डूबेंगे मिलकर सभी
ससुराल डूबे, औरत डूबी, डूबेगी औलाद भी,
उम्र सारी गन्दी नहीं है सिर्फ पहली 25 तक,
कभी सारी पूरी होगी, दूसरी पच्चीस तक,

चन्द्र के ठीक होने पर शुक्र का मन्दा प्रभाव न होगा। अगर चन्द्र भी मन्दा हो

तो बुध ही सहायता देगा। अगर वो भी मंदा हो तो मंगल से सहायता पर लेगा। अगर वो भी मन्दा हुआ तो राहू के गन्दे नाले से ही सहायता पाएगा। **जिसमें तांबे का (सूर्य)या फूल (बुध) का डालना मुबारिक होगा।** सफेद गाए मन्द भाग्य मगर स्याह या सुर्ख गाए मुसीबत में सहायता देगी **शुक्र स्वयं की सहायता के लिए चरी (ज्वार) मिटटी में दबाना उसे मुश्किलों से बचाएगा।** चन्द्र उम्दा कायम या दिल रेखा के दुरूस्त होते हुए शुक्र का बुरा असर न होगा। मंगल बद के पर्वत पर शुक्र रेखा या जब कुण्डली में मंगलबद भी हो और शुक्र भी नं० 8 में हो और जंग व जदल में सहायता की हालत व्यक्त करती है अगर कुण्डली में मंगल नेक हो तो शुभ मंगलबद का प्रभाव बन्द होगा जबकि कुण्डली बाला इधर उधर औरतों का मिलापी या जनाकार हो। शुक्र को अगर थोड़ी सी भी बुराई के लिए सहायता मिले इससे इश्क व मुहब्बत उत्तम होता है परन्तु उसे सुजाक आदि की तकलीफ भी हो सकती है। शुक्र नं०-8 जब नं० 2 खाली हो तो शादी बहुत देर बाद नहीं तो औरतें मरती जाएं। मामू खानदान और सुसराल घर दोनों खानदारों को तबाह करने वाला हो। सुजाक इत्यादि खरीदने वाला हो, गोबर, दही की मिलावट से बिच्छु पैदा होने की तरह दूसरों के लिए शुक्र की अवधि तब सब्ज मध्यमा साबुत होवे बाहर सौचों कुए में गिरने वाले गधे की तबीयत का होवे। **गऊ दान या गऊ सेवा शुभ होगा** या इसका सम्बंध गऊ से होते हुए ऊपर का बुरा प्रभाव न होगा। अगर खाना नं० 2 खाली न हो तो शुक्र का इस खाना नं० -2 के ग्रह के सम्बंध का फल होगा।

शुक्र खाना नं० -9

सफेद रंग (दही के)

और सफेद गाए गैर मुबारिक, नीम के पेड़ में चांदी का चौरस

टुकड़ा दबाना मुबारिक बेरहम,

नरोई धरती कल्लर शोरे की जमीन की मिटटी।

बुध पापी नर स्त्री चाहे सब ही अच्छे हों

शुक्र नौवें जब हुआ कुल मंगलबद ही हों

घर से भूली लक्ष्मी ढूढ़े आम पताल

शनि अकेला तारेगा जब गुजरे सतह साल,

(1) जन्म के बाद वाले मकान बचने के 17 साल गुजरने के बाद या

(2) शुक्र खाना नं-9 में 23 साल उम्र में आता है जब वर्ष 25 साल गुजरने तक यानि 48/24 साला उम्र तक अपना मन्दा फल देगा। दोबारा इस 48/24 साल के बाद 17 साल गुजरने पर नेक होगा यानि 65/33 साल उम्र गुजरने के बाद। तीर्थ यात्रा तो उम्दा मगर वास्ते सम्बंधित औलाद मन्दा होगा। धन तो हो पर मर्द न होंगे। शुक्र के मताहत की शादी (25 साल उम्र) या सफेद रंग गाए की आमद से पूरी बरबारी होगी। मंगलबद खड़ा होगा। चान्दी की ईंटो की जगह सफेद मिटटी होगी।

लेकिन बुनियाद मकान में शुद्ध चान्दी या शुद्ध मंगल (शहद) हो तो शुक्र की जगह अब चन्द्र होगा। फिर भी बुध केतू मन्दा होगा। राहू का नीच प्रभाव स्त्री सुख दौलत व खर्चा पर होगा। ऐसा आदमी अक्लमन्द बजीर के समान होगा मगर राहू के 6 साल अवधि में दौलत सिर्फ 2 साल पाए। शुक्र जब उम्र के 25वें साल शुरू होवे तो मंगलबद का प्रभाव देगा। इसके बुजुर्गों का हाल अच्छा मगर इसकी औलाद का हाल मन्दा होगा कर्म धर्म (वृहस्पति का हाल) अच्छा गृहस्थ सुख मन्दा वास्ते औलाद, यानि धन होवे आदमी न होवे। **लखपति होता हुआ भी जब तक अपने पेट के अनाज की कीमत के बराबर मेहनत न कर ले।** रोटी नसीब न हो। या खुद मेंहनती होगा। औलाद के लिए मन्दा **मगर तीर्थ यात्रा उम्दा होवे।** अगर कनिष्टका की जड़ में इस रेखा का झुकाव ऊपर की तरफ को हो जाए तो शादी और औलाद में गड़बड़ और दुश्मन की तरह का असर पैदा हो जाएगा।

शुक्र खाना नम्बर 10

(मिटटी कपास, शनि की जा निशानी

दीवार कच्ची मिटटी कच्ची तह की कच्ची गर वहां हो

जिस्म मोटा सेहत उम्दा शुक्र घर दसवें से हो

बाग बगीचे उम्दा कोठे ऐश करेगा वो सदा

शनि हो इसके दांए बांए देखे न कभी हादसा

चन्द्र इसका 7वां चौथे या कि घर दूजे में हो

मिटटी से भी खाई है बनती मोटर लारी उम्दा हो

पहले पाचवें रशक करेंगे बुरा नहीं कर सकते हैं।

मदद तरान की बेशक होवे हसद कभी नहीं करते हैं।

यह ग्रह अब बुढ़ापे में आराम देगा। शनि की हाजिरी में बिना समय जवानी इश्क का घर होगा यानि ऐसा आदमी आशिक दुनिया या पराई औरत का आशिक होगा जिससे केतू (औलाद) का फल मन्दा होगा।

बल्कि मंगल (भाई)भी चिल्लता होगा और चन्द्र (माता) पछताता होगा। चाहे चाल चलन का सम्भालना एक जरूरी चीज होगी। पराई औरत के सम्बंध की तारीख से 12 साल बाद तक नर औलाद नई पैदा न होगी अगर होगी तो 13वें साल से शुक्र की उल्टी चाल स्वयं शुक्र (औरत) पर होगी या औरत की सेहत निहायत मन्दी शुरू होगी। (13 वें साल से) दुर्घटना से बचता रहेगा। यह ग्रह अब स्वयं शनि का ही काम देगा शनि की सहायता से स्वास्थ्य बीमारी का बचाव शनि की जवानी में औरत का इश्क का घर बुढ़ापे में दोनों ग्रह परहेजगार और दुनिया का आराम, बुढ़े होकर दोनों अक्ल दे दें और आराम देवे। शादी के दिन से 12 साल खूब दौलत आए नहीं तो एकान्त पसन्द किस्मत को रोने वाला ग्रह। अगर शनि मन्दा हो।

शुक्र नं0 10 दृष्टि खाली नं० 4 तो सेहत उत्तम वाला हो शनि पर मध्यमा की जड़ पर ही हो तो शनि के बुरे प्रभाव से बचाव या सेहत उत्तम होगी।

शुक्र खाना नम्बर 11

(रूई मोती सफेद (दही) रंग)

शुक्र ग्यारहां घूमता लहू दौलत का भण्डारी हो,
गर ऐसा न होवे कोई बुजदिल मूर्ख हिजड़ा हो
माना बेशक चल बसे गऊ औरत का साथ
कन्या बुढ़े दौलत बढ़े बढ़ेंगे हर दो साथ
शुक्र जब ग्यारह हुआ और बुध भी मिलता हो
धन दौलत की न कमी पर पापी मन्दा हो
औरत तारती अपनों को और बनी हो घर की मुहरा,
जाहिरदारी हो भोली भाली हृदय भरी हो जहरा।

औरत चाहे किस्मत की मालिक मालूम होती होगी मगर वो स्वयं ही तबाही होगी **पापी ग्रहों के मन्दे प्रभाव के समय तेल दान कल्याण होगा।** इनकी आमदन हुए होने से पहले शादी (शुक्र की बिना वक्त शादी सफेद गाए का दान गैर मुबारिक होगा) का होना जरूरी होगा। अगर शुक्र सोया हुआ होवे तो **नर औलाद शुक्र की पूरी अवधि (2० साल महादशा) के बाद कायम होगी जिस का उपाय बुध की पालना होगी।** अगर ऐसा न हो तो औरत के कम से कम तीन भाई होंगे जो अब शुक्र को हर तरह से बचा व जमा देंगे। सिर रेखा के बिलकुल नीचे (बीच हथेली) छोटी सर लकीर हो तो विचारों के बदल देने वाल होगा चाहे कमजोरी कहो चाहे चालकी शनि की। 12 साल खुब दौलत आवे (शनि का प्रभाव) नहीं तो कामदेव की शक्ति जुर्म या नामर्द और बुजदिल हो।

शुक्र नं० -11 राहू नं० 12 हो तो लड़कियों की तायदाद बहुत ज्यादा होवें मगर धन दौलत की आमदन भी बहुत ज्यादा होवे।

शुक्र नं० -11 बुध चन्द्र कायम तो अपना हर काम खुफिया रखकर करने का आदि और मौका पर फौरन ख्यालात टिट्टू की तरह घुमा लेने वाला हो मगर दुनिया या धन से खाली न होगा।

शुक्र नं०-11 बुध नं० 3 हो तो मर्द खानदान या मर्द के सम्बंधित विचार शुभ होंगे औरत अपने मर्द के खिलाफ न ही अपनी मर्जी वालों को और न ही अपनी लड़कियों को धन दौलत दे सके बल्कि अपनी लड़कियों आदि का धन भी अपने मर्द के (आदमियों) खानदान को खिला देगी या झगड़े फसादों में बरबाद करवा देगी। जाहिर वहीं घर की भाग्यवान मालूम होगी मगर अपने मर्द के घर को बरबाद करेगी।

शुक्र खाना नं० -12

(ऊँच) काम धेनू गाए

लक्ष्मी चौपाया, अपनी औरत का सुख सागर (27 साल सुख)

शुक्र 12 राशि 12 पग भी इसके 12 हो,
पत्थर सुखा भी बेशक हो घी का मौसम बारां हो
अकेला शुक्र ही इसको तारे मदद न कोई करता हो
दुख शत्रु सब मिटटी करके दया से अपनी तारता हो,

तारने वाली कामधेनू गाए होगी। अब शुक्र खाना नं० -9 का नेक फल भी साथ होगा और किस्मत का सब कुछ इसकी अपनी औरत के हाथ होगा। जो मामूली नीले फूल से ही राहू बुध्र दोनों को ही दवा सकेगा। जबकि वो दोनों ही मन्दे हों। औरत का सुख 27 साल होगा। **मुसीबत के समय या मन्दे प्रभाव के समय शुक्र के दुश्मन ग्रहों की सम्बंधित चीजें अपनी औरत के हाथों बाहर बीराने में मिट्टी तले दबाना शुभ होगा।**

शुक्र ऊंच हालतः-

शुक्र *नं0* 12 में खानदान की परवरिश करने वाला औरत का सुख और औरत मी मतीह और औरतों के जरिए काम का नेक नतीजा, गरीबों से फायदा और आराम। राग रंग, शायरी वृहस्पति का फल मगर औलाद से बैचेन व नेकी के काम काम में आगे हो। गाए बेल का सुख हो, उम्र 96 साल होगी अब शुक्र का ही अपना प्रभाव होगा। स्त्री को सुख हल्का पुरुष को स्त्री का सुख पूरा होगा। मगर राज दरबार से आम तौर पर, दुश्मन, और हर एक से आराम हो, मच्छ रेखा शुक्र के पर्वत पर शुभ निशान का फल होगा। जिसके लिए वृहस्पति शनि नं० 7 मुशतरका में देखें। गऊ शुक्र शाना नं 12 कामधेनू गाए तारने वाली गऊ या जब और जिसका **शुक्र नं० 12 हो तो उसे गाय का साथ अधिक शुभ होगा। मगर इसका रंग नील गऊ (राहू) न होवे।** कामदेव मुहब्बत बाजी ब स्त्री सम्बंध शुक्र का वास्तविक ऊचपन व्यक्त करता है, धन दौलत ऊंच शुक्र की, मगर औरत की सेहत मन्दी।

(1) दूसरों की सहायता दूसरों की पालना और उनके लिए भण्डारे।

(2) वही फल हो शुक्र खाना नं 2 को है, सिवाए औलाद के मन्दे फल के शुक्र हर तरह से ऊच फल देगा। तमाम तरफ की माया इसकी औरत के साथ होगी जहां कोई सहायक न हो उसकी औरत की किस्मत सहायता देगी।

(3) वृहस्पति सूर्य-चन्द्र तीनों ग्रहों का नेक फल साथ होगा अगर नेक न हो मन्दा तो कभी होगा।

(4) शुक्र नं 12 बुध नं०, -6 तो दोनों ग्रह ऊंच फल देंगे, लड़के लड़कियां सब ही शुभ और सुखी व सुखी करने वाले होंगे।

मंगल नेक (शस्त्रधारी)

श्री हनुमान जी, पवन पुत्र, मंगल नेक सुर्ख रंग,
नेक होने पर जिस्म में खून रूह की तरह जंगल में मंगल किया
और बदी से हिरण की तरह भागा।

नेक मंगल से जंगल मंगल खुन चढ़ा खूनी होता है
अकेला बैठा जब शेर है जंगल घर चोर या कैदी होता है
सिर रेखा या बुध दुरूस्ती मंगल बद नहीं होता है
अदल का राजा हो कातिल खूनी तलबार घनी भी होता है
जुग चारों में चन्द्र चलता तरफ चार शनि चलता है
बद मंगलीक जो चौथे बनता बदला खुन से लेता है
पहले तीनों घर बड़ा है भाई चौथे मंगलबद होता है
घर 5 से 9 मुन्सिफ होवे 12 भाई नहीं रहता है
अन्त सूर्य या किरणे उसकी पवन पुत्र भी होता है
शनि के घर या राजा चलता मर्द मगर नहीं मारता है
होंठ बाजू या मुंह का दहाना हाथ मरलज होता है
पेट छाती जो प्रवल होवे फैसला मंगल होता है
चन्द्र दूध में शहद से मिलता शुक्र मिटटी पानी होता है
बुध मगर ऐसे चक्र देता नेक से बद कर देता है
राहू बना है हाथी इसका केतू से हर दम लड़ता है
नेक रहे तो दयालू शिवजी टुकड़े बदी दो करता है

गृहस्थ में आराम दूढ़ने के जमाना में जंग व जदल और लड़ाई भिड़ाई के साथीयों, भाइयों, ताए, चाचे आदि से नेक व जमाना का प्रभाव देने वाले ग्रह को मुगल कहा गया है। साफ दिल, साफ नजर अन्दर बाहर से एक जैसा जमीन से लाल (कीमती पत्थर) बिना औलाद के लिए औलाद, साफ लाल ओर पूरा शक्तिशाली होना इस ग्रह का काम है हर दम खुनी झण्डा एक हाथ और हिरण के बिलकुल विरुद्ध रहना इसका जरूरी हिस्सा है। ग्रह कुण्डली के शुरू के खाना नम्बर एक नेक मंगल का घर जो नेक सूर्य का उत्तम प्रभाव और आखिरी खाना नं०`-8 वृश्चिक मंगलबदल भी मौत होता है। जन्म और मरण में मंगल साथ है तमाम जिस्म की दरस्यानी जगह नाभि को मंगल की किरणे माना है।

मशनोई ग्रहः-

सूर्य बद व मंगल नेक बाहैसियत हेतू औलाद जिन्दा रखने का मालिक बैल संजरी का मालिक, मंगल नम्बर एकव इरे कर फर्क। जिस टेवे में मंगल नं०1 हो तो व्यक्ति अपने बड़े भाईयों के बाद मरेगा। और जिसके नम्बर 2 का मंगल होवे वह चाहे अपने बड़े भाईयों के से पहले गुजर जायेगा।

मंगल नेक रेखा--- गृहस्थ रेखा :-

शक्तिशाली शरीर मंगल से सम्बंधित गृहस्थ रेखा अंगूठे की जड़ में गई तो पोते पड़ौते देखे। सीधी ठण्डे की तरह गई तो कर्जाई हुआ। अंगूठे की तरफ पीठ करके गई मंगल बद-चन्द्र की तरफ मुंह किया तो गृहस्थ मंदा हुआ यह रेखा और जात के मां बाप भाई बन्धु और औरत के बाल बच्चों से सम्बंधित दुनिया का सम्बंध बताती है। परिवार का पूरा हाल देखने के लिए मच्छ रेखा (जिसका जिक्र शनि वृहस्पति आपसी में है) का सम्बंध जरूरी है आधे दायरा की शक्ल मंगल नेक के पर्वत पर ही की लम्बाई इस रेखा की सुदृढ़ पहचान है।

मंगल के पर्वत का प्रभाव :-

(1) इस पर्वत के दो हिस्से हैं एक नेक दूसरा बद प्रभाव साफ साफ है नेक, बद बुरा मंगल होगा। मंगल की साधारण अवधि 6 साल है जिसके शुरू में स्वयं मंगल का प्रभाव मध्यम टुकड़े में शनि और आखिरी हिस्से में शुक्र का प्रभाव होगा। मंगल में एक चौकोर हमेश दुश्मनों से बचाता रहेगा और मंगलबद दुश्मन पैदा करता रहता है नेक मंगल के बिना सब गृहस्थ बरबाद होगा न भाई बन्धु न सुसराल खुशहाल होगे। यह ग्रह मंगल नेक और पर्वत जंगल में मंगल का प्रभाव करता है। मंगल नेक का किनारा या अन्त इस जगह तक माना है जो उम्र रेखा के दरिया की गुजर गाह है। मंगल नेक कर हर जगह का प्रभाव नेक या जिस जगह पर हो उस जगह का प्रभाव यकीनी नेक होगा और अगर मंगलबद हो तो हमेशा हर जगह प्रभाव बरबाद करने वाला होगा। अगर मंगल के दोनों पर्वत ही न हो तो भी नेक प्रभाव होगा। हौसला बुलन्द होगा और एक ही आदमी लाखों का सामना करने की शक्ति वाला होगा। सिर रेखा बुध दुरूस्त और सही होने पर मंगल का मन्दा प्रभाव नहीं होता। महावन उम्र रेखा की सहायक रेखा गृहस्थ रेखा के साथ मिलती जुलती हुआ करती दोनों रेखाओं की अलग-अलग पहचान यह है कि गृहस्थ रेखा तो कमान की हालत में हुआ करती है। जैसे कि भोलाई का एक सिरा वृहस्पति की जड़ में तो दूसरा सिरा शुक्र के पर्वत पर अंगूठे की जड़ की तरफ ही जाया या झुक जाया करता है। महावन उम्र रेखा का वही रूख होता है जो रूख उम्र रेखा का होता है।

मंगलबद से मंगल नेक को शाख : -

ऐसी शाख बहुत कम हुआ करती है एक पर्वत (मंगल नेक) तो औरत खानदान, दूसरा पर्वत (मंगलबद) माता के खानदान से सम्बंध है जो आम तौर पर अलग-अलग ही हुआ करते है और अगर ऐसी रेखा से मिल जाए तो आपसी दुश्मन ना असर देंगे। यदि अगर मंगल नेक और मंगल बद और मंगलबंद (बनावट अलग निश्चित है।)इकटठे हो जाए या दृष्टि में तो शुक्र बुध या बुध शुक्र साझें बनावटी सूर्य का फल या सूर्य की सेहत या तरक्की रेखा सहायक होंगे।

मगर राहू केतू बुरा फल देंगे या ऐसी हालत में जो ग्रह खाना नम्बर है। में हो वो अब खाना नं0 11 पर असर देगा या अब खाना नं । देखेगा खाना नं0 11 को इस मंगल का पहला वृहस्पति और हाथ का कोना सबसे आखि चन्द्र (समय में सबसे पहले हवा और तीसरे नम्बर पर पानी) हवा आग और पानी फिर मिटटी बनी क्या ही अच्छे थे। यानि बात का शुरू और आखिर (क्या ही उम्दा थे। बात मध्य में या हाथ का मध्यम हिस्सा दांया बांया दोनों मंगल नेकी बदी मिली मिलाई ताकत राहू केतू पैदा हुए) ऐसा खराब हुआ है कि सबसे अन्त नम्बर पर बनने वाला चीज या हवा बन्द आग बाद, पानी से मिटटी या शुक्र बुर्जो की कुल संख्या का आखिरी अक्षर कुण्डली के खाना नं-7 (बुध शुक्र मुशतरका) बुध के दायरा की कुल गोल जमीन का बोझ संभालने वाला नर टुकड़ा खुद जमीन की कीली और अंगूठा कहलाता है बिल्कुल ही हाथ के क्षेत्र से जुदा हो कर जा बाहर को निकल भागा और इस शुक्र के पर्वत ने भाइयों की मुहब्बत न छोड़ी। इसी कारण से शुक्र को सिर्फ मुहब्बत की पसन्द आई मगर अंगूठे ने चाहे हाथ के घर से दर बदर हुआ हौसला न छोड़ा, इसी असूल पर दुनिया कर उम्मीद, बाहौसला कायम है, या तमाम हाथ की जमीन अंगूठा (हौसला)की कीली पर चल रही है और शुक्र से बुध (जमीन गोल)की सूर्य रेखा (खाना नं 11) सूर्य के खाना नं 1 का असर (खुद धन दौलत, स्त्री सुख संसारिक सुख, परोपकार या व्यापार में लाभ) खाना नं 11 में ले जा रही है। दो पापी (शनि केतू शनि राहू) या दुश्मन ग्रहों (बुध के मुशतरका) के साथ मंगल नेक प्रभाव का होगा और दोनों दूसरों से इनका नेक काम लेगा। अकेला ही मंगल (हर तरफ से अकेला) शैर तो होगा मगर जुगल (बुध) के बगैर शेर होगा या बकरी (बुध) की जगह खण्ड (मंगल) की चीजें खाने वाला कमजोर शेर होगा। जिसमें शेर की शेरी या बकरे के खून से पैदा होई हुई खुखारी न होगी। ऐसे अकेले मंगल की बहादुरी या बकरी की तासीर का फैसला खाना नं0` 4 के ग्रह करेंगे विस्तृत रुप से अगर बुध (सिर रेखा) दुरूस्त और कायम हो तो मंगल का असर मन्दा न होगा। मंगल है खाली जगह से चीजों को इधर उधर करके मैदान को खाली व सफा रखने की ताकत या निरपक्ष चीजों की मौजूदगी उदाहरण का तौर पर फूलों में शहर, सूर्य के बगैर मंगल बुजदिल होगा। मंगल नेक को बुरे प्रभाव की तरफ से रोकने वाला बुध (सिर रेखा) है जो दुरूस्त हो। मंगल नेक ने तंग आकर साथ छोड़ा ओर इससे घर ही अलग कर लिया और हाथ पर दाई तरफ जा बैठा चाहे दोनों भाइयों ने सभी को दो हिस्सों में बांट दिया। एक तरफ 12 और दूसरी तरफ 3 दोनों का फर्क मध्यम स्थान पर १० का अक्षर रह गया जो बाकी सबकी किस्मत है इसीलिए कहा जाता है कि नं 3 में नं0 13 में व टोकरी के बोरो में मंगल नेक जब कुण्डली में हो तो वो ग्रह सब से पहले इन्सानी किस्मत में उस ग्रह की चीजों ने

नेकी शुरू करेगा। यानि अपने असर के समय इसकी निशानी होगी जो ग्रह कि सबसे ऊंच और नेक हो यह ग्रह बुलन्द होने नेकी करने की जागती हुए उंमग एवं नेक इच्छा और अपने शरीर के लिए दूसरों से सहायता ले लेने की शक्ति का मालिक है। नेक मंगल पूरा शक्तिशाली होगा। सूर्य का साथ होगा। राहू इसके साथ बैठा हुआ चुप होगा। जंगी तदबीर का मालिक, दौलतमन्द मगर माल हराम का एक अशं भी साथ न मिलाए। बिल्कुल शनि के विरुद्ध दुश्मन बेशक ज्यादा मगर बहादुर हों सुसराल व ताए चाचे का सम्बंध भी इसी पर्वत से स्पष्ट होता है। मंगल. नेक के प्रबल ग्रह वाला यह तरफा तबीयत दहाना (मुंह) कसादा दोनों होंठ व सूर्ख रंग आंखे सूर्ख और शेर की तरह डरावनी और खूंखर जैसी । वृहस्पति व सूर्य चन्द्र की निशानियां भी साथ मिलती सी मालूम होगी। ऊपर से उभरा हुआ ओर भारी मगर नीचे पांव की तरफ से हल्का हल्का होगा। निम्नलिखित का साथ होगा।

चौड़े हाथ:-

अंगुलियों के सिरे चौड़े हो, हकूमत का ख्वाइशमन्द इरादे का पक्का होवे।

मुंह का दहाना:- (मंगल का घर खाना नं 3)

खुलाव एवं साहब हौसला, तंग-- डरपोक, चौड़ा-- बीच जिन्दगी अमूमन परेशानी बड़ा व लम्बा--सहबत परस्त।

बाजु (मंगल नेक):-

जिस कद्र लम्बे उसी तरह नसीबा वाला, अगर घुटनों से भी ज्यादा नीचे को और लम्बे हो तो राजयोग गिना है।

होंठ (मंगल हर दो हिस्से) (1) मोटे और लम्बे-- कम अक्ल । 2- बहुत लम्बे-- चोर, बदमाश ---1---3 ----बारीक और सुर्ख रंग अमतदिल मिलज़ मिजाज । 4 --- अक्सर रंग सुर्ख-दाना, अक्लमन्द, खुश गुजरान होवे - 5- अक्सर रंग सफद स्याह --नीला रंग --बदबख्त मुफलिस 6 -- एक बडा दूसरा छोटा --बदबख्त 7-- नीचे का बडा जल्द नाराज होने वाला

मंगल नेक :- ग्रह ग्रह वृहस्पति सूर्य और चन्द्र के साथ चलता हैं मगर इनके दांए या बांए जैसा हीर केदार (पहर वाल) होगा। मकान का दरवाजा पूर्व-पश्चिम होगा। कच्चे या पक्के होने की कोई विशेष शर्त नहीं। मर्द औरत जानदारों की आमदन ।

खानावार इशया:-

1 दांत 32/31, सौफ खाना *नं0* 2 चीता हिरण, खाना *नं0* 3 पेट होंठ, छाती, हाथी दांत शुभ खाना *नं0* 4 तलवार, डेक (नीम) का पेड़ घण्डी व धुन्नी (नाभि) के बीच की बीमारियां मृगशाला शुभ। खाना *नं0* 5 भाई, नीम का वृक्ष। खाना *नं0* 6 नाभि। खाना *नं0* 7 बेलें (फलीदार पौधे) दाल मसूर पहला लड़का ।

खाना नं0 8 बाजुओं के बिना बाकी शरीर व खाना नं0 सूर्ख रंग खुनी। खाना नं0 12 बुलन्द आवाज, हाथी का महावत गलू।

मंगल पैदा बच्चा पैदा होकर समाप्त हो जाए आंख कानी हो जाए, मंगलबद आया और मंगल नेक खत्म हुआ।

मंगल खाना नम्बर 1

(घर का ग्रहफल का) 32 दांत, किस्तम को जगाने वाला चन्द्र का सूर्य की चीजों के उपाय से सब कुछ उत्तम फल का होगा।

मगर पापी ग्रहों की चीजों की पूजा मन्दा फल देगी।

मंगल पहले तीख्र अद्ल की सच का हरदम हामी है
वहाँ से भी वो नेकी करता-भला पुरूष वो प्राणी है
वह कभी न बदी को छोड़े-नेकी कभी न बड़ी तोड़े
नेकी छोड़ कलंकी होवे भाई मरे ससुराल भी रोवे
पापी ग्रह सब मन्दा होवे सूर्य चन्द्र मध्यम होवे
न ही साथ बृहस्पति होवे-गरहोवे तो घर न होवे (अगर मंगल बद होवे)

स्वयं बड़ा भाई हो नहीं तो बड़ा बनना पड़े यानि उसके बड़े भाई उससे पहले ही मर जाए। मंगल के दांए बांए अगर चन्द्र सूर्य पड़े हो तो माता पिता के लिए वो व्यक्ति मैदान में तलवार की तरह होगा। जिस दिन मंगल का जमाना 14, 28 या 13-15 होगा माता पिता का साया समाप्त होगा। मगर वो स्वयं तलवार का धनी होगा। दांत गिनती में 32 होंगे (3) भी मंगल नेक होता है (व हीन न होगा, अगर होगा तो पूरा राजा समान होगा, नहीं तो होगा मंगल बद न होगी। अगर बद ही होगी तो बस स्वयं) अकेला ही दम (अकेली होगी और बाकी सब तरफ में हर स्वयं में) मन्दे शब्दो में होगी। साधु के साथ से दर बदर होगा। लेकिन जब अपने घर होगा ओर साधु का भी साथ होगा तो भाई इसका दुखिया होगा। व मरीज होगा । लेकिन अगर किस्मत भली हो तो साधु ही न होगा और न ही ससुराल के कुत्ते का साथ होगा अगर होगा तो सब का ही बुरा हाल होगा। मगर यह नजारा व हर घड़ी होगा फिर भी होगा तो शनि की उम्र 39 साल के बाद बहवाल होगा। बजीर समान वा तदवीर होगा। दुश्मन चाहे ज्यादा होंगे मगर कुदरती तौर पर ही दुश्मनों से पूरा बचाव होगा और वो शक्की होंगे। लड़की के व्यापार में भी नफे रहे सूर्य व मंगल दोनों ग्रहों का अपना अपना और उत्तम फल होगा औसत आमदन मध्यम अवधि 28 साल कम से कम होगा। राज दरवार से लाभ होगा। जब मंगल नेक हो वरना 6 साल शरीरक तकलीफ जब (शनि) या में मंगल बद का सम्बंध होगा।

मंगल खाना नं0 1 दृष्टि खाली तो दिमागी खाना नं0 8 सूर्य से मुशतरका हमलाना रोकने की ताकत मत अमल मिजाज होगा। 32 दांत होंगे।

मंगल खाना नं0 1 बुध नं0 3 दोनों की दृष्टि खाली हो तो मंगल बुध दोनों ही निराली होंगे यानि दो भाई और दोनों ही कभी शाह कभी मंगल हालत में होंगे मगर उनकी (बुध) बहिन लखपति होगी।

मंगल खाना नं0 1सूर्य नं0 12 हो तो दरिद्री आलसी और निर्धन।

मंगल खाना नं0 1/7 बृहस्पति या सूर्य 7/1 या चन्द्र और बुध नं0 1 या शनि ख्वाह दोनों 7 हो तो या बैल मुझे मार के कामों के बुरे नतीजे मगर कुण्डली वाले के अपने खानदान को सहायता मिलती रहे या वो उनको देता रहेगा।

मंगल खाना नम्बर 2

चीता हिरण

मंगल दूजे मुखिया-लेह लगर का मालिक हो
लाख करोड़ों कोवो पाले गांठ न अपनी बांधता हो
शहद मक्खी का काम उसके है नहीं आता,
अगर आता तो रात है आता रात दूजी है नहीं आता
पानी कुएं ससुराल में मीठा ही बढ़ता होगा।
गर वहां कुआन होवे तो कम नसीब होगा

स्वयं खुद बड़ा भाई न होवे तो अपने बड़े भाईयों से पहले गुजर जाए अगर रहे तो बाकी सब भाई न रहें ससुराल को किस्मत में बुलन्द में बुलन्द करके स्वयं उनसे मीठे शहद का सुख लेगा। मगर वो ला औलाद न होंगे और उसे जरूर जायदाद और जर व दौलत ही देंगे। अगर वो दूसरों को पाले तो बढ़ता जाए नहीं तो वही एक दूनी दूनी का चक्र इसके गले पड़ा रहे। हर तरह से आराम हो दौलत की पूरी प्राप्ति और दौलत जमा हो। खानदान का सरदार हो, वृहस्पति व मंगल दोनों का सांझा और फल उत्तम होगा। अगर मंगल बद का सम्बंध हो तो कम नसीब 9 साल बिमारी का डर रहे और वर्ष ही असर होवे। बल्कि जंग व जदल ही मारा जाए। गृहस्थ रेखा वृहस्पति की शरण या कदम से ससुराल से जायदाद लाएगी ससुराल बिना औलाद नहीं होंगे बल्कि अमीर होंगे और जायदाद आएगी गृहस्थ में दूसरों की परवरिश के लिए (मगर खुद अपने लिए ही शर्त नही) धन दौलत का जरूर साथ रहे। स्त्री धन तरक्की पकड़े या तरक्की देवे। जैसे दूसरों की सहायता करे तो आमदन बढ़े वरना घटे। गृहस्थ रेखा जब मंगल नेक से उछल कर वृहस्पति या गुरू के चरणों में आ जाए तो कबीला की परवरिश के लिए उसे जरूर दौलत मिल जाएगी।

मंगल खाना नम्बर 3

(पक्का घर) पेट होंठ, छाती, हाथी दांत शुभ होगा।

नम्बर 9 का बुध और 11 गुरू वृहस्पति जो कि पूरे नेक नहीं होते इसलिए मंगल नं0 3 में बैठा उनको जहर देगा यानि नं0 3 में होते हुए बुध नं0 9

वृहस्पति नं0 11 को भी नेक होकर रहना पड़ेगा।

दोस्त नौवें हो ग्यारहां या कि हो वो सातवें में
मंगल तीजे सब से बरते बरतेगा वो शहद में
बुध गुरू अच्छे नहीं है 11-9 या सातवें
मंगल उनसे मिल न बरते बरतेगा वो जहर में,

मंगल अगर हिरण मंगल बद हो तो बुजदिल लेकिन अगर मंगल नेक चीता हो तो शेर से भी ज्यादा खून पीने वाला होगा। आम तौर पर दोनों रंग का साथ होगा। शहर में बराबर का घी या जहर होगा। पेट बड़ा हो खून भी बरबाद होगा बरह हाल यह ग्रह तो अब भरौसे-मय होगा गर होगा तो तेज आंधी के मुकाबला पर नर्म और हाजिर घास ही आजर, बरी और आबाद होगा। अगर बुलन्द की तरह तबीयत का सख्त हो तो खुआर बल्कि जेर बार ही होगा । फिर भी होगा तो सहायक होगा या बाकी तीन बचने वाले मकान की किस्मत का मालिक (भ्रसक व्यक्ति) शेर समान खूंखार होगा नहीं तो खाना पीना चाहे सुथरे दम दाह की बिसाह के साथ एवं ऐयाश ठन ठन गोपाल होगा उम्र ९० साल होगी। नेक मंगल दोस्त भाई बन्धु औलाद को सुख सहायक सम्बंधित दुनिया हौसला, नजर बीनाई, खुश तबीयत का मालिक होगा। जंगी तदबीरों में होशियार , ससुराल अमीर और उनका सुख हो तो उनसे फायदा हो, आम सम्बंध दुनिया से सहायता ले ।

अवधि प्रभाव :

इसके प्रभाव के समय शुक्र 8 साल शनि 12 साल, मंगलबद 5 साल तीनों 1/3 अवधि अपने अपने समय का केतू 24 साल और बुध 17 साल 1/2 अवधि अपना और राहू बिल्कुल चुप होगा और प्रभाव नदारद। बाकी का पूरा पूरा अरसा असर होगा।

दिमागी खाना नं 17 अदल या मन्सिफ मिजाजी बृहस्पति से मुशतरका किसी पर ज्यादती होती नहीं देख सकेगा।

मंगल खाना नं0 3 वृहस्पति या सूर्य नं0 9/11 या चन्द्र और बुध नं0 9 शनि या चाहे दोनों नं0 11 तो आ बैल मुझे मार के कामों के बुरे नतीजे, मगर कुण्डली वाले के अपने खानदान को सहायता मिलती रहे या वो देता रहेगा उनको।

मंगल खाना नं0 3 बुध नं0 9 या 11 तो आ बैल मुझे मार के कामों के मन्दे नतीजे औरत खानदान को मदद मिलती रहे।

मंगल खाना नं0 3 वृहस्पति नं0 11 तो स्वयं अपने लिए उत्तम फल मगर रिस्तेदारों की मौतों से तंग और दुनिया होवे।

मंगल खाना नं0 3 वृहस्पति या सूर्य या चन्द्र नं0 7 और बुध या शनि नं0 3 या चाहे दोनों नं0 7 तो आ बैल मुझे मार के कामों के बुरे नतीजे मगर कुण्डली वाले की औरत के खानदान को मदद होती रहे या वो उनको देता रहेगा।

मंगल खाना नं0 3 वृहस्पति नं0 9 या 11 ससुराल खुद दौलतमन्द हों और दौलत देवें

मंगल खाना नं0 3 शनि नं0 9 या 11 तो कुदरत की तरफ से शनि का बुरा असर मौतें आदि हरगिज न हों।

मंगल नम्बर 4

(नीच) राशि फल का चन्द्र का उपाय मददगार होगा या
मृगशाला हो, तलवार डैक का पेड़ घण्डी
व धुन्नी (नाभि)के बीच की बीमारियां।

चौथे मंगल मंगलीक होगा जला देवे वो समुन्द को,
ठण्डा इस दम ही वो होगा आठ तीजे जब चन्द्र हो
दुश्मन इसके चौथे तीजे या घर आठवें ही आवें
आग से जलता चौथे मंगल तेल मिटटी का ही पावें।
रवि गुरू जी तीन आठ चौथे या कि नौवें बैठा हो।
जहर के बदले दूध पिलाता मंगल बद मंगलीक ही हो

मंगल का चीजों (खण्ड शहद आदि) से कोयले हो जाएगा। स्वयं कार्य करने वाला परन्तु औरों को नसीसत करने वाला पाठ पढ़ाने वाला होगा गले में कटे हुए सिरों का हार डालने में आंख का मालिक शिवजी, भविष्य का ज्ञाता नात नाभि हाथ पर श्मशान या कब्रिस्तान को भी जलाने वाली आग उठाए फिरता होगा और अपनी किस्मत के प्रभाव में भी सुखी होगा। मंगलबद व मंगलीक के दोनों हिस्सों के अन्तर की बजाए दोनों ही का बुरा असर साथ होगा। मां, नानी, सास औरत पर मौत तक का पाठ होता है मंगल वह या मंगलीक सिर्फ इसके टेवे में होगा जिसके खानदान में उससे पहले बुजुर्गो में एक दो फल पुस्त कोई व्यक्ति पूरा वृहस्पति ब्रह्म ज्ञानी गुरू खालिस सोना या शाहाना हालत हो चुका होगा यानि उम्दा तख्त और गुलजार बन चुका होगा जिसे यह बुरा ग्रह बरबाद कर सके मामूली आदमी भी दुश्मन हो बैठे और नुकसान करके काम करने वाला हो । हाथ पर मंगलबद की रेखा होने से छड़ी की तरह तंग दस्त होगा अपने खानदान का भाइयों से अलग और दूसरों से मिला दिया, इस दुनिया से निकला और देवताओं में गया । जिससे कुल दुनिया के देखने वाले शिवजी भोले नाथ जी की नमी का लाभ उठाया। आंखे दो की तीन कर दे त्रिलोकी को देखने वाला हो मगर दुनिया को मार देने वाला या मौत का देवता (ब्रह्मा पैदा करने वाला, विष्णु जी पालक और शिवजी "चन्द्र" उम्र का मालिक शिवजी माना है, मारने वाले) बना दिए या खुद ऐसा व्यक्ति मन्हूस ही हुआ, कम रोब होंवे और मामूली आदमी इसका सख्त दुश्मन हो बैठे। अगर चन्द्र साथी ग्रह हो तो चन्द्र सब मंगल दोनों का उत्तम मगर चन्द्र का नेक असर प्रबल होगा। अगर मंगल बद हो तो मंगलीक होगा जो खुद अपने लिए उत्तम होगा दूसरों को मारे और जलाएगा। मंगल नेक से नेक असर बद

से बद बख्त। दो साल तकलीफ होवे अकेला मंगल *नं0* 4 है तो मंगल बद होगा। वास्ते जान व धन। अगर अकेला मंगल *नं0* 8 हो तो मंगलबद होगा वास्ते सिर्फ धन अगर मंगल बद नं 4 मंगलीक हो मां, नानी, सास जनानी की जातों पर हमला करेगा। औलाद में बड़बड़ होगी और मौत का मालिक तीन आंख का मालिक शिवजी होगा, मन्दे असर में।

मंगल खाना नं0 4 चन्द्र नं0 6 हो तो माता बचपन में गुजर जाए नहीं तो दोनों दुनिया
मंगल खाना नं0 4 बुध नं0 6 हो तो माता बचपन में गुजर जाए नहीं तो दोनों दुखिया
मंगल खाना नं0 4 पापी ग्रह नं0 हो तो औलाद के विघ्न जरूरी होंगे। मामू ससुराल को खा पीकर तवाह करे मौतों का प्लेगी चूहा होगा।
मंगल खाना नं0 4 चन्द्र नं0 3 हो तो हौसला व इज्जत बाकमाल हो, शरारत का माकूल जवाब देने वाला हो
मंगल खाना नं0 4 बुध में 12 हो तो दोनों ग्रहों का पूरा मन्दा फल, मौतों और गरीबी का मारा हुआ बेवकूफ शोहदा हो।

मंगल खाना नम्बर 5

(भाई नीम का पेड़)

मंगल पांचवें पांच गुणा हो नेकी और बदनामी में
पवन पुत्र की तरह उछले वो अग्नि व पानी में
माया आती ग्यारहवें से जाती वो तीजे से है
मंगल पांचवें घर में बैठे पूछ से। में ही चलती है

औलाद का आराम होवे मंगल कायम हो तो हर्ष मुख होगा पूरी शान्ती बाला होगा। मंगल बद हो तो नजर से ही तबाह करे मंगल अब सामने बैठे खाना *नं0* 9 के दुश्मनों पर भी मेहरबान होगा और खाना *नं0* 3 का ग्रह भी (अगर हो कोई) हनुमान की पूंछ की तरह मंगल का साथी व मददगार निगहवान होगा और धन दौलत का मालिक देवता बुनियादी लक्ष्मी (शुक्र या चन्द्र) इसके पीछे चलने वाला होगा। या वो व्यक्ति राजाओं रईसों का बाप दादा होगा मगर रात की नींद से कद्रे बे आराम होगा । **जिसका उपाय रात समय सिरहाने पानी का साथ रखना शुभ व सहायक होगा ।** व्यक्ति आनन्द में रहने वाला एक औलादमय होगा।

मंगल खाना नम्बर 6

(नाभि ,राशि फल का शनि का उपाय सहायक होगा ।

मंगल छेवें घर हुआ केतू शुक्र मन्दा
रवि मगर उस ऊँच हो बैठा किसी हो अंग
उसके फल बुध न होगा चौथे चन्द्र 2 न गुरू ही पहले
न सिर्फ पहला ही लडका मामू घर कल ही का चटका
छठे मंगल हो भाइयों की हानि - राजा तिनका ख्वाह लाखों हो राजी
जिस दम वो खुद ऊँगा होगा साया सब पर उम्दा होगा
वरना वही हो शिव शम्भू तोडके कोठे को लगा तम्बू

मंगल नेक से हमेशा ही शुभ प्रभाव होगा । हर तरह का आराम होगा बल्कि रागी होगा ओरत व दोस्तों का सूख होंवे (भाई इसके इससे हर हालत में कमजोर हो और अगर माली हालत में उम्दा हो तो अचानक बडें भारी नुकसान का मुंह देखे) यानि इसके भाई चार सो रुपये एवं स्वंय के पाँच सो रुपये तक चले जा सकतें हैं। मकडी की तरह छत से गिर कर फिर वहीं ऊपर को चलना सीखेगें । वो दरम्यानी बांस की तरह ऊँचे खून की किस्मत का निगहवान होगा । जो पताल में भी आगा जलाने या शहद से जवान मीठी कर देने की हिम्मत का मालिक होगा। जिस तरह मंगल खाना नं० 12 में होने से राहू गुम हो जाता हैं उसी तरह ही मंगल के इस घर होने से केतू (लडका) अदम पता होगा या अब किल्लत औलाद होगा जिसका उपाय बुध की पालना द्वारा चन्द्र शुभ होगा । बच्चों के शरीर पर जब तक सोना (वृहस्पति) न होगा वो सोना कमाएंगे लेकिन जब इनके शरीर पर सोना होगा वो दुनिया मे खाक उडा़एंगे या औलाद का मंगल शुभ न होगा अगर होगा तो दुःख ही खडा हो गया उनकी खुशी करने से मामला संगीन यादगार की भांति होगा । आम तौर पर वह स्वयं साहब उत्तम एवं आदेश देने वाला अवश्य होगा और सिर्फ मंगलवार के दिन की पैदाइश औलाद (नर)

छाती (मंगलबद)

1 फिराख और बुलन्द हो - दौलत मन्द हो
2 ना हमलावार और मौत अचानक हो
3 छाती पर बाल न हो-चालबाज धोखेबाज
4 छाती पर अधिक बाल- ऐयायश तबीयत, कम अक्ल आयु भी गुलामी में गुजरे

अंगूठा लम्बा अुगलियों के सिरे चौरस हो तो झगडालू होगा। मंगल बद, मकान का दरवाजा सिर्फ दक्षिण में होगा मकान के साथ या ऊपर मकान के दरखत का साया। आग, हलवाई की झुकाव का साथ होगा। मकान में या मकान के साथ श्मशान भूमि होगी। ला औलादों का साथ होगा ओर हो सकता है खुद वो इन्सान भी काला, काना लाऔलाद हो। अगर किस्मत भली होगी तो उसे इसमें रहने का मौका ही नहीं होगा। जिस्म के जोड़ चलने से रह जाए जिस्म के खुन का रंग जिल्द हो देखने से मर गया मालूम हो यानि इसके खून का रंग बरबाद हो जाए चाहे वह मगर बच्चा पैदा करने की ताकत कायम न रहे (यह दो अलग अलग चीजों है) **तो मंगल समाप्त लेंगे मंगल बरबाद वाले को सुरमा सफेद का प्रयोग बिलकुल उत्तम एवं सहायक होगा।** मंगल बद ऐसा होगा जैसे ऊंट के पेड़ तरह से सब्ज कदमा नजर बद वाला, एवं साज एवं ला औलाद आंख का नुक्स, चालीस चन्द्र आग से इन्सान आदि का जल जाना आग की जगह बच्चा आदि की मौत इत्यादि ।

मंगल बद
खाना नम्बर एक

मंगल बद पहले चढ़ता शाह चण्डाल हुवा
मर्द आयु बढ़ते गए पर दौलत घटती जा
मन्हूस बुजबिल बरबख्त होवे होता वो बिन्दक भी है
उम्र कोटी पर न होवे होता वो गुमराह ही है
ऐसे जन्मे चन्द्रभान-चूल्हे अग न मंजे वाण

28 साल उम्र से 24 साल उम्र तक न नेक हाल होगा बल्कि उस घर में दुमदार सितारा ही चढ़ता होना। अगर रंग स्याह हो तो भवसागर से पार होगा।

मंगल बद
खाना नम्बर-2

मंगल बद दूजे हुआ छाती सांप चढ़ा
भैरों से तो बच सकें इसलिए कहां हो जो

दुश्मनों से तो हजार बचाव हो सकता है मगर अपने ही घर के मोहरी से कहां हिफाजत होगी। अगर खून अपने ही हाथों तबाह करता जाए कम नसीब झगडालू झगड़ा हवा की तरह उड़ कर गले लगा रहे। इस पर्वत से अगर किस्मत रेखा को टेडी या सीधी लकीर या कटे मंगल खाना *नं0* 9 भी देखें तो अपने नजदीकी रिस्तेदारों की मौतें और अपने ही कारोबार में विरोधिता होगी । अगर खाना नम्बर 2 में द्वारा केतू मंगलबद हो यानि मंगल केतू हो तो हुक्मरान एवं उत्तम हाल होगा ।

मंगलबद
खाना नम्बर 3

दुश्मन दूसरे भाई, ताए चाचे मामू व मामू खानदान जंग व जदल शरारत व खूनी हौसला से सम्बंधित होगा जो बीमारी मौत का प्रभाव देगा मगर बुध या सिर रेखा के सही होने पर मंगल बद का प्रभाव न होगा। मंगल नेक से मंगलबद को शाख नेक प्रभाव, बशर्ते कि रास्ता में बुध या सिर रेखा या उम्र रेखा या शनि रेखा का सम्बंध या प्रभाव न हुआ हो। यही हाल वृहस्पति या सूर्य को चली जाने वाली शाख से होगा मगर बुध या शनि के असर से न सिर्फ विरोधिता आम दुनिया से होगी बल्कि बुजदिल, शरीर, फसादी होगा और अगर मंगलबद से सीधी ही मंगलबद से नेक की तरफ भागने का रूख करती हुई शुक्र रेखा समान होवे तो मौत न होगी मगर पैसा या कारोबार में विरोधिता जरूर होगी मगर कारोबार जरूर बरबाद होंगे।

मंगलबद

खाना नम्बर 4 (डेंक का पेड लाल मिर्च)

जब द्वारा पितृ रेखा यानि जब उम्र रेखा चन्द्र के पर्वत पर जा पहुंचे और किनारा पर त्रिकोन सी बनावे जुबान की बीमारियां, मगर चोरों का दुश्मन हो क्योंकि मंगल कर्क *नं0* 4 का बीच होगा। अगर त्रिकोन दिल रेखा पर हो तो दिल की रखना अन्दाजी शरारत, अगर चन्द्र के पर्वत पर हो तो खोटे काम करने वाला होगा। खराब रेखा से घर फूंक कर तमाशा देखने वाला शरीर, मौते बुजदिल डरपोक होगा। अब अगर मंगल बद हो तो यह ग्रह हर तरह से जालिम और क्रूर होता है (वास्ते जान व उम्र और दौलत धन सबके लिए 7 अगर मंगलीक हो तो मां, नानी, सास, इत्री औरत की उम्र पर हमला किया करता है मगर धन दौलत पर हमला नहीं करता मंगल बद की तरह मंगलबद को मंगलीक इस वक्त कहेंगे जब मंगल कुण्डली के खाना *नं0* 4 व 3 में हो (मंगलीक औरत मरे औलाद का सुख न हो) दुनिया व दुश्मनों का सम्बंध आमतौर पर जंग व जदल होवे। मंगलीक से औरत या मंगलीक औरत से पुरुष जिन्दा नहीं रहने पाएगा मंगल बद *नं0* 4 वृहस्पति 8 हो तो ढाल समान , बुजदिल, दरिद्री होगा मंगल बद मंगलीक का **उपाय:- जब यह जाहिर हो जाए कि बद का प्रभाव जा रहा है तो केवल चन्द्र का उपाय करना चाहिए यानि बड़ के पेड को दूध डाल कर गीली हुई मिटटी का तिलक लगाना चाहिए।** मंगल बद (पेट की खराबियों) को दूर करेगा। अगर वो आग से जला कर तबाह ही कर जाए तो उसके **बुरे प्रभाव जख्मों को दूर करने के लिए खांड (देसी खाण्ड) की बोरियों का बोझ छत्त पर कायम करें। मगर अब छत्त पर तन्दूर न रहे। तो औलाद या औरत की हत्या करता जाए तो शहद से मिटटी का बरतन भर कर बाहर मैदान में दबाया जाए अगर मौत तो न दें मगर बसने भी न दे तो मृगशाला से इसकी जहर हटा दे। अगर फिर भी बाज न आवे तो चांदी का चाकोर टुकड़े की सहायता लेवें। या दक्षिणी दरवाजा में ही लोंहे से उसे कील देवें।** और मंगलबद की सम्बंधित यह काला, काना ला औलाद बगैरह डेंक के पेड से दूरी पकड़े या मन्दिर (सूर्य) को आबाद करें। आम तौर पर इस लानत से देखकर न होंवे। **खानदानी उपाय में चिड़ी चिड़ियों की मीठा देवें। नहीं तो बद पुरूष फिर काबू न होगा।**

मंगलबद

खाना नम्बर -5

आम दुनिया की दुश्मनी, शरीर औलाद का सुख कम हो। **सफर गले लगा रहे** ओर 15 साल शरीरक कष्ट हो। **आग का खौफ व खतरा नजर के खराब होने का डर है।** औलाद को अठारह की बीमारी होने व इस पर्वत और खाना में माल

के भाई बन्धु या पिता के भाई बन्धु से सम्बंधित है इस पर्वत ने जो रेखा सूर्य की रेखा को जिसका नाम सूर्य की तरक्की रेखा है और बुध की तरह चलती है जा काटे तो भी भाई बन्धु ताए चाचे पिता औलाद अपनी या भाई की औलाद की मौत जाहिर होगी (मंगल बुध वो हम दुश्मन) और करीबी रिस्तेदारों पर बुरा असर होगा। मगर स्त्री लड़की मामी या किसी की मौत न होगी। सब नर होंगे जो मौत का शिकार होंगे। शुक्र या चन्द्र से आई हुई ऐसी शाख नर या औरत की मौत करेगी। बशर्ते कि ऐसी रेखा का रूख बुध की तरफ होवे। यानि मंगल नेक की तरफ से चल कर बुध या सिर रेखा को काटते गर्ज से यह रेखा टेढ़ी होती जा रही हो।

मंगल बध
खाना नम्बर -6

खराब प्रभाव होवे, हर बात में झगड़ा और हानि हो मंगल व केतू दोनों का बुरा असर होवे।

मंगलबद
खाना नम्बर -7

औरत से धोखा, 17 साल आग का खौफ रहे अक्ल मदद देवे न स्त्री सहायक हो। बदचलन दूसरों का काम बिगाड़ता फिरे खुद औरत को सुख हल्का होवे, अंगूठे की जड़ पर त्रिकोन हो तो मुहब्बत में पराई औरत से बदनाम हो माशुका की मौत होवे मंगल बद से अगर शाख हो (1) शुक्र और बुध को तो बुरा असर होगा क्योंकि शुक्र की तरफ आयु या शनि रेखा दुश्मन है (2) बुध को या सेहत रेखा को बुध दुश्मन होगा।

मंगल बद
खाना नम्बर-8

मंगलबद का अपना घर मौत, उम्र रेखा पर मंगल बद का निशान दो शाखी हो तो बुरी मौत हो। अगर त्रिकोन मंगल बद का अपना घर तक मौत का डर हो मगर जंगल तदबीर में माहिर और अक्लमन्द होवे। नहीं तो उम्र 85/96 साल या *90* से ज्यादा होगी। मंगल बद पर हो तो ऐसा मंगल औरत जिन्दा न रहने देगा । मगर औरत की बजाए माता पर कोई बुरा असर न देगा। (इसका प्रभाव औरत आने पर शुरू होगा) लेकिन अगर खाना *नं0* 4 में चन्द्र या सूर्य या वृहस्पति हों तो खाना नं 8 मौत का घर न होगा यानि कुण्डली वाले की उम्र जरूर होगी। बाकी बातों में चाहे मंगलबद का धुआं आता है जो बाद में कोई गिनने गिनाने वाला न होगा फर्जी तौर पर अन्धेरा जमाना होगा। विस्तृत रुप से अगर शनि का मौत का है। शरीरक सेहत दुख बीमारी और दूसरों के लिए जिन्दगी ओर कमाई ताए, चाचे और स्वयं अपनी उम्र की 28 से 39 साल मंगलबद ओर शनि बुरा असर देंगे।

मंगलबद के पर्वत पर हथेली के किनारा हथेली के बाहर के हिस्सा पर सीधे लेटे- खत ताए चाचे और दो शाखी के मुंह पर की शाखे ऐसी औरत के लड़के गिने जाएगे, विधवा ताई चाची जाहिर करेंगे जो किसी न किसी ऐसे मर्द की तबाही का सबक होगी। इसको पौरी पोशा कहना या किसी न किसी तरह से इसकी आर्शीबाद लने से बचाव होता रहेगा।

मंगल बद

खाना नम्बर-9

शक्ल में केवल मंगलबद का असर मगर त्रिकोन में शुक्र का साथ या अगर दो रेखा ऐसी शक्ल हो तो दो शाखी कहलाएगी और अगर अलग ही निशान हो तो मंगलबद शुक्र व मंगलबद तिकोन ऐसे व्यक्ति की पैदाइश में कुछ राज होगा। जिसका व्यक्त करना कठिन होगा (यह निशान वास्तव में शुक्र---- मंगल से साँझा है) मंगल बद दो शाखी पैदाइश के वक्त माता पिता की माली हालत कमजोर होवे जितने साल की हडबन्दी पर दोनों शाखे मिले इस साल में सूरत हालात बेहतरी की तरफ हो, अगर मंगलबद (तिकोन) हो तो बदी का पुलता होगा। बुरा कहलाएगा। शत्रु भी कहलाया जा सकता है हमेशा धर्म के विरुद्ध रहे। मंगलबद जब उम्र के 5 वें साल शुरू होवे तो तबदीली मजहब पैदाइश में राज, माता-पिता की माली हालत उसके जन्म से खराब होकर मंगल बद के जमाना के खत्म होने पर दुरूस्त होगी। अगर मंगलबद के पर्वत से कोई शाख किस्मत रेखा को आ ही काटे किस्मत मन्दी बल्कि करीबी और जद्दी रिस्तेदारों पर भी बुरा प्रभाव होगा। यानि मंगल नं 9 का दिया हुआ प्रभाव जहर से भर जाएगा।

मंगलबद

खाना नम्बर *10*

15 साल ही तकलीफ हो इस पर्वत पर मंगलबद हो तो **जादू मंत्र जानने वाला होगा।**

मंगलबद खाना नम्बर 11

औलाद से बेआराम होवे मंगलबद का प्रभाव आमदन, किस्मत रेखा शुरू में शक्की हालत में है यानि दो शाखी लेंगे या मंगलबद हर दो हालत में माता-पिता की माली हालत सुख चैन खराब व हल्के होंगे। काम रेखा का असर होगा।

मंगलबद खाना नम्बर 12

बेवकूफी के कामों में दौलत खर्च हो जाए और 5 साल नुकसान का डर होवे आम सुख स्त्री सुख, व्यापार वगैरह सब हल्का, औलत और नजर का असर बुरा गिनते हैं।

मंगल नं 12 बुध नं 8 हो मंगल चन्द्र या सूर्य का सम्बंध न होवे तो अपनी माता से पहले ही बचपन में गुजर जाए।

बुध शक्तिमान

श्री दुर्गा जी, बुध सब्ज रंग तोता, मैना, भेड़-बकरी, सिर, जवान का मालिक व हर जगह गोल व सब्ज, हीरा चाटने से जहर जवान के रास्ते इन्सान मरे, हीरा सब को काटे मगर इतना नर्म की खुद कली धातु से कट जाए।

बुध अकेला आकाश का चक्र-निरपक्ष निरलेप होती है
घर2, 4 या 6 में बैठा राज योगी भी होता है
घर तीजे से आठवें होवे मदद रवि को देता है
नौ से बारह या दूसरे पहले शनि को प्रबल करता है
घर पक्का जिसे ग्रह का होवे बैठा वहां वही बनता है
सातवें घर में पारस होवे ग्रह साथी को तारता है
नौ, बारह, आठ, तीन में बैठा कोढ़ी थूकता होता है
घर पहले नौवे घूमता राजा परिवार रवि पांच करता है
सर का ढांचा या दांत हो उसके गला सिर नाक होता है।
रफतार आवाज हो नाड़ियां या मन्तकी हाथ भी होता है
शर्म हया तहलीम जो खाली अक्ल सुराग भी चलता है
हिसाब स्वभाव जो जाती है उसका फैसला बुध का होता है।
शनि वृहस्पति ग्यारह राशि बुध से दोनों चलते हैं
बुध दबाया हो या मन्दा दोनों निष्फल जाते हैं।

बुध की तासीर:-

वृहस्पति (पीले) बुध (नीले) सम्बंधित सब्ज रंग बुध के चौड़े पत्तों के हुए वृक्ष पर गले में लाल कण्डी वाला तोता, तोता वृहस्पति की नक्ल कर रहा है यानि मंगल बुध मुशतरका से बेशक सोना तो न होगा तो वृहस्पति का स्वामित्त्व है मगर वृहस्पति की नक्ल जरूर होगी और खाली टेर्डे करने वाला तोता न होगा। जो वृहस्पति दोनों जहानों के मालिक गुरू की आवाज की नक्ल अपनी 35 के हरफों से रंग बिरंगे के पखों वाली मैना को सुना रहा है और जिस के नीचे दूध देने वाली मगर मैगनों से भर कर, मुंह पर दाढ़ी लटकाए हुए पहाड़ी व मैदानी बकरी मगर बकरा दुनिया में दूध देने वाला बकरा मौजूदा होता देखा गया है यानि इसमें बकरे के नर होने की चीजें भी मौजूद है और दूध भी देवे भेड़ों की तरफ देख रहा है। यही बुध परिन्दों में चमगादड़ के नाम से भी जाहिर होता है ग्रहचाल में तोते की 35 में कुण्डली के खाना नं 9 को उड़ाकर अपना भेद खोल गया है यह बुध का भेद इन्सान और हैवान में अक्ल का दायरा है अगर नर्म हुआ तो इतना कि कली का नाम पाया अगर शक्ति और कीमत पकड़ी तो हीरा, सब्ज रंग जबान पर रखते ही दम बाहर कर देने वाला हुआ। गोल अण्डा बता जो लेटा हुआ

तो नर्म था मगर खड़ा अण्डा सख्त इतना कि मामूली जोर से तोड़ा न गया। मंगल खून (सभी सम्बन्धित दुनिया) ने बुध की लड़की को औरत का नाम भी दिया कि माँ पहले थी या बेटी, की दंत कथा हुई। सूर्य के आकार बुध के दायरे की हद बन्दी (लड़के को तड़ागी केतू को बुध से खाना नं 6 में बांध कर बच्चे के नर हिस्से की मजबूती) को मालूम करने के लिए सारे आकाश में बृहस्पति की हवा घूमने लगी तो बुध की अक्ल के दायरा के इर्द-गिर्द की गोलाई की जांच माल का चक्र चलने लगा जिससे आसमान व पाताल के बीच जाहिरा व बातन हजारों चीजें मालूम होने लगीं। लहरें उठी तो एक तरफ दिल को मायूस करने वाला ख्याल कि- पड़े भटकते हैं लाखों-करोड़ों पंडित, जहारों स्याने जो खूब देखा तो यार आजर खुदा की बातें खुदा ही जाने मौजजन हुआ और दूसरी तरफ इशारा हुआ कि जिधर देखता हूं उधर तूं ही तूं है कि हर शै में जलवा तेरा हू-बहू है वही (वो मालिक बृहस्पति) खुद नहीं है मगर तूं बुध का जलवा या करिश्मा या अक्स अवश्य ही है या ये कहो कि किस्मत को अपनी इच्छा के अनुसार लिख तो नहीं सकते मगर लिखे को पढ़ने के लिए बुध की कोशिश अवश्य ही है। खुलास्ता बुध की अक्ल व सुराग बरतने और कुरेदने से घटता नहीं। इसलिए इन्सान शरीफ बुध भी मंगल को छेड़ जाने की तबीयत से हटता नहीं। इल्लत मामूल का नतीजा, रूह बुत का झगड़ा, गौ होता नहीं (रूह बुत इकट्ठे चले हुए को ही हजरत इन्सान कहते हैं) मगर होता भी जरूर है (समय रसालत चल जाने के समय) यह होते हुए भी न होता या आजरा बुध का होना कहलाता है।

बुध की रेखाएं:-

खाली जगह खुलाव या आकाश का नाम बुध है जो मौके के अनुसार (अक्ल व सुराग) बढ़ता जाएगा। बुध शामिल हुआ, अक्ल ने मिलावट की, यह मिलावट बुध की ताकत या अक्ल से हुई हर तरह से खाली व अकेला बुध दुश्मन ग्रह के घर की पूरी नेक हालत पैदा करेगा। अकेला बुध हर तरफ से खाली ह धूम जंगल होगा। देश परदेश की जिन्दगी और लालच का सबब होगा ऐसा बुध अपनी तरफ की या 17 साल तक कोई भी बुरा या भला असर न दे देगा। मगर तजारत में फायदा ही रहे। सिर रेखा अगर बगैर शाख इकहरी या अकेली हो तो ऐसा आदमी लालची और देश परदेश में फिरने वाला होगा बुध को सिर रेखा से अगर कोई शख जो अकेली या इकहरी बिना शाख हो तो तजारत में फायदा तो होगा मगर ऐसा आदमी लालची और झूठा होने के कारण से देश परदेश में मारा-मारा फिरता होगा। बुध कायम हो तो शुक्र चन्द्र और मंगल बद का बुरा असर न होगा। चन्द्र राहू के झगड़े में बुध मारा जाएगा। ख्वाह वो कहीं ही बैठा हो चन्द्र नं 4 राहू नं 10 हो तो सिर फट जाए।

बुध अक्ल, बुद्धि, दोस्ती, सिर और जवान के काम इसी दायरा का काम है दो

दुश्मन ग्रहों का नेक व बद फल बदलने की नाली का असल मालिक बुध ही है या दो मुखालफों के बीच रहने वाला और नेक काम करने वाला बुध है शनि में भी यह शराफत है मगर बदी के कामों को तो बिना इसकी ताकत के पूरे सबूत होंगे। सूर्य के लिए बुध और मंगल के बद से बचाने के लिए बुध एक अवश्य ग्रह है। मगर खुद शुक्र के बिना पागल होगा यानि शुक्र जो इसका असल दोस्त है अगर नीच हो तो यह खुद ही कम ताकत का हो जाएगा। बुध के पर्वत तो किसी के दोस्त किसी के दुश्मन होगें मगर बुध का दायरा या चक्र हर एक पर्वत की ताकत को चक्र में डाल देता है। दिल रेखा अगर शनि के नीचे हो तो दिल की शक्ति नसफ होगा। किस्मत रेखा की जड़ में हो तो ऐसे व्यक्ति की पैदाइश में कोई भेद होगा जिसका जाहिर करना मुश्किल है यह ग्रह बुरे के साथ मिल कर बुरे की बुराई बढ़ा देता हैऔर जोराबर के साथ मिलकर इसको जोर ज्यादा ही देता है यह हर तरफ मिल जाता है हर तरफ गोलाई पकड़ जाता है। अकेला बुध खाली ग्रह होगा और केवल मख्नश हालत में असर देगा। इसके असर का आम समय 2 साल है और हमेशा एक जैसी रफ्तार से असर करता है इसके असर के पहले भाग में चन्द्र, मध्यम भाग में मंगल और अन्त में बृहस्पति का असर होगा। बुध हो खाना नं 1 से 2 में तो मदद देगा शनि को बुध हो खाना नं3 से 8 में तो मदद देगा सूर्य को, और अगर बुध हो खाना नं 9 से 12 में तो मदद देगा । शनि को बुध के ग्रह प्रबल वाला कबूतर की आंख से मिलती हुई आंखों वाला मगर डरपोक चाल में चालाक बिल्ली की तरह का, जवान मासूम लड़कियों की तरह की मगर जादू की ताकत की, दांत शानदार, बहरूपियापन (नक्ल करने या स्वांग उतारने की ताकत) दर्जा कमाल। जबान को होठों पर फेरने की आम आदत होगी एवं रवानगी में तेज, बातों-बातों में फरजी काम बना दे। मगर बकवासी व गप्पी न होगा। हर एक को अपना कायल और साथी बना लेगा।

मगर खुदरहनुमा बनने वाला न होगा। जबाव का स्वाद ज्यादा मगर खुराक कम खुबसूरती पसन्द, मगर ज्यादा चीजों की परवाह नहीं नीचे लिखी बातों का साथ होगा।

1) दांत (बुध) (अगर बाहर को निकले हुए हो तो अक्लमन्द मगर किस्मत के साथ की कोई तसल्ली नहीं होगी।) कुण्डली का खाना नं० 6 ।

2) जायदाद में 3० से कम और 32 से ज्यादा ख्वाह मर्द को ख्वाह औरत मन्हूस मन्द भाग्य (कुण्डली का खाना नं० 12)

3) जायदाद में 32 हों जो अनमोल या अचानक कुछ बोले पूरा हो। कहा हुआ दुरवचन खाली न जाए ऐसे व्यक्यिों को सताना नेक फल न देगा। खुद भी ऐसे व्यक्तियों को क्रोध से परहेज करना चाहिए। ऐसे व्यक्यिों से बुरी आवाज लगभग ज्यादा निकल जाया करती है। (कुण्डली का खाना नं 2)

4) जायदाद में 31 हो, मन्द होगा, नेक असर देगा (कुण्डली का खाना नं 4)

नाड़ियों व्यक्ति व औरत (बुध):-

सब्ज रंग-नेक स्वभाव खुशी नसीब।

सिर (बुध):-

सिर गोल और आंख गोल खुश नसीब औरत अमीर खानदान से होगी। सिर छोटा पेट मोटा हो तो बेवकूफ होगा।

नाक का अगला हिस्सा (सिर) बुधः-

1) मोटा व गांठ्दार तो खुद पसन्द खुदगर्ज

2) बड़ा व गांठ्दार तो सुलह पसन्द

3) नाक चौड़ी नथुने चौड़े तो कुन्द जहन

4) नथुने चौड़े तो बहमी सहबत परस्त

5) नथुने तंग तो अक्लमन्द शर्मसार क्यास मतकबर

6) नाक बदन से जयादा सूर्ख हो तो लालची बदफल नेकी का दुश्मन

मर्द का हाथः-

अंगूठा लम्बा, अंगुलियों का जोड़ बाहर कोया मोठे हथेली का कनिष्का के नीचे का हिस्सा बाहर को निकला हुआ तो मामलात की जड़ तक पहुंचने वाला होगा।

गरदनः-

(1) लम्बी (मर्द)- बेवकूफ (2) लम्बी (औरत - नेक निहाद) (3) मोटी गर्दन - दौलतमन्द (4) टेडी गर्दन - मफसूल (5) ऊँची गर्दन - फर्जी चोर बदमाश (6) पतली गर्दन- अक्लमन्द (7) छोटी गर्दन-हाजिर जबाव (8) चौड़ी गर्दन- बेवकूफ लालची।

गुफतार (बुध घर का):-

1) गला फेला कर बात करे-अपने मतलब में दूसरे के खुन की परवाह न करे।

2) बात करते वक्त कोई न कोई अंग हाथ या पांव वगैरह हिलाए- बेहूदा, बदफल शोहरत पसन्द।

3) बात करते वक्त दांतों का मांस नजर आए तो कम उम्र होगा।

4) जल्दी जल्दी बोलने वाला हो तो बुरा स्वभाव मतलब परस्त।

5) संभल कर नर्मी और आहिस्ता आहिस्ता सोच कर बोलने बाला-दानाह, अक्लमन्द।

6) नाक में बोलने वाला - मगरर चस्म।

7) चैन से बैठ कर बात न करे- बेहूदा, हासद, कंजूस ।

आवाज (बुध का पक्का घर) :-

1) बुलन्द, ऊँची और बजनी आवाज तो बहादुर मरतबरा वाला

2) बुलन्द भारी मानिंद गर्ज बादल हो तो नेक हुक्मरान।

3) मानिंद ढोल- राग विद्या का शौकीन।

4) मानिंद मार- मशहूर सरदार फौज।

5) मानिंद चकोर-दौलतमन्द बेपरबाह बेलिहाज।

6) मानिंद मुर्गावी-दुनियादार, इज्जत पसन्द।

7) कौआ चील, गिद्ध -अपने मतलब में दूसरों के खून होने की भी परवाह न करे।

8) मतकबराना, सख्त कड़वी आवाज-बदनियत कम अक्ल।

9) बुलन्द ओर भारी-दयालतदार, बुलन्द हिम्मत, रजामन्द मगर मगरूर हो।

10) बुलन्द मगर बारीक-दूर अन्देश सच्चा जीन मगर खुशामन पसन्द जल्द नाराज होने वाला खोजों।

11) बुलन्द बारीक मगर नाखुश आवाज-झगडालू शरीर, दुख देने वाला बुरा करने वाला खुदगर्ज मगर जिस्म मज़बूत होगा।

12) नामुलाएम व भारी- कम अक्ल कम हिम्मत।

13) मुलायम व भारी आवाज - सुलह पसन्द हौसला वाला।

14) कमजोर व कांपती हुई आवाज वाला -हसद करने वाला, बहमी कमजोर, खौफ खा जाने वाला।

15) दो आवाज वाला- फरेबी, कमीना।

बुध मकान चारों तरफ दायरा में हर तरह से खाली या खुला होगा या अकेला ही मकान हो। मकान के साथ चौड़े पत्ते के पेड़ का साथ होगा। पीपल का पेड़ **वृहस्पति बड़ - चन्द्र शहतूत या लसूड़ा बुध होता है।** इसलिए वृहस्पति या चन्द्र के पेड़ों का साथ न होगा और अरि होगा तो वो घर बुध की दुश्मनी का पूरा सबूत देगा। ऊपर के जवाडे के सामने के और पहले ही तीन दांत खत्म खुशबू बदबू का अन्तर समाप्त, तो बुध मर हुआ ही गिना जाएगा। फकीर की बददुआ हो जाए, तोता गुम हो जाए, दोस्त से झगड़ा हो जाए। जुबान तुतलाए, **बुध बर्बाद वाले को नाक छेद देना या दांत सफा रखना, ढलती जवानी तक सहायक होगा।**

बुध की खानाबार वस्तुयें :

खाना नं० 1 जबान, सिर का ढांचा

2 खड़ा खण्डस लड़को जैसी लड़की मूंग साबूत, कलम की निब, साली, बाजा व सामान राग।

3 भतीजी, चमगादड़ चौड़े, पत्तों का पेड़, बान, दीमक की किस्म भूला, शक्ति ताकत छत्र थोहेर।

4 तोता, कली खड़ा अड्डा (भुजा मासी, कच्चा घड़ा)
5 बांस, फकीर की आवाज, आशीर्वाद दूध वाला बकरा पोती।
6 फूल, लड़की मैना खड़ा अण्डा दोहती, आम थोहर।
7 हरी घास भौड़ी गाए, बकरी, दूसरी चीजें का ठप्पा या ढांचा।
8 लेटा अण्डा मुर्दा फूल दीमक, बहिन।
9 भूत प्रेत चमगादड,सब्ज रंग थुथलाना, सब्ज जंगल।
10 दांत खुष्कघास, शराब कबाब या भूत की खराक, सीढ़ियां मकान, हींग ढोल।
11 उल्टा घड़ा कुण्ठी वाला तोता, सीप, हीरा, फटकरी
12 अण्डे खेलने गन्दा (जहरीला)अण्डा।

तोते की पैंतीस

लफज	ग्रह	कुण्डली का खाना	कैफीयत
लट	शनि	10	लटपट उम्र लुटना, लुटाना मक्कारी
पट	वृहस्पति	2	पत्त, इज्जत पौलत
35	वृहस्पति	11	पैशनी, सब की किस्मत
चतुर	बुध	7	चतुराई, अक्ल
सुजान	मंगल	3	आदल तो मंगल नेक
कहो	केतू	6	कहना सुनना
गेंगा	वृहस्पति	5	गंगा दरिया, समुन्द, आजाए औलाद
रा	राहू	12	की मुझे मैं, मेरा तकबरा
मां	चन्द्र	4	माता दिल शान्ति
श्री	सूर्य	1	सबसे उत्तम सब का बुजुर्ग
भाग	शुक्र	7	लक्ष्मी, औरत, जमीन
बाद	मंगल बद	8	वाला , मालिक, बान, पितर,

सब का आखिर मालिक मौत (बुध के ग्रह का भेद) तोते की 35 के कुण्डली के खानों का गौर से सम्बंध करें तो कुण्डली के खाना नं 9 कहीं नहीं मिलेगा। बुध का यह खाना नं0 9 वो स्वयं खाना नं० 9 एक अजीब हालत का है जिसका जिक्र अलग जगह दिया है । यही खाना नं० 9 एक चीज है जो इन्सान व हैवान में फर्क कर देता है और तमाम ग्रहों की बुनियाद है या दोनों जहान की हवा वृहस्पति असल है इस 35 के 11 खाने वास्तव में बुध का बाहर खानों की हालत बताते है यानि खानां नं0 10 के बुध को शनि नं0 2 के बुध को वृहस्पति वगैरह जिस तरह की इस तोते की 35 की कुण्डली में लिखे है लेंगे। यानि असर के लिए बुध के अपने असर की बजाए दिए गए ग्रहों की हालत का असर लेंगे यानि बुध जिस घर में बैठा हो वहां बैठा हुआ वो इस ग्रह का असर देगा। जिस ग्रह का कि वो खाना नम्बर पक्का घर निश्चित है।

(2) बुध अगर कुत्ते की दुम तो वो हाथी का सूंढ भी है यानि जिस घर में बुध बैठा हो केतू की उस घर में दृष्टि न होगी मगर राहू जरूर उस घर को जिसमें कि बुध है देखता होगा। मगर बुध बैठा होने वाले घर के मालिक ग्रह या जो भी कोई और ग्रह वहां हो पर राहू का असर न होगा और अगर हो भी जाए तो फर्जी सा अन्धेरा होगा। सिवाए खाना *नं0* -7 जहां कि बुध बाकी सब ग्रहों को बचाएगा। चाहे बुध स्वयं ही मारा जाए या दूसरों को मारे। 35 हरफरों की जबान या इल्म खुद चुप मगर लोगों को बोलना सिखला रही है और सामुद्रिक में 35 साला चक्र सब ताकतों के असर के बड़े मैदान यह इन्सानी हाथ पर जाहिर है निकलते हुए सूर्य के मुंह पर लाली या जंगल में मंगल हो रहा है और हाथ के अन्दर नेक व बद की रेखा व चक्र और इन्सान सांप, घोड़ा वगैहरा जाहिर हो रहे हैं और वही 35 का हिन्दसा जानवरों की जबान से भी यही प्रभाव व्यक्त करता है जो वास्तव में इन्सानी दिमागी की नकल है या एक दिमाग की नक्ल से दूसरा दिमाग अक्ल सीखता है दिमाग बुध बुद्धि या अक्ल की नकल से जानवरों में तोते का सिर गोल हुआ। रंग सब्ज हुआ और जवान से बोलने लगा कि लटपट 35 चतुर सुजा कहां गंगा रामा ही भगवान इस इन्सानी दिमाग की नकल में भी वही असर है जो इसका असर था बुध जिस राशि में बैठा हो अगर उस राशि के घर का मालिक ग्रह धनु राशि *नं0* 9 में जा बैठे तो शादी और गृहस्थ में इस ग्रह के फल के बुरे नतीजे होंगे जो ग्रह ऐसी हालत का कि *नं0* 9 में बैठा हो चाहे वो बुध का दोस्त हो चाहे दुश्मन इस मुसीबत के वक्त राहू व केतू का उपाय इनके अपने अपने दोस्त ग्रहों का मन्दा फल हटा कर नेक करेगा यानि बुध या शनिः या केतू के लिए राहू का उपाय, शुक्र या राहू के लिए केतू का उपाय, चन्द्र सूर्य व वृहस्पति के लिए मंगल नेक का उपाय, मंगल के लिए वृहस्पति का उपाय मगर बुध के लिए अपने फल पर यह शर्त न होगी।

बुध का अण्डा:-

अक्ल का बीज नहीं मगर अक्ल की नकल ही बुध का अण्डा है। जो कुण्डली के खाना *नं0* 9 में पैदा होता है ग्रह कुण्डली में खड़ा घण्डा मीना-आम बकरी बुध कुण्ड़ली के खाना नं 2, 4, 6, में होगा। लेटा हुआ अण्डा (भेड़) बुध कुण्डली के खाना नं० *8,10* में होगा आम हालत (मां बेटी)बुध कुण्डली के खाना नं०-- 17 में होगा चमगादड किसी चीज का साया मगर असर चीज जिसका कि साया हैं, कापता न लगें कि वो कहां हैं । बुध कुण्डली के खाना नं० 3,9, में होगा । दूध वाला बकरा मगर बकरी दाढी वाली बुध कुण्डली के खाना नं०-5 होगा । चौड़े पत्तो वाला पेड़ मैना को उपदेश व लाल कण्डी वाला तोता वृहस्पति की नक्ल, बुध कुण्डली के खाना नं० 11 में होगा ।

बुध की खाली नाली :- हर तीसरे घर के ग्रह यानि 1,3 कभी बाहम नहीं मिले

सकतें। इसलिए वाहम असर भी नही मिला सकते लेकिन अगर बुध की नाली से कभी मिल जाए तो वो आपसी बुरा असर न देंगे । अगर ने हो जाए तो बेशक हो जाए ।

(2) शुक्र बुध दोनों इकटठे ही शुभ हैं और खाना नं०-7 दोनो का पक्का घर है लेकिन जब अलग-अलग हो जाए और अपने से सातवें पर हो तो दोनो का फल मन्दा लेकिन जब तक इस सातवें की शर्त से दूर हो मगर हो दोनों अलग-अलग तो बुध जिस घर में बैठा हो वो (बुध) उस पर मे सारे ग्रहो का और इस घर में इनके बैठे होने का अपना अपना प्रभाव शुक्र के बैठा होने वाले घर में नाली जगा कर मिला देगा यानि दोनों घरों का असर कमला कमलाया हुआ इकटठा गिना जाएगा फर्क सिर्फ यह हुआ कि शुक्र अपने घर का असर उठा कर बुध बैठा होने वाले घर में नही ले जाता मगर बुध अपने बैठा होने वाले घर का असर उठा कर शुक्र बैठा होने वाले घर का प्रभाव उठाकर शुक्र बैठा होने घर में जा मिलता हें । जैसे कि जब कभी शुक्र के घर का राज हो या राशिनम्बर के ग्रह बोलने का वक्त आ जाए तो शुक्र बैठा होने वाले घर का असर साथ मिला हुआ गिना जाएगा। मगर बुध बैठा होने वाले घर के तख्त की मालिकियत या राशि नम्बर के घर के ग्रहों के बोलने के वक्त अकेले ही उन ग्रहो का होगा । जिनमें कि बुध बैठा हो शुक्र बैठा होने वाले घर के ग्रहो का असर बुध वाले घर में मिला हुआ न गिना जाएगा । बुध शुक्र के इस तरह पर असर मिलाने के वक्त अगर कुण्डली में शुक्र से बाद के घरों में बैठा हो ता बुध का अपना जाती असर बुरा असर होगा और अगर बुध कुण्डली में शुक्र से पहले घरों में बैठा हो और उठाकर अपने बैठा होने वाने घर का प्रभाव ले जबे शुक्र बैठा होने वाले घरे में तो अब बुध का लाया हुआ प्रभाव में जाती अपना असर बुरा ना होगा । बल्कि भला ही गिना जाएगा । इस मिलावट के वक्त अगर बुध वाने घर में शुक्र के दुश्मन ग्रहि भी शामिल हो तो शुक्र इजाजत न देगा कि बुध अपने बैठे होने वाले घर का प्रभाव उठ कर शुक्र बैठा होने वाले घर में ऐसे देवें जैसे ऐसी हालत में बुध की नाली द्वन्द होगी और शुक्र अब बुध आदि पागल होगा । लेकिन बुध के साथ वहां शुक्र ग्रह हो तो शुक्र कोई रूकावट न होगा बल्कि बुध को जरूर अपना प्रभाव बैठा होने वाले घर में ले जाना पड़े हो सकता हैं कि ऐसी मिलावट में राहू केतू अपने से सातवें घर होने की वजह से बुध और शुक्र भी आपस में सातवें घर पर होंगे) तो मन्दा नतीजा होगा । विशेष कर इस वक्त जब बुध होवे शुक्र से बाद के घरों में और साथ ही राहू या केतू का दौरा भी आ जाए यानि उनमें से कोई एक तख्त का मालकियत के दौरा के हिसाब से आ जाए और उधर राशि नम्बर के घर बोलने वाले हिसाब से दूसरा भी बोल पड़े तो यह वक्त (जब कि इस मिलावट में) राहू केतू का अपना उधर राज या राशि नम्बर पर इकटठे होने का

भी वक्त है कुण्डली वाले के लिए मारकस्थान का भयानक समय होगा लेकिन अगर यह शर्तें पूरी न हों या बुध होवे शुक्र से पहले घरों में तो यह मन्दा जमाना न होगा मन्दा जमाना सिर्फ राहू केतू के दौरा के वक्त का होगा। शुक्र या बुध के दौरा के वक्त यह लानत न होगी। इस बुध की नाली का विशेष फायदा मंगल से सम्बंधित है। बावक्त मंगल को सूर्य की सहायता मिलती हुई मालूम नहीं होता इस नाली की वजह से मंगल को सहायता मिल जाती है और मंगल, जो सूर्य चन्द्र के बगैर मंगल बुध आपसी दुश्मन हैं। मंगल के बगैर शुक्र की औलाद कायम नहीं रहती बुध जब मंगल के साथ हो तो वो लाल कण्ठी वाला तोता होगा और खुद उठ कर और मंगल को साथ उठाकर शुक्र से औलाद न होगा। ऐसी हालत में बुराई की शर्त न होगी। भलाई का असर जरूर होगा क्योंकि मंगल ने शुक्र के दौरा से पहले साल में अपना असर जरूर मिलाना है चाहे बुध की नाली *100* फीसदी *50* फीसदी, 25 फीसदी और अपने से सातवें होने की पुष्टि से बाहर एक और ही शुक्र और बुध की आपसी दृष्दि है और यह है इसलिए कि शुक्र में बुध का फल मिला हुआ माना जााता हैं। मिलावट में राहू के साथ इसी तरह पर शुक्र के बगैर बुध का असर सिर्फ फल होगा फल न होगा। यानि कौत बाह तो होगी तो मंगल की बच्चा पैदा करने की शक्ति का शुक्र को लाभ न मिलेगा।

बुध के दांत :- दांत कायम हो तो आवाज अपनी इच्छा पर काबू में होगी चाहे यह वृहस्पति की हवाई ताकत पर (पैदाइश औलाद) काबू होगा। मंगल भी साथ देगा यानि जब तक दांत (बुध) न हों चन्द्र सहायता देगा। जब दांत न थे तब दूध दिया जब दांत (बुध) दिए तो क्या आन (शुक्र) न देगा यानि बुध होवे तो शुक्र की स्वयं आने की इच्छा न होगी। लेकिन जब दांत आकर चले गए (और मुँह के ऊपर के जबाड़े के सामने के) तो अब मंगल बुध का साथ न होगा न ही वृहस्पति पर काबू या इस व्यक्ति या औरत के अब औलाद का समय समाप्त हो गए , दांत गए, दांत कथा गई। वृहस्पति समाप्त तो ला औलाद हुआ।

बुध का भेदः- जब कुण्डली हर तरह से मुकम्मल हो और खाना नं० 1 का अक्षर देकर हर तरह से बात खत्म हो चुकी हो तो बुध का विशेष भेद या बुध की तबीयत देखने के लिए नीचे लिखे नियम होगों। नौ ग्रह कुण्डली के किसी न किसी घर में चाहे अकेली अकेले या अकेले घरों में चाहे एक ही घर मे कई एक या आठ इकटठे ही हो (राहू या केतू अपने से सातवें के असूल पर होने की वजह से दो में से एक जरूर बाहर रह जाएगा। तो हर एक की अपनी ताकत की मिकदार को खाना नम्बर के अक्षर से जिससें कि वो ग्रह बैठा हो गुणा देकर नौ ही ग्रहों के जवाब के अर्थ से लेकर नौ पर भाग करें अगर (1) बाकी कुछ न बचे तो बुध का स्वभाव उस कुण्डली के खाना नं०-5 बैठे हुए ग्रह की शक्ति सिफर *(0)* होगी। इस कुण्डली में राहू केतू का किसी भी दूसरे ग्रह पर कोई

प्रभाव पर होगा या ऐसी हालत में राहू केतू की दृष्टि बुध के दायरे में बन्द होकर सिफर होगी । मगर राहू केतू का जाती असर जरूर कायम होगा क्योंकि बुध में हमेशा ही राहू या केतू का असर शामिल गिना हैं । सिवाए खाना नं०-4 में जहां कि राहू केतू का जाती असर जरूर कायम होगा क्योंकि बुध में हमेशा ही राहू या केतू का प्रभाव शमिल गिना है सिवाए खाना नं०-4 में जाती असर भी सिर्फ होगा। राहू घडी की चाबी तो केतू घडी का कुत्ता हैं । दोनो असर भी चलाने वाला वृहस्पति हैं मगर वो घूमते बुध के दायरा में ही हैं अगर खाना नं०-5 खाली ही हो तो जिस घर में सूर्य हुआ उस घर में वो (सूर्य) हो वैसा ही बुध होगा ।

(2) अगर कोई न कोई अक्षर बचा रहे तो दस कर के एवं मिकदार के लिए जो ग्रह निश्चित हैं वो ग्रह कुण्डली में जहां बैठा हो उस ग्रह की शक्ति व स्वभाव का बुध होगा । यह स्वभाव बुध का जाती स्वभाव होगा जैसा कि शनि का जाती स्वभाव राहू केतू के शनि पहले या बाद के घरों में होने पर मुकरिर्र हैं

ग्रह का नाम	*वृ०*	*सूर्य*	*चन्द्र*	*शुक्र*	*मंगल*	*बुध*	*शनि*	*राहू*	*केतू*
कुण्डली के किस घर	*4*	*3*	*6*	*5*	*5*	*3*	*12*	*2*	*8*
ग्रह की ताकत	*6*	*9*	*8*	*7*	*5*	*4*	*3*	*2*	*1*
खाना नं० के अंक	*9*	*9*	*9*	*9*	*9*	*9*	*9*	*9*	*9*
को ग्रह की मुकरिर्र	*24*	*27*	*48*	*35*	*25*	*12*	*36*	*4*	*8*
से जरब दी	*9*	*9*	*9*	*9*	*9*	*9*	*9*	*9*	*9*

कुल 219= 24 3 9

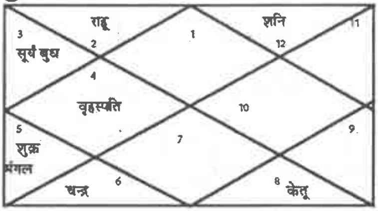

कुल मिलान 24 3/9 में से पूरे पूरे अक्षर छोड़ दें तो 3/9 रहा जो कि शनि की शक्ति है जो खाना नं०- 12 बैठा हैं यह हुआ बुध का स्वभाव यानि बुध जो खाना नं० 12 में बैठे हुए शनि के स्वभाव का हैं (दी हुई कुण्डली में) पहले घरों में रातू बाद में केतू और आखिर पर शनि (शनि का जाती स्वभाव खराब फल का हैं इसलिए जब बुध का वक्त होगा शनि दो गुणा मन्दा फल देगा क्योंकि बुध व शनि दोनों ही खराब स्वभाव के है।

ब (1) बुध का स्वभाव लिस ग्रह सक मिलता हो उपाय उस ग्रहज व बुध दोनों को मिला कर बना होगा ।

(2) खाना नं०3 या 9 बुध के लिए लाल गोलह की सहायता लेवें । मगर ध्यान रखें कि अगर बुध ने स्वभाव साबित हो तो लोहे की बजाए शीशे की गोली लेवें जिस पर या जिस में वो रंक करें या शामिल हो जो रंग कि उस ग्रह

का होवे जिस ग्रह के स्वभाव का कि बुध ऊपर के ढंग का साबित हो ।

(3) खाना नं०12 के बुध के लिए नष्ट ग्रह वाले की मदद का बलाज या केतू (कुत्ता रंग बिरंग स्वाह सफेद मगर सुर्खे न हो) कायम करना शुभ होगा।

असल बुध ------खाली सफेद कागज

खाली सफेद कागज, शीशा ओर फटकडी होगा जब इस पर जरा सी मैल या किसी भी और ग्रह का सम्बंध हुआ तो इसकी गोलाई का मालुम करना वैसे ही मुश्किल होगा जैसा कि जमीन मा कहोर मान लेंना । इसलिनए इसकी जांच पूर्ण कर लेंनी आवश्यक होगी । बहरहाल बुध नं० 9 या 3 या किसी और घर का मन्दा असर उस साल या वक्त ही नक होगा जिसमे हक वो अपने स्वभाव के नियम पर नेक हो जाए । मगर जन्म के पहले साल या पहले महीने में इसका हीरा जहर से खाली न होगा , अगर होगा तो जन्म मरण का झगडा ही दूर होगा । बुध अकेला वृहस्पति क पक्के घर खाना नं०-2 में या अपनी ऊँच राशि के फल के खाना नं०6 में अकेला मगर हर हालत में दृष्टि के सब घर नं० 8,9,12 खाली और बुध हर तरह से अकेला ही हो तो बुध का अपना प्रभाव उत्तम और राज योग होगा । बुध का सभी ग्रहों से सम्बंध :-

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	वृ०	मंगल	राहू	केतू	शनि
ताल्लुक होगा बुध की भांति	पारा	दही मे पानी		राख	शेर का	हाथी दांत की	कुत्ते सूंढ की	कली दुम

द्वारा दृष्टि आदि बुध जिसके साथ मिला (चाहे साथी भला करने वाले हों चाहे पापी हों) उसी की शक्ति बढा दी। अगर एक ही घर में आपसी बुध व कोई और ग्रह हो तो बुध का फल मन्दा होकर दूसरे को बढाएगा । शनि सूर्य के आपसी झगड़े की तरह बुध वृहस्पति की विशेष दुश्मनी का मुफसिल जिक्र वृहस्पति बुध साझों में लिखा है ।

सूर्य और मंगल के मुकाबला में बुध का फल नदारद यानि सूर्य । मंगल नेक के साथ अपनी अवधि चुप होगा । (मंगल नेक है नहीं जिसमें सूर्य हो और यह सूर्य के साथ चुप होगा । सूर्य रेखा और चन्द्र या दिल रेखा को मिलाने वाली कठिलाई मंगल नेक का प्रभाव देगी । जिसका प्रभाव साधारण दिल पर होगा । चाहे बुरी तरह हो चाहे भली तरफ हो चाहे भली तरफ आमतौर पर दिल की शक्तिज्यादा होगी ।

बुध खाना नम्बर 1

आम साधारण हालत, मां -बेटी, जबान सिर का ढांचा, आकाश का चक्र, औरत के टेवे में अब बुध समान सूर्य उत्तम होगा और पैदाइश भी वक्त दिन (सूर्य के बाद सुबह की तरफ की) होगी।

पहले घर का बुध हैं राजा , घुमें फिरता दर बदर
चस्म तोता, बक्ल खोआ,मंदा हो शाम (बुढापा) व सहर (बचपन)
तबला उम्दा राग मन्दा , हमेशा माना दीगरे
रंग काला मर हो उसका पानी में पत्थर तरे
बुध घर पहले पांचवें (वरना) सूर्य को परिवार
बारिश () धन की ओर रही दिन न गुजरे चार
लडकपन अब छोडो आलम हबाब आने को हैं
लड़के की जगह लड़की राजा उल्टा राज आने को है

नोट : इसकी चार वर्ष आयु तक धन समान वर्षा आए।

इस प्रकार शाही बुध में पाप (राहू-ससूराल केतू-औलाद) की मन्दी हालत का साथ होगा और शनि भी अब बुध के इशारे पर काम करता होगा जिसका सबूत वो व्यक्ति खाने पीने वाला शराबी कवाबी और अपने धर्म कर्म से हमेशा लापरवाह होगा मगर स्वयं अपनी कमाई में वो किसी तरह से बुरा न होगा । सूर्य व बुध दोनों बराबर का फल देने वाले हैं । बुध अपने समय तक प्रत्तग फल नही देता बाद में अलग फल भी उत्तम देगा । राज दरबार से लाभ होगा। परन्तु ऐसा व्यक्ति तो स्पष्ट होगा । सूर्य व बुध के मुकाबला में मंगल का प्रभाव तो कम होगा, मगर शनि का मन्दा प्रभाव अवश्य होगा । बुध नं० 1 और खाना नं० 7 खाली ---बुध अब टूटी टांग वाले तख्त का मालिक होगा । दिमागी खाना नं० 9-37 शनि से आपसी राग का मालिक सूर्य का प्रभाव नेक होगा । मगर स्वयं बुध का अपनी हकूमत सब्ज रंग आदि सब मन्दे फल दे देवे। लालची देश-विदेश में घूमने वाला हमेशा होगा । खाली सिर के ढांचा का ही मालिक होगा ।

बुध नम्बर / चन्द्र नं०7 हो तो नशाबाजों का सरदार, जुबान के चक्र का मारा हुआ ।

बुध शनि नीच बामुकाबल या बुध वृहस्पति खाना नं० 6 का हैं
लड़की, मूग सबुत (साबूत) कलम की निब, चोच,साली ।

बुध खाना नं 2

खड़ा अण्डा, लड़कों की सिफत की लड़की,
मूंग साबुत, कलम की निब, चोंचं, साली

बुध से जब लड़की बनी घर दुजा हे ससुराल का
इज्जत जहो ढ़ा की इकटठी जानवर और माल का
शान बाजा राग उम्दा जब अकेला घर में हो

नजर उसकी आगे आवे सोना (गुरू) (शनि) भस्म हो
पीछे उसके हो न कोई न ही आगे ठहरता हैं
बुध को माना खाली ग्रह हैं फांस है वों गजब हो
घर आठवें गर शत्रु आवे फांस बुध का मन्दा होवे ।
धन दौलत सब ही को गाले हीरा जल कर कली ही हो
पिता मरे औलाद न आवे कन्या से भरपूर हो वो
कुटुम्भ कबीला सारा पाले थोड़ा सा मगरूर भी हो
घर आठवां गर खाली होवे राज योग कहलाता हैं
बुध गिना लड़की हैं सब ने अब राजा माना हैं
रंग सुनहरी कीमत गहरी खड़ा खण्डा दरबार
काफिर करे बुध आ सुग शहां दे परिवार
मौत गुजें आठवे घर पाताल खाना छटें ही हैं
नौवें हारे बारहां गाले तारता बुध दो ही हैं
हर लम्हा अपनी तबीयत को बदलने वाला होगा राम व

जवानी का मालिक अपनी माता के घर स्वयं अपने ही तान पर चलना होगा जिसका बुध ग्रह चाली तबीयत के नियम पर बुरा हो वो याद तो किसी तरह से भी सब्ज कदमा (हर तरह से मन्दा) न होगा । मगर इसकी अपनी आखें के सामने बुध का जब जार धन दौलत और अपना ही खानदानी परिवार बहुत कुछ जलता और बरबाद होता होगा वो स्वयं तो नही मरा होगा मगर लड़कियों की ज्यादती और साथियों की मौतो से दुखिया और मुर्दे से कम भी न होगा। मगर नजदीकि की मौत में भी सुख ही रखता होगा । आमतोर पर धन दौलत के लिए प्रयत्न की कमी स्वयं पिता की के लिए मन्दा ही होगा या अगर पिता होगा तो पिता से धन दौलत का प्रभाव बुरा ही होगा मगर वो स्वयं किसी काम में भी दिमागी खराबियों का शिकार न होगा । फिर भी अगर होगा तो लड़कियों की सेवा से इसका कल्याण होगा । वृहस्पति का उत्तम मगर बुध स्वयं इसे खराब करेगा । यानि अपना फल बुरा अच्छा देगा । वृहस्पति की दौलत को परवाह न करेगा। इसी गिर्द दायरा डाल कर वृहस्पति की हवा के बवण्डर बनाएगा । ज्ञानी, उपदेशक होगा, वे आराम जिन्दगी होगी मगर ज्यादा दौलतमन्द न होगा ओर नही निर्धन , 36 साल दौलत आवे । बुध नं०2 खाना नं०8 खाली या नम्बर 9,12 में वृहस्पति हो तो दिमाक के खाना नं० 38, इज्जत का नशा नेक प्रभाव खाना नं० 9,12 के बुध ने सब ग्रहों को मारा तो खाना नम्बर 2 के बुध ने सब को तारा भी हैं राज योग होगा बुध से अगर रेखा दिल और सिर रेखा के दर मध्य होती हुई वृहस्पति पर चली जाए तो मध्य योग होगा जिसमें ओर सूर्य दोनों का ही शुभ प्रभाव होगा ।

बुध खाना नं-2 वृहेस्पति खाना नं० 6,7 हो तो सिर रेखा शुरू में उम्र रेखा से प्रलग होने पर पिता का सुख खराब होगा या अगर मातृ रेखा पितृ से शुरू मे जुदा

रहे तो पिता की जिन्दगी खतरें में होगी यानि अगर सिर रेखा पितृ रेखा का साथ छोड़ कर वृहस्पति की तरफ झुकाव रखें (बुध नं० 2) तो बुध अपना बुरा प्रभाव देंगा। वृहस्पति या का सुख न होगा या वृहस्पति के प्रभाव के समय 16 साल से शुरू होने के बाद (6 साल अवधि वृहस्पति और इसके बुध की अवधि के मध्य यानि 6 का अक्षर) साल का कुल 19 साल के करीब मौत हो जाए ओर अगर जिन्दा रहे तो भी मुर्दा से बुरा होवे। आमतौर माता पिता का सुख न होगा मगर हर हालत में माता पिता की आयु दोनो बरबाद होंगे।

वृहस्पति और बुध आपसी मित्र हैं इसलिए लिए सिर रेखा साबुन रेखा या मातृ रेखा या माता-पिता पर कोई प्रभाव न होगा वो अपनी आयु पुरी भोगेगी और लगभग 8० साल के करीब होगी। ऐसा आदमी घमण्डी होगा उसे अपनी जाती पर पूरा विश्वास होगा एवं नेक न होगा। कबीला का भारी बोझ इसके जिम्मा होगा। मगर वृहस्पति का मुफत माल न पाएगा और नही वृहस्पति के लिए उसका कोई नेक फल होगा। अपनी किस्मत को आप बनाने वाला होगा। अकेला सिर सबसे मुकाबला करने वाला होगा कम औलाद या औलाद से दुखिया होगा। मगर ला औलाद न होगा। **जिसके लिए चन्द्रमा वृहस्पति का उपाय ही सहायक होगा।** नजी दावेश केतू ही बचा देगा।

बुध नं 2 शनि नं 6 हो तो सिर रेखा के ऊपर की बजाए अगर नीचे की तरफ शनि के पर्वत की तह के करीब कोई दूसरी लकीर हो तो सिर रेखा इस लकीर की लटटू की सुई की तरह बतौर अपना मोहर कर लेगी यानि ऐसा आदमी हर समय अपने विचारों को बदल लेगा चाहे यह कमजोरी दिमाग का विचार हो, चाहे बारीकी ही या ज्यादा सोच विचार का हो वो अपने विचार जरूर बदलने वाला होगा।

बुध खाना नम्बर 3
(घर का)

छत्तर, थोहर, भतीज, चमगादड़ चौड़े पत्तों का पेड़, विचार भूत, शक्ति जिसका साया न होवे खुद अपने प्रभाव में किस्मत को जगाने वाला (दीमक) चन्द्र का उपाय।

बुध बैठा घर तीसरे नौवे घर उजाड़ा,
खुद अन्धेरा जंगल होवे राख पेड़ घर ग्यारहां
बुध घर तीजे जब हुआ जली अनोखी आंच,
नौ उजड़े ग्यारह मरेगा चार और पांच
बुध गिना जो तीजे मन्दा॥ रवि से डरता है।
बोले खुद न बोलने देवे उम्र की रक्षा करता है
पापी ग्रह सातवें होवे बुध का पक्का घर

हर रोज फटकड़ी से दांत साफ करना आदमियों की बरकत देगा। अगर हकीम हो तो दमा के मरीजों के लिए कामयाब हकीम होगा। अंगूठे की तरफ की सिर रेखा की दो शाखी स्वयं टेवे वाले कि लिए मन्द भाग्य होगी और खाना नं0 8 की तरफ की दो शाखी दूसरों को बरबाद करेगी दुरूस्त हालत (सिर रेखा)की तरफ स्वास्थ्य रेखा की हद तक की लम्बाई होगी। अगर ऐसा न हो तो मन्दा और खड़कता बुध होगा। जिसका इलाज फर्शी जमीन में पत्थर गाड़ना होगा। जिसका रंग खाना नं0 9 या 11 के ग्रह के विरुद्ध न होगा। इस पत्थर के नीचे पहले दूध से भिगोए हुए पुलाव के पत्ते देने शुभ होंगे या **मकान के दक्षिण दीवार में लाल (सूर्य) वस्तु शुभ होगी।** अगर मंगल नेक हो तो इस घर में स्वयं बुध का अपना जाती फल यानि लड़की बहिन बुआ यानि बुध की सम्बंधित चीजों व खानदान यानि सब बारौनक होगे। दूसरे घरों पर बेशक बुध का बुरा का प्रभाव होगा, चाहे स्वयं बुध का ऊँच फल मगर धूप के बिना जंगल होगा। पहली बहिन होगी और शुभ प्रभाव की। दिमागी खाना नं0 39 मंगल के आपसी वजह सब की शक्ति का मालिक हो। आयु 80 साल होगी। मंगल का प्रभाव अच्छा बुध जिसे स्वयं खराब करेगा। लड़ाई झगड़े मशहूर होगा। अगर मंगल नेक हो तो 12 साल दौलत माता पिता का सुख हो। मंगल बद का संवधं बुरा प्रभाव देगा। सिर रेखा बुध की अपनी रेखा मंगल नेक के पर्वत से स्वास्थ्य रेखा की हद तक इस रेखा की ठीक लम्बाई है। आखिरी पर दो शाखी होना स्वयं अपने लिए तो कोई मन्द भाग्य नहीं मगर अपने मामा की तरफ के लिए नुकसान देने वाली होती है।

बुध नं0 3 चन्द्र नं0 5 वृहस्पति नं0 9 है तो मन्दा फल होगा।

बुध नं0 3 मंगल बद नं0 5या 11 हो तो दोनों घरों का शत्रुता और मन्दा फल होगा।

बुध नं0 3 चन्द्र नं0 11 हो तो न सिर्फ कुण्डली वाले के खाना नं0 3 (भाई बन्धु) का मन्दा फल होगा बल्कि 3 बाकी बचने वाले मकान का अच्छा प्रभाव भी (अगर कोई ऐसा जद्दी हो भी हर तरह से निकमा और खराब होगा।

बुध नं0 3 शुक्र कायम दृष्टि खाली हो तो सिर की श्रेष्ठ रेखा होगी। चन्द्र नीच का बुरा फल न होगा।

बुध नं0 3 शुक्र रद्दी दृष्टि खाली हो तो सिर की श्रेष्ठ रेखा का उम्दा प्रभाव तो होगा लेकिन अगर चन्द्र नीच होवे तो रवि चन्द्र का बुरा फल होने से न रूकेगा सिवाए सोतेली माता कायम होने के।

बुध नं 3 शुक्र नं 4 हो तो औरत व औलाद का फल बहुत देर बाद (24 साल बाद)उम्दा होवे।

बुध नं 3 सूर्य 9 शनि नं 11 हो तो बुध दोनों ग्रहों का फल रद्दी न करे

बिलकुल बुरी जिन्दगी होगी।

बुध नं 3 शनि नं 7 हो तो बही हो जो बुध नं 2 वृहस्पति नं 6, 7 का है।

बुध नं 4,
तोता, कली, खड़ा अण्डा बुआ, मौसी

बुध चौथे कच्चा घड़ा कोरा उम्दा साफ
अरब करोड़ी लखपति मारे अपना आप (खुदकशी)
धन का तो दरिया है चलता जो खत्म होता नहीं
लड़की बैठी राज करती दिल मगर होता नहीं,
बुध चौथे हो सूर्य पांचवे हो बैठा नौंवे अंग
राजयोग वो मर्द कहावे बकरी जंगली सांप जो खावे
तोता सब्ज मैना का साथ ठण्डा रेता पानी ले हाथ
हीरा कीमती कुल जो तारे धन दौलत परिवार हो सारे
चन्द्र सूर्य हो 3,11 गुरू नौवें हो बुध चहारां
धन आयु परिवार भी हो फल चारों का उम्दा हो

बिल्ली से तोते का दिल मुर्दा होगा या राहू के सम्बंध से बुघ स्वयं मुर्दा होगा जरा सी ठोर से कच्चा घड़ा स्वयं टुकड़े होगा जिसके लिए सूर्य की चीजों का उपाय होगा **दौलत के लिए वृहस्पति का उपाय सहायक होगा कई बार केवल बिना अर्थ ओर सम्बधित होगा**। केतू सम्बंध से बरबाद ही होगा। धन दौलत तो अच्छी मगर माता की आयु के लिए मन्दा होगा बगी माता जिन्दा हो तो मातों के हाथो से धन दौलत मन्दा होगा। सिर्फ खाना नं०-4 हैं जहां कि बुध में राहू का कटूम्ब का सम्बंध नही वहे राजयोग हैं। दिमागी खाना नं०-40 चन्द्र से आपसी मुहब्बत के तीनों हिस्से मुकाबला एक चीज का दुसरी चीज से, कुम्भ पानी का खाली कोरा घडा शुभ रहे और वृहस्पति उम्दा हो 22 साल दौलत आवे सिर रेखा का दूसरा नाम मातृ रेखा भी हैं। चाहे चन्द्र बुध से दुश्मनी करता हे मगर जब इस रेखा में मातृ भाव हो जाए तो चन्द्र के पर्वत का सम्बंध नेक होगा। चन्द्र और बुध रेखाओं का आपस में मिल जाना व इनकी दुश्मनी का प्रभाव देगा। मातृ रेखा, पितृ रेखा आयु रेखा दोनों मे चाहे यह है जब सिर रेखा शनि के पर्वत तक ही रह जाए ओर वृहस्पति के पर्वत के नीचे तक जाती मालूम न हो तो मातृ रेखा होगी। अगर वृहस्पति के पर्वत के नीचे तक जाती मालूम न हो तो मातृ रेखा होगी। अगर वृहस्पति के पर्वत की जड़ में जाकर समाप्त हो तो सिर रेखा होगी इसी तरह आयु रेखा अमर मंगल नेक से शुरू होती मालूम हो तो पितृ रेखा होगी इसी तरह आयु रेखा अमर मंगल नेक से शुरू हो तो उम्र रेखा होगी। सिर रेखा से शाख हो चन्द्र को (बुध का चन्द्र दुश्मन) तो बुरा प्रभाव होगा।

बुध नं० 4 सूर्य नं० 5 बृहस्पति नं० 9 कायम हो तो राजयोग होगा ।

बुध खाना नम्बर 5

बांस ,फकीर की आवाज आशीवार्द, दूध वाला बकरा ,पोती।

(सूर्य) (बुध) (वृह०) (सूर्य)

लड़का जला तड़ागही मन्दा वृहस्पति मन्दा ज्ञान
बुध घर पांचवें जब हुआ बह कुछ उम्दा जान
बुध घर पहले पांचवे सूर्य को परिवार (दायरा)
बारिश धन की हो रही दिन न गुजरे चार
चन्द्र हो या नर ग्रह बैठे नौ तीन ग्यारहां
बुध आ निकलें पांचवे बाबे पोते तारे

अपनी औरत ओर स्वयं अपने लिए बिलकुल शुभ मगर पिता के लिए मन्द भाग्य होगा । पर किसी हालत में भी औलाद पर कोई बुरा प्रभाव न होगा । बल्कि बाकी पाँच वचने वाले मकान की किस्मत का साथ होगा या इसका घर गऊ घाट होगा । आमतौर पर वो इन्सान मालिक जरूर होगा ।

बुध नं० 5 सूर्य नं० 3,9 हो तो जवानी (34 साल उम्र के बाद) में किस्मत जागेगी ।

बुध नं० 5 चन्द्र नं० 3 वृहस्पति नं० 5 हो तो उम्दा फल होगा

बुध नं० 5 चन्द्र नं० 11 हो तो दोनों घरों का अपना अपना असर होगा ।

बुध नं० 5 चन्द्र दृष्टि खाली हो तो दिमागी खाना नं० 4 सूर्य से मुशतरका इन्सानी अच्छी औलाद पर बुरा प्रभाव न होगा न ही मकान का जददी प्रभाव जो बाकी 5 बचने वाले मकान का होता है खराब होगा ।

बुध खाना नम्बर 6

(ऊँच) आम थोहर , फूल,लड़की, खड़ा अण्डा सूख औरत
37 साल दोस्ती, सामान मनियारी

बुध छेवे सिर श्रेष्ठ रेखा तो राजसुख भी कहते हैं
उस टेवे के ग्रह जो कायम उत्तम फल वो देते हैं ।
घर आवें पाताल में बुध शुक्र नहीं मिलते हैं ।
लड़की हो जो उत्तर ब्याही फल मन्दा ही लेते हैं
उम्र छोटी अब बुध की होवे घर छेवें जब बैठा है ।
लाख उपाय करे न टलता ग्रह फल लिखा इसको हैं

स्वयं बुध का जाती फल बुध की जाती चीजो पर कभी मन्दा न होगा । खरबूजा देख खरबूजा पके यानि सारी कुण्डली में जब भी कोई ग्रह अच्छा फल देने वाला होने लग्न बुध भी उसी ग्रह के नेक फल का हो जाएगा। परन्तु स्वयं खाना नं० 6 की चीजों के लिए बुध का ही असर होगा जो कि शुक्र का इस टेवे

में हो या जैसे ग्रह खाना नं० 2 के होंगे। बुध का ही प्रभाव होगा, जो कि शुक्र का इस टेवे में हो या जैसे ग्रह खाना नं० 2 के होंगे। बुध अब वैसा ही फल देगा। (सिर्फ नेक अर्थो के लिए) छापा खाना अब पब्लिक ईमानदारी का धन उमदा और नेक नतीजें देवें **अगर हकीम परन्तु लालची हो तो बरबाद होगा।** पहली औलाद लड़की होगी। झगडे में हमेशा कामयाब होगा। चन्द्र की जानदार चीजों का बेशक कोई लाभ और बड़ी होगा परन्तु चन्द्र की बाकी सब चीजों का पूरा लाभ और सहायता होगी। **लड़की की आयु की सहायता के लिए दूध से भरा बर्तन (मिटटी का) खुले मैदान में दबाना शुभ होगा जबकि शुक्र मन्दा हो ओर गंगा जल (दरिया, बारिश का पानी)खेती की जमीन एक बोतल में बन्द करके (जिसका ढक्कन भी शीशे का हो) दबावें** जबकि चन्द्र भी मन्दा हो अगर केतू भी बुध (लड़की) की विरोधिता पर हो तो इसके बदन **(दाए हिस्सा में चांदी की चीज बुध की शक्ल में अंगुठी आदि) कायम करें।** आमतौर पर बुध स्वयं अपने लिए कभी मन्दा फल न देगा, कन्या समान लड़की फूल उम्दा जिन्दगी होगी यानि जब या जिसका बुध नं०6 हो तो उसे शुभ काम करते वक्त कन्या लड़की या फूल की या आशीर्वाद या उनका सहारा लेकर काम करना बिलकुल शुभ होगा। **अब बुध की संबंधित चीजों का ऊँच हालत का फल होगा।** छोटा बजीर या हुनर दिमागी काम, दस्तकारी पेशा नजारत , लालची हकीम, जबान की (ताकत पहली औलाद लड़की होगी) कलमगार केतू से 37 साल दुश्मन ज्यादा हो अक्ल अन्तरिक का साथ या अक्ल की बारीकी का मालिक होगा। **विद्या बेहतर दोस्ती की शक्ति जुबान से ही महल खडें कर देवे।**

बुध नं० 6 दृष्टि खाली हो तो पौधे से लगा हुआ उम्दा फूल बुध का जाती दिमागी खाना नं० 42 रजामन्दी का मालिक होगा।

खरबुजे को देखकर खरबूजा रंग बदलने की ताकत होगी। पहली औलाद लड़की होगी शुभ प्रभाव की। ऊँच फल या घर का बुध खाना नं० 2 के ग्रहो की दृष्टि के संबंध से फैसला होगा। ऊँच फल का साबुत होने पर उत्तम फल होगा। सिर की श्रेष्ठ रेखा या उत्तम रेखा --सिर रंखा के ऊपर दिल रेखा के नीचे या सिर रेखा और दिल रेखा दोनों की बीच अगर सिर रेखा के साथ साथ दौडने वानी एक और सिर रेखा हो चाहे सीधी चाहे ड़ेढी या गोलाई पर ड़ेढी सी होतो सिर की श्रेष्ठ रेखा कहलाएगी। ऐसा आदमी घृणा करेगा जो उसे समय देगी। सिर की शक्ति दुगंनी होगी। सिर दिमाग और जुबान की शक्ति पूरी होगी और आखिरी समय जुबान बन्द न होगी अपने दिमाग से किए काम में धोखा न खाएगा। दस्ती काम या हुनरमन्दी और पेशावरी के काम से पूरा लाभ होगा। सिर रेखा के सही होने कि हरकत में मंगल बद का इसकी

शक्ति पर कोई प्रभाव बुरा न होगा यानि झगड़े में हमेशा कामयाब होगा। सिर की श्रेष्ठ रेखा चन्द्र के बुरे प्रभाव से बचाएगी। **आमतौर पर ऐसे हाथों वालों की माता छोटी आयु में मर ही जाती हैं बाद में अगर सौतेली माँ भी हो तो भी देगी** यानि **अगर चन्द्र का पर्वत नीच भी हो जाए तो भी चन्द्र की बरबादी से बच जाएगा**। चन्द्र नीच होने के समय चाहे माता का सुख न होगा, मगर जमीन खेती और पार जिन्दगी से नुकसान न पाएगा। अब अगर शुक्र का पर्वत गुम हो तो अक्ल खराब (बुध) होगी। **(सिर की श्रेष्ठ रेखा अगर वृहस्पति से बुध पर चली जाए तो किताबों का काम, दिमागी काम किताबखाना, छापाखाना आदि से फायदा** ओर बुध के हर तरह से मुकम्मल और कायम होने का फल होगा। यह रेखा भी राज योग होती हैं जिसके सर का समय किस्मत रेखा से मालूम होता हैं अगर **यह श्रेष्ठ रेखा वृह० से सूर्य पर जावे तो राजदरबार से पूरा लाभ उठावें**। जिसका द्वारा दिमागी काम होगा और अगर यह रेखा सूर्य की बजाए शनि पर ही खत्म हो जाए तो जायदाद पैदा करे। हर हालत में नेक और इमानदारी की कमाई होगी और इमानदारी की कमाई होगी और बरकत वाली कमाई होगी।

बुध नं० 6 जब ऊँच हो और चन्द एवं शनि कायम तो राजयोग द्वारा कागजी कारोबार, छापखाना वगैरह आदि पब्लिक मगर नेक ईमानदारी का धन साथ देवें। जायदाद फल उमदा शनि के संबधित कामों के नेक नतीजे, राज दरबार सूर्य का पूरा नेक प्रभाव परन्तु नेक व ईमानदारी का धन साथ देगा।

बुध नं० 6 शनि नं०4 हो तो स्त्री व औलाद दोनों का फल बहुत देर बाद नेक होगा विशेष कर बुध की कुल आयु 34 साल बाद अच्छा होगा।

बुध नं० 6 शनि नं० 9,11 हो तो औरत अमीर खानदान से और खुश दोनों दुखिया।

मातृ रेखा के ऊपर की तरफ अगर (त्रिकोन) हो तो मंगल बद का निशान हो तो ऐसे व्यक्ति की माता पहले मर जाए क्योंकि मंगल न सिर्फ बुध का दुश्मन हैं बल्कि चन्द्र से भी शत्रुता का प्रभाव करता है।

बुध नं० 6 शुक्र कायम दृष्टि खाली हो तो सिर की श्रेष्ठ रेखा का उत्तम प्रभाव चन्द्र का बुरा फल न हो सकेगा। अगर शुक्र मन्दा हो तो चन्द्र का बुरा प्रभाव (जबकि चन्द्र भी रददी हो रहा हो) सिर्फ माता की जान पर हो सकेगा, झगडों का फैसला हक में होवे।

बुध खाना नम्बर 7

(पक्का घर)हरी घास भोडी गाए बकरी आम मां बेटी की हालत
दूसरी चीजों का ठप्पा या ढांचा
बुध को सातवें सबने माना खाली आए तों परे हैं जाना

सातवें बुध को रेत भी माना शुरू बुरा आखिर शाहना
ग्रह साथी जो उसका हो डूबता पत्थर तैरता हों
पहले दसवें जो ग्रह आवें बुध रात से नेक हो जाएं
नेकी वो अपनी देवें बुध फटकडी रंगत लेवें
बुध सातवें हीरा हो तारे सब को जो
पर स्वयं अपने प्रभाव में जंगल में रहता हो

चाहे इधर में बुध सब साथी ग्रहो को तारता हैं लेकिन मंगल का संबंध हो जाने से बद खड़ होगा। बेशक मंगल और बुध अकेले अकेले इस घर में ग्रह हैं किसी दूसरे ग्रह की सहायता करते समय बुध का स्वयं जाती फल चाहे मन्दा हो जाए मगर दूसरों के असर को तो वो जरूर ही नेक कर देगा सिवाए चन्द्र खाना नं०-7 के जिसका फल दूध में बकरी की मैगनें होगा और स्वयं बुध जाती हालत में कल्लर की जमीन और रेगिस्तान हो सकता हैं। जिसमें कि चिकनी मिटटी (शुक्र) का नेक प्रभाव न होगा या गृहस्थ सखी और इसका जंगल से खाली होगा या इसका खानदानी हाल कोई शानदार न होगा बल्कि वहां बुद्धि की बारीकी देर होगी यह सब बुध की आयु (34 साल) तक गुजारने होगी। सभी माल का व्यापार उम्दा होगा और दस्ती व हुनरमन्द का काम शुभ होगा। आमतौर पर तलवार से अच्छी ताकत होगी अगर न होगी तो फौजदारी न होगी तो फटकडी से लिखे हुए कागज की तरह वो एक दृष्टि में सफेद और नेक होगी, फिर भी होगी तो दुश्मन की गर्दन झुकेगी एवं उसका मालिक होगा। इस घर का बुध (खाना नं०7) का कभी भी किसी दूसरे साथी ग्रह , दृष्टि के प्रभाव से मिलने वालने का या आपसी साथ होने वाले का चाहे दुश्मन को बुरा प्रभाव न होने देगा। स्वयं अपना प्रभाव चाहे मन्दा करबाले। लेकिन खाना नं 7 में मंगल का होना दोनों में मंगल बद होगा। पेश दस्तकारी, दोस्ती की ताकत आयु 80 साल तहरीर व तकरीर बोलने की ताकत बुनियादी अनुभव हाजिर माल का व्यापार हुनरमन्दी, माता की आयु एवं दौलत का रखवाला (बुध की अवधि 17 साल) अवधि प्रभाव केतू 12 साल 1/2 अवधि मगर शनि सवाया या 45 साल और शनि की खराबी की ताकत भी सवाई होगी बाकी अपनी पूरी-पूरी अवधि सूर्य के साथ बुध अपने 17 साल चुप रहता है। लक्ष्मी या शुक्र औरत मिट्टी के साथ खाना नं -7 में बुध का ही जो (नर या मादा) खुसरा है बैठा है जमीन को गोल करता है और शुक्र औरत मिट्टी को दोस्ती का दम भरता है और इसकी रिहायश के लिए अपने घर में ही उसे जगह दे दी है मगर स्वयं इसके साथ रहने के लिए खाना नं 7 में ही बैठा है राशियों के घरों में भी इसने छठी राशि कन्या लड़की और मिथुन राशि नं 3 वृहस्पति के पर्वत के बिलकुल साथ मिली हुई तर्जनी की जड़ पसन्द की है

अगर मिथुन राशि नं 93 पर बैठा या तो भी इसने लक्ष्मी को वृहस्पति के खाना नं9 2 के मतलब यह कि लक्ष्मी वहां की ही उत्तम है जहां इसकी इज्जत होती हो, शुक्र की सम्बंधित चीजों में शुक्र व बुध दोनों का अपना अपना और उत्तम प्रभाव एवं औरत के इश्क में मस्त रहेगा और उसे सुख देगा इसी लिए बुध ने औरत की शादी रेखा अपने पर्वत पर बनाई हुई है और गोल सिर ने भी अमीर खानदान से ही औरत ली है। जमीन मिट्टी की हालत में भी गोल होकर जमीन पर आशिक होगा। इसके साथ केतू का दोस्त नहीं, इसके बराबर का है। यानि कामदेव की कीड़ा न होगा। औरत के लिए खर्चा में दलेर बुध की चीजों के संबंध में यानि व्यापार में मस्त ओर फायदा उठाए, मगर अक्ल की बारीकी का मालिक न होगा **विस्तृत रुप से 22 साल औरत का सुख व मिलाप हो।** हुनरमन्द मगर शनि के असर से शराबी होगा। शनि हमेशा अपना प्रभाव करता ही रहता है। शुक्र व बुध इकठठे होने से हमेशा ज्ञानी होता है। सूर्य और शुक्र के मिलाप से बुध पैदा होगा मगर बुध व शुक्र के मिलाप में सूर्य की अवधि यानि 22 साल से प्रभाव शुरू हो जाएगा।

बुध नं0 7 चन्द्र नं 1 में तो समुद्र पार लम्बे लम्बे सफरों के नेक नतीजे होंगे।

बुध नं0 7 शनि नं0 3 में हो तो औरत अमीर खानदान से और खुश नसीब होगी।

बुध नं0 7 बृहस्पति नं0 9 में हो तो गृहस्थ और शादी में गड़बड़ हो।

बुध नं0 7 दृष्टिखाली हो तो वीरान जंगल चदिन्दों से खाल खाली रूखी हालत की गृहस्थ या कलर की जमीन होगी, रेगिस्तान हो सकता है जिसमें चिकनी मिट्टी का निशान न होगा।

बुध खाना नम्बर 8

लेटा हुआ अण्डा, मुर्दा या मुर्दे का फूल, दीमक, बहिन

बुध आठवें जब आ हुआ भट्टी रेत तपा
लड़की बहिन ससुराल से बेता हो के आ,
रेत जली है जंगल की जलता मंगल बद,
लड़का मामू और माता भी सफाचट हो सब
भेड़ चाल सब ग्रह करे मन्दा बुध जो हो
चन्द्र सांस सब ही करें बुध नाग बल हो

उम्र के हर आठवें साल फोकी खुशी का बाजा बजता होगा मगर पौधे से टूटा हुआ मुर्दाफल या मुर्दे पर चढ़ाया जाने वाला मन्दा फूल होगा जिसमें राहे (ससुराल) केतू (औलाद) शुक्र (स्त्री तायदाद) और खुद बुध (बहिन लड़की बुआ फूफी) व खाना नं 6 की चीजें (माता पिता के रिस्तेदार, मामू खानदान) सबका मन्दा हाल शामिल होगा, मगर मंगल से अब मंगल बद न होगा। बल्कि भाईयों को बुलन्द रखे और मौत का दरवाजा बन्द हो मगर माता-पिता बरबाद

मौते 14 साल हो बुध नं 8 देवता बनाता है अपने खुन के सम्बंधित में जब तक नं 2 खाली हो लेकिन अगर नं 2 में कोई ग्रह हो तो ससुराल खानदान में भी यही लाहनत देगा। जिसका सबूत मकान में सिर्फ सीढ़िया सारी की सारी गिरा कर दरवाजा बनता होगा। कुछ सालों के बाद वो मकान भी दरवाजा बनेगा लानत **बचने का उपाय बुध के साथ न की पूजना शुभ होगी नहीं तो खाली घड़ा बजता रहे** (औलाद व मर्दो का मन्दा हाल) बुध जब कुण्डली (जन्म, सालाना, मासिक आदि) के खाना नं 8 में आवें, मिट्टी का कोरा वर्तन (गोल) मंगल की **चीजों शहद, या खांड से भर कर श्मशान या कब्रिस्तान या किसी उजाड़ वीराने में दबाना शुभ होगा** सिर रेखा अगर बहुत ही लम्बी बढ़कर मंगल बद में पहुंच जाए तो खुद तो तेज एवं अक्ल का होशियार होगा मगर मामा एवं मामा के खानदान बरबाद होगे। मामा सफाचट हो और जिन्दा हो तो औलाद न हों ओर आगे मैदान औलाद तबाह वगैरह सब बुरा प्रभाव होवे।

बुध नं 3, 11, मंगल नं 5 हो लेकिन चन्द्र या सूर्य का सम्बंध न हो तो माता से पहले ही बचपन में गुजर जावे, नहीं वो दोनों दुखिया हों। अगर नर ग्रहों में से किसी एक या तीनों का ही हाथ या सम्बंध हो जाए तो यह घर मौत का मन्दा घर मारक स्थान न होगा। जागृति का जमाना होगा और अगर यह इस सिर रेखा की तरफ हो तो व तो माता - पिता के जिन्दा होते ही वह व्यक्ति पहले मर जाएगा क्योंकि अब मंगल बद का सिर्फ बुध पर असर होगा। अगर दोंनों हालतों में दोनों ही जिन्दा हो तो दोनों की आपसी सुख न होगा। एक के लिए दूसरा मुर्दे से भी बदतर होगा। अगर मातृ रेखा गहरी व साफ न हो तो माता का सुख कोई न होगा अगर चन्द्र का पर्वत कायम हो तो माता की उम्र लम्बी और इसका आराम ज्यादा होगा।

बुध नं0 8 बृहस्पति नं0 2 हो तो पिता की उम्र के समाप्त करने के अतिरिक्त (अपनी 16 से 19 साल उम्र तक) इसका सम्बंध भी खराब करे बहिन, बेटी मामा बरबाद हो।

बुध खाना नम्बर 9

तिलस्मी भूत जिसका साया मालूम न हो, चमगादड़ सब्ज रंग थुथलाना, हरा जंगल व वृक्षों जैसा।

जब तक बुध नौवें ग्रह न कोई बोलता
भूल से गर कोई बोले बुध न उसको छोड़ता
साया तो है नजर आता बुध नजर आता नहीं
मार पड़ती सब ग्रहों को कोई छुड़ाता नहीं
आसपास ऊँचा तो बहरफना हुआ गहरा
बुध बद इतना कि दोनों ही में न ठहरा

अगर ठहरा तो 13 साल या 13 महीने ही वो है ठहरा
साल 16 माह 15 दिन भी 16 है नहीं ठहरा
फिर भी ठहरा न ही ठहरा ठहरा ठण्डे दिल से है
बहिन मासी बुआ फूफी मारता सब ही को है
बुध घर नौवें सब पर प्रबल चन्द्र से वो डरता है
जो रेते को तरह में करके बुध को चलता करता है
चन्द्र बैठा घर पहले में बुध भी नौवे बैठा हो
पानी देवें कादल चन्द्र बुध कभी न मन्दा हो।

(नोट : दरिया के पानी से धोकर या दरिया के पानी के छींटे मार पहला कपड़ा डालना वक्त दिन का दोपहर मगर रात न होवे अगर चन्द्र नं 3, 8, 5, 9 में हो तो बुध स्वयं बचाव होगा)

इस घर में बुध बेबुनियाद और ला-इनताह गहराई के खाली कुंए का महल या ऐसे व्यक्ति की पैदाइश में भेद होगा जिसके प्रकट करने में दोनों के साथ से लसूड़े की गिटक की तरह किस्मत का हाल होगी। (मन्दे अर्थो में) और उम्र का मंगल बद या स्वयं का जमाना (1, 4, 13, 15, 17, 28, 34 वा) साल महीना या दिन न कभी नेक और खुशहाली होगा चाहे उम्र चमगादड़ के महमान आए यहां हम लटके है वहां तुम लटको की तरह साथियों का हाल होगा **जिसका उपाय नाक छेदने के अतिरिक्त न कोई और होगा जिसमें सोने चान्दी का छल्ला जरूरी होगा नहीं तो फिर भी होगा तो चन्द्र की चलती चीजें या वृहस्पति (जर्द) के रंग में रंगी हुई सम्बंधित (खुद अपनी उम्र के लिए) से वो एक चलता दरिया होगा।** सब्ज रंग मन्दा होगा जिसकी तुफानी हालत का न कोई इन्ताह हो या वो जालिमों को फांसी देकर गिराने के लिए डरावना कुआं होगा जिसकी तह देखने के लिए सीढी का न कभी इन्तजाम होगा अगर यह सब कुछ न हुआ तो वो नर जहान होगा बुध का दायरा या सिर रेखा या बुध में शादी रेखा को काटती हुई ऊपर धन राशि को खत शुक्र या बुध नं 8 हमेशा बुरा ही असर देंगे। अगर किसी तरह उम्र वाला होवे तो खानदान की परवरिश करने वाला नहीं तो 28 साल माता पिता दुखी रहे थुथला कर बोलने वाला हो बुध जब उम्र के 34 वें साल शुरू होवे तो मंगलबद को प्रभाव देगा जिसका इलाज लोहें की ऊपर से लाल की हुई गोली होगी। बुध दायरा वही असर जो मशलश त्रिकोने का था। खाना नम्बर 9 में या खाना नं 9 के ग्रहों का साथी ग्रह हो जाने वाला बुध यानि बुध जिस घर में बैठा हो इस घर का मालिक ग्रह खाना नं 9 में बैठा हो इस घर का मालिक ग्रह खाना नं 9 में बैठ जाए । खाना नं 9 के सभी ही ग्रहों को (चाहे वो बुध के दोस्त हों या दुश्मन या वो बुध से शक्तिशाली हों या कमजोर) या खाना नं 9 के उस ग्रह को

जिसका कि बुध साथी ग्रह बन रहा हो अपनी यानि बुध के खाली दायरा की तरह की बेबुनियाद मुर्दा ओर निष्फल(यानि जो कोई भी काम न देवे या किसी भी काम न आ सके)

कर देगा। **ऐसी हालत में नर ग्रहों (सूर्य, वृहस्पति, मंगल) से उस नर ग्रह का उपाय करे** जो पर ग्रह कि खाना नं० 9 के ग्रह को या खाना नं 9 में बुध के साथी ग्रह हो जाने वाले ग्रह को या स्वयं को ही बरबाद न करे फिर यही शर्त मध्य नजर रखते हुए जबकि नर **ग्रह काम न आ सकते हों स्त्री ग्रहों (चन्द्र शुक्र) का उपाय करें।** मगर इस तरह भी शर्त को मध्य नजर रखते हुए काम न बने तो वाकी सम्बंधित ग्रहों की सहायता लेवे **परन्तु उपाय से बरवाद हो जाने वाले ग्रह का ख्याल न भूल जाए।** बुध नं चन्द्र या बृहस्पति या दोनों नं 7, 3, 6 उम्र हो होगी। मगर शादी और गृहस्थी खुशी से फोकी शान या गड़बड़ होगी।

बुध खाना नम्बर 10

(राशि फल का)

दांत, खुष्क घास, शराब कबाब, भूत की खुराक, लेटा हुआ अण्डा,
शनि का उपाय मददगार होगा, *सीढ़ियां मकान की*
बुध को दसवें हुआ बसेरा शनि करेगा फैसला तेरा
किसी तरह से अगर मिलेगा चन्द्र अपनी दया करेगा
खुष्क घड़े सब में पानी भरेगा सदफ में वो मोती पैदा करेगा
शनि का कुछ भी न मिलेगा अगर कुछ मिला सख्त धोखा मिलेगा।

लाख का महल, बारुद का पटाखा सांप के जहरीले दांत, हलकाए कुत्ते की दुम, शनि के इशारे पर काम करेंगे जैसा कि शनि होगा वैसा ही बुध काम कर दिखाएगा। पिता की इच्छा हो सुखा देवे या न देवे माता-पिता का साया कोई यकीनी न होगा। न ही **स्वयं नजर का कोई भरोसा होगा अगर होगा जुबान का चसका, शराब कवाब का मन्दा प्रभाव, ऐश तबाही होगा।** पर उम्र लम्बी का साथ भी होगा। अक्ल में शरारत की वजह से खराबी व दुश्मनी खड़ी हो और आंख के इशारे में नुकसान हो। शनि की जायदाद उत्तम जुबान का चसका खराबी का सबूत होगा। इस घर का बुध ने आंख को गोल किया और शुक्र की जमीन की तरह बीनाई की पुतली बना, मगर शनि दोस्ती नहीं करता। आंख सही मगर कई बार नजर होती भी नहीं रज व तकलीफ पिता की (शनि) इच्छा हो आनन्द देवे मर्जी से न देवे यकीनी नहीं। यानि फैसला शनि से होगा। अगर शनि मन्दा होतो 42 साज हथियार का खौफ, दुश्मन ज्यादा होवे।

बुध नं0 10 चन्द्र नं0 4 हो तो समुन्द्र पार लम्बे लम्बे सफर के द्वारा। (बुध के काम)नेक नतीजे होंगे। बुध 10 चन्द्र नं0 5 में हो तो ऐसा बुध नं0 10

चन्द्र नं0 3 में हो चन्द्र के वक्त बाकी तीन बचने वाले मकान की हालत की तरह किस्मत का हाल होगा।

बुध खाना नम्बर 11

कच्चर घढ़ा कण्ठी वाला तोता गुरू (वृहस्पति) का उपदेश देवें चोड़े पत्तो का पेड़ सीप, हीरा फटकरी, उल्टा घड़ा या जन्म वक्त जबकि सन्तान दुनिया में आते वक्त सिर नीचे मगर इस को प्रणाम करता आवे

कुम्भ घड़ा उल्टा है वेशक बुध ग्यारहवें हुआ
इस तरह से हो जो डूबा इसको जिन्दा कर गया
ग्रह जमी सब खत्म हों तो बुध अकेला रह गया
तारने ही वो लगा जब घर ही सारा बह गया
ग्यारहरवें बुध न किसी को तारे तारता जब वो आखिरी है
शनि वृहस्पति चन्द्र मारा मारता आखिर बुध ही है

स्वयं बुध वह किरदार खोटे काम व मन्दी हालत का होगा जिसका प्रभाव इसकी पूरी उम्र (लड़की की 17 मगर टेवे वाले की अपनी 34) तक साया की तरह साथ होगा। सब तरह तरफ से बरबाद ओर निराश हो जाने के बाद विशेष कर शनि वृहस्पति या चन्द्र मन्दे वाले को या इन तीनों से आवाद व खुशहाल कर देगा। बुध के द्वारा खुद बद करदार होगा, बिना किसी के खोटे काम, खोटे हालात बुध की पूरी उम्र तक लड़की की 17 साल तक मगर सब तरफ से मारे हुए को सहायता देगा या सब तरफ से मारा जा सकने के बाद सहायता देगा। शनि वृहस्पति या चन्द्र के मारे हुए को भी सहायता देगा।

बुध खाना नम्बर 12

(नीच) राशि फल का, **केतू का उपाय सहायक होगा।** *अण्डे खोलने बटेर मन्दा अण्डा, हड़काया कत्ता (आम टेवे में) मगर 12 में बैठा खाना नं0 5 का फल देने वाला (ऊंच बुध) सिर्फ जाती खून के लिए और सिर्फ जिस टेवे में शनि बृहस्पति मशतरका हो केतू का उपाय स्वयं हो जाता है। बाकी तरफ वहीं मन्दा असर। शनि नं0 12 में बैठे बुध का कभी बुरा प्रभाव न होगा।*

बुध जब बैठा 12 में हो तो रेत बरसाने लगा
12, 6 से सब ही भागे कुत्ता हड़काने लगा
आसमान से कुत्ता हड़का भागता, पाताल को
12 गालें 6 भी मारे साड़े खाना नम्बर चार को
गर न मारे धन न मारे मारता है जहान को
बच सके न इससे कोई नाक जब तक साफ हो
मदद में दस नहीं अब खैर मांगों जहान की
बस खत्म अब हो चुकी रफतार सब ग्रहचाल की
12 कुत्ता बुध जो हड़का तारता केतू ही है

गर ने घर में कुत्ता रखो झपटता बुध बाजू रहे है

सिवाए शनि के जो अब साथ या साथी ग्रह बन रहा है बुध नं 12 सब बाकी ग्रहों (जो साथ साथी *नं0* 12 या 6 में हों) हड़काया कुत्ता, भाइयों का दुश्मन दौलत का राजा दूसरों के लिए जोड़ेगा। लोगों में वे इतवारी की जिन्दगी और तबीयत का हर लम्हा घुमने वाला होगा। व्यापार सट्टा (बुध की हवा से ताकतों व चीजों का सम्बंध) भी मन्दा होगा। **नाक छेदना या गले में पीला धागा हर समय कायम रखना शुभ ,** भले प्रभाव के लिए जरूरी होगा नहीं तो हर तीसरी बोली (3 दिन 3 महीने 3 साल या हर तीसरी गिनती अपनी आयु की या अपने सम्बंधियों की) पर नीलामी की बोली समाप्त कर देगा। चाहे सबका माल बाकी बचे या न बचे या कीमत के बदले में न होगा केवल होगा तो अपने मालिक पिता को अन्त में छोड़ देने का प्रभाव होगा। या तो स्वयं उस घर से बाहर होगा बशर्ते कि शुक्र (शादी) की जंजीर में जकड़ा हुआ न होगा। अगर होगा तो सिर पागल होने की वजह से सब पर हमलावार होगा। **यदि शुक्र की उम्र (25 साल) से पहले शादी करना भला न होगा, चस्का जुबान (पानी ग्रहों की सम्बंधित चीजों की खुराक) से परहेज शुभ होगा औरत** का खाना नम्बर 12 का बुध कोई बुरा नहीं गिनते। राशि फल का होगा। खराब रेखा से झूठ बोलने वाला ओर वेइतबारी की जिन्दगी होवे, जुबान का गन्दा हो खाना नं 6 का कुल प्रभाव और खाना नं के समान ग्रहों का प्रभाव (चाहे वो बुध के मित्र हो या शत्रु) बुरा कर देवे। कुत्ते की दुम की तरह टेढ़ा रहे और हाथी की सूंड की तरह कीचड फैंके। दीवाना या हड़का कुत्ता या कुत्ता जिसकी दुम बाहर की तरफ और मुंह काटने के लिए अपने ही मकान की तरफ हो, दुम अलग काट देने के बाद सांप को सिर्फ सिरी या सिर जिसको मारना ही मुश्किल हो जाए। अर्थ यह कि कुण्डली वाले के लिए खाना नं 6 का (चाहे कोई भी ग्रह हो)अपनी जात के लिए बुरा प्रभाव होगा या अपनी जान पर खाना नं 6 का बुरा प्रभाव पैदा करने के लिए खाना नं 6 वालों का बरवाद करेगा। लेकिन अगर वो ग्रह खाना नं 6 में **प्रभाव कर देने वाले हों तो उनके सम्बंधित को मार देगा मगर गरीबी का साथ न होगा और अमीरी का भर उसे अपनी जान के लिए कोई भी फायदा न होगा।**

बुध नं0 12 शनि नं0 6 में हो तो बेइतवारी मन्दे काम जायदाद उड़ा देवे

बुध नं0 12 बृहस्पति नं0 6 हो तो पिता की आयु बरबाद और समाप्त के अलावा पिता तक भी बरबाद कर देवे।

बुध नं0 12 चन्द्र नं0 6 में हो तो माता भाग्य रद्दी खुदकशी तक नौबत मगर बिना समय गरीबी न होगी।

बुध नं0 12 मंगल नं0 6 हो तो मंगल का बुरा फल और रद्दी हालत कर

देगा बहिन भाई का मौत के यम होंगे।

बुध नं0 12 राहू नं0 6 में हो तो राहू का फल रद्दी होगा।

बुध नं0 12 मंगल या मंगलबद खाना नं0 4 में हो तो माता बचपन में गुजर जाए वरना दोनों दुखिया।

बुध नं0 12 सूर्य नं0 6 हो तो राज दरबार की आमदन के अतिरिक्त राज दरबार की सम्बंध तक खराब कर देवें।

बुध नं0 12 शुकं न06 हो तो शुक्र स्वयं नीच फल ही होता है बुध व शुक्र दोनों का दोनों घरों का फल बरबाद होगा।

बुध नं0 12 केतू नं0 5 हो तो केतू का फल बरबाद होगा।

शनि

देवता जाहिर

भैरव वली शनि चाहे सांप मौत का यम, खुद उड़े दूसरों को उड़ाए इच्छाचारी तो सब को तारे काला रंग सब पर चढ़े मगर काले रंग पर कोई न चढ़े नीश (डैंग) से गणेश होए, मच्छली के अण्डे, मगरमच्छ का पेट, कबीला बढ़े उल्ट तो मरे। **मुकद्में दुश्मनी डर, सेहत छुटकारे के लिए 4 बदाम रोज के हिसाब से 4 दिन श्मशान में बाहर से फैंके।**

शनि सांप का सांस चाहे मन्दा इच्छाधारी पर होते है
मदद पर जिसकी हो वो बैठे तारते इक दम दोनों हैं
शत्रु ग्रह तब बढ़ते जावें जहर रंग शनि बढ़ते हैं
शुक्र बच्चा वो कभी न मारे सांप वो बच्चे मारता है
गुरू के घर कभी बुरा न करता न ही पाप खुद करता है
पाप किया जो राहू केतू फैसला उसी से करता है
पर ग्रह हो जब साथ अकेला जहर शनि नहीं होता है
नर ग्रह होवे दो या ज्यादा कावे शनि हो जाता है
तीन गुणा घर पहले मन्दा 6 गुणा मन्दा तीसरे है
एक गुणा घर पहले मन्दा पर मन्दा नहीं खुदाई है
घर चौथे सांप पानी का पांचवे बच्चे खाता है
दूसरे घर में गुरू शरण तो आठवें हैडक्वाटर है
नौवें सातवें घर 12 बैठा कलम विधाता होता है
आंवले छैक और बाल जिस्म के हाथ दिखावा होता हैं
टकटक करके बोलना इसका फैसला कुन शनि होता हैं

शनि का मन्द फल दिए हुए खाने का इस समय ही शुभ होगा जब वो राहू केतू के अपने दांए बांए होने के नियम पर नेक स्वभाव हो जाए वेसा वर्षफल।

शनि की रेखा :- शनि (पापी ग्रह) पाप समय सिर्फ राहू केतू का पैदा करना बहाना ही ढूढंता हैं और जड़ से बुरा कर देता हैं अगर सूर्य जमा। रोशनी का मालिक है ता शनि की ऐसे अन्धेरे का धनी है यानि सुर्य के विरुद्ध चलेगा। यह ग्रह अगर नेक हो जाए ता सूर्य वृहस्पति आदि से बढ़कर होगा। सबके घरो से माल उठा कर अपने ही घर में लाकर जमा कर लेगा और तार देगा । ऐसी हालत में दूसरों के लिए बुरा और सीमा से बुरा अगर अपने लिए भाग्यवान का पाठ होगा। चाहे अपने आम प्रभाव के 6 साल वक्त में आखिर पर प्रभाव करता है जिसके शुरू में राहू दरम्यानी हिस्सा बुध और आखिरी समय पर शनि का असर होगा।

शनि की आंखें:- यह ग्रह का मालिक है अगर इन्सान को मान ले तो हर खाना नम्बर शनि की निम्नलिखित हालत होगी:-

खाना नं0	*नजर*
1.	*एक आंख*
2.	*दो आंख*
3.	*तीन आंख*
4.	*चार आंख*
5.	*अन्धा*
6.	*अन्धराते वाली*
7.	*चलती हवा की आंखों में आंखों के करिश्मा व चमक से ही मिट्टी डल देने की ताकत वाली आंख*
8.	*मौत या जालिमाना आंख*
9.	*जले हुए को सर सब्ज या आबाद कर लेने वाली आंख*
10.	*चर तरफ देखने वाली आंख*
11.	*बच्चे की तरह मासूम आंख*
12.	*दुखिया को सुखिया और वीराने उजाड़ को आबाद व खुशहाल कर लेने वाली आंख*

पापी ग्रह, काला या अन्धेरी रात, सूर्य का लड़का होते हुए सूर्य के विरुद्ध चलने वाला व तर तरफ से दुनिया की शर्म सब वर प्रबल संगमरमर का स्याह सुरमा और पत्थर जैसा दोखा देने वाला जादू की आंख पर चलने वाला और सिर्फ एक ही नजर से खाक स्याह करने की शक्ति वाला बेरहम काली चीजों पर बिजली कर तरह बुरा असर करने वाला, काले सांप की आंख का मालिक तारने के वक्त इच्छाधारी सांप और शेष नाग की तरह सहायता करने वाला उम्र रेखा दौलत के दुनियावी सुख और उर्ध्व रेखा का मालिक है। उर्ध्व रेखा इसकी एक

खाली है जिसका आखिरी मुकाम वो है जहां सेहत रेखा उम्र रेखा को काटने के लिए आने के समय स्वयं कट जाए, यह मुकाम इसका हैड क्वार्टर दौलत खाना है जिसमें जो पड़ा वही मारा गया इस पर्वत का ऊँचा न होना शुभ है बीमारी से बचाता अगर पर्वत बिल्कुल न हो तो नकली खाता, तंगदस्ती हो, इस जगह का दूसरा नाम मुकाम मौत है जिसका यह खुद निगरांन है हर एक की कमाई से अपनी उर्ध्व रेखा की खाली रास्ता एवं वो जिस पर्वत पर जो चले जाते हैं। इसका जिस्म मगरमच्छ भूख मच्छली की ओर आंख शिवजी की है, कुम्भ पानी से भरा घड़ा दुनिया का सब कामों के लिए नेक शगुन है जो इसने स्वयं अपने घर रख कर खराब और पतित कर दिया है इसी कारण से मरने के बाद खाली घड़ा मुर्दा के सिर की तरफ फोड़ते है कि शनि की किस्मत का घड़ा तो फूट गया अब भी अगर जान बाकी है तो दूसरों की किस्मत के लिए वारिस घर हो चले या इसके बाद सूर्य को मुंह दिखला कर ही वापिसी की सलाह है जो सबका पिता है और सबका न्यायक है जान से मार देने वाली जर या तेज हथियार से फौरन मर जाना बड़े भारी बोझ (पहाड़ समान) के नीचे दब कर अचानक व उसी समय मर जाना या ऐसी मौत का मरना कि स्वयं मरे मगर बाद वालों की मौत का बहाना न हो यह पापियों के टोले का मालिक और अपनी ताकत में अकेला साथी है अगर यह फर्क करने में बदनाम हुआ तो एक ही लम्हा में तार देने वाला भी जरूर है शुक्र को गाए और शनि को भैंस माना गया है शुक्र केतू का दोस्त हहै और केतू शनि का एजेन्ट है शनि व केतू व शनि को भैरों, केतू को कुत्ता माना है। भैरों का कुत्ता को गाए जिस सब गऊ माता कहते हैं और शनि को किसी ने अच्छा नहीं कहा। गाए बैल की सिफत से हमें कोई मतलब नहीं, इल्म सामुद्रिक के ग्रह केतू के सम्बंध में देखना है कि कामदेव को कौन कीड़ा है गाए का बच्चा जवान हुआ कामदेव की ताकत पैदा हो जाने पर वो अपनी माता को पहचान नहीं सकता या शुक्र कामदेव (केतू)की दोस्ती में सब कुछ भूल जाता है मगर शनि की भैस के बच्चा ने जवानी में कामदेव के वक्त अपनी मां को पहचान लिया मतलब यह कि शनि बदनाम है मगर कामदेव का कीड़ा नहीं है। केतू को लड़का भी माना है हर एक अपने बच्चा को बचाता और पालता है मां बच्चे की मुहब्बत सब को मालूम है मगर सर्पिनी कहते हैं कि अपने बच्चों को खा जाती है। केतू को सूअर माना है जो गोली लगने के वक्त गोली चलने की जगह आकर दम देगा मगर शनि मार पड़ने या मार करने के वक्त चारों तरफ चल जाता है। मंगल का शेर भी पानी में तैरते वक्त सीधा तैरता है और खुंखारी के वक्त राहू के हाथी को चुप करा लेता है। मगर शनि के समाने अपना फल शनि को ही दे देगा। बुध तो शनि के लिए है ही इसका साथी, सांप के जहर के मालिक सांप के दांत की तो शनि की जहर का काम करते हैं शनि इतना रहम दिल भी है कि नहीं तो इसके शुक्र को

जिसने किसी को नीच नहीं किया सहायता देने के लिए अपना दोस्त बनाया है जिसमें केतू कामदेव भरा हुआ है मगर शनि ने मंगल के घर खाना नं 3 में जहां कि सब ग्रह धन दौलत के मालिक होते है अपने लिए दौलत रखने का श्राप ले लिया है और सब उसके बदले में खुद मंगल को अपने घर खाना नम्बर *10* में राजा की दौलत बख्शी है बृहस्पति दोनों जहान का मालिक है होते हुए शनि के घर खाना नं *10* में नीचता के काम करता है। नीच कहलाता है और मन्दा फल देता है। मगर शनि वृहस्पति के घरों में कभी बुरा फल न देगा। सूर्य इतना बलवान है कि कोई इसका रास्ता नहीं बदला सका मगर शनि जो सूर्य का लड़का है जब अकेला सूर्य के साथ आ बैठे तो बुध की तरह खाली मैदान कर देगा। मगर अपनी बुराई की पूरी ताकत न प्रयोग करेगा। लेकिन अगर सूर्य अपने साथ वृहस्पति को ले बैठे और शनि को भी वहां ही आना पड़े तो शनि अपनी ताकत से दोनों ही सूर्य वृहस्पति की शक्ति को बरबाद कर देगा और ऐसा मारेगा कि दोनों का निशान न मिले हालांकि वृहस्पति के सामने यह बुराई न करता जिस कद्र शनि के मुकाबले पर उसके दुश्मन ग्रह संख्या में बढते जांए शनि अपने रास्तों को बढ़ाता जाएगा। यह स्वयं बुराई नहीं करता बल्कि उसके एजेन्ट राहू केतू बुराई वालों के काम इसके पास फैसला के लिए लाते है। बुरे कामों का नतीजा बुरा ही होता है। बुरा ही फैसला करना हो उसे इसलिए ही बदनाम हुआ शनि का सांप सबकों डंग मारता है मगर इकलौते लड़के सूर्य और हमला और (गर्भवति) के सामने खुद अन्धा हो जाता। हालांकि इसका यह खुद मालिक है। शनि मकान का मालिक है मगर शनि का सांप त्यागी होने का सबूत देता है। सांप कभी अपनी बिल बना कर नहीं रहता सूर्य का बन्दर भी अपना घौसला नहीं बनाता मगर जरूरत के वक्त सांप को शनि की जमीन खुद बखुद की फट कर पनाह दे देती है शनि के काले कीड़े लाख उपाय करें अपने रहने की जगह नहीं बदलते लेकिन जरा सा दूध डालने लगे तो वो कीड़े स्वयं चले जाएंगे । दूध चन्द्र का है, चन्द्र माता है। शनि माता को पहचान लेता है। मगर माता इसके पास नहीं रहती है वो इसके घर में नीच फल देगी । चन्द्र खाना नं8 में जहा कि शनि का हैडक्वाटर हैं मन्दा फल देता हैं । मगर उम्र लम्बी होती हैं जो चन्द्र का आशीर्वाद हैं जो वो माता का भी आर्शिवाद देती हैं । इसीलिए उम्रं के मालिक चन्द ने शनि के सांप और कोए की उम्र लम्बी की हैं । मौत के वक्त का हालत घिस-घिस कर मारना मंगल बद ने सम्भाला हैं । शनि अगर मारेगा तो तरसाएगा नहीं फौरन फैसला कर देगा, मार देगा या तार देगा । शनि पाताल का मालिक हैं वृहस्पति तो डर के मारे जर्द रंग होकर साधू ही बन गया हैं । शनि का बाप सूर्य माना गया हैं वह शनि के दोस्त शुक्र की दृष्टि या अपने दोस्त चन्द्र की धरती माता पर कभी भूले से भी नही आता । चाहे शनि का अधिकार जरूर है और इसके फैसला का इतवार नहीं कि

सजा क्या देगा । राहू केतू पोल खोल देंगे । शनि का फल अच्छा होगा या मन्दा, राहू केतू के सम्बंध से जाहिर हो जाएगा । सुबह से शाम हुई शाम से दूसरा पहर आ गया था । माह आया कोई न इस जा ठहरा हर एक चीज के हमशा ही बैठे रहने से इसके चले जाने की हालत के प्रभाव की वो कद्र नहीं होती यह ग्रह अदली बदली और फौरा तबदीली या रोशनी से अन्धेरे बना देने का काबिल बजूद हैं इसलिए की किसी ने कही है कि बाबर बेशकश कि दरवाजा नीस्त यानि कि दुनिया पाएदार नही ऐश व इशरत की कोशीश बादल या जमाना की हवा के साथ ही कर लेनी चाहिए । गो बात में उदासी दहे मगर शनि से मौत के डर का नतीजा चालाकी और वक्त से पहलजे ही सोच विचार होता हैं । शनि का बुरा प्रभाव कर देने का जरूर हैं मगर सम्भव है कि वो तार ही देंवे उस वक्त न उम्र घटे न दौलत मिटे । शनि के प्रबल ग्रह वाला सांप स्वभाव आंखे सांप की आंखो से मिलती हुई गहरी व गोल रंगल में सफेद या सूर्ख न होगा , बल्कि स्याही पर या स्याह रंग ही होगा । भवें लेटी लेटी लकीर की तरह सीधी या भवों पर बाल कम आवाज में सांप की तरह टकटक करने वाला, आखों का बहुत देर बाद झपकने वाला होगा । बात में पता न लगने देगा कि इसका अपना असली मतलब क्या हैं । दोनों पहलू चारों तरफ घूम जाने वाला होगा । अगर मदद पर हुआ तो दूसरे की मदद के पूरा करने के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर देगा पक्का हदधर्मी होगा । **अगर विरोधिता पर हुआ तो मुकाबले बाले का सब कुछ बर्बाद व जहरीला कर देगा** । और सिर्फ दुनियावी तमाशा दिखलाएगा । चाहे दुश्मन का और अपना दोनों का ही कुछ न बने सुनने की बजाए आंखो से ही काम लेगा । दूसरों पर सांप आ निकलने की तरह का डर पैदा करेगा । कान छोटे, अलग बैठने का आदि होगा ।

भवें:- (राहू-केतू के सम्बंध से शनि का स्वभाव)= जिस कद्र आंख से दूर और सीधे--हो उसी कद्र ही संगदिल और बुरे काम करने वाला होगा कमान की तरह का झुकाव : दिल का झकाव या रहम दिल होने जाहिर करता हैं ।

छींक का विचार :- (शनि राहू मुशतरका) (1) सामने से या दाई तरफ से एक या तीन छींक --नतीजा न होवे । (2) पीछे से या बाई तरफ से दो हद छींक होंवे तो हमेशा नेक नतीजा होगा (3) पीछे से आवाज मन्हूस गिनी ।

जिस्म पर बाल *= (शनि) एक बाल की जड़ के सुराख को मुसाम कहतें हैं।*

(1) हर एक मुसाम से अगर बाल पैदा हुए तायदाद में हो एक तो हूक्मरान दौलतमन्द, मजलस, अक्लमन्द, कुण्डली का खाना नं० 6, अगर तीन हों तो खुदा परस्त खाना नं०2 अगर चार हों तो मजलस, बेहूनर खाना नं० 3 ।

(2) सिर पर टटरी हो (बगैर बाल की जगह) दौलतमन्द होगा, खाना नं० 12

(3) दाढी मुंछ के बाल कम हों या बिल्कुल न हों तो कम हौसला, उम्मीदों में मायुसी खुद पैदा करदा जायदाद न हो खाना नं० 11

(4) सारे जिस्म पर ज्यादा बाल हों तो बदनसीब होगा खाना नं० 5
(5) पुस्त पास पैशानी पर बाल हो तो मन्दभाग्य होगा , खाना नं० 9
(6) छातीपर जयादा बाल हों तो उम्र ही गुलामी मे गुजरें खाना नं० 8
(7) छातीपर बाल बिलकुल न हों तो नाकाबल इतबार, इसके दिल का कोई भरोसा न होगा । खाना नं० 4 ।

(8) तमाम जिस्म पर हद से ज्यादा बाल तंग ही होगा । खाना नं० ।

हाथों की रहनुमाई (जाहिरदारी) :- (1) सख्त हाथ वाला =- हकुमत करनें में यादर होगा (2) नर्म हाथ वाला -- आराम तलब होगा (3) नर्म और फेले हुए ---सुस्त तबीयत मन्द भाग्य (4) सख्त और मजबुत --- सब्र और फुरती वाला, (5) छोटा हाथ -- जिन्दगी गुलामी में गुजाराने की अलामत है । (6) लम्बे हाथ वाला --- छानबीन की लियाकत से जिन्दगीं उम्दा बना लेने वाला होगा । (7) लम्बा बदनुमा सख्त --जल्लाद , बेरहम, मन्द भाग्य होगा । (8) हाथ और पांव दोनों ही छोटे-छोटे-मतलब्र परस्त खुद अपने लिए मन्दभाग्य दूसरों के लिए मन्हूस हो । (9) साफ और उम्दा हाथ -- अक्ल व भलमानसी प्रकट करता हैं ।

शनि मकानों में यह ग्रह चार दिवारी से मुतलका होगा और सूर्य के उल्ट चलता हैं मकान का शरह आम का बडा दरवाजा (अन्दर के दरवाजे किसी ग्रह में नही माने गए) मगरब में होगा । मकान की सबसे आखिरी कोठरी जो बाहर से मकान में अन्दर दाखिल होते वक्त दांए हाथ की तरफ की होगी, पुरी अन्धेरी कोठरी होगी जिस पदन तक इसमें रोशनी का बन्दोबस्त न होगा शनि का उत्तम फल होगा। जिस दिन जरा भी रोशनी या सूर्य के आने का बन्दाबस्त हुआ सूर्य शनि का झगडा या वो घर बर्बाद हालत का हो जाएगा । मकान में पत्थर गढा हुआ होगा । मकान के सबसे पहले दरबाजा की दहलीज पुरानी लकडी की (शीशम य कीकर, बेरी, फलाही बगैरह की होगी, हर हालत में नए जमाना की लकडी दयार, चीड वगैरह न होगी) होगी । छत्त पर भी पुरानी लकडी का साथ आम होगा, हो सकता हैं कि इस मकान में पिलर का साथ हो मकान गिर जाए, आग लगे भैस मर जाए शनि बुरा हो गया **जिस्म पर से बाल उतर जांए खास कर पल्कों और भवों के (बिमारी का ताल्लुक न हो) तो शनि बर्बाद कहेंगे ।** शनि बर्बाद वाले का या दातुन का इस्तेमाल आंख का पानी खुष्क होने तक या बालों का सफेद होने तक सहायक होगा ।

खानावार शनि की वस्तुयें :- *(1) कौआ : गन्दा कीड़ा मन्दी आग नमक स्याह, कीकर का पेड़ (2) माह (उड़द) साबुत, शुभ कंगन वाले (3) खजूर का पेड़ (4) काले कीड़े , मकान तिल, संगमरमर सफेद । (5) सूरमा स्याह, बुद्धु लड़का (6) कौआ, बिनोले, बंरी का पेड़ पत्थर का कोयला (7) दरिन्दे*

स्याह गाए, सूरमा सफेद बीनाई (8) बिच्छु कनपटी पटपडी छत्त के वगैर खडी दीवारें (9) पुरानी लकड़ी टाहली फलाही आक का पेड़। (1) मगमच्छ, सांप फलाही का पेड़ (11) लोहा,अनाज की कोठी (12) मशनाई तोंबा, मच्छली तखतपोश बादाम सिर पर टटरी ।

शनि परसराम :- (यानि परस, कुल्हाडे वाला परसा कुल्हाडा) दोनों की जमा या दोनों का साधू राहू या केतू पाप तो शनि पापी होगा ।

शनि का चौरास :- *धोखे का ग्रह दो गुग चलता हैं ख्वाह भला चले ख्वाह मन्दी तरफ मगर शनि चारों तरफ ही चलेगा । जब वो खाना नं० 10 का जन्म कुण्डली में हो ओर वर्षफल के अनुसार भी खाना नं० 10 में ही आ निकले मुफिसिल हाल खाना नं० 10 मे देखें । शनि का अपने एजेन्टो के साथ होने पर अपने जाती असर यानि शनि का अपना स्वभाव कुण्डली वाले के लिये और खुद* ***शनि के खाना नं० 10 की चीजों पर क्या असर होगा :-***

पहले घरों में हो	बीच के घरों में हों	आखिरी के घरों में हो	शनि का असर होगा	कैफियत
राहू	शनि	केतु	खराब	पहले, दरम्यानी
केतू	शनि	राहू	नेक	और बाद के घरों
राहू	केतू	शनि	खराब	से कुण्डली के एक
केतू	राहू	शनि	नेक	दो तीन से हद
शनि	राहू	केतू	खराब	बारह की तक
शनि	केतू	राहू	नेक	की गिनती के
राहू केतू		शनि	शनि का	हिसाव से पहला
शनि		राहू केतू	अपना खराब नेक	दरमयाना आखिरी
राहू		शनि केतू	खराब	पर होगा यानि
शनि-केतू		राहू	नेक	3,,5,7, नम्बर के
शनि राहू		केतू	खराब	घरों में 3 पहला
केतू		राहू शनि	नेक	घर पांच दरम्याना और
				7 आखिरी खाना होगा।

शनि का दुसरे घरों से सम्बंध :- शनि से मुकाबले में इसके दुश्मन ग्रह (सूर्य चन्द्र मंगल) स्याह व काली रेखाए मन्हुस नतीजा वाली होगी। दूसरे शब्दों में विस्तृत रुप से लिखा **किस्मत के दोंनों पड़े सितारे सूर्य और चन्द्र हर वक्त साथ हैं** । पीछे बैठे हुए हैं और सूर्य चन्द्र दोनों ही इसके दुश्मन हैं इसलिए काम काज में जिस व्यक्ति का दांया हाथ ज्यादा चलता हो इसकी दाई आंख और बांया हाथ चलता हों तो बाई आख दूसरी की निस्बत कमजोर होगी । मतलब यह कि जिस तरफ शनि का असर होगा वो कमजोर होगी या ग्रहों की 35 साल चाल में

अगर एक तरफ शनि का बुरा असर नहीं आया तो दूसरी ताफ जरूरी हैकि आएगा जिसकी दोनों आंखों की नजर बेशक दोनों चक्रों में बचे रहेंगे। सूर्य पहले वक्त का मालिक है या दाई तरफ का और चन्द्र दूसरे वक्त रात या बाई तरफ का इसलिए जिन की दांई नजर उम्दा है सूर्य के में शनि का अमूमन बुरा असर न होगा और अगर होगा तो चन्द्र के समय में हो सकता है। इसी तरह दूसरी आंख की नजर में से असर होगा। इसी अमूल पर दिमाग के लिहाज से शनि का खाना नं 13 होशियारी जो आंखों की जान है या तो आंखों की सिफत है और शनि की सिफत है दोनो नं 12 सूर्य और नं 21 चन्द्र के ऊपर होता भी आंखों में शनि के घर जाने के वक्त सिर्फ में रहता है और वृहस्पति की सहायता ढूंढता रहता है और शनि जब ऊंच होवे तो वृहस्पति का काम देता है। शनि केतु साझाँ और राहू मुकावले पर हो तो शनि केतू का फल उम्दा और नेक होगा। लेकिन अगर कोई भी तीसरा ग्रह शनि केतू मुश्तरका होने वाले घर में शामिल हो जावे तो शनि केतू दोनों का ही मन्दा प्रभाव होगा। नर ग्रहों में से किसी एक अकेले के साथ बैठा हुआ शनि कभी प्रकट बुरा फल न देगा। जब शनि के साथ या मुकाबला पर दो नर ग्रहों हो शनि का बुरा प्रभाव न होगा लेकिन जब शनि के साथ वा मुकाबला पर दो (कोई दो) ग्रह शामिल हो जाएं तो शनि बुरा फल देगा। जब दो से ज्यादा जितने ग्रह बढ़ते जाएं, चाहे वो शनि के मित्र हो या शत्रु , शनि बुरा ही फल देगा।

अकेला शनि अकेले सूर्य के साथ या सूर्य के पक्के घर में खाली बुध का असर देगा यानि न सूर्य का असर होगा न शनि का अन्धेरा और रोशनी मिली हुई खाली हवा होगा। वृहस्पति के साथ या वृहस्पति के घरों खाना नं 9, 12, 2 में शनि कभी बुरा फल न देगा, बल्कि उम्दा फल देगा।

शनि खाना नम्बर ।

(नीच काम रेखा) हल्क का कौआ, गन्दा कीड़ा, आग से जलना

शनि शुक्र घर पहले बैठे काम रेखा कहलाती है,
मालिक चाहे हाक तख्त हजारी-मिटटी कर दिखलाती हैं
धन दौलत सब चुल्हे घर के -उम्र को लम्बा करती है
नौ ही ग्रहों पर प्रबल होवे-सबको निर्बल करती हैं
सूखी लकड़ी आग की कीड़ा-दोनों झगड़ा करतें हैं
गर हों राहू केतू मन्दे भस्म भण्डारा भरतें हैं
घर पहले में तेल मिट्टी का आग चौथे से लातें हैं
घर सातवां दसवां खाली होवे-मच्छ रेखा बन जातें हैं
वरना वही-चूल्हें पड़ी लक्ष्मी-भट्टी में भगवान्

उम्र सांप और कौए की तरह लम्बी होगी। कामयाब डाक्टर होगा (शनि

में) वजह गरीबी सब काम अधूरा विद्या भी अधुरी होगी। काम रेखा के प्रभाव मे बद कि मध्यम झूठ, फर्जी बुनियादी विचार मौत वाले होगें। मच्छ रेखा व काम रेखा दोनों इकट्ठी ही होंगी । शनि की अवधि (35 साल उम्र) तक सब कुछ उल्टा जावे और हर काम में बरबादी हो। शरीर पर ज्यादा बाल हों तो तंग हाल हो। बुध की मच्छ रेखा के वक्त (बुध नं० 7) बहिन की जगह नर बच्चा बदलता जाए। शनि दूसरे किसी ग्रह के साथ हो तो शनि से मुराद इसका बाप होगी मगर वृहस्पति या सूर्य के साथ शनि से मुराद इसका बाप न होगी। अक्सर हर एक मन्दा ग्रह उस टेवे में ही होगा। जिसके खानादान में पहले अच्छे ग्रह का पूरा सबूत हो चुका हो जिसे वो बुरा ग्रह बर्बाद कर सके। काम रेखा वहां ही होगी जहां कि मच्छ रेखा हो चुकी हो। अच्छे ग्रहो की यह शर्त नहीं। शराब खोरी इस पर्वत की मन्दी निशानी है जिसमें बेबुनियादी विचार मौत आदि होंगे। जब शनि मन्दा हो तो राहू केतू का फल भी रद्दी होगा और वो दोनों ग्रह रद्दी घरें में हों तो काम रेखा का मन्दा असर होगा। अगर कुण्डली में मंगल बद हो तो चुल्हा चोर, फरेबी बद नियत, झगड़ालू धोखेबाज औलाद का दुख (औलाद की 5 साल बीमारी मौत नहीं) आय खराब आखों में नुक्स होवे खराब रेखा से बदनसीब और गुमनाम जिन्दगी वाला हो। दिमागी खाना शुक्र से साझाँ इश्क जवानी ईंधन सूखी लकड़ी आग का कीड़ा काम रेखा सिर्फ धन दौलत के लिये व मच्छ रेखा आपसी या ईमानदारी में बदनियती का बीज होगा। मगर शुक्र का पतंग जरूर होगा। शनि और राहू केतू दोनों मन्दी काम रेखा।

शनि नं० 1 सूर्य नं० 7 हो तो झुठ का पुतला बनेगा और नेकी फरामोश निर्धन कंगाल होगा। मगर सूर्य का उत्तम फल होगा ***जो सांप को दूध ही पिलाएगा और शनि (काला सांप) का बाप ही कहलाता चला आया हैं*** *और आएगा, क्योंकि शनि सूर्य का लड़का हैं।*

शनि खाना नम्बर 2

(उड़द साबुत जो वक्त शादीपकती हैं)

शनि आके तो दूजे बैठ - गुरू का है दरबार,
वक्त नसीबा अपना अच्छा-अजन्ता वक्त मुख्तार
धर्म मन्दिर का सांप ही होगा-जाहिर बुद्ध पर अक्ल होगा
गर न होगा जालिम न होगा-अदल रहम इन्साफ ही होगा।
खुद कभी न दुखिया होगा -होगा बज तक सुखिया होगा
खुद मरे ना किसी का मारे-गर मारे ससुराल ही मारे
दूध पिला दे सब को तारे- दुश्मन उनके सब ही मारे

भगवान को मानने वाला होगा, यथा शक्ति गुजारा करता होगा। भूरी भैस शुभ मगर दो रंगी स्याह या अकेली स्याह शुभ न होगी। शनि की बुराई ओर

वृहस्पति की भलाई, आदत और रहम का मध्यम इन्साफ हैं , बजीर हो, जमीन जायदाद का मालिक हो अच्छा स्वास्थ्य और राहत आराम हो। जितना जाए उतना आए, जितना सुखी अवश्य उतना ही छीन लाए । अगर एक सांस आवे दूसरा आवे इसी तरह ही दोनों हालतें रहें । मंगल नेक हो तो औरतों का सूख हो वरना हमेशा बीमारी गले लगी रहे । दिमागी खाना नं० 7 (शुक्र से साझाँ) जिन्दगी बढने की इच्छा तरक्की से शुभ हैं, लम्बी उम्र का मतलब न लेगें ।

शनि नं० 2 वृहस्पति नं०4 हो तो बात को मुँह की हवा से ताड़ेगा अपनी खुद मुख्तारी और नम्बरदारी के समय और अपनी उम्र के आखिर तक अपने लिए उम्दा किस्मत का मालिक होगा । उम्र रेखा शनि नं०2 वृहस्पति नं० 4 भी वही नेक हे जो वृहस्पति की जड़ से शुरू हो ऐसा आदमी चाहे ढीला ढाला और नेक सा मालूम होगा मगर तेज और हर बात को फौरा समझ लेने वाला होगा ।

शनि खाना नम्बर 3

*राशि फल का लकड़ी कीकर बेरी नकद रूपया की कमी के लिए के राशि फल का, **जिसके लिए केतू का उपाय मददगार होगा,** जायदाद के लिए ग्रहफल का*

शनि कुण्डली घर तीसरे पाया-पर बैठे नही चैन कर,
जहर छोडी फूंक छोडी-छोडता है साल व जर
जा न वाकफ इसके होंगे- उनसे वो बचता रहे
खून उसका भाई-बन्धु सब खराबी दे उसे
गो न दौलत उसने रखी-बढती जाए जायदाद
जितना जितना वो उजाड़े होगा वो हर दम आबाद
शनि हो तीजे चन्द्र दसवें गर हो बैठे वहो कभी,
उर्ध्व रेखा डाकू होवें-कुएं हो मन्दे सभी
जहर जो सापों में भी अपने लिए अब जहर हों
भय जो लोंगों के लिए था अपना ही वो कहर हो ।

नजर के गरजों का हाकिम (कायम हकीम) होगा। दक्षिण दरवाजा मकान या इसके आगे पत्थर का होना शनि के खूनी सांप का असर देन का सबूत होगा। नहीं तो नकद मात्रा के अतिरिक्त बाकी हर तरह से शनि का उत्तम प्रभाव होगा। घर के केतू (कुत्ता) नकद दौलत के लिए शुभ होगा। लेकिन घर में पानी (चन्द्र) से खुद अपनी मौत होवे । चोर डाकू भी बने तो भी दौलत के लिए लालची और मन्दा हाल होवे । शनि नं० 3, *10* हो तो शनि के सम्बंधित कामों में किस्मत का प्रभाव उत्तम होगा । जब या जिसका शनि नं० 3 हो ओर इसके शुभ काम शुरू करने से पहले आगे से लकड़ी आ मिले तो बुरा शगुन या मन्दा असर होने की निशानी होवें। या उस वक्त नक काम न ही शुरू करे या शनि नं०3 वाला शभ काम के वक्त लकड़ी के साथ से परहेज करे तो बेहतर ही होगा।

अगर मंगलबद हो तो झगड़े में खुश झगड़े से लाभ उठाए। दूसरों का काम बिगाड़े मगर खुद आराम पाए। जब तक शनि का मकान (दरवाजा उत्तर में) या मकान में दाखिला पर दांए हाथ की कोठरी पुरी अन्धेरी रहे, धन दौलत उम्दा जिस वक्त मकान रोशन हो जाए या शनि के दुश्मन ग्रहो से सम्बंधित हो जाए तो चोरी बरबादी और मंगल नेक की दौलत साथ न देवे। कम दौलत ही होगा। मंगल बद पर हथेली के अन्दर की तरफ अगर शनि का निशान हो तो वायदा का कच्चा, जवान का जस्का, दस साल तकलीफ के बद आराम पाए और आखिर पर शनि के कामों में लड़ाई, झगड़े में ही मारा जाए। दिमागी खाना नं० 10 बुध से आपसी, स्वास्थ्य शरीर दौलत के लिए निर्धन कंगाल मगर जायदाद होगी। भाई बन्धु से खराबी पाए। (शनि खाना नं० 7 भी देखें)

शनि नं० 3 चन्द्र नं० 10 हो तो पानी से मौत हो अपने ही कुंए से उर्ध्व रेखा चोर डाकू फिर भी मन्दा हाल।

शनि नं० 3 सूर्य नं० 5 हो तो औलाद से दुखिया होगा।

शनि खाना नम्बर 4

मकान, काले कीड़े दूध का छीटां, सहायक उपाय होगा।

शनि हो चौथे घर माता के नस्ल मामू नहीं छोडेगा,
कुल अपनी को डुबोता जाए खुद भी गोता खाएगा
चन्द्र दूजे या कि तीजे-शनि भी चौथे बैठा हो
पितृ रेखा अब उत्तम होगी-सुख सागर सब लम्बा हो
चन्द्र शनि साथी होवे-दूध जहर मिल जाए दो
धन खजाना मन्दा होवे-शुक्र फल भी मन्दा हो
शनि चार में गुरु हो तीजे-उर्ध्व रेखा कहलाएगी
सब को लूट घसूटे इतना-जायदाद बन जाएगी।

पानी के किनारा या कुंए बगैरह पर का सांप और खूनी मल्लाह होगा और खूद अपनी जायदाद जद्दी के कायले ही करके छोड़ेगा। सांप का दुध पिलाना मुबारिक होगा। जिससे चन्द्र का असर प्रबल हो जाएगा। **कुंए में दूध गिराने से चन्द्र का असर प्रबल होगा।** औरतों की कबूतरबाजी से शनि का असर मन्दा शनि कुण्डली वाले पर कभी मन्दा असर न देगा। और न ही सांप डसने का वाक्या होगा।

लेकिल अगर टेवे वाले का शरीर किसी तरह से भी मन्दा हो जाए तो स्वयं सांप ही उसक डस कर जान सक मार देने की बजाए ठीक व मजबूत कर देगा। या उसका जिस्म नाकरा होने के वक्त **शनि की चीजों से सेहत होगी।** माता पिता और अजीजी से रंजीदा होवे। शनि व चन्द्र का अलग मगर चन्द्र का खराब असर हो तो खुद ही दुश्मनी करे अजीजों से सुखी तो वालदा दुखी करे। चन्द्र के निचले हिस्से में 1 **निशान हो तो पानी से खतरा मौत हो।** अगर शनि से शाख

दिल रेखा पर चली जाए तो पराई औरतों की सेवा (बेवगान बतौर दुनियाबी फर्ज) या औरतों की कबूतरबाजी बतौर दुनियावी मुहब्बत में रूपया पैसा विफल या नष्ट करेगा । **जब चन्द्र शनि से दुश्मनी, सांप को दूध पिलाना शुभ होगा।** चन्द्र का असर प्रबल हो जाएगा । शनि मध्यम होगा और **कुएं में दूध डालने से चन्द्र का प्रभाव स्वयं उत्तम होगा।** पितृ रेखा चन्द्र की जायदाद उम्दा फल । दिमागी खाना नम्बर 4 मुहब्बत के तमाम हिस्से चन्दे से मुश्तरका ।

शनि खाना नं० 4 चन्द्र नं० 10 हो तो औरतें चाहे बंवा बतौर फर्ज दुनिया दारी या माशुका वगैरह धन दौलत बर्बाद करे या करवाएं । चन्द्र का प्रभाव मन्दा और प्रबल, शनि का मध्यम, ***सांप को दूध पिलाना मुबारिक फल देगा ।***

शनि नं० 4 चन्द्र नं० 3 हो तो पितृ रेखा — चन्द्र की जायदाद वगैरह का उम्दा और नेक असर हो ।

शनि नं० 4 वृहस्पति नं 3 हो तो उर्ध्व रेखा जिसका दोस्त हो उसे ही बर्बाद और नेक असर हो ।

शनि नं० 4 वृहस्पति नं० 3 हो तो उर्ध्व रेखा जिसका दोस्त हो उसे ही बर्बाद करके स्वयं अमीर हो जाए ।

शनि नं० 4 चन्द्र नं० 2 हो तो पिता का सुख सागर नेक व उम्दा हो ।

शनि खाना नम्बर 5

स्याह बुद्धु लड़का

शनि है पाचवे लड़के खाता या दुश्मन वा मकानें का ,
बाकी सब फल उत्तम होवे - शनि वृहस्पति दोनो का
केतू मालिक है लड़का का ता राहू बली मकानों का
21,24 जो प्रकट हो तो बुजा शुरू निगावन का
चाहे शदियां सात तक हों ओर औलाद बहूत हो

मगर आखिर पर न होगी । औलाद में दें । **भोला बादशाह , अक्ल का चाहे अन्धा मगर गौठ का पुरा होगा ।** औलाद बर्बाद होगी । अगर किसी तरह अपने ही अण्डे खाने वाली सांपनी से काई लड़का बच भी रहे तो 48 साल उम्र तक मकान या औलाद, (वो भी सिर्फ एक लड़का) दो में सक सिर्फ सक चीज कायम होगी व ओलाद को तो सोने से लोहा कर देने की तरह स्याह और बर्बाद करेगा । अगर जिस्म पर बाल ज्याद हो तो बेशक चोर, फरेबी भी बने फिर भी बदनसीब और मन्दा हाल खुद अपना व औलाद का हो । **बुध का उपाय मददगार होगा ।** लगातार *100* दिन तक ऐसे व्यक्ति में पिता या सूर्य के असर का नेक निशान का नाम तभ भी न होगा । बच्चे खाने वाला साँप होगा परन्तु निर्धन भी होगा, चोर फरेबी फिर भी तंगहाल, भोला बादशाह होगा । दिमागी खाना नं० 15 वृहस्पति से साझाँ खुददारी, हमेशा बीमारी का आम झगडा होवे।

शनि नं० 5 वृहस्पति नं० 9 हो तो अक्सर बृहस्पति में लिखा हैं इसका का

प्रभाव ओर वक्त खाना नं०5 के ग्रह (शनि) के दौरा से शुरू होए । नेक और उत्तम प्रभाव होगा । धन दौलत के लिए अगर औलाद के लिए मन्दा ही लेंगे ।

शनि खाना नम्बर 6 (राशि फल का)

कौआ, राहू (काला कुत्ता) का उपाय सहायक होगा , वास्ते जहमत बीमारी । बुध का उपाय कारोबार के लिये मदद करे या मवेशियों की मदद के लिए बकरी मुबारिक होगी ।

शनि दुजे नेक था छठे हुआ बदनाम-शुक्र केतू भी मरे सब मन्दे इसके काम,
पापी मन्दे पाप तक उम्र 42 हो,
किस्मत पाये वा पाप की चाहे रवि भी 12 हो

24 साल लड़के पैदा हो जबकि शादी 28 साल के बाद हो

हस्त कार्य में निपुण, बुद्धिमान, पिता पर थोड़ ज्यादा ही होगा। भाड़ा पुत्त खोए पैसा फिर भी कभी न कभी आ ही जाएगा ऐसा होगा। और जमाना की सब स्याही धो देगा । (खोटा सिक्का कभी ऐसा चल जाए कि खरा भी मात खा जाए) जबकि राहू वर्ष फल में ऊँच घर (36) आ जाए । अगर शादी 28 से पहले ही हो तो शनि बुध की अवधि तक माता व औलाद सब सफा चट कर देगा। मगर ला औलादी का हुक्म नहीं लगा देगा । केतू (औलाद) की बर्बादी को रोकने हो तो शनि गाए , स्त्री और माता धन पर भी बुरा हाल करेगा । खोटे काम करने वाला नहीं तो केतू के प्रभाव में 24 साल लड़के पैदा हो या वर्षफल के हिसाब से शनि के लिए नेक स्थापित किए हुए घरों में आ जाए तो वृहस्पति का प्रभाव उत्तम देगा और लड़कियों कि जगह लड़के वही चन्द्र (माता) की अवधि तक 24 साल होंगे । केतू से साझाँ दिमागी खाना नं० 16 समय का मालिक होगा। धन और धन श्रेष्ठ रेखा का जरूर साथ होगा । सिर रेखा या मातृ रेखा के ऊपर और दिल रेखा के नीचे या दिल और सिर रेखा की और सें शनि सूर्य के पवर्तो के नीचे हो तो ऐसा आदमी हर काम खुफिया रखने की शक्ति वाला होगा । **जिसकी मौत सिर कटने से होगी।** जबकि यह त्रिशुल सिर्फ सिर रेखा पर होगा। कारोबार के लिए यह निशान जो सिर रेखा पर वाक्या हो और अपनी दोनों शाखो से सूर्य ओर शनि की मिलाता हो, जिन्दगी में सूर्य और शनि का मिलाता हो, जिन्दगी में बिलकुल अजीब तबदीली देगा यानि सूर्य की तरह चमकता हुआ भी शनि के स्याह भूत के समान हो जाए । दौलत का तख्त मुसीबत के वक्त में बदल जाए । सोने के थाल की जगह मिट्टी के तवे घर रोटी पकाने के हो जाए । लेकिन अगर दस उम्र यानि 35 और 42 के बीच काई ऐसी औलाद लड़का घर में होए जो मस्त मंलग या बिल्कुल बुद्धु मौजी हो जिसकी आंखे शनि खराब और जिस्म सूर्य मन्दा सा होए तो दस लड़के में शनि ओर सूर्य दोनों का साझाँ प्रभाव होगा जो अपनी नौ साला 18 साल और आखिर 36 साल में वही सोने का तख्त

बना देगा । अक्सर ऐसा लड़का तमाम तकलीफ से बच जाया करता हैं ओर खुद मुसीबत अपने आप पर गुजारा करता हैं ।

शनि नं० 6 बुध नं० 2 दुष्टि खाली हो तो शनि (सांप) गाए को मारे गऊ का विघन फौरा मर जाना होगा ।

शनि नं० 6 बुध नं० 12 हो तो शनि के तमाम फल का बुध बर्बाद करें बेइतवारी, मन्द काम बुध के हाल लिखा है ।

शनि नं० 6 सूर्य नं० 12 हो तो दोनों ग्रहो की दुश्मनी से अब शुक्र (औरत) पर कोई बुरा असर न होगा ।

शनि नं० 6 केतू नं० 10 हो तो समान चौसर चौपट साहब इकबाल खिलाड़ी होगा

शनि खाना नम्बर 7 (ऊँच) दरिन्दे,

स्याह गाए सुरमा सफेद, बिनाई, रियाजी, स्याह अनाज, लाल या
सफेद व लाल गाए से शुक्र का प्रभाव मन्दा
मगर स्याह व स्याह दो रंगी गाए बुरा असर न देगी ।

शनि हो सातवें सात गुणा -धनी हो दौलतमन्द,
जर पाए वो राज से हो खर्चा लड़की पांच
परिवार बढ़े दौलत बढ़े बढ़ेंगे शुक्र साथ,
शुक्र औरत जिस दिन खत्म हो शनि होगा चुपचाप,
शत्रु ग्रह 3,5 में आवे - सेहत पन्दी और पिता जलावें
साथी या मुश्तरका होवें-शनि हो मन्दा खुद भी रोवें ।
सूरज अगर हो चौथे बैठा - हीजड़ा बुजदिल होता हैं
अन्धराता चाहे आधा आधा - टेवा ऐसा होता हैं ।

अगर मंगल नेक हो तो जायदाद जल्दी (विरास्त) तो बेशक इतनी ही न होगी, मगर मासिक आमदन हजारों रूपयों की होगी । हुक्मरान दौलतमन्द अक्लमन्द आंख की होशियारी का साथ होगा । दौलत की आमद 24 साल कतरे कतरे से अम्बार करेगा , परापकारी ताक धन कारनामद वरना दुष्ट भाग्यवान होगा। स्याह खाना से ऊँचा पहाड़ और कीड़े से मगरमच्छ होगा । मगर धन का दुसरा दर्जा होगा या आखिर दिन करते ही चल जाएगा । अधिक माया होगी । जब शराबखोरी का दिलदाह (शौकीन) हो **मकान की दहलीज पुरानी लकड़ी की हो और जन्म से पहले की जो लगी हो कायम रहे तो शनि नं० 7 का नेक फल कायम रहेगा** नहीं तो शनि नं० 1 का फल देगा । अगर मंगल बद कुण्डली में हो तो शनि 39 साल उम्र तक बनाने की बजाए उजाड़कर तबाह कर देगा । हथियार का डर **27 साला उम्र तक जिसका इलाज बंसरी स्याह को खांड से भर कर जमीन में दबाना शुभ होगा ।** धनवान डाक्टर व हकीम होगा । चाहे पैसा जरुर हो इसके साथ वाकमाल इन्जीनियर भी हो सकता हैं । अगर शनि

सोया हुआ होवे और अपना तमाम ही दौरा सोया रहे तो पोते के जन्म दिन से सब कुछ की काल माया या वीराना होवें , **जिसका उपाय बजरिया मंगल या शहद शनि को जगाना होगा ।** आंख की पुतली से काला पहाड़ कर देता हैं और पहाड़ का पुतली बना देता हैं, मगरमच्छ भी बन जाता हैं और मछली अमीर कबीर (बड़ा अमीर) साहब उत्तम दर्जे का एवं (बहुत जायदाद) **आंख के इशारे से दौलत पैदा करने वाला दुष्ट भाग्यवान होगा ।** थोडा़ बोलने वाला, मतलब परस्त, आख की चालाकी व होशियारी चाहे अक्ल का अन्धा व गांठ का पूरा होगा । **शुक्र की चीजों का उत्तम फल बशर्ते कि परोपकारी हो । वरना औरत उम्र भर बीमार रहे । बुध की चीजों के लिए बुध का दोस्ताना फल होगा** बशर्ते के दस्तकर हुनरमन्द, परोपकारी हो वरना चोर राहजन, फरेबी होगा अगर दो त्रिशुल हो यानि टेवें में एक असल शनि दूसरा मशनोई हो तो कम नसीब होगा। सिर रेखा पर : विसर्ग हो तो आंख्र खराब हो सिर रेखा पर त्रिशुल हो तो सिर कटने से मौत हो। बहालत मजमोई राजदरबार से आसूदा हाल और वा इज्जत होगा । मगर स्वयं इश्क से बेइज्जत होगा । नहीं तो सब की आंख में मिटटी डाली और अगर बद हुआ तो खुद अपनी आंख में मिटटी डाली । अंगुठे की जड़ में स्त्री भाग में त्रिशुल हो वह इस पर्वत पर शुभ होगा । मगर मन्दा आशिक बेगर्ज होगा । जद्दी मकान में यम गढा़ हुआ पत्थर सबूत होगा ।

शनि की अपनी रेखा या उम्र रेखा :-

यह शनि की रेखा या दोनों जहानों में फर्क की आंख की तरह की ताकत की लहर है या वो चीज हैं जिससे इन्सान की हस्ती में फर्क मालूम होता हैं । शनि मीन राशि नं० 12 मालिक हैं जिसे मच्छली माना हैं जिस तरह मच्छली पानी के बगैर नहीं रह सकती उसी तरह ही इन्सान उम्र के दरिया के बिना शनि के मगरमच्छ की ताकत का दम नहीं मार सकता । दरिया से छोटी छोटी शाखें अगर दरिया की रवानी की तरफ (चलने की तरफ) निकल भागें तो चाहे इनमें दरिया के पानी की रवानी न होगी । नहीं तो फिर भी दरिया कभी न कभी उनमें थोडा बहुत पानी जब कभी इसमें पानी का जोर हो छोंड ही जाएगा । पिछली तरफ की निकली हुई शाख या नालियों में बराबर पानी का आना नही गिना जा सकता यानि उससे पहले पहले पैदा शुदा उसके बुजुर्ग चाहे दौलतमन्द हो या न हो मगर खुद वो व्यक्ति अवश्य दौलतमन्द होगा और उम्र लम्बी होगी । इसके बाद रहने वाले बेशक उस जैसे हो या न हों । दिमागी खाना नं० 7 शुक्र से साझाँ ऊँच शनि का फल जिन्दगी बढ़ाने की इच्छा (तरक्की से मुराद हैं लम्बी उम्र का मतलब नहीं)

शनि नं० 7 दुश्मन ग्रह नं० 7 हो तो शनि के पर्वत से अगर कोई शाख उम्र रेखा को काट ही दे तो मौत दूर होगी । बीमारीयों (शुक्र) मिट्टी की शरीरक मंगल –खून से सम्बंधित होगा चाहे दिल से सम्बंध रखे ।

शनि नं० 7 सूर्य नं० 4 हो तो अन्धराता वाला टैवा होगा ।

शनि नं० 7 मय दोस्त ग्रह नं० 7 हों तो जब उम्र रेखा से कोई शाख शनि की तरफ शनि के पर्वत की तरफ निकले तो ऐसी शाख से किसी दूसरे उम्र के साथी की परवरिश से मुराद होगी यह इस शाख की लम्बाई उम्र के अवधि तक जिन्दगी और कमाई दूसरों के लिए होगी ।

उम्र रेखा में जंजीर हो तो बीमारी, मंगलबद—सुर्ख रंग निशान कमजोरी जिस्मानी (सूर्य) जर्द रंग निशान—कुदरती कमजोंरी (वृहस्पति) नीला रंग निशानी —हसद व कीना (राहू) सफेद रंग निशान —सिर और आंखो की बिमारीयां (चन्द्र)

शनि नं० 7 बुध नं० 3 हो तो पिता की जिन्दगी व दौलत खतरा में होगी ।

शनि खाना नम्बर 8 (पक्का हैडक्वाटर)

बिच्छु माल का घर कनपटी पुटपडी

शनि हैं आठवें हैडक्वाटर-घर तो मंगल ही का हैं
जैसा मंगल हो शनि भी असर वैसा ही दो का हैं
एक अकेला आठवें होवे -खुद कभी न मन्दा हो
मन्दा होगा मंगल से या चन्द्र भी वहां बैठा हो

अकेले शनि का अब शनि की चीजों पर कभी मन्दा फल न होगा **चन्द्र का उपाय करने से पता चलेगा** कि शनि जो अपने हैडक्वाटर में बैठा हैं किस नियत और तबीयत का हैं । कनपटी और पटपडी भी बात का फैसला करेगी छाती पर ज्यादा बाल हो तो उम्र भर गुलामी में रहे ।

कनपटी या पटपड़ी शनि का हैडक्वाटर खाना नं० 8 होगा । हर तरह का डर भय, नुकसान और मौत का घर हो यानि किस्मत की हाद और मौतो का आम सम्बंध होवे । जहमत बीमारी, मौत का सबक , बुढापे में नजर की धोखा हो । दिमागी खाना नं० 14 तकव्वर खुद पसन्दी होगी अकेला शनि या मंगल या चन्द्र इस घर में कभी बुरा फल न देगा । साझीं होने पर बुरा फल देगा ।

शनि खाना नम्बर 9 (राशि फल का)

आक (मदार) का पेड़ टाहली, फालही, चाहे व
पुरानी किस्म की लकड़ी, **वृहस्पति क उपाय सहायक होगा ।**

त्यागी गुरू नौवे शनि सब से बली है - सिर्फ बुध से डरता हैं
बुरा वहां वो कभी न करता - तीन पुस्त तक चलता है ।
60 साल तो उम्दा होगा बल्कि उम्र हो सारी ही,
शर्त वृहस्पति इतनी करता होवे परोपकारी भी
(नोटः- वृहस्पति=खाना नं0 9 का अलग)
मंगल गर हो चौथे बैठा शनि जलावे नौवे को
फूंक फूंक कर दुनिया सारी खुद प्लेगी चूहा हो।

मकानों व मुसाफिरी के सामान की तहलीम देने में कामयाव मर्द होगा हमदर्द व सखी होगा घार में घड़ा हुआ पत्थर उम्दा उत्तम और किस्मत का सबूत होगा। अब चन्द्र की खाना नं 3 की दृष्टि का न कोई बुरा प्रभाव होगा मगर राज दरबार के पहाड़ पर कछुवे की चाल चढ़ने वाला होगा। अगर पैशानी या पुस्त पर ज्यादा बाल हो तो मन्द भाग्य होगा। अगर खुद बदला लेना वरना औलाद को बदला लेने की नसीहत करके मरने वाला हो तो बुरा व्यक्ति व मन की दलीलें होगी। घुमता पत्थर (रोलिंग स्टोन) होगा जब शनि बाहैसियत पापी ग्रह बड़ा होवे। जिसका सबूत राहू केतू का किसी न किसी तरह से आ मिलने का होगा। बहरहाल भारी कबीला व जायदादों का मालिक होगा। स्त्री भाग्य (शुक्र)में हर तरह से उत्तम मगर चन्द्र (माता)भाग्य में मन्दा असर देगा। जिसके लिए भी **वृहस्पति का उपाय मददगार होगा वा माता पिता के बैठे** (जो अममून लम्बी उम्र के होते हैं)न कभी मन्दा हाल होगा। मगर बाद गढ़े पत्थर का सहारा जरूर का आमद होगा वरना सांप की तरह उसे हर एक लकड़ी से मार देने को तैयार होगा। गो जाखिर पर न किसी की जेर बार होगा। शनि नं 9 को नं 3 से दुश्मन ग्रह देखता हो और उधर मकान अन्धेरे की पिछली दीवार तोड़ कर रोशनी हो जावे तो खुलने के पहले साल पिछली तरफ के मकान में से नए निकाले दरवाजे या खिड़की की तरफ से तीसरा मकान बरबाद और तबाह होगा। **ऐसे व्यक्ति को बगैर तख्तों के सिर्फ खाली चौकाठ घर में खास कर छत्त पर रखना स्त्री व लक्ष्मी के लिए मन्दभाग्य होगा** खाना नं 9 राशि फल में वृहस्पति का उपाय त्यागी गुरू की तरह सहायता देगा साठवें साल शुभ (*60* में साल शुरू तो *60* साल ही शुभ फल देगा) हमदर्द सखी हो। मगर 14 साल फिक व गम में रहे। जब शुक्र खाना नं का दिया हुआ फल देगा लेकिन जब शनि नम्बर नौ (9) में हो तो शुक्र चाहे कहीं ही बैठा हो शुक्र नं 2 का दिया हुआ फल देगा। दिमागी खाना नं 9 बदला लेने की ताकत शनि सिर्फ 1 दरम्यानी में और शुक्र की तरफ मुबारिक चन्द्र की तरह खराब।

शनि नं0 9 शुक्र नं0 3 हो तो उन्नित रेखा का दूसरा नाम पितृ रेखा है जबकि इसकी समाप्ति चन्द्रमा के पर्वत पर हो उम्र रेखा का शुरू वृहस्पति की जड़ से ही होता है जो पिता का मुकाम है चन्द्र माता का मुकाम है वृहस्पति को हवा का मुकाम गिना है और हवा की नाली होने की वजह से इस रेखा को उम्र रेखा या पितृ रेखा कहा है।

शनि नं 9/11 शुक्र नं 7 हो तो रफाए आपके फायदे और आराम की पूरी शक्ति और नेक असर, खुद भी आराम पाए।

शनि नं0 9 वृहस्पति नं0 5 हो तो बृहस्पति के वक्त किस्मत असर देवे। शनि वृहस्पति साझों में मुफसिल है अब औलाद का हाल मन्दा न होगा।

शनि नं० 9, 11 मंगल नं 3 हो तो प्राकृतिक की तरफ से कोई बुरा वाक्या मौत वगैरह दु:ख देने वाला न होगा। मंगल शनि का नेक प्रभाव होगा।

शनि नं0 9 चन्द्र नं0 4 हो तो मां बाप दोनों की तरफ से हर तरह से अच्छी किस्मत और भला लोग होगा।

शनि नं0 9, 11 बुध नं0 6 हो तो औरत अमीर खानदान से और खुश किस्मत होवे।

शनि नं0 9 मंगल नं0 4 हो तो औलाद के विघ्न, मामों के ससुराल सबको खा पी कर बर्बाद कर जाए, मगर खुद अपनी जददी हालत अच्छी रहे मौतों का तो प्लेगी चुहा होगा।

शनि नं0 9 वृहस्पति नं0 10 हो तो आग की घटनायें हो ***वृहस्पति की चीजें (सोना, हवा पीला रंग और चन्द्र की चीजें, चांदी बजाजी) और वृहस्पति के कामों से लाभ*** *मगर शनि की चीजों और शनि से सम्बंधित काम मन्दा फल दे।*

शनि नं0 9, 11 सूर्य नं0 5 हो तो दूसरों से हमदर्दी, माता-पिता की आपसी नेक व्यवहार अब सूर्य और शनि का कोई आपसी झगड़ा न होगा।

शनि नं0 9 वृहस्पति नं0 12 हो तो चाहे माया ज्यादा हो मगर माया पर पैशाव की धार मारने वाला होगा।

शनि खाना नम्बर 10 (पक्का घर का)

ग्रह फल का, किस्मत को जगाने वाला मगरमच्छ

सांप (शनि) के जाती असर का घर

दसवें शनि हो जब आ बैठा शेष नाग सिंहासन हो
नजर ग्रह कुल की का मालिक उम्र बढ़ाता पिता की हो
वृहस्पति की करवाएं सेवा दुनिया गुरू को पूजेगी,
राज सभा सब शादी अन्दर पहले गणपति मानेगी।
खुद शनि उत्तम होगा धन दौलत शाहाना हो
हथियारों से हत्या करनी वर्ष 27 मन्दे हो

जन्म कुण्डली में खाना नं0 10 का शनि नीचे लिखे सालों में चारों तरफ मार करता है और शनि वृहस्पति साँझे फकीर की होली का प्रभाव देगा जिसका फैसला खाना नं0 11 के ग्रह करेंगे और कुण्डली में विशेष ही होगी। 3, 9, 15, 21, 27, 33, 39, 45, 51, 57, 63, 69, 75, 81, 87, 93, 99, *105,* 111, 117 एक जमा केवल 1० या दसवां द्वार आखिरी मैदान सब की किस्मत गणेश जी की तरह उत्तम फल देगा। पिता का कम से कम 48, 24 साल उम्र तक साथ होगा चारों तरफ को मुड़ जाए सब ग्रहों की नजर का मालिक होगा। शनि समान पेड़ जायदाद का मालिक होगा। उम्र 90 साल लम्बी होगी । शनि नं० 10, 3 वाला शनि के सम्बंधित कार्यों में किस्मत के नेक असर का मालिक होगा अमीरों से

अमीर हो। अगर खाना नं० 4 में मन्दे या शनि के दुश्मन ग्रह हों तो 27 साल हथियार का खौफ हो। कर्म, मक्कारी, आंख की होशियारी से धन दौलत का भण्डारी, मंगल नेक की तबीयत से बिल्कुल ऐसा होगा, जादू मन्त्र की शक्ति वाला, आंखों से ही कान का काम लेने वाला (काला सांप) उत्तम हालत में सब पर प्रबल होने वाला, ईट पत्थर व सामान मकान का सम्बंध, जहरीले जानवरों और दरिन्दे और परिन्दे पर प्रबल, माता-पिता की उम्र, इस घर में शनि के असर के समय सूर्य (साल) चन्द्र (8 साल) मंगल (9 साल) अपने-अपने अवधि में शनि को 1/3 जाया करेंगे। केतू का (24 साल) का इसके अपनी अवधि का 1/2 होगा, बाकी अपने अपनी पूरी अवधि सूर्य, चन्द्र मंगल शत्रुता का प्रभाव देंगे। यह शनि का अपना घर है। अक्लमन्द तो साहब तदवीर अगर उल्ट हुआ तो मन्दा, बदनसीब नुर दर्द मौत हो, शनि का कोई भरोसा नहीं। इसका निशान त्रिशूल-1- **उदाहरणतयः**- चारों तरफ मार करता है चारों तरफ देखता है (एक त्रिशूल हो तो जादू मन्त्र में निपुण और अगर दो हो तो साहब तदबीर होगा। मन्दा एवं ऊंचे दर्जे में हफते के आखिर, अगर नेकी की तरफ मुड़ जाए यानि -1- के किनारे मुड़ जाएं यानि एक हो जाए तो गणेश जी की शक्ल सब से उत्तम होगी। केवल की और एक की जमा 1 + ० नं० का खाना सब की किस्मत का घर है भी माना है यानि खाना नं० 3 इन्सानी जिस्म की नाभि खाना नं० 4 आंख की पुतली को देखने वाली चीज माना गया है जो दुनिया और मौत दोनों का है जिसका मालिक शनि है यानि **यदि टेवे में खाना नं०10 रद्दी हो रहा हो तो वो टेवा अन्धे ग्रहों का होगा** यद्यपि सभी ग्रह एवं शनि खुद भी ऊंच घरों के हों। अन्धे की तरह अपना फल देंगे। दिमागी खाना नं० 13 शनि का जाती असर दूर अन्देश, होशियारी का मालिक होगा। कुण्डली वाले का बाप कुण्डली वाले की कम से कम 39 साल उम्र तक जिन्दा रहेगा।)

शनि नं० 10 बुध नं० 8 में हो तो औरत अमीर खानदान से और खुश किस्मत होगी।

शनि नं० वृहस्पति नं० 4 चन्द्र नं०। हो तो हर किस्म की सवारी का सुख व फायदा हो।

शनि खाना नम्बर 11 (घर का)

ग्रह फल को लोहा, बाहैसियत हल्फ उठाए हुए सिर्फ राहू (ससुराल) केतू (औलाद) के कामों या किस्मत के नतीजों की किस्मत का मालिक।

ग्यारह शनि है बैठा वृहस्पति के दरबार
हल्फ गुरु से पहले लेवे-फैसला हो दरबार
शनि अब याद करके - दूध अपनी माता का,
खुद तारे सब को तो तारे जहर है नहीं उगता

राहू केतू जैसे टेवे हों फैसला उन पर करे
तारे चाहे वो मारें मर्जी नाग रक्षा ही करे
अवधि ऐसी इनकी होगी साल 48 की तक
स्वयं शनि फिर मदद देगा-साल 34 ही तक
ग्रह उत्तम कोवो बढ़ा कर जल्दी जल्दी खुद बढ़े,
सिर्फ बुध से वो डरता तो न हो घर तीसरा
शनि ग्यारह खड़ाघड़ा है बुध मगर उल्टा कच्चा घड़ा
सिर्फ इतना ही नहीं बुध घुमता कच्चा छड़ा
शनि वृहस्पति ग्याहर राशि बुध से दोनों चलते हैं
बुध दबाया हो या मन्दा दोनों निष्फल जाते हैं।

अगर मूंछ दाढ़ी के बाल कम हों तो खुद पैदा करती जायदाद न होगी तो केतू (औलाद) की आय नष्ट होगी। दृष्टि खाना नं-3 यदि खाली हो तो शनि सोया हुआ होगा। भरा हुआ पानी का घड़ा तो किस्मत का बेशक होवे मगर बरताना तो गुरू वृहस्पति को ही होगा यानि इसकी किस्मत का फैसला वृहस्पति के हाथ होगा। अगर वृहस्पति भी निकम्मा हो या बाप, बुजुर्ग गुरू या पीर ना साल बूढ़ा कोई साथी न हो तो वृहस्पति का उपाय सहायक होगा। खाना नं 3 का ग्रह किस्मत को जगाने वाला होगा। जिसके जरिया वो होशियार आंख और दोखे से धन कमाने। आराम परस्त, शराब खोरी से शनि का नेक प्रभाव मन्दा होगा। **चन्द्र की मदद या पूजना से (चांदी की ईट) उत्तम धनाढय होगा।** शनि नं 11 में वृहस्पति के साथ किसी भी घर में हो तो ऐसा टेवा धर्मी होगा। जिसमें पापी ग्रहों का बुरा असर न होगा बल्कि बाकी ग्रह भी धर्मी होंगे पानी का भरा घड़ा, शनि खाना नं 11 में दृष्टिखाली यानि जब या जिसका शनि नं 11 में हो तो ऐसे शख्स को शुभ काम करने के वक्त पानी का भरा हुआ घड़ा कच्चा बरतन बतौर कुम्भ निहायत शुभ होगा। शनि उत्तम आंख दौलतमन्द फरेब से धन कमाए। 24 साल धन दौलत जायदाद की खूब आमद व फायदा मगर अधिक जनाकार हो। दिमागी खाना नं 11 शनि का जाती असर जखीरा जमा करने की ताकत व आदल।

शनि नं0 11 चन्द्र नं0 6 सूर्य मंगल नं0 10 हो तो भाग्यवान हो।
शनि नं0 10 चन्द नं0 2 सूर्य नं0 1 हो तो अति उत्तम साहब ,जायदाद हो
शनि नं0 11 बुध नं0 3 सूर्य नं0 9 हो तो शनि व सूर्य दोनों का रददी

बुरी आयु बुध दोनों ग्रहों को बेबकूफ बना देवें। बुध का चक्र, सिर का चक्र, समय का चक्र, कुम्हार का चक्र मिटटी को ऐसा घुमा देगा कि सांप और हवा दोनों को गोल दायरा में रखता होगा।

शनि खाना नम्बर 12 (गृहस्थी परिवार)

मशनोई तांबा, मच्छली, तख्त-पोश,बादाम सिर पर टटरी, जमीन में लाल फूल दबाना (जब सूर्य नं0 में हो) शुभ होगा।

शनि बैठा जब घर का 12 राहू केतू नहीं बोलते हैं
कागज इन्होंने हुए है फर्जी मदद बुध की टूटते हैं
बुध चाहे अब हो कहीं ही बैठा बैठता चुप चुपाता है
शेषनाग प्रबल है बैठा खेलता वो परिवार में हैं।
खेल तमाशा उम्दा होवे अन्धेरा जब तक न घटे,
सूर्य बैठे न आ टेवे न पिछली दीवार फटे
मच्छ महावन दोनों रेखा पदम छुपा भी पाया हो
झूठ शराबी गर वो होवे प्रभाव शनि का जाया हो

हस्ती साथी (गृहस्थी साथी) कीड़ों के भून की तरह बेहद कबीला बन जाएंगे और अपनी अपनी खुराक साथ लाएंगे। सिर पर टटहरी हो तो दौलतमन्द जरूर होगा। **जब तक सूर्य नं 6 में न हो कोई उपाय जरूरी न होगा।** अगर अन्धेरा हटा कर (पिछली अन्धेरी कोठरी जो मकान में दाखिल होते समय दांए हाथ को तरफ की पूरी स्याह होती है आखिर पर) रोशनी हो चुकी हो तो **मकान इस मकान के पश्चिम पूर्व कोने में (मकान कुण्डली खाना नं 12) बदाम जमीन में दबाना शनि को कायम रहने में सहायता देगा। सबसे अच्छा तो वही है कि पिछली दांई कोठरी को पूरी अन्धेरा स्याह ही रेखा जाए।** शनि समान त्रिशूल जिन्दगी अच्छी गुजारे, व्यापारी, साहब कमाल मगर 15 साल झगड़े में हार या हानि होवे। शनि का बेहद तबेला सिर्फ संख्या में सदस्य होवे दिमागी खाना नं 12 राहू से साझाँ राजदारी अपना भेद छिपाए रखना और दोखा करने का आदि और सक्षम होगा।

शनि नं0 12 सूर्य नं0 6 हो तो औरत पर औरत मरती जाए (राहू शनि चन्द्र नं0 12) स्त्रियों (माता, औरत, नानी, सांस आदि)का सुख हल्का चन्द्र चुप होगा।
शनि राहू, वृहस्पति नं0 12 मर्दो का सुख हलका वृहस्पति चुप होगा।
शनि नं0 12 राहू नं0 3, 6 केतू नं0 9, 12 हो तो मच्छ रेखा होगी।

****

राहू

रहनुमाए गरीबां मुसाफिरां

श्री सरस्वती जी राहू आसमान की चोटी और समुन्द्र की तह दोनों नीले रंग मिला देने वाल, मस्त हाथी जिन्दा (नीच)कीमत एक लाख, मुर्दा (ऊंच) सवा लाख जिसका कोई रंग न हो या जो हर एक रंग में बदल सके, नक्शे में नीला रंग होगा।

बुखार न उतरने की दशा में राहू की पक्की शाम, सूर्य डूबने से 1/2 घंटा बाद ***जौं और गुड़ दान 3 दिन सिर्फ।***

राहू मालिक है लहर दिमागी बिजली कड़क भी होता है

रंग शाम या नीला इसका काम चमक के करता है
शनि मंगल का हाथी होवे पदम शरम भी बनता है
चन्द्र को यह मध्यम कर तो ग्रहण सूर्य का होता है।
गुरू के साथ धुआं हो तीखा बुध को उड़ता करता है
रहे शुक्र का शत्रु हरदम सरदार केतू हो चलता है।
भूंचाल आतशी जिस दम होवे खून अचानक करता है,
गर्मी सूर्य से और भी बढ़ता ठण्डा चन्द्र से होता है
हड्डियां पुस्त या सीना मर्द का हाथी के नाखून होता है
आंख चश्म आवाज हो हाथी फैसला कुन वो हो है
शमशान (8) बैठे, आराम (12) पर उड़ता ऊंच पाताल (6) में होता है
मंगल कुण्डली बैठे 12 खत्म राहू हो जाता है
असल बैठक गुरू मन्दिर (2)होवे ग्यारह गुरू को मारता है
सूर्य को घर पांचवें तारे कसम पाप चौथे करता है

एक राहू की मदद के वक्त कुल दुनिया ही के शत्रुओं की परवाह नहीं शनि समाप्त मगर शनि की रात के शुरू का वक्त या शाम के बाद का अन्धेरा मगर रात से पहले जमीन के नीचे आतश, बिना सिर वाला का साया या दिमाग में नकल पैदा होने की लहर व्यक्तियों की तरफ ले जाने की शक्ति स्याह रंग हाथी के समान ताकत का जोर नीला रंग आसमानी और समुन्द्री नीला, हर पर्वत की शक्ति गुम या मध्यम करने वाला ग्रह राहू माना गया है। इस पवर्तो के साथ साथ पर कहीं निश्चित जगह नहीं मिली और न ही यह रास्तों में अलग राशि का मालिक हुआ वृहस्पति की राशि मीन नं 12 में इसका निवास गिना गया है जिसे मच्छली गिना है यानि नीले समुन्द्र की मच्छली जो शनि या मगरमच्छ की सन्यास की अंगुली पर अपना घर रखती है या जिसमें कुल जमाना ही हवा या वृहस्पति भी रहता है, जा बैठा है और मच्छली मगरमच्छ और हाथी की ताकतों का जोड़ है। वास्तव में लिस चीज का कोई रंग न हो नीला रंग दिया जाता है। नक्शा में समुन्द्र का रंग, जिसकी गहराई में है, नीला माना है और आकाश भी जब हर तरह से साफ हो नीला नजर आता है। **दहीं (शुक्र) और दूध (चन्द्र) की रंगत** में भी यही अन्तर है। दूध का रंग सफेद होगा, मगर दही की सफेदी में नील चाहे शामिल होगी। चोट लगने पर खून जम लाए नीला निशान होगा। यह रंग हर रंग पर चढ़ जाता है ओर सिर्फ शनि का स्याह रंग ही इसको छुपा सकता है। शनि लोहे के स्याह रंग व राहू पूरे स्याह (बहुत स्याह)रंग में माना है। जिस्म के हिस्सों में दिमाग में नकल व हरकत की ताकत माना है एवं इसके के नाम से भी याद होता है। चलती गाड़ी में काम रोकना मासूम बेगुनाह को गुनाहगार ठहरा कर सजा के मातम के कच्चा धुआं पैदा करना इसका काम है बैठे बैठे किसी के खुन करने का विचार पैदा कर देना या दिल में अचानक किसी बात की पुनः (भासरना)स्वयं

बिना सोच व किसी के बताए आ जाना इसका करिश्मा है। शनि के साथ बैठा सांप को मणिका काम देता है। **सांप की जहर चूसने का मनका स्वयं उड़ कर जहर के पास जा कर जहर को चूस कर अपने आप में मिला लेता है** और जहर आलोदह को बरी कर देता है ऐसा सांप इच्छाधारी और हर जगह मदद करने वाला सांप होता हो और सांप के लिए यह मणि उसे अंधेरे में रोशनी का काम देती है। शनि के लोहे के साथ यह चमक पत्थर काम करता है खुद तो अपनी जगह से नहीं हिलता लोहे को अपनी तरफ खींचता है धातुओं के अन्दर वह जंगार या जंग बन जाता है जब सूर्य से मिला तो सूर्य ग्रहण या पाप का अंधेरा इसकी रोशनी के सामने कर देता है बृहस्पति को पीतल किया तो नीले रंग के जंग में देखा गया चन्द्र के दूध में नीला रंग होने पर वो शुक्र का वही हुआ। बुध के हीरे में सब को काट देने की हिम्मत दी मगर ख़ुद बुध के हीरे को इसकी मामूली सी नर्म चीजकली से कटवा दिया। मंगल के शेर को नींद से सुलाए रखा। केतू के कुत्ते के दांतों के रास्ते उसके पागलपन के मादे से दूसरों को भी पागल किया। इन्सान को खुद हसब ने जला दिया जहां सांप को मणि की हालत में मिला उसके जहर चूसने का दोस्त बना तो उसे दूसरी तरफ डर भय देकर दुनिया को बचाया। किस्सा को ताह यह अपने घर में आम साधारण हालत या घर का भी है और नीच भी हे बुध के साथ या अच्छे से ऊंच होता है या आकाश में खुले मैदान होने की वजह से राहू का आसमान जमीन में भूचाल भी है। शनि के पत्थर के पहाड़ों की तह में आतिश खोज मादा की जहर भी है। हाथी का सूंड तो दरिया में इसी हाथी के बक्त से तेन्दूए का जाल भी है। बुध का दोस्त तो जबान (बुध)का तेन्दूआ भी है। मामूली दिमागों में नकल व हरकत की लहर लाल तो शेरों (बहादुरों)को सुलाता भी है। राशियों में सबसे आखिरी राशि नं 12 संभाल कर बात का आखिर भी हो जाता है। अगर सिर उल्टी खोपड़ी (दिमाग का खाना नं 3 केतू से साझाँ प्यार या माता-पिता की मुहब्बत जिसका वर्णन शुक्र के खानों में है इसकी ऊंच हालत है तो टट्टी या पाखाना के रास्ते का मुंह गुदा इसका रास्ता केतू से साझाँ केतू के बराबर का होने की हालत हो । मन्दी हालत का राहू। अगर राहू किसी ऐसे घर में बैठा हो जहां कि इसका मन्दा फल गिना है तो उस व्यक्ति को दक्षिण) के दरवाजे वाले मकान की रिहाईश से बचना चाहिए वरना इसका हाथी भी चींटी से मरेगा और खाली नुकसान होंगे और बार-बार होगा । ऐसी हालत में दहलीज की पूजना शुभ होगी यानि अगर हो सके दहलीज के बराबर (तमाम दहलीज की लम्बाई) और **दहलीज के नीचे चांदी की (चन्द्र की चीजें पीतल का दूध भरा बरतन जिसमें चावल चांदी भी हो) पतरी लगाई जाए तो शन्ति** होगी जिस तरह जमीन के अन्दर एक आतशी लहर है उसी तरह ही इन्सानी जिस्म में यह एक बुखार की हालत में होता हैं **जिसका इलाज (हर समय**

बुखार) जो गुड़ मिला कर शाम के वक्त दान करें, मगर ऐसा उपाय तीन दिन से ज्यादा लगातार नहीं किया जाएगा क्योंकि तीन दफा चलाने पर यह **खाना न०3 में हो तो राहू कुण्डली में मन्दा फल न देगा ।** जिस कुण्डली में सूर्य शनि साझाँ होकर किसी ऐसे घर में बैठे हो जहां कि सूर्य या शनि का मन्दा प्रभाव हो ता राहू सूर्य की 22 साल उम्र या शनि की 36 साल उम्र तक नीच और मंगल बद होगा, चाहे वो किसी भी घर में बैठा हो । मंगल नं० 12 में होंते ए या जिस टेवे में मंगल नेक कायम या उम्दा भी या जब वह बुध के साथ , साथी या साझाँ हो कभी बुराई न करेगा । हमेशा केतू के उल्ट और मंगल नेक के दौरा के वक्त चुपचाप होगा । दिमाग (बुध) का नकल व हरकत में चला जाएगा। मगर चन्द्र को नीच और सूर्य ग्रहण देंगा , अक्सर ग्रह यह खुद न मारेगा । मगर मरने या पारने की हालत या रास्ता पैदा कर देगा यानि स्वयं परसा चलाने वाला मगर परसे (कुल्हाड़े) का साथ होगा ।

मशनोई ग्रहः- मंगल शनि (ऊँच) राहू सूर्य-शनि-नीच राहू वा मंगलबद होगा , राहू के प्रबल उग्रह वाला रंगपुरा स्याह अगर राहू ऊँच हो तो रंग स्याह न होगा । मगर बाकी सब राहू में इस जगह लिखी कई बातें जरूर होगी । आम तौर पर काला, आंख से काना या औलाद की तरफ से ला औलाद होगा । टेढा चलने वाला हाथी का जिस्म रंगा व हाथी की ही आंखो से मिलती ई आंखे होगी। तबीयत में कच्चे धुंए की तरह की बे आरामी सी होगी । जिस तरफ मिल गया वही तरफ दूसरी तरफ का नाश करने वाली होगी। दिमागी ताकत हमेशा शरारत और बर्बादी का ढंग खडा कर देगी । खुराक ज्यादा मगर चस्का कम, चीजे की ज्यादती शैकीन मगर इनकी खूबसूरती की परवाह नहीं। भिगी बिल्ली की तरह अगर उसे उड़ने के पर मिल जांए तो चिडियों का बीज नाश करना शुरू कर देगा। बिल्ली की तरह उसे मकान से मुहब्बत होगी मालिक की जान से मुहब्बत नही होगी । निम्नलिखित बातों का साथ होगा :-

राहू = पीठ हडिडयां अगर तायदाद में हो तो :-

तायदाद हडडी	खाना नं०	
8	*2*	*राजा या हुक्मरान होगा*
9	*3*	*रईस जायदाद वाला*
10	*4*	*फिक्र व गम में गर्क होवे*
11	*5*	*ब्रह्मा मानष या परमात्मा की छुपी हुई ताकत को पहचानने वाला और मालिक को हाजिर नाजिर मानने वाला हो ।*
12	*6*	*हमेशा बीमार रहे।*
13	*7*	*मालदार हो ।*
14	8	बुरी करतूतों , खोटे काम करने वाला हो ।

स्वपन का नतीजा (राहू)

1) **नींद के पहले समय का चाहे छह महीना में प्रभाव देवे (नीच)**

2) **नींद के दूसरे समय का स्वपन -तीन महीने में प्रभाव देवे (घर का)**

3) **नींद के तीसरे वक्त का या वक्त का स्वपन -फौरा प्रभाव व्यक्त करे (ऊँच)**

4) **चाहें किसी को मार देना, सांप या शत्रु को मारना ऐसी बुलन्दी पर चढ़ना हाड़ पर जाना- तरक्की होने की दलील हैं ।**

5) **पानी के किनारा या पानी पर स्वपन में देखी बात-जल्दी सच्ची हो ।**

6) **मौत देखना-उम्र दराज खुशी हो ।**

7) विवाह शादी देखना मृत्यु सुनने या देखने में आए मध्यम गांठ राहू का घर खाना नं० 12 राहू का गृहस्थ से सम्बंध नहीं । फर्जी सोच-विचार अपने ही आप पर या दुश्मनों पर छुपा छिपाया असर धार्मिक विचारों या इनका या इन पर शरीरिक प्रभाव न होगा ।

रंग का फर्क:- आम तौर पर राहू का रंग नीला होता हैं और केतू का दोरंगा सिर्फ व सफेद साझाँ परन्तु जब दोनों ऊँच हों तो राहू की सम्बंधित चीजों का रंग वही सफेद होगा । स्याही का निशान न होगा । बाकी सिफतें वही होगी जो रा की है। केतू का रंग बिरंग होगा मगर लाल रंग का साथ जरूर होगा, जो बुध होगा, मगर असर केतू का ही होगा ।

1) अकेला राहू (जिस्म पर तिल या खाल का निशान) शनि का हाथी ।

2) खाल या तिल छोटा स्याह निशान खाल दांए हाथ की हथेली पर जो मुटठी बन्द करने पर मुटठी के अन्दर छुप जाए तो दौलतमन्द अगर हथेली की पीठ पर या हो बांए हाथ पर तो फिजूल खर्च और रूपया खराब करें । शरीर के सामने हिंस्सा पर और जिस्म के दांए टुकड़े पर नेक असर हो । बाई तरफ और पीठ की तरफ शुभ न होगा ।

कुण्डली का दांया --खाना नं० 1 से 6

कुण्डली का बायां-- खाना नं० 7 से 12

मुटठी का अन्दर --खाना नं० 1,7,4,10

मुटठी का बाहर या पुस्त--खाना न० 2,3,5,6,8,11,12

इसके 6 साला असर में पहलें मंगल मध्यम मे केतू और आखिरी हिस्सा में खुद राहू का अपना असर होगा । राहू की मौत अचानक और **समाप्त ही हो गया, गोली लग कर मर जाना प्लेग से मर जाना या काई ओर सख्त बीमारी आती रहे।** । राहू (हाथी का जिस्म खाना नं० 12 में माना है तो खाना नं० 6 राहू के लिए सूंड की जगह है । राहू हाथी बन कर चला लेकिन ज़ब दरिया में चले) दरिया-चन्द्र तो खुद राहू का अपना साया इसके पांब में जाल (राहू-तेन्दूआ) की

तरह हो बैठा फिर राहू भूचाल बना तो जिस जगह दरिया, नदी या कोई पानी आया तो लहर आगे न जो सकी चाहे राहू उन घरें पर ही प्रभाव के लिए चलता रहा तब तक कि चन्द्र का पानी न आया। वह समय इसके लिए चलता रहा जहां तक कि चन्द्र का पानी न आया। परन्तु इसके यही राहू जब सूर्य के घर या सूर्य के साथ आया तो और भी गर्मी से पिघल कर सूर्य वाक्या होने के घर और उसके (सूर्य के वाक्या होने के) बाद के घरों पर और भी गर्म होकर चलने लगा। राहू (आपर्सी से सम्बंधित –बीमारी, झगडो राहू–बद) बाहर से अन्दर जाते वक्त इस मकान में दांए हाथ पर कोई गुमनाम वाक्य होगा। **बडे दरवाजें की दहलीज के बिलकुल नीचे से मकान का पानी बाहर निकलता होगा**। मकान के सामने का हमसाया लाऔलाद होगा या गैर आबादी ही होगा, हो सकता है कि मकान की दीवारें तो तबदील न होवे मगर छत्त कई बार बदली जाए मकान के साथ लगती हई भड़भूजे की भटठी कोई कच्चा धुंआ, (गन्दे पानी को जमा करने का गडढ़ा) आदि का साथ होगा। राहू स्याह कुत्ता घर से चला जाए या गुम हो जाए। बिजली बिल्ली रोए, स्याह रंग रिश्तेदार की नजर में फर्क हो जाए। हाथ के नाखून झड़ जाए (दिमागी खराबियां, दुश्मनो के ताल्लुक के दुख ग्रह खत्म हो गया राहू बर्बाद वाले सिर पर चोटी या बोदी कायम करना खानादान से अलग होकर स्वयं या ससुराल से सम्बंध न तोड़ना शुभ होगा।

खानावार इशया :-

खाना नम्बर वस्तुये, सम्बंधित सामान।

1 ठोडी नाना, नानी

2 हाथी के पांव की मिटटी, सरसो कच्चा धुआं

3 तेन्दुआ-जंवान ,जौ स्याह रंग रिशतेदार हाथी दांत शुभ न होगा।

4 स्वपन व स्वपन का समय, धनिया, सोया दिमाग

5 छत्त

6 काला कुत्ता

7 नारियल

8 डूला (बिमारी) माखोलया दीवार की अंगीठी का धुआं।

9 दहलीज, नीला रंग, घण्डी से ऊपर की बीमारियां

10 गन्दी नाली, ग्की (गन्दे पानी का गडढ़ा)

11 नीलम, नीला थोथा, सीसा सिक्का, नर्म धातू, अलमंनियम, जिस्त

12 हाथी, समुन्द्र का तेन्दुआ, कच्चा कोयला।

राहू खाना नम्बर 1

राशिफल का ठोढी नाना, नानी, सूर्य का उपाय सहायक होगा

ग्रहण दो साल, महादशा- 18 साल

राहू पहले तख्त पर जो यानि थर्राने लगा,
सूर्य बैठा जिस हो घर में ग्रहण वहां आने लगा।
बिगड़ा ख्याल इसका , धन कर्जा कर दिया,
राहू चढ़ा दिमाग पर – चरखा उल्ट गया ।
साल मन्दे 2–18–शर्त यह राहू की हैं
दान रक्षा सबने माना रवि की चीजों से हैं

मंगल अब मगर नं०12 में हो ते राहू का बुरा असर न होगा । सामने घर का हाल (राहू की चीजों में) मन्दा होगा । तबदीली होगी मगर तरक्की की शर्त नहीं । शुक्र बुध या दोनों में से कोई एक भी उम्दा होवे तो राहू के ग्रहण या तबाही के नुकसान से बचाव रहेगा । मगर फर्जी अन्धेरा फिर भी होगा । खुद अपने दिमाग की शरारत बायशा खराबी हो । माखोलिया (बिमारी) भी हो सकता हैं, बिल्ली की जैर, गन्दगी कपड़े में मुबारिक होगी । सूर्य ग्रहण के समान असर देगा । सूर्य की सब ताकत के ऊपर स्याह स्याही का बादल कर देगा यानि सब कुछ होते हुए किस्मत मदद न देगी । दिन होगा मगर सूर्य ग्रहण के वक्त के नजारा की तरह किस्मत के असर का हाल होगा । अब मगर सूर्य की सेहत या तरक्की रेखा बद तक शुक्र पर चली गई हो यानि टेवे में शुक्र बुध साझाँ हों तो सूर्य अपने दूसरी तरफ के हिस्सा से पूरी रोशनी देगा । सूर्य ग्रहण भी होगा तो एक तरफ या एक इलाका या दुनिया के टुकड़े में अन्धेरा होगा कुल आलम में अन्धेरा नही हो सकता । दान कल्याण माना गया हैं । ग्रहण या राहू के बुरे प्रभाव के बाद सूर्य फिर वही असर उम्दा देगा और सब की कमी पूरी हो जाएगी ।

राहू नं० 1 सूर्य नं० 7 हो तो सूर्य अब राहू से नीच होगा । राज दरबार से खराबी आमदन खराब खर्चा बुरे कामों में खुद अपने दिमाग की अपने आप पैदा की गई खराबियां होगी ।

राहू खाना नम्बर 2

ग्रह फल का , हाथी के पांव की मिटटी सरसों ससुराल कच्चा धुआं जब शुक्र के बरखिलाफ चले तो चोदी की गोली मददगार होगी ।

राहू केतू दूजे –आठवें दूजे घूमती ग्रह चाल हो ,
सोना मिटटी (मिटटी सोना) दोनों ढ़ग का हाल हो
झुलना पंथडा किस्मत ठहराता वा हैं नहीं,
रोके गर तो चन्द्र रोके रूकता घर वो हैं नहीं
समान राजा हुक्मरान होवे पर न मन्दीगुनरान होवे

बल्कि उम्र लम्बी का जरूर साथ होवे । अगर धर्म मन्दिर भी हो तो हाथियों का स्थान और हाथियों की खुराक देने की किस्मत व हिम्मत का साथ होगा अगर राहू। केतू खाना नं 2–8/8–2 में हो तो किस्मत का मैदान एक न सूद दर सूद के रंग

बिरंगे की झलक देगा। चण्डाल की तरह ऊपर नीचे चलती रहने वाली किस्मत का प्रभाव होगा। बात दबीर होगा। वृहस्पति अब शुक्र की अवधि 25 साल दौलत का आराम देगा। मगर राहू हमेशा खर्चा खड़ा ही रखेगा, जो कबीलदारी के नेक कामों में लगेगा। पैसा रूपया बाकी नहीं बचेगा। यही असर उस वक्त होगा जब राहू कलाई पर किस्मत रेखा की जड़ में हो और कलाई पर शुक्र और चन्द्र के पवर्तो को बरबाद न करता हो। अगर शुक्र की तरफ हो तो बुरा असर देगा, अगर कलाई पर चन्द्र की तरफ हो तो चन्द्र के बराबर का है न चन्द्र को नीच कर सकता है न ऊँच, दोनों अपना अपना फल दे देंगे। मगर चन्द्र का मध्यम, यानि जलील हुआ तो बीमार भी हो गये निर्धन हुआ तो दर-बदर और फरार भी होगा। गर न होगा तो वो कैद न होगा।

राहू खाना नम्बर 3

ऊँच तेन्दुआ जवान ए जोए रिश्तेदार, ***स्याह रंग हाथी दांत शुभ न होगा***
राहू तीजे त्रिलोकी के शत्रु दुश्मन नाश करे,
धन दौलत हो और सुखिया रवि आयु प्रकाश करे।

तरक्की की शर्त है तबदीली की शर्त नहीं, रईस जायदाद वाला होगा दुश्मनों पर समान तलवार होगा। अगर कोई भी ग्रह साथ या साथी हो तो केतू औलाद का हाल मन्दा होगा। जिसका बुरा असर 34 साल उम्र तक होगा अगर सूर्य बुध मुशतरका भी रां के साथ ही नं3 में हों तो राहू का सूर्य राज दरबार, खुद इसका जिस्म पर तो बुरा असर न होगा, मगर इसकी न का सूर्य चाहे -राज दरबार आदि मन्दा व बर्बाद होगा। **जिसके लिए चन्द्र का उपाय बहिन को सहायक होगा।** नीले आकाश व नीले समुद्र की मध्य जगह के सब दुश्मनों को कैंची की दो शखी की तरह दबा कर एक ही दम में काट देगा। हथेली का मालिक या जायदाद रूपया जमा छोड़ कर मरने वाला होगा। मगर लाऔलाद न होगा। राहू मंगल नेक के वक्त बिल्कुल ही फल बूरा यानि मंगल नेक तो वही है वो जिसमें राहू न हो और सूर्य का प्रभाव पूरा हो। इसलिए स्त्री सुख दौलत का सुख पूरा हो। स्त्री की उम्र लम्बी और दौलत जमा हो।

ऊँच हालत :- हाथी का सवार या वारी शेरों के शिकारी हाथी की ताकत का मालिक जमीन व आसमान के हाथी की ताकत वालों को नीले समुन्द्र के तेन्दुए की तरह आसमान की नीली चोटी से पकड़ कर दिमाग में चाहे की तरह से फिरा देगा, जहां एक राहू दोस्त हो वहां आसमान व जमीन दोनों के मध्य दुश्मनों का नाश होगा तो ज्यादा गहराई वाली हथेली के असर का मालिक होगा।

राहू खाना नम्बर 4

स्वप्न या स्वपन का ज़माना , धनिया सोया दिमाग
चांदी की 4 माशे की गोली बगैर टाके के गले में सफेद धागे में

राहू केतू घर चौथे माता चन्द्र से डरते हैं
तारे उसे न तारें न मर्जी कस्म पाप की करतें हैं
ग्रह हुआ जब माताक घर में माता खुद शमार्ती हैं ।
नसफ उम्र तक पानी डुबे धन दोलत भी छरती हैं
पाली उम्र गर मन्दे होवे दूजे चक्र तो अच्छे हैं
ग्रहण गुजरते दोनें भाई लिखा पूरा करते हैं

विद्या की बुद्धि का तो अवश्य साथ होगा और फायदा लेगा । मगर जददी जायदाद (चन्द्र का असर जमीन खेती आदि) का ही होगा । राहू का मन्दा समय स्वपन समान होगा । **राहू , केतू खाना नं०-4 या चन्द्र के साथ किसी भी घर में हो तो ऐसा टेवा धर्मी होगा,** जिसमे पापी ग्रहो का मन्दा असर न होगा । बल्कि बाकी तमाम ग्रह भी धर्मी होंगे य वो धर्मपुत्र नेक होगा । चन्द्र का मध्यम फल होगा । 45 साल (केतू का 48 साल और राहू का 42 साल मगर अब 45 साल) पानी से भय होगा । यानि उम्र का नस्फ अवधि क्योंकि मीन राशि में चन्द्र की उम्र *90* साल होती हैं जिसका आधा 45 साल होगा । अगर असली उम्र कोई और निकले तो इसका नस्फ अरसा होगा । दौलत व जायदाद का फल मध्यम होगा । **राहू के अवधि से दूर होते ही यह कमी पूरी हो जाएगी और चन्द्र पूरी शक्ति पर आ जाएगा ।**

राहू खाना नम्बर 5

छत्त, औलाद का सुख व तायदाद , उम्र

राहू गिना गर धुआ हैं भटठी घर पांचवे हो दिया न बत्ती
21 साल जो लडका होवे–बाबा रहे न पोता होवे
उम्र 42 एको होवे गद न होवे ससुराल न होवे
सूर्य अगर वहां पहले होवे भूबाल राहू का ठण्डा होवे

ब्रह्म सन्यास, (पूजा करने वाला) मगर या लक्ष्मी पर हाथी या साया होगा । चन्द्र के अलावा मंगल शनि का साथ हो जाए या सूर्य नं० 1 या साझों दीवार साथ के घर होवे तो जायदाद औलाद पर बुरा प्रभाव न होगा । बडा भाई मच्द रेखा का मालिक, उससे छोटा मगर खुद से बडा भाई औलाद में सिफर होगा । और खुद वो पांच लड़को का बाप होगा। सबके सब बड़े भाई से लेकर नीचे औलाद तक शहाना हालत और राजयोग होंगे, वशर्ते के राहू (दहलीज) **उत्तम बल्कि चांदी का (सारी दहलीज के नीचे चांदी की पतली जो किसी तरफ से भी गोलाई पर न हो)** मौजुद हो और दक्षिण के दरवाजा (बडा दरवाजा) का हाथ न हो वरना राहू का कच्चा धुआं होगा जो इसका जरूर धुआं निकाल देगा या जेर बाद करके तबाही का धक्का लगाता जाएगा । **वर्षफल में राहू नं० 5 का बुरा प्रभाव अगर इसकी औलाद न हो तो पोते पर जरूर मन्दा होगा ।** अगर सूर्य या चन्द्र या मंगल खाना नं० 4, 6 या 12 में हो तो संख्या औलाद नर पांच

से कम न होगी बृहस्पति और राहू का प्रभाव बराबर का होगा जो कि दुश्मनाना और खराब होगा । सूर्य के सम्बंध में औलाद पर 42 साल उम्र तक मन्दा फल देगा । कुण्डली वाले की औलाद (लड़का) के 21 साल उम्र तक बाबे **पोते का झगड़ा होगा व यानि** दावा होगा तो पोता न होगा । कुण्डली वाले की खुद अपनी उम्र 42 साल या इस वकत पोते की उम्र 21 साल में अगर दूसरी औलाद हो तो वो जरूर नष्ट होगा । अगर बाबा भी जिन्दा हो वरना बाबा खत्म होगा । **यदि जिसका 42 व 21 सादा उम्र के टकराव मे बाबा होगा तो पोता न होगा।**

राहू खाना नम्बर 6 (ऊँच)

कुत्ता (पूरी काला व स्याह) किस्मत का त्यागने वाला

राहू छैवें ऊँच है केतू ऊँच हैं बारहां
फल दोनों है वही जो शनि घर बारहां
पापी ग्रहो क मेल है कुत्ता पूरा काला
पाताल नीचे से वा पर्वत होवे नौ ग्रह राशि बारहां

उन्नति की शर्त है तबदीली की शर्त नहीं । स्वयं अपनी व ससुराल की किस्मत समान इन्द्रधनुष होगी , दुश्मनो के मुकाबुले मे वो बिलकुल गहरी पाताल की तह को फौरन एक निहायत ऊँचा पहाड़ का दिखावे दिमागी **सम्बंध में राहू का फल उत्तम होवे मगर इसकी घर में चाचा उठे भतीजा बैठे ।** सोना कायम रहे, की तरह बिमारी भी जरूर रहे जब तक कि वह मंगल से दूर हैं **स्याह सीसे या सिक्के की गोली (गोल चीज) शुभ होगी ।** काला कुत्ता (पूरा काला) ऊँच राहू यानि जब या जिसका राहू नं० 6 हो तो उसे शुभ काम के लिए पुरा काला कुत ता बिलकुल शुभ होगा ओ आगे से उल्ट छींक शुभ न होगा और मन्दा प्रभाव देगी । केतू व राहू दोनों का दास्ताना होगा और राहू इस घर ऊँच होगा । दिमागी शाना नं० 14 (शनि से सम्बंध) खुद का ही फल मन्दा होगा ।

राहू नं० 6 बुध नं० 12 हो तो राहू का ही फल रददी होगा किस्मत की रंग बिरंगी हो ॥

राहू खाना नम्बर 7 (राशि फल का)

खटटा का व्यापार ***शनि का उपाय सहायक (नारियल)***

राहू सातवें तुला भी उल्टे औरत मन्दा परिवार
दौलत का वो राखा होवे खावें दोस्त यारां
शनि देव ही रक्षा करेंगे शत्रु मरे दरवारा,
मच्छ रेखा फल उत्तम बुध शुक्र ग्यारहां

खुद अपना खुन माता पिता और औरत आदि गृहस्थी साथियों (जानवर) का बुरा प्रभाव होगा, जिसके सिर साया रहे वहीं दरख्त बरबाद हो लाऔलाद होवे । केतू (कुत्ते) का सम्बंध या हमेशा तबाही होगी, नहींतो गिनती का मालदार होगा। लेकिन अगर पेशा (महकमा पुलिस जेलखाना का महकमा, बिजली का

कारखाना वगैरह) भी राहू का होवे तो जरूर हल्का हो मगर सूर्य अपना पूरा **प्रभाव देगा। राज दरबार से दुश्मन होगें और हर एक आराम हो ।** मच्छ रेखा शुक्र के पर्वत पर शुभ निशान होगा , जो मच्छली में वा बारहवी राशि या राहू का घर हैं यानि शुक्र के पर्वत पर निशाना तो जरूर ही मन्दा प्रभाव देगा , शुक्र की सम्बंधित चीजों में लेकिन मच्छ रेखा जिसके शनि या बुध रेखा भी शामिल हो जाएगी खुद उसे लेकिन मच्छ रेखा जिसके शनि या बुध रेखा भी शामिल हो जाएगी खुद उसे शुभ प्रभाव देंगे । क्योंकि शनि (उस रेखा) और बुध सेहत या तरक्की रेखा दौलत के लिए शुक्र के दोस्त है । विलासता और होशियारी का सम्बंध साधारण होगा । मगर जहां तक राहू का स्वयं का सम्बंध हैं शत्रुता का प्रभाव होगा जो स्त्री भाव और सुख या दौलत का सुख आदि या हद से ज्यादा और फजुल खर्चा शुभ हैं बुध का यह दोस्त हैं और बुध के होते कभी खराब की और न ले जाएगा । दिमाग की हरकत तो कराएगा, मगर बदी की तरफ न ले जाएगा । मगर खर्चा आदि बंद कराएगा । धन दौलत व्यापार का कोई सुख न होगा। पराई दौलत का राजा होगा दूसरो के लिए जोडने वाला होगा । खुद खाता पीता और खर्चने वाला न होगा ।

राहू नं० 7 शुक्र नं० 1 हो तो औरत की सेहत मन्दी व दिमागी खराबियां होंगी ।

राहू खाना नम्बर 8

पापी हैडक्वाटर में मर्ज झुला माखोलिया, दीवार की अंगीठी का धुआं

8 खोटे सिक्के अलमोनियम के या (8 टुकड़े सिक्के मे) जिनका वजन 12 किलों० हो दरिया में डालना शुभ होगा ।

राहू घर आठवें में होवे –घोडा चढ़े घर छत्तां,
किस्मत की दो पलटी होवे–दीवार खडी वन छत्ता,
28 साल गर मंगल आवे – या शनि खुद फेरा पावे,
सोया नसीबा पकड़ जगावे–घर उजड़े आबाद करावे ।

खुद जाती विचार के मन्द नतीजे व खोटे काम हों मोते 5 साल साथ रहे । घुमती ग्रह चाल हो । **चांदी के चोकोर टुकड़े के उपाय से हाथी (राहू) अपने तबेला (हैडक्वाटर) से बाहर बाकर अपली ने व बद तबीयत व नियत का सबूत देगा । दक्षिण का दरवाजा या दक्षिण की दीवार में चुल्हा (धुआं) मन्दा सबूत देगा ।** लेकिन अगर इसमें सबसे अधिक स्याह रंग होवे तो नेक फल होगा । अब मंगल 12 में बैठा होने से राहू का बुरा प्रभाव न होगा । टेवे मे अगर मंगलबद हो तो अक्ल व लगाम के कामों में आ बैल मुझें मार के नुक्सों में स्त्री व दौलत का सुख तबाह और खर्च होवे । पांच साल नुकसान का डर रहे । किस्मत की अजीब झलक (राहू नं० 2 देखें),

जन्म कुण्डली में 8 में हो तो 42 साल तक किया जायें ।

राहू खाना नम्बर 9 (नीच)

पहलीज नीला रंग, सूर्य ग्रहण (राज दरबार) पूरा और मन्दा चन्द्र
के लिए नसफ ग्रहण, धण्डी से ऊपर की बीमारीयां ,

राहू नौवे जब हुआ – चुप वृहस्पति हो,
धर्म छोड़ खर्चा करे औलाद में देरी हो
उम्र 21 लड़का मिले हो बाद 42 वो हो,
पोता जब 21 करे वृहस्पति वहां न हो,
भाई से गर लड़े मन्द नसीबा हो,
चूल्हे अग्नि उस बुझे कच्चा धुआं हो,

पागलों के इलाज मे सफाई देगा। इस प्रकार फूक से हो हटा देगा हकीकी भाई बहिनों से सम्बंध पर बरकत होगी नहीं तो लाऔलादी का पूरा सबूत होगा। कर्म-धर्म से दूर हो तो औलाद निकम्मी, हो मगर शनि के सम्बंधित कारोबार से मन्दा प्रभाव न हो। कर्म धर्म से दूर रहने वाला, बेधर्म दिमागी खराबी व धर्म व नीच कराते या धार्मिक हो जाए, औलाद भी नालायक और खुद अपनी ही मर्जी पर चलने वाली हो । अब वृहस्पति और राहू के बराबर का प्रभाव होगा जो शत्रुता और ख़राब होगा । दिमागी सम्बंध में नकल व हरकत आम होगी । राहू जब उम्र के 42 साल में भी शुरू होता होवे शुभ , खर्च बहूत बडा मगर कबीला की बेंहतरी में होगा । **औलाद के लिए शुभ न होगा** । औलाद 21 साल फर्क वाली कायम ओर सहायक होगी.। अगर कुण्डली वाले का 21 साल उम्र में औलाद होवे तो जब तक वो 42 साल उम्र पूरी न कर लेवे दूसरी औलाद (लड़का) न होगी । या उत्तम फल न की न हो सकेगी । बाप की 42 साल उम्र तक यह घटे का शब्द कायम होगा । **परामर्श देना उत्तम फल देगा** । किस्मत रेखा की जड़ पर राहू का निशान सिर्फ दरम्यानी हद पर मुबारिक होगा ।

शुक्र नं० 9 शुक्र न० 8,10 हो तो हम साए घर, धर्म के खिलाफ कार्यवाही करने वाला और लापरवाह सा आदमी हो ।

राहू खाना नम्बर 10 (शक्की)

गन्दी नाली गर्की (गन्दे पानी का गड़ढा तालाब)

घर दसवें मे तीन ग्रह ही चलते शनि से हैं
राहू केतू और बुध तीसरा तीनों शक्की हैं,
घर दसवें में राहू बैठा चन्द्र होवें चार,
सिर इसका फट जाएगा मन्दी सोच विचार,
गर टेवा काई अन्धा होवे हाथी अन्धा हो,
गैरों से वो डर कर भागे मारता कुल अपनी हो,
शनि अगर वहां उत्तम होवे हाथी शेर शिकारा,
दुश्मन उससे कोसों भागे उम्दा हो गुंलजारा,

कम नजर या कम उम्र होगा अगर मंगल का साथ न हो, नंगे सिर स्याह लिए फिरना राहू की मन्दी हालत का पूरा प्रमाण होगा। मन्दे समय मंगल का उपाय सहायक होगा। व्यापारी साहब कम न होगा, अगर देवे में मंगल बद हो तो पांच साल झगड़े पैदा हो और हार व हानि होवे। शनि जो राहू का दोस्त है अपना दोस्ती का असर व धन दौलत पर करेगा। राहू का काम बुरी तरफ ले जाने का है और शनि दोनों पहलू चल जाता हैं इसलिए हमेशा शक्की अगर वो न मन्दा हो तो राहू दो गुणा मन्दा होगा।

राहू नं० 10 चन्द्र नं० 4 हो तो सिर फट जाए। शनि खाना रं 10 हो तो कनपटी पटपड़ी और नाभी खाना नं० 4 को देखने वाली चीज या इन्सानी नजर (बीनाई) हैं इसलिए हो सकता हैं किनजर ही गुम हो जाए।

राहू खाना नम्बर 11

(नीलम) मकदमा बकैरा के लिये जब राहू 11 में हो तो 4 किलो सिक्का 4 नारियल पुजा वाले दरिया में।

हल्फ से जो बात करतें हैं यकीन होता नहीं
राहू ग्यारह आ जा बैठे बृहस्पति वहो होता नहीं,
बृहस्पति भागे पापी भागे भागता संसार हैं,
शनि गर हो तीजे पांचवे योगी अलंकार है,
एक से ग्यारह हुए तो पापी वहां मरते नहीं,
धन न चाहें मां से अपनी न ही लेगे बाप से,
छह ग्रह की मुर्दो होवे पापी वहां मरते नहीं
जिसका तारे पूरा तारे धोखा वो करते नहीं।

ऐसे टेवे मे पिता का सुख, उम्र और सम्बंध होती ही नही जिसके वगैर कर्जा आदि हों और धन दौलत बराबर होंगे और केतू (औलाद) भी मन्दे दरवेश की तरह मन्दा और कम कीमत होगा या 35 साल उम्र तक वो सिफर (शुन्य) होगा। **चाहे वृहस्पति कायम रखना शुभ होगा और जरूरी होगा।** अगर जन्म कुण्डली 11 में हो तो 48 साल की आयु तक ऐसा किया जाये।

राहू खाना नम्बर 12 (नीच)

पक्का घर व ग्रह फल का (मन्दा) कायले हाथी, समुन्द्र का तेन्दुआ, खोपडी।
छेवे राहू इन्द्र धनुष था बारहां मे तो धुआं हैं,
लकडी (शनि) एवं (बृहस्पति) भी मीठे प्रभाव पर यदि अब बुरा ही हैं।
राहू बैठा बारहवें जब शुक्र घर ग्यारहां,
कन्या इस घर बहुत हो और धन भी उसी रफतारां,
मंगल भी घर 12 होवे राहू खत्म ही जाता हैं
हाथी महावत दोनों मिलतें सामान शाही हो जाता हैं

कच्चा धुआं मगर किस्मत के प्रभाव में कोई काम की आग न होगी अगर होगी तो न सिर्फ खर्चा हाथी न होगा बल्कि गृहस्थी सुख में हाथी की मन्दा पड़ता होगा। **फौजदारी मुकदमें एवं झगड़े आम होंगे। लड़कियों की ज्यादती एवं खर्चा जरूर होगा। नीच असर का यानि जब राहू नीच हो तो शुभ काम करते वक्त आगे से सुख व औरत का सुख, बाकी साथियों का सुख, बाकी साथियों का सुख आदि बुरे नतीजे देवें।** मगर अपनी उम्र पर कोई खराबी न हो। मगर राहू की दिमागी शरारत का आम साथ होगा बहुत बड़ा राहू का खर्चा कबीलादारी के कामों के होगा। मगर बहुत ज्यादा होगा। कच्चा धुआं होगा। मगर आग न होगी यानि ऐसी हालत की आग जो न बुझे और न ही रोटी पकाने का काम देवे। दिमागी खाना नं० 12 राजदरबार खुफिया ही खुफ़िया खर्चा होता चले।

नीच हालतः- बाहर को उभरी हुई ऊँची हथेली के प्रभाव का मालिक एवं बिना काण से मारा हुआ या मारने वाला, स्वाभाव की तरह एवं बिल्ली की तरह पिछले मकान का दोस्त मगर अपने मालिक की सलामती के लिए इसके साथी ही परवाह नहीं के अवधि पर मालिक से मुहब्बत न होगी। **मकान से मुहब्बत होगी और मकान के सम्बंध में भी चार दीवारी से मुहब्बत नहीं छत्त से मुहब्बत करेगा। सिर पर भूत सवार की तरह मारा मारा फिरने वाला और बिना बदनामी दिलाने की हालत का समय अनुसार पैदा करने वाला दुश्मन ग्रहो के समय फौजदारी मुकदमे का पैदा होना,** चोरी धोखा एवं गबन की हालत का सम्बंध आम होगा।

राहू नं० 10–12 हम साए घर शुक्र नं० 11 हो तो लड़कियों और धन दौलत दोनों ही की बहुत ज्यादती होवे।

केतू

दरवेश का कूत्ता

कुल तारक, गऊ माता का बच्चा, केतू गोली की जगह आकर मरने वाला सुअर, दुनिया की आवाज दरगाह में पहुंचाने वाला दरवेश कुत्ता मौत के यम की आवाज पहले बताये, हर रंग में बिरंगा, मगर लाल रंग न होगा।

केतू छलावा हैं चलों चली का पापी बुरा ही होता हैं
मरे न खुद वा मरने देवे चारपाई नहीं छोड़ता हैं
ग्रह जब तक कोई एक हो चलता केतू चला ही चलता हैं
रवि को गर को मध्यम करे तो ग्रह ग्रहण चन्द्र को करता है।
केतू मिला जब शनि से ऐसा बुरा नही होता हैं,
साथी मगर जब तीसरा होवे फल तीनों ही का मन्दा है,

गुरू मिले तो सब से उत्तम माता मिले खुद मन्दा हो
बुध मिले तो खुद दुष्ट कहावे मदद शुक्र की करता हैं,
पाताल पक्का घर छवां होवे नीच वहां यह होता हैं,
घर बारहां आसमान पर चढ़कर दुनिया से ऊँचा होता हैं ,
पहले घरों में केतू जो होवे गुरू मन्दा हो जाता हैं ,
उल्ट घरें में बैठे भला चन्द्र नहीं होता है,
चन्द्र अगर बद मंगल रोके केतू मंगल बद करता हैं ,
बुध केतू दो वाहम लड़ते बद मंगल भी डरता हैं ,
कुत्ता बने केतू दुनिया के कुत्ते लड़का आसन गुरू होता हैं ,
शत्रु ग्रह घर जब यह झगड़े सभी का होता हैं,
राहू पाप गर खुफिया होवे जाहिरा ही चलता हैं
शरह आम में दोनों मिलते सार दो तरफी करता हैं ,
मकान गली का आखिरी होवे औरत जात पर पड़ता है,
हवा चलेगी भूत प्रेती बच्चों पर हमले करता है
शनि की माता बच्चे खाये कुतिया कोई बच्चे खाती है,
बच्चा अगर कभी एक ही होवे नसल कायम हो जाती है
चाल राहू कभी टेढ़ी गिनते सीधी केतू नहीं होती है
बुध ने पकड़ा पाप है दुनिया मदद चन्द्र से होती है
कान पीठ गर्दन या पांव नाखून भी इनके होता है
रफतार गोलाई या बल गर्द न पर फैसला कुल केतू होता है ।

शनि की रात समाप्त हुई मगर अभी भरोसे का दिन नहीं चढ़ा । रात के अन्धेरें के बाद अगर सूर्य के निकलने से पहले की अवधि, जमीन का ऊपर या आसमान के नीचे तूफानी हवा की लहर, बगैर सिर के धड़ का साया या सिर छोड़ कर बाकी सभी शरीर एवं राहू की नकल व हरकत पैदा करने वाली बुरी लहर, बदी की तरफ ले जाने वाली ताकत, **रंग बिरंगा कुत्ता व सूअर मगर लाल रंग का इसमें निशान न हो पर पर्वत की शक्ति खराब करने वाला है । पवर्तो** के साथ हाथ की हथेली पी इसे जगह निश्चित कोई नहीं मिली सिर्फ साया और निशान व्यक्त होता है ।

राशियों में भी निश्चित राशि नहीं मिली जिस तरह धड़ का सम्बंध सिर से है और सिर का सम्बंध सांस और हवा उसी जैसा जिस तरह **केतू का सम्बंध बुध से हुआ है** यानि इसे बुध सिर की राशि जो छठी राशि कन्या या लड़की जिसमें अभी जमाने के बुरे भाव का आम मौजूद न हो जगह दी गई है जिसे बुध राहू तो ऊँच करते हैं मगर वह कामदेव का फरिश्ता स्वयं ही उसे नीच करता है यानि जब लड़की में बद फैली या कामदेव या धड़ की बुरी हरकत करने वा पांव की नकल व हरकत की आदत हुई तो केतू का प्रभाव हुआ होगा जब दो रंगी इन्सान एवं

जमाने की मिटटी उड़ने लगी आग लगी शोले बुलन्द हुए तुफानी हवा मौजूद महसूस हुई एवं जमाना केतू का समय हुआ एवं वह चाहे दिन बुलाए मेहमान छलावा बना, **मगर जान से न मारेंगा ।** केतू (पापी ग्रह) बदनाम जरूर ही बढा लेगा । दो मे से एक कर देगा मगर सिफर न होने देगा । **नेक होवे तो लड़के ही लड़के देगा ।** रास्ते का छलावा होगा मगर जान से न मारेगा । इसके 3 साला दौरा के असर में पहले शनि मध्य मे राहू और आखिर पर स्वयं केतू का प्रभाव होगा। केतू की मौत जाहिरा मौत न होगी । **न बुढिया मरे न चरपाई छूटे । न ही बीमारी मालुम होवे और न ही राजी या सही धीरे धीरे झुकते झुकते तीर कमान होगा मगर मंगलबद की मौत न होगी ।** किसी चीज का टूट जाना यह हैं केतू की मौत। मगर सफाई यह हैं कि बिमारी भी हो मगर दुख भी मालुम न हो और आखिर पर जब कोई भी ग्रह सहायक न हो तो वो व्यक्ति जिन्दा न हो या जब तक कोई न कोई ग्रह सहायक हो इसकी मौत न हो शरीर सारा ही काम का न हो तो आधा या आधे से भी आधा तो अवश्य काम का ही हो और जब बिलकुल ही कोई पेश न जाए तो वह व्यक्ति न हो, केतू छलावा बन कर वृहस्पति (हवा) को साथ लेकर शनि (मकान) की एजेन्सी में होता हुआ चन्द्र के सफर के रास्ते आया यानि स्वतन्त्र हवा मकान मे सीधी ही आने लगी, या इसके बच्चे हवा मकान में सीधे हो आने लगे, माता के दिल के टुकडे या इसके बच्चे हवा बद का शिकार होने लगे। माता को दुख हुआ मगर स्वयं माता पर हमला न हुआ। इस दुख के पैदा करने का अर्थ भी चन्द्र के लिए सिर्फ शनि ही हुआ अगर मकान न होता रहें तो यह मौत का बहाना न होता यही हवा तुफानी बनी चन्द्र के समुन्द्र की जगह से उठा कर मगर चन्द्र को समुन्द्र से यानि समुन्द्र पानी को समुन्द्र की जगह से उठा कर किसी और जगह न ले जा सकी, मिटटी फैंकी हो चन्द्र लेकर शन्ति से कार्य करता गया, केतू के कुत्ते न दरिया पर इसका प्रभाव करना चाहा। जब इसके कानों मे पानी पडा या केतू को इसकी टांगो ने हार दी, कुत्ता आगे न जा सका। केतू के यह काम और दुम क्या हैं । कुण्डली खाना नं० 8 केतू के कान है। राहू गुम हुआ, चन्द्र के दुश्मन हैं और हर एक की नस्ल बढाना (चाहे खुद अपनी नहीं यानि माता की उम्र लम्बी नही होती जबकि चन्द्र खाना नं० 8 में हों) **चन्द्र की कृपा हैं चन्द्र की दुश्मनी की तरह से कुत्ते के कान इतने लम्बे कि तो लटकने लगे** (*चन्द्र खुद के घोडे के कान लटकते नहीं चन्द्र के दुश्मन के लटके, अगर बुध की बकरी हुई तो वो भी काम लम्बे करवा गई। शनि ने सोपा तो काम, इतने कान इतने गुम हुए कि सिर्फ निशान ही रह गया कान लम्बे उम्र लम्बी। पागल होकर कुत्ता इतना भागा कि दस दिन तक)* कुण्डली का खाना नं० 10 (इसका पसीना चन्द्र का पानी भी मुंह के रास्ते जवान से कतरा कतरा टपकने लगा । बुध जवान केतू कुत्ता दोनों ही बुध केतू इकटठे होने पर चन्द्र का

पानी या चन्द्र का प्रभाव बुन्द-बुन्द होकर बाहर चला जाएगा) लेकिन जब तक वो चन्द्र के पानी से दूर रहा इसकी मौत न हुई या पानी से पागल कुत्ता मर जाता हैं। इसी तरह जब तक केतू चन्द्र से दूर रहा लोगों को आराम या पागल हो (नीच केतू) दुख देता रहा। लेकिन जब चन्द्र के साथ ही या चन्द्र के घर में आ बैठा (खाना नं० 4) **कुत्ता कुंए में गिर गया तो दम तोडने लगा खुद मर गया।** चन्द्र के पानी में अपनी बदबू डाली और चन्द्र को उम्र के बढा देने के नियम को बदनाम किया। अर्थ यह कि केतू चन्द्र के घर के अन्दर या चन्द्र के साथ स्वयं मरा मगर चन्द्र को (*चन्द्र माता कुण्डली वाले की माता को बेशक मार लेता हैं मगर कुण्डली वाले की खुद अपनी उम्र पर हमला नही कर सकता*) केतू स्वयं मर ज़ाता हैं, जिससे मुराद हैं कि लड़के मर जावे तो सच्च यह खाना नं० 8 केतू के कान हैं कि इसका सिर (बुध) मन्दा हैं (कुत्ता न मरेगा जब तक इसका सिर अच्छा हैं या कुत्ते की जान इसके सिर में होती हैं) **अब दुम कहां यह खाना नं० -6 हैं जिससे केतू व बुध दोनों को माना हैं** । कुत्ते का सिर व इसकी दुम की जगह । अब खाना नं०-6 के (कुत्ते) केतू के शरीर व इसकी दुम के हिस्सों (बुध को दुम भी माना हैं और आवाज भी) में अगर पागलपन हो जावे। यानि बुध तहां से निकल कर खाना नं० 12 में चला जावे बुध खाना नं०-6 से सीधा 12 में गया। दुम सीधी हुई (*बारह साल कुत्ते की दुम सीधी न हुई, बुध का गोल दायरा ही रही, पागल कुत्ते की दुम सीधी होगी)* तो पागल कुत्ते का सिर दम -आवाज दांत) सब कुछ बुध के हिस्से हैं दुनिया के सब गृहस्थियों पर बुरा प्रभाव करने के यानि खाना नं० 12 का बुध खाना नं० 6 के सब ग्रहों का फल मन्दा करेगा, लेकिन अगर केतू के हिस्से (वृहस्पति मंगल) जो बुध के माने हैं इसने अलग खाना नं० 12 में (खाना नं० 6 पाताल हैं और खाना नं० 12 आकाश, यानि कुत्ता पाताल में हो खाना नं० 6 और सिर , दांत, दुम आवाज आकाश में खाना नं० 12 में) हो न हो तो केतू का बुरा प्रभाव न होगा। केतू खाना नं० 6 में बैठकर खाना नं० 12 को देखे या खाना नं० 8 का असर मिला रहा हैं उसी पर्वत में जिसकी तरफ कि इसके डण्डो का मुंह हैं डण्डो के मुंह का रूख कुत्ते के मुंह का रूख होगा। **केतू की तीन टांगे वृहस्पति, बुध, मंगल हैं** । इसलिए शुक्र की जान माना गया हैं । शुक्र गाए में कामदेव की नाली केतू को माना गया हैं केतू वास्तव में शुक्र का प्रभाव है । जिसे गऊ माता जो शुक्र को भी यानि इसके दोनों नाम ही हो गए या जब केतू तकलीफ में हो उसके बुनियादी ग्रह शुक्र को भी आराम न होगा । केतू ने घुटना जब जमीन पर रखा धरती माता को वृहस्पति याद आया। केतू नीचे हुआ वृहस्पति नीच हुआ तो शुक्र बन गया, मगर दोनों जहान का मालिक न रहा या इन्सान ने मालिक के आगे हार मानी और हाजिर बन गया । मंगल बद ने घुटना टेका ऊँट बैठा वो दुनिया का बोझ उस पर आ गया । मंगल

बद ने घुटना टेका ऊँट बैठा तो दुनिया का बोझ उस पर आ गया। बुध भी तो शुक्र का ही जज हैं और केतू भी शुक्र का ही प्रभाव हैं दोनों का अन्तर यह हैं कि बुध तो अपनी नाली लगा कर शुक्र में मिल जाता हैं और शुक्र के पीछे पीछे जाता हैं मगर केतू के लिए शुक्र को बुध की सहायता न मिले या शुक्र को मंगल बद सतावे तो केतू कि मदद से वो शुक्र आराम पाएगा। दुनियावी कहानी में औरत को (बुध) की कांत वाह ने तलाश करवाया। मगर केतू को शुक्र ने खुद ढूढा और फलना फूलना पाया। केतू स्वयं ही वृहस्पति हर एक पर मेहरबान हैं इसलिए जब शुक्र कि सहायता करने वाला केतू अगर किसी कारण से स्वयं ही रददी हो जाए तो वृहस्पति के उपाय से केतू को सहायता मिलेगी और केतू आगे आरम्भ मंगल के बदले छुड़ा कर देगा बुध में नुक्स है कि **शुक्र के साथ बैठा हुआ भी मंगल के साथ मिल कर मगलबद बन कर शुक्र को बरबाद करता हैं** मगर केतू अपने बुनियादी ग्रह शुक्र की जरूर सहायता ही करेगा। चाहे वो स्वयं कितना ही दूसरे दुश्मनों से बरबाद हो जाए। शुक्र और केतू दोनों ही एक हुए या जब दोनों ही नीच हों गये और केतू दोनों ही गन्दा खाने लगे, **यह कलयुग की निशानी हुई केतू जब बुध के साथ या बुध के धर हो तो मन्दे फल का होगा।**

मेषः- वृहस्पति के सम्बंध से केतू ऊँच होगा ओर जहां केतू ऊँच होगा वही सबका माल दायरा और बेबुनियाद कर देने वाला बुध अपना बुरा फल न देने पाएगा। अगर बाप को किस्मत ने सहायता न दी तो इसका केतू लड़के की कुण्डली के हिसाब से केतू धोखा शुरू होने का समय तबदीली हालात जरूर देगा। इसकी गैर हाजिरी में बुध का आकाश वृहस्पति की खाली और ठहरी हुई हवा से भरपूर होगा। मगर हवा को चला कर सब जगह की कमी पेशी का पूरा करने वाला वृहस्पति दो जहानों के मालिक की तरह दोरंगी का बलवान दिन बुलाया हुआ मेहमान हाजिर होगा। तेजी से आधा ता तूफान कहलाया अगर बन्द खड़ा हो गया तो दम घोटु का जमाना होगा। मगर सम्बंधित न होगी। सुस्ती और मुर्दापन जरूर होगी। हाथी के सिर और लम्बे सुंड वाले राहू का मुकाबला करना इसी दरवेश का काम हैं वृहस्पति केतू (बृहस्पति) हुआ। केतू तूफान ने हर चन्द्र कोशिश कि कि मुसाफिर के कपड़े उतरा दे मगर यह काम सिर्फ सूर्य की गर्मी ने ही करवाया यानि केतू ने वृहस्पति को चलाया वृहस्पति ने बुध के बुरे प्रभाव पर यह पाया मगर दोनों का वास्तविक अर्थ सूर्य की गर्मी से ही प्रात हुआ यानि जब सूर्य लाली न या मंगल का साथ न हो (लाला सूर्य सूबह या शाम का होगा, जिसमें गर्मी पूरी नही होती) गर्मी बढ़ती हैं तो लाली घटती हैं मंगल सूर्य आपसी चमकीला और ऊँच सूर्य जरूर होगा मगर ठण्डा जमाना हो आम तौर पर सुबह या शाम के समय का होता हैं। **सूर्य नमक हैं तो मंगल मीठा दोनों का साझाँ मेल नमक में मीठा मिला हुआ होगा।** केतू बिलकुल खटाई हैं जो नमक या सूर्य के

नमक को मध्यम और हल्का करती हैं या केतू के जोर पर होने से सूर्य की गर्मी का प्रभाव कम प्रतित होता है और मंगल की मिठास भी जायका लेती हैं जायका शुक्र सूर्य का ही स्वभाव (खाना नं०-5 वृहस्पति सूर्य की साझाँ प्रभाव) हैं। केतू के इस चक्र और बुध की गोलाई और सूर्य व मंगल की मीठी गर्मी को तेज करने या केतू को नेक बनाकर बुध को दुरुस्त करके सब ग्रहों की चाल और नींव को दुरुस्त करना, शनि की होशियारी की शक्ति से होगा यानि ऐसा काम हो कि शनि भी आ जाँए केतू अपने आप इसकी ताबेदारी में जा बैठे। **शनि की दोस्ती से मंगल सूर्य से अलग हो जाएगा और लाली के छटते ही गर्मी पैदा होगी या केतू को कायम करने के लिए शनि मंगल बुध का उपाय करें।** यह केवल बेर (गोल गोल बेर) में भी मौजूद है मगर हो सकता है कि इसमें कोई बुध का पोल भी हो। इसलिए लोहे की गोल गोली पर मंगल का रंग जमा कर देगी। ग्रहों के प्रभाव में तबदीली नहीं कर सकते केवल उनको दुरुस्त चाल (इनकी अपनी-अपनी जैसी भी हो) पर लगा सकते हैं।

केतू का घर खाना नं0 6:- केतू कुत्ता माना तो बुध को कुत्ते की दुम दुम वाले कुत्ते का घर खाना नं0 6 निश्चित हैं जिसमें बुध और केतू इकट्‌ठे माने हैं दोनों ग्रहों की पक्की बात या पक्का घर होने की हालत में यह खाना नं0 7 में जा मिला है जो नेक है। कुत्ते की दुम शुक्र की दुम, गाए की दुम, स्त्री की चोटी बन गई। यह दुम जब शुक्र से हटी या औरत ने सिर के बाल कटवाए, गाए से हटी, बैल-गाए लंगडे हुए, केतू कुत्ते से हटी कुत्ता आधा रहा, सांप शनि से हटी, केवल सांप का सिर ही शेष रहा। हाथी का सूंड कटा तो वो ऐसा गर्जे कि बुध अपनी जगह छोड़ कर यानि खाना नं0 6 से 12 राशियों के आखिर पर नं0 12 में ही जा पहुंचा तो कुत्ते की दुम सीधी हुई, कुत्ता पागल हुआ, सांप की अकेली सिरी सांप से और भी ज्यादा नुकसान करने लगी सूर्य का बन्दर दुम कटा आदमी हुआ तो पागलपन का संबंध हुआ। शुक्र की स्त्री ने सिर मुण्डवाया जो मातम की निशानी या दीवाना शुक्र जान कर औरत हुई। बाप बेटे के मिलाप में अन्तर पड़ा। चन्द्र के घोड़े धन-दौलत, जायदाद की आमदन की नाली उल्टने लगी। दोनों जहान के मालिक वृहस्पति खाना नं0 12 ने वृहस्पति का घर है गुरु ने सिर पर राख (बुध) डाली। किस्सा कोताह बुध नं0 12 ने वृहस्पति गुरु (खाना नं0 12 का वृहस्पति) का संसारिक बुध अक्ल दी इसका आत्म ज्ञान बन्द हुआ। गुरु खाना नं0 12 से हटा खाना नं0 2 में जा बैठा, जो गुरु की असली जगह है, जिसमें राहू केतू की बैठक है और जिसे पापी ग्रहों की बैठक खाना नं0 8 देख रहा है और जिसके सामने की नजर पर वृहस्पति के दोस्त साथी दरवेश कुत्ता इसके चरणों में खाना नं0 6 (पाताल) का निवासी है। गुरु में हिम्मत है कि वो खाना नं0 2 गुरुद्वारे से पाताल के खाना नं0 6 में देखता है और पाताल के खाना नं0 6 से वो

गुरु वृहस्पति आसमान खाना नं0 12 में जा निकलता है। वृहस्पति खाना नं0 2 और नं0 12 का मालिक है। **खाना नं0 2 गुरु का गुरुद्वारा,** राहू केतू की बैठक, दुनिया का नकली शुक्र सब गोरख धन्धा और खाना नं0 12 गुरु की समाधि की जगह या गृहस्थियों के सुख की जगह या शुक्र ऊच्च का स्थान है। खाना नं0 6 दोनों के बीच है। केवल वृहस्पति खाना नं0 6 के रास्ते अपने खाना नं0 12 में जा सकते हैं। क्योंकि नं0 6 के दोनों रास्तों के आखिर पर वृहस्पति के ही दोनों घर है। यह वृहस्पति की कुटिया केतू का खाना नं0 6 कुत्ते की असली मालकीयत के मुकाम में सिफत है कि वो अपने घर आए ग्रह को चाहे वो केतू के दोस्त हों या दुश्मन कभी बरबाद न होने देगा। मुकाबला या वृहस्पति स्वयं बुध में तंग होता है और दुनिया का वृहस्पति साथ अपने सामने से बुध की राख को उठा कर लोगों में बांटता है(बुध को राख माना है) जो ऊच्च की होती है लेकिन जब यही राख बुध वृहस्पति के अपने घर खाना नं0 2 में पड़ेगी तो दुनियादारों के लिए या कुण्डली वाले का बाप राख हुआ मगर कुण्डली वाला स्वयं बरबाद न होगा। बाप का सोना दौलत कुत्ते ने ही खा लिया और जब वृहस्पति के खाना नं0 12 के मुकाबला के खाना नं0 6 में बैठे हुए सब ही ग्रह कुण्डली वाले के लिए जहर के प्रभाव के हो जाएंगे। अगर केतू भी खाना नं0 6 में ही बैठा हो तो भी बाहर से और आने वाले ग्रहों को खराब न करेगा, अगर खराब करे स्वयं केतू नं0 6 वाले को भी तो बुध ही करेगा नं0 12 को **केतू स्वयं गरीब कुत्ते की तरह मालिक की वफादारी और बेवकूफ गधे (केतू का ही नाम है)** की तरह सब का बोझ उठा कर सहायता देगा। केतू स्वयं अपना खाना नं0 6 का फल मामें की तरफ का बेशक बर्बाद ही करवा ले खाना नं0 6 सबका भला करे और नं06 मालिक केतू खाना नं0 6 ही सब की राजा करेगा और फलस्वरूप अपनी खिदमत का फल न चाहेगा। चाहे दुश्मन ग्रहों के समय केतू के अपने लिए खैर ख्वाईश बर जान देरवेश ही का हाल क्यों न हो केतू की माता शुक्र भी खाना नं0 6 में नीच फल का होगा। केतू प्रबल वाले के कान बड़े-बड़े भोंवों के बीच का हिस्सा ऊँचा बल्कि ऊपर बाहर को उभरा हुआ या शरीर खूब मजबूत विशेष कर टांगों का हिस्सा भारी गाजर की तरह इसका शरीर नीचे से मोटा और ऊपर की तरफ से हल्का तबीयत नेक दरवेश (कुत्ता, सुअर या साधु) की होगी। मुन्दरजा जैल का साथ होगाः-

कान (केतू)

मर्द के लम्बे--उम्र लम्बी मगर अक्ल कम

औरत के लम्बे--को ही हाजमा और अक्लमन्द।

मर्द के कान छोटे--अक्लमन्द।

औरत के कान छोटे--बेवकूफ।

पीठ (केतू):-

उभरी हुई--रईस हुक्मरान।

चौड़ी-----मफूलूस

छोटी----जमाना का गुलाम।

गर्दन पर बल पड़ते हों तायदाद में (केतू)

बल की गिनती		खाना नं0
1.	उम्र दराज हो	8
2.	दौलमन्द होगा, मगर दस्ती काम से	9
3.	दौलमन्द होगा, मगर बदफेल होगा	10
4.	दरिद्र व परेशानी का हो	11
5.	बगैर बल दौलतमन्द हो	12

पांव पर निशान (केतू का खाना नं0 6)

- दाएं पांव के पर्वत पर कनिष्का के नीचे बुध पर या शुक्र के पर्वत या अंगूठे की जड़ पर अगर शंख सबफ हो तो वही प्रभाव होगा, जो हाथ पर होता है।
- **चक्र---अंकुश**--आला अफसर और न्यायक मिजाज चश्म फैल (हाथी की आंख) साहब तख्त हो।
- अगर बांए पांव में हो तो राजन चोर डाकू हो मगर फिर भी तंगदस्त, पांव की हथेली या पांव पर चक्र के।

पांव की अंगुलियों के नाखून:-

लाल तांबा रंग---राजा या हुक्मरान हो (सूर्य)

नील को--- आली मर्तबा हो (राहू)

पीला------ दीवान साहब हो (वृहस्पति)

काला------ चोर डाकू फिर भी बुरा हाल (शनि)

रफ्तार (केतू):-

1. आहिस्ता, मध्यम खराब हाफ़िज सुस्त अलजैद--हर काम में देरी करने वाला
2. तेज मगर छोटा कदम--ऊँचा विचार ठण्डा स्वभाव हर काम में साबुत कदमा होने वाला।
3. आदती झुक कर चले--अक्ल वाला, नेक मेहनती, बगैर दलील बात न मानने वाला हो।
4. तेज रफ्तार--कम अक्ल हासद स्वयं राए स्वयं पसन्द।
5. कदम बड़ा मगर चलते लंग मारे--लालची, बुरा करने में ज्यादा हो रफतार में तंग या नुक्स हो-बदला लेने वाला, चुगलखोर हो।
6. एक जगह चैन से न बैठने वाला--बेहूदाहासद, कंजूस हो।
7. सीना व पेट निकाल कर चले--मिलनेसार, ज़िन्दा दिल, मगरुर, कहने सुनने

मान जाने वाला।

8. सिर और कमर हिला कर चले--तिरछी चाल वाला नापाक आदत वाला हो, बुजुर्गों की बुराई और बदखोई करने वाला, लानती जमाना हो।
9. मुन्दरजा वाला (उपरलिखित बातों) से बुरी:: नेक तबीयत नेक किस्मत
10. जिस जानवर की चाल से मिलती हो उसमें वही आदत, इसका वही हाल, वही तबीयत और वैसी ही किस्मत का मालिक होगा।

हाथः-

1. हाथ के अंगूठे के नाखून वाला हिस्सा अगर मोटा हो तो केतू हो दुश्मन ग्रहों की राशि में--मुफतसी देगा, गरीब करेगा।
2. हाथ के अंगूठे का नाखून वाला हिस्सा अगर छोटा हो तो केतू हो दुश्मन के साथ या इनके पक्के घरों में--बहशी, हैवानी शक्ति, कम दौलत।
3. तीन शाखी रेखा केतू होगा अब शनि बराबर का होगा। केतू उल्टी चारपाई तीन पाये होता है। शनि का सांप चारपाई पर नहीं जाता लेकिन अगर चौथी चीज या औरत की चोटी या कोई कपड़ा सहायक हो तो चारपाई पर चला जाएगा और डंक मार देगा यानि उधम और शरारत पैदा होगी।

केतू बच्चों से सम्बन्धितः-

केतू खिड़कियों व दरवाजों को बताएगा (हवाए बुरा, अचानक धोखे) कोने का मकान होगा, तीन तरफ मकान एक तरफ खुला या तीन तरफ खुला और एक तरफ कोई साथी मकान या स्वयं इस मकान की तीन तरफें खुली होंगी। केतू के मकान पर सन्तान ख्वाह पोते तीन से ज्यादा न होंगे अगर एक लड़का तो 3 पोते अगर 3 लड़के तो एक पोता या एक ही पोता कायम होगा। इस मकान के दो तरफ काटता हुआ रास्ता मकान होगा। साथ का हमसाया मकान कोई न कोई जरुर गिरा हुआ बर्बाद या कुत्ते के आने जाने का खाली मैदान बर्बाद सा होगा। केतू दोरंग कुत्ता, कान के सुनने की शक्ति, छिपकली का गिर पड़ना अपने लिए अच्छा मगर भाई बन्धुओं, सन्तान (लड़के) के लिए मन्हूस, पांव के नाखून झड़ जाए (पेशाब की बिमारियां या सन्तान के बुरे प्रभाव का) ग्रह समाप्त होगा। केतू बर्बाद होने वाले को कान में सुराख करना उम्र, सन्तान व सफर में सहायता देगा।

केतू की खानावार इशयाः-

1. टांग, नानका घर, नाभि से नीचे की बिमारियां।
2. इमली, तिल।
3. रीढ़ की हडडी, केला(फल) भौंडी भैस।
4. सुनना कान।
5. पेशाब गाह।

6. चिड़ा, खरगोश नर, पूजा स्थान, चारपाई, प्याज, लहसुन।
7. दूसरा लड़का सूअर गधा।
8. कान सुनने की शक्ति, छलावा, धोखेबाज।
9. दोरंगा कुत्ता या कुतिया, मगर लाल रंग न हो।
10. चूहा
11. दोरंगा कीमती पत्थर
12. छिपकली, मुतबन्ने, पंलग।

केतू केवल परसा (कुल्हाड़ी) वाले का साथ न होगा।

नकली ग्रह:-शुक्र-शनि-ऊच्च केतू
चन्द्र-शनि--नीच केतू
सूर्य बुध नेक, केतू या नेक मंगल

केतू खाना नं0 1

टांग, नानका घर, नाभि से नीचे की बिमारियाँ

केतू जब घर पहले आये, जन्म मुसाफिर खाने (जद्दी मकान के अलावा, नानके) पावे (दादके सफर मुसाफिरी वगैरह)

जिधर-जिधर वो कदम रखेगा, मिट्टी उड़ती साथ
बा-बगूला तुफानी बने वो मारेगा घर छह सात,
पापी ग्रह तीनों गिने केतू भी बदनाम,
जो मारे न जान से मिट्टी गर्द आम,
न इधर मारा न उधर मारा,
हो अगर मारा जन्म स्थान ही मारा।

जिस घर में जन्म लिया वो मकान न होगा। जिस रिस्तेदार के यहां पैदा हुआ वो खानदान न रहा, फिर भी रहा तो स्त्री सुख व सन्तान का संबंध भी हल्का रहा। मगर सूर्य बैठा होने वाले घर का प्रभाव और स्वयं सूर्य का संबध हर तरह से नेक रहा। बेशक सूर्य किसी भी घर और किसी भी हालत में बैठा रहा। जब बाप की किस्मत बुरी हो तो ऐसा लड़का किस्मत में जरुर सहायता देगा और बाप को जरुर तार देगा। हालांकि सूर्य केतू आपस में दुश्मन हैं केतू कुत्ता अगर हड़काया भी हो तो भी अपने मालिक बाप, वली या सर परस्त को जरुर ही छोड़ देगा या उस पर कोई बुरा प्रभाव न करेगा मंगल नं0 12 में बैठा हो तो केतू का बुरा प्रभाव न होगा। सूर्य का मध्यम प्रभाव होगा। मामे की तरफ ज्यादा खराबी करेगा। स्त्री सुख हल्का होगा। राज दरबार से लाभ होगा। मगर ऐसा ज्यादा नहीं केवल 3 साल (सूर्य के सारी अवधि में खूब ऐश का जमाना होगा) यानि कुण्डली के जिस घर में सूर्य हो उस घर की सम्बन्धित चीजों का प्रभाव अच्छा होगा। सफर में नुकसान, दूसरे की सलाह से नुकसान, पांव की पैदा करदा ख़राबियां केतू नं0 1 सूर्य नं0 7

में खाना नं0 1 में अगर केतू को बा-बगूला माना गया है तो उसके ऊँचे होते ही न केवल गर्द गुब्बार उठ खड़ा हुआ बल्कि उसके पांव तले आने वाली तह की मिट्टी खराब हालत में होकर ऊपर आसमानी चक्र में हो गई या खाना नं0 7 स्त्री घर और खाना नं0 6 पाताल मामे की घर गृहस्थी बुरे चक्र में हो जाएगी। मगर सूर्य राज दरबार का प्रभाव कोई ख़राब न होने देगा, बेशक सूर्य पैदा करेगा। मगर बाकी और जगह बुरा प्रभाव न देगा।

केतू खाना नम्बर 2

ग्रह फल का इमली तिल

केतू दूजे गोबर गाए ब्रह्मा गुरु स्थान हो,
माता को बेशक न तारे औरत का अभिमान हो,
घूमती किस्मत सही पर नेक और बेहूदा हो,
सफर इसको बहुत लिखा हुक्मरान आसूदा हो।

हर नये सफर तरफ की तबदीली पर होगा यानि पहले अगर यात्रा को जाए तो फिर वापसी मगर दक्षिण में ठहरे फिर पूर्व में आये। आम तौर तबदीली की शर्त अवश्य होगी, मगर तरक्की की शर्त नहीं। सफर और तबदीली का मालिक होगा (नेक शब्दो में और नेक प्रभाव में) वृहस्पति गुरु या सोने की नकल करेगा या नकली सोने की तरह की किस्मत होगी (अच्छी हालत में) किस्मत की अजीब हरकत राहू नं0 2 में देखें। सखी अवश्य हो जो कमाएगा खाएगा या वितरित कर देगा अपने पास पैसा जमा न रखेगा, न जमा रहेगा, एक सांस आया दूसरा गया तो पहला आया या आई-चलाई होती रही। केतू का निशान किस्मत रेखा की जड़ में शुक्र की तरफ शुभ, चन्द्र की तरफ खराब दोनों भोवों के बीच केवल खाना न0 2 पर जहां पर तिलक लगाते हैं, मगर बद या केतू का निशान हो तो हुक्मरान हाल होगा।

केतू खाना नम्बर 3 (नीच)

रीढ़ की हड्डी, केला, फोड़े चलते पानी में चन्द्र, सूर्य से संबन्धित चीजें
डालना मुबारिक होगा, जबकि सफर में अकेले
या वृहस्पति की चीजें जब फोड़े गुमटे पैदा करे।

केतू घर जब तीजे आवे भाइयों से वो तंग कराये,
और घर ससुराज हों मन्दे सालियां बेबा पड़ेगी पल्ले,
केतू तीजे मंगल बारहां मच्छ महावन दोनों तारा,
24 साला में उत्तम होवे या जब लड़का पहला होये।

कानों में सोना शुभ होगा। नेकी को याद रखने वाला और बदी को भुला देने वाला, स्वयं ही बिन बुलाए सहायता के लिए आ हाजिर होने वाला व्यक्ति होगा। बुध (लड़की जात)का बुरा फल होगा। उलझन में जकड़ा हुआ दरवेश

होगा या बिना कारण औरत से जुदाई का अर्थ भी होगा भाइयों से दूर परदेश में होंगे। अंगूठा अगर अन्दर को झुके तो केतू भाइयों से तंग करावे या इसकी औलाद नेक करे। केतू का निशान नेक मंगल पर हो खुद जात के नेक मगर भाई बंधुओं की तरफ से शत्रुता परदेश की जिन्दगी और बेआराम, इत्यादि, भाइयों के शत्रुता होती रहे, न केवल कुण्डली वाले को अपने भाई बन्धुओं से दिकत होगी, बल्कि लड़की जात (लड़की के ससुराल) का फल मन्दा होगा। मंगल नेक वाले के लिए खर्चा का टुकड़ा हथेली के ऊपर राशि नं0 12 मीन का प्रभाव उत्तम करेगा, मगर ससुराल की लड़कियों इत्यादि (औरत जात) के दुःख दिखलाएगा। मर्द औरत की आपस में जुदाई दोस्तों के विरुद्ध बिना वजह हो। औरत के झगड़े या किसी दूसरे सलाहकार की गलत सलाह खेती बाड़ी व दौलत का सुख खराब हो।

नीच हालत :- कानों का कच्चा, पांव चक्र लगा हुआ, दरवेश की तरह बिना मतलब दौरा लगा देने वाला, एवं बगोले के चक्र का मालिक, रस्सी के बन्धे हुए तंग की तरह उड़ने वाला मगर उलझन में जकड़ा हुआ, मुकदमात, दीवानी की लम्बी-लम्बी चालें करने वाला, सहरा व समुन्द्र का सैलानी और जंगल में मंगल की हवाए बद और नींद (राहू) में जहरीली हवा का सम्बंधित होगा। मकान से मुहब्बत नहीं मालिक से मुहब्बत होगी और मालिक के ताल्लुक में भी इसकी नेकी को याद रखता और बदी को भूल जाता है।

केतू खाना नम्बर 4 (राशिफल का)

सुनना (कानों का सम्बंध)वृहस्पति का उपाय सहायक,

चन्द्र ग्रहण (एक साल मियाद)

केतू चौथे जब हुआ कुत्ता कुए में हो,
चन्द्र खुद अच्छा रहा न केतू उम्दा हो,
गुरू उपाय गर करे दोनों दुख हो दूर
कुल इसकी चलती रहे माया मिले जरूर।

लड़कियां ज्यादा मगर इज्जतदार आदमी होगा। नर औलाद का मन्दा ही हाल होगा। पर खुद न कभी वो तंग हाल होगा यह सब केतू की उम्र तक का हाल होगा। केतू । राहू खाना नं0 4 में या चन्द्र के साथ किसी भी घर हो तो ऐसा टेवा धर्मी होगा, जिसमें पापी ग्रहों का बुरा प्रभाव न होगा। बल्कि बाकी सभी ग्रह भी धर्मी होंगे। अक्ल कायम, साहब तदबीर, मगर लड़कियां ज्यादा। छह साल तकलीफ चन्द्र ग्रहण होगा। दिमागी खाना नं0 16 **हमेशा काम में लगे रहना चाहे भला चाहे बुरा काम हो।**

केतू खाना नम्बर 5 "पैशाबगाह"

केतू घर है पांचवे रवि गुरू के घर,
जैसा हाल बृहस्पति हो वैसा ही केतू घर,

गर शर्त न पूरी हो 24 बरस (1) जरूर,
दुख दरिद्र सबकुछ बदले बदले हाल जरूर,
वजह फर्क घर नींवे होगी नजर न भूले जो,
फल (औलाद) कड़वा तय ही हुआ जड़ में आक (शनि) जो हो।

नोटः (1) लड़के की 24 साल उम्र मगर शनि (नया मकान)से पहले।

लड़के ज्यादा से ज्यादा दो और बस मगर वो पूर्ण और हर तरह अच्छा असर के बशर्ते कि वृहस्पति उम्दा। अगर वृहस्पति मन्दा हो तो 45 साल उम्र तक घर में पर औलाद की जगह कुत्ते के रोने की आवाज जाएगी या औलाद को दम (दमा) की तकलीफ होगी। अगर शनि का भी सम्बंध हो जाए तो जड़ (3 नर औलाद) नष्ट होगी, जो शनि की की उम्र (35 साल) में बहाल होगी। वृहस्पति ऊंच कायम या अच्छा हो तो केतू का फल अच्छा मगर खुद वृहस्पति का मन्दा होगा। वृहस्पति सूर्य या चन्द्र 4, 6,12 में हो तो नर औलाद पांच से कम न होगी और माली हालत में केतू नं0 5 का कभी मन्दा प्रभाव न होगा।

केतू खाना नम्बर 6

(पक्का घर नीच) ग्रह फल का , घर का, पूरा चन्द्र ग्रहण,
नर खरगोश चिड़ा, परदेश, पूजा स्थान

केतू छैवे नीच है दुश्मन जेर ही हो,
माता मामू हो मन्दे, पर खुद न मन्दा हो,
गर मन्दे ग्रह हो सभी केतू (लड़का)मदद करे,
बुध (लड़की बहिन)से फाड़े कभी न शुक्र (स्त्री)मदद करे,
केतू ही चीजों पर केतू (लड़का)मन्दा पर मन्दा न दूसरों पर,
ग्रह दूजा कोई साथ हो होवें खुद मन्दा बुरा दूसरों पर।

सोने की अंगूठी बाएं हाथ में शुभ होगी। अगर वृहस्पति उत्तम हो तो नर औलाद व धन दौलत की आमदन पर आमदन हो। वरना काटखाने वाला कुत्ता होगा। इस घर में यह शुक्र की भी सहायता नहीं करता और न ही मामे खानदान पर मेहरबान होगा। मगर बुध वह न से कोई झगड़ा नहीं करता। अब इस ग्रह की दुरूस्ती और असर इन्सान के पांव से जाहिर होगा। पांव की अुगंलियों के वही नाम है जो हाथ की अंगुलियों के हैं और पर्वत व राशियों वगैरह सब हाथ की वजह से गिना है। पांव हमेशा जमीन से लगते हैं और जमीन को शुक्र माना है शुक्र का पर्वत अंगूठे पर होता है इसलिए पांव की एक रेखा हाथ की रेखाओं से फर्क पर होती है बाकी वातों से पांव की सब रेखा हाथ की रेखा के समान देखी जाती है पांव में रेखा अगर ऐड़ी से निकल कर अंगूठे तक चली जाए तो सवारी का सुख होगा।

अंगुलियां को छोड़ कर (पावं की) अगर चक्र, शंख सदफ का निशान

दांए बाएं पैर पर हो तो पर्वत या ग्रह के कायम होने का नेक अगर हाथ की तरह होगा, मगर बाएं पांव पर चक्र शंख सदफ पर्वत के नीचे होने का असर देंगे। अगर बायां पांव दाएं से बड़ा हो तो कम हौंसला और डरपोक होगा। पांव का अंगूठा छोटा हो तो केतू नीच या मन्दा होगा। ऐसा शख्स एक जगह न रहे। हाथ का अंगूठा अगर सीधा रहे तो केतू अपने दुश्मनों को मारे या इसका लड़का बहादुर हो। अंगूठे की नाखून वाली पोरी केतू का घर खाना नं0 6 है अगर केतू अच्छा और वृहस्पति नेक हो तो 80 साल मामें के खानदान को सुख दें, परदेश की जिन्दगी में आराम, अपनों से मुहब्बत, नर दौलत की आमद पर आमद, गर्जे ये के अपने लिए अच्छा होगा, मगर दूसरों पर अपना बुरा असर देगा। अगर केतू मन्दा हो और वृहस्पति खराब हो तो सफर बिला मतलब, दुश्मन बिन बुलाए पैदा हो। मामें व मामें के खानदान पर खराबी का कारण हो सकता है मगर अपने लिए ऐसा बुरा न होगा। केतू अधिकतर शुक्र का दोस्त और बुध का दुश्मन है मगर इस जगह उल्ट होगा। अगर वृहस्पति या मंगल खाना नं0 6, 12 में न हो तो केतू अब मन्दा न होगा। दिमागी खाना नं0 14 शनि से संबन्धित खुद पसन्दी।

केतू नं0 6 बुध नं0 12 हो तो केतू का फल रद्दी होगा।

केतू खाना नम्बर 7

दूसरा लड़का, सूअर, गधा ।

केतू जब सातवें आवें दुश्मन वो सब मार हटाये,
कुत्ता राज बैठाया मुड़ चक्की चट्टन जाये ।

24 साल के गुजरते धन 40 साल और सामने घर का मन्दा हाल (केतु की चीजों में) होगा । लडकें की उम्र 28 साल केतू जरब 80 साल कुल उम्र केतु साल की आमदन के बराबर का धन होगा । अरि बुध (कलम) का साथ हो तो 34 साल उम्र तक-दुश्मन जरूर उम्र भर लगे रहे लेकिन बाद में तों सब को ही कुत्ते की तरह मार भगाये। धन जब आए 40 साल बरकत व गुजारा साथ ही ले आएगा बुध के मंदे समय के बाद खूब दौलतमन्द होगा । **एक ही सहायक हो जो दुश्मनी करे वो स्वयं ही बरबाद होगा ।**

केतू खाना नम्बर 8

कान सूनने की शक्ति अतिरिक्त , धोखेबाज ।

केतू जब आठवें हूआ पत्थर हो निस्तान,
कुता साया छत्त पर -लडका हो कब्रिस्तान,
मीह न बरो औलाद का जब चन्द्र दूजे हो ,
जब चन्दे भी हो बुरा चन्द्र पालन हो ।

केतू का असर अब सोया हुआ होगा । मगर कुत्ते की नींद उसकी कम होती है इसलिए जल्दी सो कर जाग सकता है **जिसके लिए चन्द्र का उपाय करें । स्वयं**

अपनी उम्र लम्बी होगी । अगर वृहस्पति मन्दा हो खाना नं० 8 में केतू का साथ कोई और ग्रह हो केतू की उम्र (48 साल) तक औलाद से दूखिया या महरूम हो और केतू का असर मन्दा होगा या शर की नींद वाला सोया हुआ कुत्ता होगा । **दो रंग कम्बल (स्याह सफेद) का टुकडा श्मशान भुमि में दबा देना शुभ (वास्ते औलाद) होगा । अगर कोई और ग्रह भी नं० 8 से संबन्धित हो तो इस ग्रह की सम्बंधित चीज को भी कम्बल में बांध कर साथ ही दबाना होगा।** मंगल नं० 12 में तरह से बुरी हालत और हानि ही जाहीर करे। लड़का कब्रिस्तान में किस्मत की अजीब झलक होगी। राहू नं० 2 औलाद की पैदाइश या औलाद के जिन्दा रहने का वक्त बहुत देरी से आएगा । जिसके लिए मंगल बद से बचाव का इलाज करें । केतू जब नं० 8 में हो तो शुक्र या बंध तकरीबन मन्दे घरों में होते हैं । लेकिन अगर वृहस्पति या मंगल खाना नम्बर 6, 12 में न हो तो अब केतू का असर मन्दा न होगा ।

केतू खाना नम्बर 9 (ऊँच)

दोरंगा कुत्ता ,घर में सोई हुई कुतिया मय उसके बच्चे शुभ होगें ।

केतू नौंवे पिता को तारे - तारता नही तो मामू को ,
औलाद तो होगी गिनती ही की पर सुखिया व अच्छी हो,
मात-पिता घर दोंनो तारे, चन्द्र जब गुरू अच्छा हो ,
जो ग्रह दोनों से रद्दी हो - लड़का भी हो मन्दा,
साल गुजरते ग्रह 7वें के, होगा फिर वो अच्छा ।

तरक्की की शर्त है बदलाव ही शर्त नही सूअर की बहादुरी और नेक कुत्ते की वफादारी दोनों सिफत के काबिल होगा औलाद नर ज्यादा से ज्यादा तीन कायम होंगी। मगर हर तरह से पुरी और बेआराम जिन्दगी होगी। गुजरान परदेश में ज्यादा अवधि होगी, मगर नेक हालत में दौलत मन्द होगी, मगर दस्ती काम व आपसी हिम्मत से कामयाब होगा। लाऔलादों को औलाद और नामर्दों का पर्द करने में इसकी आशीर्वाद हुक्म विधाता होगी। घर में सोने की चोकोर ईट कायम रखना निहायत ही मुबारिक होगा, वरना कानों में सोना भी सहायक होगा। केतू अब माता-पिता को तारे यानि नेक असर दे। इस घर में केतू व वृहस्पति के बराबर का है इसलिए केतू का फल अच्छा होगा खुद आपने लिए मगर मामे के घर व औलाद के लिए बुरा ही होगा ।

ऊँच हालत :- सूअर की तरह बहादुरी में गोली चलने की जगह पर आकर मरने वाला या कुत्ते की तरह मालिक की वफादारी में ही मर मिटने वाला गुजरे हुए जमाने की बुराई को भुला देने और मत केवल के लिए हौंसला दिलाने वाला स्वयं ही सलाहकार होगा। शनि शुक्र से संबन्धित होने के असर वाला ऊच्च यानि इसकी औलाद में यह जरूर होगी । जब केतू 48 साल उम्र के शुरू से जारी हो ।

खुद अपने लिए शुभ सुफी दरवेश रहे । शुक्र का साथ यानि शुक्र केतू नं० 9 में साझाँ हो तो शुभ दौलत पर दौलत आये । चन्द्र का संबंध यानी चन्द्र केतू संबन्धी नं० 9 में माता व माता खानदान पर बुरा प्रभाव दे। विषेशतः उस वक्त जब केतू के दुश्मन ग्रह (मंगल) का दौरा हो। औलाद गिनती ही की होगी । बडा लड़का फिर भी किस्मत का हल्का मगी कुण्डलह वाला खुद हर तरह से उत्तम फल का केतू का निशान किस्मत रेखा की जड़ पर मगर दरम्यान मे और शुक्र की तरह मुबारिक दौलत पर दौलत जायेगी, चन्द्र की तरफ शक्ल का मुंह काला भाग्य में निहायत मन्हूस, दुश्मन ग्रहो व केतू के दौरा में मामे की तरफ भी असर बद होगा। आम सफर घर पेश रहेगा । भाईयें से दोस्ती दुश्मनी के नतीजा का असर होगा ।

केतू खाना नम्बर 10 (राशि फल का)

चूहा, फैसला शनि से होगा , मंगल का उपाय सहायक होगा ।

केतू घर दसवें का शक्की -कुत्ता लड़के मन्दे।
मंगल चाहे घर दसवें होवे फिर भी दोनें मन्दे ।।
शनि अगर घर अच्छे होवे - मिटटी सोना होवे ।
बुरी जगह जब नाम जो बैटे सोना मिटटी होवे ।।
अब उपाय केतू होगा या चन्द्र का पानी।
महल मकानों नीचें देवें दूध शहद वो प्राणी,
अकेला हो केतू जब घर दसवें सहायता मंगल से होगी ,
पर जब हों दो इक्टटे बैटे दया चन्द्र की होगी ।

दौलत मन्द तो जरूर होगी परन्तु विलासता भी होवे । शनि का फैसला बताएगा जब (मिटटी से सोना बनाता) तीन काने सोने को हाथ डाला तो मिटटी हो गई कब और कहां होगे । **शुद्ध चांदी का बर्तन शहद से भर कर रख लेवें । 48 साल के बाद केतू का साथ (कुत्ता) सहायक होगा ।** अगर शनि मन्दा हो तो बुरे काम करने वाला होगा, नहीं तो 24 साल लड़के पैदा हो और शनि उत्तम फल देवें और तरह से वृहस्पति का उत्तम फल पैदा होगा । 48 साल की उम्र पर तबदीली हालत फसला कर देगी। अगर शनि उल्टा निकला तो हर तरह से हानि शरीरक तकलीफ रूहानी गड़बड़ जमीन मकान व माल का नुकसान और हर जगरह तीन काने और अगर शनि सहायक हुआ तो पग बारह और मिटटी का हाथ डाला तो साना ही मिल गया , वाला असर होगा ।

केतू नं० 10 शनि नं० 6 हो तो चौसर चौपट, साहब इकबाल खिलाड़ी।
केतू नं० शनि नं० 4 हो तीन नर औलाद बेईमान होगी जिसका इलाज वही हैं जो केतू नं० 8 का हैं ।

केतू खाना नम्बर 11

कीमती दोंरगा (सफेद -स्याह) पत्थर स्याह कुत्ते का सम्बंध,
*सबसे नेक होगा **केतू कायम रखना शुभ होगा ।***

केतू ग्यारह गुणा हो धन दौलत हो उम्दा ,

पर खुद केतू शनि दोनों का फल होगा ही मन्दा

जायदाद न इतनी होगी जितनी खुद बनावें, **नोट :- केतू मर्द के टेवे में स्वयं** *अपना लडका औरत के वे में दोहता ।*

बुध अगर न तीजे बैठे केतू राज करावे,

गर बुध उसके तीजे आवे केतू मारे चीखां,

किस्मत की दोरंगी होवे-रोए अपने लेखां ।

ऐसे टेवे में चन्द्र मन्दा होगा या माता न होगी, जददी जायदाद की बिलकुल ही स्वयं पैदा करे जायदाद ज्यादा होगी खूब आय का मालिक होगा । **मगर जब शनि मन्दा हो तो मकान व खुद केतू (लड़का) का अपना अपना प्रभाव मन्दा होगा** । जिसके सम्बंध में दरिद्र और परेशानी होगी मगर औरत के टेवे में यह सब उल्ट या हर हाल में नेक व मुबारिक होगा । केतू शनि के बराबर का हैं अगर शनि उम्दा हो तो केतू का सबसे ज्यादा असर होगा जो उत्तम हालत में खूब दौलत पर दौलत देगा । मगर केतू का हाजिरी में चन्द्र दूर ही होगा ।

केतू खाना नम्बर 12

(ऊँच)

छिपकली, मतवप्से किस्मत को जगाने वाला ग्रह

केतू बैठा जब घर आ बारह -सूखा गृहस्थी होता हैं

शुक्र केतू शनि बृहस्पति फल चारों का उम्दा हो

खुद बूढ़े साथी बढ़ बढ़ेगा कुल परिवार,

मर्द माया की मकी न होवे बढ़ेगें रिश्तेदार,

मंगल राहू हसद करेंगे - लड़के तरफों चार

हर तरह से रक्षा होगी फले फूले गुलजार।

तरक्की की शत्रु हैं, तबदीली की शर्त नहीं । औलाद के समय से (या जब लड़का 24 साल जो जाए) दौलतमन्द होगा । इज्जत व मान का सरोवर होगा । नर औलाद कम से कम जायदाद में छह होगी । **अंगूठा दुध में डाल कर चुसना या अंगूठे का मुह में रखना तमाम गृहस्थी सम्बंध मे शुभ होगी । घर में दोरंगा (काला : सफेद) कुत्ता शुभ होगा** । हाथ में अंगुठा का बाहर को झुकाव हो जो केतू के सम्बंधियों को तारे । जिस तरह की कुटिया के कुत्ता आराम देता हैं । इसी तरह औलाद तारती हैं और सहायता करती रहे । औलाद कबीला को पैदाइश में उत्तम फल देता हैं । हर ग्रह के अपने हाल में खाना नं० 12 का जो असर दिया हैं उन तमाम बातों मे जो केतू से मूतलका हैं केतू अपना उत्तम असर करेगा। सिर्फ भाईयों से बेआरामी कराएगा । इसकी गुलजार और कुटूम्ब कबीला सब आबाद होंगे और हर तरफ उत्तम और नेक प्रभाव होगा ।

फरमान नम्बर पन्द्रह

दो ग्रह

दों अंगुलियों के मध्य ग्रह (तर्जनी वृहस्पति, मध्यमा शनि अनामिका सूर्य, कनिष्का बुध) जब साथी, साझाँ या आपसी दृष्टि से मिले हुए हों तो उनसे जाती गृहस्थी सुख (माता-पिता का सुख सुख सागर व जायदाद के सुख के अलावा) शुभ हैं चाहे दो अंगुलियों, पहली -दूसरी- वृहस्पति शनि दूसरी तीसरी -शनि-सूर्य तीसरी चौथी -सूर्य बुध, पहली तीसरी-- वृहस्पति सूर्य, दूसरी चौथी-शनि बुध पहली चौथी--वृहस्पति बुध के सम्बंधित ग्रह कुण्डली में बुरे फल के हों, अंगुलियों की जड़ों में सुराख न होने से शुभ उन अंगुलियों के सम्बंधित ग्रहों से आपसी अपनी अपनी नेक हालत दुरूस्त हालत या सभी ग्रह हो जाने से है, सुराख होने से शुभ यह है कि अंगूली के सम्बंधित ग्रह बुरे या पापी फल के है। अंगुलियों की जड़ और हथेली के ऊपर के किनारा पर दो शाखी रेखा या पर्वतों को मिलाने वाली रेखा यानि वृहस्पति और शनि, शनि और सूर्य, सूर्य और बुध सबके मध्य वाली रेखा शुभ प्रभाव देगी। शनि भी ऐसी हालत में अपना बुरा प्रभाव छोड़ देती है और शुभ प्रभाव करती है। शनि का सांप औरत के सामने अन्धा हो जाएगा ओर हर समय डंक न मारेगा। इकलौते बेटे पर भी हमला न करेगा क्योंकि **इकलौते बेटा भी सूर्य उत्तम का सबूत है। शर्त** यह हैं कि वो पहला लड़का हो। दो नजदीकी पवर्तो के अतिरिक्त अगर यह दो शाखी पहले और तीसरे या दूसरे और चौथे पवर्तो पर साझाँ भी हों (यानि एक सिरा तो वृहस्पति के पर्वत पर हो और दूसरा सूर्य के पर्वत पर या एक सिरा तो शनि पर हो और सिरा बुध पर हो)तो भी नेक प्रभाव ही होगा, चाहे ऐसी दो शाखी रेखा का शुरू दिल रेखा पर हो, चाहे यह दो शाखी रेखा सिर रेखा से निकल कर ऊपर को भाग रही हो। साझीं दीवार वाले घरों में बैठे ग्रह भर साझाँ ग्रह होते हैं सिर्फ दोस्ती में, लेकिन अगर कोई व्यक्ति स्वयं अपनी मर्जी से दोनों ग्रह को साझाँ कर ले तो शत्रुता का प्रभाव भी आपस में शामिल होगा। उदाहरण के तौर पर चन्द्र शनि साझाँ दीवार वाले घरों में होने से अलग-अलग रहेंगे। लेकिन कुंए **का महल फाड़ कर खाना या मकान बनाया जाए और कुंए और नए मकान को इकट्ठा कर लिया जाए तो दूध में जहर होगी।** चन्द्र (दूध, माता, औलाद धन) नष्ट होगा और अधरंग तक हो सकता है यही हाल बुध शनि के वक्त लोहे के गार्डर शहतीर खड़े करके ऊपर आंगन बनाने पर होगा। बुध बर्बाद होगा, **पागलपन सिर की खराबियां बहिन भुआ फूफी तबाह होंगी।** अंगुलियों के बीच सुराख होने से समय जरूरत या अचानक रूपया के मिलने या न मिलने से शुभ है। आमदन खर्च,

कमाई से या बचत से कोई संबंध नही। तो बात हथेली से सम्बंध रखती है। अंगुलियों में अगर कोई भी सुराख न हो तो समय जरूरत रूपये का बन्दोबस्त हाजिर है। तीनों सुरखों से अगर तीन रूपये की जरूरत रूपये का बन्दोबस्त हाजिर है। तीनों सुराखों से अगर तीन रूपये की जरूरत हो मान लें हाथ में एक सुराख मौजूद हो तो दो रूपये हाजिर होंगे और एक की कमी होगी। अगर दो सुराख हो तो एक रूपया हाजिर और दो की कमी होगी। अगर तीनों सुराख हों तो तीन से तीनों ही की कमी होगी। स्त्री ग्रह (चन्द्र शुक्र) बुध के साथ जब नर ग्रह हों नेक फल होगा। जब दो से ज्यादा ग्रह एक ही घर में इक्टठे हो जाये तो दुश्मन ग्रह अपनी दुश्मनी छोड देंगे मगर अपसी दोस्ती न छोड़ेगे। नर ग्रह सूर्य वृहस्पति मंगल, मर्दो मजदूरों पर और स्त्री ग्रह चन्द्र शुक्र स्त्रियों पर प्रभाव करेंगे और नपुंशक ग्रहपापी ग्रह मय बुध तमाम बाकी चीजों पर प्रभाव करेंगे।

दो ग्रहों साझाँ चाहे वो आपस में मित्र हो या शत्रु :-

बन्द मुटठी के अन्दर के ग्रह (सूर्य वृहस्पति, मंगल, शनि) बुध अपने पक्के घर का, में से कोई खाना नम्बर 1,*7*,*4*,*10* और नम्बर 2 (गुरूद्वारा, धर्म मन्दिर, के अन्दर) जहानों का खुद अपनी उम्र और शरीरक स्वास्थ्य --पर (यानि सम्बंधित उम्र) कभी बुरा प्रभाव मौत न देंगे। जब तक कि स्त्री ग्रहों (चन्द्र शुक्र)का सम्बंध या साथ न हो जाए स्त्री ग्रहों के साथ या सम्बंध हो जाने पर शनि का प्रभाव (अगर शामिल हों) अपने अपने ऐजेन्ट राहू केतू का बुरा प्रभाव देगा। क्योंकि राहू केतू को शनि की बुनियाद गिना जाता है यही नियम यानि शनि के साथ स्त्री हो ग्रह होने पर हर घर में हो सकता है शनि अगर जाती स्वभाव से मन्दा होवे तो खाना नं 3 में बैठा हुआ भी ससुराल को उजाड़ लेगा लेकिन अगर नेक स्वभाव हो तो वृहस्पति के घरों में कभी बुरा फल न देगा। ऊंच घर के ग्रह अपना नेक फल देंगे और नेकी न छोड़ेगे। दुश्मन ग्रह के साथ वो नेकी छोड़ देंगे मगर बदी न करेंगे।

हर एक ग्रह के कायम होने, दौरा या राजा बनने के वक्त इसके दूसरी साथी साझाँ या हमसाया ग्रहों की शक्ति --

वृहस्पति के समय :–

यह ग्रह किसी से दुश्मनी नहीं करता, चन्द्र 1/2 शुक्र 3/4 गुणा, शनि 3/4 केतू 5/6 होगा वृहस्पति खुद सूर्य राहू के वक्त चुप होगा मगर बुरे ग्रहों के साथ अपना नसफ अवधि यानि आठ साल हमेशा नेक होगा दुश्मनी का प्रभावे आठ साला के बाद हो सकेगा।

सूर्य के समय :–

यह ग्रह स्वयं कभी नीच न होगा, शुक्र साथ हो तो शुक्र नीच होगा, मगर दोनों के मिलाप से बुध पैदा होगा यानि फूल होंगे मगर फल न होगा। केतू 1/2

बुध 1/2, शनि खुद अपने लिए हमेशा दौलत 2/3 और पिता के लिए 1/2 जायदाद के लिए 1/3 होगा।

चन्द्र के समय

चन्द्र से कोई दुश्मनी नहीं करता। यह ग्रह स्वयं अपना शुभ प्रभाव किसी के साथ होने पर घठा लेता है। राहू 1/2 होता है।

शुक्र के वक्त : यह किसी को नीच नहीं करता दूसरे स्वयं इसको नीच करते हैं चन्द्र 1/2, शनि 1/3।

शनि के समय : चन्द्र 1/3 केतू 1/3 होगा।

बुध के समय : शनि 1/4 केतू 1/4 चन्द्र 1/2 होगा।

मंगल नेक के समय : शुक्र शनि मंगलबद तीनों ही 1/3 हर एक केतू व बुध दोनों 1/2 हर एक राहू सिफर।

राहू के समय : सूर्य सिफर, चन्द्र 1/2 होगा।

केतू के समय : चन्द्र सिफर, सूर्य 1/2 होगा।

दोस्त दुश्मनी का भाव नेक व बुरे हिस्सा की मिकदार होगी:–

ओसतन अक्षरों में रकम का ऊपर का जब देखा जाने

कायम हो हर देखा जाने वाले या दूसरे हमसया (मुश्तरका होने वाले या देखता हो ग्रह की ताकत होगी)

	वृ०	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहू	केतू
वृ०	–	2	1/2	3 5/4	2/1	2/1	3/4	2/1	5/6
सूर्य	2/3	–	3/4	3/4	2/1	2/1			
			दोस्त ग्रहण		1/2				
			1/2		2/3				
			वालिद 1/2		सुख 1/3				
चन्द्र	2/1	2/1	–	2/1	2/2	2/1	1/3	1/2	ग्रहण
शुक्र	1/2	3/4	1/2	–	4/3	2/2	1/3	2/1	2/1
मंगल	2/1	2.2/1	1/3	1/3	2/1	2/1	4/3	०/1	1/2
					में बद				
बुध	1/2	2/1	1/2	2/2	2/2	–	5/4	2/1	1/4
शनि	5/4 दौलत		2/3	1/3	4/3	4/5	–	2/1	1/2
	वालिदा 1/2								
	सुख	1/3							
राहू	0/1	ग्रहण	1/2	1/2	2/2	2/1	2/1	–	2/2
केतू	2/1	1/2	ग्रहण	2/1	1/2	3/4	2/1	2/2	–

ग्रह के असर की मिकदार और नीचे की जब देखने वाले ग्रह के प्रभाव की मिकदार होगी। सिर्फ एक ही जगह से पूरा पूरा अक्षर देखा जाने वाले ग्रह की शक्ति से मुराद होगी।

विशेष–विशेष सम्बंधित ग्रहों की अवधि

एक ग्रह के साथ मिले हुए दूसरे ग्रह की उम्र की अवधि जबकि किसी ग्रह को निश्चित निशान दूसरे ग्रह के निश्चिर्त पर्वत पर हो या कुण्डली में उन ग्रहों का साथी पन आपसी इकटठे या इकटठे हो जाने का सम्बंध हो जाए।

मान लिया जायें कि चन्द्र वृहस्पति साझाँ हो तो वृहस्पति की उम्र 16 साल और चन्द्र की उम्र 12 साल जबकी बृहस्पति के साथ हो यानि कुल 27 साल के बाद वृहस्पति अकेला समझा जाएगा। या 28 साल उम्र के बाद वृहस्पति पर उसके दुश्मन ग्रहों का प्रभाव हो सकेगा। क्योंकि जब तक वृहस्पति चन्द्र साझाँ हो तो मिले मिलाए दुश्मन ग्रह को मार लेते हैं लेकिन जब इन दोनों में से कोई एक अकेला रह जाए तो दुश्मन ग्रह वृहस्पति या चन्द्र को मार लेगा। इसी तरह ही बाकी सब ग्रह लिए जायेंगे।

नाम ग्रह	**किस ग्रह के साथ हो तो**	**तो उम्र होगी जितने साल**
बृहस्पति	तमाम ग्रहों के साथ	16साल
सूर्य	तमाम ग्रहों के साथ	22 साल
	सिवाए राहू के साथ	शून्य
	सिवाए केतू के साथ	11 साल
चन्द्र	तमाम ग्रहों के साथ	24 साल
	सिवाए बृहे शुक्र बुध राहू	12 साल
	मगर शनि के साथ	8 साल
शुक्र	तमाम ग्रहों के साथ	25 साल
	सिवाए बृहस्पति के साथ	*60 साल*
	सिवाए सूर्य के साथ	34 साल
	सिवाए मंगल नेक के साथ	8 साल
मंगल नेक	तमाम ग्रहों के साथ	13 साल (कुल 28 साल)
मंगल बद	तमाम ग्रहों के साथ	14 साल
बुध	तमाम ग्रहों के साथ	34 साल
	सिवाए सूर्य या मंगल	17 साल
शनि	तमाम ग्रहों के साथ सिवाए	36 साल
	बृहस्पति के साथ	18 साल
	सूर्य के साथ	27 साल
	मंगल या शुक्र के साथ	12 साल

	बुध के साथ	45 साल
राहू	तमाम ग्रहों के साथ सिवाए	42 साल
	मंगल नेक के साथ	शून्य
	केतू के साथ	45 साल
केतू	तमाम ग्रहों के साथ सिवाए	48 साल
	बृहस्पति के साथ	*40 साल*
	सूर्य या शनि मंगल नेक के साथ	24 साल
	राहू या मंगल नेक के साथ	45 साल

वृहस्पति–सूर्य

अकेला गुरू जगत बाबा जो होवे आप रवि से वो कहलाता है
रवि गुरू जब इकट्ठें हों बैठे बाप बेटा हर दो मिल जाता है
किस्मत हर दो एक हो होवे मिले दोनों चन्द्र ही बन जाता है
घर टेवे सावें वो है राशि फल के इकट्ठे से ऋण पितृ हो जाता है
दुनिया की रूह का रवि होए मालिक हो मालिक गुरू जगत हो जाता है
दोनों इकट्ठे हों सांस रूहानी जहां दोनों त्रिलोकी हो जाता है
गुरू बाप बनता तो सूर्य हो लड़का भाग्य मुश्तरका दोनों का हो जाता है
बने एक राशि को दूजा ग्रह फल लिखित वड़ां विधाता बदल जाता है
तरफ पहली बैठा या बालिग जो हो असर इसका प्रबल ही हो जाता है
अकेल अकेले हो बेशक वो मन्दे असर नेक दोनों का हो जाता है
दुश्मन ग्रहों या घर मन्दे हमारे या टकराते वाहक वो टेवे में हो,
फल दोनों का ही कभर भी न मन्दा बैठे ख्वाह बेशक वो कहीं ही हो,
ज्ञान अक्ल या हवा रोशनी तो राजा योगी भी होते हैं
फल दोनों का हो उत्तम अपना दुखिया मामों को करते है
रवि गुरू होते हैं विष्णु ब्रह्म तो भाग्य उदय इसका कहलाता है
दोनों अगर हों कहीं कभी न मिलते जन्म मन्दा इसका ही हो जाता है
इन्साफ बुजुर्गी उम्र के मालिक दुश्मन से घबराते हैं,
साल साल की महादशा में वो केतू को मरवाते हैं
चन्द्र को जब दोनों देखें खुश्क कुंए भर जाते हैं
माता हो इनकी बेशक अन्धी पिस्तान हरे हो जाते हैं
शनि अगर दोनों को देखे इकदम ही सो जाते हैं
शेर गर्जता सोनों दमकता दोनों ही जल जाते हैं
बामुकाबला हो कभी बैठे बजीर मातहती होते हैं
राजा दनका हो मालिक राशि जिसमें कि वो बैठे हैं
हाथ की रेखा जन्म हो कुण्डली या मिले कभी दो न हों
मिले सूर्य रेखा किस्मत फल मन्दे दोनों के हों।

वृहस्पति को सिंह माना गया है ओर सिंह राशि सूर्य का अपना घर है। सूर्य का रथ मगर सिंह राशि को भी शेर गिना है यानि सूर्य सिंह या शेर जुता हुआ मालूम होता है वृहस्पति सूर्य साझाँ सब को उपदेश देवें, मगर खुद अपने लिए जब दोनों में कोई खुद ही मुसीबत में गरीबी ही की सब कुर्बानी दे देवें का असूल होगा या **अपनी जगह कुत्ते (केतू) को मरवा देगा।** सूर्य की अपनी चीजें औलाद को छोड़ कर केतू के खाना नं 6 में मामा को अपनी बताए केतू की महादश की अवधि का सात साल तकलीप होगी। दोनों मुश्तरका-किस्मत का प्रभाव शेर की रफतार और ताकत के समान दमकता सोना होगा और टेवे वाले की 38 साल उम्र तक दोनों ग्रह इकटठे गिने जाएगे जिसमें पहले वृहस्पति का बाद सूर्य का प्रभाव होगा, फिर भी दोनों का अलग-अलग और उत्म फल होगा। आपसी सम्बंध प्रभाव शुरू होने के वक्त सूर्य का असर प्रवल और व्यक्त होगा। मिकदार मुश्तरका मे सूर्य का प्रभाव अगर तीन हो तो वृहस्पति का प्रभाव दो होगा। दिमागी खाना नं *20 बुढ़ापे* का मालिक अन्दर बाहर से नेक हो। बाप बेटे का एक ही बिस्तरे पर सोना हर दो की किस्मत कि लिए शुभ होगा। अलग अलग जिन्दगी असर करने का मौका या जरूरत हो तो अब पूरा पर बिस्तरा से पीठ तले बिछाया जाने वाला कपड़ा दरी आदि बेटे को अपने पास रखना और खरा कर रात को अपनी **पीठ तले बिछाना बिलकुल शुभ होगा।** बाप की स्वयं मौजूदगी या किसी भी ओर **तरह हालत में ऐसे कपड़े की बजाए वृहस्पति की चीजें रात को पीठ तले रखना शुभ होगी।** अगर ऐसा न हो सके तो घर से **पुरानी वीराना वीराना चारपाई बेटे के लिए शुभ होगी।** वृहस्पति सूर्य साझाँ में मशनोई चन्द्र का प्रभाव होगा जो माता-पिता खून या लज्जा का मालिक होगा ओर अब वृहस्पति बाबे की जगह कुण्डली वाले का पिता शुभ होती है यानि जिस कुण्डली में यह दोनों ग्रह इकटठे हो उस कुण्डली में यह दोनों ग्रह इकटठे हो उस कुण्डली में बाप बेटे की मुश्तरका किस्मत की मिलावट के समय में बुध की खास नाली सम्बंध रखती हुई होगी जिसमें वालिग टेवे वाले को शुक्र और नाबालिग टेवे को बुध गिनेंगे बाकी नियम बुध की नाली के होंगे। पितृ ऋण, बाप बेटे की वाहमी उम्र और किस्मत के मुश्तरका असर के साल वास्ते

==

किस्मत *1 7 14 21 28 35 42 49 56 63 70 120*

==

उम्र *70 63 56 49 42 35 28 21 14 7 1 120*

==

बाप बेटे की साझी किस्मत

दोनों की किस्मत का जुदा जुदा असर 100 प्रतिशत दृष्टि से मिला हुआ गिना जाता है दोनों के वर्षफल के हिसाब से तख्त के मालिक ग्रहों से जो ग्रह (वृहस्पति के बाद सूर्य के बाद चन्द्र के बाद शुक्र, शुक्र के बाद मंगल आदि) क्रमानुसार पहली तरफ का हो वो दोनो की साझाँ किस्मत का प्रभाव लेने के समय अब तख्त की मालिक ग्रह और ग्रह फल का होगा। दोनों की अलग-अलग दोनों के लिए राशिफल के लेंगे यानि दोनों की साझाँ किस्मत का हाल देखने के लिए तख्त का मालिक ग्रह तो दोनों के लिए एक ही ऊपर के ढ़ग के लिए हुआ होगा। मगर उम्र के अनुसार से राशि नम्बर बोलने वाले ग्रह दोनों के अपने अपने और अलग-अलग होंगे ऐसी साझाँ किस्मत की तबदीली का साल जो हर व्यक्ति के लिए अकेले के हाल के लिए गिना जाता हैं। बाप बेटे की औसत किस्मत के लिए ऊपर दिए हुए नक्शो के अनुसार होगा यानि बेटे की एक साला उम्र बाप 7 साल उम्र पर प्रभाव करेगी ओर बेटे की सात साल उम्र की किस्मत का असर बाप की 63 साल उम्र की किस्मत पद असर होगा (ऊपर का असर दंखने के लिए दोनों के ग्रहो का बालिग या निाबालिग होने का तरीका जो जुदा जुदा हैं भुल न जाएं। ऊपर का बसूल दोंनों के बालिग हो की हालत का हैं दोनों में से ग्रह चाल) उम्र के लिहाज से नही जो नाबालिग होवे दसका हाल छोड़ ही देंगे और बालिग ग्रहों वाले का आम अकेले आदमी का हाल देखने के असूल पर देख लें। अब बानिलग ग्रहों वाले की किस्मत का असर नाबालिग ग्रहों की किस्मत पर प्रबल होगा।

दोंनों ग्रह देखते हो चन्द्र को तो चन्द्र खूद बखुद अपना नक असर पैदा कर देगा। खूश्क कुंए में खूद बखुद पानी आ जाए। बच्चे की हआवाज से ही माता के पिस्तान में दूध आ जाएगा। चाहे अन्धी ही हो (चन्द्र खुद दुश्मन ग्रहों से मारा हुआ)

दोंनों आपस में देख रहे हों और चन्द्र कायम हो तो नरूरी सफर सम्बंधित राज दरबार के नक नतीजे होंवे।

दोंनों मुश्तरका को शनि देखे तो फैसला हक में होने की कोई विश्वास न होगा शनि अगर व जात स्वयं पेक हो तो कद्रे उत्तम नहीं तो सख्त खराबी होवे।

दोनों बामुकाबिल हो तो किस्मत रेखा में सूर्य या सूर्य को रेखा चली जाए तो राजदरबार से नक ताल्लुक , तरक्की ओर बंहतरी होगी मगर किंसमत इख्तयाद किसी दूसरे के हाथ में होगा यानि जिस जिस राशि नम्बर में हो उस राशि के घर के मालिक के ताल लुक का असंर होगा। सूयध्ध के साथ बुहस्पति होने के साथ से किस्मत का ताल लु भैरों के साथ से नेक मगर रूहानी होगा। तिस तरह हवाके वगैर जाग की उर्मी से दम घुटता मालूम होता हैं इसी तरह ही वृहस्पति के साथ

के बगैर सूर्य का प्रभाव जना देने वाला होता हैं यानि जब कभ्भी सूर्य मध्यम हुआ या सूर्य रेखा वृहस्पति पर गद्द हुई मस्थन हुई या अगर सूर्य किस्मत रेखा से न मिले या अगर किस्मत रेखा हाथ मे न ही हो या वृहस्पति या सूर्य का पर्वत ऊँचा न हो या अगर सूर्य रेखा तो हो मगर किस्मत रेखा न ही हो तो तमाम हालतों में मन्दा नतीजा ही होगा। जब यह रेखा (सूर्य) किस्मत रेखा से मिल जाए तो कामयाबी जरूर होगी परन्तु स्वयं कोशिश से। अगर किस्मत रेखा से न मिले तो किस्मत चमक न होगी ओर अगर किस्मत रेखा न ही हो तो हर काम में तकलीफ होगी कि बिना सूर्य रेखा हर तरह से नाकामी होगी और जिन्दगी का आनन्द न होगा बल्कि जिन्दगी सिर्फ खाना पुरी का नाम होगी।

वृहस्पति–सूर्य खाना नम्बर 1

रवि गुरू घर पहले बैठे तख्त सुनहरी का हाकिम हो,

उम्र लम्बी और सुख गृहस्थी मिटटी का चाहे माधो हो, दुनिया का पूरा आराम होगा कनिष्का ओर अनामिका के बीच सूर्य की लम्बी रेखा हो तो दुनियावी तजुर्बा हुनर में कामयाबी बताती हैं चाहे वो लिखा पढा हो तो चाहे न हो।

वृहस्पति–सूर्य खाना नम्बर 2

दोनों मिल कर घर दुजें में उपदेश गुरू का सुनाते हैं,
महल मकान सब अहले उसके शेर गर्जते होते हैं

शेर समान बहादुर, बेदड़क मगर बेरहम होगा।

वृहस्पति–सूर्य खाना नंबर 3

घर तीजा त्रिलोकी गिनते सोना माया कुल बढ़ती हैं,
माया लालच का पुतला जो होवे कुल गारत ही होती हैं

वृहस्पति–सूर्य खाना नम्बर 5

दोनों मिले जब पांच वे बैठे सोना घर औलापद के है
रवि राजा घर अपने बैठा गुरू पहचान वजीर भी हैं
माया कभी न हवा रोशनी बैठे वहां ख्वाहपापी हो
बुध अगर आ निकले दस घर रवि गुरू भी कैदी हों
घर इसका गऊघाट ही होगा; बाकी पुच ही बचते हों
धर्म दौलत की कमी न काई बात बच्चे सब बढ़ते हों
बाकी घर 6,7 या 10 हो11 रवि गुरू नहीं मिलते है
फल दोंनो का अपना अपना तरफ बुढ़ापा गिनतें हैं
घर ना बारह शुरू आखिरी कुल उन्नति भी लेते हैं।
खाने घर आठवें वो मौत हटावे जागती किस्मत करतें हैं।

वृहस्पति – चन्द

किस्मत का सर समान छत्रधारी या बड़ का साया । यह हर विशेष स आम को फायदा देने के लिए होगा और टेवे वाले को 28 साल उम्र के बाद बृहस्पति अकेला समझा जाएगा जिसका (बृहस्पति का)असर 16 साल उम्र के शुरू हुआ या , 28 साल उम्र के बाद बृहस्पति पर दुश्मन ग्रहों का असर हो सकता हैं मुश्तरका वक्त में दोनों का असर मिला मिलाया उम्दा और उत्तम होगा । मिकदार मुश्तरका में चन्द्र का असर अगर एक हिस्सा हो तो बृहस्पति का दो गुणा होगा । बृहस्पति चन्द्र मुश्तरका (छत्र) दोनों मुश्तरका या बामुकाबल अक्ल घटे पर धन बढ़े सफर भी उत्तम हो, वास्त-काश्त सब फले देविक सहायता भी हो ।

चन्द्र का पुरा नेक असर होगा । सबसे उत्तम लक्ष्मी होगी और दिल की पूरी शान्ति होवे । चन्द्र वृहस्पति दोंनों इकटठे हो तो दोनो का मिला हुआ असर निहायत उत्तम होगा । **चन्द्र चावल जिस कद्र बुढा हो या बाप दादा के समय का होता जाए किस्मत बढ़ती जाए । अक्ल जावे धन और आप का हाल होगा** । अगर चन्द्र के पर्वत से निकली हुई रेखा किस्मत रेखा में ही समाप्त हो तो मामूली सफर और आम चन्द्र के पर्वत के सम्बंधित कामें में किस्मत का नेक असर देगी चन्द्र से । ख माता-पिता की जायदाद कास्त की जमीन, गैबी मदद , जब चन्द्र देखे बृहस्पति का सफर दरपेश रहें । बालाई आमदन से मुराद होगी चन्द्र सू बुहस्पमित ही तरपु को रेखा हो तो ससुराल से धन दौलत मिले । दौलतमन्द और साहब इल्म हो ।

दोनों मुश्तरका हो तो कुण्डली मे अपने दोस्त ग्रहों से पहले घरों में एक से 6 में बैठे हो , अपना नेक फल, मगर बाद के घरें 7 से 12 में अपनें से पहले बैठे हुए दोस्त को पूरी मदद देंगे, व ख्वाहदृष्टि का ताल्लुक हो या न हो । तहलीम 24 साल तीर्थ यात्रा 2 साल, चन्द्र का असर 12 होगा । चान्दी की थाली अच्छे घर में मानिद मौनसून उम्दा हवा मन्दे में कशेप (गन्दी) हवा, दोनों का मुश्तरका उत्तम फलहोगा और माता पिता का असर बड़ के पेड़ के साया की तरह होगा। ठण्डी हवा (खुशकी) **पुराना चावल, बुढापा दिमागी खाना नम्बर** 21 हमदर्दी या नर्म दिल का मालिक होगा । जब दोने अलग-अलग और एक दूसरे के सामने या अपने से सातवें (7) हो तो जब कभी भी शनि या दुश्मन ग्रंह की सम्बंधित वस्तुयें मकान शनि, शादी शुक्र वगैरह का समय आये चन्द्र वृहस्पति माता पिता खत्म होंगे हो **पहले घर का हो तो बाद में तो बाद के घरें का हो वो पहले खत्म होंगे जो पहले घर का हो तो बाद में तो बाद के घरें का हो वो पहले समाप्त होगा। दोनो ग्रहो का चलता रखने की खातिर केतू (आसन) जमीन में स्थापन करे या केतू की चीजें तह जमीन में या इसके गले में डाले ।**

दोनों साँझा के बामुकाबिल हो शुक्र मंगल या शुक्र शनि या मंगल शनि हो तो नेक फल देंवें। दोनों साझाँ को देखे तो हाजिर कलम दूसरों को भी फायदा पहुंचे द्वारा ठोस हाजिर माल दूसरों को भी तारता जाए।

यदि शुक्र हो तो शादी के दिन से धन दोलत आगे बढना बन्द हो, बल्कि घटना शुरू हो जाए। यदि शनि हो तो इसकी दोस्ती से दूसरों को लाभ मिले सबके लिए लोहे को पारस का काम देगा।

यदि बुध का साथ या देखता हो तो उत्तम फल बुध की दुश्मनी न होगी बल्कि उसकी सहायता होगी।

दिमागी खाना नं० 18 भरोसा अगर शनि उम्दा जो तो नेक प्रभाव नहीं तो फोकी उम्मीद नास्तिक होगा।

दिमागी खाना नं० -27-राग

दिमागी खाना नं०-28-जबानदानी

बुध हो तो तजारत (दलाली) मे फायदा अंजीम हो

दिमागी खाना नं० -*40* वजह सबक की ताकत।

दिमागी खाना नं० - *40* मुकाबला एक चीज का दूसरी से।

दिमागी खाना नं०-41 इन्सानी सम्बंध

दिमागी खाना नं०- 42 समझौते का मालिक होगा।

नम्बर 2 का बुध पिता पर भारी और नं० 4 का बुध माता पर मन्दा होगा, चाहे लाखोपति परन्तु मुसीबत पर मुसीबत, सहायता न देवे। मगर धन दौलत के लिए उत्तम होगा। बाकी सब घरों में वृहस्पति की हालत पिघले हेए सोने की तरह की होगी या बुध और पापी ग्रहो के सम्बंध में वृहस्पति की हर शक्ल में बदला जा सकेगा

बृहस्पति–चन्द्र मुश्तरका खाना नम्बर 7

दोनों का उत्तम फल, 28 साल उम्र से पहले शादी मकान (नया मकान) या पैदाइश नर औलाद से उत्तम प्रभाव माता-पिता की आयु अक्सर कम होगी जबकि खाना नं० - खाली हो। **मिट्‌टी में मंगल की चीजो के दबाने से सहायता होगी।** अगर 28 साल उम्र के पहले शादी हो, मकान बने या लड़का पैदा हो जाए तो चन्द्र फल मन्दा होगा।

वृहस्पति – चन्द्र खाना नं० –8

दोंनो का उत्तम और बहुत अच्छा होगा।

वृहस्पति का जो नं० - 4 में ऊँच होता हैं वड़ के पेड़ का हजारें लाखें के लिए नेक सहारा होगा। अच्छी आमदन, माता का सुख-सागर व जददी जायदाद के बुद्धि होगी। अब राहू बुध का सम्बंध मन्दा न होगा यानि बड़ पर तिलक का सम्बंध कम होगा तो दूध बोतल में बन्द होगा। जिसका स्वाद न होगा, फिर भी

होगा तो बिच्छु या भिड़ की जहर होगा, जिसके लिए साली औरत की बहिन का सम्बंध शुभ न होगा। जब चन्द्र के पर्वत पर चन्द्र रेखा 2 या टेढा खत वाक्या हो तो आमदन, दैविक सहायता माता का सूख व साथ खेती की जमीन जददी जायदाद सभी का नेक प्रभाव व्यक्त होगा शर्त यह है कि ऐसी रेखा किस्मत रेखा में **मिल गई हो और किस्मत रेखा में मिल कर समाप्त हो जाए।**

वृहस्पति चन्द्र खाना नं०–3

खुशहाल, भाग्यवान, धन रेखा दौलत का मालिक होगा। स्वयं तो और इसका धन भाईयो को तारे जो इकबालमन्द हो जाए मगर तोते की आवाज या सम्बंध हर तरह से मन्दा होगा मंगल नेक धन रेखा का आखिर या दोबारा जन्म लेने का मुकाम गिना हैं यानि सम्बंधित दुनिया से नेक प्रभाव होगा या इस रेखा या धन से तमाम सहायता हो जायेंगे।

वृहस्पति चन्द्र खाना नं०–4

छवधारी समान, बड़ के तने ही सतून की तरह अपना सहायक बना लेवें। **नाव जहाज का काम देवे।** जन्म से ही धन का चश्मा निकल पड़े ओर पूरी शन्ति होवे। क्योंकि खाना नं०-4 चन्द्र के पर्वत धन रेखा के निचले की जगह गिना हैं, यानि धन दौलत के आने के अब यह दोनों ग्रह मालिक होगें। दोनों ग्रहो का उत्तम मार्ग बढ़ेगा चन्द्र का नेक फल। दिल की पूरी शन्ति ही नेक से नकल होता चला जाए। पानी की नाव हवाई जहाज का काम देवे। **अगर कलाई से शुरू होकर रेखा में मिल कर खत्म ही हो जाए तो बिलकुल शुभ प्रभाव होगा** क्योंकि वृहस्पति और चन्द्र(दिल रेखा) एक दूसरे की और आपसी दोस्त है।

वृहस्पति चन्द्र खाना नं0 5

चन्द्र वृहस्पति से मिला हुआ सूर्य उत्तम फल देगा यानि अब सूर्य का फल दोनों की जगह बुलन्द और नेक होगा। किस्मत रेखा अगर झुक जाए तो सूर्य दौलतमन्द, हाजिर माल, अहल कलम हो तो दूसरों को भी फायदा होवे।

वृहस्पति चन्द्र खाना नं0 6

बुध व केतू का जैसा भी फल होवे उन दोनों के उत्तम फल में शामिल होगा। बंजर की जमीना में कुंआ लगाना सब उम्दा प्रभाव हो पाताल में ले जाएगा और उसे और फायदा उठाने वालों को बर्बाद कर देगा। बुध और केतू के सम्बंध से यानि जैसा भी उनका हाल हो वो इन दोनों के उत्तम फल में अपना प्रभाव मिलाऐंगे।

वृहस्पति चन्द्र खाना नं0 7

बचपन में तकलीफ हो चन्द्र के समय (24 साल उम्र से) माता पिता दोनों दुखिया होवे। धन दौलत शादी के दिन (शुक्र का असर) और लड़की के जन्म में (बुध का असर) घटना शुरू होवे मगर **दलाली लाभदायक व्यापार**

होगा। किस्मत रेखा अगर बुध की ओर झुक जाए तो दलाली या व्यापार में फायदा होवे।

वृहस्पति चन्द्र खाना नं0 8

उम्र लम्बी, होगी मगर धन की खातिर भाइयों को मारे। इसका या ऐसा धन भाईयों को मरवाए या मारे। मंगलबद भाई बन्धु सब धन की उम्मीद रखने वाले होंगे और हर हालत में तंग होंगे। यानि दोस्ती दुश्मनी सहायता विरोद्धिता हर दो पहलू पर हो सकते हैं। आम तौर पर अपने लिए नुकसान देह न होगी। लड़ाई में हानि भी हो सकती है और सहायता या सिपहसालारी भी है, यानि कोई भाई तो धन रेखा की असलियत या चन्द्र (माता) और कोई माम भान्जों की चान्दनी गिनेगा। उत्तम धन वो है जिसमें श्रेष्ठपन की लहर हो। **माता घर में शनि या मंगल की चीजें तवाह ही होगी।**

वृहस्पति चन्द्र खाना नं0 9

दूध से पले हुए पेड़ की तरह नेक किस्मत माता-पिता का पूरा और लम्वा सुख सागर शर्ते यह है कि लड़की की किस्मत लेने वाला या उनका पैसा या धन न खाने वाला हो। मातृ हिस्से की मदद, तीर्थ यात्रा 2 साल और उत्तम होगा। दबा हुआ धन होगा जो पेड़ की **अच्छी जगह पर होने वाली जड़ की तरह चन्द्र वृहस्पति से समय (जब वो नं 9 में आवे) जिसका इसके वर्षफल से पता चलेगा,** फिर ऊपर को यानि नीचे से पेड़ के ऊपर हिस्सा में नेक असर करने की तरह फिर चल पड़ेगा और कुण्डली वाले के अपने काम आएगा दिल की पूरी शांति और बड़ के पेड़ की तरह माता-पिता का पूरा नेक और उत्तम साया होगा **चन्द्र की सभी चीजों का शुभ प्रभाव होगा। पानी की नाव हवाई जहाज का काम देवें।**

वृहस्पति चन्द्र खाना नं0 10

मां बाप के पास सोने चांदी की ईटें होते हुए भी आखिरी समय कुण्डली वाले के लिए वो पत्थर और नेक पानी की जगर सिर्फ पानी के बुलबुलों की झाग होगी। किस्मत मन्दी (सिर्फ बाल्दने की तरफ से लड़के के अपने लेने देने के लिए)वो झाग भी समुन्द्र झाग न होगी जो किसी दवाई ही के काम आ सके। घोड़ी की दुम लम्बी हो तो बेटे को क्या सहायता । बेटे को क्या सहारा सिर्फ दिखलावे की शान (वो भी माता-पिता को अपनी) मगर लड़का दूसरों का निगरान वाला व्यक्ति होगा।

वृहस्पति चन्द्र खाना नं0 12

राजा मगर धन दौलत से राजा समान जनक पूरा त्यागी होगा। शादी के दिन (शुक्र का वक्त) और लड़की की पैदाईश (बुध शुरू)से धन बर्बाद और जायदाद का फल मध्यम होगा चान्दी (चन्द्र) की जगह कली की सफेदी (बुध का

प्रभाव) होगी। सोने चांदी के पुलों में अब उत्तम परन्तु खशबु की जगह मन्दी बदबू के फूल होंगे। जायदान के मकान अन्धेरे और उनमें मकड़ी के जाले अधिक पैदा होंगे। **अब चांदी का खाली बर्तन तह मकान में दबाना शुभ होगा।** वृहस्पति चन्द्र सोने चांदी के तख्त के मालिक वाले पिता के टेवे में खाना नं 1 में होंगे। काल मया वाले बाप के टेवे में खाना नं 1 में नहीं होंगे।

वृहस्पति–शुक्र

दोनों ग्रह साझों में पहले वृहस्पति और फिर शुक्र का प्रभाव शुरू होना गिनते है और टेवे वाले की 33 साल उम्र तक दोनों साझों लेंगे। प्रभाव की मिलावट में अगर वृहस्पति का एक हिस्सा हो तो शुक्र का 3 गुणा असर शामिल होगा। रफतार प्रभाव में अगर शुक्र दो गुणा तेज हो तो वृहस्पति अगर हवा माना गया है तो शुक्र मिट्टी, दोनों के मिलाप से दुनिया में सर्दी गर्मी का फर्क खड़ा हुआ अगर हवा में मिट्टी के कन शामिल न हो तो सूर्य की गर्मी का दुनिया में जोर न होवे। वैसे इसी तरह इन दोनों के मिलाप से दुनियावी किस्मत का हाल होगा यानि अगर सुख चार साल हो तो दौलत दो साल, आमदन *60* साल मुहब्बत *30* साल समान आयु प्रभाव होगा। वृहस्पति का प्रभाव मध्यम और शुक्र इच्छा वे इश्क में कामयाब होगा। दोनों की मिलावट से मशनोई शनि (केतू स्वभाव) होगा जो बीमारी दुख से बचाएगा। मगर कल्लर की जमीन का हाल, **कामदेव की ज्यादा रंगवत दोनों का फल मन्दा करेगी** धन दौलत न होगी मगर शरीरक नुक्स या मन्दा चाल चलन हो सकता है। अकेला शुक्र **स्वयं वृहस्पति का बुरा प्रभाव न देगा, बल्कि गुरू की सारी उम्र सेवा करेगा,** क्योंकि शुक्र आखिर औरत ही है। शुक्र और वृहस्पति बराबर है वृहस्पति तो किसी से दुश्मनी नहीं करता, मगर शुक्र की कानी औरत (शुक्र की एक आंख मानी गई है और स्त्री ग्रह है, वृहस्पति नर ग्रह है) वृहस्पति के जर्द रंग सोने या शेर नर से प्रार्थना करती है और इन्सान के रास्ता में इश्क की लहर से रूकावट पैदा कर देती है इसी वजह से बहुत बड़ा शुक्र औलाद से तंग रखता है और अगर पैदा भी होवे तो वृहस्पति और शुक्र की आपसी दुश्मनी से मर जाती है शुक्र वृहस्पति साझों तर्जनी व अंगूठा मिली हुई जन्म लेते वक्त दुख हो दोनों मुश्तरका या बामुकाबल हो तो दोनों का फल खराब। सोने में मिट्टी मिली हुई मगर औरत की मदद मिलती रहे। किस्मत रेखा में शुक्र के पर्वत आ मिले तो औरतों की मदद और सम्बंध दोनों ग्रहों के इकटठा होने के वक्त शुरू का फल होगा (जिस तरह सूर्य के लिए बुध का हाल है) और वृहस्पति का स्पष्ट होगा।

वृहस्पति शुक्र खाना नं0 1

काग रेखा के मन्दी हाल वाले साधु की तरह की किस्मत होगी। गृहस्थ बर्बाद, मंगल में इज्जत होगी बाप और औरत दोनों में से एक रह जाने पर नेक

प्रभाव का होगा।

वृहस्पति शुक्र खाना नं0 2

नर औलाद के विधान वा औलाद की पैदाइश के झगड़े होंगे। सोने की जगह मिटटी तो होगी मगर वो मिटटी आम सी कीमती असर की हालत होगी या मिटटी के कामों से सोना और सोने के कामों में राख हासिल होगी इसका घर बाकी दो बचने वाले मकान की हैसियत का (कुत्ता समान)होगा।

वृहस्पति शुक्र खाना नं0 3

खुशहाल भाग्यवान हो, औरत मर्द का काम देगा ऐसा धन भाईयों को तारे।

वृहस्पति शुक्र खाना नम्बर 4

हर औरत एक बच्चा बतौर नमूना देवे और चल बसे। घर घर के टुकड़े की तरह औलाद का हाल हो।

वृहस्पति शुक्र खाना नं0 5

विद्या औलाद के द्वारा बढ़े और बरकत पाए विद्या से खूब धन कमाए।

वृहस्पति शुक्र खाना नं0 6

पावं का अंगूठा व तर्जनी बाहम मिले हुए तो तो मन्द भाग्य होगा। नर औलाद न हो या न रहे। अगर रहे तो मन्द किस्मत कर देवे।

वृहस्पति शुक्र खाना नं0 7

वृहस्पति नं 7 का हाल, धन की कमी की वजह से पेट के लिए औलाद की कुर्बानी तक दे जाए या खुद सोने से मिट्टी बढ़ा लाए। **अगर बुध या लड़की का साथ या नेक सम्बंध रहे तो धन गुम होने पर भी तंग न होने देगा।** सन्तान सुख पाए मगर स्वयं बेआराम ही होवे। इश्क में शमा का परवाना होने की आदत वजह जबाल होवे। मिटटी भरी तेज आंधी की तरह की किस्मत। वृहस्पति का प्रभाव मन्दा होगा। शुक्र का प्रभाव भी सिर्फ जाहिर दारी का और बिन मतलब का होगा जो वृहस्पति के प्रभाव में जहरीला पन (वास्ते पैदाइश नर औलाद खास कर) देगा। जमाना की तरह से वृहस्पति की हवा का सहारा फर्जी बल्कि जहरीला होगा या वो स्वयं ही यज्ञ के लिए अपनी ही औलाद की कुर्बानी देकर सोने की जगह मिटटी का बदला लाएगा। या **वैसे ही मिट्टी बदल कर आ जाएगी। वृहस्पति में बेशक शुक्र का बीज होने से इसका प्रभाव जहरीला हो जाए। फिर भी इसमें शुक्र जिसे औरत माना है,** छिपी हुई है जो एक की बीज की परवरिश करती है। इसी नियम पर बीज मिटटी के बाहर हवा को ढुढ़ने आता है और सब मुसीबत पैदा होती है जिसे वृहस्पति की सहायता कह सकते है यानि बेशक ऐसे व्यक्ति की किस्मत मन्दी भी हो जाए फिर भी तो दोबारा हर तरह से खुशहाल हो जाएगा।

दोनों को बुध का साथ नं 7 हो तो अगर बुध का भी साथ हो जाए (बुध

नं 7) तो मिट्टी भरी हवा से बुध का शीशा अगर और बहने लगे तो शुक्र बुध मशनोई सूर्य का प्रभाव (धन दौलत न सही खुराक अन्न पानी) **तो जरूर हो पैदा रखेगा। लगे व गैस होगी चाहे जहरीली ही हो।**

वृहस्पति शुक्र नं 7 मंगल नष्ट हो तो बहुत बड़ा शुक्र होगा या वृहस्पति मन्दा होगा। खस्सी सांड की तरह औलाद से महरूम होगा। अपनी औलाद का सुख न पाए। सन्तान के बिना हो और वो सन्तान, तो आराम पावे मगर कुण्डली वाले करे उससे कोई भी लाभ न हो। जोड़ खाएंगे और का हिसाब होगा। अगर चन्द्र भी खाना नं 7 में साथ हो तो शमा के परवाने की तरह इश्क की लहर में चलने वाला होगा और अगर सूर्य भी नष्ट हो जाए। नाकामयाब आशिक और तबाह होगा।

वृहस्पति शुक्र खाना नं0 8

धन दौलत उत्तम प्रभाव वृहस्पति नं 2 मगर शुक्र की ही फल जो नं *10* का है सिवाए धन दौलत के बाकी सब नेक शब्दों का होगा।

वृहस्पति शुक्र का खाना नं0 9

शुक्र नं 9 का वृहस्पति नं 9 अलग-अलग बल्कि फिर भी उत्तम होगा। दुनिया का पूरा आराम, स्त्री भाग्य में कामरेख (अगर तीर्थ यात्रा 2 साल उत्तम)का मन्दा फल होगा।

वृहस्पति शुक्र खाना नं0 10

दूसरों की मौत से खुद मरे। वृहस्पति जब शुक्र से नीच दोनों का नं *10* दौलत खराब न होगा, मगर चाल चलन व जिस्मानी नुक्स होंगे। नीच बृहस्पति खाना नं *10* (4) शुक्र के सम्बंध से (यानि पराई औरत आदि) सन्तान का दुख माता को पिता का दुख माता पर स्वयं इसका कोई प्रभाव न होगा। अगर वृहस्पति (खाना नं १०)नीच भी हो जाए या वृहस्पति का पीला रंग सोना अगर शुक्र से मिट्टी की हो जाए तो आम मिट्टी से कीमती होगा। भाइयों से दुश्मनी सम्बंधित दुनिया से दुश्मनी ; धर्म से विरोद्धिता, आमदन में सोन से मिट्टी मिलेगी और हवा की तरह आई हुई लक्ष्मी हवा हो जाएगी। पांव की मिट्टी (शुक्र)पर चढ़ जाएगी। या सिर में खाक या सिर पर खाक पड़ जाएगी। **आदमी कोई फकीर साहब कमाल होगा,** बल्कि फकीर उत्तम दर्जा होगा (तेजी पीछा मुड़ मुड़ देखे यानि (।) एक फकीरी लेख दी किस्मत की (2) दूजी होवे भैंस दी (यानि पहरावेगी) (3) तीजा पीछा मुड़ मुड़ देख दी। हर सांस में (वृहस्पति) वही होगा कि आता है याद मुझे गुजरा हुआ जमाना।

वृहस्पति शुक्र खाना नं0 11

किस्मत में सोने की जगह जर्द पांडव होगा।

वृहस्पति शुक्र खाना नं0 12

सभी गृहस्थी व आराम होगा। मवाए व्यापार सट्टा जो मन्दा प्रभाव देगा।

वृहस्पति–मंगल

दोनों ग्रह टेवे वाले की 72 साल उम्र तक इकटठे होंगे। वृहस्पति 16 साल से शुरू होगा दोनों साझों में अगर वृहस्पति का नेक हिस्सा एक हो तो मंगल का नेक हिस्सा दो गुणा होगा। मिला मिलाये समान नेक जैसा होगा। बद से ढाल की तरह बद बख्त होगा। आम तौर पर वह न्यायक होगा , एवं दूसरे पर जयादती करते न देखेगा। हाथ पर निशान गदा (हथियार) एक हो या दोनों खाना नं 1 में हो तो सरदार हुक्मरान, दो से पांच तक दोनों ग्रह दो से पांच तक है परन्तु स्वार्थी परहेजगार होगो। पांव से ज्यादा हो या खाना नं 6 से 12 में हो तो ब्रह्म ज्ञानी होगा। किस्मत रेखा में से मंगल नेक को या बुध को रेखा हो तो हर समय सहायता धर्मात्मा, स्वयं सहायता करने वाला प्रभाव, हौसला आन्तरिक व दैविक शक्ति की सहायता होगी। आठ साल औलाद होती रहे यानि हर आठवें साल ज्यादा से ज्यादा के अन्दर और औलाद हो जाया करेगी। मंगल बद से या मंगल बद को किस्मत रेखा की तरफ कोई आई हुई रेखा अपने ही भाई बन्धु का सम्बंध बताएगी। बीमारी 31 साल उम्र तक और नुकसान पांच साल उम्र तक होगा। मर्दा रंग व तकलीफ रिस्तेदारों की मौते कायम होंवे।

दोनों को शनि देखें तो विरोद्धिता न होगी बल्कि धन दोलत के लिए महावन उम्र का शुभ प्रभाव होगा यानि कब्र से वापिसी तक।

वृहस्पति–मंगल खाना नं0 1

दोनों का अलग–अलग खाना नं 1 का प्रभाव, मंगल ने वृहस्पति हाथ पर शंख चक्र अंकुस (कान का दायरा कुण्डल) तीनों निशान इकटठे ही हों तो बड़ा ही अमीर हो।

वृहस्पति–मंगल खाना नं0 2

दोनों किसी तरह से भी वृहस्पति के पक्के घर खाना नं 2 में इकटठे हो रहे हो तो औरत खानदान या ससुराल का सम्बंध होगा मंगल नेक से निकली हुई रेखा जो किस्मत रेखा में जा मिले औरत खानदान के गृहस्थियों का सम्बंध नेक कर देगी या दोनों ग्रहों का बिलकुल की उत्तम फल होगा। सम्बंध गृहस्थ इसकी आवाज पर कटा दे और इसके पसीना की जगह खून बहां दें। मंगलबद की तरफ की रेखा मन्दा फल देगी।

दोनों नम्बर दो में बुध नं 6 में हो तो सिर रेखा में शुरू में वृहस्पति के पर्वत में अगर चोकोर ❑ या मंगल नेक होवे तो दिमागी लियाकत से ऐसे आदमी को दौलत की पूरी प्राप्ति या लाभ हो।

वृहस्पति–मंगल खाना नं0 3

पूजा पाठ में मगन, बुजुर्गो के धन की पूरी रक्षा करेगा और कायम रखेगा मगर अपना और नया धन मिलाने की शर्त न होगी।

वृहस्पति–मंगल खाना नं0 4

मर्दो की तायदाद में कमी न होगी मगर उनके गुजारे के लिए धन की शर्त न होगी।

वृहस्पति–मंगल खाना नं0 5

औलाद की पैदाइश के साथ ही धन का शानदार चश्मा ठण्डी हवा की तरह बहने लगेगा। खूब रौनक होगी। 28 साल उम्र तक बढ़ता जाएगा। मान से हर दम बढ़ेगा मगर दान लेने से सोने की कोठ हो जाएगा ।

वृहस्पति–मंगल खाना नम्बर 6

अब स्वयं ही वो बड़ा भाई होगा और नेक बाप पर कोई मन्दा प्रभाव न होगा,मगर बुध व केतू दोनों नीचे दब जाने के लिये औलाद पर मन्दा प्रभाव होगा।

दोनों नं 6 बुध नं 2 में हो तो अब बुध का खाना नं 2 का नेक फल होगा मंगल की वजह से, वृहस्पति पर बुरा प्रभाव न दे सकेगा। वैसे भी बुध वृहस्पति अब साथी ग्रह होंगे जो आपसी एक दूसरे का बुरा नहीं कर सकते।

वृहस्पति–मंगल खाना नम्बर 7

अगर वृहस्पति और मंगल नेक को मिलाती हुई रेखा बिल्कुल सीधी खड़ी हो तो विशेष आमदन होते हुए भी वो व्यक्ति ऋणि होगा।

वृहस्पति–मंगल खाना नम्बर 8

दोनों का अलग-अलग नम्बर 8 का प्रभाव खाना नम्बर 8 में इन दोनों में इकट्ठा होने से (दृष्टि आदि या साझाँ ही) कुण्डली वाले के अपने ही खानदान वालों के हालात पर प्रभाव होगा।

वृहस्पति–मंगल खाना नम्बर 9

गृहस्थ परिवार और धन दौलत में हर तरह से आलीशान होगा।

वृहस्पति–मंगल खाना नम्बर 10

खाना नम्बर 4 व 6 के ग्रहों से किस्मत का फैसला होगा यदि घरवाली ही हो तो सोने की तरह होगी नहीं तो साधू होगा या दुनिया की चोरी से माला माल होगा।

वृहस्पति–मंगल खाना नम्बर 11

भाई और पिता के बैठे हालत समृद्ध होगी ओर बाद में शहद के मटके खाली होंगे, जिन पर अधिक मक्खियां होगी की तरह किस्मत का हाल होगा।

वृहस्पति–मंगल खाना नम्बर 12

हर तरह से उत्तम और बड़ें परिवार होगा **जिसे आर्शीवाद देगा तार देगा।**

वृहस्पति बुध

वृहस्पति को अगर गुरु सोना और हवा माने तो बुध इसकी हमेशा आवाज करके शरीर पर भभूति (हवन की राख) लगाकर घूमता होगा। समय का चक्र,

अगर फकीर को घुमा दे तो अक्ल का ध्यान एवं आकाश का फेर उसका बोल बाला करेगा । जब वृहस्पति का प्रभाव एक हिस्सा हो तो बुध का दो गुणा होगा। सोलह साल उम्र का वृहस्पति सतारहवें (17) साल से बुध का साथी होकर 42 साल उम्र तक चक्र में होगा यानि होते हुए भी न होना या होते हुए भी होने की विशेष अवधि होगी। जो बुद्धि की कमी-पेशी का हेर फेर होगा। सोने से पीतल और जर्द से सब्ज रंग जंगार भी होगा, मगर सफर से बाकी साफ मगर गोल दायरा सबके इर्द-गिर्द की तरह की किस्मत का हाल होगा। यानि अगर वृहस्पति फकीर हो तो बुध इसकी रंग बिरंगी गुदड़ी की किस्मत के नजारे का मालिक होगा। दौलत खराब 7 साल, दुश्मन *40* साल, सुख 4 साल, माता-पिता का दुखी होना 29 साल साझीँ शत्रुता बुध का खराब फल होगा। निक्म्मा बेटा व बाप व बेटे के गुदड़ी लिए फकीर की रंग बिरंगी की तरह का हाल किस्मत का होगा । आवाज की हालत फैसला करेगी कि दोनों साझीँ में पायल कौन है दोनों ग्रह आपसी होने का फल बुध वृहस्पति एक ही घर में होने पर आकाश में हवा मन्द वाली हालत होगी । अगर ऐसी हालत में कुण्डली में शनि उत्तम हो तो कुछ भरोसा व मतलब होगा (वास्ते धन दौलत) नहीं तो खाली बरबाद करने वाली आशा होगी ।

(1) वृहस्पति के बिना सभी ग्रहों में मिलने जुलने या दृष्टि की शक्ति पैदा न होगी ।

(2) बुध के बिना सभी ग्रहों में झुकने झुकाने की शक्ति कायम न होगी जिस जगह यह दोनों ग्रह बरबाद हों वही सब ग्रहो में ऊपर की दोनों शक्तियाँ बेबुनियाद होंगी।

(3) मन मन्दिर, दरवेश कलन्दर मन (चन्द्र) मन्दिर (वृहस्पति) या चन्द्र बृहस्पति मुश्तरका पर का मन्दिर आलीशन होगा । दरवेश (वृहस्पति या केतू) कलन्दर (तमाशा के जानवरों का मालिक बुध) बुध वृहस्पति, बुध केतू राहू केतू मय बुध इकटठे हों तो मन के मन्दिर में कलन्दर के तमाशें देंगे। वृहस्पति बुध के सम्बंध से गोलाइ कम हुई । बोलने में भी शर्म आने लगी। माता पिता का सुख न देख सकी स्वयं यतीम हुआ और अपनी किस्मत की बजाय सब की किस्मत देखने लगा एक का तो सफर हुआ मगर सपुर का अव बाकी या हासिल क्या होगा, की तरह का हाल होगा यानि दोनों ग्रह रद्दी होगे पर कम तो माता पिता दोनों के सम्बंध में यतीम होगा दूसरों को तारने वाला होगा और अपनी ही बेडी होवे एवं मल्लाह होगा पिता की उम्र और उसके धन दौलत पर तबाही ही करेगा मगर कबीला का भरी बोझ उसके जमा होगा। वृहस्पति बुध बेइज्जती ओर तकलीफ एवं माता की हद से ज्यादती के बजाये बेबस होकर सो जाए। **फोकी उम्मीद की, शेख चिल्ली कह कर कहानियाँ सुन सुना कर दिन गुजारें, नंगो के घर भूखे मेहमान आए । हंस हंस कर भूखे सो गज का हाल हो ।** बुध के पर्वत

पर शादी रेखा के ऊपर सीधे खत खड़े होते है बाकी ओलाद हैं जब यह खत शादी रेखा का काटने लगा सजाए, वृहस्पति का दुश्मनाना प्रभाव जिसके धर पर यह औरत या शादी रेखा लेटी रहती हैं और बच्चे देती हैं स्पष्ट होने लगा जाएगा क्योंकि धन राशि वृहस्पति का घर हैं, शुक्र की रेखा ने वृहस्पति के घर की बजाए बुध की मुकाम को शादी और औलाद के लिए पसन्द किया है इसलिए बुध शुक्र का दोस्त बना बैठा है । मगर वृहस्पति के बीज शुक्र और दुनियावी बीज औलाद को अपने ही घर बिठाए रखता है। इसलिए वृहस्पति से यह दोनों ग्रह बुध व शुक्र दुश्मनी पर गिने गए हैं। **धन राशि से अगर कोई और खत जो वास्तव में सन्तान रेखा न हो और बुध में चला जाए तो भी गृहस्थ की तकलीफ और शादी में रूकावट होगी।** धन राशि में राहू केतू प्रभाव देते हैं यानि केतू ऊँच करता हैं और राहू नीच करता हैं ऐसी रूकावट के समय राहू के प्रभाव से दिमागी नकल व हरकत और अपने सच्चे विचार प्रकट करने न देगी । बल्कि नीच प्रभाव पैदा करेगी। केतू या बागी धड़ की चाल या लोगों की सलाह सुनना ऊँच फल देगा और दुख दूर करेगा । जिससे शादी की उलझन और औलाद के मरने का दुख दूर होगा ।

बुध वृहस्पति सांझे या अकेले अकेले ही सूर्य और शनि की सहायता

वृहस्पति हो खाना नम्बर 1 से 5 में तो मदद देगा - शनि को भी।
वृहस्पति खाना नं० 6 से 11 हो तो सहायता देगा ----केवल शनि को।
वृहस्पति खाना नं० 12 में हो तो सहायता देगा --शनि और सूर्य दोनों को।
वृहस्पति खाना नं 1 से 2 में हो तो सहायता देगा --- शनि को
वृहस्पति खाना नं 3 से 8 में तो सहायता देगा सूर्य को ।
वृहस्पति खाना नं 9 से 12 में तो सहायता देगा -- शनि को ।

ऊपर के असर का पोरियों पर चक्र के निशान फैसला करेंगें :-

वृहस्पति के निशान चक्र का असर :-

अंगुली की पोरी नाखून वाली पर पूरा असर देगा । हथेली पर (बांए हाथ की) मध्यम फल देगा और बांए हाथ पर हथेली पर खराब फल देगा ।

असर चक्र (बुध का साथ)

कुण्डली का खाना नं०		चक्र की गिनती
1	राजा या हाकिम हो	1
4	हुनर मन्द हो	2
2-बुध	ब्रहा ज्ञानी हो	3
7	मफसल और निर्धन हो	4
5	खुशहाल हो	5
6	ऐयाश होवे	6

3	दिलावर बहादूर हो	7
8	हमेशा बीमार रहे	8
11	दौलतमन्द हो	9
10	खुश गुजरान हो	10
9	मन्हूस ओर कम अक्ल हो	11
12	नेक सालह, लम्बी उम्र, खुश गुजरान	12

पांच से ज्यादा अंगुली वाले के हाथ पर दस से अधिक हो सकतें हैं वैसे तो हथेली पर भी हो सकतें है ऊपर का सभी दोनों अंगुलियों को इकट्ठा गिनकर लेंगे।

अगर वृहस्पति कुण्डली के पहले घरो में हो तो वृहस्पति का 34 साल उम्र तक अच्छा फल होगा। 35 से बुध का बुरा प्रभाव शुरू होगा। लेकिन अगर बुध पहले घरों में हो तो बुध का 24 साल उम्र तक अच्छा प्रभाव और वृहस्पति का 34 साल तक मन्दा फल होगा, 35 साल से बुध का असर निकम्मा और वृहस्पति का उत्तम फल शुरू होगा। किस्मत रेखा में बुध का या बुध से रेखा हो तो अचानक अचानक गदा होगा। (कभी अमीर कभी गरीब) बुध का निहायत उत्तम प्रभाव दस्ती व दिमागी कामों में जब बुध देखें वृहस्पति को यही प्रभाव इस रेखा का वृहस्पति पर होगा। मगर ऐसी हालत मे बुध (दस्ती काम व सब्ज रंग का ताल्लुक) कुछ खराबी ओर नुकसान करने वाला ही रहा करेगा वो कभी सिर्फ माली हालत पर किस्मत रेखा अगर कलाई से शुरू होकर सिर रेखा पर ही समाप्त हो जाए तो ऐसा आदमी स्वयं अपनी बेवकूफी या सिर की ताकत से अपना जमाना खराब कर लेगा और खराबी का वक्त जवानी के दिन होंगे। बुध शत्रु होगा यानि 35 साल उम्र से बर्बाद होगा। अपनी ही नाव का खुद नाव डुबोने वाला मल्लाह होगा। अगर किस्मत रेखा कलाई की बजाए शुरू ही सिर रेखा से हो तो जवानी में यानि बुध के वक्त या 34 साल उम्र सक ही आराम होगा, मगर स्वयं जाती मेहनत से यानि आप ही समय से ही खाली होगा। वृहस्पति के साथ या वृहस्पति की दृष्टि में बुध हो तो वृहस्पति का नाश होगा। चन्द्र अंगुली की पोरी पर वृहस्पति बुध के साथ होने पर सम्बंध जब बुध का साथ हो तो बुध खाली वृहस्पति को अपने दायरे में बांध लेगा। अब वृहस्पति या तो शनि का सांप अपनी वृहस्पति के घरें में आ निकले या शनि नं० 5 में आ जाए और सूर्य 2,9,12 में हो ऐसी हालत में सूर्य या चन्द्र या शनि किस्मत का फैसला करने वाले होंगे (जो भी नेक हो) लेंकिन खाना नं० 2, 4 में बुध दुश्मन की बजाए सहायता देगा। दिनकर या सूर्य की किरणें होकर बाहर निकलेगा।

(1) चाहे वृहस्पति अकेला हो बुध की राशि नं० 3, 6 या वृहस्पति अपने दोस्त चन्द्र के साथ ही हो बुध का पक्का घर नं० 7 में और बुध हो देंखे वृहस्पति या देखे चन्द्र वृहस्पति।

(2) चाहे बुध देखे वृहस्पति को बुध की राशि नं० 3,6 में या वृहस्पति साझें को पक्का घर नं० 7 में से यानि खाना नं० 3 में से बुध देख सकता हें 11, 9 को या 8,9,11 में से 3 को 1 खाना नें० 6 में बुध देख सकता हैं नं० 12 को या 2,12 में से 6 खाना नं० 6 को 1 खाना नं० 7 में बुध देख सकता हैं खाना नं० 7 में से 1 को।

लखपति होता हुआ भी मुसीबत पर मुसीबत देखता चला जाए मगर अक्ल की कोई पेश न जाएगी।

(3) चाहे किसी और तरह भी बराए दृष्टि वगैरह बुध की राख हेतु वृहस्पति की गरम हवा या गृहस्थी शक्ति सोने आदि में मिल जाए ऐसी हालत में अगर सूर्य व चन्द्र उत्तम हों और शनि उत्तम हो तो किस्मत उत्तम होगी फैसला हक में होवे।

(4) लेकिन मगर वृहस्पति अकेला या वृहस्पति चन्द्र इक्ट्ठे या दोनों चन्द्र वृहस्पति में से कोई एक अपने ऊँच घर खाना नं० 2 या 4 में (या स्वयं बुध हो जाए तो बुध दुश्मनी की बजाए सहायता देगा। चन्द्र का पूरा नेक प्रभाव होगा। बड़ के पेड़ की तरह छत्रधारी दौलत का मालिक होगा। अकेले चन्द्र वृहस्पति को बुध बना लेगा, मगर दोनों मुश्तरका से खुद जब जाएगा। दोनों को इक्ट्ठा मिलाने के लिए बुध की सब्ज रंग इशया) सोना व **सब्ज रंग कागज वृहस्पति पीपल का पौधा लगाना शुभ होगा**। दूध में रक्त या सोने में राख चाहे कली का टोका या काढ़ पैदा कर देगा। वृहस्पति सोने में रेता, शेख चिल्ली की कहाँनियां माल का नुकसानन, नंगों के महमान - भूखे सोए, औलाद व औरत के विघ्न ऐसी हालत में राहू केतू का उपाय सहायक होगा।

वृहस्पति कायम और बुध ऊँच घरों में हो तो दोनो का साझाँ प्रभाव राजयोग होगा। कागजी कारोबार, छापा खाना आदि नेक प्रभाव देवे ईमानदारी का धन साथ देवे। दोनों ग्रहो के बामुकाबिल या आमने साम्ने होने की दृष्टि अगर *100* प्रतिशत हो तो बिलकुल खराबी का प्रभाव होगा। *50* प्रतिशत हो तो निहायत खराब प्रभाव होगा। 25 प्रतिशत हो तो मामूली खराब प्रभाव होगा दोनों साँझा और चन्द्र बामुकाबिल हो तो **सफर का बुंरा नतीजा हो।**

वृहस्पति बुध खाना नं०1

राजा या हाकिम वाला गरीबी का मरा हुआ बेवकूफ साधू हो। एक चक्र का प्रभाव होगा।

वृहस्पति बुध खाना नं० 2 तीन चक्र ब्रह्म ज्ञानी होगा,धन उपदेश उम्दा होगा।

वृहस्पति – बुध खाना नं० 3

तर्जनी अंगुली की जड़ से वृहस्पति के खत भी यही प्रभाव देंगे क्योंकि मिथुन राशि जो तर्जनी की जड़ और बुध वृहस्पति से शत्रुता करता हैं। चक्र एवं

बहादुर होगा। अब दलेरी फकारी क्या करेगी नं० 3 में मिथुन राशि बन गया जिसके घर का मालिक बध हैं यानि जो पीछे से वो आगे हो गए। एक दुश्मन शुक्र से छूआ दो दूसरा बुध आ खड़ा हुआ हैं यानि इस घर में दोंनों होने पर शुक्र भी मन्दा होगा।

वृहस्पति – बुध खाना नं० 4

दो चक्र, हुनर मन्द राज योग, कायराना काम तबाही व पाए भरी कार्यवाईयां खुदकशी होगी।

वृहस्पति – बुध खाना नं० 5

पांच चक्र खुशहाल भाग्यवान वशर्ते कि कोई लड़का वीरवार का हो और लड़की बुधवार की न हो, अगर हो तो धन दौलत (वृहस्पति -सोना) के लिए सोने की तार कान में ओर मोती के बनाव से **बुध नं० 8 चांदी की नाक में डालने से मदद होगी।**

वृहस्पति – बुध खाना नं ० 6

सिर रेखा से शाख अगर वृहस्पति को ही तो (बुध वृहस्पति का दुश्मन) बुरा प्रभाव होगा। छह चक्र नहीं तो विलासता पसन्द होगा।

वृहस्पति – बुध खाना नं० 7

तीन चक्र –बुध ब्रह्म ज्ञानी दूसरो की मुसीबत पर मुसीबत देखें मगर अक्ल की कोई पेश न जाए। कभी शाह कभी गवा, कभी खुशहाल कभी तंग खुलपत न जमदा थी अन्धी अच्छी। खुद बुध लड़की काबुध नं० 7 मुबारिक होगा। मगर लड़के का मन्दा होना। खुद औलाद से महरूम, मुतबन्ने रखे और वो भी बेंमायनी।

वृहस्पति – बुध खाना नं० 8 आठ चक्र ––––हमेशा बीमारी

वृहस्पति – बुध खाना नं० 9 ग्यारह चक्र ––मन्हूस और कम उम्र हो

वृहस्पति – बुधं खाना नं० 10 – 10 चक्र ––खुशहाल, भाग्यवान होवे।

वृहस्पति – बुध खाना नं० 11 – नौ चक्र––दौलतमन्द हो।

वृहस्पति – बुध खाना नं० 12 – बारह चक्र – स्वयं अपने लिए नेक सलह लम्बी उम्र खुश गुजरान मगर मामूली व्यापारी होवे।

बुध बृहस्पति –बुध का जाती असर नाक से फैसला होगा।

नाक अगर ऐसी हो	**तो केफीयत**
लम्बी-नीचे को झुकी हुई तोते की चोंच मानिंद	दयानतदार, साहब इज्जत व दौलत
बुलन्दी व पुस्ती में एक जेसी हो	परहेजगार
छोटी नाक वाला	धर्मात्मा
लम्बी व चौडी	मेहनती मगर छुमा का काम करने वाला
लम्बी व पतली	बहादुर

मिकदार से ज्यादा लम्बी	ऐयाश, बेशर्म, मुफसिल
गोल बडी़ व मोटी	नेक खसलत
छोटा व चिपटा	शाहना तबीयत
मुहं की तनफ झुकी हुई	शोहबत तबीयत
मोटी छोटी पस्त	कम अक्ल परेशानी रोजगार होवे
बारीक नाक	तबीयत नेक मगर अक्ल कम
दरमयानी मगर अन्दर का झुकी हुई	कम अक्ल मुफलिस
दरमयान से चौडी़ सिरे से तंग दरमयाना	मन्हूस बद नसीब
पस्त गिर से तंग	
दरम्यान से ऊँची सिरे से तंग	दौलतमन्द
अन्दाज से बहुत छोटी	बदनियत , जाल साज, फरेबी

वृहस्पति –शनि

श्री गणेशाय नमः सबके पूजने की जगह होगी। दुनियाबी शक्ल में फकीर की झोली की किस्मत होगी जिसका बुरा भला या शुरू आखिर जानना मामूली बात न होगी । दोनो ग्रह (जब वृहस्पति 16 साल उम्र तक वास्ते धन दोलत साझाँ होंगे । इस मिलावट मे अगर शनि का प्रभाव चार हिस्से हो तो वृहस्पति का पाँच गुणा शनि होगा। जिसकी रूह से गम 14 साल हानि 15 साल दौलत 12 साल होगी हमेशा दोनों का अलग-अलग) फल होगा। शनि का मन्दा फल होगा, मगर वृहस्पति फिर भी बचत ही देता जाएगा ।

बृहस्पति व शनि का वाहमी ताल्लुकः- बृहस्पति शनि मुश्तरका किसी भी घर में या शनि नं० 11 में हो तो ऐसा टेवा धर्मी टेवा होगा । जिसमें पापी ग्रहों का मन्दा असर न होगा । बल्कि बाकी ग्रह भी धर्मी होंगे । ऐसे टेवे की दृष्अि की कुण्डली भी अलग ही होगी । शनि तो वृहस्पति के पक्के घर ओर 2,9,12 राशि में कभी बुरा फल न देगा । मगर वृहस्पति गुरू शनि की राशि और पक्के घर नं० 10,11 में नीच या नाकारा होगा । हालाकि वृहस्पति दोनों जहानों की हवा का मालिक हैं और सिर्फ नेक हिस्सा का यानि जब तक हवा में सर्दी (चन्द्र) गर्मी (सूर्य) और नेकी की मीठी (मंगल नेक) मौजूद हो, वृहस्पति दोनों जहानो का होगा और जब कोई भी और हालत इसमें मिली (चन्द्र सूर्य मंगल के अलावा और कोई ग्रह मिला) तो वृहस्पति सिर्फ ऐसी हालत का मालिक होगा। जब दोनों ग्रह अपनी अपनी हालत में जड़ राशि व दृष्टि आदि के सम्बंध में हर तरह से अकेले हों न तो खुद आपसी साथी ग्रह हो और नही उन दोनों में से कोई एक ग्रह किसी और ग्रह का साथी ग्रह बन रहा हो ।

(अ) दोनों मे से कोई एक व्यक्ति का मालिक (खाना नं० 1 में) और दूसरा रशिफल (वृहस्पति नं० 6, 7 और शनि नं० 3,9,6 में) का हो तो धन रेखा

जो टेवे वाले की शादी के दिन से आगे और बढ़ना शुरू होता हैं, **होगी शर्ते यह है कि दो में से काई नीच घर का न हो** (शनि नं० 1 में नीच होगा वृहस्पति नं० 10 में नीच होगा) फकीर के झण्ड़े में दुश्मनों या इन दो को छोड़ कर बाकी साल ग्रहो से कोई ग्रह जो दुश्मन हो कर इस कुण्डली में वाक्या हों शक्ति से डण्डे की तरह के सोप का प्रभाव देगा। हवाई ताकत और आंख की चालाकी की के साथ पत्थर पर आवाज ही से पक्की लकीर और फर्जी काला निशान (दिल चन्द्र मां) से नाकारा स्याह पत्थर के पहाड़ को दमकते हुए जर्द सोने की हैसियत का कर देगी। बशर्ते कि शनि और वृहस्पति दोनों का ही प्रभाव कायम हो यानि ऐसा व्यक्ति शराब खोरी (शनि या खैरात का माल लेकर खाने वाला। दूसरो के मुफत माल पर नजर खाने वाला (वृहस्पति मन्दा) न हो बल्कि वो सबके मालिक से सिर्फ अपनी किस्मत का हिस्सा मांगने वाला शाकर हो तो शनि की माया दोनों जहानों के मालिक वृहस्पति गुरु के पांव की गुलाम होगी।

(ब) ऐसी हालत में कोई भी नीच घर हो तो मिल जुलकर कर बैठेगे एवं ऐसी स्थिति में प्रभाव पैदा होगा जिस में अगर दोनों ही का फल मन्दा हो तो अन्धा वगैर टांगो के और टांगों से भारी मगर आंखे कायम वाले एक दूसरे पर सवार होकर आपसी रास्ता बना कर अपने दौरे पर मन्दा सफर वा आसानी कर लेंगे। चाहे दोनों का मिलना रब्ब बनाई जोडी एक अन्धा इक कोढी होते हुए भी हरकत के उमीद के नतीजे का फल देगा यानि जब दोनों में सक काई एक भी रददी हालत का हो तो रददी हालत वाले के मन्दे फल को उम्दा बना देगा यानि अगर वृहस्पति रददी हालत का हो और शनि कायम हो तो लोहे की तलवार तमाम दुनिया की रददी हवा को काटती हुई चलती जाएगी लेकिन अगर वृहस्पति उत्तम ओर शनि रददी हालत को हो तो इसकी किस्मत दूसरो को लोहे के लिए पारस का काम देगी। मगर स्वयं उसके अपने लिए बिमारियों की निशानियां होंगी।

(स) जब शनि और वृहस्पति दोनों आपसी साथी ग्रह हो जांए तो और सूर्य का राज या तख्त की मालकियत के जमाने का दौरा आ जाए।

(स-1) जब शनि व वृहस्पति और शनि दोनों ही उम्दा हालत के हैं इसक लिए उत्तम फल और नेक नतीजें होंगे।

(स-2) वृहस्पति व शनि हो तों साथी ग्रह मगर दोनों ही नीच हालत या नीच घरों के हों तो सूर्य के राज के वक्त की मालिकियत के जमाने में जब तक राजदरवार के ताल्लुक से कमाया हुआ या पाया हुआ धन दौलत बर्बाद और खुद **उस व्यक्ति का कोई अंग खराब न हो जाए,** सूर्य शनि का शत्रुतापूर्ण ओर पुरजोर बुराअसर खत्म न होगा। ऐसी हालत मे उस शख्स के अंग खराब होने की शर्त न होगी। शनि रददी हालत का हो मगर बृहस्पति उम्दा हो तो उसके अंग खराब हो जाने पर शनि व सूर्य का शत्रुतापूर्ण व पुर जोर बुरा असर खत्म होगा। धन दौलत के खत्म होने की शर्त न होगी।

उपायः- ऊपर लिखे हुए हिस्सा अ,ब,स तीनों में ही बुरे प्रभाव से बचाव का ढ़ग ओर सहायता (1) चुंकि तख्त के मालिक ग्रह खाना नं० 1 वाले का दौरा ग्रह फल का होता हैं और राशि नम्बर का हिसाब से बोलने वाले ग्रह खाना नं० 7 का असर राशिफल का होता हैं इसलिए बुरे प्रभाव से बचाव ओर सहायता के लिए राशिफल वाले ग्रह का (जो भी ऊपर लिखी हालतों में हो) उपाय करें। चोबी (हथेली) से मंगल का पर्वत खाना नं० 3 नष्ट होने पर वृहस्पति या शुक्र जिस तरफ के पर्वत का हिस्सा ज्यादा भारी मालूम हो वही तरफ प्रबल गिनी जाएगी यानि अगर वृहस्पति की तरफ का हिस्सा भारी हो जाए तो बहुत बड़ा वृहस्पति या नर्म हाल का वृहस्पति होगा और दोनों ग्रह वृहस्पति और शुक्र खाना नं० 2 में मंगल नष्ट गिना जाएगा। शुक्र की तरफ का हिस्सा भारी जो जाए तो बहुत बड़ा शुक्र होगा दोनों ग्रह वृहस्पति शुक्र खाना नं० 7 में और मंगल नष्ट लेंगे।

(2) **शनि के बुरे दौरा के समय वृहस्पति फैसला करेगा और वृहस्पति के बुरे समय में शनि किस्मत का फैसला करेगा।** शनि की उम्र रेखा तो बचपन में गुरु के चरणों में रहती है मगर किस्मत रेखा बुढ़ापे में आखिरी समय तक गुरु या वृहस्पति के पांव तलाशती रहती है। मतलब यह है कि शनि के जमाने या दौरा के समय का नेक व बुरा शनि करेगा और जब वृहस्पति का जमाना प्रभाव हो शनि के नेक व बुरा होने का प्रभाव किस्मत पर हो रहा होगा, यानि उम्र रेखा और किस्मत रेखा बिलकुल उल्ट पहलू में हुआ करती हैं या यूं कहो कि जिस तरह उम्र रेखा वृहस्पति से दूर होती जाती है इसी तरह की ज्यादा किस्मत रेखा वृहस्पति या गुरु की गद्दी के नजदीक आ जाती है शरीर, हवा या वृहस्पति के विना जिन्दा रहता और किस्मत रेखा के विना इन्सानी जिन्दगी कच्ची कहानी और बेमायनी और केवल खानापुरी का नाम है जिस तरह शरीर को रुह मिली और रुह को सांस मिली, इस तरह ही इन्सान को किस्मत मिली और इसके साथ सूर्य का संबंध हुआ मगर सूर्य का पर्वत कायम नहीं और सूर्य रेखा हाथ में हमवार नहीं या सूर्य या तरक्की रेखा किस्मत रेखा से नहीं मिली तो भी किस्मत की लाख लाहनत नसीब हुई (जब सूर्य वृहस्पति किसी तरह भी न मिलें--आम तौर पर उम्र रेखा जिस पहाड़ से निकलती है उस रेखा पर वृहस्पति नं0 2 में खत्म होती है या जिस समुन्द्र वृहस्पति नं0 9 में उम्र रेखा गिरती है उसी समुन्द्र से किस्मत रेखा की हवाई लहर निकलती हैं यानि अगर वृहस्पति शनि की राशि नं0 10,11 में जा बैठे तो किस्मत का बुरा प्रभाव देगा। लेकिन जब शनि वृहस्पति की राशि या पक्के घर नं0 9, 12, 2 में हो जाए तो किस्मत बहुत अच्छी होगी और आगे बढ़ेगी।

कोहसार और समुन्द्रः-

(फारसी शब्द में कोह का अर्थ है - पहाड़ का सिलसिला कुण्डली के खाना नं0 9 को ऐसी जगह माना है जिसके एक तरफ शुक्र का पर्वत खाना नं0 7

और दूसरी तरफ चन्द्र का पर्वत खाना नं0 4 वाक्या है। वृहस्पति को गंगा और आम सलाह में दोनों जहानों की हवा भी माना है। मानो कि पानी और हवा का आपसी संबंध रखने वाली चीज गिनी गई है। पानी की विशेषता है पत्थर पहाड़ माना गया है और पानी चन्द्र है (हवा की विशेषता है कि गर्मी से फैलती और ऊपर को उठती है अब वृहस्पति के दोनों जहानों खाना नं0 2 (राहू-केतू की साँझा बैठक) और खाना नं0 9 बच्चे की पैदाइश की जगह का संबंध साफ करने के लिए मालूम हुआ कि खाना नं0 7 शुक्र की खुश्की का ब्रह्माण्ड और चला कि समुन्द्र की दैविक दुनिया के बीच में बैठने वाला वृहस्पति या खुष्की और पानी दोनों पर ही रहने वाली हवा जब ख़ाना नं0 9 से चलती है और जब बच्चा खाना नं0 9 में आ जाने के बाद इस दुनिया में आगे चलता है तो पहला ही पड़ाव शनि का हैडक्वार्टर या खाना नं0 8 आ निकलता है जो मौत का घर है और मंगल व शनि क़ी साँझी मालकियत है मानो कि खाना नं0 9 से चले हुए बच्चे या वृहस्पति की हवा के साथ शुक्र चन्द्र तो पहले ही थे, **मंगल शनि और आ मिले अगर मंगल नेक के पर्वत खाना नं0 3** की हद और शनि की उम्र रेखा एक तरफ हो तो सूर्य की सेहत या तरक्की रेखा नं0 5 और मंगलबद खाना नं0 8 की हदबन्दी भी इस जगह शनि के हैडक्वार्टर के साथ आ लगी। शनि स्वयं पहाड़ है मगर पहाड़ वृहस्पति की हवा को रोक नहीं सकता हां अगर पानी से लदी हुई हवा के रास्ते में ऐसे ढंग पर आ जाए कि हवा पहाड़ से टकरा जाए तो हवा से पानी उतार लेगा, वर्षा होगी। मगर हवा खाली होकर फिर आगे बढ़गी या हट कर वापिस आएगी मगर शनि के खाना नं0 10 के मुकाम को अगर वृहस्पति के खाना नं0 9 से मिलाने के लिए खत खींचे या उम्र रेखा का देखें जो शनि के कोहसार की चीज है तो मालूम होगा कि खाना नं0 8 शनि का पहाड़ का रुख हवा को रोक नहीं सकता और देखता ही रहा जाता है (सांप आज तक टकटकी लगाए देखता चला आता है और वृहस्पति के इन्तजार में बैठा है) यह हवा आगे बढ़ी तो खाना नं0 11 आमदन वृहस्पति का घर मगर शनि की कुम्भ राशि पानी से भरा घड़ा (हवा पानी जो अभी ऊपर शनि ने वृहस्पति की हवा निकाल लिया था जिसके साथ ही खाना नं0 12 खर्चा शनि की दूसरी राशि मीन मच्छली तड़फ रही है यह खाना नं0 12 राहू के साथ का भी है यानि वृहस्पति गुरु के लिए हाथी भी आ गया। ब्रह्म का विचार छोड़ा हाथी की सवारी चुपचाप होकर, कर ली **वृहस्पति पीला और राहू नीला मिले तो हरा रंग हुआ बुध स्वयं आ निकला** मानो कि वृहस्पति पीला रंग का पता ही न चला कि केहां चला गया है नीचे रंग राहू से दोस्ती करके बुध ने अपनी सिर रेखा खड़ी कर दी। अब वृहस्पति ने राहू के हाथी से बचना है या राहू का जाल कटवाना है अपने दोस्त केतू को याद करता है यह केतू चूहा भी बनता है, कुत्ता भी होगा, गधा भी है, कान भी होगा और छलावा भी माना है, गऊ

माता भी होता है और गऊ माता शुक्र भी है। शुक्र में केतू जरुर माना है और बुध भी शुक्र का जज है इसलिए जब शुक्र बन गया तो बुध और केतू दोनों ही शुक्र के अन्दर ही लिपटे गए। केतू तो वृहस्पति के बराबर का है यह छलावा बना गुरु को हिम्मत दी, चूहे ने राहू का जाल काटा, गधे को अपने मतलब के लिए बाप कहा। बुध की सिर रेखा की दीवार की रुकावट से आगे बढ़ा तो केतू के घर खाना नं0 6 में जा निकला मगर वहां भी बुध मौजूद है इसलिए वहां गऊ माता बना और भाग कर खाना नं0 2 में जा पहुंचा क्योंकि खाना नं0 6 और खाना नं0 2 के बीच कोई रुकावट की दीवार नहीं और दृष्टि में भी खाना नं0 2 देखता है खाना नं0 6 को और यह खाना नं0 2 तो है ही गाए का स्थान या शुक्र की अपनी राशि वृष जो वृहस्पति का पक्का घर निश्चित है यह खाना नं0 2 ही एक घर है **जहां गाए पक्के तौर पर खड़ी है,** गृहस्थ है। राहू केतू की साँझा बैठक है जिसमें खाना नं0 8 के प्रभाव का शनि का वही संबंध आ जाता है या नकली शुक्र खाली वृहस्पति हवाई शक्ति का गुरु और संसारिक गाए गुरुद्वारा सब वृहस्पति के पहलू हैं। यद्यपि वृहस्पति की हवा अब शनि के पहाड़ के सिलसिला की दीवारों से टकरा कर खाना नं0 2 में वही समुन्द्र ले जाती है जो वृहस्पति के साथ खाना नं0 9 से लगा हुआ चन्द्र के समुन्द्र खाना नं0 4 में मौजूद था । इस तरह पर खाना नं0 9 व खाना नं0 2 जब आपस में मिले तो खाना नं0 2 कर्मी धर्मी कोहसार कहलाया। खाना नं0 9 कर्म धर्म समुन्द्र या गंगा हुआ जिसमें हवाई शक्ति का साथ हुआ या खाना नं02 में वृहस्पति की असली शक्ति पाई गई या खाना नं0 9 को निधि-सिधि का मालिक सुदा (साध-साधू, वृहस्पति गुरु, मां माता मान इज्जत) तो खाना नं0 2 का धन्ना भक्त (पत्थर से वृहस्पति दोनों जहान का मालिक) शुभ होगी। जिसकी गऊओं को राम चराए। विस्तृत रुप से अगर शनि पहले घरों में हो तो कोहसार पहले और हवा इस से निकल कर चलेगी लेकिन अगर वृहस्पति पहले घरों में और शनि बाद के घरों में हो तो वृहस्पति की हवा शनि के पहाड़ से टकरा कर कीमती बारिश देगी। दोनों ग्रह साँझा का फैसला अंगुलियों पर सदफ के निशान से होगा।

सदफः-(शनि का साथ) हथेली और अंगुली का वही दर्जा -प्रभाव होगा जो चक्र शंख में पहले जिक्र है दोनों हाथ की अंगुलियों की पोरियों पर

कुण्डली का खाना	कैफियत	गिनती में सदफ हों
1.	मुफलिस हो	1
2.	आलम हो	2
3.	दौलदमन्द हो	3
4.	मशहूर जमाना हो	5
5.	बड़ी इज्जत व आबरु पाए ऐजा	5 से ज्यादा

सदफ का हथेली पर प्रभावः-(वृहस्पति व शनि का साथ) अगर सूर्य के पर्वत पर बुध की तरफ को वाक्या हो और अनामिका की जड़ पिसता हो तो सूर्य के नेक प्रभाव में खराबी होगी। यानि अदालत में जाने वाले मुकदमात दीवानी और हाकिम समय से अदावत होगी। मगर फैसला हक में होगा। जिस तरह यह निशान या दीगर निशान चक्र, शंख बुध की तरफ होते हुए दिल रेखा के नजदीक होते जाएं नेक प्रभाव बढ़ेगा। अनामिका की जड़ कन्या राशि बुध का घर है जो वृहस्पति का शुत्र है दिल रेखा चन्द्र की रेखा है जो वृहस्पति का मित्र है और यह निशान वृहस्पति का मित्र है और यह निशान वृहस्पति का है मुकाम सूर्य का है जो वृहस्पति का दोस्त है इसलिए दूरी व नजदीक मुकदमा जरुर नेक बद प्रभाव का दर्जा प्रभाव में फर्म देगी। अगर सदफ की बजाए शंख, वाक्या हों तो कर्म धर्म वायश तनाव होगा अगर चक्र हो तो दीगर सरकारी संबंध बनाए झगड़े होंगे। अगर सूर्य का सितारा ही स्वयं वाक्या हो तो सबसे जबरदस्त होगा मगर वो भी तनाव पैदा करेगा, मगर अपने से बहुत ही बड़ों --के लिए सदफ, शंख, चक्र, सितारा दर्जा ऊपर को जबरदस्त होंगे यानि सदफ वाला सितारा वाले का मुकाबला न कर सकेगा या सितारा वाला गालब होगा कान की तरह दायरा में दायरा सदफ होगा। गोल दायरा अलग दायरा चक्र होगा । चक्र ही लकीर से दायरा में दायरा शंख होगा। निहायत बारीक गोल दायरा में दायरा सितारा के समान निशान सितारा सूर्य होगा। चक्र शंख, सदफ और सितारा सूर्य, अगर सूर्य के पर्वत पर बुध की तरफ की बजाए शनि की तरफ वाक्या हो तो अब शनि का साथ होगा जो चन्द्र (दिल रेखा) और सूर्य के पर्वत दोनों का ही दुश्मन है इसलिए अब फैसला हक में होने की तसल्ली न होगी। बाकी प्रभाव वही होगा जो पहले जिक्र किया है दोनों साँझा पर बुढ़ापे में तकलीफ हो। किस्मत के शुरु होने का समय उस ग्रह की उम्र का साल होगा जो ग्रह इन को देखता या जगाता हो। वृहस्पति शनि साँझा तर्जनी मध्यमा मिली हुई बुढ़ापे में तकलीफ हो। सुराख हो मध्यमा और तर्जनी के बीच में तो बुढ़ापे में तकलीफ हो जब किस्मत का प्रभाव होने का समय इस रेखा के झुकाव किस्मत रेखा का कनिष्का की तरफ हो तो बुध के प्रभाव के सालों में शनि 34 साल के अनामिका और कनिष्का के बीच की तरफ हो तो 22 साल, अनामिका की तरफ हो तो 25 साल और मध्यमा के बीच तरफ 45 साल, मध्यमा की तरफ हो तो 60 साल, वृहस्पति की तरफ हो तो 16 साल में खुद कमाई करने लग जाएगा। दोनों साँझा की हालत में किस्मत का फैसला खाना नं0 11 के ग्रह करेंगे। अगर खाना नं0 11 खाली हो तो शनि का जाती फैसला प्रबल होगा यानि जन्म कुण्डली या वर्षफल की कुण्डली जैसा भी और जिस घर के प्रभाव का शनि हो वही फैसला होगा। शनि के विशेष-विशेष सालों में चारों तरफ चलने के सालों का भी ख्याल रहे। ऐसे व्यक्ति में बुरे विचार, सोच-विचार की शक्ति दर्जा कमाल

होगी। जिन्दगी बढ़ने की शक्ति, खुददारी मगर हसद से बरी होगा। ऐसे व्यक्ति की किस्मत की फैसला खाना नं0 11 के ग्रह करेंगे शरीरिक हालत में बिमारियाँ व कुदरती कमजोरी विचार वाला होगा । दोनों ग्रह आपसी सम्बंध में हों तो जब बिल्कुल अलग-अलग और दृष्टि से भी न मिलते हों।

*(1) जब दोनों 100% के खानों में वाहम देख रहे हों तो साँझा ही होने का प्रभाव देंगे। वृहस्पति देखता हो शनि को 50% पर, ज्ञान जादूगीरी, 25% पड़ --- **योगाभ्यास का मालिक हो।** शनि देखता हो वृहस्पति को तो प्राकृतिक तौर पर शाररिक कमजोरी और धन दौलत हल्का होगा। शनि के समय 18-36 साल उम्र में पिता समाप्त जिसका सबूत इसके मकान में लोहे का ताला बुरा भागी का अलाराम होगा। दोनों को देखता हो शुक्र--ऐसे व्यक्ति का धन समान मिट्टी का पहाड़ होगा। दिखलावा बहुत किस्मत कम। ऐसा धन उसके अपने खानदान औरत के काम लगे। (अपने खानदान बाबे की तरफ का हिस्सा) और शादी के दिन से ऐसा धन बढ़े। दोनों के देखता हो केतू- सन्तान पर बुरी हवा के हमले (जिन्न--भूत की मार) मकान में शारह-आम से सीधी आने वाली बुरी हवा का बुरा प्रभाव लेंगे।*

वृहस्पति –शनि खाना नं० 1

बुरा हाल, साधू या गुरु मगर काग रेखा वाला होगा। एक तरफ का प्रभाव ठीक ही होगा।

वृहस्पति –शनि खाना नं० 2

दो सदफ का प्रभाव। आम सेहत अच्छा, खुश गवार, सिर हरा पहाड़ की तरफ चन्द्र का ऊच्च और अच्छा फल देंगे बदनाम इश्क न होगा और न ही गल्वा इश्क होगा। बल्कि हकीकी लगन होगी अगर चन्द्र भी साथ हो या नं0 8 में से आ देखे तो चन्द्र नष्ट नहीं लेगें। संसारिक तोहफा होगा।

वृहस्पति –शनि खाना नं० 3

तीन सदफ दौलतमन्द, मध्यम दर्जा जिन्दगी, शनि शुद्ध निर्धन मगर बुढ़ापे में आराम पाये। 18 साल उम्र में पिता बुरा हो(सम्बन्धित धन दौलत)

वृहस्पति –शनि खाना नं० 4

सांप काटे तो अधरंग भी ठीक जो जाए और नकारा शरीर भी काम का और मजबूत हो जाए या सांप अगर लोगों का मारे तो उसे तार देगा। मशहूर जमाना, 4 सदफ का प्रभाव।

वृहस्पति – शनि दोनों खाना नं० 5

साधारण किस्मत जैसी कि बाकी ग्रहों से फैसला हो, 5 सदफ का प्रभाव, बड़ी इज्जत व आबरु होगी।

वृहस्पति –शनि खाना नं० 6

–छह या ज्यादा सदफ का प्रभाव जैसा कि आम हालत का फैसला हो।

(1) अब अगर वृहस्पति कायम और शनि बजाए नं0 2 रद्दी या बुरा हो तो औरत से शत्रुता हो।

(2) शनि कायम मगर वृहस्पति दृष्टि नं0 2 चुप हो (यानि पापी राहू केतू हो) तो औरत का सुख पूरा हो।

(3) शनि कायम और वृहस्पति नष्ट तो औरत का सुख हल्का होगा।

तर्जनी मध्यमा से थोड़ी छोटी हो तो औरत का सुख पूरा हो।

तर्जनी मध्यमा से बड़ी हो तो औरत खानदान गरीब औरत से रंजीदा

तर्जनी मध्यमा से बहुत छोटी हो तो औरत का सुख हल्का हो।

वृहस्पति –शनि खाना नं० 7

–धन बर्बाद मगर जायदाद अच्छा लड़की (बुध का दौरा) की पैदाइश से धन दौलत (वृहस्पति) का विशेष कर बुरा फल होगा शनि के वाक्यात नया मकान व दीगर सम्बन्धित चीजों शुभ फल देंगी। जिनसे धन खर्चने पर भी और बढ़ेगा और बरकत देगा। मगर स्वयं नेक स्वाभव, भले लोग भले काम करे। मगर बचपन में तकलीफ दें। दोनों नं0 7 और चन्द्र या शुक्र या मंगल कायम बरकत बढ़ाने वाली मगरमच्छ रेखा का प्रभाव होगा। दोनों नं0 7 या 12 और चन्द्र या शुक्र या मंगल नष्ट या नीच ग्रह का दौरा शुरु हो यानि जब भी उनसे कोई खाना नं0 1 में आ जाए बरकत घटने वाली मगरमच्छ रेखा होगी।

मच्छ रेखा या मगरमच्छ रेखा गरीब को धन और अमीर को बनाये बढ़े परिवार लोह लंगर स्वाया।

मच्छली की तरह सन्तान, मेंढक का सांस, किस्मत, शुक्र के घर में जिस तरह मच्छली अण्डे देती है इसी तरह शुक्र और वृहस्पति सन्तान, भाई बंधुओं की पैदाइश में सहायता दे और मेंढक की तरह सब तरफ से बन्द की हुई मिट्टी में भी सांस लेता रहे और जिन्दा रहे। और आंख पानी और खुष्की में देखती रह और समुन्द्र और तूफान की मिट्टी और हवा में बाकायदा देखे हर तरह से अच्छी किस्मत रेखा के कलाई से शुरु होने के समय अगर जड़ में वास्तव में मच्छली या मगरमच्छ की सक्ल पड़ी हो तो मच्छ रेखा कहलाती है। यह शक्ल बीच पेट से उभरी हुई और सिरों पर मच्छली के पैरों के समान शाखें रखती हुई मच्छ मुकम्मल रेखा होगी किस्मत रेखा की जड़ पर चोकोर मंगल नेक का प्रभाव नेक होता है। लेकिन मगरमच्छ रेखा जैसा नेक नहीं होता। अगर मच्छली की शक्ल शुक्र के पर्वत की तरफ बाक्या हो तो इस मच्छली का निचला हिस्सा या पेट होगा और अगर यह मच्छली की शक्ल चन्द्र के पर्वत की तरफ वाक्या हो तो शुक्र से सूर्य की तरफ की गोलाई इस मच्छली का पेट ही गिनी जाएगी और निचला हिस्सा होगा।

(ब) और अगर शुक्र और चन्द्र दोनों पर्वतों के ऐन बीच में वाक्या हो तो भी चन्द्र

की तरफ की गोलाई इस मच्छली का पेट और निचला हिस्सा हिस्सा होगा जिस पर्वत की तरफ इस मच्छली की पीठ होगी उस पर्वत का नेक प्रभाव होगा और जिस पर्वत की तरफ पेट या निचला हिस्सा होगा इस पर्वत का प्रभाव कोई न होगा। पूरे प्रभाव के लिए ऐसा कहो कि (1) अगर मछली की पीठ शुक्र के पर्वत की तरफ वाक्या हो और पेट चन्द्र की तरफ हो तो शुक्र का नेक प्रभाव होगा, बशर्ते की मछली का मुंह भी ऊपर की तरफ हो और इसकी दुम नीचे कलाई की तरफ को इस बात के साथ ही अगर उम्र या शनि रेखा मछली के मुंह में गिर रही हो या मछली के मुंह में दाखिल होकर समाप्त हो गई मालूम हो तो बुध(जिस पर्वत पर पीठ है) शनि उम्र रेखा जो अपना तभी प्रभाव इस पर डालती हुई मालूम होती है) और मच्छली या मीन राशि का मालिक वृहस्पति (मच्छ रेखा) उस सबके सब नेक प्रभाव देंगे यानि ऐसा व्यक्ति बड़े ही कबीला वाला होगा यानि उच्च तो दोनों भाई (नौ ग्रह) और दो बहने (दोनों हाथ वा जन्म कुण्डली या चन्द्र कुण्डली) होंगे। जब वृहस्पति शनि नं0 7 में हो तो 9 भाई तीन बहने, तीन पुस्त और तीनों जवानों का नेक प्रभाव देने वाली मच्छ रेखा होगी शुक्र (औरत) चन्द्र (माता) मंगल (भाई) का संबंध लेंगे। इसकी शादी (जो वृहस्पति और शुक्र के अरसा के बीच या 16 और 25 साल के अन्दर-अन्दर हो) और भी रसीला बताएग़ी जल्द अज जल्द सन्तान पैदा होगी। बाल बच्चों की बरकत इनकी तायदाद में ज्यादती और हर दम बड़े परिवार हो, लोह लंगर और बढ़ता चले। अपनी जाती आय भाइयों की आय और गृहस्थ में हर तरह से बरकत हो। अनाज खाने वाले और अनाज पैदा करके लाने वाले (कमाऊ) परिवार के आदमी कीड़ों की तरफ स्वयं अपने आपने लिए मुंह में दाना लेकर आ जावें और दिन व दिन बढ़ते चले जाएं आदमियों की इतनी बरकत हो कि प्रभाव अपने घर के साथी पास न हों तो रोटी खाने वाले मेहमान ही हाजिर हो जाएंगे। गर्जे कि भण्डारा लो लंगर हरदम चलता और सवाया होता चला जाएगा और शनि का उत्तम प्रभाव पूरा होगा। शुक्र कायम से और जात से बढ़े और अपने जमाना में चन्द्र से माता की तरफ से बढ़े और मंगल से उर्ध्व रेखा का साथ होगा। मंगल तो ऊँच कायम 6 से 12 का होगा वरना उल्टे अर्थो का होगा। मंगल के समय चन्द्र वा शुक्र का कोई बुरा प्रभाव न होगा। अगर ऊपर कहीं हुई शक्ल में मच्छली के मुंह में उम्र रेखा की बजाए सेहत या तरक्की रेखा गिरती हो तो ऐसा व्यक्ति जानी और आराम परस्त होगा। जबान का चस्का और भाई बन्धुओं की गिनती 7 जमा 2 या 9 या कुछ कम ही होगी। बुध का वो प्रभाव न होगा जो शनि का अच्छा था मच्छ रेखा का जब मुंह ऊपर का हो जैसा कि ऊपर जिक्र हुआ तो जितने साल किस्मत रेखा के हिसाब से गिन कर मच्छ रेखा का शरीर समास होता हो इस साल के बाद भाई बहिन की संख्या में ज्यादती होना था और का पैदा होना बन्द हो जाएगा। या इस

साल के बाद इसका भाई या बहिन और पैदा न होगा। बल्कि इसकी शादी होगी और स्वयं इसके बाल-बच्चे शुरु हो जाएंगे और बाकी आयु में भी इसी तरह से बरकत होती जाएगी।

(2) यह सारे पीठ की तरफ का प्रभाव हुआ पेट की तरफ या चन्द्र के पर्वत का प्रभाव देखें यह बिल्कुल न होगा। शुक्र तो चन्द्र से दुश्मनी नहीं करता मगर चन्द्र शुक्र का दुश्मन है अब माता चन्द्र के समय यानि 24 साल में शुक्र या औरत आने के समय चल जाएगी। (यह सब मच्छ रेखा वाले लड़के के हिसाब से गिनते हैं) और पिता बुध के प्रभाव के समय (बुध मच्छ रेखा का दुश्मन है तो वृहस्पति की रेखा है) यानि 34 या 17 साल की उम्र (मच्छ रेखा वाली की) में साथ छोड़ कर इस दुनिया से चला जाएगा।

(3) अगर मच्छ रेखा का मुंह ऊपर की बजाए नीचे को हो तो जितने साल तक किस्मत रेखा के हिसाब से मछली की शक्ल फैल रही हो बरकत होगी। उस के बाद हर तरह से कमी होनी शुरु हो जाएगी।

(4) मच्छ रेखा की पीठ अगर चन्द्र की तरफ हो तो चन्द्र का प्रभाव अच्छा होगा। यानि माता का प्रभाव पूरा और इसके होते हुए चन्द्र मां का हर तरह से पूरा फल और नेक होगा। माता की सन्तान या भाई बहिन सब बरकत पर होंगे। शुक्र का कोई प्रभाव विशेष न होगा क्योंकि शुक्र चन्द्र से दुश्मनी नहीं करता मगर वृहस्पति का दुश्मन है इसलिए शादी के समय से जो शुक्र की अवधि के बाद 25 साल होगी सन्तान में विशेष ज्यादती न होगी। भाई बहिन तो जरुर बरकत में होंगे वो भी उस हालत में जबकि मच्छली के मुंह ऊपर को हों और उम्र या पितृ रेखा मच्छली के मुंह में हो। माता की उम्र लम्बी होगी मगर पिता वृहस्पति के प्रभाव में (जिसके अब चन्द्र तो शनि का दुश्मन है जो शुक्र वृहस्पति का दुश्मन है यानि वृहस्पति पिता और इसकी उम्र शनि रेखा दोनों को शुक्र और चन्द्र मन्दा करेंगे। जो 16 साल है समाप्त होगा। इस शक्ल में भी अगर मछली को मुंह में सेहत या तरक्की रेखा हो तो) वर्ताव करने का शौकीन, औरत-बाज और विलासतापूर्ण होगा। क्योंकि चन्द्र बुध का दुश्मन है ऐसी हालत में पिता की उम्र लम्बी होगी क्योंकि चन्द्र वृहस्पति और शुक्र की दुश्मनी न होगी। केवल चन्द्र और बुध का शत्रुता पूर्ण प्रभाव बाकी रह जाएगा जो माता पर बुरा प्रभाव करेगा दूसरी हालत में जबकि मच्छ रेखा अपना मुंह नीचे करके चन्द्र पर वाक्या हो तो जितने साल तक की उम्र तक वह शक्ल जगह घेरे हुए ही तरक्की होगी फिर वही बर्बादी का जमाना शुरु हो जाएगा। मच्छ रेखा मगर शुक्र और चन्द्र के बीच वाक्या हो ओर इसके मुंह से उर्ध्व रेखा गिर रही हो तो उर्ध्व रेखा का पूरा नेक और अच्छा प्रभाव होगा। न शुक्र कुछ बिगाड़ सकेगा न चन्द्र खराबी करेगा। अगर मछली की शक्ल की बजाए, मगरमच्छ की (शनि)बढ़ कर नेक प्रभाव होगा मच्छली अगर आटे की गोलियां

खाये तो मगरमच्छ वाला, शुक्र पर आने वाले खत सीधे हो तो लेटे हुए। 1 = हर दो हालत में मौते प्रकट करते हैं जो कि बिलकुल नजदीकी रिस्तेदारों या भाइयों और बहनों से सम्बन्धित होंगी। उर्ध्व रेखा जब मछली के मुंह में गिरती हो (मछली की शक्ल चाहे शुक्र हो चाहे चन्द्र पर चाहे दोनों पर्वतों के बीच) अपना पूरा प्रभाव अच्छी हालत में देगी। मामूली किस्मत वाले की हालत में मच्छ रेखा कायम होने से दौलतमन्द होने की यकीनी हालत और दौलतमन्द के हाथ में मच्छ रेखा होने से – तख्त होने की पक्की निशानी है।

वृहस्पति –शनि खाना नं० 7

सूर्य खाना नं0 1 में हो तो सौ साल उम्र में मिट्टी के खाने होंगे जो 17 साल उम्र में चन्द्र से नेक होंगे।

वृहस्पति –शनि खाना नं० 8

बीच धन, उम्र लम्बी, अब खाना नं0 8 मारक स्थान न होगा।

वृहस्पति –शनि खाना नं० 9

मच्छ रेखा बिलकुल भाड़ी और शुभ कबीला और उर्ध्व रेखा का पूरा अलग–अलग और अच्छा फल होगा। स्वयं बढ़े दूसरों को तारे, धन के लिए लम्बे पैमाने का होगा। यद्यपि अब स्वयं कमाई का हिस्सा कम होगा। दुष्ट भाग्यवान् होगा। आम तौर पर ऐसा धन जो अपने हाथों खर्चे और करते दूसरों का बुरा न होगा और न ही फायदा देगा। शनि को शाख जब नींव पर मच्छ रेखा हो तो बिलकुल अच्छा फल होगा। जायदाद वाला या बहुत भारी जायदाद वाला होगा।

उर्ध्व रेखा हाथ को दो
हिस्सों में काटती है:

उर्ध्व रेखा जब उम्र रेखा चन्द्र के पर्वत पर चले या जा पहुंचे तो पितृ रेखा कहलाती है और जब पितृ रेखा (आम उम्र रेखा नहीं) और भाग्य रेखा से चन्द्र के मुकाम पर आपस में मिल जाए। शनि वृहस्पति नं0 8 और हाथ को बराबर दो हिस्सों में बांटे यानि इन दोनों के मुकाम अगर ऊपर को शनि की तरफ एक खत यानि सीधे शनि के पर्वत में जाता मालूम हो तो उर्ध्व रेखा से प्रकट होगी। ऐसे व्यक्ति में शनि की आंख की होशियारी की पूरी शक्ति मौजूद होगी यानि वो ठगी से आंख की होशियारी से धन दौलत बड़ी भारी जायदाद वाला या हर तरह की जायदाद का मालिक होगा चूंकि ऐसी कमाई में दस नाखूनों या अपने हाथों की कमाई कर कोई हिस्सा न होगा, दुष्ट भाग्यवान होगा यानि लोग तो उसको दुष्ट गिनेंगे मगर अपने लिए वो बिलकुल ही बड़ा भाग्यवान् और दौलतमन्द होगा। आम गरीबों में जिस तरह रुपए पैसा वाला अमीर कहलाता है इस तरह ऐसा व्यक्ति अमीरों में अमीर होगा। साहब जायदाद और अमीरों से अमीर

या अमीर होगा। जिसे न बाप का लिहाज होगा न किसी **दूसरे की हमदर्दी पूरा शनि की तबीयत का होगा। ठगी और धोखे से धन ही धन इकट्ठा करेगा। इसकी उम्र भी लम्बी होगी** और मगरमच्छ की तरह छोटी बड़ी सब मछलियों को खाने वाला होगा। किसी एक विचार से आम लोगों का तो दिल ही स्याह टुकड़ा होगा मगर ऐसा व्यक्ति तो सारे का सारा ही स्याह जैसा होगा जिसकी आंख दोनों तरफ से स्याह होगा न उसे दिन की सफेदी या सूर्य की दोस्ती का लिहाज होगा न रात की स्याही का भय या डर होगा। हमेशा सुबह से शाम, शाम से सुबह तक एक रंग और रफतार से चलने वाला होगा। खुराक से लोह और लोह से दिल व दिमाग और दिमाग से बात को निकाल ले जाने वाला होगा **न दीन का दोस्त न धर्म का पावन्द** अपने से ज्यादा किसी को अजीजा न समझेगा। और अपने ही अर्थ या मतलब को सब पर प्रभाव डाल देगा, जो इसके हैडक्वार्टर से हुआ समाप्त हुआ फिर उर्ध्व रेखा से आगे न उम्र रेखा बढ़ी न सेहत या तरक्की रेखा चली ही मुकाम सब का आखिर हुआ न चन्द्र चल सका न सूर्य का आकार रहा न वृहस्पति की हवा या सांस बाकी बचा, अन्ततः मुकाम मौत सही है तो सबका आखिर हुआ, बुध पीछे रहा, मंगल इस जगह तक पहुंच ही न सका केवल राहू केतू ही जैसी नेकी बदी के लिखे हुए नाम का बाकी प्रभाव रहे या राहू का अन्धेरा हुआ और केतू से दूसरे जन्म का इशारा हुआ।

वृहस्पति –शनि खाना नं० 10

बाहर से बांए की इज्जत दीवार लोहे की तवी, स्वयं अपने लिए निहायत अच्छा और **श्रीगणेश जी की इज्जत की मालिक होगा** मगर इसका धन माया होगी जो दूसरों की बरबाद करके छोड़ेंगी आराम परस्ती से तंग हाल होगा। शनि का बुरा फल पैदा करेगा क्योंकि शनि भी बलवान है इसलिए बाहर साल तो दौलत का साथ होगा वो भी शनि की आंख से बाज आया होगा। वृहस्पति की दौलत साथ न देगी। अगर बुरा ही होगा और वृहस्पति का संबंध धन व जायदाद बढ़ाता जाएगा बेशक शनि बर्बाद ही करता जाए।

वृहस्पति –शनि खाना नं० 11

साँझा या किसी तरह भी बराए दृष्टि खाना नं0 11 में इकटठे हो जाएं तो अपनी किस्मत का फैसला नं0 3 के ग्रहों से होगा और नं0 5 का कोई प्रभाव न होगा। अगर नं0 3 खाली हो तो स्वयं शनि का खाना नं0 11 में दिया हुआ फल होगा।। एक शाख वृहस्पति पर दूसरी शनि पर हो तो ऐसे व्यक्ति की दोस्ती से दूसरों को लाभ ही लाभ होगा। इच्छाधारी सांप की तरह साया सहायता करें। शनि और वृहस्पति के बीच से वृहस्पति पर आकर मिलने वाली सीधी शाखों वाला इश्क में दर्जा लिखा होगा। तर्जनी की जड़ से शाख वाला स्थान ऊँचा था इश्क में (जाहिरदारी तो कम करेगा मगर आन्तरिक तौर पर मुहब्बत का पक्का होगा।

इसकी मुहब्बत और इश्क हकीकी इश्क और सच्ची मुहब्बत की तरफ को ज्यादा होगा। ऐसे आदमी की दोस्ती से लाखों का भला और हर एक को लाभ होगा। लोहे को पारस का काम देगा। स्वयं चाहे वो एक कौड़ी की हैसियत का भी न हो।

वृहस्पति –शनि खाना नं० 12

मछली बहाए जल में चिराग खानदान नेक, भाग्यवान्, राहू केतू भी नेक प्रभाव के शनि और वृहस्पति दोनों का अलग-अलग नं0 12 का अच्छा प्रभाव होगा। माया पर पेशाब की धार मारने वाला। इसकी धन ऐसा होगा जो स्वयं खर्चे और खाए, मगर दूसरों को कोई लाभ या नुकसान न देगा। शादी के दिन से धन और भी बढ़ेगा, अच्छा बरकत देने वाली।

दोनों नं0 12 चन्द्र नं0 7 या शुक्र या मंगल कायम हो तो मगरमच्छ रेखा होगी आरती समय की मगरमच्छ होगी। शुक्र या चन्द्र या मंगल में से जो ग्रह कायम हो। मगरमच्छ रेखा उस ग्रह का अच्छा प्रभाव देगी जो रद्दी ग्रह के दौरा के शुरु होने का दिन होगा। इसी तरह और बढ़ाने का अरसा और दिन अच्छे और कायम (केवल शुक्र या चन्द्र या मंगल में से कोई एक या तीनों ही बाकी ग्रहों का मगरमच्छ रेखा से कोई संबंध न होगा) ग्रह दौरा और शुरु होने का दिन होगा। उर्ध्व रेखा और मंगल के सालवार प्रभाव पर किस्मत की कमी पेशी होगी दोबारा हलक से उदास होकर शनि अपने पिता के घर के रास्ते शनि के अंगुली या मध्यमा पर जा चढ़े यहां क्या था फिर उदासी और सन्यास गले पड़ा ऐसा आदमी जिसकी मध्यमा पर धन या उर्ध्व रेखा हाथ की हथेली या दुनिया की सारी उदासी या बैराग्य में चली गई या ऐसा आदमी धन दुनिया दौलत से निराश ही हो गया यद्यपि धन को अब कोढ़ (बीमारी जिससे शरीर खराब हो जाता है)हो गया। इस बुरी दशा में काला मुँह लिए धन देवता फिर माता के पास आया। आदेश हुआ कि राह रास्ता पकड़ो चारों बदमाशों से बचाव के लिए साफ़ और मजबूत होकर चलो। सब तरफ से ध्यान रख कर चले। अब फिर हथेली के खाली मैदान में जिस पर किसी पर्वत के सम्बन्धित लोगों का बुरा प्रभाव न हो चले पड़ा। अब धन रेखा की इधर कमी उधर होती चली जहां टूट फूट हुई धन दौलत का नुकसान हुआ यह जरुरी नहीं कि चारों से। अब अगर बैठी रहती है तो शनि का हैडक्वार्टर खाने का भय देता है बन्द जमा माया पर बिच्छु (वृश्चिक राशि) जिसे चन्द्र धन दवेता की माता ऊँच करती है (काले सांप शनि इच्छधारी सांप आ बैठते और आराम करते हैं। धन बन्द किया हुआ भी चल पड़ता यानि सांप को मिट्टी या शुक्र भी रास्ता दे देता है या सांप को मुसीबत के समय करती जमीन या शुक्र फट कर जगह देते है। शुक्र को औरत लक्ष्मी रुप भी माना है। इसलिए धन को मिट्टी या लक्ष्मी चलने के लिए रास्ता दे देती है। क्योंकि वो सब एक ही स्वरूप या एक ही चीज है। इस हालत में धन देवता के सिर पर मिट्टी का भार आ सवार हुआ

और अपनी माता के अन्दर चन्द्र की जमीन या तह में छुप कर रहना पड़ा। यद्यपि अब फिर दुनिया से दूर रहा अन्धेरी कोठरी या माता (चन्द्र की जमीन) की बन्द हवा से फिर बाहर आता है दिन ब दिन बढ़ता और ऊँच होता या ऊपर को उठता या ऊपर को चलता है वैसे ही ऐसे टेवे वाले की किस्मत का हाल होगा।

सूर्य–चन्द्र

दोनों ग्रह (जब सूर्य पहले और 22 से शुरु हो) 40 साल उम्र तक साँझा होंगे। इस मिलावट में अगर चन्द्र का प्रभाव तीन हिस्सा हो तो सूर्य का चार गुणा होगा। मगर प्रबल और प्रकट केवल सूर्य का उत्तम प्रभाव होगा। क्योंकि चन्द्र में सूर्य की आधी रोशनी होती है वो सूर्य के दरवाजे का भिखारी है। सूर्य के दरवाजे से (जब चन्द्र के घर खाना नं० 4 या चन्द्र के साथ किसी भी नेक घर जब दोनों के दुश्मन का घर यानि खाना नं0 6,10 से 12 न हो) सूर्य हो तो **केतू दान लेगा या सूर्य के समान राजा होगा** जो अपने भिखरियों को मोती दान करे। दांया सांस चलने के समय सूर्य का प्रभाव होगा और बांए सांस में चन्द्र का प्रभाव होगा। इसलिए शुभ और ज्यादा देर रहने वाले काम सूर्य की उम्र 100 साल तक रहने वाले या बहुत जरुरी काम दांए सांस के चलते समय और मामूली काम चन्द्र के प्रभाव या बांए सांस के चलने के समय जायज गिने गए हैं। संक्षिप्त रुप में दांया हिस्सा सूर्य का और बांया हिस्सा चन्द्र का है। इसी नियम पर **तिल, अंग फड़कना आदि के** लिए दांया ही पहलू शुभ और हाथ भी बांया नेक ही गिना है और आगे दांए हाथ का भी **दांया हिस्सा असल शुभ है।** खत क - ख के ऊपर का हिस्सा या मध्यमा की तरफ का ऊपर का हिस्सा और कलाई वाला निचला हिस्सा, इसी तरह ही खत अ–ब से भाग शुदा अंगूठे की तरफ का टुकड़ा हाथ का दांया हिस्सा और कनिष्टका की तरफ़ का टुकड़ा हाथ का बांया हिस्सा होगा।

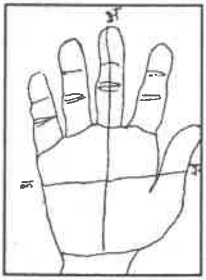

चाहे हाथ बजात खुद दांया ही है। **इस दांए हिस्सा पर घोड़े सांप व मन्दिर आदि के निशान शुभ होंगे।**

सूर्य देखे चन्द्र को मगर सूर्य नं0 1 का हो तो चन्द्र का फल चन्द्र की आधी अवधि यानि 12 साल तक सूर्य के नीचे दबा रहने के बाद अलग और सूर्य की तरह उत्तम होगा। जब यह रेखा सूर्य का वृहस्पति के पर्वत के साया या सम्बंध में हो जाए तो बिल्कुल शुभ संबंध होगा। सूर्य का प्रभाव (साया पर्वत मगर पर्वक का साथ न हो जाए) खुष्क कुँए स्वयं अपने आप पानी देने लग जाएंगे। **चन्द्र जब देखे सूर्य को, कोई सहायता न देगा।** बल्कि अपना बुरा प्रभाव कर लेवें तो बेशक सूर्य चन्द्र-रथ गाड़ी, शुद्ध बड़ का दूध अलीची (फल) दोनों साँझा तो केवल सूर्य का पूरा उत्तम फल प्रकट होगा। मगर औरतों

से दुश्मनी, बुढ़ापा विशेषकर अच्छा होगा। जायदाद जददी का अच्छा फल व गृहस्थी आराम शान्ति से होगा। सूर्य रेखा - यह रेखा अपने पर्वत पर ही होती है और सूर्य के नाम से ही याद की जाती है। अगर यह अपने पांव की दासी चन्द्र या दिल रेखा तक न पहुँचे तो मामूली प्रभा की होगी। अगर दिल रेखा से जो मिले तो दिन की शान्ति होगी और बुढ़ापा बहुत अच्छा निकलेगा। सूर्य की रेखा अगर दिल रेखा तक पूरी हो तो उत्तम होगी, क्योंकि दोनों मित्र हैं।

दोनों परस्पर विरोधी न हों तो दिल की शक्ति में सूर्य का शुभ और उत्तम प्रभाव होगा। दोनों के मुकाबले, बुध-केतू कोत दिल ज्यादा। दोनों के मुकाबले मंगल बद या पापी ग्रह या शुक्र या मंगल राहू शनि हर समय दुखिया, रात दिन का समय मुसीबत पर मुसीबत देखे। 15 साल मंगलबद की मन्दी घटनायें हों और नौ साल व्यर्थ प्रभाव देगें।

दोनों परस्पर विरोधी हों तो मगल बद और केतू- बिलकुल बुरी जिन्दगी लाखोंपति, फिर भी न रात का आराम न दिन को चैन, हर समय दुनिया होवे अगर सूर्य के पर्वत से चन्द्र के पर्वत में या चन्द्र के पर्वत से सूर्य के पर्वत में कोई रेखा जा निकले तो कामयाबी की कोई तसल्ली नहीं। बिलकुल ही बुरी जिन्दगी होगी। क्योंकि रास्ते में मंगल बद आ चुका है।

सूर्य–चन्द्र खाना नं: 1

उदाहरण के तौर पर राजा हो, दूसरों से राज-कर लेवे। मगर मौत अचानक हो।

सूर्य-चन्द्र खाना नं: 2 औरतों से झगड़ा, हार और हानि हो।

सूर्य-चन्द्र खाना नं० 3 मतलब परस्त मगर स्वयं उम्दा प्रभाव और किस्मत का।

सूर्य-चन्द्र खाना नं: 4

राजा महाराजा, दुनिया का पूरा आराम सीप में मोती और मोती दान करने की हैसियत का, सवारी का सुख, बशर्ते कि नं0 10 खाली हो, **मौत अचानक अगर नं0 10 में शनि हो तो मौत दिन के समय, दरिया नदी नाले या जमीन के नीचे से पानी या चलते पानी में होवे।**

सूर्य-चन्द्र दोनों खाना नं० 5 : जिन्दगी भर आराम रहे।

सूर्य–चन्द्र दोनों खाना नं० 6

दोनों का नं0 6 का अलग अलग प्रभाव दोनों साँझा के साथ राहू या केतू हो तो माता पिता की मौत के साथ स्वयं भी मौत पावे। शर्त यह है कि खाना नं0 2 खाली हो **नहीं तो मंगल का उपाय सहायता करेगा।**

सूर्य-चन्द्र खाना नं0 7-8 : अलग अलग असर इन घरों में दोनों का लेंगे।

सूर्य-चन्द्र खाना नं0 9: मातृ हिस्सा (चन्द्र की सहायता) निहायत शुभ तीर्थ यात्रा 20 साल और उत्तम फल का।

सूर्य-चन्द्र खाना नं0 10 : अपना-अपना और अलग-अलग होगा।

सूर्य-चन्द्र खाना नं0 11 : - उम्र केवल नौ साल हो।

सूर्य-चन्द्र खाना नं0 12

दोनों का नं0 12 का अलग-अलग प्रभाव मगर सूर्य का प्रबल होगा।

सूर्य-शुक्र

दोनों ग्रह तब सूर्य 22 से शुरु हो 41 साल उम्र तक साँझा होंगे। इस मिलावट में शुक्र तीन हो तो सूर्य का नजीता चार होगा और एक समय में दोनों से केवल एक ही प्रकट होगा, यानि जब एक का प्रभाव अच्छा हो तो दूसरे का मध्यम अच्छा होगा। सूर्य शुक्र (लाल मसूर, लाल मिट्टी, गाचनी, कांसी का कटोरा दोनों साँझा पैदाइश सन्तान के मालिक होंगे। मशनोई हवाई वृहस्पति का प्रभाव होगा यानि दोनों ग्रहों का वृहस्पति की ठोस चीजों सोना वगैरह से कोई संबंध न होगा। सूर्य की शुक्र से शुत्रता है या सूर्य के पास मिट्टी होती ही नहीं यानि अगर सूर्य की अवधि 21-22 साल उम्र या शुक्र की उम्र 25 साल उम्र में शादी हो तो राज दरबार (सूर्य) और औरत (शुक्र) गृहस्थ का बुरा फल हाल होगा मिट्टी से इन्सान बना और आग से देवता, इसलिए सूर्य से दोस्ती न हो सकी। सूर्य के साथ शुक्र का साथ और संबंध स्वयं शुक्र के फल में बुरे फल की जमीन अधिक गर्मी का प्रभाव होगा। यानि व्यक्ति मगर बुत हल्का जिन्न मुरीदी औरत की कबूतर बाजी, बद और दैविक नुक्स होंगे। मगर स्वयं अपनी शारीरिक कोई खराबी न होगी। मगर औरत का बुरा हाल, बुरी सेहत, तपेदिक या दूसरी कोई लम्बी-लम्बी बिमारियां होंगी। जिसका सबूत औरत के साथ पर दोनों ग्रहों के साँझा होने पर वृहस्पति का कोई विशेष नेक मतलब नहीं हुआ करता। पिता की उम्र भी शक्की होगी बल्कि पिता छोटी उम्र में गुजर जाए अगर शुक्र का फल अच्छा हो तो सूर्य बुरा फल देगा। दोनों ग्रहों में से केवल एक का अच्छा प्रभाव होगा। यानि स्त्री नेक सुखिया और भाग्यवान्, दौलतमन्द तो राज दरबार हल्का या बुरा अगर राज दरबार अच्छा और नेक तो स्त्री भाग्य जला हुआ और मन्दा बर्बाद होगा। क्योंकि सूर्य के समय से जब नं0 1 में आवे शुक्र का प्रभाव बुरा होता है। मगर सूर्य अपने **लिए बुरा होता है जिसका उपाय हमेशा बुध का पालना होगा।**

दोनों आपस में विरोधी हों तो माता-पिता बचपन में गुजर जाये जिस घर में शुक्र हो उस घर का हाल खराब होगा। शुक्र की सम्बन्धित चीजों का सूर्य को स्वयं सूर्य के बैठा होने वाले घर पर **शुक्र का बुरा प्रभाव न होगा।**

सूर्य-शुक्र खाना नं० 1

औरत मरीज, काम रेखा वाली, सूर्य की भी स्वयं मिट्टी खराब करे। पराई आग गैर औरत की मुहब्बत से जेल खाना आदि हमराहियों पर शुक्र के पंतंग का बुरा प्रभाव होगा। औरत की दिमागी खराबियों तक पैदा होगी।

सूर्य-शुक्र खाना नं 7

औरत से झगड़ालू, औरत की सेहत बुरी वगैरह दोनों का खाली बुध नं0 7 का प्रभाव होगा। बुजुर्गो पर काम रेखा मगर स्वयं अपने लिए सूर्य नं0 9 का

प्रभाव तीर्थ यात्रा 20 साल उत्तम फल देवे। औरत की उम्र तक, तह मकान का (बुजुर्गी) लाल रंग होना, सूर्य या मंगल का) दोनों ग्रहों की दुश्मनी का बुरा प्रभाव देगा।

सूर्य–शुक्र खाना नं० 9

स्त्री भाग्य में काम रेखा, कभी अमीरी का समुन्द्र ठाठें माने कभी गरीबी में रेत के जर्रे की चमक भी न हो। मगर तीर्थ यात्रा उत्तम और 20 साल उत्तम फल देवें।

सूर्य–शुक्र खाना नं० 10

राज दरबार के ठूठे पड़े अन्त समय की तरह की किस्मत टेवा अन्धे ग्रहों का होगा। **शनि हमेशा बुरा फल देगा। सांप को दूध पिलाना शुभ होगा।** खाना नं 4 के ग्रह सहायक होंगे। नीच वृहस्पति का प्रभाव (खाना नं0 10 वृहस्पति) होगा। पैदाश के समय सन्तान और उम्र सन्तान जिसके बचाव के लिए चौथे घर के ग्रह सहायक होंगे। अगर खाना नं0 4 खाली हो तो **चन्द्र का उपाय, सहायक होगा। बल्कि चन्द्र अपने-आप सहायता देता चला जाएगा।**

बाकी घर:-बाकी घर दोनों का अपना-अपना दिया हुआ प्रभाव होगा।

सूर्य मंगल

दोनों ग्रह जब सूर्य 22 से शुरु हो 48 साल उम्र साँझा होंगे। सूर्य के प्रभाव का अगर एक जज हो तो मंगल दो गुणा होगा। दोनों का अलग-अलग और उत्तम प्रभाव होगा, मगर सूर्य का प्रबल और उत्तम होगा। ऐसा टेवे में चन्द्र (माता-धन का खजाना आदि) रद्दी बुरा या हल्का ही होगा। मगर कष्टी न होगा यानि व्यक्ति के जन्म से उसकी माता किसी न किसी तरह सख्त दुखिया ही रहा करती है। लाल बचपन की उम्र व अपनी सन्तान और अपने खून के नजदीकी रिस्तदारे सम्बन्धियों से संबंध, दोनों का और अच्छा फल होगा। (सूर्य के बिपस वही मंगल, मंगल बुरा रह जाता है) यानि सूर्य साथ मिले तो मंगल का प्रभाव नेक होगा व साथ मिलने का नाम ही जमा होना या 3+1=13 होता है। मंगल सूर्य के प्रभाव में दौलतमन्द व जायदाद वाला होगा और हर तरह से उत्तम। सूर्य रोशनी है तो मंगल नेक इसकी किरणे होंगी या वो और इसका भाई दोनों उत्तम होंगे। दोनों साँझा किसी भी घर में हों सूर्य हमेशा ऊँच फल का होगा। निकलते सूर्य की तरह बचपन से या जन्म समय से अच्छा और उत्तम किस्मत का मालिक, दुश्मन पर हमेशा उत्तम, उम्र पूरी बल्कि 100 साल होवे। दिली साफ शक्ति, धर्म में हमेशा खोटन होगा। सूर्य के बिना मंगल सिवाए मंगल बुरा के और कुछ न होगा। जहां सूर्य होगा मंगल का प्रभाव हमेशा मंगल नेक का होगा। जब मंगल को सूर्य की सहायता न मिली **मंगल वही मौत का देवता खाना नं0 8 का मालिक होगा** सूर्य भी जब मंगल से मिले तो ऊँच फल का होगा। मंगल सारे सम्बन्धित दुनिया

में चमक और रोशनी है हो उस समय जब सूर्य निकला हुआ हो।

सूर्य की लाली:- निकलते सूर्य की लाली से मुराद मंगल सूर्य साँझा यानि शुरु उम्र या जन्म से अच्छा व अच्छा हाल और छिपते या डूबते सूर्य की लाली से शुभ बुढ़ापे की तरफ या पिछली अवस्था में मंगल शनि की साँझा उत्तम फल की हालत होगी। मंगल की लाली निकलते और छिपते सूर्य के साथ के साथ होती है जिस तरह सूर्य की उम्र बढ़ती जाया करती है और अलग नजर नहीं आती मगर होती है जरुर अन्दर ही छिपी हुई जिस तरह लाली और रोशनी का मिलाव ज्यादा होगा, उसी तरह सूर्य की अच्छी किस्मत का प्रभाव ज्यादा होगा। या लाली के बगैर सूर्य की वो शनि न होगी जो लाल सूर्य के अन्दर ज्यादा शामिल होने पर। रोशनी के बिना लाली किसी को नजर न आयेगी या इसमें स्याही का ही प्रभाव होगा। या सूर्य के बिना मंगल नेक की जगह मंगल का प्रभाव बुरा या मंगल बुरा (मंगल में शनि की बुराई का प्रभाव) होगा। ऐसे टेवे में मंगल बुरा का संबंध बिलकुल बुरा, मौते आदि देगा । 30-31 वर्ष यद्यपि मकान मंगल का बुरा प्रभाव होगा। क्योंकि मंगल बद व सूर्य अकेले मंगल को सूर्य का संबंध नेक करता है। लेकिन मंगल बुरा (चाहे अलग जगह लिखा है कि किन-किन हालतों में मंगल को मंगल बुरा लेंगे) को सूर्य की सहायता या मंगल बुरे से सूर्य का संबंध बुरे हाल और नजदीकी रिस्तेदोरों की मृत्यु आदि होगी। सूर्य के बिना मंगल को मंगल बुरा कहा है। इसलिए अगर चन्द्र से कोई शाख मंगल बुरा के रास्ता सूर्य को जावे तो भी बिलकुल बुरी जिन्दगी होगी। मंगल बुरा सबक दुश्मन है यानि रात और दिन हर समय निहायत होगी। मंगल ने मंगल नेक वाली कोई बुरा नतीजा न देगी। मगर मंगल बुरे की तरफ से **आई हुई रेखा सूर्य की सेहत या तरक्की रेखा को आ काटे तो शुभ न होगा एवं रोजगार में धक्का बाजी बल्कि मंगल बुरा का प्रभाव मौते आदि दिखलाएगा** यानि इसकी (ऐसे हाथ वाले की) अपनी मौत तो न होगी मगर अपने भाई बन्धु, बिलकुल नजदीकी रिस्तेदारों की मौतें जरुर देखना, यानि मंगल नीच होगा और बुध-राहू केतू का बुरा प्रभाव अवश्य होगा इसके अतिरिक्त यदि नजर पर भी कोई प्रभाव खराब हो जाए तो हो सकता है।

सूर्य मंगल दोनों खाना नं0 1-2 - दोनों ग्रहों की पहली उम्र में चढ़ते सूर्य की लाली का उत्तम फल, साफ दिली, में भी उत्तम फल होगा। पूरी उम्र बल्कि 100 साल समान होगी तलवार दुश्मन पर हमेशा होगी।

सूर्य मंगल

सूर्य मंगल खाना नं0 9 :- अजीजों से माल का झगड़ा होवे।

सूर्य मंगल खाना नं0 10

और शनि नं0 11 हो और चन्द्र नं0 6में हो तो भाग्यवान् हो।

बाकी घर:-बाकी घर दोनों का अपना-अपना और अलग-अलग मगर सूर्य का प्रबल और उत्तम होगा।

सूर्य–बुध

दोनों ग्रह तब सूर्य 22 साल से शुरु हो 39 साल उम्र तक साँझा होंगे। इस मिलावट के प्रभाव में अगर सूर्य दो हिस्से हो तो बुध का एक हिस्सा होगा। दोनों का और उत्तम फल होगा। मगर सूर्य का उत्तम प्रबल होगा। सिर हरा पहाड़, लाल फटकड़ी, सीसा सफेद, नकली नेक मंगल, औलाद की जिन्दगी का मालिक, नेक केतू दोनों का और उत्तम फल, सूर्य का उत्तम प्रबल होगा। राजा संबंध और सरकारी नौकरी आदि जरुर होगी और लाभदायक, **सूर्य इन्सानी तो बुध विधाता की कलस होगा। सूर्य बन्दर तो बुध लंगूर की दुम की तरह सहायक** उम्र लम्बी और पूरी मगर मौत अचानक व कलम हमेशा सहायक, लैम्प उत्तम फल देंगे। बुध की अपनी उम्र 17 साल तक बुध का अलग फल न होगा 17 साल उम्र लड़की की 17 उम्र के बाद बुध सूर्य को सहायता देगा मगर शुक्र का प्रभाव 25 साल मन्दा और बुरा ही होगा। दो नर ग्रह साँझा से सूर्य का सितारा शुभ होगा चूँकि यह शक्ल चक्र से संबंध रखती है और हथेली पर वाक्या है इसलिए राज दरबार में झगड़ा रगड़ा तो जरुर पैदा करेगी, मगर फैसला इस हक में और जिस पर्वत पर होगी वहां प्रभाव देगी। अगर सितारा पूरा न हो यानि सूर्य नीच घरों में या दुश्मन ग्रहों का साथी, सम्बंध हो जाए तो आयु के लिए साल की आमदन मालूम करनी हो इतने साल की उम्र से 21 घटा करें क्योंकि 23 साल से सूर्य का प्रभाव होना माना गया है बाकी को दस से जरब दें, जवाब मासिक आमदन होगी। यह प्रभाव 22 साल तक कायम रहेगा। (उम्र=21==रोज X10=महावारी आय)पूरे सूर्य का प्रभाव से अच्छी मासिक आय होगी। सूर्य रेखा जब यह रेखा नीचे को सिर रेखा तक चली जाए तो जवानी से किस्मत जागेगी। क्योंकि यह रेखा ऊपर से नीचे कलाई को जाती है सिर रेखा बुध की उम्र 34 साल होगी। सूर्य और बुध का नेक शुभ है। सूर्य रेखा का संबंध सूर्य के पर्वत पर से है और लम्बी लकीर से विद्या शुभ है।

बुध जब सूर्य को या सूर्य बुध को देखता हो या दोनों बुध के पक्के घर खाना नं0 7 या दोनों साथी ग्रह या दोनों सूर्य के ऊँच घर (खाना नं0 1) में हो तो उत्तम प्रभाव होगा। चन्द्र का साथ या चन्द्र का प्रभाव द्वारा दृष्टि साथ होते हुए दोनों बुध के पक्के घर खाना नं0 2 में हो तो दोनों का एक प्रभाव होगा घर सूर्य की ऊँच फल की राशि या पक्का घर खाना नं0 1 या शनि के पक्के घर खाना नं0 10 या वृहस्पति के पक्के घर खाना नं0 2 में हो तो दोनों का एक प्रभाव होगा।

सूर्य देखे बुध को तो सूर्य अपने दोस्त बुध को जब अपनी ही रेखा का प्रभाव्र दिखायें यानि सूर्य के पर्वत से रेखा बुध के पर्वत में जाए तो स्त्री को बुध की सहायता से सूर्य की उत्तम शक्ति मिलेगी। 100 प्रतिशत पर बुध का अलग प्रभाव प्रकट न होगा। सूर्य को सहायता ही होगी। स्त्री घर ससुराल अमीर होगी

और स्त्री शक्ति उत्तम होगी। 50% पर स्त्री की किस्मत सीसे की तरह और भी चमके, मिट्टी दूर हो 25% पर योगाभ्यास, ज्योतिष विद्या अच्छा हो। इसी तरह की कनिष्ठका और अनामिका के बीच ज्योतिष विद्या (छोटी सी लीकर) होगी। तर्जनी और मध्यमा के बीच छोटी सी लकीर से योगाभ्यास शुभ होगा। (बुध देखे सूर्य को) सिर रेखा से अगर सूर्य या बुध को रेखा चली जाए तो सूर्य और चाहे दर्जा दृष्टि कोई हो) बुध का बिलकुल उत्तम प्रभाव होगा। सेहत अच्छी, दस्ती, दिमागी कोराबार बिलकुल उत्तम, स्त्री पर नेक प्रभाव हो लेकिन अगर चन्द्र नष्ट हो तो दिमागी सद्भाव होंगे। सूर्य बुध साँझा नकली मंगल नेक, कनिष्ठका और अनामिका के बीच सुराख हो तो बचपन में तकलीफ हो, चेहरे पर बांए तरफ ठोढी से ऊपर अगर कानों से नीचे चेहरा की हड्डी पर जख्म का निशान होगा। यद्यपि बुध चुप होगा **जुबान का शब्द पत्थर पर लकीर का प्रभाव देगा।** औरत रंग व स्वभाव में नेक होगा। दूसरों की बजाए स्वयं अपनी और अपने हाथों की पैदा करने एवं कमाई पर भरोसा और दिलासा देने वाला होगा। जिसका नतीजा नेक होगा या वो स्वयं यानि अपने आप अमीर बना हुआ होगा। अच्छी सेहत होगी। राज दरबार में होते हुए व्यापार नहीं कर सकता। इसलिए जब बुध के साथ सूर्य हो तो **बुध का प्रभाव कम या व्यापार मन्दा होगा।** बुध का प्रभाव 45 साल उम्र तक अलग वास्ते व्यापार कोई काम न देगा।

बुध सूर्य साँझा में सूर्य कभी नीच फल का न होगा। बुध स्वयं बेशक मारा जाए यानि जिन घरों सूर्य नीच होगा वहां बुध का प्रभाव बुरा होगा। जहां बुध का बुरा है वहां सूर्य पर धब्बा लगेगा। मगर बुध की इशया हमेशा सूर्य को हमेशा सहायता देगी।

दोनों आपस में विरोध तो चन्द्र या वृहस्पति के बुरे नतीजे होंगे।

दोनों के आपसी सम्बंध में हो तो शनि नेक फल, दोनों दुश्मन (सूर्य और शनि) अपना-अपना नेक काम करते जांए और इनका कोई झगड़ा न होगा। लेकिन जब दोनों शनि को देखे तो झगड़े का फैसला हक में न होगा।

सूर्य का भय और बुध ऊँच घर का हो तो सूर्य का ऊपर नेक प्रभाव स्वयं अपनी कलम के जरिये राज दरबार से बरकत होगी। **नेक और ईमानदारी का धन साथ देवे।**

सूर्य-बुध खाना नं० 1

चक्की जो जगह हिलती फिरे वजीर समान साहब तदबीर, सर हरा पहाड़ की शान, रिवाजी, **योगाभ्यास का नेक फल,** झगड़ा राज दरबार में अपने से बड़े के साथ परन्तु फैसला हक में होगा चन्द्र का संबंध व साथ सभी शुभ होगा। कुण्डली में खाना नं0 1 सूर्य के पर्वत पर बुध की तरफ को रेखा हो तो अमीर, राज दरबार से नेक संबंध उत्तम सूर्य का पूरा लाभ, अगर सितारा सूर्य के पर्वत

पर मगर शनि की तरफ वाक्या हो यानि शनि का टकराव आ जाये तो फैसले को अपने हक में होने की पूरी तसल्ली न होगी, क्योंकि शनि दुश्मन है)।

सूर्य–बुध खाना नं० 2

शारीरिक दिमागी अच्छा माली हल्का चाहे सूर्य नं0 8 और बुध नं0 2 ही हों मगर खाना नं0 1 का प्रभाव शामिल ही होगा।

सूर्य–बुध खाना नं० 3

बिलकुल उत्तम, राहू का अब कुण्डली में बुरा प्रभाव न होगा। अगर सितारा तर्जनी अंगूली की जड़ में हो तो आशिक पक्का हो यानि बहुत बड़ा वृहस्पति शुक्र का प्रभाव देता है फिर सितारा सूर्य ने ओर भी बुलन्द किया तो शुक्र की शक्ति इश्क पक्का हुआ। वृहस्पति और सूर्य आपसी दोस्त हैं और उत्तम फल वाले हैं इसलिए बुरा इश्क न होगा। अगर चाल चलन बुरा हो तो राहू व शुक्र दोनों का बुरा प्रभाव होगा । 17 साल नुकसान होगा। बदनाम आशिक होगा और स्वार्थी होगा ।

सूर्य–बुध खाना नं0 4–5 : –अपना–अपना और अलग–अलग प्रभाव लेंगे।

दोनों नं0 5 और शनि नं 9 सन्तान पर कोई बुरा प्रभाव न होगा और न ही बुजुर्गो पर बुरा प्रभाव होगा। सूर्य का सितारा कायम होने से सूर्य मेश राशि का होगा। जिसकी उम्र 90 साल होगी। यद्यपि सूर्य सिंह राशि का घर का मालिक है और इसको कोई नीच या ऊँच नहीं करता है (उम्र 100 साल) मगर ऊँच सूर्य मेष राशि का है। इसलिए उम्र कम से कम 90 साल जरुर होगी। मगर मौत अचानक होगी।

सूर्य–बुध खाना नं० 6

बुध कायम सूर्य बुरा अज दृष्टि नं0 2––यह सितारा जिस तरह ऊपर अनामिका की जड़ या कन्या राशि नं0 6 को केतू का घर है, की तरफ होता जाए, प्रभाव कम होता जाएगा, क्योंकि केतू सूर्य को मध्यम करता है।

बुध कायम मगर सूर्य नष्ट दृष्टि नं0 2 तो कनिष्टका अनामिका से बहुत बड़ी हो तो मन्दा एवं बुरा होगा।

कनिष्टका अनामिका से कद्रे बड़ी हो तो नेक नसीब होगा।

दोनों कायम या खाना नं0 2 खाली, कनिष्ठका अनामिका बराबर हो तो सन्तान का सुख हो मगर अपनी उम्र कम हो।

बुध ऊँच और कायम सूर्य बुरा अज दृष्टि नं0 2 कनिष्टका अनामिका से छोटी हो तो नेक प्रभाव हो।

सूर्य–बुध खाना नं० 7

शुक्र कायम और नेक हो तो इसकी औरत अमीर खानदान से सूर्य की तरह उत्तम और पूर्ण होगा। रंग और स्वभाव भी नेक और साफ होंगे सूर्य नं0 7 में शुक्र

के घर का (ससुराल का) नीच फल कर देता है, इसलिए अगर शुक्र बुरा बर्बाद या खराब हो तो खुद औरत का फल (केतू सन्तान) बेशक बुरा हो और औरत स्वयं इतना आराम आये या सन्तान कम, ससुराल मन्दे या सन्तान की उम्र के मुकाबले हो, मगर मर्द स्वयं की आमदन की नाली हजारों जंगल पहाड़ों के मैदानों को खराब करेगी। स्वयं वो वेश इतना लाभदायक हो अपनी जान के लिए न पा सके आम तौर पर वो सूर्य की तरह उत्तम होगा। एवं

"टांगा, पार टांगा, विच्चे टल्लम टल्लियां, आवन कूजां देन बच्चे नदी नहावन चालियां" यानि ऐसा व्यक्ति समय मुसीबत बन्दी की बांस के छलांग लगा कर दरिया पार करने की तरह कामयाब होगा और अगर इसकी जवानी का हिस्सा ऐसा शानदार न निकले तो इसका शुरु और आखिर जरुर ही अच्छा और नेक होगा। किस्मत के मैदान में चलते हुए रहट की तरह हर समय आमदन जारी फव्वारे का उठता हुआ और ताजा पानी की तरह की किस्मत का मालिक हो। नगर राज दरबार से कोई ऐसा न पाएगी। अभ्यास व ज्योतिष विद्या शुभ होगा बुध का फल 34 साल उम्र के बाद नेक होगा और केतू का फल भी इस समय से अच्छा होगा। सूर्य के सितारा का प्रभाव बुध के पर्वत पर, दोनों आपसी ग्रह हैं मगर बुध अपनी शक्ति सूर्य को ही दे देता है और अपने समय में बिलकुल चुप रहता है सूर्य व बुध दोनों का अपना-अपना और उत्तम फल होगा। दौलत ज्यादा होगी मगर अक्ल, बुध की सम्बन्धित चीजों का प्रभाव, व्यापार आदि चुप रहेगा और कम मालूम होगा अगर सितारा कनिष्टका की जड़ में हो तो लोगों में बेइतवारी पैदा करवा देगा क्योंकि सितारा की रोशनी से कनिष्टका की जड़ पर की धन राशि जो वृहस्पति का घर है और बुध की दुश्मन है चमक देने लग जाएगी यानि अगर खाना नं0 9 में बुध का कोई दुश्मन **ग्रह हो तो बुध अब सूर्य की सहायता करने की बजाए सूर्य पर स्याही या मिट्टी डालने लग जाएगा।** या सूर्य नं0 7 के नीच सूर्य को अपनी (बुध की) 34 साल उम्र तक बल्कि खाना नं09 के दुश्मन ग्रह की उम्र तक कोई ऐसा शानदार न चमकने देगा, परन्तु ग्रहण नहीं लगाए।

सूर्य-बुध खाना नं० 8

बुध अब बहिन की हालत बुरी और खाना नं0 2 के ग्रहों को बर्बाद करेगा। **शीशे के बर्तन को गुड़ से भर कर श्मशान में दबाना सहायक होगा।** दोनों का अलग-अलग फल होगा। टेवे में अगर मंगल बुरा हो तो जंग, जो बेरहम, बदचलन होगा अगर सितारा हथेली की अन्दर की तरफ को हो तो जंग में ही मारा जाएगा।

सूर्य-बुध खाना नं० 9

लसूड़े की गुठली का सा हाल होगा। 17-27 साल उम्र बुरा प्रभाव होगा, वास्ते राज दरबार , विद्या संबंधी 24 साल उम्र से दोनों का फल शुभ होगा और

जो 34 साल से तरक्की पर होगा। नर सन्तान 34 साल उम्र से पहले कायम न होगी, न ही लड़की के नर सन्तान 22 साल उम्र तक होगी विशेष कर इसकी तीसरे नम्बर की लड़की 6 साल उम्र तक (सिवाए पहले और तीसरे साल) बिलकुल शुभ होगी या इसकी हर एक नम्बर की लड़की और ऐसी लड़की की उम्र का हर नम्बर का साल वही फल देगा जो बुध स्वयं ही खाने में देता है। **बुरी हालत में सूर्य का या मंगल का उपाय सहायक होगा** जो लड़की का जन्म दिन इतवार या मंगलवार भी हो सकता है।

सूर्य–बुध खाना नं० 10

शनि के पर्वत पर दोनों ग्रह आपस में शुत्र है-शनि व सूर्य व बुध का अपना-अपना और उत्तम नं0 1,2 का शामिल होगा, मगर शनि का बुरा फल होगा। दौलतमन्द तो ज्यादा होगा मगर बदनामी में मशहूर होगा। आपने काम स्वयं ही बिगाड़ता फिरेगा। और अगर दो सितारे हो तो बदनामी से शनि नीच (दो सितारा के मुकाबले पर) की वजह से मारा जाएगा। सूर्य बुध इस घर में होने पर टेवे के खाना नं0 1,2 के ग्रहों की दोस्ती दुश्मनी के साँझा प्रभाव का फल किस्मत में शामिल होगा। मगर शनि का पत्थर भी टेवे के अनुसार का (जैसा कि शनि हो) जरुर साथ होगा।

सूर्य–बुध खाना नं० 11

जद्दी मकानों या जाती मकान की जमीन से सम्बन्धित होगा यानि इन दोनों ग्रहें का नेक व बुरा प्रभाव शुरु व खत्म होने की निशानी फौरा इसके खानदान के परिवार जनों पर प्रकट करेगा या अगर इसके बुजुर्गी मकान में धर्म पूजन नेक पुरुष व्र मुबारिक स्वभाव भद्र पुरुष रहे तो नसीबा हर दम बढ़े। जब वहां जहर पैदा करने वाला हो तो जहर फौरा टेवे वाले पर प्रभाव करेगी।

सूर्य–बुध खाना नं० 12

अपना-अपना फल यद्यपि बुध अब खाना नं0 6 के ग्रह को बर्बाद करेगा, लेकिन सूर्य (अपना शरीर व राज दरबार) इसके जहर से बचत रहेगा। बशर्ते कि उसके कानों में सोना कायम रहे वरना शारीरिक नुक्स, नाड़ों की खराबियों, मशी-गोता, मिरगी तक होगा।

सूर्य–शनि

शनि सूर्य का दुश्मन है। सूर्य रविवार और शनि सप्ताह का अन्तिम दिन है। दोनों की मध्यम सीमा हाथ की होगी। जो फिर भी उर्ध्व रेखा बन जाएगी मगर मन्दी हालत की सूर्य आप तो कुल दुनिया को रोशन करता है। शनि इसका बेटा निर्धन बनाता है और सबकी चोरी करता फिरता है वो दौलत देता है तो यह दौलत चुराता है। वो सबसे बड़ी 100 साल की उम्र देता है तो यह मौत के घर खाना नं0 8 वृश्चिक राशि में मंगल बुरा से मिल कर बस के लिए मौत का जाल लिए बैठा

है। वो जैसा बाहर से साफ चमकता है वैसे ही अन्दर से सच्चा है, शनि उल्ट हालत में बाहर और अन्दर दोनों रंग में स्वाह हो गया है। दुश्मन ग्रहों के अतिरिक्त सूर्य का स्वयं अपना बुरा प्रभाव बिलकुल पोशीदा और छुपे ढंग पर रात में सोए हुए की तरह चाहे पैदा होने की तरह प्रकट होगा। मगर शनि को बुरा प्रभाव दिन दिहाड़े सारे बाजार सारे **दुनिया के सामने खड़ा करके कत्ल करने के जामने की तरह पर व्यक्त होगा। सूर्य बख्शीश न देवे , अगर आशीष न देवे तो शनि की तरह फकीर की झोली से उल्टा माल निकाल ही लेने का बरताव न करेगा।** किसी का सवाल न होगा बल्कि अगर हो सके तो किसी के सवाल को पूरा कर देगा। स्वयं चोट खाएगा और बढ़ेगा, मगर शनि की तरह दूसरों पर चोट मारना जायज न रखेगा। ऐसे शनि की मौत एक बुरी मौत हुआ करती है और सूर्य की सबसे उत्तम चाहे मौत कभी भली नहीं गिनते मगर फिर भी भली और बुरी मौत का फर्क जरुर है। दोनों ग्रह साँझा होने पर किस्मत का फैसला सूर्य रेखा से होगा और बगैर सूर्य अन्धेरे की जिन्दगी होगा। अगर सूर्य रेखा अपने सूर्य के पर्वत से चल कर सूर्य के पर्वत पर ही समाप्त हो तो सूर्य का प्रभाव खाना नं0 5 (सूर्य का अपना घर) का होगा और अगर दिल रेखा पर समाप्त हो तो खाना नं0 4 (चन्द्र से संबंध) का होगा। सिर रेखा पर समाप्त हो तो सूर्य खाना नं0 9 का संबंध होगा और अगर आगे बचत के खाना नं0 11 में समाप्त हो तो वृहस्पति का संबंध होगा। अगर और आगे चल कर चन्द्र पर समाप्त हो तो खाना नं0 4 फिर वही चन्द्र का संबंध होगा। हर हालत में अगर शनि की उर्ध्व रेखा का संबंध हो तो आग की घटनायें होंगे। अगर किसी कारण से ऐसी जबरदस्त रेखा किसी मामूली हाथ में वाक्या हो तो भी सूर्य व शनि का साँझा बुरा प्रभाव होगा। **लेकिन अगर सोने चांदी या आग के कारोबार वाला हो तो शुभ होगा।** साधारणतय: सूर्य आग पैदा करेगा जिसमें शनि का सामना तो स्याही का प्रभाव देगा मगर सूर्य चन्द्र और वृहस्पति उत्तम फल देंगे। आदि सूर्य रेखा बाजारी किस्मत इन्सानी जिन्दगी की न होगा और अगर होगा तो हाथ ही सूर्य पर्वत भी कायम न हो तो इश्क व मुहब्बत के सिवाए उसे दुनिया में कुछ और नजर सी न आएगी। सूर्य बन्दर-शनि-सांप-दोनों की लड़ाई का हाल उनकी आपसी दुश्मनी का सबूत कराएगा। दोनों ग्रह--जब सूर्य 22 से शुरु हो 46 साल उम्र तक वास्ते धन दौलत, जब सूर्य 22 से शुरु हो 40 साल उम्र तक वास्ते उम्र माता-पिता अब सूर्य 22 से शुरु हो तो 34 साल उम्र तक वास्ते संसारिक सुख साँझा होगा इस मिलावट में शनि 2/3 हिस्सा वास्ते दौलत माया, 1/2 हिस्सा वास्ते उम्र माता-पिता के लिये, 1/3 हिस्सा वास्ते आम संसारिक सुख होगा।

दोनों की दुश्मनी में शुक्र (स्त्री) या बुरा हो जाएगा। **दो मुंह वाला सांप नकली मंगल बुरा और नीच राहू का प्रभाव होगा।** जिसमें राहू की शरारत

मौजूद होगी-झगड़े फसाद एवं तबाही होंगे। प्रभाव का समय बुढ़ापे की से सम्बन्धित होगा। बुरी उर्ध्व रेखा होगी। **कीकर का पेड़ तबाही का कारण होगा। जिसका उपाय सूर्य ग्रहण के समय शनि की चीजें(नारियल) चलते पानी में बहाना शुभ होगा।** आम जिन्दगी में सांप-बन्दर का तमाश होगा। खाली बुध का बेमायनी प्रभाव होगा जिसमें शनि का बुरा फल शामिल होगा। जवानी में तकलीफ सेहत की खराबियों और राज दरबार की कमाई बर्बाद हो लेकिन जब दोनों मंगल के घर या मंगल भी दृष्टि से मिले तो सेहत अच्छा लेकिन दोनों साँझा किसी ऐसे घर में हो या जहां कि शनि या सूर्य का प्रभाव बुरा हो तो सूर्य की 22 साल उम्र या शनि की 36 साल उम्र तक राहू नीच या मंगल बुरा होगा। चाहे राहू टेवे में किसी भी घर बैठा हो।

दोनों साँझा तो कीकर का पेड़, समय अनुसार लटटू की सूर्य की तरह घूम जाने वाला गैर तसल्ली बख्स दोस्त होगा। अगर सूर्य शनि दोनों ही इकटठे एक घर में साँझा हो तो बुध का खाली प्रभाव पैदा होगा। सांप बन्दर की लड़ाई खाली दुनिया बुध आकाश का तमाश न केवल दूसरों का बल्कि स्वयं अपना घर फूँक तमाश देखें। मंगल बुरा का प्रभाव होता है। जिसके बुरे नतीजे होते हैं सूर्य शनि साँझा या मंगल शनि साँझा में कुण्डली में बैठा होने के घरों अनुसार और सूर्य प्रबल और शनि कमजोर हो तो शारीरिक स्वास्थ्य कमजोर होगी या उम्र रेखा बहुत चौड़ी और लाल रंग की होगी, मगर शारीरिक शक्ति अच्छी हो। सेहत और शारीरिक शक्ति अच्छी हो। सेहत और शारीरिक शक्ति दो अलग-अलग बातें हैं। अनामिका और मध्यमा के बीच हो तो जवानी में शनि की दुश्मनी की अवधि में 15 साल शारीरिक कष्ट होगा । अनामिका की जड़ पर छोटी सी रेखा आम पढ़ाई प्रकट करती है यानि दोनों ग्रह साझाँ जब खाली बुध हो तो बुध की शक्ति आम विद्या शुभ होगी या अनामिका की जड़ पर छोटी सी लकीर होगी जो बुध के प्रभाव का प्रमाण देगी। शनि देखें सूर्य को तो शुक्र आबाद होगा और उत्तम फल का होगा एवं 25% सहायक होगा। मध्यमा की जड़ में छोटी सी लकीर हो 50 % पर **मकान इत्यादि शनि क्री चीजें शुभ होगी।** अनामिका और मध्यमा के बीच छोटी सी लकीर होगी जो बुध के प्रभाव का प्रमाण देगी। शनि देखें सूर्य को तो शुक्र आबाद होगा और उत्तम फल का होगा । यदि 25% पर खत्म हो तो सहायक होगा। **मध्यमा की जड़ में छोड़ी सी लकीर हो 50% पर शनि की चीजें शुभ होगी।** अनामिका और मध्यमा के बीच छोटी सी लकीर हो 100% पर मध्यमा तर्जनी के बीच छोटी सी लकीर **जादूगरी विद्या का मालिक होगा।** शनि देखें सूर्य को 100 प्रतिशत से या अगर शनि पहले घरों में और हो और सूर्य बाद के घरों में हो तो सूर्य का प्रभाव जरुर मन्दा होगा। शारीरिक कमजोरी सूर्य की रोशनी तो होगी मगर स्याही से भरी हुई यानि शनि अपना स्याह प्रभाप सूर्य की रोशनी में

मिलाता और किस्मत पर वे लगाता रहेगा। मगर चन्द्र (सर्दी) मंगल (लाली) वृहस्पति (हवा) और बुध (खाली जगह) का रोशनी पर या सूर्य की पैदा हिम्मत और जाती कमाई पर कोई बुरा प्रभाव न होगा। **ऐसी हालत में मकान रहने को दक्षिण में पानी का बर्तन (मिट्टी का कोरा लेकर)---दबा दें। जिस में चावल और मीठा डाला जाए अगर हो सके 40-43 दिन तक पानी कायम रखें यानि बर्तन को सूखने न देवें।** कुण्डली में एक दो तीन की क्रमानुसार से जब सूर्य हो शनि से पहले घरों में तो शनि जो सूर्य का लड़का है सूर्य के फल में कोई बुरा और शत्रुता का प्रभाव न देगा और सूर्य का फल अच्छा होगा, और दोनों का प्रभाव अपने - अपने मौका के अनुसार मन्दा होगा। वो व्यक्ति स्वयं मजबूत होगा। उम्र रेखा और सेहत रेखा के मिलने पर जब कायम होगा और शारीरिक शक्ति अच्छी होगी। मगर अब शुक्र उजड़े, औरत पर औरत मरती जाए, विशेष कर जब **सूर्य नं0 6 शनि नं0 12 हो तो दोनों बराबर में हो तो मंगल बुरा के बराबर होंगे।**

सूर्य–शनि खाना नं० 1

काग रेखा व मच्छ रेखा (शनि नं0 1 देखें) मगर वो ब्रहा ज्ञानी होगा। नकली बुध बुरा, कोआ समान दोखा देने वाला एवं काम स्वभाव होगा। राहू केतू रद्दी होंगे। शनि के निशान का प्रभाव और (चन्द्र शनि) सूर्य के पर्वत पर, हो **दोनों आपसी दुशमन और ग्रह बाप बेटा एक ही शक्ति के, सूर्य बाप बेटा शनि है। मंगल बुरा का प्रभाव यानि ऊँट 40 तो बोता (ऊँट का बच्चा) 45 दर्जा होगा। दोनों का अपना-अपना और शनि खराब बाप कमाए बेटा उड़ाए।** उनके घर दर्जा उत्तम हो या ऐसा व्यक्ति कंगाल निर्धन हो, मच्छ रेखा और काग रेखा साँझी होगी। **मछली हर चीज को मुंह में डाल ले चाहे बिचारी गले कुण्डी से मारी जाए। मगर कौआ हर एक पर बीठ गिरा दे।** तभी शक्ल खराब हो यानि शुक्र जो शनि का दोस्त है दोनों के बीच तबाह होवे। दो त्रिशुल के निशान हो तो शर्म बिलकुल हो, खोटे काम वाला होगा। (शनि व नकली शनि)

सूर्य–शनि खाना नं० 5

यदि सूर्य रेखा शनि की तरफ वाक्या होगी या अगर शनि का जाती स्वभाव बुरा हो तो 9 साल (खाना नं0 5 में आने के दिन से) बुरे व खौफ का होगा।

सूर्य–शनि खाना नं० 6

बुध चन्द्र दोनों कायम, सूर्य का फल अच्छा मगर शनि का बुरा प्रभाव होगा। प्रभाव केतू (सन्तान) जिसके लिए स्याह कुत्ता (पूरा काला) शुभ होगा। सोने की जगह मिट्टी के बने तवे पर रोटी पकाने जैसा होगा। अगर कोई इसका लड़का सेहत व आंखों से रद्दी मस्त मलंग साधू हो, 18 साल उम्र बाद गया हुआ, सोना फिर वापिस दिला देगा अगर नं0 2 की दृष्टि से सूर्य बुरा और शनि

कायम हो तो औरत का सुख हल्का हालत में उल्ट प्रभाव होगा। अगर सूर्य कायम और शनि बुरा हो तो औरत का सुख पूरा। मुसाफिर बाकी 6 वाले मकान जैसा हाल, **चौरास्ता में नीले फूल या नीले रंग कांच के मोती दबाना सहायक होंगे, समय कच्ची शाम।**

सूर्य–शनि खाना नं० 9

दौलतमन्द मगर स्वार्थी, दोनों नं0 9 और मंगल बुरा या बुध नं0 3 का संबंध हो तो खाना नं0 3,9 दोनों ही घर और दोनों घरों के ग्रह बर्बाद और बुरे होंगे।

सूर्य–शनि खाना नं० 10

सूर्य या नकली सूर्य (शुक्र-बुध) या शनि, नकली शनि (शुक्र वृहस्पति) या हर दो नं0 10 हो तो दूसरों की बदनामी से स्वयं नाकक आमरे या मारा जाए।

सूर्य–शनि खाना नें 11

- खाना नं0 9 का ऊपर का प्रभाव केवल बुरा हिस्सा। दोनों नं0 11 मंगल बुरा या बुध नं0 3 हो तो ऊपर नं0 9 वाला प्रभाव (बुरा)।

बाकी घर:-अपना-अपना और अलग-अलग प्रभाव होगा।

चन्द्र–मंगल

दोनों ग्रह तब चन्द्र 24 से शुरु हो तो 52 साल उम्र तक साँझा होंगे जब दोनों ऐसे घरों में हो जहां कि चंद्र अच्छा और नेक हों तो 39 साल उम्र तक साँझा होंगे। जब ऐसे घरों में हों जहां कि मंगल नेक हो साँझा मिलावट में दोनों का बराबर का और नेक होगा। जब चन्द्र अच्छा हो तो जब मंगल अच्छा हो चन्द्र का दो गुणा हिस्सा होगा। जब मंगल बुरा हो तो 33 साल उम्र तक साँझा होंगे और मंगल बुरा का 1/3 हिस्सा बुरा शामिल हुआ करेगा। कुल प्रभाव में सुख-3, साल, सन्तान 27 साल, मुसीबत 2 साल(बद) दोनों का उत्तम फल होगा। **मधु एवं दूध (दूध में शहद) धन श्रेष्ठ रेखा होगी।** मंगल ने जब चन्द्र की सहायता पाई तो सबसे अच्छा मंगल नेक होने पर वो चन्द्र का दूध और स्वयं अपना जब मीठा ले आया। दूध अलग है, चीनी अलग है। दूध में खाण्ड डाल दी, दूध में खाण्ड को घोल कर ऐसा पिलाया कि वो अब अलग मालूम न हुई। दूध मीठा होने पर और भी उत्तम हुआ या ऐसां कहो कि असल मंगल नेक तब ही है जब मंगल का चन्द्र की सहायता या चन्द्र अकेला या चन्द्र मंगल दोनों साँझा दृष्टि हर तरह खाली हो और दोनों में से किसी एक के पक्के घर खाना नं0 9, 3, 4, 8 में हों और स्वयं मंगल इस समय में बेशक खाना नं0 4 में ही है तो ऐसी हालत में मंगल बुरा का साथ भी बाकी न होगी। चन्द्र के पर्वत से मंगल नेक को रेखा बहुत शुभ है। धन रेखा धन श्रेष्ठ रेखा होगी। जिसके कई नाम है और जंग व संसारिक ग्रहस्थ चन्द्र या मंगल के संबंध) में हर तरह का नेक फल होगा। धन रेखा अगर चन्द्र से

निकल कर शुक्र के पर्वत पर से उम्र रेखा के बराबर होती हुई मंगल नेक तक चली जाए तो धन रेखा के नाम से गिनी जाएगी और अगर चन्द्र से निकल कर शुक्र के पर्वत की बजाए उम्र रेखा के बराबर हथेली के बीच वाले मैदान से होकर मंगल नेक तक चली जाए तो धन श्रेष्ठ रेखा कहलाएगी। धन श्रेष्ठ रेखा, यह रेखा कभी कलाई से शुरु होती है यानि वही धन रेखा जो मध्यमा के रास्ता दुनिया से बाहर भाग गई थी, जब फिर दूसरे जन्म में कलाई के रास्ते दुनिया में आ निकलती है कभी धन रेखा के नीचे से निकल कर गृहस्थ रेखा के साथ (हथेली के खाली मैदान से हो हुआ कर जा सकती है। कई बार धन रेखा या ग्रहस्थ रेखा से अलग कभी देखी गई है। दोनों साँझा को देखें या दो देखे-जब धन श्रेष्ठ रेखा कलाई की बजाए चन्द्र के पर्वत से शुरु होकर सिर रेखा से जा मिले और इसका झुकाव हो जाए वृहस्पति को--**सबसे श्रेष्ठ या उत्तम लक्ष्मी या माया दौलत हो। यार दोस्तों की पूरी मदद हो।**

(1) सूर्य की तरफ हकुमत, राजयोग हो सूर्य को।

(2) अब शनि को पर्वत के अन्दर-अन्दर सूर्य के पर्वत अ-ब का रेखा सूर्य का उत्तम फल सूर्य राज योग, बुध को, बुध व्यापारी, अक्लमन्द दर्जा कमाल, अक्ल का धनी मगर धन की शर्त न होगी। सम्बन्धित दुनिया से सहायत होवे। **शुक्र और मंगल नेक का पूरी नेक प्रभाव होगा।** मगर शुक्र को या मंगल को सन्तान के विघ्न। स्वयं भी अपना धन बरते बगैर मरे या अपने धन का जाती कोई सुख न पाया हो कि चल बसा। मंगल नेक या सिर रेखा का शुरु या इस रेखा का आखिर या मिलने की जगह माना है। चन्द्र को धन रेखा या श्रेष्ठ रेखा का मुकाम चन्द्र का पर्वत भी माना गया है। शनि को, तरफ शनि, शनि का पूरा नीच फल, क्योंकि यह रेखा शनि से पूरी दुश्मनी पर है यानि जानवरों (जहरीले या मन्दे आदि) से दुःख खतरा और मौत, जिद्दी और संसारिक **हर तरह से बुरा भाग्य होगा शनि बुरा हाल जहर खा मरे,** हथियार से मौत, जहरीले जानवर मार दें। शनि को जब शनि नं0 10,11 का न हो, शनि के पर्वत की तह में शनि के पर्वत से बाहर सूर्य को शनि का बुरा फल देगी। क ख ऐसी हालत में नजदीकी रिस्तेदोरों, लड़के व भतीजे आदी का सरकारी नौकरी में जाने की दलील होगी मगर वो पैसा थैला बचा कर न देगा।

चन्द्र-मंगल खाना नं0 1: - अपना-अपना फल होगा।

चन्द्र-मंगल खाना नं0 2 : -श्रेष्ठ धन रेखा।

चन्द्र-मंगल खाना नं० 3

साहब इज्जत वाला एवं तरक्की और हर समय का मालिक, साहब इकबाल और आराम पाये। धन श्रेष्ठ रेखा जब धन रेखा से मिली हुई हो। (ब) इस तकलीफ से तंग आकर धन देवता फिर अपनी मां के पास भागा और जब शुक्र या

मंगल के पर्वत की बजाए उम्र रेखा के दूसरे पहले की तरफ से चन्द्र के पर्वत से जो इसकी माता था फिर अपने पिता शनि की तरफ भागा, ऐसा व्यक्ति बड़ा ही दौलतमन्द और अमीर होआ। अब इसे किसी का ध्यान न किया और सीधा ही शत्रु की गोद में जा पहुँचा, उर्ध्व रेखा का ही प्रभाव हुआ दुष्ट भाग्यवान् हुआ।

चन्द्र—मंगल खाना नं० 4

धन रेखा का निकास, नेक प्रभाव बशर्ते कि बुध और शनि का संबंध (4-10) से न हो जाए। धन रेखा जब चन्द्र के पर्वत से निकले तो इस हालत में इसके निकलने की जगह निकास गिना है या खाना नं0 4 के ग्रह धन के मालिक होंगे।

मंगल बुरा चन्द्र खाना नं0 4 नेक प्रभाव बशर्ते कि शनि या बुध का संबंध न हो जाए। मंगल बुरा जब इस तरफ हो जाए तो खाली धन देखा के प्रभाव पैदा होंगे। धन श्रेष्ठ रेखा की बाकी सारे हालतों में धन रेखा का ही प्रभाव दिया करती है।

चन्द्र—मंगल खाना नं० 7

धन दौलत परिवार का धनाढय मगर मौत की घटना होगी। लालची, पैसे का पुत्र जब दिल रेखा और गृहस्थ रेखा कनिष्टका के पास मिल जाए तो मौत का गम देवे ।

चन्द्र—मंगल खाना नं० 9

स्वयं दुष्ट भाग्यवान् मगर सन्तान उत्तम धनाढय जब दिल रेखा गृहस्था रेखा मध्यमा के पास मिल जाए तो मौत का दिमाग पर प्रभाव होगा।

चन्द्र—मंगल खाना नें 10

मौत की घटना न हो। धन की शर्त नहीं मगर मौत बुरी मौत हो।

चन्द्र—मंगल खाना नं० 11

वही लालची शनि से धन का फैसला होगा। जिसको संबंध लालची बनाता है अगर त्रिकोन की बजाए चौकार दिल रेखा की समाप्ती पर हो तो सरकारी घर से रुपए पैसे की पूरी प्राप्ति या आमद से कुराद है शाख दिल रेखा की वृहस्पति से चूंकि यह रेखा वृहस्पति की तरफ ही चलती है इसलिए वृहस्पति की शाख हो नहीं सकती, बरअक्स इसके जब दिल रेखा वृहस्पति पर खत्म हो तो मुहब्बत रेखा के नाम से याद होती है।

बाकी घर अपना-अपना प्रभाव।

चन्द्र बुध

मां-बेटी, दरिया के पानी में रेत, मुनिया तोता, हंस पंक्षी, कुआं व पौड़िया साँझा। मां पहले की बेटी, लड़की को बुध और माता को चन्द्र माना है। माहवारी आने का खून लड़की को माता बनाता है लड़का में बच्चा पैदा करने के बाद के दिन से लड़के (केतू) से बाघ (वृहस्पति) कहलाया। केतू व वृहस्पति दोनों

दरवेश एक ही हैं। केतू पाताल का मालिक था। (खाना नं0 6) तो राहू आकार का मालिक (खाना नं0 12) हुआ दोनों की मध्यम खाली जगह बुध ने सम्भाल ली। पहले आकाश हुआ या बुध लड़की बना तो बाद में पानी आया (चन्द्र हुआ) या माता बनी। मतलब यह कि अगर बुध नेक हुआ तो चन्द्र माता धर्मात्मा और नेक हुई। अगर बुध विगड़ा तो अक्ल मारी गई तो चन्द्र रद्दी हुआ ओर माता बुरी बनी और शनि की सर्पिनी अपने ही बच्चे को खाने लगी या शनि भी सन्तान के संबंध में बुरे फल का होगा लड़कियों 6 साल बीमारी 14-15 साल, दौलत-22 साल, यद्यपि संसारिक खराबी मगर रुहानी चन्द्र का उत्तम और प्रबल होगा। साँझा जिन घरों में दोनों में से कोई आम तौर पर बुरा होता है उन घरों में दोनों साँझा नेक होंगे। चन्द्र नेक होने की हालत में बुध का 1/2 बुरा हिस्सा शामिल होगा। अगर पहले और चन्द्र 12। 26 साल उम्र से जारी हुए हो तो दोनों 17+12=29

38+24=58 साल उम्र तक साँझा होंगे। बुरे बुध को हटाने के लिए राहू या मंगल बुरा की मदद शुभ होगी। कुण्डली के खानों में अगर चन्द्र पहले घरों में हो तो चन्द्र का प्रभाव प्रबल होगा बुध पर। चन्द्र पहले घरों में और बुध बाद के घरों की दृष्टि के हिसाब से या दोनों चन्द्र के घर (खाना नं0 4/7) में इकटठे हो जाएं तो दैवी हाल अच्छा मगर संसारिक हालत में दोनों के दुश्मन ग्रह का संबंध हो जाए तो दोनों ग्रह का आन्तरिक दैवी और जाहिरा संसारिक दोनों ही तरह का फल बुरा होगा। दोनों ही अलग-अलग होने ही हालत में दोनों में से कोई भी जब दूसरे के घर हर तरह से अकेला हो नेक फल देगा। मगर जब दोनों साँझा हो तो वो दोनों के किसी एक के घर भी होने पर नेक फल न देंगे। कुण्डली के खानों में अगर बुध पहले घरों में हो। तो बुध का प्रभाव प्रबल होगा चन्द्र पर। बुध पहले घरों में चन्द्र बाद में घरों की दृष्टि के हिसाब से या दोनों बुध के किसी एक ही घी में इकटठे हो जाए तो बुरे नतीजें होंगे चन्द्र वृहस्पति बुध इकटठे हो जाए तो वृहस्पति और चन्द्र दोनों मिल कर बुध को दाब लेंगे और कोई बुरा प्रभाव न होगा। अकेला चन्द्र या अकेले वृहस्पति को बुध मार लेता है और बुरा प्रभाव कर देता है। उदाहरण के तौर तर वृहस्पति नं0 9 बुध नं0 3 चन्द्र नं0 5 हो तो अब मगर फिर रेखा से शुरु होकर दिल रेखा पर ही खत्म हो जाए यानि बुध और चन्द्र मिल जाए तो नतीजा खराब ही होगा। चन्द्र बुध से दुश्मनी करता है) दिल या चन्द्र की जहर या इश्क से तबाह हो जाएगा। अगर यह रेखा जिस तरह पहले सूर्य के पर्वत में ही जा निकली थी बुध के पर्वत के अन्दर चली जाए तो दिल की आन्तरिक शक्ति या आन्तरिक अक्ल की बारीकी प्रकट करेगी मगर बैरोनी हालत में बुध और चन्द्र दोनों का फल खराब देगी। विशेष कर माता या दादा के अन्धी (ऐसी हालत में माता कानी न होगी, अगर होगी तो अच्छा होगा, क्योंकि एक आंख पर शुक्र का प्रभाव गिना गया है) कर लेगा। स्वयं इसकी अपनी नजर भी

इस खतरा से बाहर नहीं हो सकती। यह है कि बुध और चन्द्र के बीच मंगल बुरा बैठा है जो चन्द्र और बुध दोनों को ही बराबर का है और जंग व जदल इसका प्रभाव है और गहरी नजर से ही मंगल लाल सुर्ख हो जाता है। चन्द्र व बुध दोस्त है। बुध का दिल साफ है मगर चन्द्र बुध से आन्तरिक दुश्मनी ही करता है मंगल साथ दोनों का ही देता है। लड़ाई में वो पहले बुध या पेशावर या दस्ती काम से रोटी खाने वाले पर हमला में साथ जाता है ओर इसकी नजर को कुछ सदमा देता है क्योंकि यह बुध का दुश्मन तो नहीं है वापसी पर चन्द्र की तरफ हमला में साथ जाता है और इसके भी एक की बजाए दो थप्पड़ लगा देता है। क्योंकि उसे पता है कि चन्द्र बुध से दुश्मनी करता है। अब चन्द्र बुध हाल की सहायता से अपनी एक आंख (बुध वाला) और दोनों आंखों (चन्द्र वाला) माता गंवा कर फिर वही दोस्त बन बैठे और इकटठे रोटी खाने लगे। मगर वास्तव में नतीजा क्यों होगा। चन्द्र (माता) सुखी न बुध का कुछ बनेगा। आन्तरिक करे तो क्या करे। इलाज क्यों हो या बुध माता से अलग रहे या अपना हस्त से काम बन्द करे। चन्द्र आन्तरिक दुश्मनी ही करता जाएगा।

दोनों साँझा दोनों बुरे शनि का फल देंगे। **चन्द्र नष्ट लेंगे।** चांदी की जगह कली होगी। चन्द्र का फल रद्दी होगा। **इश्क में तबाही होगी** जब दोनों में से किसी के घरों में हो। लेकिन जब दोनों साँझा हो और दोनों के घरों से बाहर किसी और जगह और दृष्टि हर तरह से खाली या मां बेटी ही अकेली तो आलमचन्द होंगे। धन दौलत, अच्छा होगा। दिल का डरपोक होगा सिर रेखा जिस तरह दिल रेखा के नजदीक होती जाए यानि सिर रेखा और दिलरेखा का बीच का फासला जिस तरह कम होगा जाए दिल रेखा या चन्द्र का बुरा प्रभाव उसी तरह बढ़ता जाए और ऐसा आदमी तंग दिल होगा जाए।

दोनों को देखे मंगल वह तो उम्र स्वयं तो अपनी अच्छा (लम्बी) मगर मामों की तरफ से खराबियां।

दोनों को देखें वृहस्पति या सूर्य या शनि तो नेक प्रभाव होगा। सिर रेखा से निकल कर आई हुई शाख चन्द्र या दिल रेखा से पार होकर ऊपर को बढ़ जाए तो नेक प्रभाव होगा चाहे ऐसी रेखा बुध सूर्य, शनि या वृहस्पति पर कहीं भी खत्म हो।

दोनों आपसी दृष्टि में तो एक तरफ तबीयत वाला 100% बिलकुल ही खराब प्रभाव, सीढ़ियों के सामने कुआं खराबी का सबूत होगा। 50% खराब प्रभाव, 25 प्रतिशत मामूली खराब। हर हालत में धन की हार न होगी। दिल बकरी का होगा, बुजदिल (बकरी बुध दिलचन्द्र) खुदकशी भी हो सकती है।

चन्द्र बुध खाना नं० 4

अगर सिर रेखा नीचे चन्द्र तरफ झुकती जाए तो भी सिर बुरे काम करेगा। मगर ऐसी हालत में सिर स्वयं अपने शरीर को मारेगा। पराई मुसीबत को अपने

ऊपर लेकर चाहे बर्बाद होगा। या फर्जी वहम में अपनी सिरे कमजोरी दिखलाएगा और यह कमजोर जब सिर रेखा चन्द्र के पर्वत में ही चली जाए, इतनी ज्यादा होगी कि खुदकशी कर लेगा। जिसकी वजह से मुसाफिरी या गरीबी न होगी। बल्कि दिल न होने का सबब होगा या इश्क का परिणाम होगा।

चन्द्र बुध खाना नं० 6

चन्द्र से वृहस्पति को जाने वाली रेखा अगर रास्ता में सिर रेखा तक ही रह जाए तो बुरे प्रभाव ही दिखलाएगी और चन्द्र को सारे शुभ प्रभाव देगी। अगर चन्द्र के पर्वत से रेखा आगे बढ़ कर सिर रेखा से जा मिले तो चन्द्र रेखा(बुध से) दुश्मनी करेगा। ऐसा आदमी लखपति होता हुआ भी मुसीबत पर मुसीबत ही देखता चला जाएगा और अकल की कोई पेश न जाएगी। 4 बाकी बचने वाले मकान की किस्मत (मुसाफिर) होगी। मगर माता-पिता का सुख सागर लम्बा व नेक होगा। बुध नं0 12 का हाल ख्याल में रहे। चांदी का गिलास, गोल कटोरा, सिर रेखा से अगर कोई शाख ऊपर दिल रेखा में जाकर खत्म हो जाए तो चन्द्र दिल पर बुरा प्रभाव करेगा या दिल की खराबी से सिर बुरे काम करेगा या ऐसा आदमी खूनी होगा। (चन्द्र बुध-का दुश्मन है) **बजाजी के कामो से राजा होगा।** अक्ल कायम हमदर्द, मातृ हिस्सा का प्रभाव नेक स्वयं अपनी नजर बेशक कम हो। पितृ रेखा अगर मातृ रेखा से मिली हुई हो तो माता-पिता का आपसी संबंध नेक होगा और साया व सुख देर तक होगा। ऐसा आदमी हमदर्द होगा। दिल रेखा और सिर रेखा दोनों एक ही मालूम होती हों या एक ही लकीर हो जाए तो नेक तरफा तबीयत वाला होगा।

चन्द्र बुध खाना नं० 7

लखपति फिर भी दुखिया, अक्ल मदद न दें। बाकी 6 बचने वाले मकान का सा हाल रहे। तकिया मुसाफिर होगा। माता न होगी या वो अन्धी होगी जब दिल रेखा और रेखा आपस में मिल जाए तो तबीयत बदल लेने वाला होगा। बुध से सेहत रेखा कहलाती है अगर यह रेखा से मिल जाए तो दिमागी ताकत वाला होगा। चन्द्र से चल कर बुध को मंगल के किनारा मगर हथेली के अन्दर की तरफ से गई हुई रेखा आन्तरिक अक्ल (जो माता को अन्धी और पैसा बर्बाद) या देसा बर्बाद)होगी।

चन्द्र बुध खाना नं० 10

बहुत बड़ी और मनहूस जिन्दगी होने की वजह से खतरा मौत होगा। क्योंकि बीच में दिल रेखा का चन्द्र का दरिया चल रहा है जो बुध और शनि दोनों का ही दुश्मन है। मंगल बद का बुरा प्रभाव जिसका मंगल बद में जिक्र है।

चन्द्र बुध खाना नं० 11

समुन्द्र में सीप में मोती बनाने वाली बारिश राज नहीं होती लेकिन होगी मोती बना कर ही जाएगी। गंगा (गले गले) की बारिश हर रोज न होगी, लेकिन

जब होगी शादी के दिन होगी या लड़की की शादी के दिन से शुभ फल पैदा लेंगे।

चन्द्र–शनि

काली स्याही, राज दरबार 12 साल, दौलत शनि 42, पानी की बावली दोनों का और खराब फल होगा। **चन्द्र ग्रहण के समय शनि की चीजें चलते पानी में बहाना शुभ होगा।** संसारिक खुशी गमी के लिए चन्द्र व शनि हो तो शनि किस खाना का प्रभाव देगा, चन्द्र में जौ का निशान देखें अगर चन्द्र पहले और आठ साल उम्र से शुरु हो तो 8+35=44 साल उम्र तक दोनों साँझा होंगे। जहां शनि का प्रभाव अच्छा होगा, इसमें 1/3 हिस्सा चन्द्र का बुरा शामिल होगा। जहां चन्द्र अच्छा होगा वहां शनि का 3 गुना बुरा प्रभाव साथ होगा। दोनों को ठीक करने के लिए सूर्य का उपाय मददगार होगा। दो रंगी शनि की चीजें 5, कल्याणी भेंस, स्याह व माथा सफेद, बच्चा मरे चाहे भैंस का, लाल रंग 5 कल्याणी सन्तान केतू की बजाए वृहस्पति बाप बाबा बुजुर्गो पर हमला करेगी। यह दोनों रंग केवल इस समय बुरे होंगे जब कि सूर्य प्रबल वाला होगा। विसर्गः चन्द्र शनि साँझा (हथियार तेज) या औजार, नकली केतू(नीच) का प्रभाव होगा। उल्टा कुल्हाड़ा होगा यानि जब या जिसका चन्द्र शनि साँझा हों ऐसे व्यक्ति को शुभ काम करते समय ही हथियार या औजार साथ या आपे आ मिलने पर परहेज चाहिए वरना गैर शुभ होगा और बुरा होगा।

धन रेखाः-(चन्द्र शनि की) चन्द्र धन तो शनि खजांची होगा विसर्ग का निशान होगा। **आंख का कानापन होगा** या सीधी टेढ़ी साँझा, काला मुंह आया, कछुवा पानी का जानवर होगा। चन्द्र देखें शनि को, शनि का बुरा मगर चन्द्र अच्छा। शनि देखे चन्द्र का तो चन्द्र का प्रभाव बर्बाद जब दोनों ग्रह साँझा दीवार वाले घरों में बैठे हो तो आपस में दुश्मन होने के समय अलग-अलग रहेंगे। लेकिन अगर कोई व्यक्ति कुआं (चन्द्र) की दीवार फाड़ कर मकान(शनि) बना दें। (भोने वगैरह) **तो दूध में जहर होगा।** माता मरे, **दौलत सन्तान चली जाए, अधरंग होवे।**

दोनों साँझा, विसर्ग, कछुआ(फटा हुआ दूध), मोटर लारी या लोहे की सफर की चीज वगैरह या दीगर हथियार होगा। जो शनि या चन्द्र के अपने-अपने ऊँच होने के घरों में(चन्द्र नं0 2 शनि नं0 7) स्वयं कुण्डली वाले पर मौत का हमला इज्यादि होने की धटना होगी । आंख की हालत से होगा। शनि अगर वृहस्पति का सहायक था तो चन्द्र का दुश्मन हुआ हालांकि चन्द्र अगर शान्ति का मालिक है तो शनि के साथ से यानि चन्द्र शनि साँझा होने पर चन्द्र की माया (धन दौलत) शनि के स्याह रंग की तरह स्याह मुंह माया होगी यानि इसकी व चांदी का रुपया भी हर तरह से काला व छोटा सा मालूम होगा यद्यपि खालिस चांदी का ही (ऊँच चन्द्र खाना नं0 2) क्यों न हो। शनि का स्वयं भी जहर मिला हुआ

होगा । शनि के मकान आराम देने की बजाए दुख का नजीजा होंगा। शनि की उदासी वैराग्य दिल को **शान्ति की जगह दिल की कल्पना (दुख) में जलाता रहेगा।** चन्द्र अगर धन दौलत है तो शनि खजान्ची, यद्यपि इसका धन अगर अच्छा भी हो तो इसका ख़जांची या रुपया रखने का बक्सा (कैश बक्स) ऐसा होगा जो स्वयं व मालिक को स्वयं इसके अपने आराम के लिए इस बक्से से रुपया निकालना ऐसा होगा जैसा कि एक जहरीली सांप के सिर से मणि का छीनने के लिए सांप के पास जाना। शनि के हैडक्वार्टर से डर कर किस्मत रेखा तो ऊपर अपने गुरु या पिता वृहस्पति की तरफ भागती है यानि शनि या उर्ध्व रेखा से निकला हुआ या पैदा शुदा धन या धन रेखा और इस धन में पलीत और श्रेष्ठ पन का सवाल खड़ा होगा। या शनि का पैदा करदा धन डर कर मारे ऊपर की तरफ उम्र रेखा के शुरु की तरफ चल भागा। शुक्र के पर्वत पर या सारे गृहस्थितयों औरत जात वगैरह से होकर दोगर भाई बन्धुओं के हाथ मुंह लगाता हुआ मंगल नेक के पर्वत पर फिर गुरु की शरण में या वृहस्पति की जड़ में फिर किसी दूसरी उम्र या उम्र वाले का साथ या उम्र के शुरु हिस्सा में धन रेखा जा मिली मगर स्याह मुंह माया को उसी शनि रेखा को उम्र के सिवा कोई रेखा न मिली, बदनामी से काला मुंह हो चुकी माया को वही काले गांव वाली उम्र रेखा से दोस्ती हुई या उसे फिर वापिस आने के लिए उम्र या शनि रेखा के पांव ही मिले मगर वो फिर भी चालाकी से बाज न आया और शनि के दरिया या उम्र रेखा के नाव रवां पर हो बैठा और वापिसी का नजारा देखने लगा। जिस जगह इस रेखा का दरिया ज्यादा गहरा न हुआ और कशादी या चौड़ा हुआ इस सिलानी या धन रेखा पर चारों ने हमला किया और धन दौलत का नुकसान हुआ। खाना नं0 3 का संबंध(क्योंकि ज्यादा चौड़ाई में दरिया के होने पर जो रवानगी न रही और हर कोई उस किस्ती पर हमला कर सका। हमलावर सम्बन्धित दुनिया) मंगल नेक व शुक्र के पर्वत के सम्बन्धित लोग होंगे यानि **इसका चांदी का पैसा काला व खोटा लोहे का टुकड़ा होगा।** खूनी कुओं या मीठे पानी में जहर मिली होगी शनि के काम दुख का सबब होंगे। स्वयं अपनी कमाई अपने काम न आये। किसी दूसरे के साथ से जो हम उम्र हो या दूसरी उम्र का साथी (हिसाब उम्र) हो धन पैदा होगा। जो स्त्री भाई बन्धु के हाथ लगता हुआ फिर भी काला मुंह मावा साबित हुए। जब कभी चन्द्र के दुश्मन ग्रहों का दौरा हो (चन्द्र के दुश्मन नं0 1) जाएं। चोरी और धन हानि होगी। ऐसा धन स्त्री, स्त्री खानदान ससुराल या दूसरे यार दोस्तों के काम बहुत हो। चन्द्र से निकली हुई रेखा ऊपर दिल रेखा की तरफ चलती हुई जिस मुकाम पर शनि के पर्वत के साया में जाएगी। शनि का बुरा प्रभाव होगा यानि चन्द्र के प्रभाव से जो जमीन खेती आदि होगी इसमें चन्द्र के खजाने कुंए आदि खुष्क होने शुरु हो जाएंगे। कुंए बिलकुल खुष्क न होंगे क्योंकि चन्द्र स्वयं ही दुश्मनी

करता है शनि दुश्मन नहीं। दूध जो चन्द्र की माया है सांप के केवल साया या अकस से ही जहरीला हो जाता है और इन्सानी दिल शान की औरत की शरारती आंख की लहर वा इशारा के साथ से ही मौत ढूंढता फिरता है।

चन्द्र-शनि खाना नं० 1 : सूर्य शनि साँझा खाना नं0 1 का प्रभाव।

चन्द्र-शनि खाना नं0 2 :-अच्छा प्रभाव हो। काला घोड़ा, कुओं लगाना शुभ होगा, रफाए आम भी शुभ।

चन्द्र-शनि खाना नं० 3

चोरी का घर : सन्दूकची होगी मगर धन से खाली, नकद माल मुराद, जायदाद बेशुमार, शनि काबिल उपाय राशि फल का होगा (केतू का उपाय) लेकिन अगर केतू रद्दी हो तो लाल फिटकड़ी जमीन में दबाना शुभ होगा।

चन्द्र-शनि खाना नं० 4

पहाड़ पानी में बह निकलेगा। मौत पानी से रात को होगी। अगर सूर्य का साथ (खान नं० नं0 1, 7, 10) आदि न हो तो अगर सूर्य की मदद मिलती हो तो शुभ होगा। मगर मौत दिन के समय होगी। पितृ रेखा पर शुक्र के मुकाम पर सूर्य का सितारा हो तो दिन होते हुए इस व्यक्ति की मौत दरिया या नदी से होगी और अगर चन्द्र के पर्वत पर शनि प्रकट हो तो रात के समय पानी से मौत होगी। पानी से दबा हुआ धन होगा जो सन्तान न होने पर या इसकी मौत के बाद दूसरों के काम आएगा औरत की कबूतर बाजी से बरबादी का कारण होगा, **सांप को दूध पिलाना शुभ होगा।** पितृ रेखा का उत्तम प्रभाव होगा शनि सहायक साया करने वाला सांप होगा। स्वयं इसके लिए यानि जब कोई सहायता न देवे उसे सांप सहायता देगा। वा जो सांप दोनों का जहर से मार दे, नाकारा हालत में इसके लिए पर डंस कर उसे मजबूत और आसूदा कर देगा। मगर दूसरों के लिए खूनी सांप होगा। अगर चाल चलन बुरा हो औरतों की कबूतर बाजी देह (वेवा फर्द बा माशूका) के फालतू और फजूल खर्च बर्बाद करें। अपनी बेवकूफी से मोतिया मगर बर्बाद करावे चोर चोट से नजर खराब न होगी। **मौत विदेश में होगी।** बाकी बार बचने वाला मकान का हाल और अगर उम्र रेखा ही चन्द्र पर जो गिरे तो पिता की साथी या पितृ रेखा होगी। शनि ऐसा हालत में कुण्डली वाले के लिए इच्छाधारी सहायक सांप मगर भैरों के लिए खूनी सांप होगा। चन्द्र खूनी कूआं होगा। दूसरों के लिए, कुण्डली वाले के लिए दान, सरुर, इज्जत वाला होगा। चन्द्र के पर्वत व दिल रेखा पर विसर्गः हो तो मोतिया वगैरह से अन्धा हो। अपनी बेवकूफी से शनि नजर को धक्का देवे। चोट लग कर आंख खराब न होगी। चन्द्र की तरफ की शाख लम्बी हो तो अपने देश में मौत होगी।

चन्द्र-शनि खाना नं0 5 :-सूर्य शनि साँझा नं0 1 वाला प्रभाव होगा(सूर्य की राशि है) सन्तान पर खराबी होगी (बराए धन दौलत) मुसीबत में दुख का यम,

आतिश साज शनि के पहाड़ का धुआं धार जमाना खड़ा कर दे। जो चन्द्र के समुन्द्र के पानी में गर्क होकर गोता देने का वायश होगा।

चन्द्र–शनि खाना नं० 6

दुनिया के तीन कुत्ते जैसे खराबी होंगे। **बहिन के घर भाई, नानके घर दोहता, ससुराल घर जमाता, कुत्ता होगा।** चन्द्र शनि दोनों की मिट्टी बर्बाद और खराब होगी। माता व जायदाद जद्दी तो मतवदी हालत व बर्बाद मगर स्वयं आमदन व मकान आमाद होंगे (बुध केतू की राशि है) मगर इसकी जाती आमदन व स्वयं बनाए मकान आजाद व शुभ होंगे।

सिर रेखा पर विसर्ग ::या :::आंखों से अन्धा हो। आंखों का निशान: विसर्ग चन्द्र शनि साँझा आंखों की बिमारियां या अन्धापन प्रकट करता है विसर्ग उम्र रेखा पर शुक्र के पर्वत पर हो तो स्त्री झगड़ों से जिन्दगी तबाह होगी और आंखें खराब होंगी मगर नजर गुम न होगी। 42 साल उम्र में माता-पिता में से केवल एक होगा। मौत हथियार से होगी। मगर गृहस्थ और मातृ भूमि में काला मुंह बदनाम करने वाली माया होगी।

चन्द्र-शनि खाना नं0 8 :- उम्र रेखा जब शुक्र के पर्वत की गौलाई पर किस्मत रेखा की शुरू होने के हिस्सा से मिल कर दो शाखी बना दे और उस दो शाखी का अंगूठे की तरफ का बड़ा और लम्बा हो। चन्द्र शनि नं0 7 हो तो मातृ भूमि में होगी। बुढ़ापे में नजर की तकलीफ का तकाजा होगा और शनि की उम्र 9,18, 36 साल उम्र में सांप डसने का वाक्या हो।

चन्द्र–शनि खाना नं० 9·

धन दौलत निहायत उत्तम मगर चन्द्र का बुरा प्रभाव मिला हुआ होगा।

चन्द्र-शनि खाना नं0 10,11 में :-पानी व माया के कुएं भी खुष्क हो जाएं। जहर बढ़ती जाए, तारे (भाड़े) वाला टट्टू घोड़ा इशक बर्बाद करे।

चन्द्र-शनि खाना नं0 12 में :-माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा और औरत का सुख हल्का होगा। (नोट: 5 बाकी घर अपना-अपना प्रभाव होगा)।

चन्द्र–शुक्र

दोनों ग्रह 37 साल उम्र तक साझाँ गिने जाएंगे । आपसी मिलावट में शुक्र पूरा तो चन्द्र आधा होगा । दूध में मिटटी मिली हुई या पानी जिसमें मिटटी धुली हुई हो । कीचड़ की तरह किस्मत होगी आराम 4 साल, बीमारी 15 साल, दौलत 12 साल वरना 27 साल, दुनिया की दोनों का खराब प्रभाव परन्तु चन्द्र का उत्तम और प्रबल होगा । दोनों साझों का मामूली जिन्दगी बिताने वाला हो खुसरा गाए (न बैल न गाए) दोनों ग्रहों के अपने-अपने घरों का हाल मन्दा होगा । शुक्र औरत का घर कुण्डली वाले के ससुराल और माता का घर मामों की तरफ इस तरह दानों ही घरों कर हाल मन्दा होगा । माता न होगी अगर होगी तो अन्धी होगी।

सास-बहु का झगड़ा होगा। मन्दा असर ऊपर की दोनों बातों का शादी के दिन से शुरू गिनते हैं। **दोनों अपने-अपने पक्के घरों में अलग-अलग हो तो कामदेव से दूर होगा।** अंगूठा व अंगुलियों दोनों छोटे-छोटे हो तो शुक्र देखे चन्द्र को तो औरतों की मुखालफत शुक्र से अगर कोई रेखा दिल रेखा (चन्द्र) में चली जाए तो औरतों से मुसालफत (शुक्र का चन्द्र शुत्र)

दोनों के आपसी मंगल बद स्त्रियों (औरत, माता--शुक्र चन्द्रै)बरबाद होगी।

शुक्र का चन्द्र से फर्क :- बारीक उड़ने वाली मिटटी को शुक्र और सभी जम कर एक ही तह बनी हुई मिटटी को चन्द्र की धरती माता कहते हैं। इन दोनें ग्रहों का मेल नहीं और दूध को मेल है दही से, पानी निकालना हो तो दही पर (शुक्र पर) कपड़ा (चन्द्र) रख दें और ऊपर (कपड़े के) राख (बुध) बिछा दें। दही खराब न होगा बल्कि पानी सब राख पी जाएगी यानि बुध चन्द्र को खा लेगा, मगर शुक्र को जरा भी खराब न होने देगा यानि चन्द्र जब शुक्र को खराब कर रहा हो तो शुक्र को बुध की मदद देवे। चन्द्र की जहर दूर होगी। अगर शुक्र से चन्द्र का फल खराब हो रहा हो तो चन्द्र को मंगल की मदद दें। शुक्र अब मंगल से मिल कर चन्द्र ही हो जाएगा। चन्द्र देख शुक्र को फकीर साहब कमाल होगा। चन्द्र से शुक्र को खत अन्दरुनी शराफत का देवे से दूर तमाम नशाबाजों का पीर या सरदार या फकीर साहब कमाल होगा।

चन्द्र-शुक्र खाना नम्बर 1:-शुक्र औरत की सेहत मन्दी कमजोरी दिवानगी आदि

चन्द्र–शुक्र खाना नम्बर 2

दवाईयों के काम से फायदा हो, खुद हकीम होने की शर्त न होगी। इश्क में दर्जा कमाल होगा। दूध में खाण्ड की जगह मिटटी डाली किस्मत होगी। खास कर वृहस्पति का प्रभाव किसी नेक फल का न होगा। **इश्क दुनियावी (औरत, इश्क आदि) बरबादी का कारण होगा।** अगर शुक्र चन्द्र आदि से (दिल रेखा) साझाँ हो तो शुक्र का खराब फल इश्क व मुहब्बत रेखा के नाम से गिना गया है या यूं कहो कि जब **दिल रेखा वृहस्पति पर चली जाए तो शुक्र अपनी आशिकाना कार्यवाहियां करने लग जाएगा और दर्जा कमाल पर होगा।** किस्सा तो वृहस्पति शुक्र की औरत का दूसरे के साथ मिली हुई और लेटी हुई हालत में देखा कर अपना उत्तम फल न देगा।

चन्द्र–शुक्र खाना नम्बर 4

चन्द्र से निकले कर शाख यानि चन्द्र के बुर्ज से अगर कोई सीधी लकीर की तरह की रेखा निकल कर अपने हमसाया शुक्र की तरफ बल्कि शुक्र में चली जाए तो बहु-बेटी या मां की मुहब्बत और कामदेव से दूर या फकीर साहब कमाल होगा वरना दुनिया से मदहोश **तमाम नशाबजों का सरदार, भंगी-बरसी, शराबी, पोस्ती, जरुर होगा।** आम तौर पर वह दुनियावी मुहब्बत और इश्क से

जरुर दूर होगा। मां-बाप दोनों की तरफ से खालिस और खुद भला लोग होगा। जब दृष्टि खाली कामदेव से दूर होगा। दोनों नम्बर 4 में और शनि नं0 10 में हो तो मां का नेक असर शामिल होगा। दोनें नम्बर 4 में और सूर्य नं0 10 में हो तो बाप का नेक असर शामिल होगा। दोनों नं0 4 में और सूर्य नं0 5 में हो तो लड़कियों जैसा शर्मिला मगर बुद्धु न होगा। अगर यह रेखा दरम्यान से ऊपर को उठती हुई हो तो मां-बाप दोनों की तरफ से शुद्ध और पूरा भला मानस होगा।
चन्द्र नं0 4 शुक्र नं0 7 हो तो दोनों नं0 4/7 दृष्टि नं0 10 कामदेव से दूर रहने वाला।

चन्द्र-शुक्र खाना नं० 7

धन का बढ़ना बन्द होगा। आबद सखी परहेजगार होगा। अगर धन का पूरा और नेक फायदा लेवे तो उन्माद असर वरना वही धन पांचों अजीब शरई करवा कर बर्बादी करे। बाकी 7 बचने वाला हाथी का मकान, माता की आंखों पर झगड़ा बल्कि नजर गुम होंवे।

दोनों नं0 7 सूर्य 1 में हो तो बाप (सूर्य) का नेक असर मिला होगा चन्द्र से रेखा अगर शुक्र जाए तो धन का बढ़नस बन्द हो जाएगा। इसलिए माना है कि अगर शुक्र से शाख धन रेखा में आ मिले तो फीकर साहब कमाल। आबद, सखी, परहेजगार होगा, क्योंकि उम्र रेखा शनि धन रेखा खुद चन्द्र का लड़का और शुक्र इस हालत में वाहम दुश्मन हैं यानि शुक्र से शाख वाला धन देवता से पूरा-पूरा कांम और मशकत लेगा वरना धन रेखा के असर से माया के नशा में मस्त या तमाम नशाबाजों का सरदार होगा।

चन्द्र-शुक्र खाना नम्बर 8 - नामर्द वरना बुजदलि अपने ही मन्दे का कारनामों की वजह से चन्द्र का धन और शुक्र से गृहस्थी सुख बर्बाद पावे। बदचलनी की मर्ज का ताल्लुक भी हो सकता है या होगा। जिनकी वजह खुद खास्ता बेवकूफी याना होगी। बूढ़ी माताओं और गऊ सेवा या दान मुबारिक होंगे वास्ते सेहत और धन दौलत आदि।

शुक्र—मंगल

दोनों ग्रह (8+28) 36 साल उम्र तक आपसी होंगे। अगर मंगल का असर एक हिस्सा होवे तो शुक्र का असर 1/3 हिस्सा शामिल होगा। मंगल बद के वक्त अगर शुक्र का असर 3 हिंस्सा नेक होवे तो मंगल बद 4 हिस्से मन्दा असर शामिल होगा। शुक्र मंगल साथी इकटठे या बदले घर वाहम हो तो दो की जगह अब चन्द्र होगा। जाहिर बेशक दोनों हों, कलाई रेखा मिटटी का तन्दूर -- मीठा अनार, गेरू धन दौलत जिसके साथ परिवार भी हो। तीर्थ 20 साल, सुख 7 साल, दोनों का और उत्तम फल होगा।

दोनों साझों को बृहस्पति देखे तो बिलकुल उत्तम लक्ष्मी होगी। दोनों मुश्तरका को चन्द्र बृहस्पति देखे तो ऐसा धन हर तरह से नेक फल देवे, माल व

दौलत भी हो और परिवार भी हो (उम्दा मायना मकान मुश्तरका को देखें -- पापी ग्रह (शनि,राहु,केतु,) रात दिन मुसीबत होवे, मन्दा असर देवें।

शुक्र व मंगल बद का सम्बंध --गो शुक्र ने किसी को नीच नहीं किया मगर मंगल बद ने स्त्री (शुक्र) को भी नहीं छोड़ा और हर तरह से **बल्कि इसकी मौत तक का भी असर दिया है**। आग का डर 17 साल, बीमारी 9 साल, हर तरह मन्दा बुरी, तक असर हो।

शुक्र--मंगल खाना नम्बर 2 - औरत खानदान से दौलत पावे। ससुराल घर ही रहने वाला हो। दोनों हालत में ससुराल अमीर होंगे। बिना औलाद न होगा और उसे ससुराल खानदान से मीठी खाण्ड की तरह का उत्तम प्रभाव व दौलत का लाभ हो। अगर शुक्र से मंगल नेक के रास्ते बृहस्पति पर (उम्र रेखा के अलावा रेखा जिसे गृहस्थ रेखा भी कह सकते हैं) रेखा जा निकले तो औरत खानदान या ससुराल से जायदाद आदि के लाभ दिलाएगी।

शुक्र-मंगल खाना नम्बर 3 :- ऐसा धन भाई बहिनों को तारे परन्तु स्वयं आराम परस्ती वाला होगा।

शुक्र-मंगल खाना नम्बर 4 :-माता के भाई बन्धु (नर आदमी) स्वयं बरबाद और इसे भी बरबाद करें। जहिर पानी में मौते या आम हालत में डूबते जाएं। मंगल बद उड़ता होगा।

शुक्र-मंगल खाना नम्बर 7:- औलाद दर औलाद साहब औलाद पोते पड़पोते सब जिन्दा हर दम बढ़े परिवार इसका धन अपने ही खून से पैदा शुदा (मार्फत औरत भाई बन्धु के बाद, बहिन भुखा नहीं) को तारने वाला हो। दौलत का दीगार सुख होवे।

शुक्र-मंगल खाना नम्बर 8:- "ऐसे जन्में चन्द्रभान, चुल्हे अंग मंजे वान" मन्दा हाल मगर हर एक का -निन्दा करने वाला हमला रोकने की हिम्मत का भी साथ होगा।

शुक्र-मंगल खाना नम्बर 10 :- मामुली सी मिट्टी की डली पर लम्बा झगड़ा कर लेने वाला होगा या मिटटी के लिए खाण्ड भी मन्दा कर लेगा औरत के लिए भाइयों को मरवा देगा। खाना नम्बर 2 अब विशेष सम्बंध होगा। निर्धन और झगड़ालू औरत का भाई साले, बहनोई खूब अमीर राजा समान होंगे, मगर अपना शुक्र(औरत) शनि स्वभाव व शनि रंग ही होगा। अगर ससुराल खानदान के मर्द स्याह रंग हो और औरत इसकी नेक सफा रंग उम्दा तो राजा की ठाठ व शान का मालिक होगा। ससुराल खानदान की अमीरी की शर्त न होगी।

बाकी घर अपना-अपना असर होगा।

शुक्र–बुध

दोनों ग्रह बराबर ताक़त और मियाद के होंगे और सूर्य की तरह असर देंगे। यानि 22 साल उम्र से शुरु होकर 44 साल उम्र तक मुश्तरका होंगे। शुक्र बुध

(रेतीली) मशनोई सूर्य का प्रभाव होगा । जो सेहत का मालिक है । हमूमत राज दरबार के साथ की शर्त न होगी । राज सम्बंध 22 साल, औरत का सुख 37 साल, दौलत 36 साल, दुश्मन 40 साल दोनों का और उत्तम फल होगा। धन दौलत कभी हार न देवें । शुक्र अगर केतु का शरीर है तो बुध इसकी टेढ़ी दुम है और बुध शुक्र का दोस्त है । लेकिन जब मंगल के साथ हो जावे तो साथी या मुकाबले पर शुक्र को शेर के दांत दिखाएगा या शेर की तरह गाए पर हमला कर देगा । हालांकि मंगल शुक्र भी आपसी दोस्त हैं ।

दोनों मुश्तरका चाहे किसी भी घर हों (सिवाए खाना नं0 4 के जहां कि दोनों का फल रद्दी होगा) व्यापार से नफे और सूर्य ग्रहण के समय भी उम्दा नतीजा होगा । जबकि शुक्र बुध मुश्तरका मशनोई सूर्य का ही काम दे देंगे । रोटी पानी की कभी कमी न होगी।

''बुध शुक्र दो हों इकटठे शनि भी उम्दा होता है'
धन दौलत की कमी न कोई घी मिट्टी से निकलता है''

(2)ऐसे घरों में हो जहा कि शुक्र कायम और बुध ऊँच होवे यानि खाना नं0 3 में तो सिर की श्रेष्ठ रेखा का उत्तम फल होगा जो चन्द्र के बुरे असर से बचाएगी । जबकि चन्द्र रद्दी हालत का हो लेकिन अगर चन्द्र ग्रहण ही हो तो सिर्फ माता की उम्र या सौतली माता का सुख न हागा । मगर चन्द्र की बाकी सब चीजों का मन्द फल न होगा।

(3) लेकिन अगर ऐसे में हों जहां कि बुध ऊँच मगर शुक्र नीच फल का हो, मसला खाना नं0 6 में तो सिर की श्रेष्ठ रेखा चन्द्र के बुरे फल रो तो बचाएगी मगर औलाद के विघ्न , देर बाद होना या उम्र कम का होना आदि शुक्र नीच का फल होगा । सिर की श्रेष्ठ रेखा बुध की ऊँच हालत का नाम है । शुक्र से सम्बंध नहीं है ।

जब सूर्य नं0 2 में हो तो खाना नं0 6 से सम्बंध है। सिर श्रेष्ठरेखा का उत्तम असर किताबों का काम, तहरीरी दिमागी, काम किताब खाना, छापा खाना, तजारती पैमाना पर राजयोग, राजदरबार कलम से अधिक फायदा जब शनि नं0 2 में हों तो जायदाद पैदा कर लेगा। हर हालत में ईमानदारी की कमाई का फल उत्तम होगा । अगर यह शुक्र से निकली हुई बुध का रुख करें या बुध की तरफ या बुध में चली जाए और रास्ता में सूर्य रेखा से न कटे कटाए तो बुध का उत्तम फल होगा । दस्ती व दमागी काम और तजारत नेक होंगे । शुक्र बुध इकट्ठे हो तो जानी ऐयायाश हो। शुक्र बुध दोनों मुश्तरका हालत या आपसी इकटठे हो रहे हों, आम तौर पर दृष्टि मगर सूर्य का सम्बंध न हो तो दोनों का उत्तम प्रभाव विशेष कर बुध का बहुत उत्तम या बुध +शुक्र मशनोई सूर्य, बुध सूर्य साझों का पूरा शुभ प्रभाव औरत पर होगा । लेकिन जब सूर्य का सम्बंध हो जाए तो सूर्य रेखा से शाखें सूर्य के पर्वत से बुध की तरफ , को शादी रेखा तक गई शाख से जाहिर होता

है कि औरत अमीर खानादान से होगी और सूर्य के समान अपने कार्य में पूर्ण होगी। शुक्र और बुध जब अलग-अलग होकर कुण्डली में दृष्टि के हिसाब से आमने सामने के घरों में वाक्या हो जाए तो चकवे चकवी के चन्द्र की रात में अकेले-अकेले होने का असर नीचे दिए हुए की तरह होगा।

(1) अगर कुण्डली में बुध एक दो तीन हद 12 की तरकीव से शुक्र से पहले घरों में हो (चाहे वो घर 25 प्रतिशत, 50 प्रतिशत या 100 प्रतिशत के प्रभाव के हों) या शुक्र बुध से बाद के घरों में हो तो शुक्र और बुध के इस तरह मिले हुए असर में केतु की नियत (कुत्ते की नेक नियत जो अपने मालिक की वफादारी और मशहूर है) होगी और अगर -

(2) शुक्र कुण्डली के पहले घरों में हो और बुध उसके बाद के घरों में हो तो शुक्र और बुध के इस मिले हुए असर में राहू (**भीगी बिल्ली मगर अन्दर से सौ चूहे खाकर हज को जाने वाली होगी**) की नियत भरी होगी।

(3) लेकिन अगर शुक्र व बुध अकेले अपने से सातवें घरों में हो तो प्रभाव यानि जब ग्रह अपने से सातवें हो तो जहां एक अच्छा है वहां दूसरे का असर उल्ट होगा, का असूल आम ग्रहों की निस्बत शुक्र व बुध के लिए थोड़ा सा फर्क पर होगा।

शुक्र हो खाना नं0 3 और बुध हो खाना नं0 9 में या उल्ट हालत यानि बुध हो नं0 3 और शुक्र नं0 9 में हो तो दोनों ग्रहों और दोनों घरों का फल रददी होगा। हालांकि दोनों दोस्त हैं। वजह यह कि बुध खाना नं0 9 के तमाम ग्रहों और खाना नं0 9 के तमाम ताल्लुकदार घरों के ग्रहों के प्रभाव की बुनयाद खोखली कर देगा।

यदि शुक्र हो खाना नं0 6 में और बुध हो खाना नं0 12 में तो दोनों ग्रहों का फल रददी क्योंकि खाना नं0 12 का बुध खाना नं0 6 के सभी ग्रहों का फल खराब कर देगा।

यदि शुक्र हो खाना नं0 12 में और बुध हो खाना नं0 6 में तो दोनों का ऊँच फल केतु का ऊँच व्यक्त होगा, क्योंकि खाना नं0 6 का केतु सब को ऊँच करता है।

यदि शुक्र हो खाना नं0 8 में और बुध हो खाना नं02 में या उल्ट खानों में तो दोनों का फल रददी मौत का खाना पीछे को देखता है और मारक स्थान है बुध-वृहस्पति के घर में बृहस्पति की दुश्मनी पर शुक्र को भी नहीं छोड़ता और मुर्दा शुक्र नं0 8 का असर खान नं0 2 में जाता है।

(4) ऊपर के घरों में 2,3,6,8,9,12 अगर शुक्र व बुध दोनों ही साझाँ हों तो सूर्य बनावटी का प्रभाव नेक शब्दों में देगा।

दोनों बामुकाबिल जब दोनों ग्रह दृष्टि के खानों की शर्त से बाहर हों तो जिस घर में शुक्र हो वहां बुध अपना प्रभाव अपनी नाली के द्वारा लाकर मिला

देगा और शुक्र के फल का कई बार बुरे से भला कर देगा । लेकिन अगर बुध के साथ शुक्र के दुश्मन ग्रह हों, जब वो शुक्र से अलग हों तो शुक्र अब बुध को अपने घर में नाली लगा देने की इजाजत न देगा । इस तरह से बुध शुक्र को रद्दी नहीं कर सकता । अगर दृष्टि वाले घरों में हो तो मिले मिलाए असर में शुक्र का असर प्रबल होगा । लेकिन अगर दृष्टि में होते हुए अपने से सातवें हो तो दोनों का फल आपस में न मिलेगा या बुध के--शुक्र पागल और शुक्र के बिना बुध सिर्फ फूल होगा, फल न धन सकेगा । दृष्टि घरों में होते हुए अगर बुध खुद केवल बुरा हो तो शुक्र इसके बुरे फल को रोक नहीं सकता यानि जब मन्दा बुध हो और शुक्र से पहले घरों का हो तो शुक्र में बुध का मन्दा फल होगा। गृहस्थ के मन्दे परिणाम होंगे ।

शुक्र-बुध खाना नम्बर 1 :-किस्मत में सूर्य बनावटी का नेक असर शामिल होगा मगर अल्प आयु , मवेशियों के सुख से वंचित होगा ।

शुक्र-बुध खाना नम्बर 2 :- हर दो का उत्तम अपना-अपना फल होगा ।

शुक्र–बुध खाना नम्बर 3

सिर की श्रेष्ठ रेखा का उत्तम फल जो चन्द्र के बुरे असर से बचाएगा यानि जब चन्द्र भी रद्दी हो गऊ और सौतली माता का कोई लाभ न होगा । मगर चन्द्र की सब चीजों का फल शुभ होगा। बेशक चन्द्र-ग्रहण हो । मंगल शुभ से शाखा सिर रेखा के नीचे आखिर सिर रेखा तक ही रह जाए सिर रेखा में मिल जाए तो औरत खानदान के आदमी कारोबार में साथी होगें । जिन का कोई फायदा न होगा। सिर्फ खा पीकर चलते जाएंगे ।

शुक्र–बुध खाना नम्बर 4

मामा के खानदान और ससुराल का मन्दा हाल होगा, खुद भी चाल चलन का शक्की होगा लेकिन अगर चन्द्र कायम हो तो कोई बुरा असर न होगा । माता के भाई बन्धु और बहन आदि कारोबार में खराबी का कारण होंगे । मगर लड़की वाला मामा शुभ होगा। चन्द्र के सूर्य पर हथेली के किनारे हथेली के बाहर रह जाने वाले सीधे खत--माता के भाई बन्धु और --दो शाखी खत माता की बहन आदि औरत जात होंगे, जो कारोबार में खराबी का कारण हो सकते हैं । सीधा खत सिरे पर बुध के निशान वाला --शुभ आदमी होगा जो शुक्र व बुध का सांझा नेक प्रभाव देगा ।

शुक्र–बुध खाना नम्बर 5

इश्क जवानी हमराहियों को बर्बाद करे । शुक्र का पतंग होगा मगर औलाद पर कोई बुरा प्रभाव न होगा । घर में ''भड़ौली'' (तन्दूर या कुठली समान) गड़ी हुई वस्तु का सबूत देगा ।

शुक्र – बुध खाना नम्बर 6

रेत मिट्टी को सीमेन्ट बना दे **चाहे लड़के न होंगे मगर लड़कियां ही सूर्य का उत्तम फल देगीं और उत्तम होंगी जो 22 साल उम्र से शुरु होगा।** शुक्र का

हल्का बुध का अच्छा। सिर रेखा से शाख हो शुक्र को तो औरतों की सहायता और गृहस्थ का आराम होगा बशर्ते कि सिर रेखा से उसका मिलाप सूर्य के पर्वत की तह से इधर मंगल नेक की तरफ या शनि के पर्वत की हद बन्दी तक ही रहे और अगर शुक्र के पर्वत से शाख सिर रेखा के साथ सूर्य के पर्वत की तह में मिले तो औरतों से विरोधिता हो (सूर्य शुक्र का शत्रु है) सिर की श्रेष्ठ रेखा ऊपर खाना नम्बर 3 का प्रभाव होगा औलाद के विघ्न होगें मगर राजयोग होगा, जब सूर्य का सम्बंध भी हो जाए यानि नं0 2 में सूर्य **शामिल हो तो किताबों का काम छापाखाना, दिमागी काम, राज दरबार और लिखने के कार्य से अनगिनत लाभ हो** । अगर शनि नं0 2 में हो तो जायदाद बढ़ती जाए हर दो हालत में ईमानदारी का धन साथ देगा ।

शुक्र–बुध खाना नम्बर 7

उत्त फल, दोनों उत्तम व शानदार गुलजार हो और घर बार गृहस्थी सुख सब शानदार हो अगर राहू या केतू का चन्द्र से शत्रुता का सम्बंध हो जाए तो मन्दा फल होगा । औलाद की रुकावट आदि, यानी और औलाद दोनों मन्दे होंगे । **कांसी का कटोरा मददगार होगा ।**

शुक्र–बुध खाना नं० 8

"रब बनाई जोड़ी इक अन्धा दूसरा कोढ़ी"* शादी व औलाद में गड़बड़ हो। शुक्र स्वयं अक्ल के खिलाफ कार्यवाहियां करने वाला हो और बुध रद्दी से मामा व बहिन बर्बाद, पूरा मारक स्थान होगा।

शुक्र–बुध खाना नम्बर 9

बुध के समय से (लड़की की पैदाइश या खुद उम्र 17 साल) बाप दादा की सब उम्मींदो पर पानी फेर देगा । दोनों ग्रह अलग-अलग मंगल बद का पूरा प्रभाव देंगे ।

शुक्र-बुध खाना नं0 10 में :-साहब, अक्ल, सेहत अच्छी ।

शुक्र-बुध खाना नं0 11 में:-अजीजों से जुदाई, अपना-अपना फल होगा ।

शुक्र–बुध खाना नम्बर 12

दोनों रद्दी, पागल बकरी और कुत्ता अब औरत गाए का पेट फाड़ डालेंगे। गृहस्थ रद्दी, खाण्ड में रेत होगी या शीशा पिस कर धोखा देगा कि खाण्ड पड़ी है मगर मुंह में उसे खाकर तंग होगा । सेहत के मालिक होंगे । लडकी के पैदा होने से गृहस्थ मन्दा होगा । औरत की सेहत भी खराब ही होगी । मगर खुद अपनी उम्र पूरी बल्कि 100 साल तक हो ।

शुक्र –शनि

दोनों ग्रह 52 साल उम्र सांझे होंगे । दोनों आपस में अगर शुक्र में भाग तो शनि 3 भाग होगा । नेकी करने के लिए । लेकिन अगर मन्दा प्रभाव हो तो शनि सिर्फ

2/3 होगा यानि अब शनि अपने साथ शुक्र आपस में शनि से शुभ इसका बाप होगा । दौलत 12 साल, दोनों का और बहुत उत्तम फल होगा । जब यह दोनों सांझे होंगे । मंगल केतू भी सांझे होंगे । **काली मिर्च व घी जो मंगल बद को हटा दें** स्याह काले घर में ठाकुर मौजूद, केतु (ऊँच) जो आराम का मालिक होगा। शनि के साथ या शनि का राशि नं0 10, 11 में शुक्र काली कपिला गाए होगी जो शनि के सभी बुरे प्रभाव से बचाएगी । दोनों सांझे व्यवहार में बुध न ही बोलेंगे, न ही मन्दा फल देगा, चाहे खाना नं0 6 में हो । बुध का नेक फल स्वयं शामिल हो जाएगा । इसकी कमाई नजदीकी रिस्तेदार और मकान खाएंगे । मकान के ऊपर बिजली के बुरे असर से बचाने वाली लोहे की सलाख होगी, **अगर यह चीजें न हों तो धन की जगह जली राख होगी** । दोनों दोस्त हैं, शुक्र औरत तो शनि इसकी आंख में अगर शनि है तो दुनिया की आंख (शुक्र मिट्टी या दुनिया, शनि शरारत) शरारत मरी है। कोई उसे शर्म से दबा नहीं सकता। अगर शुक्र से सूर्य ने दुश्मनी की और ऊपर से जाहिर अपनी गर्मी को भेज पर अपनी तपस को जलाया तो शनि के नीचे खुफिया ही आकर शुक्र को पूरी मदद दी यही शनि के सांप को मिट्टी की मदद हो गई । सूर्य और शनि के मध्य यह शुक्र क्या है। केवल राहू केतू जो इसके मशनोई हालत के बराबर हैं या उसी ऊपर को ऊंचे उठने (शनि) और नीचे को दबने (सूर्य से) के कारण से शुक्र जो लूट में होगा, रेत बनेगा और रेत होगी बुध की चीज या बुध खुद बखुद पैदा हो गया, जो शनि के एजेन्ट हैं मतलब यह कि जब शनि को शुक्र की सहायता मिली या शुक्र को शनि ने सहायता दी तो राहू केतू भी शुक्र के सहायक हो गए । दुसरी हालत में जब सूर्य विरोधिता पर हो। शुक्र केतु सहायता देगा । शुक्र को शनि यानि जब औरत की नेकी उसे सहायता न दे औरत की शैखानी की शक्ति ही सब दुश्मनों को गुलाम करा देगी शुक्र शनि (1) शुक्र पहले घरों में होता हुआ शनि को देखता हो तो शनि की तरह इसके दूसरे साथी इसका धन खाते जाए या वो दूसरे को विरुद्ध शुक्र के पर्वत से निकली हुई रेखा अगर शनि की तरफ को चले तो गृहस्थी साथ में दूसरे साथी होंगे। जो इसका कमाई से परवरिश पाएंगे और अगर यह शुक्र के पर्वत की रेखा सिर्फ उम्र रेखा ही से शुक्र के मुकाम से निकले तो ऐसे साथी बिल्कुल धोखेबाज रिस्तेदार होंगे और जिन्दगी और कमाई दर वास्तव में इनके लिए ही होगी और अगर यह शुक्र से निकली हुई रेखा शनि के पर्वत के अन्दर तक चली जाए तो -- शनि के बुरे प्रभाव से होगा या अगर शनि से निकल कर रेखा शुक्र के पर्वत पर उम्र रेखा को आ काटे तो बिलकुल दुख की मौत होगी। अगर उम्र रेखा से निकली हुई शाख और शनि को किस्मत रेखा, शनि की उर्ध्व रेखा के बराबर-बराबर ही शनि में चली जाए तो शनि का बुरा असर होगा। बल्कि यह नजदीकी रिस्तेदार शनि के मकान आदि के सम्बंध से सम्बंध रखते हुए

इसकी कमाई को खर्चे करेंगे या ऐसे व्यक्ति की खुद अपनी कमाई मकानों पर ज्यादा खर्च (सिफर) होगी । दोनों सम्बन्धि शुक्र (गाए, मिट्टी, लक्ष्मी) शनि (काला रंग, बिजली लोहा) दोनों मित्र हैं या स्याह रंग गाए, (कपिला) पर बिजली को शुक्र मिट्टी में दबा देने (बिजली को जमीन में गाढ़ दिया करते हैं) ---का काम देगी। मकान के ऊपर लोहे की सलाख से मकान बिजली या शनि के मन्दे प्रभाव से तबाह न होगा । जहां स्याह गाए मौजद हो या जिस मकान के ऊपर लोहे की सलाख हो वहां शनि की अपनी मर्जी और तरफ से तबाही न होगी। मिट्टी का खुष्क पहाड़ होगा ।

दोनों को बुध देखे तो जुबान का चसका बर्बाद करे।

दोनों मुश्तरका का सूर्य देखे तो शनि का बुरा प्रभाव पुरे जोर से होगा। मौत दर्दनाक होगी । दोनों देखे वृहस्पति को तो उम्र रेखा से अगर शाख किस्मत रेखा में मिल जाए तो किस्मत का साथी होगा, जिसके साथ मिलने से किस्मत जायेगी।

शुक्र –शनि खाना नम्बर 1

काग रेखा और खुद जानी ऐय्याश दोनों नं0 1, मंगल नं0 4, सूर्य नं0 2, नं0 12 में हो तो दरिद्र आलसी, निर्धन, दुखिया हो ।

दोनों नं0 1 में राहू या केतु सूर्य नं0 7 में हो तो हर तरह से मन्दा हाल शरीर में जलती आग की तरह का दुख खड़ा रहे । तपेदिक आदि से मिट्टी खराब और सेहत बर्बाद दुखों का पुतला हो ।

शुक्र –शनि खाना नम्बर 3

जिन्दगी और कमाई दूसरों के लिए होगी । शनि के पर्वत से रेखा अगर काटने की बजाए उम्र रेखा में मिल कर खत्म हो जाए तो भी जिन्दगी और कमाई के लिए होगी ।

शुक्र –शनि खाना नम्बर 4

अपना-अपना असर 1 में दोनों नं0 4 सूर्य 10 में हो तो बिलकुल सख्त मौत होगी।

शुक्र –शनि खाना नम्बर 7

निहायत करीबी रिस्तेदार कारोबार में शामिल होकर या वैसे ही इसका धन खा पी जाएगें । दोनों नं0 7 चन्द्र नं0 1 सूर्य नं0 4 हो तो नामर्द और निर्बल होगा। (सूर्य अपना असर चन्द्र में और चन्द्र आगे अपना प्रभाव शुक्र और शनि आपस में मिला देगा ।

शुक्र –शनि खाना नम्बर 9

नेक फल अब शुक्र मंगल बद का प्रभाव न देगा । कंजरी गृहस्थी घर में आबाद हो गई होगी। दोनों 9, 12 वृहस्पति नम्बर 5 या 12 मुश्तरका या बामूकाबिल हो तो जायदाद की जायदादों वाला, स्त्री सुख पूरा होगा ।

शुक्र –शनि नम्बर 10

दोनों का अपना-अपना और उत्तम फल होगा । शुक्र इस घर में शनि की

हैसियत से बैठा होता है और शनि सब ग्रहों की नजर का मालिक होता है। शुक्र औरत तो शनि शराबी होगा दोनों का मेल मिलाप जवानी में इश्क का घर, बुढ़ापे में बूढ़ी कंजरी नसीयत देने की तरह दोनों ग्रह सहायक और आराम दे। आमतौर पर दुख एवं दुनियावी व हर तरह से बचाव होता रहेगा। शनि के काले कीड़ों के भून की तरह बेशुमार गृहस्थी साथी और इसकी लड़की के रिस्तेदार उसकी कमाई से परवरिश पाएंगे। धन दौलत सबके लिए बहुत होगा और बढ़ेगा। मकान बहुत बनेंगे या बना देगा। उम्र रेखा से निकली हुई शाख अगर सिर रेखा को काट कर के शनि की तरफ का ही रुख रेख तो कोई निहायत नजदीकी रिस्तेदार लड़के या लड़की का नजदीकी रिस्तेदार वगैरह होगा ऐसे आदमी की कमाई से परवरिश पाऐगा, जिसका आम कारोबार मकान के सामान से सम्बंध होगा। यह शाख जिस पर्वत का रुख रखेगी इसका (अजीज या रिस्तेदार का) ही प्रभाव इसके द्वारा होगा। शर्त यह है कि ऐसी शाख सिर रेखा को काट करके ऊपर के हिस्से में चल रही हो।

दोनों नं0 10 सूर्य नं0 4 हो तो शनि का बुरा असर न होगा। बल्कि जायदाद बनेगी। मौत भी पुरदई न होगी। बल्कि लम्बी उम्र होगी नकद रूपया बेशक कम ही हो।

शुक्र –शनि खाना नम्बर 12

उत्तम फल गृहस्थी सुख और ज्यादा जायदाद मैम्बारान खानदान, जरायत खेती (शुक्र के काम) से पूरा लाभ और फायदा दे।

दोनों नं0 12 बुध नं0 6 हो तो जानी होगा।

दोनों नं0 9, 12 वृहस्पति 5, 9 हो सम्बन्धित हो तो जायदाद की जायदादों वाला, स्त्री सुख पूरा। अगर ऐसी शाख सिर रेखा से नीचे ही रह जाए तो सिर्फ खाने- पीने वाला ही होगा। खाए पिलाएगा बिल्कुल नहीं अगर यह शाखों के पर्वत में चली जाए तो इससे वो खा जाएगें।

मंगल—-बुध

दोनों 45 साल उम्र तक इकट्ठे गिने जाएंगे। अगर मंगल नेक तो दोनों का बराबर-बराबर और उत्तम फल, लेकिन जब मंगल बद हो तो बुध का दो गुणा मन्दा प्रभाव शामिल होगा। मंगल बद के समय आग का डर 17 साल, खाली इज्जत। 1 साल, मंगल नेक के वक्त माता-पिता का सम्बंध 14 साल मन्दा, लड़के 24 साल उत्तम मंगल का अच्छा बुध का खराब फल हो अनार का फूल, मंगल बद व बुध साझाँ मशनोई शनि (राहू स्वभाव) मौत, बीमारी का मालिक और हर तरह से आतशी एवं शीश, शीशा बुध में आग मंगल) लड़की के लाल चमकीले कपड़े (लाल मगर चमकीले न हों तो मंगल नेक होगा, सिन्दूर जो शादी के समय होता है मंगल नेक है) मंगल बुध सांझा कण्ठी वाला हरा तोता वृहस्पति की

नकल करेगा । यानि जैसा टेवे में वृहस्पति होगा वैसा ही दोनों का फल होगा, बुध अपनी केवल अवधि 17 साल तक अलग प्रभाव जाहिर कर सकेगा । मंगल को बुध ही मंगल बद बनाएगा, जब मंगल पहले ही मंगल बद हो यानि सूर्य की सहायता मंगल को न हो नहीं तो बुध चुप होगा । खुफिया दुश्मनी करेगा ।

मंगल का बुध से ताल्लुक

दो चीजों को इकट्ठा करके काम का नतीजा नेक कर लेने की विशेषता होती है वो दो चीज चाहे अलग-अलग होगी मगर आपस में मिल कर काम करें तो परिणाम शुभ होगा । बुध (जमाने की अक्ल) चाहे इसका दुश्मन है मगर इसके साथ वो बुरा फल न देगा । मंगल बुध का आपसी मिलाप कोई ऐसा बुरा न होगा। मगर होगा कद्र बुरा हो । मंगल बुध की दोस्ती से अपना मीठी खाण्ड आदि दूध में घोल दिया मगर बुध की अक्ल से वो दूध केवल पीने के काम का ही रह गया । अब अगर चाहे कि दूध को अलग करके खाण्ड से कोई और काम कर लें तो न हो सका, इसी तरह बुध की अक्ल से **वो दूध सिर्फ पीने के काम का ही रह गया। अब अगर चाहे कि दूध को अलग करके खाण्ड से कोई और काम कर लें तो न हो सका, इसी तरह बुध ने उकसाया तो मंगल ने अपने बच्चा पैदा करने की शक्ति** से खानदानी नसल (बेल-बूटा) कायम कर दी जिसे बहिन कह सकता था और कहना पड़ा, चाहे बुध ने गोल दायरे में ही इधर से उधर घूम गया । चन्द्र बुध में बकरी के दिल वाला (बिल्ली देखी या आई, राहू मिला या आया तो तोता मर गया, ख्वाह बिल्ली छुए भी न) दुनिया तोता जो सिर्फ टें-टें ही करता है मन्दा फल का होता है । मगर यह लाल रंग के साथ वाला पक्का बुध होगा। दूसरे शब्दों में चन्द्र बुध अगर दरिया का रेत तो मंगल बुध मीठे में रेत होगी, जिसके प्रभाव को हटाना मुश्किल होगा । मंगल को मंगल बद तक कर सकता है। लालरंग का नकली खून गले पर लगाए खून कर बदनाम और दुखिया बना देगा । गृहस्थ रेखा अगर सिर रेखा से मिल कर समाप्त हो जाएं तो फिक्र व तकलीफ व दुख बहुत देखेंगे । मंगल के साथ बुध बेशक चुप होगा, मगर शुक्र का फल या स्त्री की दिमागी शक्ति उत्तम होगी । जिसमें पहाड़ की तरह सब्ज की और उत्तम शनि का फल होगा। सिर्फ उसकी जबान का कहना पत्थर पर लकीर होगा या वृहस्पति से सुन कर बोलती हुई जबान मालूम होगी ।

मंगल--बुध खाना नम्बर 1

सुदृढ़ शरीर औरत खानदान को तारे मंगल से शाख जब सिर रेखा की तरफ करके समाप्त हो सूर्य पर तो मजबूत शरीर हो औरत जात और औरत खानदान को अपना माल एवं दौलत खिलाता रहे और उनको तारता रहे ।

मंगल--बुध खाना नम्बर 2

मंगल से शाख जब सिर रेखा को अबूर करके समाप्त हो वृहस्पति पर तो दौलतमन्द हो ससुराल दौलतमन्द हो और ससुराल से जायदाद मिले ।

मंगल – बुध खाना नम्बर 3

बेशक इस घर में बुध ऊँच है पर खाना नम्बर 3 चोरी और धन चले जाने का दरवाजा गिना गया है। धन चला जाये, हर खेल में तीन काने दिखलाये, **क्योंकि मंगल भंगी या बर्बाद करने वाला मंगल है** । इसके मन या दिल में जो कहा विचार आता है वह बद ही होता है । यह हमेशा मन को चलाएमान ही रखता है । हमेशा दिल को बुरे कामों में ले जाता है इसी नियम पर हर पर्वत की शक्ति खराब करता है हर समय वही खरगोश की तीन टांगे दिखलाता है (जब खरगोश बैठता है तो भी अगली दोनों टांगे ऐसी जोड़ कर रखता है कि ही मालूम होता है सोया अगर ऊपर एक तो नीचे दो होती हैं) वही तीन कोना, तीन काने हर खेल दिखलाता है । कभी पौ-बहार या बाहर जमा एक (12+1) कुल तीन से 13 न दिखलाएगा । दुनिया में रहा तो दुनिया का त्रिलोकी कहलवाया और तीन टुकडे कर लिए अगर बड़ा भाई साथ हो और सहायता पर हो तो भी खुशी से गुजारा करता हो। माता-पिता का सुख सागर लम्बा और अच्छा हो और प्रकृतिक सहातया मिले सिर रेखा जहां उम्र रेखा से मिलती है वहीं जाकर रेखा मिले तो भी बुध दुश्मनी का, सिर पर विचार आदि होगा, मन्दा प्रभाव होगा अगर सिर रेखा जहां कि सिर रेखा अकेली है मिली हुई हो तो भी बुध का बुरा असर होगा मंगल बुध दोनों से दूसरों का साथ वृहस्पति की तरफ को जब मंगल रेखा बढ़ी हुई हो तो उम्र रेखा रास्ते में आई जबकि उम्र रेखा के साथ बुध रेखा या सिर रेखा मंगल नेक के पर्वत पर पहले ही मिल चुकी थी ऐसी हालत में उम्र रेखा या शनि रेखा भी मंगल से दुश्मनी पर है और बुध या सिर भी दुश्मनी पर, अब अगर उम्र और सिर रेखा दोनों मिली हुई हों तो मंगल शनि बुध हो तो भी शत्रुता ही होगी। अगर मंगल नेक की गृहस्थ रेखा जब उम्र और सिर रेखा के मिलने के पर ही इन दोनों से मिल कर ही समाप्त हो जाए तो कोई शुभ प्रभाव न होगा । अगर सिर रेखा से शाख अगर हो मंगल नेक को तो खुशी से गुजारा करता होगा । माता पिता का सुख हो और प्राकृतिक सहायता का साथ मिले ।

मंगल––बुध खाना नम्बर 4

अपनी जात पर बुरा असर न होगा, दूसरों के लिए बुरा मगर वो खुद नहीं।

मंगल––बुध खाना नम्बर 6

अब मंगल बुध की दुश्मनी न होगी अपना-अपना फल खाना नं0 3 का और नेक शब्दों का मिला हुआ। मंगल नेक से शाख अगर सिर रेखा को काट कर आगे बढ़ जाए ता बुध (सिर रेखा) का बुरा प्रभाव (बुध मंगल का दुश्मन है) न होगा।

मंगल––बुध खाना नम्बर 7

मंगल सातवें सब कुछ उम्दा धन-दौलत परिवार ही सब,–––सब ही रद्दी होगा बुध मिले मंगल से जब ।

मंगल का शेर बुध के दांत होने के पर अपने घर में शुक्र दोस्त है, मगर फिर भी गृहस्थ बर्बाद और जहर के वाक्यात । यह है कि बुध अपनी नाली लगा कर खाना नं0 7 का फल बाहर जहां भी शुक्र हो ले जाएगा और गृहस्थ का खाना खाली होगा। केवल मंगल बद शेष रहेगा। मंगल से रेखा अगर सिर रेखा को करके बुध के पर्वत पर चली जाए तो कोई नेक प्रभाव की उम्मीद नहीं क्योंकि बुध और मंगल मसादी ताकत के हैं और बुध मंगल से दुश्मनी पर रहता है ऐसी हालत में सम्बंधित दुनिया से झगड़े की जड़ एवं मेहतन की मेहरबानी और सिर की पैदा करें या खुद अपने बुरे विचारों का नतीजा होगा। मंगल बुध नं0 7 यही हाल मंगल रेखा का इस वक्त होता है जब वो सिर रेखा को अबूर करके वृहस्पति, शनि, सूर्य या बुध की तरफ का रुख करके दिल रेखा या चन्द्र की रेखा पर ही खत्म हो जाए क्योंकि रास्ते में बुध अपना मन्दा प्रभाव करेगा।

मंगल---बुध खाना नम्बर 8

मंगल बुध सम्बन्धित अमूमन मंगल बद होता है मगर इस घर में दोनों मुश्तरका से मंगल बद न होगा । अगर सिर रेखा मंगल बद की तरफ दो शाखी हो तो भी बुरा ही प्रभाव है यानि बुध के शेर को मंगल बद का मुंह लगा है जो मामा का खानदान को मौत में पहुंचने आदि न रहेगा और उनकी आगे से औलाद आदि सब समाप्त कर देगा और अगर सिर रेखा से कोई शाख मंगल बद कर जाए तो जिस उम्र में ऐसा व्यक्ति होश सम्भाले तो मंगल के असर का जमाना 7, 14, 21, 28 आदि होगा । मामा के घर से बाहर होगा यानि साधू आदि हो जाए और व्यक्ति जब पिता हो जाए तो मामूली ही बात है । आम तोर पर ऐसी हालत में मामा के सिर पर स्वाह या राख डाल कर ही बच सकता है मगर वो भी अपने घर में नहीं बच सकता और अगर घर में जिन्दा हो तो वो मुर्दे के बराबर ही होता जाए, कारोबार में सख्त विचारों में नाकामी आदि जो कहो सच्च ।

दोनों खाना नम्बर 11 में :-शराब का इस्तेमाल आंख का टेढ़ापन देगा या शनि मकान और बृहस्पति गुरु पिता धन दौलत सोना मन्दे हाल देंगे जिसका उपाय गंगा जल सुबह सुबह इस्तेमाल करना मुबारिक होगा । या चन्द्र या वृहस्पति की चीजों का साथ अच्छा होगा । अब चन्द्र या वृहस्पति का इलाज मददगार होगा ।

बाकी घर अपना-अपना असर देंगे ।

****

मंगल---शनि

दोनों 40 साल तक साँझे होंगे, आपसी मिलाप में मंगल का 1/3 भाग शामिल होगा जब मंगल बद हो । लेकिन जब मंगल नेक हो तो शनि की बुराई और मन्दा असर सिर्फ 1/3 भाग साथ मिला हुआ होगा। सांझी मिलावट में मंगल 3 हो तो शनि 4 जज्ब होगा । दोनों ग्रहों की बुनियाद अच्छी व बुरी राहू पर होगी यानि

अगर राहू उच्छा हो तो दोनों का फल अच्छा होगा। मंगल नेक व शनि दयाल शिवजी और विष्णु जी होंगे। छुपते सूर्य की लाली बुढ़ापे में किस्मत की शान और बनावटी राहू (ऊँच) का असर होगा । झगड़े फसाद में जीत का मालिक, नारियल, छुआरा, दौलत 24 साल, मंगल बद और शनि साँझा काग रेखा, राहू बुरी नियत का होगा । बीमारी 5, 15 साल तकलीफ साल हो धन-दौलत और परिवार दोनों जड़ में सामने आए हुए को पहचान लेना लिखे को देख कर पढ़ लेना या शनि की ताकत है। मगर दिमाग के हाथी राहू की सवारी करके एक जगह बैठे ही सैकड़ों मीलों की चीजों को देख आना मंगल की ताकत है। राहू केतु दोनों ग्रह शनि का स्वभाव रखते हैं । या शनि में नेक व बद दोनों ही तरह से चले जाने की ताकत होती है लेकिन मंगल ऐसा नेक और साफ है कि इसमें अगर जरा भी बुराई की तरफ चलाने की उकसाहट हो जाए तो फिर पीछे न हटेगा और अगर कोई जरा सी शरारत या बुरा असर करने वाला मंगल का साथी हो जावे तो मंगल अपना सारा ही जोर उसे दे देगा यानि अगर मंगल के साथ शनि आ मिले तो मंगल खुद तो बुध की तरह खाली ही हो जाएगा लेकिन शनि की ताकत दो गुणा कर देगा । शनि का असर होगा, नजर लग गई मंगल बद का असर होगा । दोनों आपसी दृष्टि में हों तो किस्मत चूल्हा समान, चोर, दोखा शनि शनि नं0 1 और मंगल नं0 4 का बुरा फल देगा । अगर मंगल देखे शनि को तो मंगल खुद सिफर बल्कि औलाद से दुखी और शनि दो गुणा नेक और उम्दा लेकिन अगर शनि देखे मंगल को तो दोनों डाकू और दोनों ही का नेक और उत्तम प्रभाव होगा । दोनों अलग-अलग मगर आपसी दृष्टि का सम्बंध हो तो साधारण जैसा भी दोनों का अपना-अपना असर हो वैसा ही होगा । मगर जब दोनों साथी हों तो साँझा ही गिने जाएंगे दोनों की साँझा कमान होगी । दिलवर बहादुर सेहत उम्दा और शरीरिक शक्ति उत्तम होगी । ऐसी कुण्डली वाला दूसरे व्यक्तियों पर हर समय मौत की तरह छाया रहने वाला होगा । छिपते सूर्य की लाली की तरह बुढ़ापे में किस्मत का असल उम्दा जोर होगा । बीमारी जब होगी, सख्त होगी और जान का धोख देती मालूम होगी;मगर उम्र लम्बी होगी । मंगल अपना फल शनि को ही दे देता है इसलिए दोनों ग्रहों की बजाए एक ही ग्रह या शनि की दो गुणा शक्ति हो जाएगी या दूसरे भाइयों की किस्मत का हिस्सा भी इसी के पास आ जाएगा और हो सकता है कि दूसरे भाई बहुत ही मामूली शक्ति के हों और स्वयं ही बुलन्द हो जाए। सांप और शेर की आपसी तबीयत होगी यानि सभी को साफ और जालिम को कत्ल ही करके छोड़ेगा । **इसका घर डाका के काबिल होगा या धन की ज्यादती देख कर हो सकता है** कि सिर्फ दोनों ही हों इन के साथ साधू ग्रह वृहस्पति का साथ हो जाए (सिवाए खाना नं0 2 के वृहस्पति के) तो अवश्य ही आमदन होते हुए भी कर्जाई होगा । विशेष कर बाप की या तमाम जद्दी चीजों के

समास होने तक मंगल शनि के घर खाना नं0 10 में राजा होगा । जब तक कोई और ग्रह साथी न हो मगर शनि के पक्के घर खाना नं0 3 में निर्धन कंगाल होगा । जायदाद हो सकती है, मगर नकद माल न होगा । दोनों साँझा को देखे या साथ हो वृहस्पति मगर वृहस्पति नं0 2 का न हो तो लोगों को श्राप देने वाला बृहस्पति होगा । मगर स्वयं अपने लिए महावन उम्र दैविक सहायता,मदद मर्दा और यार दोस्तों की पूरी सहायता होगी । माकूल आमदन फिर भी कर्जोई होगा । बमारियां, आदतें, बद वृहस्पति नं0 2 का साथ, अब यह गुरु भी चोरों में मालिक होगा। कुण्डली वाले के लिए धन दौलत का नतीजा उम्दा होगा । जब मंगल शनि इकट्ठे हों तो या एक दूसरे को दूसरे को देख रहे हों तो दो अलग-अलग ग्रहों की बजाए सिर्फ एक शनि का ही ग्रह गिना जाएगा, मंगल खुद बुध की तरह अपनी सारी शक्ति शनि को देकर खुद सिफर हो जाएगा या ऐसे व्यक्ति का बड़ा भाई (मंगल) बुध की तरह खाली हो जाएगा या मंगल शनि साँझा कुण्डली वाले का भाई उससे हर हालत में कम होगा । कुण्डली वाले के मंगल के दूसरे दौरा में मंगल शनि दोनों ग्रह डाकू और एक ही नियम के गिने जाएगें या ऐसे व्यक्ति का घर डाका डालने के काबिल (दौलतमन्दी) होगा या हो सकता है कि ऐसे व्यक्ति के घर पर डाका के वाक्यात हो जाएं । डाका जाहिर के अलावा (शनि की पौशीदा ताकत का नतीजा) ऐसे शख्स को हो सकता है कि साहूकारा या मुतरका दुनिया में सिर्फ इतवारीचाल पर लेन देन में बर्बाद करे और वो शख्स अचानक मोटे नुकसान देखे यह दोनों मुश्तरका ग्रह मुन्दरजा जैल वाक्यात के दिन से ऊपर का दिया हुआ असर देता शुरु करेंगे यानि इनका असर उस खाने का जिसमें कि वो बैठे हुए हों जाहिर होने से पहले अपनी निशानी जरुर देगा । निशानी उस होगी जब मंगल या शनि ही तख्त की मालकियत के हिसाब या राशि नम्बर के ग्रह बोलने के वक्त इकट्ठे होवे यानि जब वो इस ढंगपर आकर मिले तो जिस खाने में वो कुण्डली में लिखी हैं उस खाना नं0 की नीचे दी हुई चीज के वाक्य होगा जो उनके लिए असली मिलाने का सबूत देगा ।

जब कुण्डली के खाना नं0 में हो	कौन से वाक्य से निशानी देगें दो की बजाए किस	ग्रह का फल होगा
(1)	(2)	(3)
1	जिस दिन ऐसा व्यक्ति राज दरबार में कारोबार शुरु को मंगल दोनों ग्रह मिले हुए असर देंगे ।	
5.	जिस दिन ऐसे व्यक्ति के यहां औलाद पैदा हो तो असर शुरु हो जाएगा ।	सूर्य
2	जिस दिन ऐसे व्यक्ति का ससुराल का सम्बंध बन जाए या शादी ही वृहस्पति से मुश्तरका	शुक्र

7 जिस दिन ऐसे व्यक्ति का स्त्री से स्त्री ताल्लुक (भोग) होवे। शुक्र

9 जिस दिन ऐसे व्यक्ति के गृहस्थ में यह लम्बा चौड़ा आडम्बर समान मेला हो मगर बिना शक्ति के दान यज्ञ बुजूर्गो से सम्बंध हो। गुरु वृहस्पति

12 जिस दिन ऐसे व्यक्ति के गृहस्थ में यज्ञ हो (खुद जाती सम्बंध) वृहस्पति

3 जिस दिन इसकी लड़की की शादी (राहू ससुराल (ऊँच खाना नं0 5) या वो लड़की ऋतुवान हो या जवान हो। बुध

6 जिस दिन इसकी की शादी (बुध लड़की) ऊँच खाना नं0 6 या वो लड़की ऋतुवान हो या जवान हो। राहू

4 जिस दिन खेती की जमीन आवे या घोड़ी बच्चा देवे (मादा) चन्द्र मंगल खाना नं0 10 चन्द्र

6 जिस दिन छिपकली जिस्म पर पांव की तरफ से ऊपर सिर की तरफ को चढ़ जाए या कुतिया बच्चे देवे। केतु

10 जिस दिन मकान में दिन के वक्त (रात को नहीं) सांप का वाक्य हो मगर सांप मार कर मर्दा न किया जाए या सिर्फ निशानी का होगा डंग नहीं मार सकता। शनि

11 जिस दिन अपने बाप बाबा की सभी चीजों के बदले में स्वयं पक्का हर एक चीज पैदा कर लेवे। वृहस्पति

या कौन से ग्रह के इस जगह दिए हुए खाना में हो जाने पर मंगल शनि के सांझा होने की हालत का फल गिना जाएगा।

इस कौन में दोनों ग्रहों का होना मन्दा फल मिलेगा। साधु के घर चोर होंगे फिर भी आमदन में कोई कमी न होगी यदि पीले रंग का उपाय करेगा, केतु का उपाय शुभ और राहू का सबसे उत्तम होगा। **नीलम राहू उत्तम फल देगा। हीरा (बुध जो मंगल का दुश्मन) बिमारी, कर्जा पैदा करेगा।** सूर्ये सब कुछ बरबाद करेगा **(सूर्य शनि का शत्रु है)** जायदाद घटा दें।

काग रेखा :- शालें अगर सिर्फ नीचे की तरफ हों या कलाई की तरफ कौए की दुम से मिलती जुलती शक्ल बनावे तो काग रेखा या कौए की रेखा कहलाएगी जिसका असर बहुत हल्का और निहायत खराब है। काग रेखा उड़ा दे सब कुछ। वर्ष फल के हिसाब शनि की अवधि खत्म हो मगर उम्र रेखा से उम्र हार न देवे। मंगल बद व शनि खाना नं0 9 या नं0 1 में)जब मच्छली की दुम पर्दो की तरफ से खुली हो तो काग रेखा होगी और असर में मंगल बद मंगल बद की तरह हर तरह से मन्दा होगा।

मंगल–शनि खाना नम्बर 1

काग रेखा जिस दिन ऐसा व्यक्ति राज दरबार में काम शुरु करे दोनों ग्रहों का नेक फल होगा। (मंगल द्वारा) मन्दे व वक्त तक काग रेखा (जब बुध मन्दा हो

टेवे में) सब कुछ उड़ा दे । अपने रिस्तेदारों को उजड़ों, बीमारियां सम्बंधी का खून हों । हर दो हालत में ससुराल खानदान सब माला-माल हो जाए । मगर उम्र हार न देवे । औरत की इश्क बाजी से खराबी रहेगी । गृहस्थ रेखा जब सूर्य के पर्वत पर पहुंची तो बुध या सिर रेखा और दिल या चन्द्र रेखा तो सूर्य का नाम सुनकर खामोश हो गए मगर शनि या उम्र रेखा का बुरा प्रभाव होता ही रहा । शनि सूर्य का लड़का और सूर्य के विरुद्ध हमेशा दुश्मनी पर रहता है । सूर्य का जिस्म भी मजबूत है मगर सूर्य की किरणों के मुकाबले में शनि की बदफेल कोंए की आंख बहुत होशियार है और सूर्य से दुश्मनी करती है --सुना होगा कि जब सूर्य की तपस या गर्मी हद से ज्यादा हो गई हो और सूर्य खूब चमक में करती है और कहा जाता है कि धूप इतनी थी कि कौए की आंख निकल रही थी या गर्मी के मारे कौए की आंख भी आखों से निकल कर भाग जाना चाहती थी अब सूर्य की कमाई जिस कद्र बढ़ती जाए शनि की आंख औरत जात के कबीला को सब कमाया हुआ धन दौलत पहुंचा देती है । वृहस्पति पर जब गृहस्थ रेखा गई तो ससुराल से दौलत मिली अब गृहस्थ रेखा जब सूर्य पर गई तो ससुराल खानादान को दौलत मिली । सूर्य की सब कमाई औरत खानदान या औरत की आंख ने खोली यानि साले बहनोई या औरत की आंख ने जो दिखा दी इनका सूर्य के घर से ऊपर को चला गया । औरत की आंख कौए की तरह निहायत होशियार से सूर्य की तमाम दौलत उड़ती चली गई और सूर्य की कोई पेश न गई सम्बंधित दुनिया भी ऐसा ही व्यवहार करती रही पूजन दरवेश रही । औरत सिर्फ अपनी ही से मुराद नहीं, वो औरत जिसकी आंख स्याह रंग हो, भूरी आंख वाली औरत मर्द के खानादान की परवरिश में सूर्य की कमाई लगाएगी । **मगर स्याह रंगवाली आंख औरत खुद अपने मां बाप के कुटुम्भ कबीला की ही पालना में लगी रहेगी ।** ऐसा मर्द औरत की कबूतर बाजी और इनकी रंग बिरंगी आंखों के तमाशे देखकर खुश होगा और अपना सब रुपया पैसा उन पर कुर्बान कर देगा । शनि को मीन राशि का मालिक मछली स्याह रंग मीन राशि खाना नं0 12 मध्यमा अंगुली जो शनि की अंगुली घर ही स्थित हुई है जो राहू की भी राशि है जिसे बुध खराब या नीच करता रै यानि स्याह रंग आंख की मछली या औरत का सुख मन्दा कर देता है और शुक्र और केतु इस राशि का ऊँच करते हैं यानि वो औरत जिसकी आंख शनि की या स्याह रंग न हो या वो व्यक्ति जिसका कारोबार सफर से ज्यादा सम्बंध रखता हो बच जाता है । शनि का अपना बजुद भी मगरमच्छ की आंख को सहायता देगा । ऐसा ही सूर्य पर गृहस्थ रेखा से औरत खानदान सूर्य की कमाई से माला माल हो जाता है ।

मंगल-शनि खाना नं 2

जब उम्र रेखा व सिर रेखा के मिलने की जगह का मुकाम हथेली के अन्दर

की तरफ ही रह जाए और अगर गृहस्थ रेखा को ऊपर वृहस्पति में जाने के लिए रास्ता साफ मिल जाए तो वृहस्पति का दौलतमन्दी और ससुराल अमीर या ससुराल से जायदाद आदि नसीब होगी । क्योंकि शनि खुद तो मंगल से दुश्मनी नहीं करता मंगल ही शनि से विरोध करता है आमतौर पर ससुराल दौलत मिले स्वयं अमीर होंगे, ला औलाद न होंगे । इनके धन के दरिया की लहर शुभ होगी, शुक्र द्वारा जिस दिन शादी हो या ससुराल का ताल्लुक पैदा हो जाए । वृहस्पति भी उत्तम फल का होगा ।

मंगल--शनि खाना नम्बर 3

अपने ही भाई बन्धु विरोध करें जहर की घटनायें हो । गृहस्थ बर्बाद, धन कम, जायदाद ज्यादा खुद कमान बहादुर समान ताकतवर होगा । लड़की की शादी हो या लड़की ऋतुवान हो, बुध द्वारा दोनों ग्रहों का नेक प्रभाव होगा । मगर मंगल के घर खाना खाना नं0 3 में शनि निर्धन कंगाल (माल दौलत नकद न होगा, मगर जायदाद जरुर होगी या उत्तम हो सकती है) होगा । शुक्र पर मंगल नेक और अंगुठे की तरफ गई हुई शाख औरत खानदान और औरत के भाई बन्धु विरोध पर होंगे । जहर की घटनायें पेश होंगीं। गृहस्थ मन्दा हो उम्र रेखा की शुरु होने की तरफ दो शाखी कोई नहीं होती ।

मंगल--शनि खाना नम्बर 4 में :-खेती की जमीन आए या घोड़ी बछेरी दे चन्द्र द्वारा दोनों का फल उत्तम हो वरना दोनों का अलग-अलग खाना नं0 10 का फल होगा जो कि चन्द्र मंगल नं0 10 में लिखा है ।

मंगल--शनि खाना नं0 5 में:- जब ऐसे व्यक्ति के यहां औलाद पैदा हो ता किस्मत जागे (सूर्य द्वारा) ।

मंगल--शनि खाना 6 में:- जब छिपकली जिस्म पर चढ़ जाए पांव की तरफ से या कुतिया घर में या घर के सामने घर या मैदान में बच्चे दे (केतु द्वारा) किस्मत जागेगी, नेकी पसन्द होगा ।

मंगल--शनि खाना नम्बर 7 में:- अपने रिस्तेदारों और अपनी औलाद को तरने धन होगा । दौलतमन्द औलाद स्त्री और दुनिया कम सुख पूरा (शुक्र द्वारा) स्त्री से स्त्री सम्बंध या भोग हो, किस्मत जागेगी । उम्र रेखा खात्मा की दो शाखी बुढ़ापे में सेहत पर नजर हल्की होने की निशानी है अगर गृहस्थ रेखा पक्की होकर शुक्र के पर्वत में अंगुठे की तरफ झुक जाए तो बड़ा ही मालदार और दौलतमन्द, औलाद स्त्री और दुनिया का सुख भोगने वाला हो ।

मंगल--शनि खाना नम्बर 8

मंगल बद जब आंख के द्वारा कुण्डली के ग्रहों में शनि या सबकी आंख (शनि को आंख माना है) पर व्यक्त हुआ और व्यक्त आंख बन्द करके दुनिया को सहारा दिया तो क्या हुआ । पहले 3, 8 पर मंगल नेक जो था अब तीन के अक्षर

के तीनों निशान मिला कर 3 से 8 हुआ और खाना नं0 8 (उर्दु का 8 अंग्रेजी 8) बन गया और बृश्चिक राशि बिच्छु बन गया, मौत का घर हुआ । मर्दो को भी बे आराम करने लगा । कहते है बिच्छु मुर्दो को जिन्दा कर लेता है (आखिर पर बदनामी को धोने के लिए बड़े भाई-----मंगल 8 कदमों में गिरा यानि 8 के नीचे लेट गया। **त्रिकोना** ही सामुद्रिक में हो गया । इसने अपनी बदनामी की कसर न छोड़ी इसी नियम पर घर मकान तीन कोना सबसे बुरा गिना गया । अब दोनों ग्रह मारक स्थान के होंगे 3 कोनों मकान वाला हाल, मौतें, मातम आदि होगें **अब सिर्फ शमशान के कुंए का पानी शुभ होगा नहीं तो सब बर्बाद, बाकी सिफर वाला मकान मुर्दघाट होगा ।**

मंगल--शनि खाना नम्बर 9

अगर बुध का सम्बंध हो जाए तो सबसे मन्दी काग रेखा-नहीं तो जन्म से ही सब से उत्तम हालत शाही जंगी धन व शाही परवरिश व हकूमत का साथ होगा । जो 60 साल उम्दा रहे और आगे बढ़े असल किस्मत का धनी वो होगा, जब इस के गृहस्थ में बुजुर्गो से सम्बंध बतौर दान यज्ञ एक लम्बा चौड़ा आडम्बर हो मेला समान (वृहस्पति द्वारा) ।

मंगल---शनि खाना नम्बर 10

हुक्मरान जायदाद वाला, दौलतमन्द हो मंगल शनि, शनि के घर खाना नं0 10 में मंगल राजा होगा जब तक कि कोई और ग्रह मंगल के साथ न हो या मंगल को न देखता हो और न ही किसी दुश्मन ग्रह का ऐसा मंगल साथी ग्रह का रहा हो। इसकी औरत नेक किस्तम की होगी जो शादी होते ही किस्मत को जगा देगी या कोई और सम्बंध होगा जिसके साथ मिलते ही किस्मत जागेगी । गृहस्थ रेखा सिर रेखा को पार करके खत्म हो शनि पर, तो मालदार, पोते पडपोते वाला होगा और जब गृहस्थ रेखा इस प्रकार मिलने की जगह (जहां उम्र या शनि रेखा और बुध या सिर रेखा मिली हुई होती है) को उसको पार करके शनि में चली जावे तो शनि तो सिर रेखा दुश्मनी नहीं करेगा अगर दुश्मनी करे तो मंगल खुद ही करेगा । अब इस जगह मंगल का नाम मंगल नेक ही है । इसलिए शनि का बुरा असर न होगा । और शनि नेक फल ही देगा यानि शनि ही पैदा करदा बीमारियां , मौते, या दीगर उदासी और तबाही खानदान में न आवेगी। हां मंगल नेक स्वयं ही बुरा प्रभाव करे तो बेशक करे यानि कबीला वाले आपसी झगड़ा आदि न होगा । (मंगल नं0 10 से और ग्रहों की दृष्टि के समय) मंगल शनि नं0 8,10,11 में जंगली चीता होगा जो आदमी के पीछे चलेगा और मौत की तरह छाया रहेगा लेकिन अगर मुकाबला हो पड़े तो हमला कर देगा यानि मंगल शनि मुश्तरका को 3/4 से कोई दुश्मन ग्रह आ छेड़े तो नं0 3 या नं0 4 वाला दुश्मन ग्रह मारा जाएगा या निष्फल हो जाएगा मगर मंगल शनि की ताकत गुम न होगी । बल्कि और भी लड़ाई इत्यादि करने

वाला होगा। इस घर में बड़े भाई ने (मंगल नेक) तो शनि के साथ मिल कर यानि शनि के साथ मिल कर यानि शनि के पर्वत के खाना नं0 10 के अक्षर से तीन जमा दस तेरह या पग बारह का नाम पाया यानि त्रिशुल पर गिलाफ दे दिया और शनि के बुरे प्रभाव से सबको बचाया यानि चोकोर जो त्रिकोन के साथ चौथी लकीर मिल गई तो चार खाने हुआ या चार कोना मकान बिलकुल उत्तम फल देगा। किस्मत का नेक प्रभाव उस समय होगा जब इसके मकान मे दिन के वक्त (रात को नहीं) सांप जाहिर हो और वो मारा न जाए क्योंकि यह सिर्फ किस्मत के जागने की खबर देने आता है डंग नहीं मारा करता।

दोनों खाना नं0 10 चन्द्र नं0 4 हो तो पानी की बजाए दूध से पले पेड़ की तरह उत्तम किस्मत का मालिक। गुस्सा, उत्तम सरकार से विशेष फायदा पाए। सरकारी मुलाजमत जरुरी पाए, मंगल नेक का धन बढ़ता जाए।

दोनों साँझा नं0 10,11 में तो मालदार, पौत्र, पड़पौत्र वाला अगर कुण्ड़ली में पापी ग्रह अच्छे घरों के हों और रद्दी न हो गए हों लेकिन अगर रद्दी घरों में हो तो मंगल बुध का नेक प्रभाव राहू की तमाम उम्र (42 साल उम्र) के बाद पैदा होगा। खाना नं0 11 दर असल वृहस्पति का है जिसमें शनि भी हिस्सादार है इसलिए वृहस्पति का शनि का प्रभाव जरुर इस खाना के असर में दखल देगा।

मंगल--शनि खाना नम्बर 11

किस्मत का असल दिन बाप की तमात चीजों के बदले में जब अपनी खुद साख्ता तमाम चीजों को बना लेवें होगा, वृहस्पति द्वारा माकूल आमदन फिर भी ऋण के नीचे दबने वाला एवं चोरों को फंसाने **वाला धर्मात्मा साधू की तरह वृहस्पति दोनों ग्रहों के फल को मन्दा करता जाएगा**

मंगल--शनि खाना नं0 12 में :- अपना-अपना फल होगा।

बुध-शनि

दोनों 79/40 साल उम्र तक साँझा होंगे साँझी मिलावट में बुध 4 हिस्से तो शनि 5 हिस्से होगा। दौलत 45 साल, तकलीफ 10 साल, लड़के 24 साल, उत्तम फल होगा। गांव व एक सांप दूसरे उड़ेना या उड़ने वाला समान, **परिन्दों में बाज की शक्ति और चीज की नजर का मालिक और सांपों में परों वाला जहरीला नाग होगा,** मगर कुण्डली वाले के लिए शुभ फल माता-पिता का सुख सागर लम्बा और नेक, **स्वयं वो नेक किस्मत का मालिक और हमदर्द होगा।** सिर रेखा और उम्र रेखा के मिलने पर यह कायम होगा।

बुध-शनि खाना नं० 4

दोनों साँझा या ऊपर की हालत में होने पर चन्द्र का साथ हो जाए या दोनों साँझा खाना नं0 4 चन्द्र के पक्के घर में ही हो जाए तो दोनों दूसरों के लिए खूनी सांप होंगे और साथ ही कुण्डली वाले के लिए चन्द्र का फल मन्दा होगा। मगर

बुध का फल मन्दा न होगा। चाहे स्वयं चन्द्र भी किसी तरह शामिल हो जाए। यह रेखा (सिर की शाख) शनि की तरफ को चलती हुई नुकसान न देगी लेकिन अगर रास्ता में दिल रेखा या चन्द्र रेखा पर ही समाप्त हो जाए तो चन्द अपना बुरा प्रभाव जरुर करेगा, खूनी होगा।

बुध–शनि खाना नम्बर 7

शराबी कबाबी, नेक फरामोश मगर धनाढय और सुखिया हो।

बुध–शनि खाना नम्बर 9

हमदर्द, माता-पिता की आपसी का नेक, उनका सुख सागर लम्बा। काग रेखा वही प्रभाव जो मंगल बद नं0 8 का है यानि बुध के वक्त तक काग रेखा बाद विशेष शनि का खाना नं0 9 का प्रभाव नेक और उत्तम होगा।

बुध–शनि खाना नम्बर 11

गांव का रईस और आराम पाने वाला हो अगर शनि का स्वभाव राहू केतु के आगे पीछे होने के हिसाब से (नेक हो या दृष्टि नं0 3 का कोई मन्दा प्रभाव शनि के लिए न रहा हो। 45 साल दौलत होगी वरना शनि का फैसला किस्मत का फैसला करेगा।) **नोटः-बाकी घर अपना-अपना असर लेंगे।**

दो से ज्यादा ग्रह साँझें

जब दो से अधिक ग्रह एक ही घर में (दृष्टि से मिले हुए दो से ज्यादा-शुभ नहीं बल्कि एक ही घर में साँझे और दो से ज्यादा) बैठ जाए तो वो अपनी दृष्टि के जरिए अपने बैठे हुए घर के बाहर किसी दूसरे घर पर नहीं कर सकते जब तक उस घर में जहां कि उनकी दृष्टि हो सकती है कोई और ग्रह न बैठा हो अगर इनकी दृष्टि पहुंचने के घर का ग्रह (अगर बहुत ग्रह हों तो हर एक को अलग-अलग गिन कर देखेंगे) उन ग्रहों का दोस्त ग्रह हो (किसी एक का या सब का ही) तो बाद के घर का ग्रह जो इनका दोस्त है, का अपना असर खराब न होगा बल्कि वो बाद के घर की सम्बंधित चीजों पर उन पहले घर के मिले हुए ग्रहों का असर अच्छा या बुरा जैसा भी होगा खाली नाली में से रोशनी की तरह आ जाये देगा लेकिन अगर वो ग्रह उनका बैठना वाले घर की चीजों पर न पहुंचने देगा। (दो से ज्यादा ग्रहों का एक घर के अन्दर-अन्दर का वाहमी ताल्लुक अकेले ग्रह की वाहमी दोस्ती दुश्मनी के लिहाज से देखा जाएगा।

तीसरे घर का प्रभाव

कुण्डली के खानों में पहले व तीसरे या हर तीसरे घर (दोनों के बीच सिर्फ एक खाना नम्बर छोड़ कर मसला 1,3,5,7 में पहला व तीसरा व पांचवा-पांचवा व सातवां) का असर कभी भी पहले घर में नहीं आ सकता। पहले व तीसरे को इस तीसरे घर की शर्त में न लेंगे, लेकिन **अगर पहले घर में आ जावें तो ऐसी**

हालत में पहला घर खराब असर का या गला सड़ा हुआ या पहले घर के ग्रहों **का मन्दा बुरा ही लेंगे ।** चाहे वो सब मिलने वाले ग्रह आपसी या बुध या शुक्र या दोनों के दोस्त या दुश्मन ही हों । बुध ही नाली के वक्त पहले घर में इकट्ठे हहेने वाले ग्रहों का मन्दा ही असर न लेंगे लेकिन हो सकता है कि मौके के अनुसार नेक फल के होवे " **तीसरा रलियां ते घर गलियां**" यानि तीसरा घर मिला तो पहला मन्दा या खराब हुआ मगर पहला घर मिलने से तीसरा मन्दा न लेंगे पापी ग्रह:-जहां कहीं भी शब्द पापी ग्रह होगा, शनि राहू, केतू तीनों ही ग्रहें से मुराद होगी । सिर्फ राहू केतु मुश्तरी पाप कहते है ओर शनि जो उनका मुन्सिफ है के साथ होने पर तीनों को पापी ग्रह से यादे करेंगे । राहू केतू दोनों ही शनि का ही स्वभाव रखते हैं, मगर शनि की ताकत नहीं रखते यनि इल्लत (शरारत) होते हैं । हमलों श शरारत का नतीजा हो सकते । पापी ग्रहों का स्वभाव यह है कि:-

(1)जब कभी भी कोई दुश्मन ग्रह अकेला ही उनके मुकाबला पर हो तो वो उस दुश्मन ग्रह ही की ताकत को जाया (खराब) करते हैं।

(2) लेकिन जब वो दो या ज्यादा दुश्मन ग्रह उनके विरोध पर हो जाएं तो मुकाबले पर के दुश्मन ग्रहों की शक्ति समाप्त करने के लिए पापी ग्रहों की ताकत तायदाद में ज्यादा होते जाएं पापी की पाप करने या करने की हिम्मत ओर भी बढ़ती जाएगी और

(3) जब किसी पापी ग्रह के अकेला के विरोध पर का दुश्मन ग्रह किसी ऐसे ग्रह को साथ लाकर मुकाबला पर हो जाए जो कि पापी ग्रह का दोस्त हो तो ऐसी हालत में पापी ग्रह अपने बुरे काम की हिम्मत को आम हालत की बजाए न सिर्फ दो गुणा करेंगे बल्कि आम हालत की निस्बत निहायत ही बुरा फल पैदा कर देंगे । कुण्डली वाले का खूब जोर से नाश करेंगे और दोस्त ग्रह को तो बुरी तरह से मारेंगे ।

(4) पापी ग्रह जब ऐसे में शुरू हो जाए यानि शनि 60 साल, राहू 42 साल, केतू 48 साल नेक प्रभाव होगा । इन ग्रहों के अनुसार सालों में हर एक का जमाना नम्बर 9 में लिखा है ।

(5) पापी ग्रह (कोई दो या तीनों ही) जब अपने बराबर के या दोस्त ग्रहों के साँझा हो जाएं तो भी अपने प्रभाव के सम्बंध पर हवाए बद के अचानक हमलों से औलाद की मौतें होंगी ।

(6) पापी ग्रहों से कोई एक जब अपने दोस्त पापी ग्रह ही से मिले तो निहायत नेक फल देगा। मसला शनि शेष नाग इच्छाधारी मददगार सांप होगा ।

(7) पापी ग्रहों का फल जब मन्दा हो बृहस्पति भी मन्दी हैसियत का गुरू होगा और उनके सम्बंध से इसके प्रभाव के सामने दीवारे खड़ी गिनी जाएंगी । राहू केतू मय शनि मुश्तरका या चीजों के इकट्ठे सांस (जानदार चीजों पर) के काम

करने का मैदान खाना नं0 8 है जिसे बनावटी शुक्र का मैदान बने मान लेते हैं यानि राहू केतू साँझा, जो बनावटी शुक्र है, के इकट्ठा काम करने की जगह या बैठक खाना नं0 2 है या दूसरे शब्दों में राहू केतू में से जो भी कोई खाना नं0 8 में होगा उसके साथ शनि भी साँझा बैठा गिनेंगे चाहे शनि टेवे में कहीं ही बैठा हो, वैसा ही किस्मत का फैसला होगा जैसा कि शनि का फल जन्म कुण्डली में बैठा होने के घर के हिसाब से हो। अगर शनि का असर राहू केतू के ताल्लुक से (अपने दाएं बाएं) होने के हिसाब से नेक साबुत हो तो सब बिगाड़ी बना देगा। अगर मन्दा हो तो बनी बनाए बिकवा देगा। नेक हुआ तो मकानात बनेंगे, मन्दा हुआ तो बने बनाए बिकवा देगा। नेक हुआ तो मकानात या गिरवा देगा यानि कि वो राहू केतु के साथ ही नं0 8 में या किसी और घर में अकेला या राहू केतू में से किसी एक के साथ ही बैठा हो इन्सानी जिस्म में तालू खाना नं0 8 बगैर ग्रहों के होगा जिसके दांई तरफ राहू बांई तरफ केतू मध्य में शनि गिना है चूंकि गृहस्थी ताल्लुक में राहू केतू के पाप का कुत्ता की सेवा के लिए (या शनि के बचाव के लिए) अपनी रोटी के तीन टुकड़े त्रिलोकी में आराम के वास्ते गऊँ ग्रास के नाम पर अलग रखे जो पापियों को नेक कर देता है।

राहू केतू

राहू केतू दीवारे बना कर सिर्फ रास्ता रोक सकते और यह दीवारे हमेशा चलने वाली हैं इसलिये इनके दूर होते ही उन ग्रहों का प्रभाव ही उम्दा होगा जो हो सकता है लेकिन जब यह हाथी व कुत्ता घोड़े के साथी ही एक मकान में बंधे हो (खाना नं0 6 में जब केतु था तो अपने से सातवें या खाना नं0 12 में राहू था) तो तबेला मवेशियां होगा जो बाकी सात या राहू केतू (साँझा शुक्र नकली) का नतीजा, शुक्र गृहस्थ का खाना नं0 7 (कुण्डली का) है शुक्र के साथ ही बुध को भी माना है ताकि कुत्ते के टुकडे न हो जाएं और केतू इस इल्म में लड़का भी माना है इसलिए ही खाना नं0 7 शुक्र बुध साँझा होने पर शुभ और शुक्र बुध साँझा होने से मशनोई सूर्य होगा।

राहू केतू साँझाः-राहू केतू साँझा हवाई तालों (बेजान चीज पर)के कारोबार करने के मैदान खाना नं0 2 को नकली शुक्र मानते हैं राहू केतू केवल दोनों के लिए खाना नं0 2 अंगूठे की निचली पोरी पर उनका बैठक खाना है और शनि के साथ काम करने का मैदान या खाना नं0 8 है राहू केतू साँझा में से जो कुण्डली के पहले घरों में होगा वो अपना फल दूसरे में मिला देगा यानि दृष्टि के समय बाद के घरों में होने वाले का प्रभाव नेक होगा। पहले घर वाले के नेक प्रभाव होने की शर्त खाना नम्बर के हिसाब से होगी। अगर दृष्टि का संबंध न हो यानि खाना नं0 5,11,2 में राहू या केतू में से जो भी कोई होगा इसका बुरा फल होगा और दूसरे पर कोई प्रभाव न देगा सूर्य शनि साँझा नीच राहू नकली शुक्र

मंगल शनि साँझा ऊँच राहू सूर्य बुध साँझा नेक केतू शुक्र शनि साँझा ऊँच केतू चन्द्र शनि साँझा नीच केतू	जिसमें राहू के झगड़े फँसाद और केतू के ऐसा व भरत शमिल हो	संसारिक सुख व बाज अजा औलाद

अपनी-अपनी निश्चित राशि या पक्के घर से बाहर जब दोनों साँझा तो दोनों का फल मन्दा होगा। राहू घोड़ी की तरह इन्सान की किस्मत के लिए सब ग्रहों को चलाने वाला है लेकिन राहू केतू को वृहस्पति चलाएगा जो बुध के दायारा में पकड़े हुए हैं। शनि का हैडक्वार्टर शनि के साथ या तीनों का बैठक खाना नं0 8 माना गया जिसमें अगर वृहस्पति या सूर्य या चन्द्र आ बैठे तो पापियों के पाप का घर या मौत समान घर का दरवाजा बुरा समझा जाएगा या ऐसी हालत में खाना नं0 8 मारक स्थान न होगा। हर एक पोरी की जड़ पर चन्द्र का प्रभाव केवल उम्र के एक ही हिस्से में जिक्र किया है। हर पोरी के लिए उम्र के बाकी दो हिस्से के ऊपर लिखे हुए हाल के लिए सूर्य का संबंध देख कर फैसला करे।

(1) सफेद कागज (बुध) पर फटकड़ी (बुध) से लिखा हुआ चन्द्र की रोशनी या पानी में नजर न पड़ा लेकिन जब सूर्य का साथ या आग का संबंध हुआ तो वही गुमनाम हर सफेदी से अपने-आप काला हो गए। जैसा हो वैसा ही इसी तरह राहू-केतू (नकली शुक्र गृहस्थ में) बुध के आकार में घूम रहे हैं और सूर्य चन्द्र के रास्ते में अपने-आप पैदा हो जाते हैं।

(2) यह दोनों ग्रह हमेशा ही बुध के खाली ढांचे में पकड़े रहते हैं यानि जैसा बुध हो और जहां वो हो यह भी वैसे ही और वहां भी जरुर होंगे और सूर्य या चन्द्र की रोशनी या गर्मी सर्दी से अपने-आप प्रकट हो जाएंगा **या अगर पता लेना हो कि राहू कैसा है तो चन्द्र का उपाय करें और केतू के लिए सूर्य का उपाय करें।** अपने-आप ही इन दोनों का यदि बाप, पकड़ा जाएगा। **हथेली के टुकडे संख्या में सात बुर्जों के नाम से गिने गए है-वृहस्पति सूर्य, चन्द्र शुक्र मंगल दोनों बुध शनि इनके अलावा दो और है एकता को तो राहू इस की अन्दरुनी तह में चलने वाली लहर माना गया है** दूसरे को केतू इसे बराइज्म के बहरुनी तह पर दौड़ती हुई और पहली लहर के हमेशा विरोधिता और शत्रुता पर रहने वाली जहरीली हवा को कहा है। राहू की आन्तरिक लहर आग वाले पहाड़ों के अतिरिक्त या पिघली हुई चीज की तरह भूचाल पैदा करती है। केतू की बाहरी लहर दरिया और समुन्द्र में तूफान लाती है। आग या आतशी लहर का मादा पानी के इलाका में जाकर रुक जाता है, मगर तूफानी हवा की लहर पानी इधर उधर करने के अलावा सारे सांस लेने वालों पर भी बुरा प्रभाव पैदा करती है राहू से दिल की दुश्मनी रखना। केतू से पांव चक्र । इन दोनों का न किसी ने कोई पर्वत या घर निश्चित किया है और न ही इनका कोई दरिया या रेखा माना है। किसी ने इनको सिर और धड़ का साया कहा, किसी ने भूचाल का मादा और तूफान की

नींव गिना किसी ने नेकी बदी, दांए-बांए रहने और अहवाल नामा लिखने वाला फरिस्ते बताया किसी ने धूप साया, रात दिन से याद किया आ किसी ने मस्त हाथी और शरारती सूअर, कुत्ता, आम तौर पर सबने इन दोनों को पापी ग्रह या पाप की तरफ ले जाने वाली शक्ति जरुर माना है केतू क्या था केतू का कोई घर नहीं है, पर्वत निश्चित नहीं। दोनों ग्रह खराब हैं इनका काम खराबी की तरफ ले जाएगा। (राहू मस्त हाथी आंखों से अन्धा) हाथी की आंखें हमेशा छोटी-छोटी और नीचे को ही देखती हैं। और आदमी को नसफ ही समझता है मगर जमीन से दव्वनी उठा लाता है यानि राहू नीचे को ही ध्यान से जाएगा या वो ध्यान या दिमाग को नीचे की तरफ ही ले जाएगा या बुरे ख्याल करेगा। अब अगर केतू भी साथ मिला यानि एक ऐसा आदमी जिसमें राहू केतू दोनों इकटठे ही हों तो कोई भी वही बाकी न रह जाएगी। केतू धड़ की सारी बुरी हरकतों का मालिक है कुत्ता व सुअर है और रंग बिरंगा जिसमें लाल रंग न हो यानि मंगल की नेकी की लाल आत्मा न हो बाकी रंग चाहे कोई हो यानि इज्जत और आदर न होगा। विषय :- विकास सूअर का कामदेव 12 (सूरनी) विंगन 8 (कुतिया) ठींगन 4 (गांए) चक, दो (बकरी) तोरियाँ या सुअर के बच्चे सबसे ज्यादा और यह जानवर खुद इसका नर भी कामदेव में ज्यादा होता है यानि दो सूअर एक सूअरी के आपसी मिलापी हो जाते हैं और दीगर शरीरिक शक्तियाँ जो बदी की तरफ ले जाती है दर्जा उत्तम होगा। दोनों का साँझा प्रभाव हर तरह से खराब होगा। आम तौर पर राहू केतू दोनों के लिए कहा जाता है कि **गल पई सलाहें वो भी गई - रन पईराहें वो भी गई** यानि जो बात लोगों के सलाह मशवरा में पड़ गई वो भी चलती बनी यानि पता नहीं कि नजीता दें और जो और रास्ते आदि में एक से दूसरे के यहाँ आने जाने लगी इसका भी कोई भरोसा नहीं। केतू राहू को शनि के सांप की दुम और सिर भी माना गया है यानि अगर राहू वक्त की गिनती के हिसाब से पहले घर हो तो ज्योतिष विद्या में केतू उस घर से सातवें होगा यानि दोनों के पांच घर और होंगे या केतू को बिना गिने ही सातवें घर लिख लेगें मगर सामुद्रिक में जिस जगह निशान केतू हो वहाँ ही केतू को लिखेंगे। सातवें घर होने की कोई शर्त जरुरी न होगी। इस इल्म में यह दोनों एक ही घर में इक्टठे भी हो जाते हैं यह गिना भी दिया ही जरुरी है जैसा कि दूसरे ग्रह सूर्य के साथ या लाल रंग से केतू का नाश माना है लेकिन अगर रंग बिरंग चीजे हो और लाल ररग का साथ हो तो इस समय केतू तो बेशक न होगा मगर रंग बिरंग होने की वजह से खाली असर ही हो जाएगा यानि बुध का तासीर पैदा होगी और अरसा भी 24 साल से शुरु होगा। निशानी गाए या कलम पर होगी। केतू का निशान न होने से केतू अपने घर का होगा।

जो खाना नं0 6 है। जो खाना नं0 6 है। राहू सिर में लहर का मालिक है तो केतू पांव तले होगा या प्रभाव "सिर बड़े के मुकाबला पर खड़ा हुआ सरदारा (राहू

ऊँच)पैर बड़े गंवारा (केतू नीच)'' मगर केतू जब राहू के मुकाबला पर खड़ा हुआ तो केतू के कुत्ते न राहू के हाथी को ऐसी मार मारी कि आज तक हाथी सीधे पांव न चल सका। कजरो कहलाया और कभी निचला न बैठ सका और हिलता ही रहा। इसके पांव ऐसे उड़े कि टांगे केवल मोटे थम ही नजर आने लगे हर एक पर्वत की पक्की जगह हथेली की हर एक गांठ पर हमेशा के लिए उस जगह पक्की और कायम रहने वाली मानी गई है सात पर्वतों या ग्रहों को तो पक्के तौर पर हाथ की हथेली पर जगह दी गई। केतू इस धड़ का साया है जो वगैर सिर के साथ हो और राहू उस सिर का साया है जो धड़ के वैगर अकेला सिर हो। राहू के आग वाले मांदा का पैदा किया हुआ भूचाल केवल सिर के ख्यालात के संबंध रखता है और केतू का प्रभाव पांव की नकल व हरकत हुआ करती है सूर्य दिन का मालिक और चन्द्र को रोशनी देने वाला है या सूर्य आग और चन्द्र पानी या सूर्य गुस्सा गर्मी और चन्द्र शान्ति और ठण्डक देता है इसलिए मानते हैं कि जब राहू आग से पिघले हुए मादे के लहर सूर्य के पर्वत पर या आग के पहाड़ में आती है तो हद से ज्यादा पिघलने के सबब से धुआं धार जमाना पैदप कर देती है और सूर्य के सामने अन्धेरा ही अन्धेरा हो जाता है यह सूर्य ग्रहण का नजारा है मगर वो मादा चन्द्र की तरफ बढ़ता है तो पानी की ठण्डक से जम कर ठहर जाता है (जिस जगह दरिया पानी जावे, भूचाल की लहर रुक जाया करती है) और चन्द्र या पानी के आगे दीवार मांनिद बन जाता है और इसके प्रभाव केवल मध्यम करता है प्रभाव जरुर बुरा है मगर चन्द्र को कोई नुकसान नहीं दे सकता। इसी तरह से केतू सूर्य की आग को तो बुझानहीं सकता केवल इधर उधर चिंगारियां कर देगा। मगर जब चन्द्र के पर्वत या समुन्द्र और पानी पर जाता है तो न केवल पानी तह को ऊपर नीचे और तूफान वगैरह पैदा करता है, बल्कि पानी या चन्द्र के समुन्द्र के अपने दोस्त शुक्र की मिट्टी से बर्बाद कर देता है पानी हवा को क्या करे इसमें हर तरह की जरुर पैदा कर देती है यह चन्द्र ग्रहण का समय होगा।

ग्रहण महादश से शुभ संसारिक विचार में ग्रहण का जमाना होता है। सामुद्रिक में ग्रहण सारे ही ग्रहों के लिए निश्चित है जिसका मुफसिल हाल महादशा में दर्ज है।

सूर्य चन्द्र ग्रहणः–सूर्य को राहू ग्रहण लगाता है और चन्द्र को केतू यानि जब सूर्य राहू इकटठे हों 9,12 तो सूर्य ग्रहण।

जब चन्द्र केतू इकटठे हों नं0 6 चन्द्र ग्रहण।

राहू या सूर्य ग्रहण का बुरे जमाना दो साला केतू या चन्द्र ग्रहण का बुरा जमान। 1/3 साल कुल तीन साल होगा। ऐसे समय में शुक्र बुध साँझा या अकेले-अकेले की चीजों से दान कल्याण माना गया है। राहू केतू आपस में बराबर भी हैं, दोस्त भी हैं और एक दूसरे के सातवें रहने के असूल पर दूसरे का प्रभाव उल्टाने भी हैं वो कब-कबः-

सूर्य या चन्द्र के साथ राहू हो

खाना नं0	केतू से	सूर्य से	चन्द्र से
1	दोस्त	नेक	नेक
2	बराबर	आधा	नेक
3	उँच	नेक	नेक
4	मित्र	नेक	आधा
5	बराबर	नेक	नेक
6	उँच	नेक	नेक
7	दोस्त	आधा	प्रबल
8	बराबर	नेक	उम्र नेक
9	नीच	ग्रहण	ग्रहण
10	मित्र	मध्यम	आधा
11	बराबर	नेक	आधा
12	नीच	ग्रहण	आधा

जो सूर्य या चन्द के साथ केतू होगा

खाना नं0	राहू से	सूर्य से	चन्द्र से
7	दोस्त	मध्यम	प्रबल
8	बराबर	आधा	उम्र नेक सुख आधा
9	उँच	नेक	नेक
10	मित्र	मध्यम	आधा
11	बराबर	आधा	आधा
12	उँच	नेक	मध्यम
1	मित्र	नेक	नेक
2	बराबर	आधा	नेक
3	नीच	आधा	आधा
5	मित्र	नेक	आधा
5	बराबर	नेक	नेक
5	नीच	आधा	ग्रहण

राहू के ग्रहण की अवधि दो दौरा। दो साल केतू की एक दौरा। एक साल साँझा ग्रहण दोनों की तीन साल(45 सल उम्र तक होगी।)

राहू केतू खाना नं0 4 में हो या चन्द्र के साथ किसी भी घर में हो तो ऐसा टेवा धर्मी टेवा होगा, जिसमें पापी ग्रहों का बुरा प्रभाव न होगा बल्कि सारे ही ग्रह धर्मी होंगे और सबसे बड़ा काला निशान (''लसन'' होगा जो ग्रह चाल में ग्रहण होगा। हथेली के समय में सेहत उम्र और सिर रेखा एक त्रिकोन बनाती है अगर यह त्रिकोन कायम हो तो सेहत रेखा और उम्र रेखा के मिलने के उपर का नाम यह सूर्य शनि साँझा मजबूत होगा (सिर रेखा और सेहत रेखा के मिलने के मुकाम का जाये या) सूर्य बुध उत्तम स्वास्थ्य उम्र और सिर रेखा शनि बुध दूसरों से हमदर्दी या माता-पिता की आपसी या माता-पिता का साया आतफत या सुख सागर प्रकट करता है। सेहत रेखा बुध से चलकर शुक्र की जड़ में समाप्त हो तो शुक्र बुध खाना नं0 7 धन दौलत खूब आए। व्यापार से लाभ होगा। उम्र और दिल व सिर रेखा के सदमों से बचाएगी। अगर ग्रहण होगा तो केवल चमक शान शौकत इज्जत व मान और दस्ती कमाई में नुकसान होगा। इस ग्रहण के समय या सूर्य पर राहू के जमाना में जिस तरह सेहत रेखा शुक्र के पर्वत की तरफ होगी। उसी तरह ही सहायक मिलेगी और अपन जाती कमाई के संबंध में खराबी से बचाव होगा।

अगर सूर्य ग्रहण हो और सेहत रेखा कायम हो तो सूर्य 22 साल अपने और 17 साल बुध या 39 साल में और 39 साल चमक देगा और इसी तरह चन्द्र के समय जब केतू से चन्द्र ग्रहण हो तो बुध की श्रेष्ठ रेखा 24 साल चन्द्र की समय चन्द्र ग्रहण के बाद आखिरी हिस्सा में 34 साल यानि 34 साल की उम्र से 58 साल तक अलग प्रभाव उत्तम देगा। दोनों ग्रहों के समय की अवधि राहू केतू के दर्जा प्रभाव पर थोड़ा या बहुत या सारा ग्रहण अलग-अलग होगा। राहू से सूर्य ग्रहण 22 साल तक और केतू से चन्द्र ग्रहण 24 साल तक हो सकता है जो सूर्य

और चन्द्र का अपनी-अपनी अवधि है। मगर राहू केतू दोनों अगर खराब प्रभाव करना शुरु कर दें जिसमें चन्द्र या सूर्य का कोई संबंध न हो तो राहू 42 साल तक और केतू 48 साल तक मार कर सकता है यानि इन सालों की उम्र तक हो सकता है और इतने ही साल ज्यादा से ज्यादा हद तक रह सकता है यानि पूरी शान्ति 48 साल के बाद ही होगी। मगर सेहत रेखा और सिर की श्रेष्ठ रेखा दोनों हालतों में अपना-अपना पूरा प्रभाव देकर सहायक करेगी। सूर्य ग्रहण वाले को सूर्य सितारा सहायक होता है। जिस तरह राहू केतू आपस में सहायक है इसी तरह ही चन्द्र सूर्य आपस में दोस्त हैं सिर की श्रेष्ठ रेखा चन्द्र ग्रहण और चन्द्र नीच के बुरे प्रभाव से बचाएगी। जिस तरह सूर्य ग्रहण के समय सूर्य की तरक्की रेखा से फिर वही सूर्य चमका था इसी तरह ही सिर की श्रेष्ठ रेखा पर चन्द्र की चमक बहाल करा देगी। यह दोनों रेखाएं बुध की रेखाएं हैं। इसलिए 34 साल शुरु होकर 34 साल ही प्रभाव देती है। सूर्य के साथ दोस्त है और इसलिए बुध चुप रहता है और अपने समय का आधा कोई अलग प्रभाव नहीं देता यानि17 साल चुपचाप फिर अपना अलग प्रभाव देना शुरु कर देगा बुध के साथ चन्द्र नेक फल न देगा। चन्द्र ग्रहण केतू से हुआ जो बुध के बिल्कुल बराबर का है जब चन्द्र केतू से दब गया जो 48 साल तक प्रभाव करेगा, मगर बुध जो स्वयं चन्द्र का दोस्त है(चन्द्र का कोई दुश्मन नहीं सिवाए केतू के और राहू के) चन्द्र स्वयं ही दुश्मनी करता है दोनों ग्रह अपना-अपना पूरा-पूरा समय और पूरा-पूरा प्रभाव करते हैं।

राहू केतू का आपसी संबंध:-

राहू हो खाना नम्बर	केतू हो खाना नम्बर	तो संबंध होगा
1	7	पैदाइश के समय सख्त आंधी, बारिश, नाना नानी बवक्त पैदाइश मौजूद, 40 साल उम्र तक दोनों का फल खराब वास्ते स्वयं सम्बन्धित खाना नम्बर एक।
2	8	25 साल उम्र तक केतू का फल उम्दा 26 साल शुरु से दोनों ग्रहों का बुरा फल होगा।
3	9	दोनों का उत्तम और ऊँच राशि का
4	10	24 व 48 साल उम्र तक चन्द्र का फल मध्यम बाद अजां 45 से दोनों का उत्तम और ऊँच राशि का।
5	11	दोनों का दुश्मनाना और खराब।
6	12	दोनों का उत्तम और ऊँच राशि का।
7	1	पैदाइश नानके घर दोनों ग्रहों का फल रद्दी वास्ते स्वयं सम्बन्धित खाना नम्बर 7।
8	2	केतू का उत्तम राहू का खराब फल हो।
9	3	दोनों का खराब बाप और ससुराल के लिए भाई बन्धु दुखिया करे।
10	4	बाप के लिए उम्दा, माता के लिए खराब और स्वयं अपनी सेहत भी खराब।
11	5	अपने लिए उत्तम और औलाद पर बुरा प्रभाव
12	6	दोनों का खराब और नीचे हालत का, तबेला मवेशियां सबूत होगा।

ऊपर दिया प्रभाव उस समय होगा जब राहू या केतू राशि नम्बर के घरों के ग्रह बोलने के हिसाब से जारी हो जावें तो तख्त की मालकियत के जमाना में राहू केतू का उन ग्रहों से टकराव या दोस्ती होगी जो उनकी तख्त की मालकियात के जमाना में राशि नम्बर से हिसाब से बोलेंगे(राहू का प्रभाव पोसीदा और केतू का प्रभाव प्रकट हुआ करता है उपन लिखित बाला खाना 1,7,4,10 बन्द मुट्ठी के खाने हैं घरों में राहू का केतू के राशि फल में सिर्फ उन घरों के ऊँच ग्रह ही सहायता दे सकते हैं।

राहू केतू की दूसरे ग्रहों से नाखनबाजी:-

खाना नं0 11 राहू केतू का एक अकेला दो ग्यारह का होगा यानि जब एक ही का प्रभाव खाना नं0 11 में आए तो एक अकेले की शक्ति या जब 3-9/8-11 में दोनों बैठे हों तो केवल एक का नं0 11 गुणा प्रभाव होगा (अच्छा या बुरा) दिल का भेद शनि की आंख की बीनाई ने प्रकट कर दिया। अभी इन्सान ने आंख दिखलाई भी न थी कि राहू केतू का पुण्य-पाप इन्सान के नाखुनों से प्रकट होने लगा। नौ ग्रहों ने 12 राशियों के चक्र को तो बच्चा पर तो नौ महीने में प्रभाव किया तो इन्सानी नाखुनों भी नौ महीने में ही मुकम्मल हुआ ।

नाखुन खराब हो जाने कट जाने या उड़ जाने पर ।

राहू का असर--हाथ के नाखूनों पर ।
दांए हाथ पर--राहू का आम अरसा मियाद 6 साल होगा ।
बांए हाथ पर-- राहू की महादशा 18 साल बुरी हालत या राहूकी कुल उम्र 42 साल अरसा नेक असर होगा।
केतु का असर--पांव के नाखून पर ।
दांए पांव पर--केतू की महादशा 7 साल बुरी हालत या केतु की कुल उम्र 48 साल का अरसा नेक असर होगा।
दोनों का मुश्तरका असर--45 साल नेक असर होगा ।

चूंकि राहू केतू एक दूसरे के सातवें होते हैं आपस में दोस्त भी हैं एक दूसरे की बनी बनाई बिगाड़ भी देते हैं (चाहे एक की नेक हो या बद दूसरा नेक को बद और बदी को नेक कर देगा) जिस जगह घर के ग्रह बनते हैं वहां ही ऊँच भी हो जाता है। इस असूल पर जगह राहू हाथ के दांए हिस्सा पर प्रभाव दे रहा हो तो केतू पांव के बांए हिस्से पर असर दे रहा होगा और हर एक अंगूली मय अंगूठा के नाखून से इनका बाकी ग्रहों से सम्बंध व्यक्त करेगा यानि राहू केतू का प्रभाव बाकी ग्रहों से व्यक्त होगा ।

अंगूठे से शुक्र का:-(चाहे अंगूठा हाथ का हो चाहे पांव का) यह जगह राहू केतू साँझा या बनावटी शुक्र कुण्डली में खाना नं0 2 राहू केतू की साँझा बैठक है और सभी तरफ से बिगड़ी हुई या सबकी बिगड़ी को बनाने वाली चीज सब टला टलाया शुक्र होता है यानि अंगूठा इन दोनों ही ग्रहों का मैदान है जिसमें राहू केतू

का दोस्ताना शत्रुता अपनी मर्जी का होता है।

2 (तर्जनी से वृहस्पति का--कुण्डली का खाना नम्बर 9,12

3 (मध्यमा से शनि का--कुण्डली का खाना नम्बर 10,11

4 (अनामिका से सूर्य का--कुण्डली का खाना नम्बर 1,5

5 (कनिष्ठा से बुध का--कुण्डली का खाना नम्बर 6,7

6 (अंगुलियां मय अंगूठा और हथेली की अन्दरुनी तरफ का हिस्सा---चन्द्र का कुण्डली का खाना नम्बर 4

अंगूलियों मय अंगूठे जोड़ या गांठ या नाखुनों के खून का रंग--मंगल का हर दो मंगल (नेक व बद)--कुण्डली का खाना नं0 3,8

1 (जो नाखून बर्बाद या खराब हो जाए समझ लेंगे कि इस नाखून के सम्बंधित ग्रह पर राहू या केतू का असर होने की तबदीली आ गई जो कुण्डली के अनुसार अच्छी या बुरी गिनी जाएगी मगर तबदीली हालात जरुर होगी।

2 (खाना नं0 2 अंगुठा शुक्र बना मगर सिर्फ राहू केतू साँझा या बनावटी शुक्र का छलावा होगा।

हाथ का अंगूठा :-अंगूठे के हाथ को घुमाने वाली कीली माना है। यह भी विश्वास है कि जमीन एक कीली पर घूमती है कई कहते हैं कि सारी जमीन के बोझ मां नादिया बैल (अंगूठे शुक्र का घर और शुक्र को बैल माना है) ने अपने सीगों पर उठाया हुआ है, वैसे ही अंगूठे पर तमाम हाथ का बोझ माना है। अंगूठे की कीली पर ही हाथ घूमता है अंगूठे की ताकत दिल को चलाती है चलता हुआ दिल इन्सान के जिन्दा होने की दलील है। जिस जिन्दगी से यह तमाम तमाशा रात दिन होता है अंगूठे की कीली की तरह घूमाव दे देने की शक्ति, इन्सान की सभी शक्तयों को अपनी-अपनी सीमा में कर देती है और उदासी का अन्धेरा हमेशा कायम नहीं रहने पाता। कहते हैं कि एक दिन तर्जनी अंगूली ने हकूमत के नशे में कहा कि मेरा दिल चाहता है कि खाओ-खाओ--यानि की कुछ खाने को चाहता है। आदत से मजूबर की तबीयत की वाले अपना क्या सब दूसरों का माल खाना जाना ही पसन्द किया करते हैं या वो हर दम अपने ही खाने खूलने या पीने की ख्वाइश का सबसे ज्यादा ख्याल रखते हैं या अपनी तबीयत से मजूबर हर दम खाओ-खाओ ही करते रहते हैं और दूसरों पर अपनी खा जाने की ताकत या आदत का भय या डर डालते रहते हैं मध्यमा ने जबाब दिया कि कहां से खाओ (यह नहीं बोली कि कहां से खाओगे) यानि यह अंगूली सन्यास या वैराग्य की है हरदम यही लहर पैदा करती है कि कहां से खाना है किसको खाना है यह सब खुदा के बन्दे हैं किस का खाओ और क्या खाओ, क्यों खाओ और क्यों न खाओ कहां से खाओ। सैकड़ों तरह की सोच विचार इस दुनिया और परलोक का ध्यान आदि उदासी और मायूसी की हवा से सब विचार मुर्दा कर देती है। राशियों और

ग्रहों के हिसाब से भी मौत बीमारी और शनि का यही अंगुली घर है (तर्जनी से चल कर पांचवें नम्बर पर चार तत्व आग,पानी, मिट्टी व हवा का पुतला अपनी चारों ताकतों से आगे बढ़ कर या तर्जनी से चल कर चार खाने छोड़ कर विषय-विकार या दरवाजे से आगे चलकर दस इन्द्रियां आदि लम्बा हिसाब किताब है, छोड़ कर चला) क्योंकि इस स्याह सूरत श्याम रंग दरम्यानी सब तरफ से मध्यमा अंगूली (चाहे तायदाद करो चाहे हाथ के दो टुकडे करो चाहे लोक परलोक के मध्य से कहो चाहे हाथ के दो सात दिनों का आखिरी दिन और नए सप्ताह के शुरु का पहला पहलू या दरम्यानी हालत या दिल की आन्तरिक शक्ति को बाहर द्वारा करने वाली ताकत या बाहर की सभी चीजों को देखकर बाहर से अन्दर जाकर बता आने वाली चीज या चेहरा की मध्य चीज आंख के मध्य घर की पुतली की नजर या अन्धी और फर्क करने वाले आंखों के मालिकों में हद बन्दी कुछ भी हो **आंख खुली तो दिन हुआ या जन्म लिया। आंख बन्द हुई अन्धेरा छाया। आंख पथराई मौत का एहसास हुआ। नजर गई अन्धेरा हुआ, मौत आई जहां या जहान से समाप्त हुआ शनि का आखिर यही कुछ देखा** और दस्त की दस्ती, दरम्यान की दरम्यानी वही मध्यमा सुन और आसन या सन्यास पले रहा, न कुछ खाया न हम को खिलाया। तर्जनी मध्यमा से बात करके उदास हुई और मध्यमा भी सन्यासी या उदासी होकर सवाली हुई। दर बदर भिक्षा मांगने लगी। रात को अन्धेरा खत्म हुआ शनि टला और दिन का जमाना आया सूर्य चमका सबसे हौसला हुआ और अनामिका से सलाह पूछी, इसने जवाब दिया कि इतनी उदासी क्यों और दर बदर भटकने से क्या मतलब, हम खुद काम कर सकते हैं, हमारे हाथ पांव चलते हैं जिस्म हमारे पास है वृहस्पति की हवा शनि की आग का साथ है, अगर मिट्टी नहीं बनी तो पानी हम पहले बना लेते हैं अगर पास नहीं तो फिर दे देंगे। ''लाव उधारा'' मगर हौसला न हारो। अब पहली दो बहनों को कुछ हौसला हुआ और सोचने लगीं मगर सोचने की या बोल कर मांगने की ताकत न हुई कि किस जवान से और किस से उधारा लाए। इतने में सबसे छोटी कनिष्का भी आ गई वो खूब सोचती और बोलती है, कहने लगी कि कुछ बुद्धि पकड़ों, उधार लाना तो आसान है मगर देना भारा, मैं फौरन जवान की ताकत और सरस्वती की मदद से जो कहलाने के लिए सबसे बोल सकती हो मगर मुझे शक है कि मैं छोटी सी हूं मेरी कोई हस्ती नहीं (बुध की कोई अलग काम करने वाली शक्ति नहीं मानी दूसरों के साथ मिल कर ताकत पकड़ लेते हैं, गोल खाली खुलाब माने हैं। गोल निशान शरीर पर गोल सिर का ढांचा और जबान मानी है जो आदि दिमाग और रुह या सूर्य, कुछ नहीं बनता यानि बुध के दायरा में जब सूर्य की शक्ति हो जाए या बुध और सूर्य मिल जावें हर तरफ उत्तम फल और अमीरी होगी। चाहे औरत या शादी रेखा चाहे सिर से श्रेष्ठ या कोई भी और हालत हो खाने

की होश पैदा हुई। कमा कर उधार वापिस करने का हौसला हुआ मगर सिर पर बोझ रखे बैठे रहने की ताकतन पैदा हुई चारों भाई वृहस्पति, शनि, सूर्य बुध सोच विचार के चक्र (बुध के दायरा में" चला रहे हैं आखिर अंगूठा जो बिल्कुल दूर बैठा था सबको हौसला देता है कि जब तक में जिन्दा हूं जो जी चाहता है खाओं अगर मैं सबका बाप नहीं तो चाचा तो जरुर हूं मुझे ही सब की शर्म है परवाह नहीं जो चाहो खाओ। मेरा यहीं काम है कि खाना खिलाना और बस (जब शुक्र नं0 12 में ऊँच हो) अंगूठे का काम सबको हौसला देना है पक्के तौर पर ख्वाह सबके बोझ से कीली ही होना पड़े। यही वजह है कि अंगूठे के पर्वत शुक्र का दुनिया से कोई सम्बंध नहीं सिर्फ ऐश करना व करवाना दूसरों की पालना करना और इनके लिए भण्डारे कायम करना वृहस्पति से मिलता बहुत बड़ा वृहस्पति शुक्र का फल देने वाला हुआ। बुध से मिला तो शादी औलाद ही सबके सब इसके घर रखने लगा। शुक्र ने बुध की बुद्धि या अकल हुई शनि से मिला तो अपने दोस्त की आंखों से दुनिया को बचाने लगा और सेहत उत्तम हुई। सूर्य की दोस्त से चाहे स्वयं बरबाद हुआ मगर उसे दो बाला किया खुद मंतवारी ली। बेशक सूर्य ने दुश्मनी न छोड़ी मगर जब दांव लगा (सूर्य घर से बाहर हुआ या सूर्य रेखा न हुई) तो इसके ऐसा करके छोड़ा जब सबके इसके सम्बंध हुए तो मौत के भूल कर सबने औरत को याद किया। शुक्र की कानी आंख की चमक की लहर के इश्क से न गुरु वृहस्पति बच्चा जो पढ़ा रहा था और न बुध जो बोल कर सब को पढ़ा रहा था और न बुध जो बोल कर सबको सुना रहा था न शनि बोला जो सबको खा रहा और देखा देख कर खा रहा था सूर्य का तो कुछ भी न रहा वो तो शुक्र की तलाश में जिन्न मुरीदी हो बैठा और सुबह से शाम, शाम से सुबह इसी शुक्र की मिट्टी पर शुक्र की तलाश करते हुए आज तक इसी चक्र में फिर रहा है। देवताओं की दुर्दशा करने वाली ताकत को आखिर ऊपर से नीचे फैंका गया तो वो अंगूठे की जड़ में शुक्र का पर्वत अंगूठे की हमसाया हुई या कीली के सिर पर आ बैठी यानि अंगूठे ने सब मिटटी का बोझ या सारी दुनिया का बोझ बतौर कीली मन्जूर किया और हौसला न छोड़ा यह है अंगूठे के हौसला वाले आदमी का हाल। इसका हौसला दिली और पक्का होगा। किसी को नुकसान पहुंचने का हौसला हरगिज नहीं होगा। किसी की सहायता का हौसला होगा। मुहब्बत से दलील देगा और दलील के सहारे हौसला कायम करेगा। मगर शनि की उदासी का साथ न होगा।

अंगूठे के हिस्से :- जिस तरह शुक्र के पर्वत को दुनियावी किस्मत से कोई सम्बंध नहीं सिरफ इश्क व मुहब्बत की ही एक आंख कहलाता है इसी तरह ही अंगूठे या इसकी ताकत को बाकी अंगुलियों से कोई मतलब नहीं इस का सम्बंध सिर्फ दिल से है यानि दिल है तो जहाज, दौलतमन्दी और अमीरी दिल से है न

कि माल व दौलत से। दुनिया में यह दिल का ही दरिया है जिसमें हजारों लहरें आती हैं और जाती हैं इन लहरों के आने या जाने की ताकत को अंगुठे की शक्ति माना है दिल की दरिया तो चन्द्र रेखा या दिल रेखा है मगर इसमें लहरों की शक्ति जो हैं वो अंगूठे की ताकत है शुक्र और चन्द्र आपस में दुश्मन है इसलिए दिल के दरिया में लहरों का आना जाना ही इन्सानी तबीयत में तूफानी पैदा कर देता है। दिल के दरिया में शुक्र या अंगूठे ने ऊँच लहर पैदा की तो ताल व तख्त की इच्छा हुई दूसरे समय यह लहर गिरी तो न चन्द्र का समुन्द्र बाकी है न दुनियावी विचार निशान वही शुक्र की रेत ही रह गई न तख्त की इच्छा (बद नसीबा) का भय इस ताकत के तीन हिस्से करार दिए हैं:-

अंगूठे की पोरियां:- (नाखून वाली पोरी:- केतू से सम्बंध

(ब) बचपन,फैलना, अंगूठे की नाखूनवाली

पोरी या हिस्सा को-दिली मर्जी की ताकत की जगह, मनमर्जी रुहानी ताकत।

मध्यम पोरी:- राहू जवानी सिकुड़न, दलील सोच विचार, की ताकत शरीर ताकत, दलील बाकी।

निचली पोरी:- शुक्र पक्का ग्रह बुढ़ापा टूट फूटकर रेत (बुध का पैदा हो जाना) इश्क मुहब्बत का भण्डार या खजाना माना है। इन्सानी नफसानी ताकत) यही असूल तमाम अंगुलियों की पोरियां का है। अंगूठा जिस कद्र लम्बा हो उसी कद्र ज्यादा शहबत पर काबू होगा। इन तीनों ही हिस्सों को उम्र या जिन्दगी के तीनों हिस्सों से मुतलका करते हैं यानि सबसे ऊपर का हिस्सा या नाखून वाला हिस्सा बचपन, मध्यम जवानी, सबसे निचला हिस्सा बुढ़ापा को व्यक्त करता है। अंगूठा या नाखून वाला हिस्सा जिस कद्र मोटा हो और जिस कद्र छोटा होता जाए उसी कद्र बख्शी हैवानी ताकत की मद मादा ज्यादा होता जाए या जिददी होता जाए या तंग हौसला हो जाए साथ ही वो व्यक्ति कम दौलत भी हो। नाखून वाला हिस्सा अगर हाथ की हथेली के बाहर की तरफ या हाथ की पीठ की तरफ झुके तो नर्म दिल और अगर उल्ट हो तो तबीयत उल्ट हो अंगूठे की जड़ की गांठ वाला हिस्सा जिस कद्र छोटा होता जाए उसी कद्र ज्यादा **जादू मंत्र की इच्छा** होगी और जिन्न मुरीदी होगा। अंगूठे का सिरा अगर आगे से बारीक होता जाए तो हौसला की ताकत कम होती जाएगी और अगर मोटा होता जाए तो हौसला मोटा होता जाएगा या महेनती और जिद पर अड़ जाने वाला होता जाएगा । दिमाग के खानों में राहू या केतू को अलग जगह नहीं मिली हथेली पर भी यह नहीं गिने थे और बाहर कलाई पर माने थे,कुण्डली में भी अलग-अलग जगह न जा सकते थे।

नाभि:-नाभि से ऊपर की तरफ का हिस्सा राहू की राजधानी और नाभि से नीचे पांव की तरफ का हिस्सा केतू की राजधानी माना गया है। दोनों पार्टियों मंगल की ''नाभि'' मंगल बद की जगह या मंगल का मुंह है। मंगल की दोनों राशियों

नम्बर 1,8 को मिलाने वाली कुण्डली की नाभि खाना नं04 स्थित है जो राशियों के हिसाब से और ग्रहों के पक्के घरों के लिहाज से सिर्फ चन्द्र को ही दे दिया गया है चन्द्र कभी ग्रह फल का नहीं माना गया। हमेशा ही राशि फल का होता है और खाना नं0 4 शनि की जाती असर के घर ,खाना नं010 का सेहत या मैदान गिना है जिसमें शनि का फैसला यानि कि वो (शनि कुण्डली में जैसा भी हो होगा। सबसे आखिरी फैसला यानि कि वो) शनि कुण्डली में वृहस्पति जिस हैसियत का हो वैसा ही खाना नं0 4 का आखिरी फैसला होगा। इस घर के चन्द्र का सम्बंध अलग जगह लिखा है। (यानि चन्द्र के खराब होने पर इसका अपना ही चन्द्र की दयालुता मेहरबानी की पूरी ताकत का होता है) कुण्डली में मौत के खाने नं0 8का भेद रास्ता चन्द्र की दैविक ताकत का चश्मा खाना नं0 4 या कुण्डली की नाभि का सम्बंध मौत से होने या करने वाले रास्ता मे राहू केतू का असर नहीं माना गया। राहू हफता का आखिर और केतू दोनों एक दूसरे से सातवें होंगे केतू के बाद ग्रहों का फिर दूसरा दौरा शुरु हो जाता है।

राहु–वृहस्पति

नुकसान 5 साल, पिता दुःखी 10–1 /2 साल,औलाद, 21 साल उम्र 90 साल, साबुत चने स्याह दोनों का शत्रुतापूर्ण और खराब फल होगा। दमा व तपेदिक भी हो सकता है। वृहस्पति बाप या बोबे को।

वृहस्पति पवन गिना तो राहू धुआं हो,
दोनों के चलने फिरने से आकाश बन गया।
वृहस्पति का प्रण है यह टेढ़ा कभी न होगा,
है गज ने कसम पाई सीध न वो चलेगा।
घर से चले थे एक से-अब बारह हो गया,
तकिया फकीर साधू का धुआंधार हो गया।
चले सुबह से दोनों थे तब शाम हो गया
गुरु लगा समाधि में सुन सान हो गया
धुआहट न साथ जागे-दोनों अपनी लय में हैं,
दुनिया के सब मरे साथी इन दोनों की शरण में हैं।
झगड़ा बढ़ा तबैल तो सूर्य भी आ गया,
चन्द्र बना है थोड़े तो बुध पहिए हो गया।
शुक्र बना जो मिट्टी था अब लक्ष्मी हुआ
मंगल ने शेरी छोड़ी थी अब चीता हो गया
लेटा पड़ा जो सांप था अब भैरव हो गया,
केतू के आते ही सब ख्वाब हो गया।
हाथी ने सिर टटोला तो टुकड़े है पाए दो,
केतू जो गुरु के नीचे था इसके भी रंग दो,

वृहस्पति ने आंखें खोली तो देखें जहान दो,
राजा फकीर होते भी किस्मत दो रंगी हो।

वृहस्पति राहू साँझा बनावटी बुध हो गया। दुनिया तोता (वृहस्पति दर्ज रंग जमा राहू नीला)--रंग खाली बुध का प्रभाव होगा जो खाली और फोकी इज्जत और इशारत देगा। राहू हाथी के सिर की लहर तो वृहस्पति उसकी परेशानी होगी। दोनों साँझा होने की वजह से हाथी के सिर दो तरबूजों की शकल में बंट गया, जैसे दोनों ग्रहों के सम्बंधित होने पर आमदन की नाली की दोरंगी किस्मत का प्रभाव होगा या जहां हवा न हो वृहस्पति बोल पड़ता है जिस जगह राहू हो वृहस्पति चुप होता है। फकीर की कुटिया में हाथी (राहू) फकीर को तंग करता है इसलिए वृहस्पति ने राहू को सम्भालने से इन्कार किया चुप हो गया जिस फकीर के पास हाथी होगा वो गद्दी नशीन साधू या एक दुनिया का वृहस्पति होगा। दोनों जहानों का मालिक न होगा। अगर कुण्डली में राहू पहले घरों में या पहले हो तो वृहस्पति दैविक शक्ति का भी मालिक होगा। दोनों साँझा या दोनों ही अलग-अलग मगर दोनों ही रद्दी हों (शत्रुओं से दबाए) तो बुध होगा और कुण्डली में बुध जाती स्वभाव किस्मत के प्रभाव का फैसला करेगा। जब तक सूर्य चन्द्र मंगल कायम और राहू ऊँच घर का हो वृहस्पति दोनों जहान का मालिक होगा। राहू जब वृहस्पति के घर या वृहस्पति के साथ हो तो नीच फल का होगा। वृहस्पति चुप होगा, मगर वृहस्पति खत्म ही न होगा। यानि राहू के ताल्लुक से वृहस्पति चुप हो जाता है मगर कायम अवश्य होता है। सोना (वृहस्पति) राहू के सम्बंध में पीतल होगा। वृहस्पति को अगर चन्द्र की सहायता मिलाए तो दुश्मनों को मार लेता है पीतल पर पानी लगे तो नीला रंग राहू अलग होने लगेगा। आसमान या राहू दो की बजाए एक ताकत का कर देगा। यानि वृहस्पति राहू के साथ आकाश के ऊपर हुआ तो दैविक ताकत का मालिक, अगर आकाश की नीचे दुनिया की तरफ हुआ तो गृहस्थी गुरु होगा। गर्जे कि राहू के साथ होने पर आकाश नीले रंग वाला वृहस्पति को सिर्फ एक तरफ का मालिक कर देगा दूसरे हिस्से के लिए वृहस्पति चुप होगा। वृहस्पति राहू साँझा कुण्डली के खाना नं0 1 से 6 में इकटठे बैठे हों तो सिर्फ दुनियावी गुरु होगा। धार्मिक शक्ति का मालिक न होगा। अगर केतू भी मन्दा हो (लड़का नालायक हो) **तो चन्द्र की उपासना या माता द्वारा चन्द्र कर उपाय सहायक होगा जो राहू (जौ अनाज) दूध से धोने के बाद दरिया में (चलते पानी में) डालने से सोने से राहू की स्याही को धो देगा** या केतू के रंग के नग की अंगूठी को शुक्र गाए के जूठे पानी से रोज धोने से साधू की समाधि खुलेगी, मगर समाधि खुलते ही **मंगल की चीजों का दान कल्याण होगा। नहीं तो** साधु उठ कर तकिया खाल छोड़ चला जाएगा और फिर वही धुआंधार जमाना होगा। मगर अब कड़वे कुंए की जगह सर्दियों की ठण्ड का धुआ होगा। मगर

सफेद दिन न होगा। **इसलिए मंगल की चीजों को हाजिर रखने का विचार जरुरी** होगा। वृहस्पति के सीधे खड़े खत वृहस्पति का राहू के साथ का सम्बंध व्यक्त करेगा। वृहस्पति के सीधे खत अंगुलियों की पोरियां पर आराम या मुफत और हरामकी रोजी से शुभ होगी यानि उत्तम तो व्यक्ति का काम से वास्त ही न हो अगर हो भी जाएं तो करे कराए कुछ न मुफत में अपने पेट का पालन कर लेवे मगर हथेली पर यह खत वाक्या हो तो सिर्फ एक ही पर्वत परः-

असर सीधे खत ||||| (वृहस्पति राहू का साथ)

कुण्डली का खानाः असर		खत की गिनती
1	शखी होगा	1
2	नेकी के काम बहुत करे, गरीबों का सहायक	2
12	अकलमन्द, हुनर और पेशा से ऐसा नफा न होगा	3
4	उत्तम चन्द्र के प्रभाव का पूरा लाभ हो	4
5	हाकिम या सरदार हो	5
7	जवानी में खूब आराम हो	5
3	आंख की होशियारी ज्यादा हो	7
8	जिन्दगी खाना पूरी का नाम हो	8 या अधिक

वृहस्पति के अंगुलियों पर के तमाम निशानों के लिए दोनों हाथों को इकटठा गिन कर गिनती लेंगे।

राहु-वृहस्पति खाना नं0 1 में:-अंगुली पर सीधे खत गिनती में अनेक हो तो व शखी हो ।

राहु-वृहस्पति खाना नं0 2 में :- ऐसा व्यक्ति गरीबों का सहायक और नेकी के काम बहुत करेगा। अब वृहस्पति चुप न होगा बल्कि राहू चुप होगा और गुरु का उपदेश सुनेगा। अंगुठे पर सीधे खत ||||| वृहस्पति के खत पड़े हों तो भी निहायत नेक असर देंगे। अंगूठे के निचले हिस्सा पर पड़ी खत नर औलाद जिनमें से दो शाखी लकीर लड़कियों आदि शुभ होती है। दाएं अंगूठे पर यानि खाना नं0 2 में यही खत मर्द की तरफ से और बांए अंगूठे पर यानि खाना नं0 8 में औरत की तरफ से औलाद जाहिर करेंगे अब बुध जितने घर दूर होगा इतनी लड़कियां होंगी बाकी लड़के।

राहु-वृहस्पति खाना नं0 3 में:- राहू की पूरी उम्र के बाद वृहस्पति राहू दोनों का खाना नं0 3 का प्रभाव जाहिर होगा **जिसके लिए केतू का उपाय या केतू का पहरा सहायक है जैसा कि वृहस्पति** राहू में जिक्र है। सात खड़े खत आंख की होशियारी ज्यादा होगी। बहादुर होगा।

राहु-वृहस्पति खाना नं0 4 में:- पांच खड़े खत हाकिम या सरदार हो।

राहु-वृहस्पति खाना नं0 7 में:- पिता और ससुराल दोनों में से एक ही होगा अगर दोनों ही जिन्दा हो एक को एक दमा जरुर होगा। छह खड़े खत जवानी खूब आराम पाए।

राहु-वृहस्पति खाना नं 8:- आठ खत खड़े जिन्दगी खानापूरी का नाम हो।
राहु-वृहस्पति खाना नं0 12 में:- तीन खत, अक्लमन्द हुनर और पेशा दस्तकारी से ऐसा नफा न हो।

बाकी घर अपना-अपना असर देंगे।

सूर्य-राहू

औलाद मन्दी 21 साल, ऐसे कुण्डली में मंगल स्वयं राहू को दबाता होगा नहीं तो इसकी उम्र का हर घड़ी खतरा होगा। **सूर्य ग्रहण होगा, बवक्त सूर्य ग्रहण राहू की चीजों (सूर्य के दुश्मन ग्रहों) को दरिया (चलते पानी) में बहाना शुभ होगा।** राज-दरबार से खराबी (सिवाए खाना नं0 5) आमदन खराब, बुरे कामों में फजूल खर्चा, खुद अपने दिमाग की पैदा करें और खराबियां नुकसान होंगी। शरीर पर लसन का निशान आदि (चितकबरा पन बीमारी है मगर वो फुलहरी नहीं होती) होंगे। सूर्य के सम्बंध से आतशी मादे की लहर और भी गर्म होकर आगे बढ़ेगी यानि राहू जिस घर में बैठा हो वो गर्म हो कर उस घर और बाद के साथ गिते हुए घर की, दृष्टि वाले घर पर भी मार करेगा। राहू हो खाना नं0 6 से 12 देखेगा बल्कि वो साथ लगते हुए खाना नं0 7-12 पर भी प्रभाव करेगा औा खाना नं0 7 चूंकि आगे देख नहीं सकता इसलिए वहां तक ही रह जाएगा। **राहू और सूर्य के शक्तियों के समय तांबे के पैसे को आग में जलाने से सूर्य के कारोबार में शान्ति होगी मगर ध्यान रहे कि जला हुए पैसा उठा कर बाहर किसी दरिया, नदी या जंगल में फैंके जाने के वक्त अपना ही कोई बाल-बच्चा सामने न आए नहीं तो बच्चा पर मन्दा प्रभाव गिना जाएगा।**

राहू देखे सूर्य को या दोनों साँझा हो तो सूर्य ग्रहण होगा। **दान कल्याण माना है।** राहू, आग,चोरी, बुखार का भी मालिक है। **इसलिए बिना समय चोरी जौ को किसी जगह बोझ के नीचे बन्द करें और किसी समय बुखार जौ को साथ गुड़ मिला कर दान करें या जौ और मीठा दान करें। अगर कामयाबी न हो तो जौ को दूध में धोकर (जब केतू भी मन्दा हो) दरिया में बहा देंवे।** अगर दोनों के साथ चन्द्र भी शामिल होता हो तो राहू का प्रभाव वहां तक ही होगा और उसी घर को ही बर्बाद करेगा।

राहु-वृहस्पति खाना नं0 5 में: -राहू के समय तक कलर्क, मुंशी या मामूली नौकर नहीं हो सकता, वजीर, मालिक होगा। औलाद बर्बाद और 21 साल उम्र तक की औलाद तबाह मगर राज दरबार में कोई खराबी न होगी।

दोनों खाना नं0 5 और चन्द्र नं0 4 में हो तो राहू के वक्त तक निर्धन सिर्फ आई चलाई हो, ससुराल भी मन्दे और मामू भी वीरान खाली चरखा ही चलता रहे।

राहु-वृहस्पति खाना नं0 9 में:- सूर्य ग्रहण होगा।

दोनों खाना नं0 10,11 में:-उम्र सिर्फ 22 साल तक होगी। जब खाना नं0 8 में

उम्र को रद्दी करने वाले ग्रह हों और साथ ही सूर्य राहू साँझे बैठे हों(1) खाना नं0 10 में और शनि मय स्त्री ग्रह बैठा हो खाना नं0 2 में या (2) खाना नं0 11 में सूर्य राहू हो और शनि स्वयं उम्र को रद्दी, मन्दा या नष्ट करने वाले घरों में हो या वो स्वयं ही मन्दा हो रहा हो, मगर नर ग्रह की सहायता साथ। साथी न हो नहीं तो आयु लम्बी होगी।

राहू - वृहस्पति खाना नं0 12 में:-सूर्य ग्रहण होगा।

राहू - वृहस्पति शेष घरों में अपना-अपना असर देंगे।

राहू-चन्द्र

पानी से भय उम्र, बिना समय चन्द्र ग्रहण राहू की वस्तुओं (चन्द्र के दुश्मन ग्रहों की चीजों) को चलते पानी में डालना शुभ होगा। जिस्म पर दाग, चमड़े पर काले सफेद दागं, (मगर फुलबहरी नहीं) इत्यादि होंगे। राहू का भूचाल चन्द्र से रुक जाता है (चन्द्र में लिखा है) और चन्द्र बैठे होने वाले घर से आगे नहीं जा सकता।

दोनों साँझे हों तो राहू का निशान जाल या पद्म है, हाथी भी कहलाता है, दरिया में 7 हाथियों के लिए दरयाई जाल तेन्दुआ भी हो जाता है यानि खुद राहू भी तेन्दुआ से पकड़ा हुआ होगा, (या सुसराल भी बर्बाद होंगे) सिर्फ माली हालत में) दरिया का पानी भी दो टुकड़ों में होगा। चन्द्र का प्रभाव मध्यम दिल की स्वेच्छा, दीवाना बना दे या फर्जी चिन्ता से दीवाना हो। स्वयं अपना ही दिल खराबी कराये।

कुण्डली के पहले खानों नं0 1 से 6 में दोनों ग्रह साँझें जिस खाना नं0 में बैठें हों इतने साल की उम्र तक माता को ले मरे, माता मरे मगर स्वयं अपनी उम्र का तकाजा न हो चन्द्र की जानदार चीजों पर बिजली की तरह मौत का सबब हो यानि राहू की मौत अचानक प्लेग, गोली लग कर मरना या किसी और तरह फौरन मर जाना। **चन्द्र की चीजों(जानदार) का हाल होगा।** लेकिन अगर कुण्डली के बाद के घरों खाना नं0 7 से 12 में चन्द्र राहू साँझा हों तो माता की उम्र पर कोई बुरा प्रभाव न होगा और अगर होगा तो माता की उम्र पर कोई बुरा प्रभाव न होगा और अगर होगा तो माता व बच्चा दोनों का ही बुरा प्रभाव होगा। राहू के मन्दे प्रभाव वो भी मन्दा हो तो मंगल की सहायता लें। अगर वो भी न हो तो वृहस्पति की **सहायता और उपाय सहायक होगा नहीं तो स्वयं चन्द्र का उपाय** या अन्त में शनि काम देगा। आम तौर पर दोनों ग्रह इकटठे होने पर राहू व चन्द्र दोनों ग्रहों की चीजों पर प्रभाव होगा और जिस घर में इकटठे हों उस घर की चीजों पर तो जरुर ही मन्दा प्रभाव होगा। सम्बंधित उम्र उन व्यक्तियों पर जो व्यक्ति कि उस खाना नम्बर के लिए निश्चित है जिनमें कि चन्द्र राहू साँझें बैठे हों राहू केतू जब चन्द्र के साथे किसी भी घर या खाना नं0 4 में हो तो ऐसी कुण्डली धर्मी टेवा

होगा। जिसमें पापी, ग्रहों का बुरा प्रभाव न होगा बल्कि बाकी सभी ग्रह भी धर्मी होंगे।

दोनों खाना नं0 9 में:- चन्द्र ग्रहण होगा। **बाकी घर अपना-अपना असर देंगे।**

राहू-शुक्र

शुक्र राहू साँझें बिना बुध के शुक्र पागल होगा। शत्रुता व खराब फल देगा। शुक्र का राहू से सम्बंध शुक्र और राहू साँझें होने पर सिर्फ बुध ही रह जाएगा यानि राहू जब शुक्र के साथ हो तो बुध का फल तो होगा (बुध राहू दोस्त) मगर शुक्र का फल (केतू) न होगा। बुध केतू आपसी दुश्मनी है (राहू न सिर्फ औरत की सेहत व औलाद को उजाड़ता है बल्कि शुक्र की लक्ष्मी मन्दा फल देगी। मगर बुध की फोकी इज्जत और शोहरत खुद कुण्डली वाले की जरुर बरकरार रहेगी। दोनों का साँझा प्रभाव गुद्दे के इर्द-गिर्द के भाग में व्यक्त होगा। अब चन्द्र शुक्र दोनों का साँझा उपाय यानि **दूध में मक्खन का उपाय या नारियल का दान शुभ होगा।** जब शुक्र अपने किसी दुश्मन के घर बैठा हो और राहूभी साँझी दीबार या किसी ढंग पर उसे देख सके या **दक्षिण दरवाजे वाले मकान का साथ हो, शुक्र का फल हर तरह से रद्दी होगा।** इस घर का, जिसमें कि वो बैठा हो, **सेहत भी मन्दी। दांए भाग के जिस्म औरत पर चांदी (छल्ला वगैरह) कायम करे।**

राहू-शुक्र खाना नं0 1 में:-औरत की दिमागी खराबियां होंगी,सेहत गन्दी होगी।

राहू-शुक्र खाना नं० 7

अगर खुद शुक्र के घर ही राहू आ जाए तो खाना शुक्र व बुध दोनों ही मन्दे होंगे। बल्कि खुद उम्र भी 24 तक खत्म लेंगे क्योंकि अब नम्बर 1 में केतू भी मन्दा होगा, जो माता व पिता घर बर्बाद कर रहा होगा और चन्द्र नष्ट हो रहा होगा।

राहू-शुक्र खाना नं० 12

चाहे अब शुक्र ऊँच फिर भी इसकी सेहत मन्दी मगर लक्ष्मी खुद मर्द की तो जरुर मन्द होगी जिसके लिए राहू का नीला फल मिट्टी में शाम को दबाते जाने से मदद होगी।

बाकी घर अपना-अपना फल होगा।

राहू-मंगल

नुकसान 5 साल, रोटी व चूल्हा-राहू नदारद, मंगल का उत्तम हाथी गय महावत इकटठे मुकम्मल हाथी की सवारी अब राहू शरारत नहीं कर सकता लेकिन अगर अलग-अलग हों तो बागी हाथी होगा या दोनों अगर ऐसे घरों हो जहां कि राहू या मंगल दोनों में से कोई एक मन्दा न या नीच हो, जिस्म पर लुसन का निशान होगा तो गन्दा हाथी होवे जो अपनी ही फौज क़ो मारे राजा का बिगड़ा हुआ मस्त हाथी बगैर महावत लेकिन अगर घरों में हो जहां कि राहू स्वयं ऊँच हो (3,6) तो राजा की हाथी की सवारी या वो व्यक्ति खुद राजा समान होगा। जब

मंगल देखे राहू को तो राहू का बुरा प्रभाव न होगा। जब राहू देखे मंगल को तो बाजूओं की तकलीफ या पेट और खून की सख्त खराबियां, जिस्म के दांए हिस्से पर व्यक्त होंगी। **अब चन्द्र का उपाय सहायक होगा।** राहू चूल्हा होता है, मंगल रोटी पानी अगर रोटी खाने और पकाने जगह एक हो तो राहू का असर गुम ही रहेगा।

राहू–बुध

दोनों का उत्तम, खुद अपने लिए राहू हाथी का शरीर और बुध इसका सूंड है। जब साँझें हों और कुण्डली के पहले घरों में हो (1 से 6) शुभ और उत्तम फल देंगे। लेकिन अगर अलग-अलग हों या दोनों साँझी कुण्डली के बाद के घरों में (7 से 12) सिवाए खाना नं0 11 में जिस पर खाना नं0 5 के केतू का कोई प्रभाव न होगा, हों तो दोनों का फल मन्दा होगा। मौत गूंजती होगी, क्योंकि अब केतू भी पीछे से अपना प्रभाव दे रहा होगा। दोनों में कौन प्रबल है, का जवाब गुफतार के फैसले पर होगा। दोनों साँझें टिटहरी पक्षी हैं (जो रात को टांगे ऊपर करके सोता है ताकि आकाश गिरे तो इसके बच्चों को न मार डाले) की तरह होंगे। अब पक्षियों, खास कर टटहरी, के मारने से दोनों ही काबिल इलाज न रहेंगे (शिकार द्वारा)।

दोनों साँझें हों या दृष्टि से मिलें---राहू। बुध के सहायक ऊँच घर की राशि या उसके दोस्त ग्रह की राशि में यानि 2, 3, 5, 6 उत्तम बाज, 7,10,11 में मन्दा बाज, बाकी घरों 1,4,8,9 टिटहरी व उड़ता मन्दा बुध होंगे मगर बाज से शिकार खेल कर **पक्षियों का मारना, खास कर छोटे-छोटे पक्षियों को मरवाने से दोनों की ताकत समाप्त होगी।** जब दोनों किसी ऐसे घर या ऐसी हालत में बैठे हों जहां कि दोनों में से किसी एक का फल उसके अपने लिए शुभ व उत्तम होगा। उसकी बुध या राहू की जानदार चीजों का मन्दा असर करेंगे यानि लड़की बहन आदि ससुराल तबाह व मन्दे हाल होंगे राहू जवान का तेन्दुआ या आंखों का टेढ़ापन या एक छोटी दूसरी कायम भी हो जाता है क्योंकि राहू खुद या दोनों राहू बुध साँझा वृहस्पति की राशि 9,12 या 11 में हो या दोनों का सम्बंध इन घरों में शामिल हो या टकराव आदि आ जाए।

राहू-बुध खाना नं0 1 में:- औलाद के विघ्न होंगे।

राहू-बुध खाना नं0 3 में:-बहिन यदि अमीर व दौलत-मन्द होगी मगर जल्द बेवा होगी।

राहू-बुध खाना नं0 11 में :- 7 दिन, माह साल के अन्दर-अन्दर बेवा हो जिसका उपाय पश्चिम दीवार से चूल्हा या बैवक्त शादी आग को बन्द करना होगा।

बाकी घर अपना-अपना फल देंगे।

राहू–शनि

शनि के साथ राहू या केतू नं0 9 में बिलकुल शुभ , भारी कबीला और धन दौलत होगी। शनि मौत का यम तो राहू इसकी सवारी का हाथ है। शनि राहू इच्छाधारी सांप या सहायक सांप, खजाना का मालिक, यह सांप जहरीला न होगा। हाथ पर इच्छाधारी सांप गिना जाता है और शेष नाग होगा। दांए हाथ पर शनि **राहू-शनि खाना नं0 2 में:-** बांए हाथ पर खाना नं0 2 में, राजदारी। दिमागी खाना नं0 41 खुदपसन्दी का मालिक होगा।

(1) राहू को देखता हो शनि--से तबाह होगा यानि राहू विरोद्धित चल रहा होगा यानि राहू जब शनि के लोहे पर लगे (लोहा व नीला थोथा तो तांबा (सूर्य) होगा।

(2) यानि राहू देखे शनि को--तो राहू मन्दा होगा। राहू शनि के साँझा होने में शरीर पर पदम का निशान होगा। बड़ा स्याह निशान हो तो पदम होगा। मामूली स्याह निशान-राहू और बड़ा परन्तु मध्यम पदम, बहुत बड़ा निशान लहसुन या ग्रहण होगा यानि अगर जिस्म पर लहसुन का निशान हो तो इसके सभी ग्रहों पर ग्रहण होगा। उत्तम तो उम्र कम होगी लेकिन अगर उम्र हो तो बुजुर्गों की सब दौलत व शनि को सूर्य के ग्रहण की तरह स्याह व बर्बाद कर देगा। आम तौर पर यह सब 39 साल उम्र तक मन्दा प्रभाव होगा । अगर लहसुन नाभि से सिर की तरफ ऊपर को ही तो आदमीयों को बर्बाद करे और अगर नाभि से नीचे पांव की तरफ हो तो धन दौलत बर्बाद करे। हर दो हालत में साह गदाई, फकीरी व मन्दी सेहत का साथ कुण्डली वाले के लिए जरुर होगा। जिस्म पर पदम हो दांए मगर पोशीदा रहे शुभ होगा जो कुण्डली में मुराद होगी कि राहू शनि को न ही इनके दोस्त और न ही दुश्मन ग्रह देखते हो या साथ हो निम्नलिखित वाला ग्रह सम्बंधित व निशान सम्बंधी जिस्म के दांए भाग पर शुभ होगा जो कुण्डली के

कुण्डली

दाएं हो खाना नं0	1	2	3	4	5	6
बाएं हो खाना नं0	7	8	9	11	12	

खानों में जैल होगा:- पदम कुण्डल में 1 से 4 तक राजा, बड़ा साहब होगा, 5 से 8 तक महाराजा, 8 से आगे 9 या ज्यादा-योगी होगा।

राहू-केतू-बुध

राहू या केतू के दोनों या दोनों में से किसी एक के साथ बुध का हो जाना इन ग्रहों (राहू या केतू) के दौरा के समय जब बुध नं0 एक में हो अचानक आफत या मौत के गूंजने की निशानी होगी रेखा का एकाएक टूट जाना किसी आने वाली घटना के समय से पहले ही निशानी है कुत्ता केतू, बिल्ली-राहू, बुलन्द

आवाज, बुध का साथ, जानवर मण्डराने लगें। विशेष कर बुध हो खाना नं0 12 (यानि राहू केतू का भी साथ खाना नं0 12, 6 में हो) ऐसे व्यक्ति की जवान व तालु स्याह रंग होंगे। इसकी औलाद मरे, बिना औलाद हो। औरत को सुख न हो। क़बीले को बदनाम और बर्बाद करने वाला हो। अगर औरत ऐसी जवान व तालु स्याह रंग वाली हो तो अपनी औलाद से महरुम हो जाए, मगर दूसरों पर इसका, मर्द की तरह कोई बुरा असर न होगा। स्याह जुबान आम तौर पर स्याह बात निकालेगी जो 32 दांत की तरह खाली न जाएगी। मगर काली जुबान काला 32 दांत वाले से ज्यादा मन्दा होगा यानि काली जुबान वाला 32 दांत वाले से बुरा कहने में जो खाली न जाएगी ज्यादा होगा मुकाबला में जवान से कहे हुए या मुंह से निकाली हुई बात के सच्च होने की ताकत (चाहे नेक बात हो चाहे बुरी) काली जुबान में 32 दांत वाले से ज्यादा हो। अगर काली जुबान, काला तालु और साथ ही आंख भी सांप की तरह गोल और गहरी और स्याह रंग हो तो खुद भी बर्बाद और साथियों को भी तबाह करें।

राहू-चन्द्र-वृहस्पति :- वृहस्पति और चन्द्र दोनों में से किसी का भी फल मन्दा न होगा मगर औरत का सुख हल्का होगा। विशेष कर खाना नं0 12 में 1 खाना नं0 12 में चूंकि वृहस्पति चुप होता है, राहू के साथ और चन्द्र भी खाना नं0 12 में खामोश और हल्का होता है इसलिए मर्दों व स्त्रियों (शुक्र व चन्द्र के सम्बंधित होने का सुख तो जरुर हल्का होगा मगर दोनों ग्रहों (चन्द्र वृहस्पति) के दूसरों पर प्रभाव पर कोई बुरा प्रभाव न होगा। केवल आपसी सुख हल्का गिनते हैं।

राहू-चन्द्र-शनि :- लक्ष्मी व स्त्रियों (औरत व माता) का सुख हल्का होगा। खास कर खाना नं0 12 में चन्द्र चुप होगा।

राहू-सूर्य-शुक्रः - औरत की सेहत रद्दी, दिमागी कमजोरी दीवानगी वगैरह खास कर खाना नम्बर एक में।

राहू-सूर्य-चन्द्रः-चन्द्र मन्दा धन व माता दोनों मन्दे, रात दिन दोनों समय दुखिया, अक्ल मदद न दें, धन दुःख करता जाए।

खाना नं0 5 में अब सूर्य की खूद अपनी तो सहायता होगी मगर चन्द्र की चीजों और खाना नं0 5 की सम्बंधित चीजों औलाद आदि बरबाद जरुर होंगी। मगर बीज नष्ट न होगा चन्द्र फिर भी माफ करवा देगा या नस्ल बढ़ाएगा **बुध का उपाय या दुर्गा पूजन मदद देगा।**

राहू-सूर्य-बुधः-शादियों ऐक से ज्यादा, गृहस्थ सुख बर्बाद (औलाद मन्दी) बुध या बहिन बर्बाद होवे बर्शेत कि शुक्र किसी और ग्रह का साथी ग्रह न हो वरना तायदाद शादी दो न होंगी मगर बाकी वही मन्दा हाल होगा।

राहू-शुक्र-केतूः- मकान के कौने वाला मकानों में शादी लड़की की न होगी। शादी तक जब केतू पहले घरों में हो लेकिन जब बाद के घरों में लड़कों की शादी न होगी।

राहू-बुध-शुक्रः- खुद जाती खर्चा में कंजूस मगर निर्धन न होगा विशेष कर खाना नं0 12 में तो सिर्फ माया का राख होगा। खेत में मूसल की तरह हाल होगा।
राहू बुध चन्द्र :- अब माता-पिता डूब मरे मगर चन्द्र पर बुरा असर न होगा।
राहू-वृहस्पति -शनिः- मर्दों का सुख हल्का होगा खाना नं0 12 में वृहस्पति चुप होगा।

राहू मंगल शुक्र बुधः-शादी में मर्दों व औरतों की विरोद्धिता नाजायज और फालतू खर्चा से धन का नुकसान होगा। खाना नं0 7 में शादी में गड़बड़ और मर्दों व औरतों की विरोद्धिता होगी। फालतू खर्चा व फालतू विघ्न होंगे।

राहू-वृहस्पति-बुध-चन्द्रः- चारों ग्रहों का राहू की उम्र 42 साल तक रद्दी फल। इस घर की चीजों का जिसमें वो बैठे हों। शरीर को हरकत में करने वाली चीज का नाम दिल है जो चन्द्र कहलाया, दिमाग का मालिक बुध हुआ, जिसमें विचार के उतार चढ़ाव की लहर पैदा करने की शक्ति का नाम राहू रखा गया, मगर राहू सिर का मालिक और चन्द्र दिल का मालिक आपसी दुश्मन है और शरीर व सिर के इकट्ठे मिल कर काम न करने की हालत में इन्सान न दिल का मालिक होगा न सिर की ताकत का भण्डारी यानि दीवाना होगा। मकर दोनों के मध्यम एक हवा चलती है जो किसी से दुश्मनी नहीं करती और दोनों को ही इकट्ठा करके काम करवाती है इसका नाम वृहस्पति है यानि जब चन्द्र और राहू दोनों में वृहस्पति का साथ हो तो कोई नुकसान न होगा। अगर दुनियादारों को दोस्ती पर मिलाने वाला वृहस्पति हुआ मगर बुध व वृहस्पति भी आपसी शत्रु हैं। इन दोनों को मिलाने वाली रोशनी का नाम सूर्य है। मगर सूर्य कभी गुम नहीं होता इसलिए दुनिया भी पायदार होगी और चन्द्र राहू बुध द्वारा वृहस्पति की दोस्ती भी अटल हुई।

राहू-मंगल-शनि-बुधः- जिस घर में बैठे हों अब उसका मन्दा हाल न होगा लेकिन अगर साँझी दीवार वाले घर में सूर्य बैठा हो तो संख्या मैमबरान पर तो कोई बुरा असर न होगा मगर राहू की बुरी तासीर चोरी, धन हानि जरुर होगी। कोई भाई तो बिना औलाद कोई पूरी मच्छ रेखा का मालिक साहब होगा मगर **लड़कियां दुखिया मरीज ही होंगी। मदद दें तो चन्दी की दहलीज और दक्षिणी दरवाजा बर्बाद करे।**

केतू वृहस्पतिः- दुश्मन 40 साल, जब बामुकाबिल, साँझा हो तो नेक होगा। नीम्बू पीला नीम्बू मन्दिर में (निम्बू मन्दिर में) केतू व वृहस्पति दोनों दरवेश (वृहस्पति दरगाही-केतू दुनियावी) और दोनों ही आपसी बराबर के ग्रह हैं। अन्तर केवल यह है कि वृहस्पति की हवा व कैद और खुली हवा हुआ करती है मगर केतू जो सांप के फर्राटे की हवा है, दुनियावी हदों से बन्धी हुई किसी मतलब या जहर को साथ लेकर चलती है। वृहस्पति किसी बुराई भलाई का इच्छा मन्द न

होगा। केतू किसी के भले या बुरे अपना छलावापन दिखला देगा। **वृहस्पति पूजा पाठ और केतू पूजा पाठ करने की जगह, या वृहस्पति के बैठने का तख्त है।** अगर केतू पहले घरों में हो और वृहस्पति बाद के घरों में हो तो वृहस्पति का फल मन्दा होगा। लेकिन अगर वृहस्पति पहले घरों में हो और केतू बाद के घरों में हो तो दोनों की बजाए अब चन्द्र का फल मन्दा होगा। दोनों में से किसी एक का फल किसी तरह भी मन्दा हो तो दोनों का कुण्डली वाले के लिए उत्तम और शुभ होगा। मगर केतू व वृहस्पति की जानदार चीजों का फल मन्दा होगा । दोनों साँझें में हाथ की नाखून वाली पोरियों पर शंख का निशान का असर प्रबल होगा। शंख की हथेली और अंगुलियों पर वही असर होगा जो चक्र के हाल में जिक्र है:-

कई कुण्डली का खाना	असर शंख	संख्या चक्र
1	हमेशा आराम पाए	1
8	दरिद्री मुफलिस हो	2
7	ब्रह्म ज्ञानी हो	3
4	विद्या वाला हो	4
7	तपस्वी मगर मुसलिस हो	5
2	बडा ही अमीर हो	6 या अधिक

वृहस्पति के साथ केतू खुद (औलाद) ऊँच फल का होगा। मांमा करें। तो बेशक, हमसाय मारे जावें मगर वृहस्पति का स्वयं जाती बुरा फल न होगा। वृहस्पति जब केतू के साथ या केतू के घरों में हो तो चेहरा लम्बा होगा जब इकटठे ही दोनों । (वृहस्पति व केतू) खाना नं0 2 में हो तो लम्बा चेहरा व कशादा पैशानी (हमदर्द व बुलन्द आदि) होगा। शर्त यह है कि खाना नं0 8 खाली हो लेकिन अगर दोनों खाना नं0 6 में इकटठे हों और खाना नं0 2 खाली होती लम्बा चेहरा होगा। जब दोनों किसी तरह रद्दी या दुश्मन ग्रहों से मन्दे हों रहे हों तो चौड़ा चेहरा तंग पैशानी खुद गर्ज, मन्द भाग्य होगा।

केतू वृहस्पति खाना नं0 1 में:- एक शंख हमेशा आराम पाए।

केतू वृहस्पति खाना नं0 2:- लम्बा चेहरा थोड़ी पेशानी, हमदर्द, बुलन्द मर्तबा होगा। चौड़ा चेहरा अगर नाक की तरफ से दोनों कानों का मध्यम फासला ज्यादा हो तो चेहरा चौड़ा गिना जाता है व तंग पैशानी (जब नं0 8 में दुश्मन ग्रह हों) खुद गर्ज मन्द भाग्य होगा। खाना नं0 8 में दोस्त हों तो हुक्मराना वाला हाल होगा।

केतू वृहस्पति खाना नम्बर 4 में:-तायदाद शंख चार, विद्या वाला हो।

केतू वृहस्पति खाना नं0 6 में:-खाना नं0 2 की दृष्टि के ग्रहों के सम्बंध के प्रभाव:-(1) केतू नीच मन्दा मगर वृहस्पति कायम, पांव का अंगूठा छोटा और तर्जनी बड़ी हो तो पहले लड़के के या लड़की का सुख न होगा।

(2) केतू कायम वृहस्पति मन्दा, पांव का अंगूठा बड़ा और तर्जनी छोटी हो तो दूसरों का गुलाम रहे।

(3) दृष्टि खाली या दोनों साथी, पांव का अंगूठा और तर्जनी बराबर हो तो खुश गुजारा हो, चेहरा लम्बा होगा बशर्ते कि नं0 2 खाल हो।

केतू वृहस्पति खाना नं0 7 में:- तपस्वी मगर मुसलिस तायदाद शंख पांच।

केतू वृहस्पति खाना नं0 8 में:- दरिद्री मगर दयावान, 2 शंख।

केतू वृहस्पति खाना नं0 12 में:- शंख या 6 या ज्यादा, बड़ा ही अमीर हो।

बाकी घर अपना-अपना असर देंगे।

केतू-सूर्य

सफर में नुकसान, दूसरों का सलाह आदि देगा परन्तु खराबी, खुद अपने गांव से पैदा करदा बुराइयाँ या बर्बादी हो। बिना समय **सूर्य ग्रहण सूर्य के दुश्मन ग्रहों का चीजों--केतू की चीजों का चलते पानी में बहाना शुभ होगा। सूर्य का फल मध्यम होगा।**

केतू-सूर्य का आपसी साथ:- केतू शुक्र का प्रभाव है और शुक्र क्या केतू दोनों ही सूर्य के शत्रु हैं, अब केतू की औरत या कुण्डली वाले के बेटे की बहु खूब मोटी ताजी, भरी होगी। मुंह फाड़ कुत्ते की तरह भौकने वाली और लड़के का गृहस्थ मन्दा करने वाली होगी। और खुद लड़का कुण्डली वाले को इसकी (बाप) की राजदरबार की कमाई में धक्का लगाने वाला या बर्बाद करने वाला साबूत होगा। कुत्ता सूर्य की तरफ मुंह करके रोएगा। कुत्ते को मौत के यम नजर कर आएंगे या बुरे वक्त की निशानी का सबूत देगा। औलाद का फल मन्दा होगा या औलाद की औलाद, पौते, बाद मुश्किल हाजिर होंगे। खुद कुण्डली वाले की उम्र पर कोई बुरा प्रभाव न होगा। अगर होगा तो सिर्फ बादल का साया होगा, मगर सूर्य ग्रहण न होगा पर मध्यम तो जरुर होगा।

केतू-चन्द्र

लड़कियों 6 साल, नर ग्रह (वृहस्पति सूर्य मंगल) ऐसे टेवे में ऊँच या उत्तम और कायम हो नहीं तो ना काबिल गृहस्थ होगा, चन्द्र स्वयं नीच हो या पाताल के खान नं0 6 में हो या बुध की मार से मर रहा हो तो माता और बेटे दोनों के लिए मौत तक का ग्रहण होगा, जिसका इलाज केतू की दोरंगी मगर लाल रंग इशया का साथ सहायक होगा या **बिना समय चन्द्र ग्रहण चलते पानी में केतू की (चन्द्र के दुश्मन ग्रहों) चीजों बहाना शुभ होगा।** दोनों दृष्टि में दोनों का मन्दा फल विशेष कर जब एक तो हो खाना नं0 3 में और दूसरा हो खाना नं 11 में तो माता की कुंआ लगने के बाद फौरा मौत, औलाद की मौत सफर (दरयाई या समुन्द्री में नुकसान। दूसरे किसी व्यक्ति की गुमराही से नुकसान जान व माल होवे।

केतू-चन्द्र खाना नं० 6:- चन्द्र ग्रहण, मां-बेटा दोनों का खास कर जब खाना नं0 6 में पाताल में हो बाकी घरों में चन्द्र और केतू अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार ग्रहण का असर होगा। साँझी असर किन-किन बातों में होगा और

किसके लिए राहू चन्द्र साँझा पर देखें। शब्दों में राहू की जगह वहां लफज केतू समझते जाएं।

केतू-चन्द्र खाना नं0 9 में:-अब दोनों का बहुत मन्दा फल होगा। हालांकि अकेले-अकेले दोनों ही इस घर में उम्दा हैं।

बाकी घर अपना-अपना प्रभाव देंगे।

केतू-शुक्र:- दुश्मन 40 साल, नेक घरों में नेक बद घरों में बुरा असर होगा।

केतू-शुक्र खाना नं0 1 में:-ओलाद के विघ्न ला औलादी तक, दोनों नं0 एक

केतू-शुक्र-मंगल नं0 4 तो औलाद और दूसरों की मौतें खराब करे।

केतू-शुक्र खाना नं0 6 में :-दोनों का बुरा हाल कुत्ते को घी हज्म न होगा, का हाल होगा,औरत बांझ होगी।

केतू-शुक्र खाना नं0 9 में:- दोनों का बिलकुल उत्तम फल होगा, हालांकि शुक्र इस घर में बिलकुल मन्दा ग्रह है। खाना नं012 में औरत बहादुरी में वीर होगी, 12 बच्चे वो भी उत्तम सेहत वाले और बहादुर व सुखिया होंगे।

बाकी घर अपना-अपना असर देंगे।

केतू मंगल ::: मंगल का केतू से सम्बंध

इस असल केतू दूसरा ऊँच केतू यानि शुक्र साँझा नीच बनावटी केतू यानि चन्द्र शनि साँझी ही या आपसी दृष्टिपर हों तो मंगल दो गुणा नेक होगा लेकिन अगर मंगल बद हो तो दो केतू (असल केतू व बनावटीं केतू, चाहे ऊँच वनावटी चाहे नीच वनावटी) दो गुणा मंगलबद की ताकत को भी मन्दा करके उसे नेक कर देंगे। या मंगल केतू के झगड़े में जब मंगल बद का असर होवे, **दो केतुओं की पालना या दो कुत्ते (स्याह व सफेद, नर व मादा इकटठे) रखना शुभ फल** पैदा करेगा। फौका ऐश 3 साल, लड़के 28 साल, एक असल केतू दूसरा बनावटी केतू (शुक्र शनि साँझा) जब यह मुशतरका होंगे, शुक्र शनि भी मुश्तरका होंगे। इकटठे या आपसी दृष्टि में हों तो मंगल दो गुणा नेक होगा। लेकिन केतू और मंगल सिर्फ दोनों दृष्टि या मुकाबला पर शेर की कुत्ते से लड़ाई होगी।

केतू मंगल खाना नं0 2 में:- हुकमरान हाल वाला होगा, दोनों का अलग-अलग और उत्तम फल होगा।

केतू मंगल खाना नं0 6 में:-दोनों का बुरा प्रभाव हो।

केतू मंगल खाना नं0 9 में:-28 साल उम्र से हालात तबदीली पर होंगे। खाना नं0 3,5 के ग्रह न्यायक होंगे, मकान की बुनियाद (देखें खाना नं0 10 का दिया असर) दुरुस्त होने पर शुभ असर होगा। चन्द्र वर्षा का पानी सहायक होगा। केतू भी अब उम्दा असर का होगा।

केतू मंगल खाना नं0-10 में:-28 साल उम्र के बाद हालात रद्दी होंगे। मंगल बद होगा। औलाद तबाह होगी 45 साल उम्र तक मन्दा रहेगा।

केतू घर दसवें का शक्की-कुत्ता लड़का मन्दे,
अब उपाय केतू होगा-या चन्द्र का पानी,
महल मकानां नीचे देवें-दूध शहद वो प्राणी ।
वर्षा का पानी या शहद चांदी के बर्तन में मकान की बुनियाद में दबा दें।
केतू मंगल खाना नं0 11 में:-दोनों नं0 11 में हो तो मंगल नं0 10 का फल देंगे, शर्त यह है कि कि चौकी मौजूद हो।
बाकी घर अपना-अपना फल देंगे।
केतू-बुध (राशि फल) :- दुश्मन 37-40 साल, केतू-कुत्ता, बुध-दुम, दोनों दुश्मन पागले कुत्ते की दुम ने उसे पागल किया दोनों का फल मन्दा बुध जव केतू के साथ हो तो बुध घर का मगर केतू नीच होगा। मौत नहीं तो बुरा समय जरुर होगा। जानवर जिससे हाथ भी डरकर भागता है। **मंगल का उपाय मददगार होगा।** दोनों दृष्टि में, दोनों का मन्दा फल विशेष कर जैसा एक हो खाना नं0 3 में दूसरा नं0 11 में केतू कुत्ते की दुम ने कुत्ते को पागल किया जो कुण्डली में बुध नीच हो, केतू का फल भी कुत्ते की तरह मन्दा होगा। केतू बुध मौत की निशानी।
केतू-बुध खाना नं0 6 में:- केतू की चीजों पर केतू मन्दा पर मन्दा न दूसरों पर, बुध भी अगर वहां साथी हो खुद मन्दा बुरा दूसरों पर।
बाकी घर अपना-अपना फल देगें।

केतू शनि

उम्र पर शनि का फैसला, लड़के 24 साल, दोनों का फल उत्तम जब तक सिर्फ दोनों इकट्ठे शुभ , जब कोई भी तीसरा ग्रह मिला तीनों का ही फल मन्दा होगा। दोनों साँझा शुभ होगा जिसका सबूत किसी ऐसे जानवर मवेशी के आ मिलने का होगा जो कि माथे से सफेद बाकी जिस्म पर कोई और रंग हो दर असल मवेशी वही शुभ होगा जो सिर्फ एक रंग हो। दो रंग में उम्र शरारत का झगड़ा छुपा हुआ करता है विशेष कर माथे सफेद वाले में मगर थोड़ा इस भ्रम से बुरी होगा।
केतू शनि खाना नं0 6 में:-उर्ध्व रेखा, पीठ में उम्र 90 साल होगी।
केतू शनि खाना नं0 9 में:- बिलकुल शुभ , भारी कबीला, धन दौलत शाहाना शान की उम्र और लम्बी अवधि का सुख सागर का होगा।
(बाकी घर अपना-अपना असर देंगे।)
केतू-सूर्य-चन्द्र:- लखपति फिर भी दुखिया, बुद्धि सहायता न देवे। न दिन को चैन न रात को आराम *दुर्गा पूजन और बुध का उपाय मददगार होगा।* केतू का फल मन्दा ही होगा।
केतू-सूर्य-चन्द्र खाना नं0 5 में:-सूर्य की तो अब सहायता होगी, चन्द्र और केतू दोनों मन्दे, औलाद, तबाह, मगर नस्ल बन्द न होगी। बुध का अपना फल मंदद

देगा। खाना नं0 5 को बर्बादी से रोक लेगा। सूर्य अपने घर में बैठे दुश्मन ग्रहों को कुण्डली वाले को सहायता पर खड़ा करता है और सूर्य जब अपने दोस्त पर डाल देता है लेकिन अगर सूर्य चन्द्र नं0 5 में राहू या केतू वाक्या हों तो राहू या केतू का प्रभाव खाना नं0 5 की चीजों औलाद आदि और चन्द्र पर बुरा ही होगा मगर सूर्य पर बुरा प्रभाव न होगा।

केतू-शुक्र-बुधः- तीनों का ही फल मन्दा विशेष कर खाना नं0 7 में। शादी और औरत औलाद आदि में सख्त गड़बड़ हो।

केतू मंगल वृहस्पतिः-केतू व मंगल का अपना-अपना फल होगा। भाई लंगड़ा और निर्धन फिर भी 45 साल उम्र तक सहायक बाद में बेईमानी होगा। स्वयं ऐसा व्यक्ति 45 साल उम्र किस्मत के मैदान में हल्का ही रहे, **शनि के पत्थर को पिले रंग वृहस्पति के फूलों से बतौर उपाय स्थित करे।**

केतू मंगल शनि :-हर जगह मंगल बद और हिरण की तरह डरपोक होगा कच्चा पक्का मकान और इसमें **नीम का पेड़ और कुत्ता मौजुदा हो।** कुण्डली में मंगल बद का प्रभाव मंगल सूर्य के बिना वही बुजदिल हिरण होता है। हिरण के साथ कुत्ता अगर अपना मुंह छुपा ही दे, पकड़े या न पकड़े हिरण स्वयं ही दिल छोड़ देगा और लेट जाएगा।

केतू सूर्य वृहस्पतिः- सूर्य का फल बिलकुल मन्दा होगा। सूर्य वृहस्पति को अगर केतू देखे तो दर्जा दृष्टि की ज्यादती बुरे प्रभाव की ज्यादती होगी यानि 100 प्रतिशत पर 100 प्रतिशत ही मन्दा होगा।

केतू सूर्य शुक्रः-शुक्र पर खराबी होगी। दिमागी तकलीफें औरत की खास कर जब खाना नं0 1 में हों जब तक वो औरत कुण्डली वाले के जद्दी मकान में रहे।

केतू सूर्य बुधः- भतीजे,भान्जे खा पीकर डकार मार जाने वाले होंगे या उन की कोई मदद की उम्मीद न होगी।

केतू सूर्य चन्द्र बुधः-माता-पिता डूब ही मरे। हर पक्का जुदा-जुदा फल होगा।

केतू मंगल शुक्र बुधः शादी में मर्दो औरतों की विरोद्धिता और फालतू व नाजायज खर्चा बर्बाद हो।

खाना नें 7 में:-जैसा ऊपर फल दिया है।

वृहस्पति सूर्य चन्द्रः-अगर कायम तो इकबाल-मन्द हो।

वृहस्पति सूर्य बुधः-अगर कायम हो तो राजयोग हो।

वृहस्पति चन्द्र शनिः- चाहे साँझा चाहे दृष्टि द्वारा साँझा वृहस्पति व शनि दोनों की दोस्ती ; लोहे को पारस का काम देवे। दोस्ती से लाखों तर जाएं, सिवाए खाना नं0 9 जहां कि खराब प्रभाव होगा या चन्द्र का खराब असर मिला हुआ होगा।

वृहस्पति बुधः-शादी में रुकावट व जिगर खराब हों।

वृहस्पति शनि शुक्रः-हर हालत में उत्तम फल, विशेष कर खाना नं0 9 में उम्दा हो। दो सांप होंगे (केतू स्वभाव)

वृहस्पति –शनि बुध खाना नं0 7 या तीनों किसी जगह साँझा या वृहस्पति शनि से बुध का सम्बंध, बुध की जब बुनियाद पर मच्छ रेखा हो तो जानी ऐययाश होगा दीगर हालत में जवान का चस्का आदि बर्बादी का कारण होगा।

सुर्य बुध शनिः–दोनों ग्रहों यानि सूर्य व शनि का अपना–अपना और नेक फल होगा बुध का फल निकमा। सूर्य की उम्दा हालत वाले घरों में दिमागी काम, व्यापार का फायदा और शनि के अच्छे फल वाले घरों में जायदाद बढे या मिले। सिर रेखा से ऊपर को दो शाखी रेखा की हर दो शाखें जिस–जिस पर्वत पर हों वो दोनों पर्वत पर अपना नेक असर देंगे। यह सिर्फ बुध सूर्य और शनि के पवर्तो का होगा। मगर वृहस्पति का बुरा असर होगा, क्योंकि वृहस्पति बुध का मित्रता नहीं है यानि बुध या सिर रेखा की दो शाखी हो एक शाख हो बुध के पर्वत पर और दूसरी हो सूर्य पर या सूर्य की ओर से कामयाबी वृहस्पति, दिमागी काबलियत सूर्य की तरह चमके (बुध देखे सूर्य को) ।

एक शाखा तो हो सूर्य पर सूर्य की तरफ और दूसरी हो शनि पर या शनि की तरफ (बुध को शनि देखे) तो ऊपर लिखा हुआ प्रभाव होगा। बुध पर ऊपर लिखा हुआ प्रभाव होगा। जायदाद मिले और जायदाद पैदा करे। शनि पर ऊपर लिखा हुआ प्रभाव होगा।

सूर्य बुध वृहस्पतिः–सूर्य और वृहस्पति दोनों का उम्दा फल होगा।

सूर्य वृहस्पति शनिः–हर जगह कद्र व मान होगा विशेष कर जब खाना नं0 6 में हो। इज्जत रेखा उत्तम होगी।

सूर्य वृहस्पति शुक्रः–शादी के दिन से किस्मत जागेगी। औरत भी हर तरह रंग, स्वभाव और नसीबा में नेक होगी।

सूर्य शनि शुक्रः–मकान का लाल फर्श शुभ न होगा। मर्द की औरत या औरत का मर्द बर्बाद हो। गृहस्थ मन्दा हो, **मिट्टी के कूजे में लाल पत्थर के टुकडे दूध से भर कर इस घर की सम्बंधित जगह में दबाएं,जहां कि वो बैठे हों।**

चन्द्र शनि बुधः–मामा खानदान हाल मन्दा,खास कर जब खाना नं0 4 में लेकिन वजह गरीबी मौत न होगी, खूनी होगा।

चन्द्र सूर्य शुक्रः–रात दिन मुसीबत में मुसीबत खास कर खाना नं0 9 में कभी तो अमीरी के समुन्द्र की ठ़ोठें के खज़ाने होंगे और कभी गरीबी में रेत के जर्रा की चमक भी न होगी।

चन्द्र शुक्र बुधः–सेहत रेखा अगर दिल रेखा से मिल जाए तो दिमागी सदगात होंगे। चन्द्र सीधा ऊपर को बुध के मुकामपर शादी रेखा को काटता हुआ चला गया यह खत शादी में रुकावट डालने वाला हुआ। इस खत की मौजूदगी में बुध और चन्द्र का शत्रुता का प्रभाव होगा। चन्द्र बुध से भी शत्रुता करता है और शुक्र से भी दुश्मनी करता है अब बुध पर इतवार करेगा न शुक्र पर विश्वास रखेगा यह

खत मंगल बद के रास्ता ही ऊपर बुध को जा सकता है अब सब खराब ही असर देंगे। नहीं तो शादी बुध के पूरे समय यानि 34 साल या आधा अरसा 17 साल से पहले न होगी यानि अगर 17 साल में हो भी जाए तो भी जाए तो वो शादी न होगी। फिर 17 साल के बाद 34 से पहले यानि 33 साल तक शादी का कोई मतलब न होगा और भाई बन्धु भी बर्बाद ही होंगे और पर चन्द्र शुक्र से और शुक्र बुध से और बुध मंगल के सब एक दूसरे की विरोद्धिता है। औरत के चाहे तो औलाद ही न होगी अगर होगी तो भी तो जिन्दा न रहेगी और अगर जिन्दा रहेगी तो औलाद नरना या लड़के जिन्दा न होंगे। औरत की नजर बर्बाद होगी। **शुक्र काना और मंगल अन्धापन करेंगे।** बुध पैसा बर्बाद और खेती की जमीन खराब प्रभाव यानि अच्छा तो माता ही दुखी होगी या दुखी करेगी और जमीन खेती आ जावे तो माता खत्म हो जाएगी । और जमीन के झगड़े बर्बाद कर देंगे। (ऐसे व्यक्ति की औरत अगर जिन्दा हो तो इस औरत की उम्र जिस कद्र बुध के असर के करीब यानि 34 साल के लगभग होती जाएगी इस अवस्था में औरत की बिमारियों हमलावर होती जायेगी एवं औरत 34 साल के करीब और मर्द 48 साल से पहले औलाद घर का सुख न भोग सकेगा। ऐसे आदमी को सरकारी काम या व्यापार से भी कोई विशेष फायदा न होगा। बल्कि नुकसान ही होगा **चन्द्र और मंगल दोनों ही नुकसान के ग्रह है। इसलिए दोनों की सेवा जरुरी है।** चन्द्र के लिए अराध्यदेव पूजन और मंगल के लिए गायत्री पाठ है। **राहू का प्रभाव कन्यादान और केतू कपिला गाय के दान नेक होगा।** यानि जब वो लड़की की शादी करेगा, आराम पाएगा या अगर खुद बुध का कारोबार के लिए दुर्गापाठ करेगा तो सुखी और दौलत के जमा होने का जमाना देखेगा या **सब्ज रंग तोता की पालना करे और स्याहरंग मछलियों को सूर्य निकलने से पहले सफेद आटा, अपनी खुराक का 1/10हिस्सा खिलाया करे, 40 सप्ताह और हर सप्ताह में सिर्फ एक दिन ऐसा किया करे।** दिन कौन सा हो शुक्र की रात और शनि की सुबह का मध्य समय । ऐसे व्यक्ति की उम्र 85 साल से ज्यादा न होगी।

चन्द्र शुक्र शनि

मददे मर्दा –मददे खुदा, धन दौलत उम्दा, इसका धन औलाद के हाथ लगे मौत परदेश में हो वरना धन समान मिट्टी का पहाड़ स्पष्ट करता है उत्तम अन्दर से खाली ढोल जो ससुराल खानदान के बचाने के काम आए।

चन्द्र शुक्र वृहस्पति :–एक शाख चन्द्र से दूसरी शुक्र से, किस्मत का अजीब रंग होगा। कभी शाह कभी मंलग, कभी खुशहाल कभी तंग हाल होगा।

तीनों साँझा नं0 2 में और मंगल नष्ट हो तो वृहस्पति बहुत बड़ा हो गया और बहुत वृहस्पति शुक्र का फल देता है। इस हालत में चन्द्र शुक्र से दुश्मनी करेगा यानि अब वो मुहब्बत पाकीजा थी अब मुहब्बत या स्त्री भाग्य में तबदील हो

जाएगी। मन्दी मुहब्बत होगी या ऐसा शख्स औरत की कबूतर बाजी पर होगा और अपनी जाती स्त्री के अलावा पराई नार (फारसी में आग) मदहोश होगा और अपना बहुत सा रुपया इस सम्बंध में बर्बाद करेगा। मगर वो अपने इश्क में नाकाम न होगा। मन्त्र-यन्त्र में जनाकारी आम आदत होगा और अगर ऐसे व्यक्ति का सूर्य का बुर्ज भी कायम न हो तो वो इस लग्न में सिर्फ एक परवाना ही होगा जिसे अपनी जान की भी परवाह न होगी। ऐसे आदमी से किसी को भी लाभ न होगा जब होगा नुकसान होगा।

तीनों ग्रह नं0 2 मंगल कायम हो तो दिल रेखा जब वृहस्पति में ही जाकर समाप्त हो या दिल रेखा सिर्फ इतना हिस्सा जो वृहस्पति के पर्वत में चला जाए मुहब्बत रेखा के नाम से भी सोम होगा। मुहब्बत रेखा के नाम से ही व्यक्त है कि मुहब्बत दिल से होगी या दुनियावी लगन और स्त्री शौक होगा। दिल के लिए चन्द्र या दिल रेखा और स्त्री के लिए शुक्र या गृहस्थ मंगल रेखा याद आंएगें। जब दिल वृहस्पति के घर पर चली जाए और इसके चरण पकड़े यानि सीधी वृहस्पति में ही (चन्द्र नं02) जाकर समाप्त हो जाए तो कोई बुरा प्रभाव किस्मत का न होगा। क्योंकि वृहस्पति गुरु की दृष्टि से किसी से भी शत्रुता हमेशा नहीं करता, बल्कि चन्द्र वृहस्पति के मसादी है और आपसी यह दोस्त है। चाहे दो मित्र ओर शक्ति में निपुण यह दोनों ही दैविक शक्ति के मालिक है, पानी और हवा, आपसी इकट्ठे होंगे तो दिल दरिया और समुन्द्र की लहरों में हवा सहायक से दो वाला होगी जो दिल चाहें करे। मुहब्बत में हर तरह से कामयाब होगा।

शुक्र बुध मंगलः-शादी और औलाद में गड़बड़ और अल्प आयु भी होगी।

शुक्र बुध शनिः-गऊँ ग्रास देने से दुनिया के तीनों सुखों का मालिक होगा जद्दी मकानों आकाश की तरफ से सूर्य की रोशनी (मौध) रखना धन दौलत की तबाही व चोरी का सबब होगा। मकान में दाखिल होते वक्त दांए हाथ की कोठरी को पूरी अन्धेरी (शनि की) रखना शुभ होगा। अपने ही घर की गाए और अपने ही कुत्ते को ऊपर का दुख दूर करने के लिए अगर रोटी का दुकड़ा देना ही तो उस गाए और कुत्ते को बाहर से और किसी की रोटी के टुकडे का हिस्सा न आए नहीं तो कोई मतलब न होगा। वैसे भी काली गाए और काला कुत्ता (पूरा) बिलकुल शुभ होते हैं। सिर्फ इस वक्त तब जब तक कि किसी दूसरे घर (गैर व्यक्ति) का अनाज न मिले। जब बाहर वाले लोग भी उनको अनाज पर आ जाएगी। जो कि काली गाए और काले कुत्ते का मालिक हो। अगर यह दोनों जानवर लाभदयक हैं तो मन्दे समय में लाभदायक हो सकते हैं। इसलिए सम्भल कर काम से फायदा वरना आ बैल मुझे मार का तमाश देंगे।

मंगल बुध सूर्यः-दो मंगल साँझा (मंगल खुद अकेला मय मंगल बनावटी के ग्रह) राहू होगा। नेक नियत का, दिल रेखा पर सूर्य के पर्वत सूर्य रेखा की जड़ पर

को त्रिकोर्न्{ का असर दिल की रखना-अन्दाजी और दिल की ताकत ज्यादा होने से शुभ है। चाहे ऐसा आदमी नेक तरफ उड़ जाये चाहे बुरी तरफ इसमें हौसला या गैरत की ताकत बहुत होगी या शरारत वालों के हमलों का वो वा आसानी जवाब दे सकेगा।

मंगल बुध चन्द्रः-धन दौलत और सेहत उत्तम खास कर खाना नं0 1,4,5 में मगर शनि का सम्बंध या खाना नं0 10,11 में बुरा प्रभाव होगा । मगृशाला मन्दे प्रभाव से बचाएगी, हेथली पर मंगल बद खाना नं0 8 वाले हिस्सा की चर्बी अगर बुध व चन्द्र के पवर्तो की ऐसा एक सा करके मिला दे कि तीनों ही पवर्तो का अलग-अलग फर्क मालूम न हो तो मंगल बद का बुध व चन्द्र दोनों पर मन्दा प्रभाव होगा।

मंगल बुध शनिः-किस्मत रेखा यह सेहत रेखा की शाखों का उम्र और सिर के मिलाव मन्दे नतीजे देगा। मंगल बुध शनि मन्दा मामा बर्बाद जो बच्चे साधु होकर बचे वो भी घर से बाहर जाकर वरना बर्बाद हो जाए। विचारों पर भी मन्दा प्रभाव होगा। वो सांप होंगे। **(राहू स्वभाव मंगल बुध चन्द्र का ऊपर दिया प्रभाव होगा। मृगशाला बुरे प्रभाव से बचाएगी ।**

मंगल बुध चन्द्रः- दिखावे का धन दौलत जो आखिर पर भी भाई बन्धु ताए चाचे के काम आवे। बुढ़ापे में नजर का धोखा हो। शनि के घर नं0 11 में राज दरबार से फायदा हो। मंगल या चन्द्र के घर 3,4,8 में हर तरह से हानि धन दौलत बर्बाद और मौत खड़ी रहे। दिल रेखा(चन्द्र) उम्र रेखा (शनि) का आखिर दो शाखी होना या इन दोनों के साथ]^(मंगल) का मिलना बुढ़ापे में सेहत के हल्के होने की शक है। इन दोनों रेखाओं के आखिर पर दो शाखी मजकूर से नजर या बीनाई खराब या कमजोर ही हालत में होगी। उम्र रेखा के आखिर पर दो शाखी से तो नजर की खराबी होगी है दिल रेखा के अखिर पर दो शाखी बुरी नहीं होती इसी तरह पर जब दिल रेखा खात्मा पर दो शाखी ‹ से खत्म हो तो ऐसा आदमी गुस्सा वाला (मंगल का दिल) सरकार से सम्बंध से फायदा उठाने वाला होगा।

मंगल शुक्र शनिः-दो गुणा नेक मंगल, दो नेक केतू-मंगल, वृहस्पति।

मंगल शुक्र देखते हो शनि को (महावन धन) मंगल शनि। मंगल चन्द्र देखते हों वृहस्पति को (महावन उम्र) दैविक सहायता ।

उम्र रेखाः-यह रेखा जैसा कि इसके नाम से जाहिर है उस रेखा की सहायता है सिर्फ उम्र रेखा की ही सहायता नहीं यानि यह रेखा सिर उम्र लम्बी होने में ही मदद नहीं देती बल्कि इन्सान की सारी आयु या जिन्दगी की सहायता व्यक्त करती है। अगर किसी को फांसी पर लटकाया हो तो यह रेखा उसके पांव तले मरने से बचने के लिए सहायता दे देगी, ताकि गला न घुट जाए। दूसरे शब्दों में अगर कोई दुश्मन मारने की तैयारी करके आ पहुंचे तो इस रेखा के प्रताप से बचाने वाला भी

स्वयं सहायता के लिए आ पहुंचेगा। जिस तरह शत्रुता को बुलाया न था इसी तरह ही सहायता करने वाला भी बिन बुलाए आ जाएगा। जिस हाथ में यह रेखा मौजूद हो वो दूसरों से पूरी सहायता और आराम पाता रहेगा। दुश्मनों के मुकाबले में दोस्त भी स्वयं पैदा होंगे और मुसीबत को दूर कर जाएंगे। ऐसा आदमी उम्र की तमाम बीमारियों या टूटफूट से बचा रहता है पूरी उम्र भोगता है मौत के यम के खिलाफ भी इसको सहायता मिल जाती है और सहायता की हद यहां तक गिनते हैं कि ऐसा आदमी कब्र में से भी फिर वापिस आ जाता है। विशेषकर बाप की सहायता और सुख सागर लम्बा होगा जितने साल तक यह उम्र रेखा के साथ जाएगी इतनी ही उम्र तक यह सहायता होगी इस रेखा वाला औलाद से भी सुख पाता है और बाकी सभी सहायता में से भी आराम पाता है।

मंगल शुक्र वृहस्पति :- मंगल नेक के निश्चित हिस्सा की चर्बी (हाथ पर खाना नं0 3 की जगह की चर्बी) बहुत बढ़ कर अंगूठे की जड़ को और वृहस्पति के खाना नं0 2 को एक ही कर देवे तो शुक्र बहुत बड़ा हो। कुण्डली वाला औलाद से चिन्ता करता रहेगा और वृहस्पति ने अपना काम छोड़ कर खाली शुक्र का काम करना शुरु किया। कुण्डली में यही हालत इस समय होगी जब शुक्र और वृहस्पति दोनों तो हो आपस में दृष्टि पर और मंगल दोनों में से किसी एक तरफ का साथ ले लेवे यानि इन दोनों में से किसी एक के साथ ही हो बैठे। शुक्र से मिला तो बहुत बड़ा शुक्र और अगर वृहस्पति से मिला तो नर्म हाथ का वृहस्पति या शुक्र की प्रकृति वाला वृहस्पति होगा या यूँ कहो कि अगर मंगल बढ़ कर वृहस्पति की सहायता करे तो वृहस्पति बढ़े और शुक्र का नेक फल हो। अगर मंगल भाई शुक्र की तरफ भारी होकर सहायता करे तो शुक्र बढ़े जो औलाद तंग करे मगर ऐश व इशरत इश्क खूब दिलाए।

मंगल चन्द्र वृहस्पति :- पीपल,नीम और बड़ तीनों का साँझा पेड़ होगा जो हर तरह से तीनों ग्रहों का उत्तम फल देगा।

मंगल चन्द्र शनिः-तीनों रंग बिरंगा अगर सांप भी हो चितकबरा, बीमारी का घर और फुलबहरी का मारा हुआ हो।

मंगल शनि वृहस्पतिः-श्राप देने वाला साधू होगा। आदमियों की कमी और करजाई हो तो इसके सामने रहे बर्बाद हो। चोरों को फंसाने वाला साधू, बीमारियां व इच्छा बद का पुतला हो।

मंगल शनि सूर्यः- धन दौलत उम्दा मगर जब शनि के सम्बंध में हो खाना नं0 11 ते दुनिया के झूठा बना दे मगर खुद झूठा न हो या अपना झूठ न माने।

मंगल मय पापी ग्रहः-सारी उम्र चोर फिर भी मुसीबत पर मुसीबत रहे।

मंगल शनि के साथ कोई तीसरा ग्रहः-तीसरा साथी ग्रह मन्दा और श्राप देने वाला ही होगा।

चार ग्रह

दिल रेखा के समाप्ति पर अगर त्रिकोन हो तो सरकारी नौकरी, आदमी का गुस्सा वाला होना जरुरी,अमीर होगा।

चन्द्र शनि शुक्र मंगलः-राज से सम्बंध व स्वयं गुजारा हो खाना नं0 2 में।

चन्द्र वृहस्पति बुध शनिः- खोटे काम, खास कर खाना नं0 2 में मगर अच्छी शोहरत भला नाम हो विशेष कर जब हो खाना नं0 6 में।

मंगल शनि सूर्य बुधः- फटा पतंग, हमेशा परेशानी चारों ग्रहों का मन्दा फल इस घर ही की जिसमें कि यह चारों, ग्रहों का मन्दा फल इस घर ही की जिसमें कि यह चारों, ग्रह बैठे हों।

मंगल चन्द्र शुक्र बुधः- चारों का मन्दा फल, **लड़की की शादी से नेक फल शुरु होगा।**

चन्द्र वृहस्पति सूर्य मंगलः- वृहस्पति खाना नं0 2 की किस्मत रेखा का उत्तम फल होगा। उत्तम गुरु जिसे सब प्रणाम करेंगे और उपदेश लेंगे।

मंगल शनि सूर्य बुधः- अगर चारों ग्रह नष्ट हो तो एक अकेला ही लाखों से मुकाबला करने का सहासी होगा। अगर चारों कायम तो सब का ही लूट खसूट कर खुद धनाढ्य होगा।

चन्द्र शुक्र बुध शनिः- बद किरायेदार, मौत-औरत में फर्क न जाने।

चन्द्र शुक्र बुध सूर्यः-भला लोग काम, मां बाप दोनों की तरफ से खालिस खून और दोनों का ताबेदार।

पांच ग्रह या पंचायत

शनि वृहस्पति शुक्र और राहू केतू 5 की पंचायत मानी गई है या जिस समय भी यह सब ग्रह यानि वृहस्पति मय शुक्र और पापी ग्रह आपसी साँझा हों या दृष्टि से आपस में मिल रहे हों तो वृहस्पति की उत्तम हालत (साँझा दुनियावी गृहस्थ) होगी। **वृहस्पति चन्द्र शुक्र शनि राहू आपसी दृष्टि में इक्ट्ठे हों** तो धन्ने भक्त की गऊओं को राम चरावें **मिट्टी का माधों, किस्मत का धनी होगा।** वृहस्पति की जबरदस्त किस्मत रेखा सही शब्दों में का नेक फल देगी। शुक्र कोई एक नर ग्रह मय तीन पापी (यानि 5 ग्रह) ऐसे घर में बैठे हों जिस घर में राहू या केतू जो बाहर रह गया है अपना प्रभाव दे रहा हो शुक्र नर ग्रह व चन्द्र पापियों से कोई दो यानि ऐसे घर में पंचायत हो जहां कि राहू या केतु जो बाहर रह गया है अपना असर मिला न सके कोई पांच ग्रह जिनमें न स्त्री व पानी मिले हों सिवाए बुध के मिट्टी का माधो मगर किस्मत का धनी हो। वृहस्पति की उत्तम हालत का फल और गृहस्थी सुख व जरुरयात सब कायम हों। हुक्मरान साहब औलाद हो। नेक पंचायत वो है जिसमें बुध शामिल न हों मगर राहू या केतत में से एक जरुर शामिल हो। शुक्र, वृहस्पति, शनि, सूर्य, बुध पाँचों ही एक खाना नं० 6 तक

किसी भी घरों में इक्टठे या अकेले अकेले कायम हो या एक से एक उत्तम हालत का हो, पांचों अंगुलियाँ बराबर या दराज हों तो हुकमरान हों। पांचवें अंगुलियाँ क्रमानसार एक से दुसरी बड़ी हो तो जाए तो उत्तम औलाद हो।

सभी ग्रह इक्ठ्ठे :- चाहे राहू या केतू में से एक बाहर रह जाया करता है मगर वह भी दृष्टि के हिसाब से अपने से बाद वाले में अपना मिला कर खुद सिफर हो जाता है।

खाना नं० 2 :- हुक्मरान हो ।

खाना नं० 3 :- राज समान, साहब उत्तम होगा ।

खाना नं0 8:- हुम्कमरान, उत्तम साहब, परन्तु स्वयं अपने आप काा बढवाये।

खाना नं0 9:- हुक्मरान, साथियों को बढ़ा कर स्वयं भी बढ़ता जाए।

ज्योतिष कुण्डली ---- कुण्डली की आसान दुरुस्ती

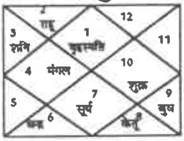

ज्योतिष विद्या के अनुसार बनाई हुई जन्म कुण्डली के लग्न के खाना नम्बर को एक का अंक देकर जब कुण्डली बन चुकी हो तो ज्ञात हो जाएगा कि लग्न से हर ग्रह कौन कौन से घर है। इस तरह बैठे हुए ग्रहों के अनुसार फलादेश देखें और दिए हुए लग्न को तीन बार हिला कर जाँच कर लेवें जहाँ दुरुस्त मकान कुण्डली बनाई और हर एक ग्रह के अनुसार चीजों से पड़ताल की या उसके खून के रिस्तेदारों हर एक से सम्बंधित का हाल देखा तो ज्ञात हुआ कि वो दिए हुए टेवे के अनुसार दुरुस्त हीं है फिर वृहस्पति को खाना नं० 2 या खाना नं० 12 देकर देखा तो 12 में वृहस्पति रख कर बाकी सब ग्रहों का फल मिलया गया तब तमाम हालात आम उम्र और सालवार देख लें, सही जवाब होगा (2) ऊपर के ढंग से तो फर्क सिर्फ इस हालत का दुरुस्त होगा, जबकि जन्म वक्त में मामूली फर्क लिखा गया हो। लेकिन हो सकता है। कि किसी की पैदाईश हो तो वास्तव में सुबह सबेरे की गर गल्ती से लिखी जाए शाम पक्की हालत में दिए हुए पैदाइश के दिन की चन्द्र कुण्डली बना लें और चन्द्र बैठा होने वाले घर को खाना नं० 1 देकर या चन्द्र काा खाना नं० 1 में करके बाकी बाकी ग्रहों क्रमानुसार देखें कि हाथ रेखा ने नियमों पर कुण्डली बनाने के ढंग से नर ग्रह कहाँ कहाँ मालूम हो रहे हैं जिस घर में कोई एक नर ग्रह भी पूरे तौर पर तसल्ली का मालूम हो रहे हैं जिस घर में कोई एक नर ग्रह भी पूरे तौर पर तसल्ली का मालूम हो उसे उस घर में करके बाकी सब ग्रहों को क्रमानुसार लिख देवें। या लग्न और पत्री अनुसार देख लेंकि जन्म के समय दरअसल क्या हुआ। साथ ही इस तरह पर दुरुस्त किए हुए टेवे का फलादेश बोल कर देखें कि आया गुजरा हुआ हाल मिल गया। ग्रह स्पष्टी के लिए हर ग्रह में उसके खाना वार प्रभाव की पैशानी के ऊपर दी हुई चीजों व

ग्रह की आम चीजों को सम्बंधित बोल कर देख लें जब पूरी तसल्ली हो जाए कि मकान कुण्डली के अनुसार भी, अब तो कुण्डली दुरुस्त हो गई है। तो आगे फलादेश देखना शुरु करें ।

ज्योतिष विद्या अनुसार बनाई हुई जन्म कुण्डली ।

ज्योतिष विद्या और सामुद्रिक विद्या में राशियोंके एक ही नम्बर निश्चित है कुण्डली वाले की जो जन्म राशि का नम्बर होता है, पंजाब में ज्योतिषी अब सब से ऊपर की चोकौर जगह में लिखते है इस नम्बर का वो लोग जन्म लग्न गिनते हैं सामुद्रिक विद्या में इसी ऊपर की चौकोर को खाना नं० 1 दे दिया गया है ताकि बार-बार न गिनना पड़े कि रह एक ग्रह जन्म लग्न से कौन से नम्बर के घर में है या यूँ कहें कि पंजाब में कुण्डली के बारह खानों की शक्ल पक्की तौर पर निश्चित है चाहे ज्योतिषी ऊपर के चौकोर खाना में जन्म राशि के नम्बर का अंक लिख देवें चाहे सामुद्रिक वाले उस ऊपर के चौकोर को खाना नं० 1 दे देवें, बात एक ही है। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चित, धनु, मकर, कुम्भ, मीन। मान लो कि किसी की जन्म राशि या जन्म लग्न की राशि है सिंह, जिसका नम्बर है पांचवा, ज्योतिष वाले तो लिखेंगे खाना नं० अ में 5 , बी में 6 और आखिर पर सी में अक 4 लिखेंगे। सामुद्रिक बातेंखाना नं० अ में अंक 1, ब में अंक 2 और इसी तरह आखिर सी में 12 अंक लिखेंगे। ज्योतिष वाले खाना नं० 1 ब को कहेंगे दूसरा एवं इससे पपले वाला को जन्म लग्न से दूसरा है और सामुद्रिक वालों के लिए खाना न होगा खाना नं0 2 आद खाना नं0 "अ" से दोनों विद्याओं ने शुरु करना है ज्योतिषयों को लग्न कहलाता है, सामुद्रिक में तो "अ" का मुकाम खाना नं0 1 होता है गोया खाना नं0 "अ" में अंक। लिखाने से सामुद्रिक में राशि नं0 1 में मुराद नहीं हो जाती। वो लग्न है "अ" एक व "ब" को 2, आदि क्रमशः अंक देकर लिखी हुई कुण्डली होगी---"लाल किताब की पक्की कुण्डली"। खाना नं0 "ह" में 4 का अंक देकर ज्योतिष वाले कहेंगे कि वो "ह" का घर कर्क राशि नं0 4 है मगर नहीं वास्तव में यह घर सामुद्रिक में खाना नं0 4 और ज्यातिष में जन्म से चौथा घर है सामुद्रिक में राशि नक्षत्र को बाद में उड़ा ही दिया गया है कुण्डली के अंक बदलने से सामुद्रिक वालों ने लग्न से हर एक घर गिन लिया अब यह राशि नम्बर का अंक नहीं लेंगे या यूं कहो कि सामुद्रिक वाले एक पक्की कुण्डली बना कर इसमें सबसे ऊपर के चोकोर में एक का अंक लिखकर तमाम 12 खानों में अंक लिख लेंगे और जहां सामुद्रिक वालों का अंक नं0 1 है इस घर में ज्योतिष वालों की बनाई हुई कुण्डली के इस घर के अंक वाले ग्रह को लिख देंगे जो अंक कि इन्होंने जन्म राशि का सबसे ऊपर के चोकोर खाने में लिखा है अब सामुद्रिक

वाला की कुण्डली के हिसाब से हर ग्रह का पता लग गया कि वो जन्म लग्न से कौन से घर है। इस तरह जब पता लग गया कि हर एक खाने में कौन-कौन सा ग्रह है तो "लाला किताब" के अनुसार जवाब देखना शुरू करें।

चन्द्र कुण्डली:-

जिस घर में ज्योतिष वालों ने शब्द चन्द्र का ग्रह लिखा हो इस घर में जन्म लग्न वाली राशि का नम्बर लगा कर सभी खाना में 12 अंक पूरे कर लेवें इस तरह से जहां भी एक का अंक आए वो घर सामुद्रिक में पहला ही खाना होगा। चन्द्र कुण्डली के देखने के लिए अब सामुद्रिक के हिसाब से एक कुण्डली तो जन्म कुण्डली कहलाई दूसरी चन्द्र कुण्डली दोनों का फर्क यह होगा कि जन्म लग्न में चन्द्र का ग्रह खाना नं03 पर आ गया और चन्द्र कुण्डली में वही चन्द्र खाना नं0 5 पर हो गया, क्योंकि जन्म राशि दोनों हालतों में सिंह राशि नं0 5 फर्ज कर लिया था अब दोनों कुण्डलीयों का जुदा-जुदा हाल "लाल किताब" के हिसाब से अलग-अलग देखा गया फर्क हालात में यह होगा कि चन्द्र कुण्डली का असर अचानक और सहवन और भले भुलाए कभी-कभी व्यक्त होगा और यो भी महादशा के खाली रखे हुए सालों में और धोखे के ग्रह के सालों में। यह होगा पक्का भेद जिसे राशि फल का कर शक्क का फयदा उठा लेंगे। (राशि फल व ग्रह का फर्क आदि अलग जगह लिखा है)। दूसरा उदाहरण

पैदाइश 2 चैत्र, सम्पत् 1992, शनिवार स्थान लाहौर छावनी खास, 5 बजे सुबह अनुसार 14-3-1936 हो तो इस दिन की

चन्द्र कुण्डली

जन्म कुण्डली

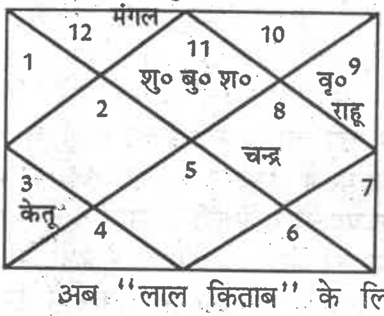

अब "लाल किताब" के लिए पैदाइश के दिन वाली कुण्डली में चन्द्र को जन्म लग्न की राशि यानि अंक नं0 11 दिया तो वही चन्द्र कुण्डली होगी या अंक नं0 1 अपनी ऊपर की जगह किया तो "लाल किताब" के अनुसार चन्द्र कुण्डली होगी।

अब ऊपर की चन्द्र कुण्डली से इस व्यक्ति की औरत का हाल इसी तरह ही देख लें जिस तरह कि जन्म कुण्डली से मर्द का हाल देखते हैं, वर्ष फल भी उसी हिसाब और ढंग पर होगा जिस तरह कि जन्म कुण्डली और मर्द का है, फर्क सिर्फ यह है कि शादी है, से पहले ऊपर की चन्द्र कुण्डली अचानक और सहवन असर दिया करेगी, मगर शादी के दिन या औरत के आने का पूरा-पूरा फल देगी जो औरत का हाल होगा और इसी शख्स को राशि फल देगी जो औरत का हाल होगा और इसी व्यक्ति को राशि फल बन कर मदद देगी।

हस्त रेखा में चन्द्र कुण्डली

अगर कोई निशान अपनी स्थित जगह की बजाए किसी दूसरी जगह या अंगुली या हथेली पर पाया जाए तो वही राशि का निशान (चौरस) (जोड़ा) पाया जाए

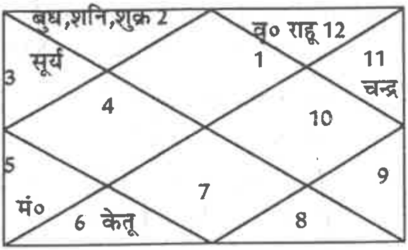

जो राशियों की गिनती में नं0 3 पर है मगर कुण्डली के खानों अब मिथुन राशि का निशान जिस खाना में वाक्या हो इस खाना नं0 1 लिख कर राशियों की गिनती की तरकीब से कुण्डली के 12 के 12 खाने पुर कर लिए जाएंगे।

ज्योतिष विद्या में जन्म कुण्डली बनाने का ढ़ग

ज्योतिष विद्या में :-सूर्य गिना जाएगा जिस राशि नम्बर में:-

राशि नं0 ।	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
प्रतिदिन	3घड़ी	4	5	6	6	6	6	6	6	5	4	3
प्रतिराशि	विशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्र	असूल	कार्तिक	मागगस	पौष	माघ	फाल्गून	चैत्र

सूर्य की अवधि एवं माह का नाम

एक घड़ी==मिन्ट, राशि नं0 1-12 =3 घड़ी, 2-11--4 घड़ी, 3-10=5 घड़ी, 4,9,5,8,6,7===छह घड़ी प्रत्येक को ।

पुन काल = असूल समय सूर्य का राशि स्थित में दाखिल होने का।

लाहौर में समय जन्म बजे सुबह शनिवार, 2 चैत्र सम्वत् 1992 अनुसार 14-3-1936 पंचाग अनुसार सन् 1936 से 17 मार्च वाली कुण्डली बनाई है। जिसमें सिर्फ चन्द्र का ग्रह नहीं लिखा जंत्री के सफा 12 खाना नम्बर दाखिला राशिचन्द्र के अनुसार 13-3-36 से शुरु करके चन्द्र को समाप्त किया है।

रविवार 15-3-36 तक यानि। 13-3-36 को चन्द्र हुआ बृश्चिक राशि में 3 घड़ी 45 पल (टाइम चलना है मद्रास का लाहौर व मद्रास का फर्क सफा नं0 54 पर जो 32 मिन्ट लिखा है) इसके के बाद और रहेगा बृश्चिक में रविवार के दिन

15-3-36 समय 53 घड़ी 19 फल तक चाहे 14-3-36 को चन्द्र बृश्चिक में ही था जो खाना नं0 8 में लिख देंगे, लग्न की बुनियाद वस्तु है जिसके लिए पृष्ट 49 सहायक होगा और अनुसार 6-6 बजे तक कुम्भ लग्न या राशि नम्बर 11 होगा। 14-3-36 को सूर्य (32 मिन्ट का अन्तर सिर्फ इस समय होगा जब समय पैदाइश घड़ी पलों में हो नहीं तो कोई फर्क न लेंगे । कलकत्ता व हावड़ा में विशेष अन्तर नहीं है। आधा घण्टा लगभग एक अलग बात है) निकलता हुआ लिखा है पृष्ट नं0 49 पर 7-38 बजे तक मीन राशि में है और इसके बाद मेष,वृष आदि क्रमानुसार दर्ज है।

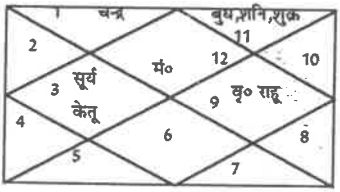

इस बच्चे का जन्म समय है 5 बजे सुबह मगर जंत्री में 4-30 बजे सुबह से लेकर 6-6 बजे सुबह तक कुम्भ लग्न में सूर्य निकलता है जो लाहौर और मद्रास के फर्क से 32 मिण्ट बाद तक यानि 6-6 जमा 32 मिण्ट या 6-38 तक रहेगा, इसलिए बच्चे का जन्म लग्न हुआ कुम्भ या राशि नं0 11 या सबसे ऊपर की चोकोर के खाने में जहां कि अंक नं0 12 लिखा है अब असल कुण्डली के लिए अंक नं0 11 भय खाना नं0 11 वाले ग्रह उस चोकोर में कर देंगे।

जन्म कुण्डली ज्योतिष की

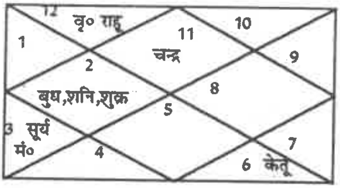

चन्द्र कुण्डली में जिस खाना नम्बर मय चन्द्र ऊपर के हिसाब से आए वो खाना नम्बर ऊपर के चोकोर में लिखकर वही ग्रह नकल कर देवें। ऊपर की मिसाल से चन्द्र कुण्डली होगी ''लाल किताब'' के हिसाब से वही ज्योतिष वाली जन्म् कुण्डली सामने वाली होगी सिर्फ अंक नम्बर बदला गया बाकी ग्रह बादूस्तूर ज्योतिष वाले जो जन्म कुण्डली में थे लिखे गए हैं। अब इल्म ज्योतिष वाली चन्द्र कुण्डली भी ''लाल किताब'' के अनुसार कुण्डली हो गई तरीका==कुण्डली नं02 में जिस घर में चन्द्र लिखा है वहां हिन्दसा नं0 11 जो जन्म लग्न था लिखा तो ज्योतिष वाली कुण्डली नं0 5 हुई। चन्द्र कुण्डली में फालतू अमल के लिए कुण्डली-- ''लाल किताब'' जिस में अक्षर नं0 1 लिखा गया है वो घर सबसे ऊपर कर ले या आखिरी चन्द्र कुण्डली नं0 5 से नं0 4 हो विशेष कर 'लाल किताब'' के अनुसार जवाब देखने के लिए आखिर पर सिर्फ दो कुण्डलियों निशान नं0 3 जन्म कुण्डली और नं0 4 चन्द्र कुण्डली होगी।

प्रभाव में फर्क क्या होगा:- जन्म कुण्डली, पक्का और लगातार फल। चन्द्र कुण्डली, अचानक और किस्मत का नजारा होगा।

आपसी :-(1) ज्योतिष विद्या में कुण्डली की बुनियाद जन्म वक्त का लग्न है जिस समय लगभग 2-2 घण्टे लगातार एक ही होता और एक ही होता है मान लो जब 4 बजे तक पैदा हुये बच्चे के लिए एक ही लग्न और एक ही लग्न के सब ही की किस्मत का जवाब लगभग एक ही होगा।

(2) सामुद्रिक विद्या के 12 साल या नाबालिग बच्चे की रेखा का विश्वास नहीं गिनते ऊपर के दोनों सम्बंधियों का जवाब दोनों विद्याओं की कुण्डलियों के लिए मिल जाने पर दूर होगा, लेकिन हो सकता है कि आखिर पर दो कुण्डलियों किसी तरह भी न मिले तो ऐसी हालत में दोनों को गल्त समझ से अनुसार न होगा। फर्क यह होगा कि अगर ज्योतिष विद्या वाली कुण्डली ने सिर्फ इस व्यक्ति का जाती हाल बाला तो हस्त रेखा की कुण्डली इस बच्चे की आम हालत बताएगी यानि अगर इस हस्त रेखा वाली कुण्डली के जवाब इस व्यक्ति से न मिले तो उसके बाप या बाबे या दादे से जरुर जा मिलेंगे। ऐसे हालत में पितृ या मातृ ऋण के कारण का नतीजा होगी। मगर कुण्डली गलत न समझी जाएगी। इसलिए ऐसी ज्योतिष विद्या का या हस्त रेखा वाले टेवे के लिए सबसे ऋण का उपाय करें। इस अन्तर का यह मतलब न ले लेवें कि दोनों इल्मों की कुण्डलियों पर नजर मानी ही न की जाए कि फर्क क्यों है लेकिन यह है कि हर चन्द्र देखा भाल की और फिर भी फर्क ही रहा तो ऊपर का इलाज सहायक होगा मगर जरुरी बात यह होगी कि फर्क निकाल ही लिया जाए।

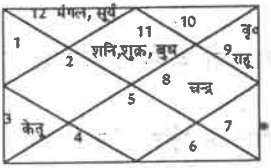

व्यक्ति का दांया हाथ (सूर्य) जाहिरा अपने आपका काम और बांया हाथ (चन्द्र) तकदीर, बुजुर्गो का हिस्सा दैविक सहायता की हालत से सम्बंधित है औरत का यही हाल उल्ट हाथों से माना है। अगर किसी व्यक्ति का दायें और बायें हाथों में आपस में अन्तर हो तो दोनों हाथों का हाल बिल्कुल अलग-अलग देखकर फिर दोनों के प्रभाव की व्याख्या को लेकर पूरा नतीजा होगा। इसकी आम जिन्दगी में दांया हाथ अधिक प्रभाव करेगा मगर बांए का प्रभाव अचानक कम होगा जो चन्द्र और शुक्र के समय अवश्य प्रभाव देगा। नर ग्रह सूर्य, वृहस्पति और मंगल का फल दांए हाथ पर ज्यादा होगा बाकी ग्रह न नर और न ही मादा है इसलिए दोनों तरफ यानि दांए और बांए के हिसाब वो अपना-अपना प्रभाव दोनों के समय में वे दिया करते हैं। आम तौर पर इन्सान दिमाग के बांए तरफ के खानों

से कम ही काम लेता है। जिनका सम्बंध बांए हाथ से है इसलिए अगर कोई रेखा बांए हाथ पर ही होवे और बांए पर जाहिर न हो तो इस रेखा का प्रभाव कम ही गिना है क्योंकि इस प्रभाव को पैदा करने के लिए इन्सान कभी ध्यान में ही न लाएगा। प्राकृतिक तौर पर इसका अगर प्रभाव व्यक्त हो जाए तो मुमकिन है।

हस्त रेखा से जन्म कुण्डली बनाने का ढंग

जब कोई रेखा एक पर्वत से दूसरे पर्वत में चली जाए तो जिस पर्वत से निकली थी इस तरफ से पर्वत का घर कुण्डली में वो होगा जहां जाकर वो रेखा समाप्त हुई यानि अगर चन्द्र से शनि को रेखा होवे तो कुण्डली में शनि को खाना नं0 4 मिलेगा और चन्द्र को खाना नं0 10 मिलेगा बाकी जब ग्रह का निशान और जिस पर्वत पर जाए वो ग्रह उसी नम्बर पर कुण्डली में होगा यानि अगर [चोकोर] शनि के पर्वत पर हो तो मंगल खाना नं0 10 में होगा आदि-आदि । हाथ में अगर कोई रेखा (या निशान) न ही हो तो पवर्तो की ऊँचाई निचाई से ही कुण्डली मुकम्मल होगी। इसी तरह से पवर्तो के घर और निशान जहां कहीं पाया जाए उसी हिसाब से ग्रहों का कुण्डली में भर लिया जाएगा। नीचा पर्वत और दो ग्रह जिसका निशान न मिले नीच फल और नीच राशि का होगा और अगर पर्वत कायम हो और निशान इसका न मिले तो अपने घर का मालिक गिना जाएगा पर्वत की सम्बंधित रेखा से शक दूर होगा।

हाथ पर जन्म कुण्डली के खाने

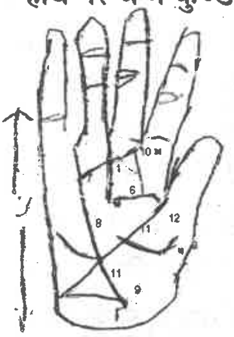

(1) हर ग्रह स्थित रेखा भी कुण्डली का खाना नम्बर हो जाती है।

(2) तर्जनी और मध्यमा के नीच "अ" खाना नं0 11 शनि का हैडक्वार्टर और शब्द "ब" की जगह खाना नं0 8 होता है।

(3) वृहस्पतिः-कुण्डली का खाना नं0 1 होगा यदि किस्मत रेखा की जड़ पर चार शाख खत ** हो सूर्य पर्वत की तरफ बुध एक चक्र हो वृहस्पति का विशेष अपना निशान > या दोनों हाथो को इकट्ठा गिना कर अंगुलियों पर संख्या में सिर्फ एक शंख या एक चक्र या एक सीधा खत वृहस्पति के अपने पर्वत पर पाया जाए तो वृहस्पति होगा कुण्डली का खाना नम्बर एक में।

दो सदफ या वृहस्पति के पर्वत पर 2 सीधे खत तो होगा खाना नं0 2 में ।
तीन सदफ, 7 चक्र या 7 सीधे खत या गृहस्थ रेखा वृहस्पति के पर्वत पर हो वृहस्पति होगा खाना नं0 3 में।

चार सदफ या 4 शंख या 4 खत या 2 चक्र, चन्द्र पर शंख हो, सदफ एक, चन्द्र रेखा वृहस्पति के पर्वत पर खत्म हो तो वृहस्पति होगा खाना नं0 4 में। पांच सदफ, 5 चक्र या 5 खत तमाम अंगलियों पर हो या सेहत रेखा नीचे जाकर किस्मत के शुरु हिस्सा में मिल जावे यानि कलाई से किस्मत रेखा निकल कर सेहत रेखा से मिल जाए तो वृहस्पति होगा खाना नं0 5 में।

छः चक्र या किस्मत रेखा की जड़ में केतु का निशान हो या वृहस्पति से शाख खाना नं0 6 के हाथ की सीमा में समाप्त होवे तो वृहस्पति हो खाना नं0 6 में। 3 चक्र, 3 शंख, 3 सदफ, 3 खत, 6 खत, 4 चक्र, 5 शंख या शुक्र का वृहस्पति पर हो यानि या तो वृहस्पति का पर्वत बहुत बुरा हो या नरम हाथ का वृहस्पति हो, औलाद रेखा, शादी रेखा को काटे, किस्मत रेखा की जड़ पर बुध का दायरा हो। शुक्र के पवर्त पर भाइयों की रेखा लम्बी-लम्बी और टेढ़ी हो सिर रेखा से अलग होकर वृहस्पति के पवर्त का रुख करे तो वृहस्पति होगा खाना नम्बर 7 में । 2 शंख, 8 सीधे खत ग्रहस्थ रेखा समान अलफ हो। आठ चक्र या 11 चक्र जब 6 अंगुलियों हो, किस्मत रेखा सूर्य रेखा से न मिले, वृहस्पति का पर्वत बिल्कुल न हो, हाथ पर [∇] त्रिकोना हो, किस्मत रेखा या दिल रेखा दो शाखी हो। किस्मत रेखा की जड़ पर [∇] त्रिकोना हो तो वृहस्पति खाना नं0 8 में। किस्मत रेखा सीधी डण्डे की तरह शुरु होकर खड़ी हो तो खाना नं0 9 में सूर्य के पर्वत पर बुध एक सदफ हो 10 चक्र हों या उम्र रेखा चन्द्र पर समाप्त हो यानि पितृ रेखा बनी हो, उर्ध्व रेखा पाई जाए ।

	वृहस्पति होगा कुण्डली का खाना नं0
वृहस्पति और शनि के बुर्ज दो शाखी रेखा से मिले हों नौ	10
चक्र या सिर की श्रेष्ठ रेखा हो।	11
3 खत, 6 शंख, 12 चक्र (जब अंगुलियों 6 हों) किस्मत रेखा की जड़ पर राहू का निशान हो या मच्छ रेखा शुक्र के पर्वत पर या शुक्र ।	12

व चन्द्र दोनों पर्वत के बीच मुंह ऊपर को किए हुए और उर्ध्व रेखा या उम्र रेखा इसके मुंह में हो। (नोट:-अंगुली की पोरियां से लिया हुआ वृहस्पति सिर्फ राशि नम्बर का होगा, पर्वत नम्बर का न होगा हाथ की हथेली से लिया हुआ वृहस्पति पर्वत के खाना नम्बर का होगा । बशर्ते कि वृहस्पति के निशान चक्र, शंख, सदफ से न लिया हुआ हो, क्योंकि ऐसे निशानों से लिया हुआ वृहस्पति भी राशि नम्बर का होता है सिर्फ वृहस्पति की रेखा या वृहस्पति के खास निशान अन्दर यह से लिया हुआ वृहस्पति पर्वत नम्बर का होगा।

सूर्य का ग्रह

शुक्र बुध दोनों सूर्य की सेहत रेखा से मिल जाए और सूर्य रेखा खुद दुरुस्त हालत में पर्वत नं0 1 में पाई जाए। सूर्य का ति वृहस्पति सितारा सूर्य के अपने पर्वत पर बतरफ बुध हो।

सूर्य का पर्वत कुण्डली का खाना नं0 1 है मगर सूर्य खाना नं0 1 में तब ही होगा जबकि सूर्य के पर्वत पर बुध की तरफ सूर्य का सितारा कायम हो वरना सूर्य खाना नं0 5 का होगा। (सूर्य रेखा या सेहत रेखा खाना नं0 11 के आखिर तक)

किस्मत रेखा और सूर्य रेखा जब वृहस्पति का रुख करे
मगर शनि के पर्वत पर न हो। 2

सूर्य के शाख मंगल नेक को। 3

सूर्य के पर्वत से शाख चन्द्र के पर्वत को मगर मंगल बद का सम्बंध
न हो, चन्द्र और सूर्य के पवर्तो के मध्य रेखा दोनों पवर्तो को मिलाती 4
मालूम हो मगर आम तौर पर मिलाए न शराफत रेखा जब मध्य से ऊपर
को झुकी हो सूर्य रेखा दिल पर खत्म हो।

सूर्य रेखा बिल्कुल सीधी सूर्य के पर्वत पर ही हो और सूर्य के
अपने घर में ही मालूम हो और सूर्य का पर्वत कायम हो
सेहत रेखा बुध से चल कर हथेली में खाना नं011 तक खत्म हो। 5

सूर्य रेखा हाथ की बड़ी सीमा में खत्म हो। 6

शुक्र के पर्वत से शाख सूर्य के पर्वत को शुक्र का पतंग हथेली पर 7
कायम हो (खाना नं0 7 में जो बुध का भी घर है बुध अलग प्रभाव नहीं करता)।

सूर्य के पर्वत से शाख मंगल बद को, किस्मत रेखा न हो, सूर्य रेखा
न होया किस्मत रेखा और सूर्य रेखा दोनों आपस में न मिले। 8

किंस्मत रेखा की जड़ पर चार शाखी खत ** हो। 9

सूर्य रेखा शनि के पर्वत पर हो। 10

सूर्य रेखा हथेली पर खाना नं0 11 बचत में समाप्त हो। 11

सूर्य रेखा हथेली पर खाना नं0 खर्च में खत्म हो। 12

चन्द्र का ग्रहः-

चन्द्र से सूर्य को रेखा हो । 1

मुहब्बत रेखा, किस्तम रेखा,चन्द्र से शुक्र होकर वृहस्पति पर खत्म हो। 2

मंगल नेक से शाख चन्द्र को होया चन्द्र रेखा मंगल नेक के पर्वत 3
पर खत्म हो।

धन रेखा जब चन्द्र से शुरु हो या रेखा के नीचे त्रिकोना V हो। 4

दिल रेखा सूर्य के पर्वत की जड़ तक ही समाप्त हो चन्द्र के पर्वत 5
से शाख सेहत रेखा में जाए।

चन्द्र रेखा जब सिर रेखा को स्पर्श करके हाथ की बड़ी सीमा 6
में समाप्त हो।

दिल रेखा जब कनिष्ठा की जड़ या बुध के पर्वत पर ही खत्म
हो जाए, चन्द्र रेखा सिर रेखा से मिलकर खत्म हो जाए तो उम्र 7
खत्म मालूम होगी ऐसी हालत में फकीरी रेखा, नशाबाजी रेखा

शराफत रेखा सिर औलाद रेखा मिल जाये, सेहत रेखा दिल रेखा को काटे।
सिर रेखा के ऊपर त्रिकोन हो, मंगल बद से चन्द्र को रेखा पितृ
रेखा या किस्मत रेखा चन्द्र के पर्वत पर तिकोन सी बनावें। उम्र रेखा 8
या किस्मत रेखा दो शाखी> ‹ हो जाए कलाई की तरफ खाना
नं0 9 के करीब आपसी मिल कर।
किस्मत रेखा चन्द्र के पर्वत से कलाई पर शुरु हो । 9
दिल रेखा मध्यम जो शनि पर्वत तक हो उम्र रेखा दिल रेखा
से मिलकर सिर रेखा, उम्र रेखा और दिल रेखा तीनों मिल जावे। 10
चन्द्र या दिल रेखा वृहस्पति की जो निकले मगर वृहस्पति तक न हो या हथेली पर खाना
नं0 11 बचत में ही समाप्त हो। 11
चन्द्र रेखा हथेली पर खाना नं0 12 खर्च में समाप्त हो जाए । 12

शुक्र का ग्रहः-

शुक्र के पर्वत पर अंगूठे की जड़ में सूर्य का सितारा है । 1
हो शुक्र से शाख सूर्य के पर्वत को हो शुक्र का पतंग हो।
अकेली शुक्र रेखा वृहस्पति के पर्वत पर वाक्या को मुहब्बत रेखा 2
औलाद रेखा, शादी रेखा को काटे, भाइयों की रेखा लम्बी और टेढ़ी वृहस्पति को हो।
गृहस्थ रेखा मंगल नेक से शुक्र के पर्वत में अंगूठे की जड़ में जाए धन रेखा
शुक्र के पर्वत से शुरु होकर मंगल नेक पर खत्म हो। 3
फकीर रेखा, नशा रेखा, शराफत रेखा सीधी लकीर लेटी हुई 4
चन्द्र शुक्र को मिलावे।
सेहत रेखा या सूर्य की तरक्की रेखा शुक्र से चल कर बुध पर समाप्त हो। 5
सेहत रेखा या सूर्य की तरक्की रेखा जब शुक्र से चल कर हथेली 6
की बड़ी सीमा खाना नं0 6 में खत्म हो शुक्र राहू का निशान हो ।
सेहत रेखा बुध से चलकर शुक्र के पर्वत की जड़ में खत्म हो या 7
शुक्र के पर्वत पर बुध का दायरा हो।
शुक्र से मंगल बद को शाख । 8
धन राशि से आकर कोई खत शादी रेखा को काट देवे । 9
शुक्र का पतंग या शुक्र रेखा शनि के पर्वत पर मध्यमा की जड़ 10
में वाक्या हो।
शुक्र से शाख हथेली पर खाना नं0 11 बचत में समाप्त हो। 11
शुक्र से शाख हथेली के खाना नं0 12 में समाप्त हो या हाथ में मच्छ रेखा हो।

मंगल नेक का ग्रह

सूर्य के पर्वत पर [ ] चोकोर हो मंगल नेक से शाख सूर्य के पर्वत में चली जाए। 1
गृहस्थ रेखा वृहस्पति के पर्वत में जा निकले । 2

मंगल नेक पर चोकोर या गृहस्थ रेखा मंगल नेक के अन्दर-अन्दर खत्म हो। 3
श्रेष्ठ धन रेखा या पृित रेखा चन्द्र से शुरु होकर मंगल नेक पर समाप्त हो। 4
मंगल नेक से शाख जब सेहत रेखा को काटे। 5
मंगल नेक से शाख जब हथैली खाना नं0 6 में खत्म हो। 6
मंगल नेक से गृहस्थ रेखा जब शुक्र में समाप्त हो।
मंगल नेक से शाख बुध में जा निकले। 7
मंगल नेक से शाख मंगल बद को । 8
किस्मत नेक की जड़ में [ ] चोकोर हो। 9
गृहस्थ रेखा शनि पर समाप्त हो । 10
मंगल नेक से शाख खाना नं0 11 बचत में हो। 11
मंगल नेक से शाख खाना नं0 12 खर्च में हो । 12

मंगल बद का ग्रह

मंगल बद से शाखा सूर्य के पर्वत को। 1
मंगल बद से शाख वृहस्पति के पर्वत को । 2
मंगल बद से शाख मंगल नेक को। 3
मंगल बद से शाख चन्द्र को । 4
मंगल बद से शाख सेहत रेखा की काटे या कलाई रेखा हथेली। 5
के अन्दर घुस आए।
मंगल बद शाख खाना नं0 6 में हो। 6
शुक्र से शाख मंगल बद में या सिर रेखा मंगल बद में या सिर 7
रेखा आखिर पर दो शाखी हो।
सिर रेखा के ऊपर त्रिकोनो हो। 8
किस्मत रेखा की जड़ में त्रिकोना हो या> दो। 9
उम्र रेखा दो शाखी हो, मंगल बद से शनि के पर्वत के रेखा चले। 10
मंगल बद से शाख खाना नं0 11 बचत में हो। 11
मंगल बद से शाखा व खाना नं0 12 खर्च में हो काग रेखा मंगल। 12
बद की पूरी निशानी होगी।

बुध का ग्रह

सूर्य के पर्वत से बुध के पर्वत रेखा हो सिर रेखा जब
उम्र रेखा से अलग होकर वृहस्पति के पर्वत का रुख करे। 2
सिर रेखा मंगल नेक में खत्म हो। 3
दिल रेखा और सिर रेखा मिल जाएं, सेहत रेखा दिल रेखा को
सिर रेखा झुकर चन्द्र के पर्वत में खत्म हो। 4
सेहत या तरक्की रेखा कायम हो जरुरी नहीं कि शुक्र के पर्वत। 5

की जड़ तक हो, सही हालत यह होगी हथेली में खाना नं0 11 की जड़ तक ही हो।

बुध से शुक्र तक सेहत रेखा कायम हो सिर की श्रेष्ठ रेखा मौजुद हो। 6

सिर रेखा की लम्बाई सेहत रेखा की हद तक हो। शादी रेखा 7

बुध पर तायदाद में दो ====हो।

सिर रेखा मंगल बद में खत्म हो या अन्त में दो शाखी हो । 8

धन राशि से शाख बुध पर या किस्मत रेखा की जड़ में

दायरा हो । 9

बुध का दायरा शनि के पर्वत पर हो । 10

बुध से शाख खाना नं011 बचत में हो । 11

बुध से शाख खाना नं0 12 खर्च में हो । 12

शनि का ग्रह

सूर्य का सितारा शनि के पर्वत पर या सूर्य के

पर्वत पर बतरफ शनि हो या शनि से शाख सूर्य के पर्वत को चली जाए। 1

उम्र रेखा वृहस्पति के पर्वत से शुरु हो। 2

शनि से शाख उम्र रेखा को काट कर मंगल नेक में गृहस्थ रेखा । 3

शनि के पर्वत पर।

उम्र रेखा और दिल रेखा मिल जाएं। 4

शनि से शाख सेहत रेखा को काटे 5

शनि से शाख हथैली में जाए। 6

उम्र रेखा और सिर रेखा मिली हुई हों या शनि से शाख 7

सिर रेखा पर या शुक्र के पर्वत में हो।

मंगल बद से शाख शनि में शनि का हैडक्वार्टर खाना नं0 8 है। 8

किस्मत रेखा की जड़ पर +त्रिशुल हो उर्ध्व रेखा हो 9

शनि के पर्वत पर अपनी रेखा । 10

वृहस्पति शनि के पर्वत की बीच जगह खाना नं0 11 होगा । 11

मच्छ रेखा जब उम्र रेखा या उर्ध्व रेखा मछली के मुंह में हो। 12

राहू केतू

इन ग्रहों की कोई रेखा निश्चित नहीं है सिर्फ निशान निश्चित है जहां निशान मिले वहीं धन कुण्डी का होगा और अगर निशान भी न हो तो दोनों ग्रह अपने-अपने घर के होंगे यानि राहू खाना नं0 12 में होगा और केतू खाना नं0 6 में होगा। मच्छ रेखा के वक्त राहू केतू ऊँच घरों में यानि राहू खाना नं0 3,6 तो केतू खाना नं0 9,12 ऊँच घर या काम रेखा के वक्त यह दोनों ग्रह नीच घरों में होंगे यानि राहू नं0 9,12 केतू नं0 3,6 में होंगे।

हथेली पर खास निशान (मर्द की सिर्फ दांए हाथ की हथेली पर नेक असर देंगे और दांए हिस्सा पर शुभ प्रभाव होगा।

ग्रह	नम्बर	निशान	प्रभाव	खाना में हो
शनि का उत्तम फल वृ० से मिला हुआ	१	मछली	दौलतमन्द,नेक भाग्यवान और चिराग खानदान का।	शनि मीन राशि में राहू नं० ३,६,केतू नं० ९,१२ में होगा
सूर्य व वृहस्पति	२	शेर	बहादुर बेधड़क मगर बेरहम	सूर्य खाना नं० ३ में
शनि व राहू	३	साँप	खजाने का मालिक यह जहरीला साँप न होगा हाथ पर इच्छाधारी गिना जाता है और शेषनाग होगा।	दाँय हाथ पर शनि खाना नं० १२ में बाएं हाथ पर शनि खाना नं० २ में।
राहू, मंगल	४	हाथी	राजा समान	राहू खाना नं० ३,६ में
सूर्य शनि	५	कौआ	फरेबी,काग स्वभाव	शनि नं० १ में राहू केतू दोनों रद्दी।
शुक्र शनि	६	गाए	धुमने में लाभ	शुक्र खाना नं० १२
मंगल बद शनि	७	बैल दुल्हा	चोर, धोखे बाज	मंगल नं० ४ शनि नं० १, मंगल खाना नं०३
मंगल नेक व शनि	८	कमान	बहादुर दिलावर	मंगल खाना नं० ३
बुध उत्तम	९	फूल	दौलतमन्द, उत्तम जिन्दगी	बुध खाना नं० ६
वृहस्पति का डडा	१०	झण्डा	धार्मिक विद्या में उत्तम	वृहस्पति खाना नं० ७
चन्द्र, वृहस्पति	११	छत्र	दौलत मन्द ध्वजाधारी	चन्द्र नं० २ वृह नं० ४
सूर्य व बुध	१२	पहाड़	वजीर समान	सूर्य नं० १ बुध नं०७
शनि व बुध	१३	गऊ	रईस	शनि नं० ७ बु० नं०११
मंगल बद वृ०	१४	दाल	बुजदिल दरिद्री	मं०नं०४,वृ० नं० ८
मंगल सूर्य	१५	तलवार	दुमन पर गलवा	मं०नं० १ में
ऊँच चन्द्र	१६	घोड़ा	दौलतमन्द,शाह सवार	चनद्र नं० २ में

वृहस्पति घर का मालिक	१७	मन्दिर	पूजा पाठी परहेजगार	वृहस्पति नं० २ में
शनि केतू	१८	चौसर, चौपड़	खिलाड़ी उत्तम	शनि नं० ६,केतू नं०१०
बुध अपने घर का	१९	कलम	मीर, न्यायक	बुध खाना नं० ७
मंगल नेक वृहस्पति शंख चक्र	२०	कान का कुण्डल	तीनों निशान इक्टठे ही	वृहस्पति नं०१ मं० नं०१
बुध,वृह, राहू	२१	मूसल	कन्जूस	बुध नं० १२ में
बुध, वृहस्पति	२२	ऊंखल	रोटी से भी तंग (उँखल)	वृहस्पति नं० ७ में
मंगल बद की रेखा	२३	चूल्हा	तंगदस्त	मंगल खाना नं०८
दोनों इक्टठे ग्रह	२४	सूर्य नं०१	राजा समान दूसरों से दान लें,मगर बात अचानक हो।	चाहे नं० १ में चाहे नं० ४ में
शनि	२५	पेड़	जायदाद का मालिक	शनि नं० १० में
मंगल नेक	२६	चौकी	तख्त का मालिक	मं०नेक नं० १०
सूर्य-चन्द्र	२७	रथगाड़ी	राजा महाराज	सूर्य नं० ४
बुध शुक्र	२८	तराजू	व्यापारी	खाना नं०१,नं०७
वृहस्पति घर का	२९	पालकी	बहुत आराम पाये	वृ० खाना नं०९
शनि उत्तम	३०	आंख	अमीर परन्तु गरीब से धन कमायें	शनि नं० ११ में
बुध वृहस्पति	३१	नाक	छोटा व्यापारी	बुध नं० १२
शनि	३२	त्रिशुल	जीवन अच्छा व उत्तम	शनि नं० १२
शनि	३३	तिल	दांए हाथ की हथेली पर जो मुट्ठी बन्द होने पर मुट्ठी के अन्दर छूप जाए तो दौलतमन्द अगर हथेली की पीठ पर या बांय हाथ पर हो तो फजूल खर्च और रुपया जाया करें। शरीर के ऊपरी भाग पर शुभ प्रभाव हो, बांए और पीठ की तरफ विशेषकर।	

शनि	३४	पद्म	एक से चार तक राजा, बड़ा साहब ५ से ८ तक महाराजा, ८ से आगे ९ या ज्यादा योगी होगा।
शनि	३५	गदा	एक हो तो सरदार, २ से ५ तक तख्त नहीं स्वयं भगवान् की शक्ति को मानने वाला हो, ५ से अधिक हो तो ब्रह्म ज्ञानी होगा।

माथे पर निशानात का प्रभाव केवल आयु पर होगा जिसका जिक्र उम्र रेखा में हुआ है।

बन्द मुटठी व कुण्डली

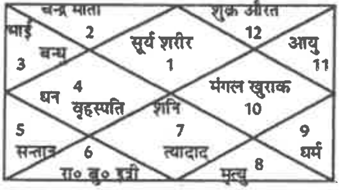

बुध (आकाश) और वृहस्पति (हवा) को गांठ लगाकर बांध लेने वाली चीज को बच्चा गिना तो बच्चा की हर गांठ से नर ग्रहों की मिलाई हुई चमक इन्सानी किस्मत का खजाना हुई और इन सब गांठों से गांठा हुआ सामुदिक का ज्ञान सब भेदों के खोलने वाला निश्चित हुआ जिसमें बन्द मुटठी को ग्रह कुण्डली माना गया तो (यह कुण्डली तमाम ग्रहों के अपने-अपने ऊँच होने के घरों की बुनियाद पर रखी गई है बन्द मुट्ठी का अन्दर या बच्चा का साथ लाया हुआ अपनी किस्मत का खजाना) सभी ही हर ग्रह जवानी का हाल देखने के लिए खाना नं0 1,7,4,10 होंगे। स्वयं अपना बचपन और जन्म से पहले माता-पिता की हालत 9,11,12 होंगे। सन्तान के जन्म दिन से अपना बुढ़ापा मरने पर इसके बाकी रहे हुओं का हाल खाना नं0 2,3,5,6 होंगे।

मौत बीमारी, मन्दा, जमाना खाना नं08- स्थान होगा जो आगे की बजाए पीछे को देखने वाला, मौत निमानी का फन्दा है।

100 प्रतिशत दृष्टि के खाना नं0 1-7-10 होंगे, साथ लाए हुए भरे खजाने।

50 प्रतिशत दृष्टि के खाना नं0 3-11-5-9 होंगे दूसरों की सहायता से पैदा करदा हालत।

25 प्रतिशत दृष्टि के खाना 2-8,12-6 रिस्तेदारों से ली हुई चीजों।

राशियों के वगैर सिर्फ ग्रहों से ही हर खाना का प्रभाव देखने का ढंग:-

देख लो कि हर एक ग्रह क्या है (चाहे वो कुण्डली के किसी भी खाने में हो जैसा कि उस बैठे हुए ग्रह का कुण्डली के हिसाब से होगा वैसा ही उसका प्रभाव इस जगह दिए हुए खाना नम्बर पर होगा। फर्ज किया वृहस्पति शुक्र कुण्डली में रद्दी है तो इस नुक्ते के अनुसार खाना नं0 2 पर भी इनका प्रभाव मन्दा होगा।

खाना नं०१	ग्रह	कैफियत
१	बुध-सूर्य, मंगल-शनि	हर खाना नम्बर में इस जगह
२	बुध शुक्र	दिए हुए ग्रहों का प्रभाव
३	बुध शनि मंगल	अलग-अलग प्रभाव देखेंगे
४	वृहस्पति सूर्य का चन्द्र से सम्बंध	इस ग्रहा का खाना नं० में होगा
५	वृहस्पति सूर्य राहू व केतू का सम्बंध	--
६	बुध केतू और शुक्र	"
७	शुक्र बुध	"
८	मंगल शनि चन्द्र का सम्बंध	"
९	वृहस्पति अपने में	"
१०	शनि का राहू केतू के दाएं-बांए मिलने का सम्बंध	"
११	शनि वृहस्पति का साथ	"
१२	राहू वृहस्पति से शनि का सम्बंध	"

इधर उधर राशियों व ग्रहों के आपसी हिसाब से लिखे हुए नियमों के अनुसार लिया हुआ प्रभाव इस ग्रह का अपना और इस घर पर जहां वो बैठा हो, होगा, मगर ऊपर इस ग्रह ऊपर लिखे तंग का प्रभाव इस ग्रह का अपने बैठे हुए घर के अतिरिक्त ऊपर लिखें सम्बंध खाना नम्बर पर होगा।

नर ग्रह बोलते आपसी घर में-स्त्री बोलते शक्ति में है।

बुध है बोलता 3,6 में तो पाप नहीं बोलते दो में है।

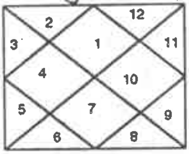

नर ग्रह चाहे कहीं भी बैठा हो परन्तु इसका उस बैठा होने घर के अनुसार का प्रभाव कुण्डली के आपस के खानों (2,4,6,8,10,12) में मिल रहा होगा। स्त्री ग्रहों को ताक के खानों (1,3,5,7,9,11) में और पापी ग्रहों का हर एक घरों में सिवाए खाना नं0 2 के जो सबका साँझा धर्म स्थान है आम तौर पर (1) जिस कुण्डली में केतू कायम या ऊँच हो इस कुण्डली में बुध, राहू नीच या नर ग्रहों। स्त्री ग्रहों से घिरा हुआ होगा। (केतू प्रबल) जिस कुण्डली में बुध कायम या ऊँच हुआ इसमें केतू नीच दुर्बल होगा। लेकिन अगर दोनों ही एक हालत या ताकत के हों तो लड़का लड़की (बुध-केतू) दोनों ही एक शक्ति और हालत के होंगे या जब लड़का लड़का एक ही समय से इकट्ठे पैदा हुए हों तो (लड़का) केतू समास होगा। अगर केतू के घर में नं0 6 में या केतू के साथ बुध हो तो केतू नीच होगा, बुध नीच न होगा। या कि ऊँच होगा। अगर राहू खाना नं0 12 में बुध के साथ हो तो बुध नीच होगा । लेकिन राहू ऊँच होगा। खत "अ-ब" की बुध की रेखा है जो शुक्र के पर्वत में जो निकलती है हाथ पर यही खत सूर्य की तरक्की रेखा कहलाती है। खत "स-ह" वृहस्पति की रखा है जो चन्द्र से वृहस्पति में जा

निकलती है और पितृ रेखा कहलाती है। खत "अ-ब" के नीचे की तरफ त्रिकोन "अ-ब-स" के खानों में सूर्य वा बुध चाहे किसी भी घर में (3 से 8) इकटठे हों या अकेले-अकेले हो बुध सहायता देगा सूर्य को ऊँच होने में यानि सूर्य नेक होगा, वास्ते उम्र स्वयं मालिक कुण्डली व कबीला इस खत "अ-ब" के ऊपर की तरफ की तिकोना यानि "अ-ब-ह" के खानों में शनि या बुध चाहे इकटठे चाहे अलग-अलग किसी भी घर में हो (1,2,9,12) बुध सहायता देगा शनि को ऊँच फल देने के लिए। शनि नेक होगा वास्ते उम्र स्वयं मालिक कुण्डली व कबीला इसका। ऊपर की तिकोन में अगर सूर्य हो जाए, शनि वाली त्रिकोन में और शनि हो जाए सूर्य वाली त्रिकोन में तो ऊपर के हिसाब से बुध का सम्बंध न लेंगे और न ही इस हालत में सूर्य शनि साँझा होंगे।

(2) त्रिकोन "अ-स-ह" में ,खाना नं0 1 से 5 और 12 वृहस्पति ऊँच होगा और सूर्य को सहायता देगा, चाहे सूर्य किसी भी घर में वाक्या हो। त्रिकोन "स-ब-ह" में खाना नं0 6 से 11 में वृहस्पति ऊँच होगा और सहायता देगा शनि का, चाहे शनि कुण्डली में 1 से 5 व 12 किसी भी घर में होवे (ऊपर के नं0 8-9 का मुकाबला) 1,2 का बुध सहायता देगा शनि को, 3 से 8 का बुध सहायता देगा सूर्य को 1,9 से 12 का बुध सहायता देगा शनि को।

ग्रह कुण्डली की मकान के हिसाब से दुरुस्ती की जांच

कुण्डली के खाना नं0 9 वाले ग्रह का सम्बंध मकान, इस कुण्डली वाले का जद्दी मकान होगा और खाना नम्बर एक के ग्रह की ऊपर लिखी सभी शर्ते इसके अपने बनाए हुए मकान में मौजूद होंगी। अगर यह खाने खाली हों तो दूसरे मकानों से ग्रह कुण्डली की दुरुस्ती देखेंगे। कुण्डली खाना नं0 1 से चल कर अगर 9 को जावे या मकान से बाहर को निकलें तो जिस तरफ दांया हाथ होगा इस तरफ मकान के सभी ग्रह जो खाना नं0 1 से 8 तक हों अपना सबूत देंगे। इसी तरह अगर 12 नम्बर खाना से अपने आपको खाना नं0 9 की तरफ आते हुए गिने या मकान में बाहर से आकर दाखिल होने लगे तो खाना नं0 12 से 12,11,10 के घरों के ग्रह दाई तरफ मकान के सबूत देंगे। किस्मत का ग्रह जिस घर में मिल उसी खाना नम्बर का सम्बंधित मकान से सभी कुण्डली कुण्डली के ग्रह की दुरुस्ती मालूम होगी। मकान से ग्रह जिस दुरुस्ती देखते वक्त जिस तरह से किस्मत का ग्रह ढूंढते हैं इसी तरह ही क्रमानुसार हर खाने में से ग्रह ढुढेंगे। मकान की शक्ल जिस ग्रह से मिल जाए वो ग्रह कुण्डली में जिस जगह हो वो दुरुस्त गिना जाएगा। जिस ग्रह का प्रभाव इसके सम्बंधित मकान मे देखना हो उसे बुध की खाली जगह (मकान के मध्य खाली जगह समझ कर) रख कर इस ग्रह के दांए बांए की वस्तुओं का प्रभाव देखेंगे।

कुण्डली के खानों के हिसाब से मकान:-खाना नं0 1=अपना बनाया मकान हो। खाना नं0 2=ससुराल खानदान, खाना नं0 3=भाई-बन्धु, खाना नं0 4=माता के खानादान, खाना नं0 5 औलाद के बनाए हुए, खाना नं0 6=नाना नानी का, खाना

नं0-7=लड़कियों के रिस्तेदारों के खाना नं0 8=जद्दी शमशन, खाना नं0 9 =पुशताना मकान, खाना नं0 10 साला रिहायशी खाना नं0 11=खरीद कर मकान, खाना नं0 12=बनाया मकान।

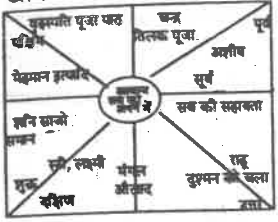

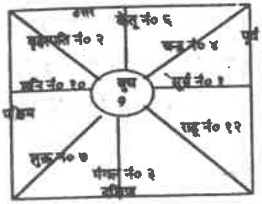

हर मकान किस ग्रह का है मकान की शक्ल जिस ग्रह की सम्बंधित शक्ल से मिलती हुई हो वो मकान उस ग्रह का होगा:-

मकान में हर कोना दिए हुए ग्रह अपने-अपने मकान में अपना-अपना प्रभाव व्यक्त कर दिया करते हैं जैसा कि वो कुण्डली में बैठे हों, हर एक मकान में हर ग्रह की पक्की जगह कुण्डली में दी हुई जगह होगी, कुण्डली के खानों में

मकान व सेहन का सम्बंध –बारह खाने

अगर कुण्डली में हर एक खाने को एक घर मान लिया जावे तो उसकी दृष्टि से सम्बंध रखने वाला खाना उस मकान का सेहन होगा। घर वाले ग्रह का अपने मकान के सेहन पर अपना हक होगा। बेशक ग्रह का घर कुण्डली के बाद के नम्बर का ही क्यों न हो लेकिन माने हुए खाना के ग्रहों के प्रभाव का आखिरी फैसला करना मालिक मकान के हाथ में होगा।

सभी ग्रहों की बड़ी रेखाएं:= हर पर्वत में अलग-अलग है) रेखा की दुरुस्त हालत के प्रभाव से मुराद ग्रह के कायम होने की हालत का असर और टूटी फूटी रेखा के प्रभाव से शुभ ग्रह के कायम न होने यानि दुश्मनी हालत से मुराद होगी। दुरुस्त हालत में ग्रह की ऊँच हालत और टूटी फूटी हालत में ग्रह की नीच हालत भी शामिल होगी।

मकान कुण्डली के पक्के खाने:-

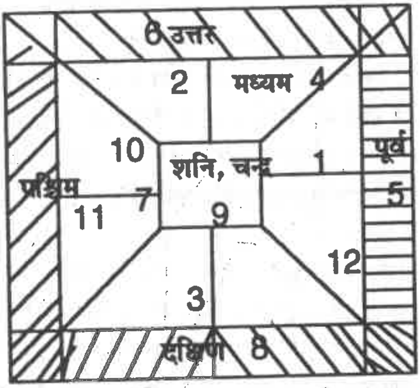

अगर घर हो खाना नं0	आंगन होगा खाना नं०	किस आंगन का ग्रह होगा
1	7	मंगल
2	8	चन्द्र आयु
3	11	सूर्य,वृहस्पति
4	10	चन्द्र
5	9	वृहस्पति
6	12	केतू
7	1	शुक्र
8	2	मंगल बद
9	5	सूर्य
10	4	शनि
11	3	बुध
12	6	राहू

मकान से टेवे की दुरुस्ती:- अरुण संहिता ''लाल किताब'' के अनुसार जब खाना नं0 1 लग्न को देकर कुण्डली में तैयार हो जाए तो मकान कुण्डली में तमाम ग्रहों को नकल कर ले, अब मकान कुण्डली में तमाम दिशाएं उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम आदि स्थित हैं । मान लो जन्म कुण्डली में सूर्य खाना नं0 9 में हो तो मकान कुण्डली में सूर्य कुण्डली के समय यह खाने में लिखा जाएगा जिसकी दुरुस्ती के लिए इसके सही मकान में खुला आंगन या सूर्य की रोशनी पड़ती होगी। जन्म कुण्डली में शुक्र खाना नं0 5 का हो तो मकान की कुण्डली में शुक्र पूर्व की दीवार होगी। जो कच्ची मिट्टी की होगी या गाए सम्बंध मशर की दीवार

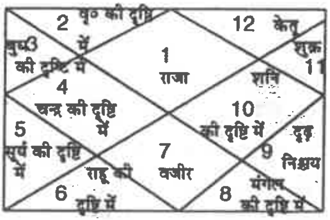

के साथ होगा आदि-आदि । सब ग्रहों की चीजें होंगी। बचाव केवल यह है कि टेवे में मन्दे ग्रह की चीज मकान में इस खाना नम्बर(मकान कुण्डली के अनुसार) कायम न होने दे। जिसमें कि वो जन्म कुण्डली में है।

मकान की हालत मालूम होने से कुण्डली बनाने का ढंग:-

अपने मकान कुण्डली की शक्ल बना लेवें। अब देखे कि इस घर में कहां-कहां ग्रह बैठे हैं।

वृहस्पति :-हवाई रास्ते दरवाजे या सामान वृहस्पति ।

सूर्य:-रोशनी, धूप, राज दरबार से सम्बंधी सामान या चीजे ।

चन्द्र:-चन्द्र, जानदार या बेबान।

शुक्र:-पश्चिमी दीवार, गाए या शुक्र की चीजों ।

मंगल:-खाने पीने की जगह या मंगल का सामान या जानदार चीजें।

बुध:-बुध की जानदार या बेजान चीजें।

शनि:-लकड़ियों की जगह सामान शनि जिस जगह हो चाहे जानदार चाहे बेजान।

राहू:-मकान की नाली मन्दा पानी, गर्की, अगर वो न हो तो धुएं की जगह।

केतू:-रोशनदान ज्यादा तरफ हों तो रोशनदान सबसे कम गिनती में जिस कमरे में हों इस जगह केतु होगा। अगर जानदार और बेजान चीजें दोनों ही हों तो जानदार चीजों की जगह को बुनियाद रखें। जिस ग्रह की कोई चीज न हो वो ग्रह अपने-अपने पक्के घर का होगा। ऊपर के ढंग जब मकान कुण्डली बन जाए तो आम कुण्डली में नकल करे।

शनि वृहस्पति दोनों की कुण्डली:-

उम्र का फैसला शनि वृहस्पति आपसी वाले टेवे के लिए कुण्डली के खाना नं0 11 के ग्रह करेंगे। ऐसे टेवे में दृष्टि व उपाय आदि आम कुण्डली से फर्क पर होंगे। यानि खास खानों में दी हुई कुण्डली में दिए हुए विशेष ग्रहों की स्थित दृष्टि होगी जिनका रुह से फैसला होगा। **आम कुण्डली के खाने :-**धोखे का ग्रह अपने धोखे के साल में खाना नं0 10 में ही आ जाए तो पूरा धोखा देगा यानि दो गुणा नेक या दो गुणा मन्दा होगा।

(2) किस्मत का ग्रह खाना नं0 2 का होगा मगर किस्मत को साथ लाने का घर बन्द मुट्ठी के खानों के क्रमानुसार से लिया हुआ घर होगा।

कुण्डली मुश्तरका खानादान :–

सूर्य जहां कि स्वयं वाले की अपनी कुण्डली में हो वृहस्पति-बाबा, चन्द्र-

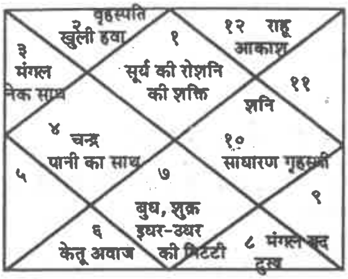

माता, शुक्र-स्त्री, मंगल-भाई बड़ा, बहिन, शनि-हम उम्र मगर सम्बंध में केवल , राहू-ससुराल, केतू-औलाद लड़का। आपसी प्रभाव 7 परिवारों तक का होगा, 3 ऊपर 3 नीचे मध्य में सूर्य स्वयं कुण्डली वाला।

कुराई हवाई:-एक महीना में जो दिन जितनी बार आए उसी खाना नम्बर में लो। उदाहरण के तौर पर एक महीना में सोमबार चार बार हो तो चन्द्र 4 का होगा लीप के साल में राहू केतू अपने-अपने घर के

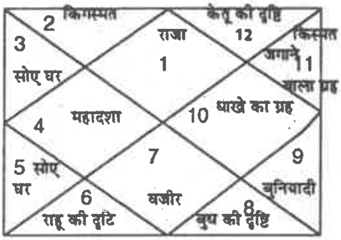

यानि राहू नं0 6 केतू नं9 12 का होगा। बाकी साल राहू नं0 12 केतू नं0 6 जब कोई ग्रह चाल कामन देवें और सभी और से मायूसी होवे तो बुनियादी रुकावट देखने के लिए यह कुण्डली काम देगी। मगर आम तौर पर नहीं।

अभ्यास कुण्डली:- ग्रह ताकत के लिए सूर्य 9/9, वृहस्पति 6/9 आदि (बुध के हाल माली) होगी। और मकान कुण्डली के कोनों के हिसाब से जन्म कुण्डली का खाना निश्चित होगा यह सिर्फ इस वक्त बरतेंगे, जब किसी ऐसी जगह जा पहुंचे जहां कि सभी दुनियावी किताबें, घन्टे, घड़ियां आदि किसी चीज की भी सहायता न मिलती हो।

किसी ताकत के ग्रह की पहचान बराए हस्त रेखा:–

इन्सान जिस ग्रह के अनुसार हो वह उस ग्रह के खाना नं0 9 का काम देगा। बेशक वो कुण्डली में कहीं ही हो, जिस किसी व्यक्ति में जिस ग्रह की शक्ति अधिक होगी व व्यक्ति ज्यादा शक्ति वाले ग्रह की चीज का ज्यादा प्रयोग करने वाला होगा। उदाहरणतय: सूर्य को नमक मिलता है और मंगल को मीठा । अब सूर्य वाले की साधारण आदत होगी कि वो ज्यादा नमक इस्तेमाल करने का आदि होगा। इसी तरह मंगल वाला इसी तरह मंगल कायम वाला मीठा ज्यादा इस्तेमाल न करेगा, नमक का ज्यादा आदी या नमक ज्यादा --में खाने वाला होगा।

नौ ग्रहों का प्रभाव :- जब किसी का वृहस्पति प्रबल मालूम हो तो जिस घर में वृहस्पति बैठा हुआ हो तो उस व्यक्ति के उस खाना नम्बर के सम्बंध, जिसमें कि वृहस्पति हो, वृहस्पति की सिफत के होंगे। अगर वृहस्पति हो ही अपने घरों में या घर का तो उसके बाबे या बाप की वही हालत होगी, जो वृहस्पति की कही

गई है। इसी तरह ही और ग्रह लेंगे। अगर किसी का सूर्य प्रबल साबित हो, मगर सूर्य पड़ा है कुण्डली में केतू के घर खाना नं0 6 में तो उस शख्स का लड़का (केतू) सूर्य की लिखी सिफतों का होगा।

(2) अगर केतू पड़ा हो मंगल के पक्के घर खाना नं0 3 में तो उस का भाई में केतू की लिखी हुई बातें पाई जाएगी। उदाहरणतय: यह है कि देख लेवें कि इन्सान का कोई ग्रह समाप्त हो गया, नष्ट हो गया, मर ही तो नहीं गया। नष्ट ग्रह वाले की मदद हर ग्रह में लिखी गई है।

मकान:-सिर्फ बुध का दायरा शुक्र की तमाम जमीन को गोल किए हुए हैं और एक का अंक शनि की आंख को सीधे खत से मिलाए हुए उर्ध्व रेखा कहलाती है, इस उर्ध्व रेखा की दाई तरफ की शाखें शुभ प्रभाव और हाथ के बांए तरफ की शाखें नफी जवाब देगी यानि उर्ध्व रेखा से दांए को शाखें हो तो मकान आदि बनेंगे, दुनिया बढ़ेगा।

बांए को हो तो शनि सूर्य के हिस्सा के नीचे हो जाएगा और सूर्य की रोशनी पर स्याही फेरता जाएगा। शनि सूर्य आपसी दुश्मनी) या किस्मत के लिखे को मिटाता जाएगा और मकान आदि बनने बन्द बल्कि बने हुए मिटा देगा। (या बिका देगा) क्योंकि मंगलबद बुरे को बुराई की तरफ चलने में सहायता देगा। दांए हाथ के दांए हिस्सा पर शनि का बुरा प्रभाव भी कम होगा यानि आम शनि की रेखाएं भी जो शनि की उर्ध्व रेखा से निकल कर दांए हाथ के दांए हिस्सा में जावें ओर हाथ के ऊपर के हिस्सा का रुख करें तो नेक होंगी। मकान वगैरह बनेंगे। दांए तरफ हाथ के निचले हिस्सा का रुख रखने वाली रेखा मकान बनना बन्द या बने हुए गिराएगी, बरा असर होगा। इसलिए ही मंगल बद ने भी बांए हिस्सा में जगह ली है जो मौत का घर है। शनि जब राहू-केतू के सम्बंध से नेक प्रभाव का हो और राहू केतू के साथ ही बैठा हो तो मकान इत्यादि बनेंगे। जब राहू-केतू के साथ ही मगर मन्दे प्रभाव का हो बनाए मकाना तभी सब बर्बाद और बिकवा देगा या यूं कहो कि वर्ष फल के हिसाब से जिस साल शनि जब राहू केतू के सम्बंध वाले हिसाब से जाती स्वभाव का नेक प्रभाव साबित हो रहा हो या राहू के साथ ही बैठा हो तो मकान बनेंगे। जब राहू-केतू के साथ तो हो मगर स्वभाव के पैमाना से बुरा प्रभाव का साबित हो तो बने बनाए मकान बिकवा देगा या गिरवा देगा। मन्दा असर होगा। खाना नं0 7 की हालत बताएगा।

जाए रिहाइश (बारह राशियां):-

शुभ लग्न और नेक शगुन से शुरु किए हुए मकान के लिए मुन्दरजा जैल बातें पूरा करने के लिए निहायत मुबारिक होंगी:-

मकान के कौने :- मकान बनने से पहले सभी और सारी तह जमीन को एक ही गिन कर इसके कोने देखे जाएं। चार कौने सबसे उत्तम होगा, जिसका हर एक कोना 90 डिग्री के जाये।

निम्नलिखित कौने हमेशा हो, जो मन्दे गिने गए हैं।

आठ, अट्ठारह, तेरह, तीन-बच्चों चुक, भुजा बल हीन,
पांच कोना का मन्दिर रचे-कहे विश्कर्मा कैसे बसे।

आठ कोनाः-शनि खाना नं0 8 का प्रभाव देगा यानि मरने के वाक्यात व बीमारी आम होगी।

अठारह कोनाः-वृहस्पति(सोना चांदी) का फल खराब होगा।

तीन तरह कोनाः-मंगल बद का असर होगा यानि भाई बन्धुओं की मुसीबतों में बरबाद होगा। मौतें और आग के नुकसान बहुत हों। फांसी की घटना भी हो सकते हो।

मध्य से बाहर को मछली की तरह उठा हुआः- काग रेखा का प्रभाव देगा। खानदानर नसल घटती जाए आखिर पर स्वयं भी बिना औलाद होगा यानि अगर बाबे तीन भाई तो बात दो भाई और आखिर पर खुद अकेला और बाद में औलाद न होगी। मुर्दो की शक्ल का मकान का मौते ही मौते दिखाएगा।

भुजाबल हीनः-बाजू के बिना (मुर्दो की शक्ल का) मौते ही मौते, मर्दा पर मुर्दा दिखाए अगर कोई शादी भी इस मकान में हो तो शादी वाला मर्द या औरत जिसकी वहां शादी हुई हो विधुर या विधवा हो।

पांच कोनाः-पांच कोना वाला, औलाद का दुख और उनकी बर्बादी की घटनायें दिखाए। निम्नलिखित वाला कौने का मकान की दीवार बनने से पहले काबिल गौर होंगे। वह जमीन के कौने देखने बाद मगर इस पर मकान बनने से पहले दीवारों की बुनियादें छोड़ कर हर एक हिस्सा या कमरा की भीतरी स्थान अलग-अलग देखा जाए जो मकान के मालिक या स्वामी जिसके मकान की बुनियाद रखी है और खुद भी इसमें रिहायश करनी है के हाथों की पैमाइश में स्थान देखा जाए यानि पैमाइश के लिए उसका हाथ हो, चाहे वो अठारह इंच को हो चाहे उन्नीस का, गज कि पैमाना इसके हाथ की लम्बाई के बराबर का हो। हाथ की लम्बाई कहां से कहां तक होगी इसके लिएः-(1) कोहनी से लेकर अनामिका अंगुली कि आखिर तक या (2) कोहनी के सिरे के अलावा दूसरी हडडी होती है वहां से लेकर मध्यमा के आखिर तक यह नं0 2की हदबन्दी दुरुस्ती और उत्तम है। (बाजू के सिरे पर जो जोड़ है) कौना निकालने का ढ़ग :-

$$\frac{(\text{लम्बाई}+\text{चौड़ाई}\ X\ 3-1=}{8}$$

जो बाकी बचा वो असर होगा यानि लम्बाई 15 हाथ चौड़ाई साथ-साथ हो तो 15+7=22 X 3=66-1=65 तक्सीम 8=8 बाकी एक, जवाब रहा एक, इसी तरह से जवाब एक, दो,3,4,5,6,7,8 या जीरो हो सकता है।

जवाब में अगर ताक यानि 1,3,5,7 हो तो नेक असर होगा,
आर जवाब जुस्त में यानि 2,4,6,8 हो तो मन्हूस असर होगा
वो किन-किन बातों से सम्बंध होगा।

मकान की हैसियत :- यदि एक बचे तो वृहस्पति सूर्य होगा खाना नं0 1 का वो

मकान कानों में मानिंद राजा उत्तम और बुलन्द हैसियत होगा।
यदि दो के तो वृहस्पति शुक्र साँझा खाना नं0 6 में कुत्ता समान ।
यदि तीन बचे तो वृहस्पति मंगल खाना नं0 3 में में शेर समान होगा। आदमियों को उत्तम ओर शुभ , दीवान खाना या बैठक या दुकान कारोबार तजारत के लिए निहायत शुभ होगा मगर औरतों और बच्चों के लिए चाहे शुभ होगा, ऐसे मकान में मर्दो की हमेशा बरकत होगी और दुनियावी जंग व जदल के सम्बंध सब काम शुभ प्रभाव देंगे।

यदि बाकी चार बचें तो शनि चन्द्र आपसी खाना नं0 4 में गधा समान होता है। रात-दिन मजदूरी की बदले में खुराक के लिए वही गन्दी गिजा मिली। किसी ने गधे का ख्याल न किया न मिली तो न ही मिली।

यदि पांच बचे तो सूर्य वृहस्पति खाना नं0 5 में:- गाए समान होगा जिसमें औरत जात, बाल बच्चे आदि सब के सब व आराम पाएंगे और शुक्र का पूरा और उत्तम फल होगा, बल्कि मच्छ रेखा का उत्तम फल होगा। मकान पीछे से चौड़ा और अगला हिस्सा तंग बैल समान हो तो भी गऊघाट कहलाता है, जिसका वही नेक असर है जो पांच बाकी का था।

यदि 6 बाकी रहें तो सूर्य शनि समान खाना नं0 6 में:- तकिया समान मुसाफिर हो, यानि केतू अपना बुरा प्रभाव देगा, न माता रहे न पिता सुख ले, न औलाद आराम करे, न यार दोस्त साथ मिलें। हर दम मुसाफिर और वो भी मुसीबत पर का मारा हुआ।

यदि बाकी सात बचें तो चन्द्र शुक्र आपसी खाना नं0 7 में मानिंद हाथी होगा। फेल खाना-मवेशियां तबेला उत्तम और शुभ (राहू सहायक)
यदि आठ बाकी रहे तो मंगल शनि आपसी खाना नं0 8 में चील समान गिद्ध, मुर्दघाट, मौत का घर, शनि का हैडक्वार्टर और समाप्त ।

मकान में आने जाने का सबसे बड़ा दरवाजा आम वाला, अगर बतरफ या पूर्व हो तो सबसे उत्तम, हर वक्त आदमियों की नेक और तमाम सूख नसीब हो।
यदि पश्चिम में हो तो दर्जा दूत का उत्तम होगा।

यदि उत्तम की तरफ हो तो नेक है, नेकी के लिए यानि लम्बे सफर, पूजा पाठ शुभ काम, लम्बे मामलात नेकी के काम करने के लिए आने जाने का रास्ता होगा, जिसका प्रभाव नेक होगा, रुहानी और परलोक के सम्बंध में।

यदि दक्षिण में हो तो मन्दा है, खास कर औरत जात के लिए मौत का समान है। आदमी भी कोई सुख नहीं पाए। अग्नि कुण्ड का जैल खाना जिस जल बुझ कर मरने के सिवा और कुछ नसीब न होगा। छड़ा तबेला या रंडों का अफसोस करने की जगह या मौतें बिनने का मुकाम।
शाहतोरों का रुख, दाखिला के दरवाजे या बराबर=हो तो शुभ (यह शुक्र की छत है और उत्तम) और अगर काटती हुई शक्ल या सोते वक्त छाती को उम्दा करे यानि शनि का छत तो मौत बीमारी।

यदि कड़िया बोले कुल संख्या के अगर चार पर भाग करे और जवाब में बाकी एक बच्चे तो राजा समान इन्द्र हो, उत्तम फल, यदि दो बाकी रहे तो यम मौत के समान यमदूत हो। यदि तीन बाकी रहे तो राज समान यानि राज योग हों।

मकान में अगर बाहर से हवा किसी सीधे रास्ते या शारए आम से बिल्कुल सीधी ही आकर दाखिल हो तो बच्चे के लिए निहायत मन्दा या हवाए बद या बुरी रुह का दाखिल गिना जाएगा जो हमेशा बुरा प्रभाव देगा। कोई अचानक मुसीबत खड़ी ही होती रहेगी।

सेहत के नियमों पर दूसरी चीजों के अलावा विचार जरुरी है किरात को सोते वक्त चारपाई का सिरहाना पूर्व में रहे तो शुभ प्रभाव होगा। ---दिमाग ने काम किया सूर्य ने सहायता दी जो रात को रुह ने काम सम्भाला और चन्द्र ने सोते वक्त मदद दी। पांव का रुख दक्षिण सर पूर्व में सोते समय होना मन्दा है। उत्तर का कोई विचार नहीं यानि नेकी या रुहानी काम चाहे गिर से करें चाहे पांव के जरिए, नेकी मरना हर तरह से शुभ है। इसमें पहले हाथ या पांव का सवाल उठता ही नहीं है, चाहे सोए हुए सोच विचार रुह से हो चाहे जागते शरीर से हो, शुभ है। मकान के अन्दर की चीजें शुभ प्रभाव देगी, जबः-

सिंहासन या बैठक खाना---पूर्व की दीवार के मध्य हिस्सा में हो।

अब आग की जगह दक्षिण या दक्षिण पूर्व कोना में हो।

पानी की जगह, पूजा-पाठ पहाड़ या उत्तर-पूर्वी कोना में शुभ होगा।

लक्ष्मी स्थापन, धनदौलत की जगह दक्षिण या दक्षिण पश्चिमी कोना में शुभ हो।

खाली जगह मेहमान आदि के लिए उत्तर-पश्चिमी कोना में शुभ।

चूल्हे का मुंह शरका-गरबा हो तो शुभ हो।

मकान से बाहर निकलते समय पानी की जगह दांए हाथ और आग बांए हाथ बल्कि पीठ पीछे रह जाए तो बिलकुल शुभ है।

मकान के नजदीक अगर पीपल का पेड़ हो तो उस पेड़ की सेवा से ब्रहुत नेक फल होगा और अगर इसकी सेवा या इसकी जड़ों को पानी न डाला जाएगा तो जहां तक इसका साया जाएगा तबाही और बर्बादी करता रहेगा। यही हाल नजदीक के कुएं का है। असर इसमें कभी-कभी बतौर श्रद्धा भाव थोड़ा सा दूध डाल दिया जाए तो नेक फल होगा। **घर में कीकर का पेड़ बिना औलाद किए बगैर न छोड़गा।** इससे बचाव सूर्य निकलने से पहले तारों की छाया में जबकि अभी अंधेरा ही हो 40 दिन हर शनिवार सप्ताह में एक बार और गाहे पानी हमेशा डालना चाहिए।

पांव पर खास निशान

दांए पांव के पत्र पी कनिष्का के नीचे बुध पर या शुक्र के पर्वत या अंगूठे की जड़ पर अगर--(1) शंख या सदफ हो तो वही प्रभाव जो हाथ पर होता है (2) यदि चक्र हो तो हाल साहब इकबाल होगा। (3) यदि त्रिशुल, अंकुश हो तो आला अवसर, न्यायक मिला होगा। (4) यदि चश्म फैल, हाथी की आंख का

निशान हो तो साहब तख्त हो। (5) यदि चश्म फैल बांए पांव पर हो तो राहजन चोर डाकू हो तो फिर भी तंगदस्त गन्दा फल या मन्दा हाल हो। (6) औरत के पांव में (दोनों पांव इकटठे गिन कर) जिस कद्र चक्र या पदम या सदफ गहरे, पब या पांव की हथेली पर हों उसी कद्र लड़के होंगे और अगर जिस कद्र चक्र या पदम व नरमव बारीक लीकर के हो उसी कद्र लड़कियों होंगी।

शादी

व्यक्ति के हाथ या टेवे में शुक्र से शुभ उसकी औरत और औरत के हाथ या टेवे में शुक्र से शुभ उसका पति होगी।

शादी रेखाः-बुध के पर्वत पर कनिष्का के नीचे, इस शुक्र की रेखा से शादी या खुशी गृहस्थी या फारसी लफज शादी या बन्दर-केला बनाया जाहिर होता है। दुनियावी खुशी आम हालत के लिए चन्द्र की ओर ध्यान से देखें।

शादी दो गृहस्थियों को अलग-अलग रखते हुए एक कड़ी से जोड़ने वाली चीज आम दुनियादारों की नजर में शादी और ग्रह चाल में मंगल की ताकत का नाम रखा गया है यही मंगल के खून की कड़ी लड़की और औरत में फर्क की कड़ी है और इसी कारण से शादी में मंगल गाए जाते हैं। अगर मंगल नेक हो (मंगल को सूर्य या चन्द्र की सहायता मिली हुई) तो शादी खाना आबादी करने वाला मंगल होगा। लेकिन अगर मंगलबद (मंगलबद में जिक्र है) हो तो बन्दर केला (सूर्य की शनि से बन्धा हुआ करना या सूर्य इस काबिल न हो कि मंगल को सहायता दे सके। खुष्क और सीधे शब्दो की तरह ऊपर को खड़ी की हुई लकड़ी को शनि माना है, इसी असूल पर यम सूतवां) मकान की चार दीवारी छत के बैगर खड़ी दीवारों शनि की चीजों मानी हैं) होगा। जिससे शादी की खुशी की बजाए शुक्र स्त्री लक्ष्मी का सुख सागर एक मन्दा दुख का भंवर होगा। **मंगल बद का वीराना होगा।** जिसमें सूर्य की रोशनी की चमक तक न होगी। दिन की बजाए शनि का अन्देरी रात साथ होगा। बुध के खाली आकाश में मशनोई शुक्र के यानि राहू-केतू की बैठक खाना नं0 8 शनि का हैडक्वार्टर होगा।

शादी का वक्त

मित्रता-शत्रुता दीगर ग्रह अनुसार दृष्टि सफा जज का मध्य नजर रखते हुए वर्ष-फल में खानावारी हालत के हिसाब से जिस साल शुक्र। बुध को शनि की दोस्ती या शनि के आम दौरा का वक्त (शनि नं0 1) हो तो शादी होने के समय और योग होगा। (जब शुक्र बुध अकेले-अकेले हों तो बुध की खास नाली के नियम पर देख ले कि आया बुध किसी हालत में शुक्र को अपना फल दे सकता है। आमतौर पर शादी का योग शुक्र से गिनेंगे, लेकिन जब बुध इन नियमों पर शादी का योग बना देगा तो भी शादी का योग होगा, सिवाए बुध नं0 12 के (अगर किसी टेवे में) जन्म कुण्डली) शुक्र। बुध नष्ट बर्बाद या मन्दे हो और स्त्री

ग्रहों शुक्र। बुध के साथ नर ग्रह (वृहस्पति सूर्य मंगल) सहायक साथी या आपसी का हों तो जिस साल ऐसे टेवे को शनि की सहायता या उसे उसके आम दौरा का सम्बंध (शनि नं01)हो जाए तो भी शादी होने का वक्त या योग होगा।

(2) आम तौर पर जिस हाल (बमूजब वर्षफल) शुक्र बुध (अ) को मालिक तख्त का या (ब) कुण्डली के खाना नं0 2,10 से 12 (सिवाए बुध नं0 12) में या (स) अपने पक्के घर खाना नं0 7 में हो जाए लेकिन इस वक्त खाना नं0 3,11 में शुक्र। बुध के दुश्मन ग्रह (सू0च0रा0) न हो या (ह) वो शुक्र या बुध (अपने जन्म कुण्डर्ली के बैठा होने वाले में ही आ जाएं) शुक्र नं0 4 जन्म कुण्डली में के लिए ध्यान रहे कि शुक्र जब खाना नं0 में हो चाहे अकेला खह किसी ग्रह से आपसी या साथी बन रहा हो यानि नं0 4 में कोई और ग्रह हो तो नं0 7 में शुक्र का दुश्मन ग्रह

(शु0वृ0 या राहु0) न आया हुआ हो वरना शादी का कोई योग न होगा। शुक्र नं0 4 में शादी के आग साल 22,24,29,32,47,51,60 बशर्ते कि इन सालों में खाना नं02, 7 में शुक्र के दुश्मन ग्रह हो जाए तो उन गहों का (पक्के घर) खाना नं0 4 में समझे जो ग्रह कि खाना नं0 2, 7 में आ सकते हों। मान लो कि टेवा हो तो वर्ष फल 24 साल उम्र में खाना नं0 2 में बुध राहू आएंगे इसलिए 24 वें साल शादी न होगी। 29 साल उम्र में शुक्र स्वयं नं0 4 में होगा, इसलिए शादी होगी। 32 साल उम्र में शुक्र होगा नं0 11 में खाना नं0 2,7 में जन्म कुण्डली के खाना नं0 1,2 के ग्रह आ सकते हैं लेकिन वो दोनों घरों (नं0 1,2) खाली हैं, इसलिए उन दोनों घरों के (पक्के घर) ग्रहों को देखा तो मालूम हुआ कि खाना नं0 1 पक्का घर है सूर्य का जो 32 साल खाना नं0 12 में होगा जो कि जन्म कुण्डली में खाना नं0-6 में था और नं02 पक्का घर है वृहस्पति का जो 32 साल में नं0 4 में होगा जो जन्म कुण्डली में न (9 यानि शुक्र तो है ही नं0 11 में,खाना नं02 में ग्रह आ सकते है खाना नं0 1 के जो पक्का घर है सूर्य का, इस लिए सूर्य होगा नं0 12 में खाना नं0 6,7 में ग्रह आ सकते हैं खाना नं0 9 के जहां टेवे के टेवे में वृहस्पति है, इसलिए वृहस्पति होगा नं0 7 में या खाना नं0 7 में या खाना नं0 7 में शुक्र वृहस्पति इकटठे होंगे। इसलिए शादी हो सकती है, जो स्त्री के औलाद के लायकन हो यानि स्त्री तो हो मगर स्त्री की जगह न होगी। या शुक्र। बुध ऊपर के खानों में तो न आवें लेकिन जिस घर में उस साल वो बैठे हो उस घर वाला ग्रह(पक्का घर)ऊपर कहे हुए घरों में आ जाए तो शादी का योग होगा, मगर ऐसे वक्त की शादी का असर वह वही होगा जो कि बुध। शुक्र व ऐसे पक्के घर वाले ग्रह की आपसी दोस्ती या दुश्मन का नतीजा हो सकता है।

तायदाद शादी

दो लकीरों से अधिक गिनती की हालत में औरतों की गिनती या शादी की

गिनती लकीरों की कुल गिनती से एक कम यानि तीन लकीरों से दो बार शादी और चार के लिए तीन बार शादी होने से शुभ होगी। मंगल बद और शुक्र के वाक्या होने के बीच जितने घर खाली हों इतनी हद तक शादी की औरतें हो सकती हैं। बुध और शुक्र दोनों अलग-अलग होने की हालत में बुध की नाली और बुध शुक्र के पहले या बाद के घरों का ध्यान भी साथ ही देखा जाए। ऐसी हालत में अकेला शुक्र हो स्त्री घरों में यानि खाना नं0 2,4 में तो शादी वाला मर्द एक होगा और औरतें अनेक हो सकती हैं और वो सब जिन्दा चाहे वो सब शादी का असल मतलब औलाद बगैरह देवें या न देवें। अकेला बुध हो नर ग्रहों के घरों में (खाना नं0 1,5,9,12 में) तो स्त्री एक ही होगी मर्द अनेक, शादी से ख्वाह औलाद का मतलब हो या शादी औलाद का कोई मतलब न देवें। अगर ऊपर की दोनों हालतों में शुक्र या बुध उल्टे खानों में हो बैठे हों तो नतीजा उल्ट हो सकती है। स्त्री या नर ग्रहों का शुक्र या बुध के साथ ही आपसी घर में हो जाने से शुभ न ली जाएगी। बल्कि शुभ यह है कि ऊपर की शर्त (मर्द एक औरत अनेक या उल्ट वगैरह) सिर्फ इस वक्त होगी जबकि स्त्री ग्रह या नर ग्रह अपनी-अपनी राशि से बाहर बल्कि वो अपनी-अपनी राशि को देखते तक भी न हो या वो शुक्र या बुध से किसी तरह भी साथी ग्रह न बन रहे हों।

औरत गिनती में :-जन्म कुण्डली में शुक्र कायम या अपने दास्तों यानि बुध केतू शनि के साथ साथी या दृष्टि में हो या उससे मदद लेवे तो औरत एक ही कायम (ब) दुश्मन ग्रहों से शुक्र अगर रद्दी हो तो तायदाद औरत ज्यादा---सूर्य,बुध राहू आपसी तो शादियां एक से अधिक मगर फिर भी गृहस्थ का सुख मन्दा। बुध खाना नं0 8 में तो तायदाद औरत ज्यादा मगर सब औरतें जिन्दा होवें जिनती बार वर्ष फल में सूर्य और शनि का वाहमी टकराव आ जाए इतनी तायदाद तक शादियां होंगी। विशेषकर जब सूर्य नं0 6 और शनि नं0 12 में हो तो औरत पर औरत मरती जाए या मां-बच्चों का ताल्लुक न देखे व सुख देखने से पहले मरती जाएं। बुध नं0 8 या शुक्र नं0 4 मगर 2,7 खाली तो औरतें एक से ज्यादा मगर सब जिन्दा।

शादी की दोनों लकीरों को शुक्र व बुध माना है

शादी की दोनों लाइनों को शुक्र व बुध माना गया है। बुध ऊपर की लकीर से मर्द से सम्बंधित और शुक्र, नीचे की लकीर औरत से सम्बंधित (मिली हुई) कमानी गई है। शुक्र और बुध में से अगर एक ग्रह कायम हो तो हाथ पर सिर्फ एक ही शादी की लकीर होने का मतलब और असर लिया जाएगा।

ऊपर की लकीर:- बुध कायम से ऊपर की लकीर (मर्द से सम्बंध)।

नीचे की लकीर:-शुक्र कायम से नीचे की लकीर (औरत से सम्बंध) होगी अगर शुक्र बुध दोनों कायम हों तो दोनों लकीर में उत्तम और अगर दोनों ही (बुध शुक्र) रद्दी हों तो दोनों लीकर में मन्दी वाली शादी रेखा से शुभ होगी। दो साफ और सही, बड़ी लकीर ऊपर और छोटी लकीर नीचे की हालत में शादी की औरत

एक अदद जल्द होवे। औरत गृहस्थ में नेक फल देवे वाली और उत्तम हो। अरसा शादी शुक्र के प्रभाव के समय यानि 25 साल का 1/2=12-1/2 साल या 25 का 3/4=18-19 साल होगा और शादी खुद बखुद धक्के लगाकर हो जाएगी। किसी दूसरे के एहसान की जरुरत न होगी। बुध शुक्र दोनों ही नेक हालत के और मंगल का साथ (साथी ग्रह) हो तो शादी व औलाद का फल नेक व उम्दा होगा एक ही लकीर वाली शादी रेखा से शुक्र कायम मगर बुध खराब हालत का मगर सिर्फ एक ही लकीर वाली हों तो शादी देर बाद यानि 18 साल के बाद 25 साल तक हो और शादी कई एक विरोद्धिता पेश आवे जो सरमाया की कमी या संयोग के दूसरे कई विघन आदि होंगे । एसी हालत में शादी का नेक प्रभाव 28 साल की आयु के बाद ही गिना है यानि यदि शादी न हो ही हो और अगर हो तो देर बाद (18-19 साल बाद) हो और औलाद न ही हो और अगर औलाद होनी शुरु हो जाए तो लड़के या औलाद आदि न हो और अगर औलाद नरैना हो भी जावे तो जावे तो जिन्दा न रहे और अगर जिन्दा भी रहे तो लायकन हों और मगर लायकही हो तो सुख देने वाली न हो और अगर सुख देने वाली नियत वाली हो तो सुख देने के काबिल न हो और निर्धन या दूसरे किसी सबब से हानि करने वाली हो। जैसे ऐसी हालत में औरत जात अपना पूरा और नेक फल न देवे। अगर सूर्य नं0 1 में हो और खाना नं0 7 खाली हो तो ऐसे व्यक्ति की शादी छोटी उम्र में ही कर लेनी निहायत मुबारिक होगी वास्ते राज दरबार (असर सूर्य खुद सेहत व उम्र आदि) बुध शुक्र दोनों के साथ या दो में से किसी एक के साथ मंगलबंद का साथ था। साथी ग्रह हो जाए, दो शाखी रेखा वाली शादी रेखा से शुभ होगी। दो शाखी रेखा आदि दो शाखी होने पर मर्द औरत की आपसी दुश्मनि, तलाक, जुदाई आदि व्यक्त करती है दो शाखी रेखा वाले व्यक्ति तबाह हुई औरत अगर किसी दूसरे के घर भी जा कर बस जाए तो भी मन्दा प्रभाव जल्द रफा न होगा। उस औरत से यानि वो औरत भी जल्द औलाद का फल न पाएगी और ऐसा व्यक्ति दूसरी शादी से भी जल्द आराम न पाएगा। ग्रहों पर प्रभाव अपने समय में ही दोनों तरफ से जाया होगा। बुध शुक्र हों बाद के घरों में और मंगल बद हो पहले घरों में, दो शाखी का हथेली के अन्दर घुसता चला आवे या मुंह बड़ा होता जाए या दो शाखी के सिरे के नीचे की तरफ (दिल रेखा की तरफ बढ़ते जाए, चन्द्र या दिल रेखा बुध की शत्रुता है) या ऊपर कनिष्टका की तरफ कनिष्टका की सबसे निचली पोरी (धन राशि वृहस्पति दुश्मन बुध का) में चली जाए तो शादी में या मर्द औरत के गृहस्थी सम्बंध में नतीजा खराब बढ़ता जाए। ऐसी हालत में चन्द्र और वृहस्पति की पूजन नेक प्रभाव की तरफ लाएगी। दो शाखी रेखा की हालत में तो मर्द व औरत अलग-अलग हो जाएंगे और अगर किसी वजह से इकट्ठे ही रह जाएं तो औरत मर्द के लिए औरत का काम न देगी और इसकी खूबसूरती बायश बदचलनी या नेकचलनी ही हालत में औलाद बगैरह या बीमारी या बीमारी की वजह से खर्चा फालतू या दीगर और कोई सबब होगा। बहरहाल ऐसी हालत में औरत 12 साल

औलाद न देगी। या औलाद नरैना का नेक प्रभाव न होगा। बुध शुक्र अगर कुण्डली के पहले घरों में हों और मंगल बुरा बाद के घरों में वाक्या हो तो दो शाखी रेखा होगी। दो शाखी का मुंह जिस कद्र हथेली के बारह की तरह पुस्त की जानब को होता जाए और दो शाखी का मुंह <> हथेली के बाहर होता जाए, बुरा असर कम होता जाए मंगल बुरा ऐसी हर दो हालत में अगर शुक्र पर बुरा असर दे रहा हो तो औरत अधिक खराबी और अगर बुध पर बुरा असर दे रहा हो तो मर्द खराबी होगा और अगर बुध शुक्र दोनों अलग-अलग ही हो और मंगल बुरा कुण्डली में संबंध हो जाए तो कुदरती सबब खराबी का सबब होंगे। दांए हाथ पर के निशानों की हालत में स्वयं और बांए हाथ के निशानों से उन्मूल या कार्यवाही के सबक होंगे। शुक्र या चन्द्र से रेखा के समय औरतें विरोद्धिता का सबब और मंगल (हर दो) से शाख मर्दो से विरोद्धिता व्यक्त करती है ऊपर बुध से आई हुई शाख के समय फालतू खर्च या दीगर सबब होंगे। स्त्री ग्रह (चन्द्र, शुक्र) जब नर ग्रहों(सूर्य, वृहस्पति, मंगल) के साथ साँझा या साथी ग्रह हो जाए तो भी शादी रेखा से शुभ होगी शर्त यह है कि ऐसी हालत में शनि क संबंध भी (जड़, राशि, पक्का घर, दृष्टि या साथी ग्रह की हालत का हो जाना) हो जाए । ऐसी हालत में ऊपर जिक्र की हुई सभी शरतों के लिए ग्रहों को शुक्र या ग्रहों को बुध की शादी रेखा गिन कर फैसला होगा। स्त्री व नर ग्रहों का यह आपसी सम्बंध सिर्द शादी रेखा के लिए होगा। और यह शर्त भी केवल इस वक्त होगी जब शुक्र और बुध दोनों ही नष्ट हो गए हों। निशानी ऐसे व्यक्ति के जन्म से ही उसकी सम्बंधियों स्त्रियों बहिन, भुआ, फूफी आदि ही मरती गई हों(औरत रेखा के साथ दोड़ती हुई या किस्मत रेखा के साथ चलती हुई लहीर जो बाद में उम्र या किस्मत रेखा में ही मिल जाए, शादी का सम्बंध या शादी पर औरत बन जाने वाली हस्ती से मुराद होती है। ऐसी शादी के हो जाने के समय से ही किस्मत जाग उठा करती है या ऐसी औरत लक्ष्मी या भाग्योदय होने का चरण या जमाना साथ ही लाया करती है)

रंग व स्त्री

सूर्य बुध सम्बंध औरत का रंग व स्वभाव प्रकट करेगा। कुण्डली में अगर सूर्य पहले घरों में हो और बुध बाद के घरों में हो तो औरत का रंग व स्वभाव उम्दा होगा और नेक प्रभाव बशर्ते कि शनि दखल न दे। अगर बुध पहले घरों में और सूर्य बाद के घरों में और सूर्य बाद में घरों में हो तो औरत रंग व स्वभाव में मन्दा असर शामिल होगा। जब बुध सूर्य इकट्ठे ही हों और सूर्य के नेक घरों में यानि इकटठे ही हों और शनि या दूश्मन ग्रहों का प्रभाव शामिल न होता हो तो सूर्य बुध के आपसी संबंध का प्रभाव अच्छी हालत में होगा। लेकिन जब शनि की तरह शैतानी और चंचल होने की हालत होगी। सूर्य से शाख हो तो औरत अमीर खानदान से या जो हर तरह से सूर्य के बराबर हो बशर्ते कि शुक्र उम्दा हो वरना उल्ठ नतीजा लेंगे। शुक्र के पर्वत से रेखा अगर सूर्य की तरफ चले और

रास्ता में किस्मत रेखा में ही रह जाए तो ऐसी औरत (शुक्र की शाख स्त्री) किस्मत के सम्बंध से होगी या शादी होने पर ही किस्मत को रोशन और नेक प्रभाव बना देगी। ऐसी औरत काला रंग की न होगी, बल्कि शुक्र या शुक्र सूर्य के रंग की होगी और चमकीला चेहरा होगा।

शादी रेखा से दूसरी शाखों का संबंध

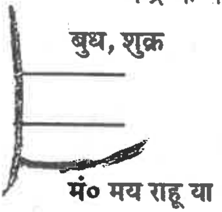

चन्द्र के पर्वत से या शुक्र के पर्वत के रास्ते खाना नं0 11 व खाना नं0 12 से (चित्र नं0 2) का मंगल नेक के पर्वत से (चित्र नं0 3) या बुध पर कनिष्का की जड़ या धन राशि वृहस्पति से आई शाख सबकी सब शादी में रुकावट मुखलफत या दीगर फलूर बायश तकलीफ पैदा होंगे। शुक्र बुध मंगल तीनों ही खाना नं0 3 में दृष्टि का खाना नं0 11 खाली, शादी और औलाद में गड़बड़ होंवे।

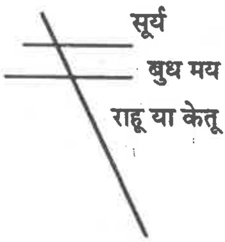

मर्द व औरत के जोड़े की आयु :- दोनों लकीर-- से ऊपर की लकीर मर्द से और नीचे की लकीर की और से मिलाया गया है ऊपर की लकीर से मर्द की उम्र और नीचे की रेखा से औरत की उम्र लेते हैं। लकीरों की लम्बाई में जिस तरह फर्क हो उतना ही अवधि उम्र में फर्क होगा। और कुदरत अलग कर देगी। शुक्र कायम या शुक्र के दोस्त सहायत तो औरत की उम्र लम्बी। शादी की अच्छी और नेक रेखा वो है जो इन दोनों रेखाओं की बीच चौड़ाई और अन्तर भी मर्द औरत की दूरी (ज्यादा चौड़ाई या बीच का फासला ज्यादा) व नजदीकी जाहिर करता है। अगर दोनों लकीरों की लम्बाई भी बराबर होगी तो दोनों की औरत उम्र भी बराबर ही होगी। यानि दोनों की आत्मा के हिसाब से या यूँ कहो कि दोनों कब अलग-अलग होंगे। इस बात का कोई हिसाब नहीं कि दोनों कब इकट्ठे हुए थे और दोनों की इस वक्त उम्र किनती-किनती थी। इन लकीरों की लम्बाई दोनों के जोड़े कायम रहने की मियाद का अरसा होता है अगर ऊपर की लकीर लम्बी हो तो औरत पहले और अगर नीचे की लकीर लम्बी हो तो मर्द, पहले इस दुनिया से चल बसेगा। शुक्र को देखता हो। इसका दोस्त ग्रह तो औरत की उम्र लम्बी होगी। शुक्र को देखता हो इसका दुश्मन ग्रह तो मर्द की उम्र लम्बी देखती होगी और यदि शुत्र ग्रह देखता हो दोनों का साँझा दोस्त ग्रह तो दोनों की उम्र लम्बी होगी यदि दोनों आपस को देखता हो दोनों का दुश्मन ग्रह तो दोनों की उम्र छोटी होगी। शुक्र को देखता हो इसका दोस्त ग्रह (शनि) और बुध को देखता हो इसका दुश्मन ग्रह चन्द्र तो औरत की उम्र लम्बी और मर्द पहले चल जावे। बुध को देखता हो इसका दोस्त ग्रह (सूर्य, चन्द्र, राहू) तो व्यक्ति की आयु लम्बी और औरत की

छोटी होगी। शुक्र को देखता हो इसका दुश्मन ग्रह(सूर्य, चन्द्र, राहू) और बुध को इसका दोस्त ग्रह तो मर्द कायम चाहे इसकी औरत कई दफा मरती जाए या हटती जाए। बुध को देखता इसका दुश्मन ग्रह (चन्द्र) और शुक्र को देखता हो इसका दुश्मन ग्रह (सूर्य, चन्द्र, राहू) तो औरत कायम रहे ख्वाह मर्द इसके मर्द मरते या हटते जाएं। शुक्र कायम से सिर्फ एक औरत और आखिर मरते दम तक कायम रहे। सूर्य हो खाना नं0 6 में और शनि हो खाना नं0 12 में तो औरत पर औरत मरती जाए।

दीगर आपसी सम्बंध :- शुक्र व बुध का सम्बंध शादी के दिन से मर्द औरत की किस्मत पर भी सम्बंध होगा। वृहस्पति का साथ (शुक्र बुध का वृहस्पति से सम्बंध) इज्जत, किस्मत की चमक, सूर्य का साथ (शुक्र बुध का सूर्य से सम्बंध) आप गुजर गुजरान चन्द्र का साथ(शुक्र बुध का चन्द्र से सम्बंध) धन, उम्र; शान्ति मंगल का साथ(शुक्र बुध का मंगल से सम्बंध) औलाद का कायम रहना शनि का साथ (शुक्र, वृहस्पति का शनि से सम्बंध) जायदाद मकान वगैरह, राहू का साथ(शुक्र, वृहस्पति से सम्बंध) दुख दरिद्र, दुश्मन मौते गमी, केतू का साथ (शुक्र बुध का केतू से सम्बंध) ऐश फलना-फुलना खुशी आदि।

शादी से मर्द औरत की आपसी गुजरान :- अगर मर्द की नाक छोटी (नीच वृहस्पति नं0 10) हो या जुबान व सम्बंध (बुध शनि साँझा) काला हों और आंख भूरी का साथ हो(सूर्य चन्द्र) तो दो से ज्यादा शादियां हो मगर फिर भी गृहस्थ सुख नसीब न हो और असर आंख काला (शनि चन्द्र) का साथ हो तो औरत को सुख हल्का, होवे शुक्र पर अंगूठे की जड़ में सूर्य का सितारा हो (सूर्य नं0 7 तो औरत का सुख हल्का,भराई ममता हो, मगर अपने लिए उत्तम हो। उम्र रेखा (पितृ रेखा) पर राहू का निशान हो तो औरत का सुख हल्का, खास कर मीन राशि वाले को जरुर हल्का हो। शनि राहू नं0 12 (ब) दांए पांव की अनामिका अंगुली मध्यमा से बहुत छोटी (बहुत ही) हो) (लड़के का सूर्य नीच होगा) या तर्जनी मध्यमा से बहुत छोटी हो तो औरत का खानदान गरीब हैसियत का हो और इनका सुख भी हल्का हो, चाहे अमीर ही हों। पांव तर्जनी मध्यमा से बड़ी हो तो औरत खानदान गरीब हो (वृहस्पति केतू देखते हों शनि को) पांव की तर्जनी मध्यमा से (शनि देखे वृहस्पति को) थोड़ी छोटी हो तो औरत का सुख पूरा हो हाथ की कनिष्का अंगुली का नाखून बाला हिस्सा का आखिर या सिरा अगर अनामिका अंगुली के नाखून वाले हिस्सा की जड़ (कर्क राशि वाली पोरी की जड़) से नीचा रहे जबकि हाथ को खूब अकड़ा कर इन दानों अंगुलियों आपस में मिला कर देखा जाए तो जिस तरह कनिष्टका इस अनामिका की ऊपर जिक्र शुदा चोरी की जड़ से छोटी हो या जिस कद्र नीची रह जाए उसी तरह औरत सफेद या केवल औरत उम्दा खुशक खल्क होगी। जिस तरह कनिष्का का यह हिस्सा इस हिस्सा से ऊपर को बढ़े उसी तरह औरत का रंग खूबसूरती स्वभाव खुबी मन्द या मन्दा और खराब हो। अगर उम्र (पितृ रेखा) रेखा डेढ़ी होकर मातृ रेखा को क़ाट

चन्द्र के पर्वत पर हथेली के किनारा पर त्रिकोन सर बना दे तो ऐसा व्यक्ति पराई औरत का मिलापी और खोटे काम करने वाला होगा या बद किरदार हो क्योंकि चन्द्र खुद बुध और शनि से दुश्मनी करता है। अगर औरत की माथे बुलन्द, वृहस्पति खाना नं0 4 और ऊँची हो जाए, चाहे इसका और कबीर वाला हो और मगर माथा लम्बी और कशादाद हो तो वो औरत **अपने समान के लिए तो शुभ हो मगर ससुर जल्द मर जाए** (वृहस्पति सूर्य मंगल खाना नं0 4) खुश से गुजारा करने वाला वो होगी जिसकी माथे फिराख हो (अकेला वृहस्पति नं0 4 में) औरत के पांव की अनामिका अंगुली अगर इसकी कनिष्का से छोटी हो(सूर्य देखे बुध का) और इसका नाखून वाला हिस्सा (अनामिका का) जमीन पर न लगे तो वो अगर सारी ''खाविंद खानी'' हो यानि इसका पहला पति मरे तो दूसरा करे और अगर सारी कनिष्का जमीन पर न लगे तो दूसरा मर्द मरे तीसरे करे चाहे चौथा करे सबके सब ही मरते जाए मगर वो औरत खुद न मरे और न ही आराम पाए।

औसत आमदन प्रति मास (खुद जाती) ऊँच घर के ग्रह या किस्मत के ग्रह या सब से प्रबल ग्रह के हिसाब से (गिनती में जितने हो उन सबका जोड़) लेंगे।

उत्तम ग्रह	रुपये	कैफियत
वृहस्पति	उत्तम	अगर कोई दो ग्रह इक्ट्ठे हो और उत्तम हों और उत्तम हो तो उन इक्ट्ठे की रकम का।
सूर्य	मध्यम	जोड़ होगा। उदाहरण सूर्य वृहस्पति आपसी हो तो
चन्द्र	कम आमदन	शनि इक्ट्ठे हों तो अधिक रुपये। आपसी हो तो अधिक उत्तम आमदन। चन्द्र सूर्य आपसी हो तो कम आमदन।
शुक्र	मध्यम	इससे भी कम आमदन होगी।
मंगल	मध्यम	चन्द्र इक्ट्ठे हो तो मध्यम आमदन यदि बुध शुक्र आपसी हो।
बुध	निष्कृष्ट	इससे अधिक कम आमदन यदि राहू, केतू और शनि शुक्र आपसी नहीं हो तो। क्योंकि शनि शुक्र विलासता पूर्ण।
शनि	उत्तम आमदन	शुक्र बनावटी शुक्र या हवाई वृहस्पति या केवल कागजी हिसाब किताब जिसकी वसूली न हो, होगा।
राहू	मध्यम आमदन	
केतू	निष्कृष्ट आमदन	बुध मंगल को मंगल बद लेगे और बुध शनि जायदाद में गिने जायेंगे।
कुल	अधिक आमदन	

ढ़ग :- जिस दिन से कोई आदमी स्वयं अपनी रोटी कमाना शुरु करे उस दिन से

जितने साल के बाद इसकी मध्यम आमदन देखनी हो ऊपर के रुपये के अक्षर को कमाते हुए अवधि के सालों से जरब दे देवें जवाब का अक्षर मासिक औसत आमदन होगी। मान लो करें किसी के मंगल शनि आपसी हैं और उसने 19 साल कमाई करते हुए होने के बाद देखना चाहा तो 19 X18=262 रुपये माहवार 19 साल पूरे करने पर होगी।

दौलत की हैसियतः-- कुण्डली का खाना नं0 4 या चन्द्र का पर्वत धन रेखा या दुनियावी धन दौलत के निकलने की जगह माना गया है यानि दौलत का निकास ऊपर ग्रहों से होगा जो खाना नं0 4 में हो या खाना नं0 4 के ग्रहों के दोस्त, ताल्लुकदार, साथी या सहायक हो अगर खाना नं0 4 खाली हो तो चन्द्र को खाना नं0 4 माना जाएगा।

दौलत के नामः- चन्द्र मंगल आपसी श्रेष्ठ धन होगा (विशेष कर खाना नं0 3 का) और दान कल्याण से बढ़ने वाला धन होगा। अगर यह दोनों ग्रह खाना नं0 10,11 में या शनि के सम्बंध में हो जाए तो लालची होगा।

(2) **चन्द्र वृहस्पति** दबा हुआ धन जो फिर चल पड़े और काम आए सोना चांदी छत्रधारी बड़ के पेड़ का साया का दूसरों को भी बड़ा भारी सहारा।

(3) **चन्द्र शनि वृहस्पति** के घरों में और वृहस्पति के साथ से उम्दा वरना काला मुंह माया, खुद काला मुँह बन्दर की तरह छलांग लगा कर चली जाने वाली और मुंह और मुंह काला सुनाने वाली।

(4) **मंगल शुक्र**--स्त्री धन जो मायके स्त्री की तरफ (ससुराल) और स्त्री की किस्मत पर चले।

(5) **शनि वृहस्पति**--फकीरी व विद्या का सम्बंध की माया, सन्यासी का धन शादी के दिन से बढ़ेगा।

(6) **मंगल वृहस्पति** श्रेष्ठ गृहस्थी धन अपने मर्द के कबीला से मुतलका

(8) **मंगल शनि** डाकू का धन दौलत।

(9) **शुक्र वृहस्पति** घर के लड्डू झाग देवता से।

(10) **सूर्य वृहस्पति** सबसे ऊपर शाही धन।

हर एक धन रेखा का हाल अलग जगह लिखा है खाना नं0 2 के दुश्मन ग्रह या दुश्मनों का तख्त की मालकियत का जमाना धन हानि, चोरी बिना कारण फालतू खर्चा और नुकसान का आदि होता है और खाना नं0 11 धन रेखा की आमदन का होगा या धन रेखा खाना नं0 11 के रास्ते आई और खाना नं0 3 के रास्ते चली जाती है या तीसरी पुस्त पर धन रेखा का रास्ता बदला हुआ होता। माया तेरे तीन नाम परसू-परसा-परसराम।

खाना नं0 3 का ग्रह--परसू **खाना नं0 11 का ग्रह-परसा** **खाना नं0 1,5,9 का ग्रह-परसराम**	**जो ग्रह इन घरों में हो वही रिस्तेदार इस हैसियत का होगा।**

विस्तृत रुप से बन्द मुटठी के अन्दर के घरों में कोई ग्रह न हो तो अपने साथ कुछ न लाया सब ही ग्रह मुटठी के अन्दर ही हों तो मर्द की माया पेड़ का साया उसके साथ ही उठ गया।

खर्च बचत:-चन्द्र धन, शनि खजान्ची होता है दोनों की हालत जेब की हालत बताएगी। शनि और मंगल जायदाद के मालिक हैं चन्द्र वृहस्पति सोने चांदी की दौलत के मालिक हैं। आमदन का हाल देखा जाएगा खाना नं0 11 से, खर्च का हाल देखा जाएगा खाना नं0 12 से, बचत खाना नं0 9 से देखे, (बचत बुजुर्गों की तरफ से सम्बंध से) बचत अज जाती कमाई देखी जाएगी खाना नं0 2 से, बचत औलाद देखी जाएगी खाना नं0 5 से।

सिर रेखा उम्र रेखा और सेहत रेखा की त्रिकोन यह मैदान हाथ की हथेली पर बिल्कुल खाली मैदान है जिसके तीनों किनारे (उम्र रेखा, हवाई लहर, सेहत रेखा या तरक्की रेखा हवा में उड़ती हुई भाप और सिर रेखा या बोलने की आवाज) सभी की सभी चीजें हवाई चीजें बैठी हुई हैं किस्मत रेखा का दरिया उर्ध्व रेखा या मच्छ रेखा का दरिया धन या श्रेष्ठ रेखा का दरिया आदि अपना-अपना बना सकते हैं यानि इन दरियाओं में से जिस दरिया का पानी इस मैदान में होगा वहीं असर जाहिर होगा और अगर किसी वजह से इस मैदान में कोई भी दरिया न हो तो खाली रेगिस्तान या रेत का खुष्क समुद्र होगा जिस रेत में किसी भी धातु की चमक न होगी। रेत की तबीयत का आदमी और निहायत ही थोड़ी गर्मी से आग बबूला और सर्दी से ठण्डा होने वाला होगा। किस्मत की तरफ से उत्तम न होगा। बुध की अवधि तक आदि दौलत या तंगदस्त सा ही होगा। यह मन्दी किस्मत का समय 34 साल तक होगा, जो उस के 8-1/2 साल या 17 साल (बुध के अवधि का चौथाई) उम्र से शुरु हो सकता है। किस्मत का मन्दा भाग इसके अपने सिर की खराबियों का नतीजा होगा। स्वयं कमाई की बजाए दूसरों का या कर्जा उठा कर आमदन खर्च करेगा। मगर बचत नहीं गिनी जा सकती। इस मैदान में चलने वाला दरिया या रेखा इस के दो हिस्सों में तकसीम करेगा। हाथ के दांए या अंगूठे की तरफ की खर्चा व्यक्त करेगी और नेक हिस्सा या बुनियादी सहायता से सम्बंध होगी। बांए हिस्सा या मंगल बद की तरफ का चन्द्र का नेक प्रभाव या वक्त बताएगी। इन दोनों मशलशों का आपस में रकबा खर्च और बचत की औसत बताएगी यानि अगर कुल बड़ी मशलश के लिए सारी आमदन एक रुपया फर्ज हो तो रकबा के हिसाब से खर्च व बचत में निसबत होगी।

खर्चा पर काबू पाना:-(1) वृहस्पति सूर्य आपसी मगर नेक घर के या दोनों साथी ग्रह या दोनों अलग-अलग कामय या दोनों अलग-अलग अपने-अपने दोस्तों के साथ हों।

(2) ऐसे ही सूर्य बुध(3) ऐसे ही वृहस्पति शनि।

(4) बुध शनि--बचत स्वयं होती चली जाए या जरुर होवे अगर तीनों कोने बन्द हों तो खर्च और बचत बन्धे हुए होंगे या गिने जा सकते हैं या अपनी इच्छा

के अनुसार हदबन्दी के लिए हिसाब किताब में लिखे लिखाए जा सकते हैं मगर खर्च के हिसाब से बचत के रकबा में नहीं बदला जा सकता सिर्फ खर्च बचत का हिसाब रख कर खर्च शुदा व बाकी बचत की रकम मालूम की जा सकती है।

(अ) बुध वृहस्पति (ब) शुक्र वृहस्पति (स) शनि सूर्य साँझा हों मगर साथी आदि न हों तो खर्चा चाहे होता जाए, आमदन चाहे हो या न हो। अगर वृहस्पति का साथ सूर्य या शनि में से किसी को भी न मिले यानि सूर्य या शनि दोनों में से कोई एक भी वृहस्पति की राशि या दोस्ती आदि के सम्बंध मे नहीं, खर्च व आमदन होंगी । अगर खर्च घटाए तो आय स्वयं घटे। बाकी बचत वही है जो स्थित है अगर उम्र रेखा और सेहत रेखा मिलने की कोना खुला ही हो तो खर्च बचत का हिसाब-किताब भी नहीं रख सकता या अगर खर्च कम कर दिया जाए तो आमदन भी स्वयं कम हो जाएगी। यही असूल सिर रेखा और सेहत रेखा के मिलने वाली तरफ के कोने से बचत का होगा। अगर ऊपर कहा हुआ मैदान गढ़ा समान हो तो किस्मत का दरिया रवानी और उम्दा पानी और खुद अपनी कमाई का खर्च बचत होगा नहीं तो ऋण आदि से गुजारा करेगा। ऊपर लिखी हुई आय व खर्च जाती कमाई से होगी या कर्जा लाकर या किसी और ढंग से रुपया लेकर इस कर्जा से खर्च करके बाकी बचा जाएगा। बन्द मुट्ठी के अन्दर के खानों के ग्रहों वाला या खाना नं0 11 में कोई भी नर ग्रह वाला अपनी जाती कमाई से सब कुछ आमदन, खर्च व बचत करेगा। बाकियों के लिए यह शर्त न होगी आरती उधार को कर्जा नहीं गिनते। कर्जा वो होगा जो बाबे का लिया जावे पोते तक मार करता चला जाए और बेवाक न हो।

कर्जा और जायदाद जददी में इजाफा

(1) अ:: हथेली की लम्बाई खाना नं0 11 जिस तरह लम्बी हो(नर ग्रहों से भरपूर) उसी तरह रुपया पैसा इसके हाथ में आए और जिस तरह मध्यमा की लम्बाई खाना नं0 12 हथेली से ज्यादा हो (या रद्दी ग्रहों से भरपर हो)उसी तरह खर्चा या रुपया को छोड़ने वाला या उसी कद्र फजूल खर्च हो जाए।

(ब) औसत जिन्दगी:-खाना नं0 11 खाना नं0 12 की तफरीक का नतीजा होगा। कुण्डली में नौ ग्रहों से जिनते ग्रह उम्दा (कायम आदि) हों उतने हिस्सा नेक और जितने ग्रह मन्दे इतना हिस्सा बुरा होगा।

दोनों का घटाना व आखिरी औसत का नतीजा फैसला होगा। नौ ग्रहों से पांच अच्छे और चार मन्दे हो तो आमदन खर्च के लिहाज से एक बाकी रह जाएगा। नौ+पांच अच्छे ग्रह=14-9-4 बुरे ग्रह=14-5+5 तकसीम 2 रास्ते दो की 19/2 की 9-1/2 खुद बचत आखिरी 12 राशि की औसत आय 19/2 को 12 पर तकसीम किया तो 19/2 X 1/12=19/24 यानि अगर जन्म वक्त पर जायदादें जददी 24 रुपए की थी तो आखिरी समय पर 19 रुपए की छोड़ कर जाएगा या यूं कहो कि जायदाद जद्दी का नतीजा उम्र के हर 35 साल चक्र में करेगा यानि 24 के लिए 19 पैदा करके 5 की कमी या पेशी कर देगा अगर किसी भी पितृ ऋण को

अदा न करे। पितृ ऋण चाहे स्वयं राहू केतू की मन्दी हालत या खाना नं0 9 केतू 6 केतू नं0 12 राहू खाना नं0 2 दोनों की बैठक और 8 पापी ग्रहों की बैठक में कोई सहायक ग्रह न हो तो पृित ऋण के बोझ का बोझ होगा लेकिन अगर कोई पितृ ऋण इसके जिम्मा न हो तो यही 5 की बचत उम्र के हर 35 साल चक्र में का जाएगा यह औसत जिन्दगी होगी। मासिक आय न होगी। पृित ऋण से मुराद महादशा का ग्रह भी होता है यानि अगर कोई ग्रह महादशा का हो तो कमी होगी वरना बचत होगी। अगर महादशा के मुकाबला में कोई बन्द मुट्ठी के अन्दर के खानों में ग्रह या मुट्ठी से बाहर कोई भी ऊँच घर का ग्रह मिल जाए या सिर्फ खाना नं0 4 का चन्द्र अकेला ही अच्छे हो तो महादशा की शर्त भी उत्तम होगी।

(स) नेकी बदी की औसत-खाना नं0 9 के ग्रह तोहफा जो दूसरों के लिए जन्म पर साथ लाएगा और खाना नं0 2 के ग्रह खाना जो आखिरी दम अपने साथ ले जाएगा।

(ह) अगर अंगुलियां लम्बी-लम्बी हो तो साथ भी लम्बा होगा तो सिर और कद भी लम्बा या बड़ा होगा तो खुश गुजरान होगा, बशरते कि हथेली की लम्बाई मध्यमा की लम्बाई से ज्यादा हो अगर हथेली में गहराई हो तो खुद कमाई करके खुशी से गुजारा होगा और अपने बाद की वस्तुओं में बढ़ जाएगा और जायदाद में इजाफा करेगा और अगर हथेली की लम्बाई मध्यमा से कम हो और हथेली में गहराई की बजाए ऊँचाई हो यानि हथेली बाहर को उभरी हुई हो जिस पर पानी जमा न रह सकता हो(हाथ को खूब अकड़ा कर पता लग जाता है) तो बुजुर्गो की जायदाद खुर्द बुर्द कर जाने के अलावा दूसरों से भी कर्जा उठा और खा पीकर बर्बाद कर जाएगा यानि पानी से भरे तालाब को खुशक कर जाने के अलावा इसकी तह की मिट्टी भी उड़ाकर जाएगा । हथेली जिस तरह हो उसी तरह अपनी कमाई से आमदन दौलत हो और जिस तरह हथेली मध्यम से ऊँची और ऊपर को उभरी हुई हो उसी तरह करजा या दूसरों का रुपया चाहे बदनियती करके चाहे किसी और तरह उड़ा कर ले जाएगा यानि अगर गहरी हथेली की लम्बाई 5 इंच हो तो 5 आमदन खुद कमाई मध्यमा करीबन 3 इंच हो तो खर्च कर देवे 3 यानि बाकी दो जमा छोड़ जाए। उभरी हथेली वाला बुजुर्गो की जायदाद नष्ट करता जाएगा यही 5 और 3 की औरत दोस्ती और दुश्मनी अच्छे और बुरे पहलू को होगी। गृहस्थ रेखा अगर सीधी डण्डे के समान खड़ी हो तो उत्तम आमदन होते हुए भी करजई होगी।

शाहूकारा बर्ताव (खाना नं0 6):-आम बर्ताव मुतलका दुनिया व खुद साहूकारा कुण्डली के खाना नं0 6 से देखा जाएगा। खाना नं0 6 के मालिक ग्रहों का इस बात से कोई संबंध नहीं इस घर में ऊपर के दोस्त ग्रह कुण्डली वाले के मददगार और दुश्मन ग्रह इसके विरोद्धी होंगे। सिर और दिल रेखा की बीच मत्तैल[ ] (चौकोर) (अ) सिर रेखा या बुध रेखा, दिल रेखा या चन्द्र रेखा आपस में दुश्मन है जिस तरह यह दोनों एक दूसरे से के नजीदीक होती जाए सिर और

दिल की ताकत आपस में दुश्मन होती जाएगी। यानि जिस तरह इन दोनों रेखाओं के बीच का मैदान तंग होता जाए इसी तरह ही वो ज्यादा तंगदिल इन्सान होता जाए। यानि बुध मंगल और वृहस्पति दोनों का दुश्मन है इसलिए ऐसा आदमी जाएगी। बुध मंगल और वृहस्पति दोनों का दुश्मन है इसलिए ऐसा आदमी आम नींव लेन देन में बर्ताव करने लगेगा। मंगल नेक की इन्साफ की तबीयत के बदले में वे इन्साफ और एक तरफा रियायत करने वाला होगा। मंगल बुरा या भाई बन्धु रिस्तेदारों वगैरह से भी नफरत करने वाला ही होता जाएगा। आमतौर पर व्यवहार नेक न होगा। अगर यह ऐसी हालत की बजाए।

(ब) सूर्य के पर्वत के नीचे ज्यादा चौड़ी हो तो इज्जत और बेइज्जती में कोई फर्क ही न जानेगा या इसके दिल मर इज्जत और बेइज्जती कोई प्रभाव न करेगी। अगर सूर्य के पर्वत के नीचे ज्यादा तंग हो तो तंगदिली की बजह से शर्म शर्माने में अपना ही नुकसान करने वाला होगा।

(स) वृहस्पति के नीचे ज्यादा चौड़ी हो शनि के नीचे ज्यादा चौड़ी हो तो दौलत जायदाद को हरदम अजीब रखने वाला या बेहद कन्जूस होगा।

(ह) बुध के नीचे मंगल बद के मुकाम पर ज्यादा व चौड़ी हो तो ज्यादा फिराक दिल या बहुत ही सखी सरुर होए के कारण तबाह हो और नुकसान कराए।

(क) अगर वृहस्पति की तरफ से चल कर मंगल बद की तरफ को दर्जा बदर्जा चौड़ी होती जाए तो दूसरों को दिया हुआ पैसा कभी वापिस न आए। या तो वापिस करने वाला देने का नाम ही न लें और आर वो ईमानदार वापिस देने की नियत वाला हो भी तो वो विचारा वापस करने के काबिल ही न रहे।

(ख) अगर मंगल बद की तरफ से वृहस्पति की चौड़ी होती जाए तो दिया हुआ रुपया जरुर वापिस आए, साहूकारा उम्दा हो।

औलादः-चन्द्र कुण्डली का औलाद के बारे में कोई संबंध न होगा।

ग्रहों का औलाद से संबंधः-वृहस्पतिः-नकली हालत=सूर्य-शुक्र साँझा, शरीर में रुह के आने-जाने का संबंध या पैदाइश सन्तान मगर सन्तान की जिन्दगी कायम रहने या मौत हो जाने का कोई बन्धन नहीं।

सूर्यः-नकली हालत-शुक्र बुध-नकली माता के पेट के अन्धेरे में रोशनी दे देना या पैदा होने के बाद दुनिया में उनकी या उनसे माता-पिता की किस्मत को रोशन करना, खास कर बजरिया नर सन्तान। अन्धेरे घरों में चिराग रोशन करने की ताकत व सेहत का मालिक।

चन्द्रः-नकलीः हालत-सूर्य वृहस्पति साँझा-उम्र, धन, दौलात, और माता-पिता नेक संबंध, माता-पिता का खून, नतफा का संबंध(नर-मादा हर दो औलाद का)।

शुक्रः-नकली हालत-राहू केतु साँझा-शरीर बुत्त की मिट्टी, गृहस्थी सुख, सन्तान की पैदाइश में सहायता या खराबी, संसारिक सुख।

मंगलः-नकली हालत-सूर्य बुध साँझा-नेक मंगल, सूर्य शनि।

साँझा -मंगलबुरा, शरीर में खून कायम रहने तक जिन्दगी का नाम और दुनिया में

सन्तान और उनके आगे सन्तान दर सन्तान कायम रख कर बलों की तरह बढ़ाना और उनका नाम या उनके नाम से सब का नाम बढ़ाना या दुनिया में नाम बाकी पैदा कर देना स्वयं कुण्डली वाले में से अलग बच्चा पैदा करने की शक्ति शरीर में जोर, रुह बुत को इकट्ठा पकड़े रखने की हिम्मत, बेल सब्जी की तरह सन्तान जिन्दा रखने का मालिक।

बुधः-नकली हालत-वृहस्पति राहू साँझा सन्तान का रिस्तेदारों से संबंध, लड़कियों की नसलों का बढ़ाना खुद कुण्डली वाले में चाहे खाली विषय-विकार की शक्ति, कुण्डली वाले और सन्तान के लिए दूसरों से मिलने-मिलाने के लिए मैदान खुला करना या खाली आकाश की तरह इन सबके लिए हर तरफ जगह खाली करके मैदान बढ़ाना देना, इज्जत शोहरत।

शनिः-नकली हालतः-(अ) शुक्र वृहस्पति साँझा--केतू स्वभाव
(ब) मंगल बुध साँझा (राहू स्वभाव, औलाद की पैदाइश के शुरु होने का वक्त, जायदादी संबंध, मौत के बहाने सख्त बीमारी)।

राहूः- नकली हालत--मंगल शनि साँझा ऊँच राहू---सूर्य-शनि साँझा नीच राहू, वृहस्पति के प्रभाव के विरोद्धि होना या वृहस्पति को चुप कराना, रुह का आना जाना बन्द करना या मौतें या बहुत देर तक पैदाइश औलाद रोक देना, या दीगर दैबी छुपी छुपाई खराबियां या पांव तले भूचाल पैदा करना मगर लड़कियों की सहायता करता है, झगड़े फसाद आदि।

केतूः-नकली हालत--शुक्र शनि साँझा (ऊँच केतू) चन्द्र शनि साँझा (नीच केतू)--सन्तान की खुशाहाली फलता-फूलना मगर सन्तान की तायदाद में कमी का हिन्दसा रखना, मौते करके सन्तान घटाने से मुराद नहीं वैसे ही सन्तान गिनती ही की होगी या बहुत देर बाद होगी। लेकिन जो होगी या जब होगी अच्छी और मुकम्मल होगी, बशर्ते कि इसके दुश्मन ग्रह की दृष्टि न हो केतू पर। खुद कुण्डली वाले में बुध की चाल और मंगल के खून से बच्चा पैदा करने की शक्ति और वृहस्पति की सन्तान की पैदाइश तीनों को इकट्ठा करके रखने वाली शक्ति नतफा या वीर्य या नतफा की नींव को नर मादा में मिलाने वाल तूफानी हवा या खाली नाली होगी। यही तीन ग्रह केतू की तीन टांगे हैं जिनकी वजह से यह शुक्र का बीज कहलाता है। अगर कुण्डली वाले का जो ग्रह रददी हालत या उम्दा हालत का होगा वही हालत रददी या उम्दा हालत होगी। ऐश का मालिक केतू को(वृहस्पति -मंगल-बुध)

केतू :- लड़का भी माना है जो अपने ऊँच घरों में ऊँच फल देता है लेकिन अगर वृहस्पति या मंगल खाना नं0 6,12 में हो जाए तो केतू चाहे उत्तम या नेक घरों में ही क्यों न बैठा हो बुरा फल देगा।

औलादः-वृहस्पति के सीधे खड़े खत, बुध के पर्वत पर शादी रेखा के ऊँपर औलाद की कुल संख्या व्यक्त करते हैं यही खत दांए हाथ के अंगूठे की जड़ में

मर्द के संबंध से सन्तान और बांए अंगूठे की जड़ में औरत की सन्तान। मंगल बुरा के पर्वत के किनारे पर सहायता सन्तान और चन्द्र के पर्वत के किनारा पर उम्र वाली सन्तान प्रकट करते हैं।

(2) शादी रेखा ऊपर बिलकुल बारीक बारीक सीधे खत लड़के और दो शाखी लकीरें लड़कियों। वही नियम पर मादा औलाद देखने के लिए हर पर्वत पर होगा। साफ व दुरुस्त और सही खत कायय सन्तान और मध्यय और कटे हुए खत पर जाने वाली औलाद जाहिर करते हैं।

(3) कलाई की रेखा अगर हथेली के अन्दर घुस आवे और आन्तरिक शराफत रेखा की शक्ल कि समान हों तो औरत की पिण्डलियां मोटी हो तो सन्तान कम होने या न होनें या देर बाद होने या दीगी रुकावट सन्तान या सन्तान के मर जाने का अहवाल या अन्देशा और शक होगा। इसके साथ ही(यानि कलाई की रेखा हथेली में घुस आए) अगर शुक्र का पर्वत भी बहुत बड़ा हो तो लाऔलादी (सन्तरल न होने या न रहने)की पूरी निशानी है। ऊपर के और समाने के दांत अगर टूटे हुए हों तो सन्तान 34 साल उम्र के बाद होगी।

(4) अंगूठे की जड़ में सीधे खड़े खत वृहस्पति का प्रभाव या सन्तान प्रकट करते हैं। दांए अंगूठे में मर्द की तरफ से सन्तान और बांए अंगूठे की जड़ में औरत की सन्तान प्रकट होगी। यह जरुरी नहीं है कि ऐसी सन्तान मर्द की अपनी औरत से हो या औरत की अपने मर्द के संबंध से हो। लड़की पैदा होने का भेद प्रकट कर देना बाज वक्त गुनहगारी हो सकता है क्योंकि हो सकता है कि किसी को लड़की पैदा होगी, ऐसी हालत में बेवकूफ नास्तिक हमल ही गिराने का ढंग पकड़े या हो सकता है कि जवाब गलती से देखा जाए जिसकी वजह से बच्चे की माता के पेट में लापरवाही हो जाए, इसलिए यह भेद किसी को प्रकट न किया जाए।

वक्त सन्तानः जब वर्ष फल मंगल या शुक्र या केतू या बुध में से कोई तख्त(बशर्ते कि खाना नं0 5, सन्तान का बुरा ग्रहों से बुरा न हो नहीं तो पैदाइश की बजाए सन्तान की मौतें होंगी) यानि नं0 1 में आ जाए या शनि भी शामिल हो जाए या चन्द्र या नर ग्रह नं0 1,5 में आ जाए या अकेला केतू नं0 11 में हो जाए या मंगल का वक्त और साथ बाहिसाब मध्य ग्रह और खाना नं0 2 में मंगल, शुक्र, केतू, बुध के सहायक ग्रहों की हालत हो तो सन्तान और नर सन्तान होगी। वास्तव में सम्बन्धित ग्रहों व ऊँच फल देने वाले ग्रहों के प्रभाव का वक्त होगा। नीच ग्रह सन्तान के खिलाफ रेखा का प्रभाव जरुर देखना पड़ेगा यानि देखे कि खुद केतू की अपनी-अपनी हालत या दानों में से जो उम्दा हो नर मादा- का फैसला करेगा। उम्दा केतू लड़का, उम्दा बुध लड़की देगा। जब वर्षफल सन्तान का वक्त होः-

(अ) लड़के देंगे--शुक्र के दोस्त ग्रह यानि शनि केतू बुध मगर खुद शुक्र नहीं जब वो उत्तम हों या 3,5,11 में हो जाए। वृहस्पति कायम हो तो सब-लड़के

कायम राहू कायम हो तो सब लड़कियों कायम बशर्ते कि इन ग्रहों पर इनके दुश्मन ग्रहों की दृष्टि न पड़ रही हो चन्द्र नं0 6 तो सब लड़कियों हो (केतू नं0 4 से सब लड़के हों, मगर आपस में वो साथी ग्रह न बन रहे हों। चन्द्र केतू इकटठे लड़के लड़कियों जैसे । औरत के पांवों में (दोनों पांव इकटठे गिर कर) जिस तरह चक्र या पदम साफ व गहरे पव या पांव की हथेली पर हा उसी तरह लड़के होंगे जिस तरह चक्र या पदम नम्र व बारीक लकीर के हों उसी तरह लड़कियां ही होंगी।

तायदाद औलादः-शुक्र या बुध या दोनों साँझा के जितने दूर पर वृहस्पति हो यानि जितने मध्य घर हों कायम रहने वाली तायदाद सन्तान इतनी होगी कम से कम। जिसमें से नर-मादा की अलग-अलग देख लेंगे। बिना सन्तान के व साहब सन्तान होने की शर्ते साथ होंगी। अगर शुक्र बुध और वृहस्पति या कोई दो साँझा ही हों तो कुण्डली के जिस खाने में साँझा हों वहां से चल कर जिनते घर आखिर नम्बर पर उनमें से किसी भी एक का पक्का घर की राशि हो उस नम्बर तक इन तीनों की हदबन्दी होगी। यानि बीच में 6 घर खाली होंगे। केतू नं0 9 में हो तो ज्यादा से ज्यादा 3 मर जाने पर 3 और कम से कम 2 लड़के जरुर कायम होंगे। केतू नं0 12 में हो तो कम से कम 6 पर सन्तान जरुर होगी बशर्ते कि नर ग्रह वृहस्पति सूर्य या मंगल कायम ऊँच या उम्दा हों। शनि नं0 5 48 साल उम्र तक सिर्फ एक लड़का-कायम 1 अगर अपनी कमाई से कोई नया मकान न बनावे, लेकिन अगर नर ग्रह कायम हों या कोर्ह नर ग्रह कायम हो तो सन्तान बर्बाद न होगी। शनि व नकली शनि साँझी हालत में होने से सन्तान की दोरंगी होगी। यानि जिस टेवे में शनि के अलावा नकली शनि भी हो (1) शुक्र-वृहस्पति साँझा केतू स्वभाव शनि नकली तो सन्तान बहुत ज्यादा और कायम होगी। लेकिन अब
(2) मंगल बुध साँझा नकली शनि राहू स्वभाव के बुरे स्वभाव का हो तो सन्तान माता के पेट में भी बर्बाद होती जाए। ऐसी हालत में अगर वृहस्पति, चन्द्र या सूर्य नेक या उम्दा हों तो शनि की 36 साल उम्र से सन्तान कायम होगी। लेकिन अगर ऐसी मदद न मिले तो केतू का जाती फैसला (जन्म कुण्डली में बैठा होने के हिसाब से) बहाल होगा। अगर केतू भी बुरा हो शुक्र कर आखिर फैसला होगा। चन्द्र केतू नं05 कायम बशर्ते कि शनि नीच बुरा या नम्बर 6 में न हो। राहू नं0 9 इक्कीस साल उम्र से 42 साल तक सिर्फ एक लड़का कायम, बाद अजां 3 ज्यादा से ज्यादा, कम से कम 2, लड़के कायम। राहू नं0 5 निहायत बुरा ग्रह वास्ते सन्तान, मगर चन्द्र या सूर्य साथ, साथी या साँझा दीवार के खानों (नं0 6-4) में न हों, शनि नं0 7 साल लड़के कम से कम बशर्ते कि राहू नं0 11 में न हों या नर ग्रह बुरे न हों। शनि नं0 3, सूर्य नं0 5 सन्तान से दुखिया होगा।

माता-पिता का आपसी संबंधः-एक दो, तीन चार ही बारह की क्रम से अगर कुण्डली में

पहले घरो में	बीच के घरो	बाद के घरों	तो प्रभाव क्या होगा।
दृष्टि वृहस्पति		बुध	पैदाइश सन्तान जरुर होगी
बुध		वृहस्पति	बुध के समय से माता-पिता दुखिया बर्बाद या खत्म ही होगा
बुध-वृहस्पति	आपस में	बामुकाबिल होए	तो लड़कियों जरुर कायम लड़को की शर्त नहीं
मंगल	वृहस्पति	बुध	सन्तान नर कायम
मंगल	बुध	वृहस्पति	सन्तान नर कायम
वृहस्पति	मंगल	बुध	सन्तान नर कायम
वृहस्पति	बुध	मंगल	सन्तान नर कायम
बुध	वृहस्पति	मंगल	सन्तान नर कायम
बुध	मंगल	वृहस्पति	सन्तान नर कायम
मंगल-वृहस्पति	- -	बुध	आपसी औलाद (नर-मादा) कायम और सब सुखी होंगे।
मंगल-बुध	-	वृहस्पति	लड़की कायम माता-पिता दुखिया
वृहस्पति	-	मंगल-बुध	लड़की कायम माता-पिता दुखिया
बुध	- -	मंगल-वृहस्पति	सन्तान व बाप दोनों ही दुखिया
मंगल		बुध-वृहस्पति	सन्तान कायम मगर बाप की हालत रददी

जन्म कुण्डली में अगर सूर्य के साथ इसके दोस्त ग्रह बैठे हों तो वो शख्स अपने बाप से उत्तम हालत कर होगा। लेकिन अगर सूर्य के साथ इसके शत्रु ग्रह बैठे हों तो ऐसे व्यक्ति की औलाद उससे भी बुरी हालत होगी।

औलाद का माता-पिता को सुख:- जन्म कुण्डली के खाना नं0 1,3,5 के ग्रहों की अच्छी या बुरी हालत से जाहिर हो जाएगा। उम्र रेखा मगर सही और दुरुस्त हो तो सन्तान का सुख अवश्य हो। औरत के शकम (पेट) और सीना (छाती) पर बाल हो तो अपने लड़के का सुख (पहली सन्तान लड़का) जरुर भोगेगी। और अगर इन बालों में भंवरी (चन्द्र का गोल दायरा सी) हो तो पहली सन्तान लड़का ही होगा। मर्द के दांए पांव का अंगूठा अगर छोटा और इसी पांव की तर्जनी अंगूली बड़ी हो तो वह व्यक्ति अपने लड़के का सुख न भोगेगा। यह मतलब नहीं कि पहला लड़का मर ही जाएगा सिर्फ आपसी सुख दुख देने का अर्थ है। और अगर अंगूठा व तर्जनी या कनिष्का व अनामिका बराबर हो तो भी सन्तान का सुख शक्की होगा वर्ष फल के हिसाब से सूर्य हो खाना नं06 में और शनि हो खाना नं012 में तो औरत पर औरत मरती जाए या मां बच्चों का संबंध ही न देखे या सुख से पहले चलती जाए। बुध मारता हो वृहस्पति को या बुध हो वृहस्पति के घरों में या वृहस्पति के साथ ही हो तो बच्चे पिता पर भारी(दुख या मौत का) होगा।

साहब सन्तानः-कौन बाल-बच्चों का कबीला और परिवार वाला होगा। कुण्डली वाले के लिए

(1) वृहस्पति सूर्य शुक्र बुध शनि सब कायम या

(2) केवल वृहस्पति या सूर्य कायम या दोनों ही कायम या

(3) मंगल हो शुक्र या बुध के पक्के घर या उनकी राशियों में और दृष्टि के सब खाने वाली हों। या

(4) मंगल हर तरह से कायम और नेक हो। या

(5) मंगल को बुध शुक्र राहू के साथ उनके पक्के घर या उन राशियों में और शनि हो सूर्य चन्द्र वृहस्पति के साथ इनके पक्के घर या इनकी राशियों में या

(6) मंगल शनि साँझा हो स्वयं अपनी सन्तान उत्तम हो और नेक हो परन्तु पोते देर बाद या संख्या में कम हों। पोतियों की शर्त नहीं गृहस्थ रेखा अगर गहरी और शुक्र के पर्वत में अंगूठे की तरफ झुकी हो तो वह व्यक्ति ही आयु वाला, जायदाद हल्की मगर दौलतमन्द, साहब इज्जत और उत्तम हाल होगा। दुनिया, स्त्री और सन्तान का सुख भोगेगा और अगर गृहस्थ रेखा ऊपर की तरफ दिल रेखा को काट कर मध्यमा तक चली जाए तो अपनी सन्तान के अतिरिक्त सन्तान की सन्तान या पोते-पड़पोते वाला होगा और बड़ा ही कबीला वाला(अपने तुख्म से पैदा शुदा) और सुखी होगा। जायदादी हालत में कद्दे हल्का ही होगा। पांव की अंगूलियां अगर क्रम एक से दूसरे बड़ी होती जाए तो साहब सन्तान के जरुर कायम रखेगा। चाहे वह नं0 5 वाले दोस्त हो या दुश्मन मान लो खाना नं0 5 में शनि और खाना नं0 9 में मंगल हो तो मंगलवार के दिन वाली नर सन्तान कायम रहेगी। केतू नं0 9 और राहू नं0 5 हो तो रविवार की सुबह वाली सन्तान कायम रहेगी। शुक्र बुध या दोनों साँझा का खाना नं0 5 में होने से सन्तान नर पर कोई बुरा प्रभाव न होगा। लेकिन अगर दोनों में से कोई एक नं0 9 में हो तो सन्ताा नर बुरा प्रभाव जरुर होगा। अपने दुश्मन ग्रह(सूर्य या चन्द्र या वृहस्पति मय राहू या केतू) जब नं0 5 या नं0 9 में हो तो सन्तान बर्बाद और नष्ट होगी। चन्द्र नष्ट या बर्बाद-सन्तान(नर-मादा की ततबीज नहीं) बर्बाद या नष्ट होगी। मगर सन्तान होने की शर्त नहीं।

(1) शुक्र बुध मंगल तीनों खाना नं0 3 दृष्टि खाली हो खाना नं0 11,

(2) शुक्र बुध मय राहू या केतू खाना नं0 7 शादी और सन्तान में गडबड़ हो। खाना नं0 5 या 9 में या 3 या 9 में पापी ग्रहों हों या खाना नं0 5 या 9 या 3 या 9 में वृहस्पति या सूर्य के दुश्मन ग्रह हों या मंगल खाना नं0-4 या पापी ग्रह नं0 9 में राहू बुध नं0 1 बुध या केतू शुक्र नं0 1 या राहू अकेला खाना नं0 9 औलाद के विघ्न(मौतें खराबियां होंगी। शुक्र केतू खाना नं0 1 में मंगल खाना नं0 4 में सन्तान के विघ्न पापी ग्रह तीनों या कोई एक 5 या 9 में मंगल खाना नं0 4 में सन्तान के विघ्न 1 बुध शुक्र खाना नं0 5 में औलाद पर कोई बुरा प्रभाव न होगा। सूर्य हो खाना नं0 6 में और मंगल हो खाना नं0 10 या 11 में तो लड़के पर लड़का मरता जाए। चन्द्र नष्ट तो औलाद जरुर नष्ट होगी।(नर मादा बच्चों की तमीज नही) मगर सन्तान होने की शर्त न होगी। जिस टेवे में शनि व नकली शनि(मंगल बुध साँझा राहू स्वभाव) हो सन्तान जरुर बर्बाद होगी, छोटी-छोटी उम्र में सूर्य नं0 12 में हो या मंगल बुध साथी ग्रह चाहे स्वयं दोनों आपस में साथी

ग्रह हों या दोनों ही एक दूसरे के दोस्तों घर या राशि में बैठे जाएं या दोनों आपस में साँझा ही हो जाए, मगर आपस में अवरुद्ध न हों या सूर्य नं0 12 में हो तो कभी सन्तान न होगी। वृहस्पति शुक्र नं0 7 चन्द्र मंगल नष्ट, बहुत बड़ा वृहस्पति और नर्म हाथ का वृहस्पति शुक्र का काम देता है, मगर बहुत बड़ा शुक्र औलाद से वंचित रखता है । शुक्र केतू साँझा खाना नं0 1 में और स्वयं नष्ट हो(सामने के दांत खत्म) या चन्द्र नं0 8 और छते हुए कुएं का भी साथ हो तो औलाद न होगी। औरत के पांव (पांव की पीठ) अगर बहुत ही कला हो तो बांझ होगी। शुक्र हो खाना नं0 2,6 में दृष्टि या साथी आदि हो जाने के सब ही घर खाली हों यानि खाना नं0 2 या 6 का शुक्र हर तरह से अकेला हो औरत बांझ या नाकाबिल सन्तान होगी। चन्द्र हो खाना नं0 1 शनि खाना नं0 7 सूर्य नं0 4 शुक्र नं0 5 हो तो नामर्द होगा।

सेहत व बीमारी:-(चोरी व बरामदागी, घाटा व मुनाफा, शिकास्त व जीत) के लिए भी नियम यही होंगे चूँकि (अ) खाना नं0 2)के ग्रहखाना नं0 8 की रददी हालत से बचाने वाले होंगे शर्त यह है कि कि खाना नं0 11 के दुश्मन ग्रहों से वो बुरा न हो।

(ब) मंगल नेक का पक्का घर मैदान--एक जंग व जंदल, उम्र के दरिया की, जिसमें से हर एक की किस्ती ने गुजरना है और संसारिक माया व धन दौलत के इस जहान से दूसरे में चले जाने का रास्ता है।

(2) खाना नं0 5 सूर्य की सेहत या तरक्की रेखा जो सूर्य ग्रहण के समय सूर्य की रोशनी, संसारिक, रुपया-पैसा और इन्सान के लिए या आगे आने वाले दूसरे जन्म का दरवाजा है इसलिए इन दो घरों नं0 3 व 5 से वर्षफल के अनुसार बीमारी व सेहत का हाल प्रकट होगा कि आया बीमारी या शाररिक बुरा समय केवल खर्चा फजूल व रुपया की बर्बादी का ही है या रुह की परिवर्तन और मौत जमाना होगा।

किस खाना के लिए	''अ''कौन सा खराबी का सबब या बिमारी का सबब होगा .	''ब' कौन सा घर गिरते को उठा कर खड़ा कर देगा या सेहत कामालिक स''
खाना नं0 3 के लिए	**खाना नं0 3 के लिए**	**नं0 3 के लिए**
खाना नं0 5 लिए	**नं0 1 अचानक चोट लगा देगा**	
नं0 6 धोखा देगा	**नं0 8 बुरा टकराव देगा.**	**नं0 8 धोखा देगा**
नं0 10 बुरा टकराव देगा	**अगर खाना नं0 3,9,5 बुरे हो तो नं0 5 भी बुरा होगा। सूर्य या वृहस्पति नं0 10 में हो तो खाना नं0 5 के ग्रह उनके लिए जहरी दुश्मन होंगे सिखाए चन्द्र खाना नं0 10 सभी ग्रहों के लिए जहर होगा चाहे सूर्य वृहस्पति नं0 10 में हो नं0 11 आपसी मदद देगा**	
नं0 7 नींव होगा	**नं0 2 साँझी दीवार होगा**	**नं0 1 आपसी मदद देगा**
नं0 4 साँझी दीवार होगा	**नं0 9 नींव घर हो**	

जन्म खाना नं011 धोखा देगा खाना नं0 8 मौत को मौत नं0 8 टकराव देगा नं0 2
गुजरगाह दुनिया को, दुनिया नं0 3 धोखा देगा, आगे का जन्म नं0 5 टकराव देगा।
नं0 12 में आया वीरान कूच आखिरी समय को चूंकि
नं0 5 311 दोनों जहोनों की कोई दृष्टि नहीं है इसलिए खाना नं0
12 जिसमें दोनों जहाज 2;12 मिलते है न्यायक होगा

जिसके हुकम सुनाने का साल कुल उम्र कितनी है के ब्यान से व्यक्त होगा अगर खाना नं0 3 व नं0 5 खाली हो तो ऊपर दिए हुए नक्शे के बीमारी व सेहत के घरों से ही बुरी व अच्छी हालत देख लेंगे यानि अगर वहां के ग्रह नेक और शनि वर्षफल नं0 2 में आ जाए तो सेहत बुरी होगी। अगर सेहत व बीमारी के खानों के घर यानि वो सभी जो "ब" व "स" के नीचे लिखे हैं खाली हो और केवल नं0 3,5 या दोनों में से किसी एक में ही ग्रह हों तो नं0 3,5 के ग्रहों की आपसी दोस्ती शत्रुता का नतीजा सेहत बीमारी का हाल होगा। सेहत बीमारी की वजह से भी सम्बन्धित ग्रहों की चीजों से होगी अगर खाना नं0 12 न्यायक का घर खाली ही हों तो न्यायक का काम करने के लिए नं0 2 भी नं0 12 का काम देगा।

न्यायक	या नं0 2-8	नं0 3-8
	नं0 2-9	नं0 3-5
	नं0 2-10	नं0 11-8 वास्ते दुःख बीमारी

साँझा गिनें जाएगे यानि जहां कहीं भी वर्षफल के हिसाब से ऊपर की फैरिस्त में 12 का चक्र हो और वो खाली हो तो उसकी जगह नं0 2 काम देगा अगर वो भी खाली हो यानि नं0 2 खाली हो तो नं0 8 या नं0 9 या नं0 10 काम देगा वास्ते न्यायक 1 इसी तरह अगर नं0 3 खाली हो तो नं0 8 या नं0 9 या नं0 10 काम देगा वास्ते न्यायक। इसी तरह अगर नं0 3 खाली हो तो नं0 8 या नं0 5 काम देगा। अगर नं0 11 खाली हो तो नं0 8 ही काम देगा नं0 11 का वास्ते बीमारी के लिये । ऊपर के हर सम्बन्धित ग्रह का जाती स्वभाव ही होगा जो कि उस ग्रह का जन्म कुण्डली के खाना नं0 में बैठा होने के हिसाब से हो। मुकम्मल फैसला जबकि कोई भी ग्रह मददगार न हो खाना नं0 2,6,8,12 के ग्रहों से होगा जिसकी आखिरी अपील चन्द्र की हालत व प्रभाव होगी।
मौत की बीमारी के लिए उम्र के हाल में बहाना मौत भी देखें।
बीमारी का समयः-नकली सूर्य (शुक्र बुध) रिजक व सेहत का मालिक सूर्य है। जिसका निश्चित घर(राशि) नं0 5 है इसलिए अगर खाना नं0 5 में (1) वृहस्पति, नकली, वृहस्पति-सूर्य शुक्रखाली हवाई वृहस्पति(या सूर्य हो। खाना नं0 5 में वृहस्पति भी शामिल है) तो जब वृहस्पति या सूर्य के दुश्मन ग्रहों का तख्त की मालिकियत का जमाना होगा। बीमारी खड़ी होगी।
(2) लेकिन अगर खाना नं0 5 में सूर्य वृहस्पति स्वयं तो न हो मगर उन दोनों के दुश्मन ग्रह बैठे हों तो जब वृहस्पति या सूर्य का दौरा(तख्त की मालकियत) का

जमाना होगा, बीमारी आ दौएगी (अगर खाना 5 खाली ही हो तो सेहत उम्दा होगी। ऊपर की दोनों हालतों में वृहस्पति की दुश्मनी या वृहस्पति से इसके दुश्मन के टकराव से बीमारी की निशानी सन्तान की होगी शनि उसके यहां सन्तान पैदा होने वाली होगी। क्योंकि वृहस्पति सन्तान की पैदाइश का मालिक है(मुफसिल हाल सन्तान में लिखा है) और दूसरा फर्क यह होगा कि जब वृहस्पति स्वयं तख्त का मालिक हो कर चले और अपने घर में दुश्मन बैठा देखे तो ऐसे शख्स की औलाद(वो बच्चा जो अभी औरत के पेट में है) पैदा होकर खत्म हो जाएगा। तो खत्म होगी। (यह सन्तान लड़की। बुध को वृहस्पति की दुश्मनी है होगी, इस तरह वृहस्पति को एक तो अपने घर के दुश्मन का झगड़ा और दूसरा औरत के पेट में बुध का झगड़ा तंग करेगा) लेकिन जब वृहस्पति स्वयं खाना नं0 5 में हो या उसका दोस्त सूर्य हो तो तख्त के मालिक ग्रह के समय जो सूर्य या वृहस्पति का दुश्मन हो झगड़े का सबब खौरत के औरत के पेट का बच्चा फिर वही लड़की होगी जो गुनाह है इसलिए जब तक वो लड़की पैदा न हो लेगी बीमारी कायम होगी। मगर पैंदा होकर लड़की मरेगी नहीं, लेकिन अगर इसकी औरत के पेट में नर बच्चा सूर्य का सबूत हो तो तख्त का मालिक दुश्मन ग्रह उसे सूर्य समझ कर जो सूर्य से बर्ताव कर सकता है करेगा यानि लड़के का जिन्दा रहना या मर जाना। सूर्य व दूसरे दुश्मन के आपसी टकराव का जैसा भी हो नतीजा होगा शुक्र के पर्वत पर उम्र रेखा को काटने(खाना नं0 7 में शनि के दुश्मन ग्रह) वाले खत बीमारी का खतरा व्यक्त करते हैं। सेहत रेखा जिस जगह खराब या टूटी फूटी हो(सूर्य के साथ दुश्मन ग्रह) बीमारी का समय होगा। 12 साल तक या बारह राशियों की अवधि तक कोई बीमारी बच्चा की अपनी नहीं गिनते। अगर सूर्य नं0 1 और खाना नं0 7 खाली हो तो छोटी उम्र में शादी कर लेने से उम्दा सेहत और राज दरबार(प्रभाव सूर्य लम्बी उम्र वगैरह) शुभ होगा।

ग्रह बिमारी का संबंध:-हर ग्रह की प्रसिद्ध बिमारियां मुन्दरजा जैल है या जब कभी बिमारियों का संबंध ग्रह खराब, बर्बाद या नीच होगा तो वह नीचे लिखी हुई बिमारी हो सकती है। दूसरे लफजों में जब कभी नीचे लिखी हुई बिमारी तंग करे तो उसी समय इसके सम्बन्धित ग्रह का उपाय करें तो सहायता हो जाएगी। साँझा ग्रहों की हालत में उस ग्रह का उपाय करें जिसके प्रभाव से दूसरा साथी मिला हुआ ग्रह भी बरबाद हो रहा है। उदाहरण के तौर पर वृहस्पति राहू बुरे के समय राहू का दिया हुआ उपाय मदद देगा।

अगर घर से बिमारी दूर ही न होती हो तो:-

(1) घर के सारे सदस्य और आए हुए मेहमानों(औस्तन) की तायदाद से चन्द ऐक ज्यादा रख कर मीठी रोटियां (चाहे कितनी छोटी और कितना ही थोड़ा मीठा इनमें हो) पका कर हर महीने में (तीस दिन के फर्क पर ज्यादा से ज्यादा) एक बार जानवरों कुत्तों कौओं आदि को डाल दिया करें। या

(2) हलवा कद्दू जो खूब पका चुका हो रंग में पीला और अन्दर से खोखला

मालूम हो धर्म स्थान में केवल एक बार हर तिमाही या हर छमाही बल्कि अगर ज्यादा बार न हो सके तो हर साल में एक बार ही रख दिया करें।

(3) या-अगर किसी तरह भी कोई मरीज ठीक न हो तो रात को इसके सिरहाने दो तांबे के पैसे रख कर सुबह किसी भंगी को चालीस या त्रैतालीस दिन दे देवें। यह पिछले जन्म के लेने देने का टैक्स कहलाता है या

(4) अगर हो सके तो शमशन या कब्रिस्तान से जब कभी भी गुजरने का मौका मिले तो पैसा ङो पैसा वहां गिास दिया करें निहायत दैवी मदद मानते हैं।

नाम ग्रह	बिमारी सम्बन्धित
बुध	चेचक दिमागी तांबा की बिमारियां खुशबू या बदबू का पता न लगना नाडियां जबान या दांत की बिमारियां जब बुध नं0 12 और सूर्य नं0 6 में हो तो ब्लड प्रैशर की बिमारी होगी।
शनि	नजर की बिमारियां खांसी हर किस्म की(चाहे नई या पुरानी वगैरह जो दमा (जो वृहस्पति से संबंध है) चश्में की बिमारियां। उपाय-दरिया में नारियल बहाना, शनि के मन्दे प्रभाव से बचाव देगा।
राहू	बुखार, दिमागी, बिमारियां प्लेग हादसा, अचानक चोट
केतू	उज (हिस्सा शरीर) राहू दर्द जोड़ आम फोड़े-फुन्सी, रसौली सजाक अन्तरिया पेशाब की बिमारी बेहत अहतलाम (स्वप्न दोष) का की बिमारियां रीड़ की हड्डी हरनिया उजू का उतर जाना या भारी हो जाना।
वृहस्पति-राहू	
वृहस्पति-बुध	दमा, सांस की तकलीफ
राहू-केतू	----------------
चन्द्र-राहू	बवासीर
वृहस्पति-राहू	पागलपन, निमोनियां
सूर्य,शुक्र	
2 बुध-वृहस्पति	दमा,तपेदिक
मंगल-शनि	
शुक्र-राहू	कोढ़, खून की बिमारियां, शरीर का फट जाना
शुक्र-केतू	नार्मदा
वृहस्पति-मं0बुरा	अहलताम(सिर्फ केतू वगैरह की बिमारियां)
चन्द्र-बुध या	यरकान (पीलिया)
मंगल का	
टकराव	ग्लैण्डज़

उम्रः-मर्द-औरत, मां-बांप, बहिन-भाई, बड़ा-छोटा, दांया-बांया, बाप-बेटा, मां-बेटी, रात-दिन, जन्म-मरण शुरु आखिर, अकाश-हवा, नर ग्रह-स्त्री-ग्रह, नेकी-बदी, सब को गांठ लगाने वाला बच्चों और इसकी लगाई हुई गांठ ग्रह शक, अदल व रहम, इन्साफ राहू केतू साँझा सभी गृहस्थ की शादी-गमी, जन्म कुण्डली व चन्द्र कुण्डली के दोनों जहानों के मालिक वृहस्पति की हवा के आने-जाने के रास्ते, बुध के खाली खुलाव के आकाश की अक्ल, सूर्य की रोशनी व

शनि के अन्धेरे की साँझा जगह मौत उत्तम या उम्र का आखिरी समय सबसे पहले देखा जाए मगर किसी दूसरे को व्यक्त न किया जाए क्योंकि यह सब हिसाब किताब संसारिक व इन्सानी दिमाग का काम है और उस मालिक का भेद किसी को नहीं मिला, हो सकता है कि कहीं गलती हो और नाहक वहम खड़ा हो और मायूसी से बेवक्त और नुक्सान खड़ा हो जाए। यह भेद की शक्ति असल शक्ति होगी जो खाना नं0 6 (पाताल रहम) नं0 8 (मौत, अदल) और नं0 12 (आकाश, इन्साफ) का नतीजा होगी। खुलास्ता यह तीनों खाने सबसे पहले पूरे तौर पर देख लिए जाएं वरना सभी कहानी बेमायनी होगी।

नाम ग्रह	बिमारी सम्बन्धित
वृहंस्पति	सांस, फेफड़े के अमराज
सूर्य	दिल धड़कना, सूर्य कमजोर जब चन्द्र की मदद न मिले पागलपन मुंह से झाग निकलना अंग की शक्ति बेवत हो जाना जब बुध नं0 12 सूर्य नं0 6 हो तो बल्ड प्रैशर लो की बिमारी होगी।
चन्द्र	दिल की बिमारियों, दिल की धड़कन, आंख के डेला की बिमारियां।
शुक्र	चर्म रोग, खुजली चम्बल आदि(नाक छेदन बुध के उपाय से मदद
मंगल	मिलेगी)
मंगलबुरा	नासूर पेट की बिमारियां, हैजा, पित्त-मैदा भगदर(फौड़ा) नासूर

औलाद की उम्र खाना नं0 11 माता की उम्र खाना नं0 6, पिता की उम्र खाना नं0 10 और जाती उम्र का खाना नं0 8 से प्रकट होगी।

उम्र का मालिक चन्द्र माना है कि लेकिन पितृ ऋण या मातृ ऋण वाले टेवे में उम्र का फैसला सूर्य से होगा।

सूर्य हो	1	2	3	4	5	6	7	8	9
	10	11	12						
चन्द्र प्रभाव देगा	9	8	7	6	5	4	3	2	1
	10	12	11						

उदाहरणतयः जन्म कुण्डली बमुजब अगर सूर्य हो खाना नं0 6 तो चन्द्र बेशक किसी घर हो नं0 4 का प्रभाव या चन्द्र का नं0 4 में लिख का जो फैसला हो करेंगे उदाहरणतयः चन्द्र खाना नं0

1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	90	96	80	85	100	80
85	90	75	90	90	90			

चन्द्र से शुक्र का संबंध हो तो 35 साल, नर ग्रह का हो तो 95 साल, और पाप का (राहू केतू) हो तो 3 साल कम होगी। शनि, वृहस्पति, साँझा वाले टेवे वाले की उम्र का फैसला खाना नं0 11 के ग्रहों से होगा। लेकिन अगर खाना नं0 11 खाली हो तो आम टेवों के असूल पर चन्द्र की उम्र का मालिक गिना जाएगा।

	बाकी उम्र कितनी है
तबीयत बदल जाए यानि गर्म स्वभाव नम्र और नर्म स्वभाव सख्त तबीयत हो जाए।	1 साल
उत्तर का सितारा (ध्रुव) रात को नजर न आए	80 दिन
घी, तेल, पानी में परछाई नजर न आए	7 दिन
आइने में अपनी परछाई नजर न आए	1 दिन

सांस लेते समय पेट न हिले या शंख पथराने लगे।	चं0 घंटे
सांप का काटा हुआ (मौत चार दिन शकी जहर से मरा हुआ खून मुंह से रास्ते खुन बहा हो)	गम
से मरा हुआ। (शरीर वैसे का वैसा ही) नम्र हो और न अकड़े।	शक्की हालत
हथेली को रोशनी की तरफ करके देखने पर हाथ में खून मालूम न हो या लाली सी नजर न आए या शरीर अकड़ जाए	यकीनी मुर्दा

अगर चन्द्र राहू साँझा होकर किसी भी राशि में हो यानि जब उम्र, शादी, बिमारी आदि विशेष-विशेष बातों कि लिए निश्चित की हुई दृष्टि वाली टेबल के अनुसार से चन्द्र और राहू किसी घर को साँझा गिने गें चाहे वो दोनों कुण्डली में(या जन्म कुण्डली चाहे वर्ष फल की) अलग-अलग ही हों। उदाहरणतय: चन्द्र जन्म 1 और राहू नं0 7 में हो तो उस टैबल के हिसाब से दोनों आपस में आम हालत में देखते या मिले हुए होंगे। यही नियम किसी भी और घी की हालत पर हो सकता है तो हर खाना नम्बर में चन्द्र की दी हुई उम्र के बालों की संख्या और हो जाएगी, सम्बन्धित, मगर स्वयं इसके अपने खून के रिस्तदोरों के लिए यानि उस ग्रह के सम्बन्धित रिस्तेदार की उम्र पर बुरा असर हो, जो ग्रह कि उस घर में बैठा हो, जहां कि वो साँझा देख रहे हों या उस घर के सम्बन्धित रिस्तेदार जिनमें कि वो साँझा बैठे हों। उदाहरण के तौर पर खाना नं0 9 खाली है और वो दोनों नं0 के सम्बन्धित रिस्तेदार इसके बुजुर्ग बाप दादा आदि लेकिन अगर नम्बर 9 में फर्ज किया मंगल हो तो उसका भाई अपने खून का हकीकी भाई बुरे प्रभाव में होगा। बशर्ते कि यह दोनों साँझा हर तरह से अकेले दृष्टि से खाली हो अगर कुण्डली से पहले घरों में हों तो मौत ने हो मगर करीब अलस रंग जरुर होगा बिना समय चन्द्र या राहू जब चन्द्र हो खाना नं0 1 में मौत का दिन होगा।

उम्र कितने साल हो	ग्रह चाल होगी
12 दिन	चन्द्र नं0 5, सूर्य नं0 10, चन्द्र केतु नं0 6
12 माह	सूर्य शनि साँझा वृहस्पति के घरों में जब नर ग्रह साथ साथी या मदद पर न हो।
9 साल सूर्य	सूर्य चन्द्र साँझा नं0 11
10 साल	चन्द्र केतू नं0 1
12 साल	चन्द्र नं0 5 सूर्य नं0 11, जब नर ग्रह साथ, साथी या मदद पर न हो।
15 साल	चन्द्र राहू नं0 1
20 साल	वृहस्पति राहू नं0 2 या बुध वृहस्पति नं0 6
22 साल मगर नर ग्रह साथ साथी या मदद पर न हो वरना उम्र लम्बी होगी	सूर्य राहू खाना नं0 10 या 11 में जब खाना नं0 8 में उम्र को रददी करने वाले ग्रह हों और साथ ही सूर्य राहू साँझा बैठे हो(अ) खाना नं0 10 में और शनि मय स्त्री ग्रह बैठे हो खाना नं0 2 या (ब) खाना न0 11 में सूर्य राहू हो ओर शनि स्वयं उम्र को रदद बुरा व नष्ट बर्बाद कमाने वाले घरों में हो या स्वयं ही बुरा हाल रहा हो।
25 साल	चन्द्र राहू खाना नं0 6 या मंगल बुरा(मंगल बुध नं0 6 या मय शुक्र और केतू दोनों नष्ट, बोलते समय दोतों का मांस नजर न आए या नाक और कान ऊपर को चढ़े हुए हों या अंगुलियों के जोड़ बहुत ही छोटे-छोटे हों या पीठ बहुत ही तंग हो)
30 साल	बुध वृहस्पति नं0 2 या वृहस्पति राहू नं0 3
35 साल	चन्द्र बुध राहू साँझा
40 साल	वृहस्पति राहू नं0 9 या नं0 12 या माथे पर बंकसरत बाल हो
45 साल	बुध केतू नं0 12 या वृहस्पति राहू नं0 6
50 साल	चन्द्र राहू 5 बशर्ते कि दोनों हर तरह से अकेले और दृष्टि से खाली या नं0 2 या नं0 7 में बुरे ग्रह या माथे पर 7 लकीर हों।
56 साल	चन्द्र राहू बुध नं0 2 या नं0 5 में
60 साल	चन्द्र बुध नं0 2 में
70 साल	वृहस्पति केतू नं0 9 या शनि केतू नं0 6 या चन्द्र शनि नं0 7 पीठ पर उर्ध्व रेखा हो या आंखों के नीचे चेहरा पर 2 या 3 रेखाएं हों।
75 साल	चन्द्र राहू नं0 9 चन्द्र नं0 9
80 साल	चन्द्र वृहस्पति नं0 4 या चन्द्र नं0 3,6
85 साल	चन्द्र नं0 7
90 साल	चन्द्र कायय खाना नं0 1,8,10,11
96 साल	चन्द्र खाना नं0 2 या 4 में

अगर चन्द्र राहू आपसी होकर किसी भी राशि में हो यानि जब उम्र, शादी, बिमारी आदि विशेष-विशेष बातों के लिए निश्चित की हुई दृष्टि बाकी टैबल के हिसाब से चन्द्र और राहू किसी घर को साँझी ही हालत में देख रहे हां या घर से देखे जा रहे हों तो दोनों आपसी गिने जायेंगे बेशक वो दोनों कुण्डली में चाहे जन्म कुण्डली चाहे वर्ष फल में अलग अलग ही हो। चन्द्र नं० १ और राहू नं० ७ में हो तो उस टैबल के हिसाब से दोनों आपसी आम हालत मे देखते या मिले हुए होंगे। यही नियम किसी भी और घर की हालत पर हो सकता है तो हर खाना नम्बर में चन्द्र की दी हुई आयु के सालों की संख्या कम हो जाएगी। परन्तु स्वयं इसके अपने रिस्तेदारों के लिए यानि उस ग्रह से संबंधित रिस्तेदार की

आयु पर बुरा प्रभाव हो, जो ग्रह जिस घर में बैठा हो। जहाँ कि वो आपस में वैसा ही हो जो ग्रह जिस घर में बैठा हो। जहाँ कि वो आपसी देख रहे हों या उस घर से सम्बंधित रिस्तेदार जिनमें की साझें बैठे हों। खाना नं० ८ खाली है और वो दोनों नं० ८ से सम्बंधित इसके बाप दादा आदि लेकिन अगर नम्बर ८ में मान लो मंगल हो तो उसका भाई अपऽे खून की हकीकी भाई मन्दे प्रभाव में होगा। शर्त यह है कि दोनो साझें हर तरह से अकेले दृष्टि से खाली हो अगर कुण्डली से पहले घरों में हो तो मौत न हो तो प्रभाव अवश्य होगा जब बिना समय चन्द्र या राहू जब चन्द्र हो खाना नं० १ में मौत का दिन होगा ।

खाना नम्बरों की उम्र

खाना नं0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11 12
खाने की उम्र	100	75	90	85	सन्तान	80	85	मौत	बुजुर्ग	90	धर्म मन्दिर

जग खाना नं0 12 खाली हो तो चन्द्र बैठा होने वाले घर के दिन मौत होगी।

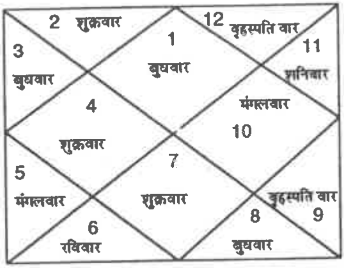

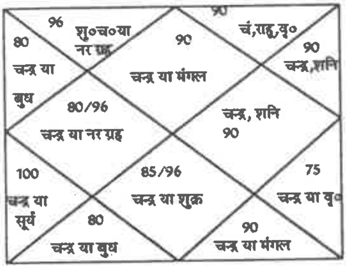

ग्रह की उम्र--वृहस्पति=75 साल, बुध या केतू=80 साल, शनि या मंगल या राहू=90 साल, शुक्र चन्द्र=85 साल, सूर्य पूरी उम्र=100 साल, अगर शुक्र व चन्द्र को नर ग्रह की मदद हो तो 96 साल तक।

अल्प आयु

8 **X** 8 कुल 64 ज्यादा से ज्यादा 8 दिन, महीने, साल हर आठवां साल बुरा, व खतरा जान, जानवरों से खतरा मौत होगा।

(1) वृहस्पति बहुत से दुश्मन ग्रहों से घिरा हुआ

(2)खाना नं0 9 में बुध वृहस्पति शुक्र

(3)खाना नं0 9 वृहस्पति के बहुत से दुश्मन ग्रह

(4)चन्द्र राहू नं0 7 या 8 में।

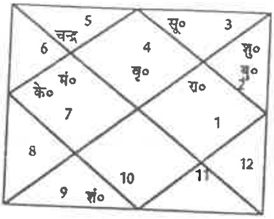

हाथ पर कौए के पांव का निशान या व्यक्ति के दांए पांव कम उम्र की कनिष्ठा व अनामिका अंगुली आपस में बराबर हो होगा 8-
माथे के खत टूटे फूटे हों और उनका झुकाव भी नीचे 8=64 नाक की तरफ को हो या माथे पर दोनों भवों के ऐन साल
बीच में मगर तिलक की जगह छोड़ कर मंगल बुरा तिकोना, शुक्र बुध तुला तराजू, मच्छली, त्रिशूल, शनि पदम, पंखा, आकुंश तलवार या परिन्दा के निशानों में से कोई भी एक निशान हों तो अल्प आयु वाला मवेशियों के सुख से महरुम होगा। — होगा शुक्र मंगल बुध नं0 7

अल्प आयु वालों का उम्र के हर आठवें साल 8,16 24, 32, 40, 48, 56, 64 साल तंग हाल और आम लोगों का उम्र के हर सातवे साल के बाद हालात की तबदीली मानते हैं।

कान लम्बे और बड़ी सी दीवार के या ठोडी बड़ी और उभरी हुई बाहर की तरफ को या गर्दन पर सिर्फ एक बल पड़ता हो या लम्बा चेहरा आंख बड़ी मुंह चौड़ा और दान मोटी-मोटी कलाई पर किस्मत रेखा की जड़ में चार शाखा खत — लम्बी उम्र होगी

केतू वृहस्पति खाना नं0 12 में और चन्द्र कायम या — 100 साल

(1) चन्द्र वृहस्पति खाना नं0 5 में
(2) मंगल नं0 1,2,7 में सूर्य नं0 4
(3) नर ग्रह कायम या चन्द्र को मदद दे रहे हों।
(4) चन्द्र सूर्य वृहस्पति कायम या शरीर में सभी हिस्से मुनासिफ मिकदार पर हो।

चन्द्र वृहस्पति खाना नं0 12 में — 100 साल

जन्म कुण्डली का नीच या बुरा ग्रह जिस साल वर्ष फल के हिसाब से अपने नीच या बुरा होने वाले घर में आ जाए तो नीच फल दिया करता है लेकिन अगर वो जन्म कुण्डली में नं0 8 में और दोबारा वर्ष फल के हिसाब से नं0 8 में आ जाए तो उस ग्रह का दोस्त ग्रह उसका कुर्बानी का बकरा ग्रह और जन्म कुण्डली के खाना नं0 6 के सम्बन्धित ग्रह का रिस्तेदार मारक स्थान में होगा। इसी तरह जब जन्म कुण्डली के नं0 6 का ग्रह नं0 6 में ही आ जाए तो इसका दोस्त, ग्रह इसका कुर्बानी का बकरा ग्रह और जन्म कुण्डली के खाना नं0 8 के सम्बन्धित ग्रह का रिस्तेदार पाताल हालत या बुरी दशा बल्कि कम उम्र होने का सबूत देगा।

कद स्वयं अपने शरीर के हिसाब से आयु के साल जिसका पैमाना स्वयं अंगुलियों का हो यानि अपनी ही अंगुलियों से तीन अंगुल की एक गिरह चार गिरह की एक हाथ, 2 हाथ का एक गज या 36 इंच=48 अंगुल।

चन्द्र वाक्य हो

नम्बर राशि में	घर का मालिक	उम्र के साल	मौत का दिन
1 मेष	मंगल	90 साल	बुधवार
2 वृष	शुक्र	96 साल	शुक्रवार
3 मिथुन	बुध	80 साल	बुधवार
10 मकर	शनि	90 साल	मंगलवार
11 कुम्भ	शनि	90 साल	शनिवार
12 मीन	वृहस्पति राहू	90 साल	वीरवार
4 कर्क	चन्द्र	85 साल वरना 96	शुक्रवार
5 सिंह	सूर्य	100 साल	मंगलवार
6 कन्या	बुध	80 साल	रविवार
7 तुला	शुक्र	85 साल	शुक्रवार
8 वृश्चिक	मंगल	90 साल	बुधवार
9 धन	वृहस्पति	75 साल	वीरवार

कलाई की रेखा की संख्या (1)केवल एक हो तो उम्र 30 साल, (2) केवल दो हो तो 60 साल, (3) केवल तीन हो तो 90 साल, (4) चार हो तो उम्र 120 साल होगी।

यदि दिल रेखा कनिष्टका तक ही हो उम्र होगी 10-15 साल यदि कनिष्टका व अनामिका की बीच तक हो तो उम्र होगी 25 साल यदि अनामिका तक हो तो उम्र 50 साल, अनामिका व मध्यमा के बीच तक हो तो 75 साल, मध्यम तक हो तो 90 साल, मध्यमा व तर्जनी के बीच तक हो तो 100 साल, और तर्जनी तक हो तो उम्र होगी 120 साल।

पैशानी की रेखा

दुरस्त व साफ रेखा

संख्या मर्द औरत

टूटी फूटी रेखा

संख्या मर्द औरत

एक	10साल	20 साल
दो	20 साल	40 साल
तीन	30 साल	50 साल
चार	40 साल	50 साल

एक	20	40 साल
दो	30	60 साल
तीन	60	70 साल
चार	70	60
पांच	100	100
छह	120	80
सात	50	
या अधिक		
बिना लकीर	100	

अगर माथे पर लाल रंग का भी साथ हो तो 40 साल यकीनी हो।

दोनों कानों तक सही (मर्द- दो रेखा तो उम्र क्रमशः 100 साल व 70 साल होगी।

जब खाना नं0 12 में कोई ग्रह न हो तो चन्द्र जिस राशि में होगा इसके हिसाब से मौत का दिन होगा। मौत का दिन खाना नं0 12 और नं0 8 के ग्रहों की शक्ति के मुकाबले से गिना जाता है। अगर चन्द्र राहू साँझा होकर किसी भी राशि में हो तो हर खाना नम्बर में चन्द्र की दी हुई उम्र के सालो की संख्या आधी हो जाएगी।

मौत का बहाना:- हर राशि सम्बन्धित मगर स्वयं इसके अपने खून के रिस्तेदारों के लिए बशर्ते कि यह दोनों साँझा तरह से अकेले दृष्टि से खाली हो और अगर कुण्डली के पहले घरों में हो तो मौत न हो। मगर करीबी जरुर होगा,समय चन्द्र व राहू, वृहस्पति रेखा का संबंध भी जाहिर हो जाएगा विद्या ज्योतिष से।

मौत का आखिरी दिन, साल व मुकाम:-चन्द्र मौत का आखिरी दिन और साल कुण्डली में चन्द्र के मुकाम और खाना नं0 8,12 के साँझा प्रभाव से व्यक्त होता है। अर्थ यह कि चन्द्र का मुकाम तो कुण्डली में मालूम ही होगा और खाना नं0 8 में जो कोई ग्रह भी होगा वो नीच होगा। इन नीच ग्रहों के प्रभाव से जो साल भी पहला साल होगा वो खराब साल होगा इस आठवें खाने को बारहवें खाने के ग्रह 25% अच्छा या बुरा करेंगे यानि बारहवें घर वालों की अगर अच्छी नजर हो तो जिस साल वो अच्छी नजर खत्म होगी मौत होगी और अगर बुरी नजर हो तो जिस साल से बुरी नजर शुरु होगी वो आखिरी साल होगा।

उम्र के साल:-महावन उम्र रेखा-यह रेखा उम्र रेखा की सब टूटफूट से बचाए रखती है। हथेली के खाना नम्बर में चांद की जगह फैसला करेगी। अंगुलियों की

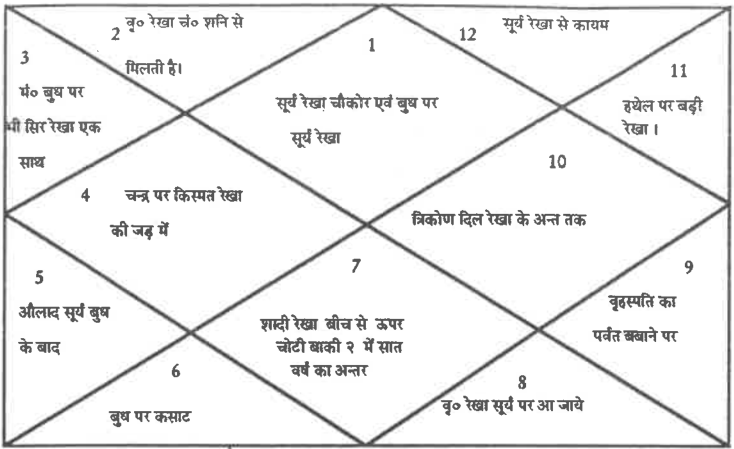

राशियों के हिसाब से चन्द्र और चन्द्र की दिल रेखा की लम्बाई से उम्र की हद, वृहस्पति 75 साल, बुध केतू 80 साल, सूर्य 100 साल, शनि व राहू 90 साल, मंगल 90 साल, शुक्र केतू साल, सूर्य 100 साल, शनि व राहू 90 साल, मंगल 90 साल, शुक्र चन्द्र 85 साल वरना 96 साल(चन्द्र व शुक्र दोनों स्त्री ग्रह है इसलिए जब अकेले हों तो उम्र 85 साल और जब नर ग्रह साथ हो तो उम्र 96 साल, जब नपुंसक ग्रह इन दोनों के साथ हो तो भी उम्र 85 साल होगी।

रेखा के प्रभाव का अब कौन सा साल है:-

उम्र और किस्मत रेखा सालों में बारह साल तक जमाना की हवा में नहीं आया सत्तर साल के बाद दुनिया के लिए सत्तर-बहत्तर हो गया।

कनक या जौ के दाने के बराबर के टुकड़े के पैमाने पर रेखा की <u>उम्र होगी</u>

प्रभाव होगा। 10 साल तक चाहे कोई भी रेखा हो। 10 साल

अगर तर्जनी की जड़ से हाथ के किनारा के साथ 12 साल

नीचे की तरफ उम्र रेखा को काटता हुआ खत खीचें तो इसका पहला मुकाम या रेखा की इस नुकता तक लम्बाई होगी।

दूसरा मुकाम जब यही खत रेखा को आगे बढ़कर फिर दूसरी बार काटे। 90 साल

जिस जगह किस्मत रेखा उम्र से मिले 21 साल

जिस जगह किस्मत रेखा दिल रेखा से मिले 35 साल

हथेली की चौड़ाई और दिल रेखा की नसफ का 45 साल निशान जहां दिल रेखा को काटे वो मुकाम

सहेत रेखा व या तरक्की रेखा जिस जगह उस उम्र का आखिर रेखा से मिले या जिस निशान पर दोनों आपस कट जाए

रेखा पर निशान	ग्रह चाल होगी	मौत का बहाना क्या होगा
मंगल बद नं0 8 पर सूर्य का सितारा हो या पेट पर केवल एक ही बल पड़े।	(1) चन्द्र व शनि मंगल खाना नं0 5, 6(2)मंगलबुरा व शुक्र खाना नं0 5,8 मगर सूर्य चन्द्र का साथ न हो	लड़ाई व जंग व जदल
शनि के पर्वत से कोई रेखा उम्र रेखा को आ काटे सूर्य के पर्वत पर सूर्य का सितारा हो	शनि शुक्र साँझा नं0 10 और सूर्य खाना नं0 4	पुर दर्द मौत
	सूर्य कायम और ऊँच खाना नं0 1 में अकेला और कुण्डली में किसी ग्रह का साथी ग्रह न वन रहा हो।	बाजब वक्त पर साधारण मगर अचानक
दिल व सिर रेखा का मिल जाना, दिल रेखा और गृहस्थ रेखा का कनिष्का या मध्यमा के पास मिल जाना 1 सिर रेखा का दिल रेखा को काट कर शनि पर खत्म हो जाना	(1) चन्द्र साँझा खाना नं0 2, 6 (2) चन्द्र शनि साँझा खाना नं0 7(3) चन्द्र मंगल बद साँझा खाना नं0 7,10	शौंक से मृत्यु हो
दोनों की एक ही रेखा श्रेष्ठ रेखा का शनि की तरफ झुक जाना अंगुठा छोटा और मध्यमा बहुत लम्बी सिर और उम्र रेखा का हाथ में बिल्कुल न होना, सिर रेखा का चन्द्र में खत्म होना।	अल्प आयु वाला शनि नं0 6 बुध नं0 3,10,11 शनि नं0 6 बुध शुक्र नं0 7 (1) बुध हो खाना नं0 12 शनि नं0 7 (2) चन्द्र बुध साँझा और सूर्य बर्बाद (3) चन्द्र बुध साँझा खाना नं0 4	जानवरों से खतरा मौत शनि खुदकशी करे
पापी ग्रहों से बुध का साथ हों या पापी ग्रहों का साँझा निशान	राहू या केतू से बुध साँझा और शनि भी जड़ राशि या दृष्टि से देखता या साथी ग्रह हो जाए।	बिजली या सांप से मौत
सिर रेखा से ऊपर दिल रेखा तक ही साख हो	(1) बुध शनि खाना नं0 4 (2) बुध शनि चन्द्र साँझा या दृष्टि में कायम हो	
पितृ रेखा की शाख मातृ रेखा को काट कर अनामिका तक चली जाए	शनि हो खाना नं0 3 बुध खाना नं0 11	कैद में मरे
उम्र रेखा से निकली हुई किस्मत रेखा सूर्य में या सूर्य तक चली जाए	शुक्र नं0 1 सूर्य नं0 7 मय शुत्र या पापी ग्रह या दोनों साँझा जन्म कुण्डली के 7-12 में हो या वर्ष फल में नं0 3 में हो।	तपेदिक से मरे
पितृ रेखा के ऊपर + त्रिशुल का निशान हो	सूर्य बुध चन्द्र साँझा खाना नं0 4 में	घोड़े से गिर कर मरे
पितृ रेखा के नीचे राह हो	चन्द्र राहू खाना नं0 4 में	फांसी से मरे
सिर रेखा पर + त्रिशुल हो तो	बुध सूर्य शनि नं0 7 या सूर्य शनि नं0 7	सिर कटने से मौत
पितृ रेखा मातृ रेखा से अलग होकर कटी हुई या टेढ़ी हो चन्द्र की चीजों की आमद से चन्द्र नष्ट हो	बुध वृहस्पति आपस में बामुकाबिल हो	अधरंग से मरे
या कब्जा (जोड़) से अलग होकर टेढ़ी हो	बुध वृहस्पति साँझा खाना नं0 3 में	सांप से मरे
शुक्र पर सूर्य का सितारा (उम्र रेखा पर) हो दरिया नदी से मौत	चन्द्र शनि नं0 4 रात के समय चन्द्र नं0 10 शनि नं0 10 चन्द्र सूर्य नं0 4 दिन के समय चन्द्र सूर्य नं0 7 न दिन न रात	पानी से मौत

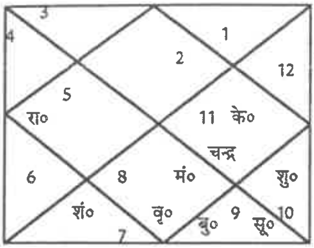

उम्र रेखा एकाएक टूट जाए मौत आने की निशानी है। तख्त की मालकियत व राशि नम्बर के हिसाब से जब बुध और राहू या केतू इकटठे हो जाए तो मौत आने की निशानी होगी। राहू या केतू से बुध साँझा जब भी किसी का दौरा आवे मौत गूंजने की निशानी होगी। चन्द्र शनि नं0 4 परदेश में मरे बाकी सब हालतों में शनि चन्द्र नं0 7 मातृभूमि या अपने गृहस्थ में मरे। किस्मत रेखा की शुरु की दो शाखी की

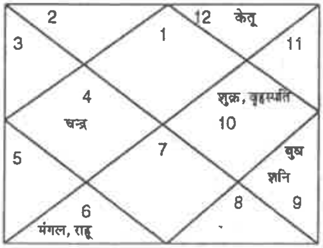

अंगूठे की तरफ की शाख अगर लम्बी हो यानि शुक्र की तरफ की बड़ी हो तो अपने गृहस्थियों में और अगर चन्द्र की तरफ बड़ी हो तो परदेश में मौत हो। उम्र रेखा जब खात्मा पर शुक्र के पर्वत की जड़ की गोलाई पर दो शाखी हो जाए और शुक्र की तरफ की शाख लम्बी हो तो मौत मातृभूमि में होगी। अगर चन्द्र की तरफ की बड़ी हो तो परदेश में मरेगा।

वृहस्पति नं0 2 केतू नं0 6 हो तो अपनी मौत का उस शख्स को मरने से पहले ही पता चल जाएगा।

विषय में सम्बंध के लिए चन्द्र सहायक मिसाले

यादास्तः- इस विषय की नींव पर हर व्यक्तिं का टेवा हर औरत के टेवे को टांप लिया करता है, मगर कई बार आपस में लिहाजी भी हुआ करती है यानि लड़की की जब तक शादी न हो(ऋतुवान बेशक हो चुके) लड़की का टेवा स्वयं उसके अपने लिए और माता-पिता, भाई बन्धु और दीगर गृहस्थी साथियों के संबंध में सहायक हो सकता है मगर शादी के दिन से उसके पति के टेवे के अनुसार मर्द और औरत हर दो का हाल इकटठा शुरु होगा और लड़की की हैसियत का टेवा शादी के बाद कोई काबिल गैर न होगा। लेकिन अगर मर्द और औरत (हिन्दु-मुसलमान, सिख-ईसाई, यूरापियन-भारतीय) आदि ऐसे खून से संबंध हो जिनमें खून की नाली खानदानी नसलां की बजाए पाबन्दी पोयों की तरह चल रही हो तो

ऐसी हालत में सम्भव होगा कि औरत का टेवा मर्द के टेवे से पूरी मवाफात न करे, ऐसी हालत में मर्द-औरत हर दो के टेवे अलग-अलग ही देखे भाले जाएंगे। जिस तरह कि दो अलग ही मर्द औरत दुनिया में चल रहे हों।

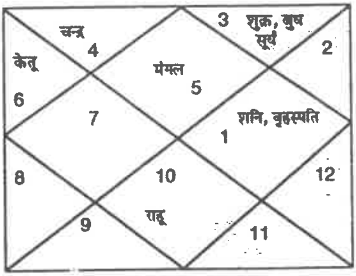

कर्क राशि जन्म दिन वृहस्पति, तारीख 18-1-1902
(पंडित की बनाई हुई कुण्डली:-
जन्म तिथि:-4 पोष सम्वत् 1959
अंग्रेजी तिथि:-18-1-1902
हाथ देखने की तारीख 23 माघ, 1995
यानि 37 वां साल शुरु हुआ

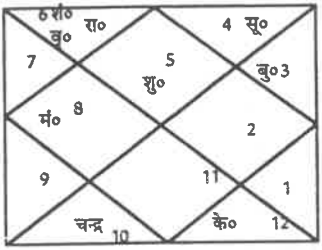

हाथ की शुमाल पर चौड़ाई=3.3''
हथेली की जनूब पर चौड़ाई=2''
मध्यमा की लम्बाई=2.9''
हथेली की मध्यमा तक लम्बाई=4.1
अंगुलियों पर लकीरें दांए हाथ पर=19
बांए हाथ पर लकीरें =24

ग्रह कुण्डली किस तरह बनाई गई कुण्डली ग्रह का नाम लिखने की बजह का खाना नं0

1. सूर्य के पर्वत पर चौकोर है जो मंगल का निशान है और सूर्य के पर्वत को खाना नं0 1 दिया गया है।

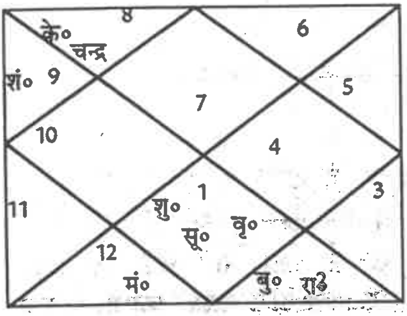

2. चन्द्र के पर्वत से सीधी वृहस्पति के पर्वत पर चली गई है जिसे खाना नं0 2 दिया गया है।

कुण्डली का खाना:-

3. केतू का निशान मंगल नेक के पर्वत पर वाक्या है जिसे खाना नं0 3 मिला हुआ है।

7. राहू का निशान शुक्र के पर्वत पर वाक्या है जिसे खाना नं0 7 दिया गया है।

10 तर्जनी और मध्यमा अंगुली के नीचे शनि और वृहस्पति के पर्वतों को मिलाने वाली दो शाखी कायम है यानि वृहस्पति खाना नं0 10 जो शनि के पर्वत को दिया गया है पर वाक्या है और शनि रेखा से स्वयं शनि अपने घर नं0 10 पर हुआ।

12 सूर्य के पर्वत और बुध के पर्वत से रेखाएं हर दो की अलग-अलग खर्च के खाना नं0 12 में चली गई हैं।

रेखा कुण्डली साल हालात के लिए हाथ पर मौजूद रेखा से मुकम्मल की गई है।

अब ग्रहों के प्रभाव देखने के लिए मदद की बातें:-

खाना नं0 1-7, इन घरों के ग्रह एक दूसरे को 100% की नजर से देखते हैं।

मंगल के साथ बैठा हुआ राहू चुप रहता है और मंगल बुरा के पर्वत पर जिसे खाना नं0 8 दिया गया है, भी चोकोर वाक्या है। इसलिए खाना नं0 1-7 के प्रभाव के लिए मंगल का प्रभाव नेक होगा। मंगल के जोर से राहू यद्यपि चुप रहेगा मगर मंगल से दूर बैठा होने की वजह से जरुर बुरा प्रभाव ही आन्तरिक तौर पर करता जाएगा और मंगल के प्रभाव का सारा समय यानि 28 साल तक स्त्री नजर व स्त्री सुख पर जरुर बुरा प्रभाव करेगा। मंगल के प्रभाव का समय के बाद 14 साल तक (राहू मंगल) दोनों इकट्ठे प्रभाव करने लगे। राहू के प्रभाव की अवधि 42 साल होती है और मंगल की कुल अवधि 28 साल है। इसलिए एक ही समय में शुरु होने पर राहू 14 साल बाद तक अकेला ही होगा। मगर शुक्र व बुध के साँझा घर खाना नं0 7 और सूर्य का घर खाना नं0 1 पर अकेला राहू का प्रभाव होगा। मगर वो तीनों ही इकट्ठे उठ कर खाना नं0 12 में बैठे हुए हैं यानि राहू अलग एक तरफ शुक्र के घर मेहमान बैठा है और शुक्र दोस्त बुध को साथ लेकर सूर्य के हमराह राहू के घर चला गया है इसलिए न राहू शुक्र का कुछ बिगाड़ सकता है और न ही शुक्र राहू का नुकसान कर सकता है केवल एक दूसरे के घरों की इमारत खराब कर सकते हैं।

खाना नं0 2, 12 आपस में 25% की दृष्टि से देखते हैं। चन्द्र खाना नं0 2 में ऊंच होता है सूर्य और बुध आपस में मित्र हैं मगर सूर्य व शुक्र आपस में शत्रु हैं और दूर बैठा हुआ चन्द्र शुक्र और बुध दोनों से दुश्मनी करने वाला है। इस तरह

पर सूर्य व चन्द्र तो शुक्र का फल उत्तम होगा। सूर्य के साथ बैठे हुए बुध अपने प्रभाव का आधा समय तक यानि 17 साल चुप रहता है और बाद में 17 साल अकेले फल नेक देता है।

खाना नं0 10 शनि व वृहस्पति इकट्ठे हैं इस हालत में दोनों का अपना-अपना मगर शनि का फल खराब होगा। वृहस्पति भी दुश्मन या पापी ग्रह के साथ अपना नसफ समय यानि 8 साल जरुर नेक फल देता है इन ग्रहों का संबंध पिता से है।

खाना नं0 3 केतू मंगल के घर पड़ा है जो मंगल का शत्रु है लेकिन मंगल अपने घर से उठ कर सूर्य के घर खाना नं0 1 में चला गया है।

मंगल के साथ सूर्य हो तो मंगल का फल हमेशा मंगल नेक का होगा और सूर्य भी मंगल के साथ ऊँच होता है।

विस्तृत रुप से हर एक ग्रह का प्रभाव निम्नलिखित होगा:-

वृहस्पतिः- इस ग्रह की अवधि 16 साल होती है जिसमें से पहला आठ साला का समय हमेशा नेक प्रभाव का होता है जिसमें से पहला आठ साल के बाद वृहस्पति का फल शनि खराब कर देगा क्योंकि वृहस्पति तो किसी से दुश्मनी नहीं करता मगर पापी ग्रह बुरा प्रभाव कर दिया करते हैं। लेकिन वो भी उस समय जब वो वृहस्पति के घर या खाना नं0 2 पर जाएं लेकिन जब वृहस्पति पापी ग्रह के घर जाए तो वृहस्पति अपना नेक ही फल रखेगा। पापी ग्रह या वो जिस के घर में वृहस्पति जाकर बैठा है अपना फल जैसा चाहे देवें। अब चूँकि शनि करता है। इसलिए शुक्र अपने पहले ही दौरे में सहायता न दे सकेगा। अब क्योंकि शनि अपने घर यानि खाना नं० 10 में बैठा है और वृहस्पति उसके घर आया है इसलिए वृहस्पति तो अपना सारा ही समय नेक फल देगा और शनि बुरा फल देगा तो वृहस्पति के समय के बाद शुरु हो सकता है यानि वृहस्पति के 16 साल के बाद 36 साल शनि की कुल अवधि में से बाकी 20 साल शनि अकेला प्रभाव कर सकता है।

हर ग्रह अपऽे समय के अनुसार चौथाई में प्रभाव व्यक्त कर दिया करता है इसी तरह पर शनि अपने 36 साल की अवधि के अनुसार 18 साल में अपना बुरा प्रभाव व्यक्त करेगा। जबकि वृहस्पति पहले ही समाप्त हो चुका है शनि का वृहस्पति के साथ बुरा प्रभाव तब ही हो सकता है जबकि वृहस्पति उसके साथ चल रहा हो और वृहस्पति या 16 साल तक इससलए शनि का बुरा प्रभाव वृहस्पति के पहले 8 साल के बाद 17 साल तक ही हो सकता है।

सूर्य :- इस ग्रह का अपना सभी समय तो अपनी जात के लिए उत्तम होगा लेकिन यह ग्रह अपने साथी शुक्र के फल का सभी समय बरबाद या नीच करेगा और चन्द्र भी 25 प्रतिशत अपनी बुरी शुक्र पर करता रहेगा परन्तु सूर्य का चन्द्र 25 प्रतिशत सहायता और देगा ।

चन्द्र :- इस ग्रह से कोई ग्रह दुश्मनी नहीं करता परन्तु स्वयं ही दूसरे ग्रहों से दुश्मनी करे तो बेशक करे। इसलिए इस ग्रह का अपना फल तो वृहस्पति के घर बैठे हुए ऊँच होगा परन्तु स्वयं शुक्र और बुध दोनों से ही दुश्मनी करता जाएगा।

शुक्र :- सूर्य की अवधि 22 वर्ष होती है चन्द्र का 24 वर्ष समय या दोनों ही स्वयं के दुश्मन हैं शुक्र की अवधि 25 साल है सूर्य और इक्ट्ठे बैठे होने की वजह से दोनों का प्रभाव इक्ट्ठा शुरु होगा सूर्य की दुश्मनी 22 साल में समाप्त हुई चन्द्र की 25 प्रतिशत बुरी नजर भी 24 साल में जाकर हटी अब शुक्र की अवधि सिर्फ एक साल बाकी रही। ऊधर शुक्र के घर को राहू भी यानि खाना नं० ७ को खराब कर रहा है और शुक्र स्वयं उसके घर खाना नं० १२ में बैठा हुआ है उसका मित्र बुध बेशक इसके साथ है मगर वो अपने मित्र सूर्य के आधा अवधि तक यानि 7 चुप है बुध शुक्र से विगाड़ता है न सूर्य से १८ साल के बाद शुक्र की सहायता शुरु कर सकता है मगर बुध की अवधि 34 साल में शुरु होती है इसलिए शुक्र की अपनी पहली अवधि तो सारे का सारा 25 वर्ष ही खराब हो गया। बुध की सहायता या बुध की उँच हालत से शुक्र सिर्फ लड़कियाँ ही पैदा करता है। इसलिए शुक्र अपने पहले ही दौरे में सहायता न दे सकेगा ।

यद्यपि शुक्र और चन्द्र की दुश्मनी हुई मगर दूसरे चन्द्र में शुक्र जो मीन राशि में ऊँच होता है अपने फल देगा।

मंगल नेकः-28 साल तक राहू की आन्तरिक पापी चाल के सबक से औलाद,, भाई बन्धु और नजर पर जरुर बुरा प्रभाव होगा। मगर दूसरों बातों में मंगल का प्रभाच नेक ही होगा।

मंगल बुराः-इस पापी ग्रह का मुंह पहले ही मंगल बद के पर्वत खाना नं0 8 पर चोकोर ने बन्द कर दिया है, इसलिए यह ग्रह इस कुण्डली में किसी जगह कभी बुरा प्रभाव न देगा। यह ग्रह सामुद्रिक में केवल सूर्य की खराब हालत देखने के लिए रखा गया है यानि जब सूर्य नीच हो या जब सूर्य मंगल के साथ न हो तो मंगल को मंगल बद कर देते हैं। उक्त समय में केवल एक ही नाम होगा चाहे मंगल नेक चाहे मंगल बुरा। अगर हाथ में तिकोना अलग ही पाई जाए तो बेशक वह ग्रह एक अलग ग्रह गिना जाएगा।

बुधः-इस ग्रह का समय 34 साल होता है यह अपने साथी शुक्र जिसको अवधि 25 साल है और सूर्य जिसकी अवधि 22 साल है दोनों की सहायता करेगा, मगर चन्द्र की 25% नजर चन्द्र की अवधि 24 साल तक इस ग्रह के अपने प्रभाव के लिए बुरी ही होगी। यह चन्द्र से दुश्मनी न करेगा।

शनिः- वृहस्पति के प्रभाव को इस कुण्डली के हिसाब खराब करेगा मगर स्वयं उसके अपने प्रभाव में दखल देने के लिए कोई दूसरा ग्रह खाना नं0 4 में मौजूद नहीं है।

राहू:-यह मस्त हाथी मंगल (जंगी ग्रह) की तलवार (अंकुश) के रोब से जाहिरा चुप रहेगा मगर दूर खड़ा होने की वजह से मंगल से दुश्मनी करेगा। (मंगल व राहू इकट्ठे ही बैठे हों तो सिर पर तलवार या अंकुश से हाथी चुप रहेगा मगर जब तलवार या अंकुश हाथी से दूर और उसकी 100% नजर के सामने हो तो मस्त हाथी तलवार को खराब करने की कोशिश करेगा।

(ब) शुक्र के घर पड़ा होने की वजह से शुक्र की इमारत को खराब करेगा। मगर शुक्र का कुछ बिगाड़ नहीं सकता जो राहू के घर खाना नं0 12 में है।

केतू :-इस पापी ग्रह पापी ग्रह से बचने के लिए मंगल अपने घर से पहले ही उठ कर खाना नं0 1 में चला गया है इसलिए केतू केवल मंगल के मकान को ही खराब कर सकता है। भाई-बन्धु को खराब नहीं कर सकता। यह ग्रह खाना नं0 11 को 50% नजर से देखता है जो खाली है इसलिए यह कभी-कभी वृहस्पति के खाना नं0 11 (भाग्य व लाभ उम्र) पर धब्बा मारता चला जाएगा।

खाली खाने:-खाना नं0 4-चन्द्र का घर है इस घर को खाना नं0 10 के ग्रह 100%नजर से देखते है। खाना नं0 10 का वृहस्पति की नजर रखेगा। मगर या शनि स्वयं चन्द्र के घर की दिवारों पर अपनी स्याही फेर फिरा कर चला जाएगा।

खाना नं0 11 इस खाना नं0 में केतू ही अपनी टांग फंसा सकता है।

खाना नं0 6:-खाना नं0 6 से खाना नं0 2 बैठा हुआ चन्द 25% नजर से देखता है केतू का घर चन्द्र के लिए चन्द्र ग्रहण होता है अब चन्द्र केतू पर 25% नजर करने के सबब से (48 साल केतू का समय का एक चौथाई)12 साल के बाद चन्द्र ग्रहण में होगा। चन्द्र का संबंध जमीन व माता से है:-

खाना नं0 5,9 दोनों खाली है, इनका प्रभाव सन्तान, कर्म-सन्तान दूसरे ग्रहों मे लेंगे।

खाना नं0 8 में:-(मौत का घर) इस घर को खाना नं0 12 के ग्रह 25% नजर से देखते हैं यह ग्रह शनि व मंगल बद का है। इस कुण्डली में मंगल बुरा तो हैं ही नहीं बाकी रहा शनि और खाना नं0 12 के ग्रह जिनमें से शनि शुक्र व बुध का दोस्त है, बाकी रहा सूर्य जिसका दुश्मन शनि है अब दोनों के आपसी मुकाबला में सूर्य स्पष्ट होगा। इसलिए मौत का साल चन्द्र की राशि और मृत्यु का दिन सूर्य का दिन या इतवार का होगा जबकि केतू का समय खत्म हो चुका होगा।

जिन्दगी के हालात:- ग्रह कुण्डली और जन्म रेखा कुण्डली को मिला कर पढ़ने से मालूम होता है कि ऐसे हालात वाला शख्स जंगी खून और शाही जंगल धन से शाहाना परवरिश और स्वयं इसी जरिया के महाश(पैसा-थैला के लिए कारोबार से) शाहना हालात वाला होगा। जिसे सम्बन्धित दुनिया में हकुमत करने का मौका और धन जमा करने का समय बहुत मिलेगा। दुनिया के मैदान में चमकीले चांद को तरह हर जगह में मंगल करेगा। इसमें शुक्र नहीं कि तीन टहना अकेला ही स्वयं अपनी किस्मत को आप ही रोशन करने वाला होगा। दुश्मन पीठ पीछे

दुश्मनी कर सकते हैं मगर चन्द्र ऊँच के सामने आकर ही चुप होंगे। पक्की दुश्मनी करने वाले लोग उसकी तलवार के सामने आकर मस्त हाथी की तरह अंकुश से जमीन से गिरी हुई डाली उठा कर देने का काम करेंगे। दुश्मन भी अपनी दुश्मनी जरुर करते जाएंगे। मगर ऐसा शख्स कुदरती के सबब ही बचता चला जाएगा और दैवी शक्ति उसका पूरा बचाव करती रहेगी। रंग का सफेद होगा। रंग का सफेद होगा। जिसमें मंगल का लाल रंग चमकता होगा यानि कि रंग प्रकृतिक ऐसा होगा कि जिस तरह एक लाल रंग कागज पर सफेद चांदी का टुकड़ा रखा हुआ हो।

खुश तबीयत और दिल की पूरी शान्ति वाला होगा। तलवार का धनी, जंगी तदबीरों में माहिर और बुद्धिमान होगा। जुबान और शरीर की कभी बीमारी न होगी। मगर 13-14 साल की उम्र के करीब नजर या आंखों की बीमारी और 28 साल की उम्र के करीब नजर की कमजोरी का सबूत देगी। मगर खराब न होगी यानि नेक आदि का प्रयोग राहू की पोशीदा दुश्मनी की निशानी होगी। पापी ग्रह शनि के प्रभाव से शराब का इस्तेमाल वृहस्पति के प्रभाव में खराबी डालने का सबब होगा। और मंगल के लाल जिसे रंग स्याही झलक देगा।

कुत्ते का शौक (जो कुत्ता का केतू का रंग बिरंगा मगर लाल रंग निशान उसके शरीर पर न होंगे) भाइयों से तकलीफ चाहे उनकी बिमारी चाहे माली हालत की कमजोरी चाहे कोई अचानक तकलीफ कुछ भी कहो, भाई-बन्धु रिस्तेदारों, ताए-चाचे, औरत जात खानदान, यार दोस्तों सहायता, सन्तान आदि खाना नं0 3 के सब प्रभावों में जिसका प्रभाव जात पर कभी बुरा प्रभाव न होगा। केवल सम्बन्धित दुनिया में दूसरों की तरफ का दुख उसके लाभ किस्मत और उम्र पर धब्बा देगा। यह ग्रह 48 साल तक प्रभाव करता चला जाएगा। इस पापी ग्रह का पाप उसके सम्बन्धित साथियों पर मार करेगा। मगर राहू से स्याह रंग हाथी के रंग से मिलती हुई या नीली चीजें(अन्दरुनी तौर पर इसी मंगल के दूसरे प्रभाव नजर और उत्तम तबीयत में जहर का निशान होंगे। शनि जो वृहस्पति के बिल्कुल साथ बैठा है अपनी स्याह रंग चीजों से पानी में स्याह रंग चीजों काला रंग का आदमी जब बिल्कुल साथ ही होगा या अपने घर पर ही आएगा। नुकसान का कारण होगा और सोने का मुंह काला करने का कारण होगा। आम तौर पर सफेद रंग (वही शुक्र का रंग) केतू से बचने के लिए जो भाई बन्धुओं के दुख हटाएगा। दूध या पानी के सफेद रंग की चीजें स्वयं अपनी कमाई में बरकत के लिए चन्द्र और वृहस्पति के घर का प्रभाव दौलत व इज्जत खाना नं0 2 और किस्मत उम्र और दूसरे शाखों के लिए खाना नं0 11 शुभ होगा। दांए हाथ पर अंगूठे में नीलम राहू (42 साल उम्र तक में अपनी और पक्की दुश्मनी से बचाएगा। शराब और शंख की होशियारी) दुष्ट भाग्यावानी)से दूर रहने पर वृहस्पति का उत्तम फल होगा। मंगल नेक का उत्तम फल गन्दगी रंग की चीजें, जो सूर्य का रंग है, पैदा करेंगी। सूर्य की उपासना या दोस्ती से राज दरबार में उत्तम फल देंगी और सूर्य जो शुक्र

को नीच करता है सारा गृहस्थ औरत जात, धन दौलत, आराम बुरी तरफ का खर्चा का खाना नं0 12 का उत्तम फल होगा। घर में दूध की मौजूदगी में चन्द्र भी शुक्र को माफ करता रहेगा। चन्द्र ऊँच की निशानी मकान के लिए तह-जमीन खरीदने से होगी। जिससे मालूम होगा कि अब चन्द्र शुक्र से दुश्मनी न करेगा। बुध से चन्द्र ने दुश्मनी छोड़ने का जमाना 34 साल उम्र से पूरी तसल्ली का होगा बुध वैसे तो 24 साल से अपना आप चन्द्र से बचा लेगा मगर 34 में वो अपना (बुध) पूरा नेक प्रभाव देगा। वैसे तो वो 16 साल के बाद वृहस्पति को माफ कर चुका है। इस कुण्डली में शुक्र (दूसरी बार) चन्द्र सूर्य मंगल उत्तम है (दौलत का सुख व खर्च) बुध, व्यापार का नाश करता है क्योंकि खाना नं0 12 में है।

इस ग्रह का उपाये दुर्गा पाठ, तोते को चूरी, सफेद कबूतर को मूंगी, बुध के दिन शुभ करेगी। और जमा हो जाने वाली दौलत शुक्र के काम आएगी। 34 साल के बाद बुध सूर्य का उत्तम फल शुरु होगा। 36 साल के बाद शनि भी मदद देगा। 42 साल के बाद राहू मदद करेगा। 48 साल के बाद केतू शुभ होगा।

शुक्र ऊँच होगा अपनी अवधि 25 साल की बजाए 34 साल बिलकुल उत्तम फल देगा। लड़का पैदा होने के दिन से सूर्य (दुनिया में रोशन होगा। वास्तव में सूर्य का समय बच्चे का माता के पेट में आने के दिन से ही शुरु गिन सकते हैं) और 22 साल तक रोशन रहेगा। तह जमीन की खरीदारी की तारीख से चन्द्र ऊँच 24 साल तक रहेगा, मकान बनने के दिन से 36 साल तक शनि का उत्तम फल कायम रहेगा। घर में स्याह रंग कुत्ते की मौत या कोई और काली नीली चीज के गुम होने के दिन से 42-43 साल से राहू उत्तम होगा और इसी तरह से दोरंगी चीज रंग बिरंग कुत्ता जो लाल रंग का न हो आदि चले जाने के समय से केतू 48-49 से इतने साल ही उत्तम होगा।

कमाई में हराम का पैसा-थैला न होगा। सादा लोग सादापन साधु सेवा के किए हुए काम, सफेद पोशी बुजुर्गो की सेवा, इतवार या सोमवार के शुरु किए हुए काम स्वयं अपनी जात के लिए निहायत शुभ होंगे और सूर्य के जरिया (गेहूं रंग) से हर तरह की शान्ति।

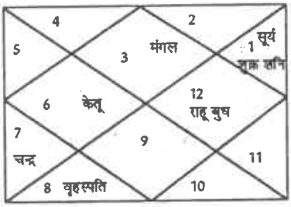

मोटी-मोटी बातें:- बचपन निहायत उम्दा था, जवानी (34 साल) में आराम देगी। बुढ़ापा तसल्ली बख्श होगा। 13-14 साल के करीब माता का सुख नाश होगा। 15-16 साल के करीब पिता का सुख नाश होगा।

माता-पिता उसकी स्त्री का सुख न देख सकेंगे। 18 साल के करीब नौकरी शुरु करे। 21 साल के करीब शादी हो, 28 साल तक स्त्री सुख और सन्तान के कोई मायनी न होंगे। सब कार्य वाही फजूल होगी 24-25 साल के करीब पैदा शुदा लड़की बुध का समय प्रकट करेगी। 35-34 साल के करीब की औरत शुक्र ऊँच का फल देगी (दूसरी शादी) 30-39 के करीब का मकान शनि ऊँच का

फल देगा। (तरक्की होगी), 33 साल तक सूर्य राज दरबार से संबंध होगा। 51 साल की उम्र की करीब लड़का मुलाजम होगा। उसके बाद सन्यास या परोपकार का संबंध होगा। कुल उम्र 93 साल होगी।

द्वारा बातें:-माली हालत:-जिस साल की आये मासिक देखनी हो उस साल तक की उम्र में से नौकरी शुरु करने का समय यानि 18 साल घटाएं बाकी को 7.50 से गुणा करें, जवाब औसत आमदन मासिक होगा। 37 साल की उम्र में से 18 घटाएं हो तो 19 साल को 7.50 से गुणा करे के लगभग मासिक आय होगी यही नियम. मंगल का सारा अवधि 28 साल तक होगा।

34 साल से पहले की उम्र तक केवल माया का राखा होगा यानि जो कमाया दूसरों पर लगाया या किसी दूसरी तरफ लग गया। 34 से 42 तक आमदन आवश्य होगी। मगर मकान, ब्याह-शादी आदि गृहस्थ के नेक कामों में लगेगी। 43 साल से 51 साल तक इतना ही फिर जमा हो जाएगा, जितना पहले खर्च किया था कर्जा कभी न होगा। बिना समय जरुरत एवं एक रुपया की अचानक जरुरत पर दो रुपये जरुर होंगे। इस शर्त का आमदन से कोई संबंध नहीं है।

औलाद:-कुल चार लड़के और 2 लड़की आखिरी दम तक कायम होंगे। सन्तान नेक होगी और सुख देने वाली होगी पहली औरत की लड़की और दूसरी औरत का पहला लड़का किस्मत के विशेष सहायक होंगे।

सफर:-चन्द्र सूर्य के संबंध से सफर तो जरुर है मगर दूसरे मुल्क का न होगा। सफर का नतीजा हमेशा नेक होगा।

भाई-बन्धु:-भाई 42 साल से उम्दा हालत में होगा। मगर इस हाथ वाले को अपने भाई से कोई ऐसा फायदा न होगा। मगर भाई को जरुर फायदा होता रहेगा। सहायता के लिए तो सब प्रकट होंगे, मगर वास्तव में सहायता केवल अपनी ही जान की होगी। न ताया, न चाचा, न मामा, न ससुराल केवल स्वयं ही अपना आप मियां फजल इलाही या मालिक का भरोसा होगा।

खर्च-बचत:-खर्च गिन नहीं सकता, रुपए से ग्यारह आने खर्च (11/16), पांच आने (5/16) बचत होगी। खर्च बड़ा है, मगर उसे घटा नहीं सकता। अगर खर्च घटाए तो आमदन अपने आप ही बढ़ेगी। अपने लिए अपने पेट का सरफा बेशक करें मगर दूसरों के लिए सेवा भाव के तौर पर खर्चा ज्यादा हो जाए और स्वयं करे दूसरों को दिया हुआ पैसा जरुर वापिस आए। शाहुकार उम्दा मगर खैराब खाना यानि बिना सूद रकम कभी वापिस न हो।

खुशी गमी:-19 खतों (दांए हाथ) से धर्मात्मा, राहू दरबार में इज्जत दोनों हाथों पर कुल 43 निशान होंने के कारण 32 गमी के अक्षर के मुकाबला में 43 खुशी होगी।

स्त्री संबंध या सुख साथः-28 के बाद की
औरत अपनी उम्र से कम से कम 59-60 साल साथ निभाए।
धर्म-कर्मः-मंगल अपने घर है इसलिए धर्म के विरुद्ध यह हो ही नहीं सकता। इस हाथ की इज्जत और तरह तो है ही किस्मत लाल की तरह से सूर्य की तरह चमकने पर वरना मंगल बुरा होगा। इसलिए यह हाथ धर्म कर्म का ही देवता होगा जो साधारण कहे खाली न जाए जरुर सच्च होगा।

यह व्यक्ति काम देवता से दूर और जहनी लियाकत का मालिक होगा, अपने नजस पर काबू रखने वाला होगा। नेक काम के लिए इसकी शक्ति 3 और बुराई के लिए 2 होगी यानि बुरी की नियत नेकी की तरफ अधिक होगी। इसका दोस्त वही हो सकता है या उससे फायदा वही उठा सकता है जो अन्दर बाहर के साफ दिल हो। बालाक उससे जरुर नुकसान पाएगा और साफ दिल उससे लाभ पाएगा।

जायदादः-जददीः-हथेली गहरी की वजह से आमदन खर्च के लिए कर्जा न उठाएगा। स्वयं कमा कर खर्च करेगा। 2-1 दुश्मन(खर्च बुरे दिन) और 4-1 (बचत अच्छे दिन) दोस्त होंगे या दोनों का फर्क 1-2 जायदाद जददी में इजाफा करेगा। यह बचत सारा खर्च निकाल कर होगी।

शुद्ध जिन्दगीः-एक चक्र से राजा या हाकिम होने की दलील है और एक शंख से हमेशा आराम पाए और आठ सदफ से बड़ी इज्जम की जिन्दगी हो और तर्जनी व मध्यमा बराबर होने से मशहूर जिन्दगी का मालिक हो।

किस्मत के दरिया में यह हाथ अगर दुनिया में सूर्य नहीं तो पूरा चन्द्र तो जरुर होगा अंगूठा बाहर को झुकने के कारण नर्म तबीयत होगा और जब नुकसान उठाएगा स्वयं नरमी तबीयत से होगा।

मामूली उकसाहट से रुपया पैसा छोड़ देगा और मामूली बात से मान जाने वाला होगा।

आखिरी दिन अपने गृहस्थ में शनि की रात खत्म मगर इतवार का सूर्य चढ़ा न होगा सब से रा-राम, जै-हरी कर जाएगी।

आखिरी समय जबान बन्द न होगी और ख्यालात सिद्ध होंगे। सूर्य का उत्तम दिन दूसरा दरबार --। छुपता हुआ सूर्य दुनिया के लिए जंगल में मंगल की लाली छोड़ जाएगा यानि गृहस्थी कुटुम्बी सब खुशहाल होंगे।

ग्रहों की मियादें

वृहस्पति-16 साल, सूर्य-22 साल
चन्द्र- 24 साल, शुक्र-25 साल
मंगल-28 साल(3) साल दूसरों की मदद के लिए (बुध-34 साल,
शनि-18 साल माली हालत माता-पिता
शनि-19 साल शादी

शनि-27 साल माता-पिता और अपनी आपसी माली हालत।
शनि-33 साल सारे रोजगार वा दीगर जायदादी सवाल।
शनि-39 साल अपने एजेन्टों राहू-केतू की सहायता या विरोद्धिता।
राहू-42-45 साल से केतू और राहू की साँझा हालत।
केतू-48-49 वृहस्पति खड़ा हो जाएगा।

मंगल नं0 1-मगल का संबंध होता है अपने खून से या भाई के खून से और अवधि आम तौर पर होती है 28 साल ओर खाना नं0 1 की टांगे होंगी। खाना नं0 11 में और आंखे नं0 8 में खाना नं0 8 खाली है इसलिए आंखें तो उसकी हैं नहीं, इसलिए इस आदमी की दयालुता किसी के हाथ में नहीं या खुद ही अपने लिए सब कुछ करना पड़गे। अब रहा सवाल टांगों का या दूसरों की मदद से चलने का ढंग तो इसके लिए अगर किसी इन्सान की दो टांगे मान ली जाएं तो इस टेवे की होंगी तीन टांगे। अब 3 टांगों का या दूसरों की सहायता से चलने का ढंग तो इसके लिए अगर किसी इन्सान की दो टांगे मान ली जाएं तो इस टेवे की होंगी तीन टांगे। अब 3 टांगे में सूर्य-शनि के इकटठे होने से उनके आपसी झगड़े से शुक्र मारा जाएगा या उसकी औरत सूर्य शनि की उम्रों में या शुक्र की अपनी अवधि में बरबाद होगी(टांगे भी लड़खड़ा रही है) अब उनकी उम्र है 36 साल यद्यपि उसकी पहली स्त्री को गुजरे 10 या 12 साल हो गए।

मंगल सहायता करता है अपने खून के रिस्तदोरों को 28 साल उम्र में और दूसरों की सहायता है 31 साल उम्र में।

सूर्य शनि के इकटठे होने में दोनों ही सिफर हो रहे हैं इसलिए 28 साल से 31 तक दूसरों की तरफ से कोई सहायता न हुई लेकिन जो शुक्र नष्ट हुआ था 25 साल में वो मंगल के 31 साल उम्र में बहाल होना चाहिए या दूसरी शादी को हुए 5 साल होंगे। मंगल मैदान-ऐ-जंग का मालिक है लेकिन इस टेवे के मंगल की न तो आंखें है और न टांगे, इस लिए जंगल बातों का तो सवाल उठता नहीं।

केतू खाना नं0 4 राहू बुध खाना नं0 10 में:-नं0 4 का कुएं में न चन्द्र अच्छा न केतू अच्छा, सन्तान देरी न होगी और राहू की अवधि मगर बुध के बाद अव्वल तो नर सन्तान सम्बन्धित कुछ ज्यादा नहीं कर कह सकते लेकिन इस वक्त सन्तान हो तो छोटा बच्चा 2 या 3 साल का गिना जा सकता है। शाम का सफर और माता की तरफ रवानगी आम तौर पर मन्दी ही हवा से भरपूर होगी। (वृहस्पति खुली हवा और केतू है बन्धी हुई हवा) खाना नं0 10 के राहू अमूमन शनि की हैसियत पर चलेंगे। शनि नं0 11 का धर्मात्मा है मगर सूर्य के टकराव से मारा जा रहा है। यह 34 साल उम्र से 35 साल तक राहू बुध का जमाना शनि ही स्याही या सूर्य की आग हर एक चीज को जला कर राख करता जाएगा। केवल धुआं (राहू) उठ रहा है। शनि की लकड़ी ज़ल रही है सूर्य की आग भड़क रही है या 34 से 35 साल उम्र तक जमाना मन्दे ही धुंए का जवाब देगा। किसी की

अमानत किसी की जमानत ससुराल से हमदर्दी की तोक्षों पानी में बुलबुले होंगे। शनि के कारोबार से कुछ मिलेगा नहीं, विशेष अच्छा जमाना नहीं।

चन्द्र नं0 5 नं0 9 खाली:- चन्द्र चलता है घर नं0 4 ही है क्योंकि बुध चन्द्र जहरी दुश्मन हैं इसलिए 4 घर चलने वाले घोड़े की हिम्मत बुध(दिमागी) राहू (ससुराल) कीं विचारों की शक्ति चन्द्र (दिल) के विरोद्धिता होगी या ऐसे आदमी की सरदर्दी दिमाग ने तकलीफ 42 साल उम्र तक चलती रहेगी। सरदर्दी से मुराद केवल बेकरारी, उदासी मायूसी नहीं होगी बल्कि सिर में बिमारी गिनते हैं जिससे सिर का अन्दर का हिस्सा फटा हुआ या दर्द करता ही माना गया है।

वृहस्पति नं0 6 खाना नं0 12 खाली:- हवा पताल में चल रही है वो किसी काम की नहीं यह सोना, गुरु, पिता तीनों से फायदा नहीं होगी अगर कुछ हो तो दुख का कारण हो सकते हैं यानि सोने की चीजों की चीजों गुम होंगी सांस की तकलीफ होगी मगर बगैर दमा की बिमारी के। यद्यपि ऐसा आदमी डर के मारे आगे भागता जाए और सांस आराम से न ले, बैठ कर आराम से सांस न मिलेगा।

खाना नं0-11 सूर्य शुक्र शनि खाना नं0 3 खाली:- स्त्री सूर्य के समय में या दिन दिहाड़े आग में जलती हुई मिट्टी होगी मगर रात के समय की मिट्टी की स्याह मूरत होती हुई भी लक्ष्मी अवतार और दुनिया के आरभ्भ की मालिक होगी यानि बच्चे बनाती जाएगी जो औरत अपने ऐश में लग जाएगी। जिस समय उसको मीठा गुड़(सूर्य) मिलेगा दुखिया ही होगी। अगर यह नमक खाएगी तो ठीक रहेगी। इससे उसको रुहानी और शाररिक आराम होगा।

खाना नं0 11 आमदन का घर है जिसमें सूर्य शनि शुक्र इकटठे है सूर्य शनि चलाने के लिए बुध दरकार होगा।

अब 36 साल की उम्र हो गई है कारोबार चमड़े का साजो सामान (शनि में गुजर रही है। सूर्य शनि का झगड़ा ---चुकी है, आमदन जमा-तफरीक सब बराबर कर ली, 37 से 39 साल उम्र शनि की धर्म अवस्था अपना जाती फल देने का जमाना है इसलिए शनि के कारोबार (लोहा, लकड़ी चमड़ा) हर किस्म के बार्निश, रंग ईट पत्थर सीमेण्ट आदि का व्यापार अच्छा होगा।

36 साल तक तो शनि का ग्रह सूर्य से चोट खाता गया है मगर शर्त यह है कि बुध कायम रहे या लड़कियों की आर्शीवाद लेता रहे। 39 साल उम्र में जो कुछ बचा होगा उसके सम्बन्ध फिर सिफर जवाब होगा। दूसरे आदमी के साथ कारोबार 39 साल उम्र से कर लिया जाए, कोई नुकसान न होगा, लेकिन लड़कियों का कुछ देकर उनकी आर्शीवाद लेते रहना ठीक होगा। स्त्री के जेवरात 39 साल उम्र तक गुम हो जाएंगे। बाकी उसकी सरदर्दी तो आगे चलती ही रहेगी। जिसकी की परेशानी दूर करने के लिए बेहतर होगा कि मीठा खाना छोड़ दे। विशेष कर गुड़, मौजूदा नौकरी ठीक रहेगी और जगह कोई बन्दिश नहीं, मर्जी हो ऐश करे नतीजा अच्छा होगा।

मकान बनाए-सन्तान नहीं हो शनि नं0 5.
माता नहीं है-चन्द्र से सन्तान नहीं है-केतू से चन्द्र केतू आपस में कट गए इसलिए केवल सूर्य राज दरबार ही रह गया।
यद्यपि केतू धर्म स्थान में है लेकिन दबा हुआ है टेवे वाले को कुत्ते से नफरत है अगर कुत्ता मारे तो टेवे वाले की टांग आदि टूट जाएगी इस साल कुत्ता

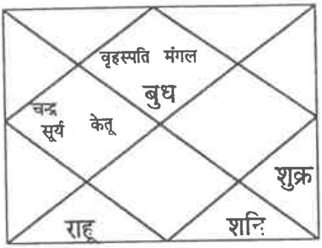

लाल रंग का (सूर्य केतू) रखा है पूजा पाठ नहीं है, क्योंकि राहू नं0 8 में है इसलिए स्वयं टेवे वाला नं0 2 धर्म स्थान में नहीं जा या नहीं जाता है इसलिए राहू खाना नं0 -9 में जाएगा। और खाना नं0 9 का फल धर्म हीन करेगा। 48 साल में मुल्की कैदी हुआ।

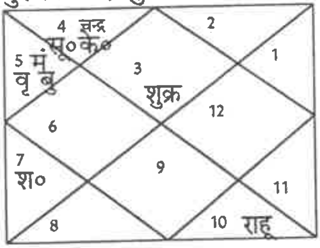

शनि नं0 5 का है मगर सांप बगैर दांत के, शराब नहीं पीता हालांकि घर में हर समय शराब की बोलतें काफी संख्या में रहती हैं इसलिए शनि तो सन्तान के लिए बुरा नहीं मगर केतू(सन्तान) चन्द्र (माता) अपने-आप ही बुरे हैं, नर सन्तान 52 साल उम्र में होगी।

52 साल उम्र में मंगल बुध वृहस्पति खाना नं0 4 में है बुध राज योग है अगर लड़की का रिस्ता किसी फौजी अफसर के साथ हो जाए तो टेवे वाले की तरक्की भी फौजी महकमा में ही होगी।

सूर्य चन्द्र केतू खाना नं0 9 में है वो भी ऊँच है बन्दरगाह तक जा सकता और जहाज की सीढ़ी तक भी जा सकता है लेकिन वहां से वापिस आना पड़ेगा।

कोई औरत (शुक्र नं0 3) समुन्द्र पार जाने के लिए कह रही है सन्तान के जिन्दा रखने के लिए मन्दिर में कुछ बादाम ले जाए और मन्दिर में रख कर उसमें से आधे बादाम घर वापिस लेकर आए और घर में रखे। ऐसा करने से शनि नं0 5, को, जो बच्चे न खाए। टेवे वाले का लड़कियों के टेवे नीचे दिए हुए हैं जिनसे पता चलेगा कि उनका भाई कब पैदा होने वाला है।

जन्म 16-3-30 पहली लड़की

जन्म 16-3-30 दूसरी लड़की।

जन्म दिन 12.12.1885

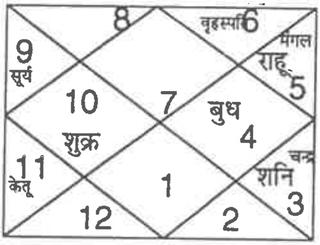

पिता की उम्र 19 साल उम्र में खत्म। चन्द्र

शनि नं0-9 मकान दो को उजड़े हुए केतू नं0-5-नर सन्तान जिन्दा। सूर्य नं0 3-आखिरी

उम्र तक सर्वस्व ठीक। नाक छेदन से चम्बल को आराम होगा।

बाप कहता था कि मोटरों का मालिक मैं हूँ मगर मजमून कह रहा था कि मोटरों का मालिक लड़का है मोटर पिता को लड़के के जन्म के बाद मिली।

जन्म 16/12/32

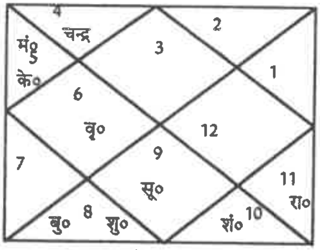

नोटः ऐसा लड़का जिसके माता के पेट में आने के समय से पिता के पास मोटरों की कीमत के बराबर धन दरिया की लहरें मार कर आ गया बाप हमल की रात (उस रात) की पहली रात तक एक मामूली पार्सल तकसीम करने वाला मामूली हस्ती का सरकारी मुलाजम था। हमल के दिन के बाद बाप न नौकरी छोड़ कर ठेकेदारी शुरु की और तीन चार मोटरें खरीद खरीद ली जिसमें सबसे छोटी रुपये6500 (-की थी) केसर, मंगल, शनि मोटर की कीमत के बराबर लड़के की बिमारी पर खर्च होगा। मोटर गाड़ी रु0 6500)-में खरीदी और बिमारी पर खर्च पांच हजार उस दिन तक हो चुका था।

जन्म सम्वत् 1977

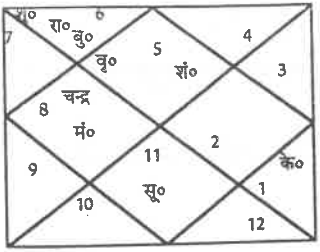

जन्म चक्की जन्म से नहीं है, जब तक चक्की कायम रहे कलह कायम रहे। जब लड़का पेट में आया तो कोई तावीज लिया।

लड़का पैदा होने के बाद तावीज लिया गया। वृहस्पति स्वयं (तावीज) की हालत में बोल जाएगा (बुध नं0-2) पतंग की डोर। बुध (बहुत डोरे पिन्ना या पंलग की निवार के टेरे ना बण्डल के बजाए) 600 मील (600 गज नहीं) तो घर में मौजूद है, औरत पति को पतंग की तरह डोर का सहारा दे रही है। डोर को डोर की शक्ल में न रखा जाए।

जन्म दिन 26-4-49

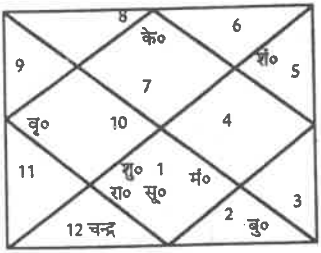

जिस दिन यह अपने खानदान के इलाके में जाएगा तो बाप को तरक्कर मिलेगी। चन्द्र नं0 6 बुध नं0 8 माता के लिए खराब।

चन्द्र नं0 6 बच्चे के लिए खरगोश (नर) का बच्चा (जो केतू की चीज है) घर में रखा जाए। खरगोश मरते जाएंगे 48 साल उम्र तक सहायक होगा। बुध नं0 8 का उपाय किया जाए।

शनि नं0 11=उम्र लम्बी है। बच्चे की मां को बच्चा की आठ साल उम्र तक बिमारी रहेगी। खरगोश रखने से खरगोश मरने जाएंगे और मां को बिमारी से आराम रहेगा।

जन्म 26-3-29

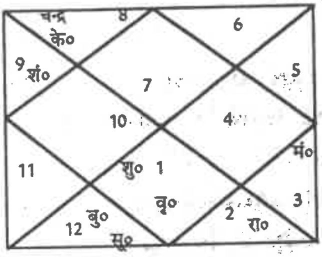

माता-पिता का कुछ पता नहीं ऐसा आदमी अपने माता-पिता के पास नहीं रह सकता किसी का मुत्तवन्ना हो सकता है ।

हाथ रेखा की जन्म कुण्डली(नीचे) बड़ा भाई है, दूसरे शादी के समय बड़ा भाई न या वो मंगल बिमार हो नं0 4 मामा खानदान बराबाद--केतू नं0 9 बहिन को दमा है

चांदी का चकला है, संगमरमर (माता के पास था) का चकला है।

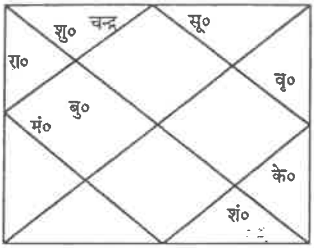

बुध गोल चक्र शनि संगममरमर (चकला ग्यारह और 21 साल उम्र में पिता की मौत, 11 साला उम्र में मौत। 1-50 को आयु करीबन 41 जारी 42 साल की वर्ष कुण्डली शरीर पर सोना कायम करना चाहिए संगमरमर को चकला जहां भी है वहां से ले लेना चाहिए । अगर घर में किसी के मौजूद हो तो, अगर गुम हो गया है या कहीं रह गया है तो, नया चकला पर रोटी पकवा कर खाई जाए तो दमा की बिमारी दूर होगी।

मंगल नं0 4 के पास दो नाली बन्दूक होती है और बड़े भाई के ऊपर अचानक चल जाती है।

होटल का काम मुबारिक है जब तक माता पास न रहे(चन्द्र शुक्र साँझा नं0 2)
बुध नं0 4 (रेत) नीचे-नीचे चल कर अपने घर नं0 3 में चला जाता है।
बिमारी खाना नं0 3 से शुरु होती है और नं0 2 की मार्फत नं0 4 में जाती है।
शनि=पत्थर या संगमरमर, चन्द्र=चांदी, शुक्र=रोटी पकाने के लिए, बुध=गोल चक्र(संगमरमर का चकला)

जन्म दिन 23-7-22

सूर्य नं0 12 शनि नं0 2 अगर औरत शराब पिए तो सूर्य शनि टकराएंगे। साधु, चोर, सांप ससुराल जा रहा हो लोह का ट्रक हो अऔर सोना ट्रक में हो और साधु ट्रक उठावे तो मुश्किल ही से ट्रंक पहुंचेगा।

उपाय:-43 दिन मन्दिर में बादाम जरुरी। मंगल नं0 4-मामे की सन्तान है।

ससुराल घर पूजापाठ न करे। ससुराल घर चालाकी से रहे तो ठीक रहे नही तो हर रोज नया जूता मिलेगा। 34 साल उम्र तक बचत सिफर

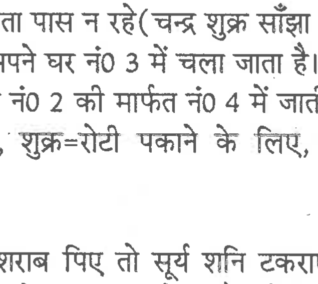

<u>जन्म दिन 11-1-24</u>

वृहस्पति नं0 7= बाप भी तल्खी, बाबा भी तल्खी। मूंगा रखने से बाप के साथ लड़ाई नहीं होगी। पहला घर मंगल से जागे। सन्तान जितनी-जितनी पहली दो पुस्तकों में मिली टेवे वाले को मिलेगी।

वीराना (दो तीन साल की छपाकी) रोकने के लिए बिमारी के दिनों में तीन दिन बाहर के कुत्ते को गोश्त देने से मर्ज दूर होगी।

जन्म कुण्डली सितम्बर, 1915

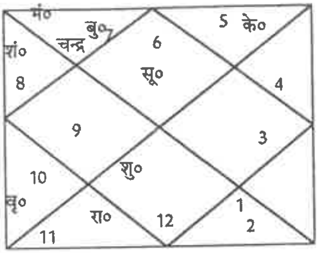

लड़का 2 साला उम्र का उस समय है तपेदिक अपनी अपनी बदचलनी से हासिल किया। मकान 39 में बनाया। ससुर जिन्दा है। इसके मकान की पश्चिमी दीवारे तोड़ कर बनावाई ससुर ने खुद जमीन
दी थी। मकान गर्वनमेंट ने ले लिया।

जन्म दिन 30-12-1905

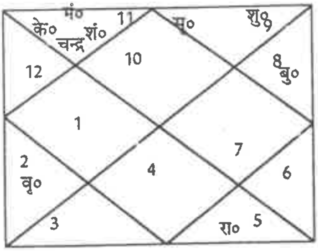

दो लकड़े पेट चाक
करके निकाले गए=शुक्र सूर्य राहू=(कोयला या खोटा आना) दरिया में डालने से आंखों को फायदा होगा। पहले टेवे वाला कर लड़का थोड़े दिन अन्धा रहा फिर टेवे वाला अन्धा हो गया दिमाग (राहू) में अचानक ख्याल आकर अन्धा हुआ। डलों (पतली) का मालिक चन्द्र और नजर का मालिक शनि। राहू देखे शनि को तो राहू शनि के मातहत नहीं होगा। शनि देख राहू को तो राहू मातहत हो जाएगा। जहां पानी आ जाए तो राहू का भूचाल ठण्डा हो जाता है और रुक जाता है। इसलिए चन्द्र को यहां से हटाया जाए राहू की मियाद 42 दिन तक पानी न पिए और चीनी या शर्बत मिला कर पीना शुरु कर दे। 18-12-46 को नजर ठीक होगी।

जन्म दिन 4-7-18

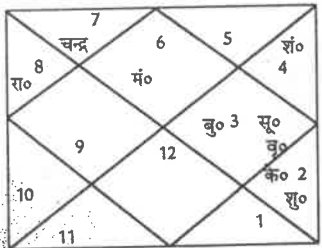

कुण्डली 18 साल से टांग पर फुलबहरी है यह बिमारी सारी उम्र रहेंगी। नानका घर में कोई बनेकी है-नहीं (केतू नं0) सूर्य बुध, वृहस्पति नं0 10 और नं0 4 खाली ======राजयोग लेकिन क्या सिर पर पगड़ी जन्म से ही नहीं बांधी=====पगड़ी जन्म से ही नहीं रखी।

शुक्र केतू नं0-1 लाऔलादी लेकिन अगर नं0 5 अच्छी हो जाए तो नहीं।
33 साल उम्र में सन्तान पैदा हो चुकी है स्त्री दुखिया रहेगी। शुक्र नं0 9,

राहू नं0 3 और चन्द्र नं0 3 से तंग हो।
रहा है।

शुक्र केतू कहीं भी इकटठे लाऔलादी अगर खाना नं0 5 बुरा हो जाए। लेकिन इस टेवे में नं0 5 चन्द्र है और खाना सन्तान रोशन है।

अगर शादी न करे तो अन्धा हो जाएगा।

जन्म बैशख सम्वत् 1943

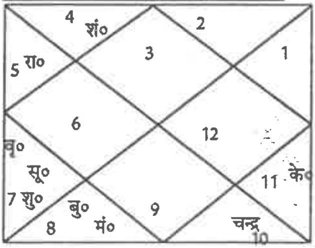

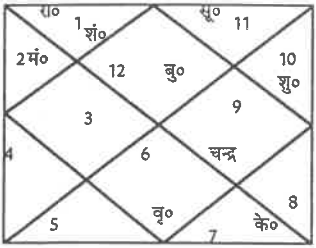

चाचे दो भाई आप अकेले भाई-मंगल नं0 जिस दिन से शादी हुई ससुराल गर्क हुए=शनि नं0 2 दूसरी शादी=सूर्य शुक्र दो लड़के क्या औरत को खून की बिमारी तो नहीं हुई- खून लगातार तो नहीं आता।

तीन सोने की चूड़ियों बेची तो नहीं=पांच साल पहले चूड़ियों बनावाई तो नहीं गई। 48-49 साल उम्रों में चूड़ियों ने बोलना था मकान में फिसल कर गिरी और चूडियों को डाक्टर ने कैंची से काटा।

चूड़ियों में ज्यादा तांबा (सूर्य) डाल दिया गया है वृहस्पति(सोना) सूर्य शुक्र(तांबा) स्त्री की तरन चूडियों) जब लड़का पैदा हुआ तो औरत बिमारी पर हो गई।

दो नर ग्रहों में शुक्र (लौंडी) कैद हो गया। मंगल बुध साथ है।

जेवर का बक्सा लोहे या तांबा पीतल का नही है---ऐसा है लकड़ी या पत्थर का है। यह चूडियां इसी में रखी जाती हैं। जब लड़का का पैदा हुआ था तो बक्सा उस समय खरीदा गया। ऐसी चूडियों का प्रभाव बुरा माना है।

कभी औरत टांग पकड़ती है और कभी कान और कभी आंख इन चूडियों को औरत के हाथ से उतरवा दिया जाए और उसके साथ पर धागा डाल दिया जाए।

क्या आंखों का अप्रेशन करवाना पड़ा=हां बुध न0 8--अगर 6 अगर 6 बच्चे कायम हों तो आप्रेशन आंखों का ठीक नहीं होगा।

शुक्र नं0 6=तायदाद बच्चे की 6 तक करेगा अगर खाना नं0 2 से वृहस्पति मिलेगर। वर्ष फल में मिल रहा है। बच्चे इस समय पांच है इसलिए आप्रेशन करवाना ठीक होगा।

औरत के हाथ कनक या गुड़, तांबा, सोना, दाल चना लगवा कर मन्दिर में रखने के बाद आप्रेशन ठीक रहेगा।

जन्म दिन2/12/36

फकीर की कुतिया शहतूत खाने के वास्ते बाहर गई, लेकिन हवा न चलने से शहतूत पेड़ से नहीं गिरे और थक कर घर वापिस आ गई। लेकिन घर में मालिक रोटी खा पीकर सो गए और कुतिया को भूखी रहना पड़ा। ऐसे प्राणी की हू-बहू वही जिन्दगी होगी।

मिसाल नम्बर सोलह जन्म दिन--माघ सम्वत् **1966 सन् ई0 28-1-10**

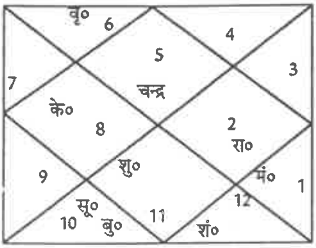

नर सन्तान कितनी है=चार बड़ा लड़का आठ साल का है=11 साल का है।

गर्वमेंन्ट सर्विस की है==हां माता जिन्दा है====हां बड़ा भाई है===मर चुका है।

मकान बनने पर शुक्र का झगड़ा- शनि वृहस्पति। शुक्र के साथ शनि मदद दे भी रहा है---ऐश्वर्य प्राप्ति

तरक्की-धर्म अवस्था ठीक है।

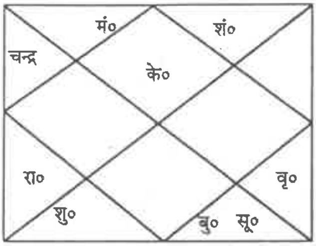

जब तक लड़का मुलाजिम नहीं होता तो नौकरी ठीक चलेगी तरक्करी में गड़बड़ करें नीले रंग (राहू) वाली अंगूठी हब ली क्यों कोई बचा।

40 वां साल की सालाना कुण्डली मकान से नीचे तो नहीं गिरा=हां लड़की पेड़ से नीचे गिर गई

राहू नं0 5=बिजली

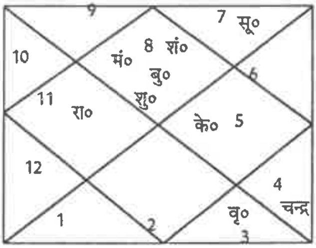

सूर्य बुध नं0 8 चाली बर्तन में जमीन दोज (दबाना) करने से

लानत दूर होगी।

=आबादी से बाहर दिन के समय

42 साला उम्र से तरक्की के लिए रास्ता साफ होगा।

माली हालत कब ठीक होगी==जब तक माता से नेक संबंध रहे

माली हालत अच्छी रहे।

वृहस्पति नं0 2 शनि नं08 बगला भगत जब ईश्वर का ध्यान करके आसन पर बैठेगा तो पीछे से खाना नं0 8 से सांप आएगा और गद्दी उठाकर भागना पड़ेगा।

मकान 24, 33,36 साल में तो नहीं बनाया गया==नहीं। अगर नहीं तो जल्दी मकान के पूर्व की तरफ मकान के पूर्व की तरफ कुआं है। उसमें चावल डालने से ठीक होगी।

जब 33 साला उम्र थी तो उसी कुआं ने दोबारा बनना थी
अगर घर में कुआं है तो क्या उसके ऊपर छत्त तो नहीं==
क्या बाप, बाबा, नाना, नानी कों दमा तो नहीं हुआ, पिता दमा से बिमार है।

कुआं में केसर डालने से माली हालत होगी और पिता की बिमारी को आराम होगा। अगर बाद जद्दी मकान में इस साल रहे तो भी सेहत हो जाये(पिता जी) क्या लड़की जद्दी मकान के उत्तर की तरफ ब्याही जाए तो दुखिया रहेगी।

क्या स्त्री और सन्तान का सुख क्या मकान नया बनेगा।==शनि नं0 8
42 साल उम्र तक मकान नहीं बनेगा====मकान नहीं कब्रिस्तान होगा।
चन्द्र (दरिया) के सामने शनि पत्थर है और दरिया रूक गया है और निकलने का रास्ता नहीं है लेकिन उसके सामने वृहस्पति (केसर) है इसलिए दरिया का रास्ता बदलना पड़ेगा जो कुआं में केसर डालने से रास्ते बदलेगा।
मिसाल नम्बर सत्रह

किसी एक राजा की रानी जो उसने छोड़ी थी

पैदाइश 29-4-20-रानी की जन्म कुण्डली

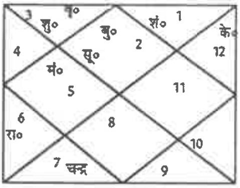

पैदाइश 6-7-40 रानी के बड़े लड़के की जन्म

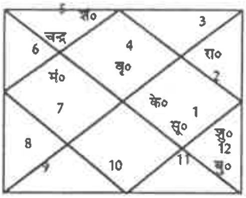

पैदाइश 6-6-41 रानी के दूसरे लड़के की जन्म

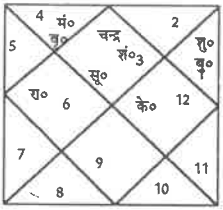

2-9-44 से पहले राजा ने ऊपर के टेवे वाली रानी को घर से निकाल दिया। बच्चे इसके साथ चलते कर दिए और स्वयं अपने खानदानी खून की एक और लड़की से शादी कर ली जो हिन्दू धर्म के मुताबिक उसकी बहिन बैठी (बुध) के दर्जा की हो सकती है।

ऐसी शादी होने की 3 साल बाद पहली रानी अपने प्राणी राजा के घर बार में बहाल हुई।

उपाय करने से पहले रानी को घर से दूर बदर हो चुकने को दो साल हो चुके थे। खाण्ड का बर्तन (मंगल बुध) धर्म स्थान (खाना नं0-2)में 9 दिन (जहां कि शुक्र बुध कुण्डली में है) तक लगातार दिया गया और रानी का नाक छेदन (बुध नं0 8 का उपाय) जो पहले न किया गया था। उपाय के दिनों में करा

दिया गया था।
17 से 19 साल उम्र में नए मकान बनाए गए उम्र
के 3 साल फर्क पर बहिन मौजूद। 17 साल उम्र से (बुध का बुरा जमाना) शुक्र नं0 11 स्त्री संबंध मगर वृहस्पति नं0 11 हवाई ख्याल और आखिरी नतीजी केतू नं0 8 वीर्य पात, उदाहरणतः यानि शुरु हुई जो 21 साला उम्र में----------पर पहूंची और राहू 21 साला उम्र की लहरें दिमागी बुध के दायरें में चल उठी यानि खुदकशी औा पागलपन की निशानियां होने लगी लेकिन वास्तव में वीर्य का नुक्स पोशीदा रहा और शादी की तजबीजें बेमानी ताल्लुक हुई।
उपायः-बुध नं0 12 फालौदी लोहे का छल्ला शरीर पर कायम करना। यरकन-- (चांदी, दूध) के द्वारा दवाईयां सहायक होगी। जब तक साथ लाए दाना-पानी का खजाना, बाकी था सांस चलता रहा और मुट्ठी खुलती और बन्द होती रही, लेकिन ज्योंहि कि आखिर आया बच्चा की साथ लाई हुई बन्द मुट्ठी अब जोर से बन्द करने पर भी बन्द न हो सकी। संसारिक गृहस्थी सब बैठे देख रहे हैं लेकिन किसी को अपना साथी नहीं बना सकता। यद्यपि बन्द हुआ मगर किस्मत का लेखा चलता रहा यानि इसके सारे मुतलकीन को इसकी बन्द मुट्ठी में साथ लाए हुए खजाना से बचे हुए हिस्से के खर्चने का बहाना होगा।

****

इति शुभम्

ॐ विष्णवे नमः इति

परिशिष्ट

मंगल खाना नं0 7

बेलें, फलीदार पौधे मगर लाल रंग के

सूर्य या मंगल अनाज वाले, मसूर दाल, पहला लड़का

मंगल 7वें सब कुछ अच्छा धन दौलत परिवार ही सब
सबका सब ही रद्दी होगा बुध (क) मिले मंगल से जब

नोटः- (क)दोनों ग्रह (मंगल-बुध) दृष्टि से मिल रहे हों या इकटठे हों

मंगल व शुक्र दोनों का अब अच्छा फल होगा जब तक बुध का साथ न हो या बुध बुरा न हो, ऐसे व्यक्ति के इसकी बहन का पास आना या रहना बुरा प्रभाव देगा। दोनों को जिसके लिए बहन को मंगल की चीजें देना शुभ भी बना कर जगाना शुभ होगा। औरत का सुख पूरा। स्वयं मतसदी छोटा बजीर और धर्मात्मा होगा। रोते को हंसाने वाला नेक नाम और ज्ञान हिसाब जानने वाला होगा। 1 आम तौर पर बुरे समय में चन्द्र की ठोस चीज का उपाय सहायक होगा।

मंगल नं0 7 शुक्र नं0 1 हो तो सन्तान व सन्तान गृहस्थ बढ़े परिवार दौलत का भण्डारा और हर तरह से सुख हो।

मंगल नं0 7-1 वृहस्पति सूर्य या चन्द्र 1-7 और बुध नं0 1 या शनि या चाहे दोनों नं0 7 हो तो आ बैल मुझे मार के कामों के बुरे नतीज मगर कुण्डली वाले के अपने खानदान का सहायता हाती रहे या वो देता रहेगा उनको।

मगंल खाना नं0 8

(पक्के घर, घर का) ग्रह फल का,

जब मंगल बुरा हो बाजुओं के बिना बाकी शरीर

मंगल आठवें आठ बरस तक फल भाई छोटे गिनते हैं,

लाखों मुसीबत खड़ी है करता अन्त बुरा नहीं गिनते हैं

माता-पिता सबक का साया भी होवे, शरीर उत्तम यदि पाया भी होवे, तन्दूर शुक्र (मिट्टी) जब तपाया वहां होवें (मंगल शुक्र), न हो वो न है यह तबाही ही देवे न कोई का नाम नया कोई ही होवे, मंगल बद हो 8वें तो कोई न हो। अगर मंगल नेक हो तो सुखी, हर तरह से गृहस्थ का आराम हो, **तन्दूर बरबादी की निशानी होगा।** तन्दूर से तबाही के समय **तन्दूर में मीठा या मीठी रोटी लगा कर कुत्ते को दे देवे।** स्वयं मंगल का मंगल की चीजों पर कभी बुरा फल न होगा। लेकिन जिस तरह बुध का फल अच्छा (बुध प्रबल) होता जाए। उसी तरह ही मंगल का फल बुरा पड़ता जाए जब बुध का साथ या संबंध होता हो तो उत्तम तो है कि न बुध का फल बढ़े पर क्या करें जो काम न बन सके यानि बुरी हालत में बुध से बचता होगा या बुध की फोकी खाली चीजों और दातों से नुकसान होगा। दिमागी खाना नं0 8 शनि से साँझा हमला रोकने की शक्ति, लाख मुसीबत मगर काम को न छोड़ेगा। कामयाबी हो या न हो।

मंगल नं0 8 बुध नं0 6 हो तो माता बचपन में ही गुजर जाए नहीं तो दोनों दुखिया होंगे।

मंगल नं0 9

लाल रंग,
मंगल जब घर नौवें आवे, नौ ही ग्रहों का मंगल गावे।
भरे खजाने दौलत अन्दर, हर तरफ हो जंगल मंगल ।
न तीजा न पांव बिगाड़े, गर देखें बुरा मंगल मारे।
दमदले में दम न हो चाहे, खैर होगी हैवान की
बुध अकेला छोड़ के सब अच्छा हो ग्रह चाल ही मंगल की उम्र (13 साल या

समय 14 साल) तक माता-पिता के समान राजा बना दे फिर अपनी 28 साल उम्र में स्वयं भी राजा की गिनती को हो। लाल रंग की सम्बंधित चीजों का साथ रखने से दुनिया का लाल होगा। कुण्डली में सूर्य अब कहीं भी बैठा हो ऊच्च फल का होगा। यानि उस पैदाइश घर में मंगल नेक ने बच्चा पैदा होते ही अपने लाल रंग से बच्चे को लाल पैदा हुआ कहलवाया। जंगल में मंगल किए या मंगल नेक के समय सूर्य की तरह किस्मत का प्रकाश होगा। मंगल नेक जंगी खून और शाही जंगी धन से शाहाना परवरिश और स्वयं उसी द्वारा अच्छी हालत वाला होगा जिसे सम्बन्धित दुनिया में हकूमत करने का अवसर और धन जमा करने का समय बहुत मिलेगा इस निशान के समय शुक्र की तरफ या चन्द्र की तरफ होने का कोई भी बुरा प्रभाव न होगा हर हालत में हकूमत करने का मौका और धन जमा करने का समय मौका और धन जमा करने का समय बहुत मिलेगा इस निशान के समय शुक्र की तरफ या चन्द्र की तरफ होने का कोई भी बुरा प्रभाव न होगा हर हालत में जंगल में मंगल होगा।

मंगल नेक:-

जब उम्र के 13 वें साल शुरु होवे तो उसकी पैदाइश उसके माता-पिता के पास दौलत का भण्डारा कायम होगा हकूमत का साथ होगा।

फिर मंगल के समय से वही अच्छा हालत जो बवक्त पैदाइश माता-पिता की थी।

मंगल खाना नं0 10

(ऊच्च) मीठा भोजन

अकेला मंगल दसवें बैठा, राजा होता है बी ।
दूजे पापी शुक्र चन्द्र, सोने में होंगे कली

तीजे से छेवें में बैठे दोस्त, इसके अपने हों, जंगल जलता, लड़का मरता, धन घटता, ऊँचा चाहे कितने ही हों । मंगल राजा घर 10 वें का शनि घर चौथे जब सूर्य हो शनि के घरों (खाना नं0 1-11 में मंगल बिना कारण के चीता होगा जो आदमियों पर हमला न करेगा। इसकी मामूली सी बैठने की चोकी एक तख्त का काम देगी लेकिन अगर शुक्र या किसी भी और ग्रह का साथ हो जाए या सूर्य ही नं0 6 में हो तो सन्तान के लिए लम्बी उम्र। (45 साल) तक तरसता रहे। मगर ला औलाद न होगा। दौलतमन्द जरुर होगा। मुलाजमत 28 साल, मौते 22, बीमारी 15 साल तक होगी। खाना नं0 10 में मंगल हिरण जब और जिसका मंगल नं0 में हो तो हिरण का साथ या पालना निहायत शुभ होगा। मगर जब मृग पहाड़ी चीता होगा यानि शनि की सहायता, साथ या साथीपन हो तो शेर से भी शैतान और जबरदस्त शरारती होगा। यद्यपि शनि के घरों मंगल चीता होगा जो आदमियों पर हमला न करेगा बशर्ते कि अकेला ही मंगल नं0 10-11 में होगा। आम तौर पर नं0 10 में मंगल नेक समान चौकी या तख्त का मालिक होगा हर तरह से उत्तमफल हो जाएगा। सब को लूटघसूट कर बड़ी भी जायदाद की जायदादों वाला होगा। उम्र 90 साल होगी। दौलतमन्द और सेहत अच्छी। हर तरह का आराम गृहस्थ में होगा। जंगी शक्ति, हौसले का पक्कापन साथ होगा। शनि के घर मंगल राजा होगा जब और जब तक मंगल को कोई और ग्रह न देखता हो। माता-पिता भी राजा समान हों बशर्ते कि मंगल अकेला हों और खाना नं0 2 में स्त्री ग्रह न पैदा हो नहीं तो दुश्मन ग्रहों के साथ आने के समय से और समय तक सब कुछ उल्ट हो और स्वयं नर सन्तान के लिए बड़ी उम्र तक तरसे या सन्तान देर बाद हो।

मंगल नं0 10 सूर्य नं0 4 तो आंख से काना हो
मंगल नं0 10 सूर्य नं0 6 तो लड़के पर लड़का मरता जाए
मंगल नं0 10 चन्द्र नं0 4 हो तो अहल सरकार से लाभ उठाए और हर समय गुस्से वाला हो।
मंगल नं0 10 चन्द्र नं0 5 हो तो आंख से काना हो।

मंगल शनि नं0 3 हो तो पोते पड़ोते वाला (उम्र लम्बी स्वयं अपनी सांप, कौए की उम्र) जायदाद कायम मगर नकद दौलत में निर्धन हो।

मंगल नं0 10 शनि नं0 3 चन्द्र नं0 4 हो तो पड़ोते स्वयं अपनी उम्र बहुत लम्बे जायदादी फल बुरा मगर धन कम होने की शर्त न होगी।

मंगल नं0 10 शनि नं0 4 हो तो चोरी से हमेशा सजा पाए।

मंगल खाना नं 11

सिन्दूर लाल

ग्यारहवें मंगल है रखता शहद के बर्तन भरे, शहद उम्दा इसका होगा फूल (बुध) हों जिसके खरे

फूल छोड़ों मक्खी ही (शनि) जब नेक और उम्दा मिले, दम में ही ले आएंगी वो शहद बरतन भरे

अगर मंगल नेक हो तो नेक दौलतमन्द व 24 साल दौलत जमा मंगल यद्यपि अब चीता होगा। मगर अपने गुरु (वृहस्पति) के हाथ में हवाई जंजीर में जकड़ा हुआ होगा यानि जैसा वृहस्पति होगा वैसा ही मंगल फल देगा और न ही वो इनको सुखिया देख रहा होगा यह सब राहू जमाना तक (42 हद 45) ही होगा। इस बुरे अहद में यद्यपि इसका अपन केतू(लड़का) न होगा।

मगर संसारिक केतू (कुत्ता वगैरह) सहायक होगा।

मंगल खाना नं0 12

बुलन्द आवाज

हाथी का महावत मंगल 12 सुख का राजा घर गुरु प्रवेश हो, जन्म कुटिया या कि जंगल कुटिया या कि जंगल पूरा ही दरवेश हो। शेर गर्जे हाथी लड़के बिजली कड़के चमकर्ता तलवार हो, मंगल 12 गुरु हो दूज आसमान से पाताल हो दो शेरों से गर्जे गुम्बज हाथी छुपे हों हजारों, केतू तीजे मंगल 12 मच्छ महावन दोनों तारा

साल 24 में उत्तम होवे या लड़का जब पहला हो अगर मंगल नेक हो तो फूल नेक, स्त्री सुख, दौलत जमा इस घर में मंगल होने पर सारे की सारी कुण्डली पर राहू का बुरा फलन होगा। चाहे वो किसी भी घर में बैठा रहा हो। विस्तृत रुप से अब राहू चुपचाप होगा। हाथी के तबेले में अगर मौजूद होगा। अब मंगल राहू का संबंध मंगल के समान पेट में छुरियां फिर रही है, का होगा। अब मंगल के पेट पर ==डोलें या मंगल का पेट काटें यानि मंगल के घर खाना नं0 1-8 में इसके दुश्मन ग्रह बुध या केतू हो तो, बदनाम राहू बन गय होगा। जो इस वृहस्पति के नं0 12 में गुम शुदा की तरह अपने आप पैदा हो गया होगा। मग मंगल का पेट ऐसा नहीं जो छुरियां फिरवाएं और राहू पैदा न हो यानि खाली चौकोर ओ गर्जे सका उसी मंगल के हौसला से दुनियादार का पेट सम्भाले दुनिया में आ निकलता है चाहे अ जाने के बाद राहू हो या स्वयं इन्सान मुसाफिर (यानि में रास्ता चलने वाला बन जाए यानि अब बुध या केतू का खाना नं0 1-8 में बुध प्रभाव न होगा चाहे वो कहीं ही बैठे हों।

****